



के करीब चढाई चल्नी पटी । फिर कुछ उतराई उतर कर कालोगगा के किनारे कालीमठ पहुँचे । किसी समय यह पागुपता का कन्द्र था । मुख्य मन्दिर के बाहर कत्यूरी लिपि में एक १८ पक्तिया का २० इंच लम्बा १० इंच चौड़ा शिलालेख था । यदि विंगालमणिजी न देर की हाती तो हम अच्छे समय पर पहुँचत और फोटो ले सकत थ । लेकिन जब सूर्यास्त हा गया था । कुछ फाटा लिए । शिलालेख का कुछ पकितर्या थी—

ॐ ॥ सध्यासमाधि घटिताजलित म्वपाणौ कृष्णे सवेपि मुम
क्षिणास गवस्य त स्वकर सरिथत तायराने (१) सधित्र (१) दयितयेव
गृहीतवग ॥ दग्धाद्भवा तन्मपास्य गिरे प्रस्तुता गव्व पतिमवाप्य
(४) गिरिपति गहगाप्ता महान्द्राभिधार (४) बाल्एवाभवत् स्वामी
सर्वसग्रामकथत रुद्रमून ११ कल्किा १ ला शैल १४ सग्राम
वीरति प्राकृत कवया १५ क्तु कुद्र क पार्षाण ।'

लिपि कत्यूरिया की थी । जिस राजा का यह शिलालेख था वह रुद्र का पिता था कत्यूरिया के प्राप्त अभिलेखा में इस नाम का कोई राजा नहीं मिलता है । हो सकता है वह भेत का ही राजा रहा हा ।

गौरा मन्दिर में ८० इंच लम्बी २४ इंच चौड़ी हरगौरी की अत्यन्त सुन्दर पापाण मूर्ति थी जिसे देखकर मैं आश्चर्यचकित रह गया । गिव चतुर्भुज थ गौरी द्विभुज, नीचे गणेश और मयूराम्ब कातिकव्य थ । दाता की भी मूर्ति साथ में उत्कीण थी । अखण्डित इतनी सुन्दर हरगौरी की मूर्ति गायद भारतवष में कही न हा । भारत की यह अनमाल कलानिधि एक एम कान में पडी है जहाँ कटारनाथ क जानेवाले हर साठ क हजारों यात्रिया में काइ जान के लिए तयार नहीं हाता । मुने इस बात का बडा जफमास था कि प्रकाश क अभाव क कारण मैं उसका फाटा नहीं उ सता ।

हरगौरा के अनिरिक्त सरस्वती और लक्ष्मी क भी यहा मन्दिर हैं । लक्ष्मी क मन्दिर में ही उक्त शिलालेख लगा हुआ था । बाहर खुम् में कत्यूरी काल की बहुत सा खण्डित मूर्तिया थी । मुर्खलिंग (एक मुहवाला तान मुहावाला चार मुहावाला) और गिशन लिंग इस पागुपता का प्रमुख स्थान बतला रहे थ । गन्वाल-कुमाऊ कया, पश्चिम नेपाल तक के अधि काग लाग खप्त हैं जिनमें ब्राह्मण और क्षत्री दाना शामिल हैं । बतमान

गताब्दी में खग नाम अपमानजनक समझा जाने लगा इसलिए लागो ने अपन को खग कहने से इकार कर दिया, और अब सभी अपने को राजपूत बतलाते हैं। यहां खशो की प्रथाओं में अपनी लडकी को दब-चेली बना कर देवता को अर्पित करना भी था। इस गताब्दी में भी दब-चेलियाँ बनती थी और अभी कुछ ही साल हुए आखिरी देवचेली मरी। देवचेलिया जिस घर में रहती थी, उस घर का भी विशालमणिजी ने दिखलाया। जातीय अपमान समयकर देवता के प्रकोप का भय रहत भी इस प्रथा को बंद कर दिया गया। मद्राम की तरह यहाँ देवदासी प्रथा निषेध का कोई कानून बनाने की आवश्यकता नहीं पड़ी। विशालमणिजी दुमागी ब्राह्मण है। गायद गगाडी और खश दाना ब्राह्मणों के बीच में हाथ-पैर फलाने के कारण यह नाम दिया गया। उसी नाम लौट कर भेत आते हुए मर दिल में ख्याल आ रहा था यह अद्भुत मूर्ति बच गई? गायद लोग न उसे कही छिपा दिया और एमा करके उताने महान् काम किया, हम न देह नहीं।

ऊपामठ—१३ मई का सवा ५ बजे हम दाना चल। विशालमणिजी भी नाला तक पहुँचाने आए। जात वकन हमने ख्याल नहीं किया था, लेकिन अब देखा नाला मन्दिर की दोवार पर सड़क के किनारे एक छोटा सा गिलास्तूप है। बौद्ध धर्म का इतना ज्वलंत अवशेष और दूसरा कुमाऊ गढ़वाल में देखने का नहीं मिला। छोटे मन्दिर के चार पक्कियाँ के लख को पढ़ने की वागिंग की, पर उसके लिए कुछ समय की आवश्यकता थी। लेख में गाय १९६८ (सन् १२७६ ई०) का उल्लेख था। ६ के अक के वार में निश्चित नहीं था। इसमें 'मरस्वती प्रसादन घटिता प्रतिमा मुभा' लिखा था। मरस्वती प्रसाद क्या मूर्तिकार था?

नाला में आगे बढ़े ता उत्तराखण्ड विद्यापीठ जाया। वहाँ के प्रिंसिपल एक मद्रासी मज्जना थे। विद्यालय में इस वक्त छुट्टी थी लेकिन उन्होंने बतलाया, कि विद्यापीठ इस इलाके में गिन्या के प्रचार में क्या कर रहा है। पुल पार कर चढाई शुरू हुई। ८ बजे हम ऊपामठ पहुँच गए। बदरीनाथ प्रबंध समिति के सहायक सचिव बहुगुनाजी और बदरनाथ के रावल यहाँ पर थे दोनों का इसका अपमान रहा, कि वह इस समय केदारनाथ में नहीं

थे। यहाँ की चीजें रावलजी ने दिखलाई। एक ताम्र पत्र सन् १८६८ (सन् १८११ ई०) का गीर्वाण युद्ध विक्रम गाह के समय का था जिसमें रामदास थापा की मा के दान का उल्लेख था। शब्द १७१६ (सन् १७६७ ई०) ताम्र पत्र में माघ कृष्ण १४ साम रणबहादुर साह कनिष्ठ पत्न्या श्रीवातवती देव्या निजभतृ विक्रमार्जित कमचल लिखते हुए किसी दान का उल्लेख किया गया था। य दानों लेख इस भूभाग पर गारखा शासन के अवशिष्ट चिह्न थे।

यहाँ की पुरानी बहिया जीर अभिलेखों से उस समय के आर्थिक जीर सामाजिक जीवन का काफी पता लग सकता है। उहाँ में चलत चलत नहीं देख सकता था। वह तो अनुस दान का विषय है। उपा का सम्बन्ध क्या इस मठ से जाना गया? पाण्डवा से सम्बन्ध हाना गढ़वाल के लिए स्वाभाविक था। पाण्डवों का गढ़ होने से उसकी भी गुजाइश है लेकिन उपा तो नतीन म है न तरह म। उपा मन्दिर के बराड़े में कई मूर्तियाँ थी जिनमें नटराज भी थे। एक जगह दो पापाण मूर्तियों की मूर्तियाँ आमन सामने थी भीतर गिर्जालिंग ऊपर मुखालिंग था। मूर्तियों में दाढ़ीवाले एक राजा की मूर्ति थी जिसमें बीच में दाढ़ी-जटाधारी पाण्डुपताचाय और पाम म राजकुमार जीर राजकुमारी की मूर्तियाँ थी। यह पिछले कत्यूरी काल की हो सकती है। उपा मठ भी प्राचीन स्थान है।

भाजन करन व राद ३ वजे हम वहाँ से चले। बलबहादुर अब बहुत धीरे धीरे चल रहा था। श्रीनगर में उस भोजन के साथ डेरा रपया राज काफी मालूम हुआ लेकिन जत्र वह अपन भाइयों का उससे चौगुना पचगुना कमात देख रहा था। एक जगह तो घटा इन्तजार करना पडा सँदह हाने लगा उस कहीं कुछ हो तो नहीं गया। किसी तरह ग्वालियावगत् पहुँच और रात के लिए वही ठहर गए। रमणीय स्थान था। इससे पहल की चट्टी पर पानी का बहुत ढाला था और यहाँ एक स्वच्छ जल की नदी बह रही थी जिनकी धारा हमारे ठहरने के स्थान के पीछे से पचवती चलाने के लिए जा रही थी।

तुगाय—१४ मई को ५ वजे घोड़े पर चले। चण्डा नदी पार करने ही गुरू हा जाना थी। ऐसे स्थान पर घाड़े का मिलना यानी के लिए बर-

स्नान है, और जो नहीं लेता वह कितनी ही बार पछताता भी है। वाणिजा-
कुण्डी तक पहुँचते पहुँचते घोड़ा थक गया, और उसे वहीं छोड़ देना पड़ा।
साढ़े ६ रुपये में तुगनाथ के लिए साढ़े चार हजार से १२ हजार फुट की
उँचाई पर पहुँचाने वाला दूसरा घोड़ा मिल गया। नदी के इस पार जाते ही
पहाड़ हरा भरा था। वाणिजा कुण्डी तो बर्फ पड़ने की जगह में थी। यहाँ
खरगू और तून के बूझ अधिक थे। इस पहाड़ी में गाव अधिक नहीं है
लेकिन जंगल के कारण पशुपाठ चराने के सुभीते से इधर झापड़ियाँ लगा
कर बस जाते हैं। उही में से कुछ ने चट्टियाँ में अपनी दूकानें भी खोल ली
हैं। चट्टियाँ के कितने ही घर उजाड़ थे। दूकानों से लोगो को मालामाल
हात देकर दूसरा का भी हिरस हुई और जखरत से अधिक दूकानें बान ली।
फिर कुछ को निराग हाकर अपने घर उाटने पड़े, जिनकी दीवार अभी भी
खड़ी थी। वनस्पतियो में धीरे धीरे परिवर्तन होने लगा और हम तुगनाथ
के पहले ऐसे स्थान में पहुँचे जहाँ झाडियाँ भी खतम होकर घास ही रह
गई थी। १० बजे हम तुगनाथ पहुँचे। बर्फ कहीं-कहीं थी। तुगनाथ से
अधिक ऊँची जगह पर कोई हिंदू मंदिर नहीं है। यहाँ की पुरानी खण्डित
मूर्तियाँ बतला रही थी कि यह पुराना स्थान है। मंदिर में शिवलिंग है,
जिसके पाँछे पद्मासनस्थ कुण्डलधारी भक्तमूर्ति है। उसके पास पाँच छ इंच
का धातु की भूमिस्पर्ग मुद्रा में ब्रुद्धमूर्ति है। तुगनाथ हिमालय के गभ में है
उसके उत्तर की ओर हिम गिखरो की पत्तियाँ चली गई हैं और नीचे
हजारों पहाड़ माना हिम गिखरा की ओर ध्यान लगाए एकटक देव रहे हैं।
यहाँ से बहुत दूर तक का दृश्य दिग्राई पटना है। बदरीनाथ के सभी यात्री
यहाँ नहीं आने, इसलिए बस्ती छोटा भी है। लकड़ी दूर से लानी पड़ती
है अतएव महंगी जाती है, सर्वो भी अधिक है। रोटो बनाकर खान से पूड़ी
गान में ही सुभीता है, जो तीन रुपये सेर मिल रही थी। भोजन करके ११
बजे हम उतरने लग। उतराई-ही उतराई उम चट्टी तक रही जहाँ सीता
रामता आकर मिल जाना है। कुछ देर प्रतीक्षा करने पर बलप्रहादुर आए।
पीन तीन मील चलने पर पाँगरवागा मिला। चेम्पनदको पहाड़ में पागर
बहने हैं। यहाँ जंगल में इसके पैठ मिलने हैं इसीलिए यह नाम दिया
गया। पागर के अतिरिक्त खरगू और केले भी यहाँ बहुत हैं। हरियाली के

कारण बहुत रमणीय स्थान है। रात के लिए हम यही ठहर गए।

जगले दिन (१५ मई) फिर ५ बजे चले। गगनचुम्बी वन्या के घने जंगल के बीच से मण्डल चट्टी तक उतराई का रास्ता था। ढाकबगला कुछ ऊपर ही रह गया और चट्टी नीचे मदान-सी बहुत चौकी उपत्यका म थी। यहा भी टीका के खेने और लगाने के लिए ढाक्टर का कम्प था लेकिन उसकी कोई चिन्ता नहीं थी। थोड़ी देर प्रतीक्षा करन पर बलबहादुर जाया और उसे टीका लगवाना पडा। इधर भी टिड्डियो ने आकर फमल को काफी नुकसान पहुँचाया था। चापी नदी पार करके उसके दूसरे किनारे स नीचे की ओर चले और फिर एक बाही पार करके पहाड के नीचे पहुँचे। जगह माडे चार मील के करीब हागी। घाग मिला और चाहते ता वह बदरीनाथ तक साव चल सकता था लेकिन उस वक्त यह खयाल नहीं आया। चढाई चट के गापेश्वर पहुँचे।

गोपेश्वर का मन्दिर बदरनाथ जसा ही विगाल है। छठी और बारहवीं सदी के अभिलेख उसकी प्राचीनता और महिमा का बतलात है। मन्दिर के सभामण्डप का पीछे बनवाया गया। खण्डित मूर्तिया एक चीनरे पर रग्यो थी और कितनी ही दूसरी जगहो म भी बिखरी थी। चतुर्मुखालिंग और गिश्नलिंग बतला रहे थ कि यह पागुपता का स्थान रहा। पुरान ढग की बूटघारी सूय की मूर्ति भी मन्दिर के भीतर मिंग। विशाल त्रिशूठ पर जगाकचल्ल प्राचल्ल के अतिरिक्त तीन पत्तिया का ब्राह्मी का भी एक लेख था जा दक्षिणी ब्राह्मी से उपादा मिलता है।

हम ग्याना खाना था। बलबहादुर ने अब अपनी सुस्ती का रहस्य खाला— 'मैं डेठ रूपया राज म नहीं रहूँगा। पन्ले बतलाया होता तो उस घाडे को बदरीनाथ के लिए ल लिए हात। भाजनोपरात कुछ विधाम करके २ बजे चले। समतल सा रास्ता था डेठ घट म चमाली पहुच गए। चमाली से बलबहादुर को छाना था। घमसालाएँ भरी हुई थी वही जगह नहीं थी इसलिए रात का वहा रहना भी मुश्किल था। साचा बवार का सामान जा लादे फिर रहे हैं उमरी जरूरत नहीं है। उस घनी किसी के पाम पट्ट द और एक कम्बल तथा पाटफल म कुछ चीज भरकर चल दें। अस्पताल के कम्पौडर श्री जीवानन्द सुन्दरियाल से माही भेंट हा गई।

उन्होंने सामान अपने पास रखना स्वीकार कर लिया। बलवहादुर को ११ दिन के लिए मैंने पचीस रुपया दे दिया। सोचा, अगली चट्टी (मठ) में मिर रखने के लिए कोई जगह मिल ही जाएगी, इसलिए वहां से लम्बा डेग बनाने चल पड़ा। मठ में दूकानदार भलेमानुस मिला उसने मेरे लिए सामान का दाम लेकर राटी बनाकर दना स्वीकार कर लिया। यही बामा के उदर्यासिंह पाल मिल गए। शिक्षित तरण, और नीती घाटा क गहन बांटे होने में तिवत के सौभाग्य भी थे। उन्होंने गायद बेगी कोई पुस्तक पढ़ी थी। उनका मित्र का घर जागे सड़क पर था। उन्होंने कहा—वह जरूर कोई घाटा ठीक कर देंगे। सबर सांटे ४ बजे ही मैं उनके मित्र के पास पहुँचा, उन्हें पीठ फेरते ही बल की बात भूँटे हुए पाया। लेकिन, अब मरे पर खुल गए थे, सामान से भी पिण्ड छुटा लिया था इसलिए ऊनी चादर कंधे पर रख लाठी में पोटफु और कंधे पर कमरा टांग चल पड़ा। हिम्मत हारन की क्या जरूरत मैं बदरीनाथ तक चल सकता था। आगे सीयामाई की चट्टी मिली। दूकानदार के चूल्ह में चाय खीर रही थी। मैं पीने के लिए बठ गया। यह आपके लिए अच्छी नहीं होगी कहते जमन नइ चाय बना के पिलाई। जमन बनगया कि जागे हाट गाव का पुत्र आएगा, वहां बेगारदत्त की दूकान है। उनका पान घोड़ा है। वह बिराय पर मिल जाएगा। चमाला न बल मैं दा मीर आया था और मीयामाई में पाच मील और आन पर बेगारदत्त मिर। घाटा भी १७ मात्र तन (जागी मठ) के लिए ठीक कर लिया। यहाँ से अब रास्ता अचकनग में बाग था। बेगार दत्त के भाइ वाचस्पति घाडे के साथ चल।

यह मसूरा में रसाइया रह चुके थे। भग्न इतना मुभीना वहां मित्र सकता था। मैंने साचा अब बदरीनाथ तक इनका साथ ले चलना होगा और चमाली लौटकर हा छाटना है। मठ में १५ मील और घाटा लन की जगह १ १० माल और चक्कर पातालगंगा चट्टी में गए। यहाँ १ बजे में २ बजे तक टहरकर नाहन किया। वाचस्पति वाणी के पनि चाह न हा, लेकिन चूल्ही के पनि अवश्य थे। एक ही सामग्री सिंगी के हाथ में पड कर गाजर भी जाती है और सिंगी के हाथ में अमृत। वाचस्पतिजी भाजन बनान लग, और मैं जरा-सा इधर-उधर घूमने गया। वहीं नागपुर के ध्या हृषिकेश

की पत्नी मिल गई। उनके साथ आठ नौ नागपुर के शिक्षित और
सूत्र पुस्तक और महिलाएँ थी। वाचस्पति ने स्वादिष्ट भोजन मिला
तप्त कर दिया था, नहीं तो शर्माजी का आग्रह अपने दल के साथ चलने
था। पर, मैं एक एक दिन म बीस बीस तीस-तीस मील की मजिल
कर रहा था, और उस मण्डली के साथ चीटी की चाल चलना पड़ता।
री से जितना समय नियत करके आया था उससे अधिक देना नहीं
सूता था।

जोशीम—ठरविनंतर रास्ता बगइ का था पर पदल चलना नहीं
घोड़ा तथा वाचस्पति दाना फुर्तीले थे। इन दोनों के साथ तो मन
ता था एक मतव हिमालय की लम्बी दौड़ लगाई जाए। ६ बजे जाशी
पहुँच। वाचस्पतिजी को खाना बनाने और घोड़े का इतना काम करने के
ए छोड़ दिया और अपने यहाँ के प्राचीन मन्दिर—नरसिंह बासुदेव
दुर्गा—का दर्शन गया। जोशीमठ, ज्योतिमठ का विगटा रूप बतलाया
ता है लेकिन इन दोनों नामों से इतिहास की कुँजी नहीं खुलती। इतना
लूम है कि ज्योतिमठ में शंकराचार्य ने अपना एक प्रधान मठ स्थापित
या था जहाँ गद्दा पर शंकराचार्य भाँ होते थे। वह परम्परा १८वीं सदी
जाई और अन्तिम मन्दासी के न रहने पर मलाबार के ब्राह्मण
राज्य का ही राजल के नाम से महत्त बना दिया गया। यहाँ रिवाज आज
चला जाता है। जाशीमठ प्रतापी कत्यूरिया की राजधानी थी जो एक
समय समुक्त गणवाल कुमाऊ के शासक थे। राजधानी और राजप्रासाद के
ई अरण्य नहीं मिलते पर मन्दिर उस समय के इतिहास की गवाहा दते
। रात में जाने से मैं यहाँ कोई काम नहीं कर सका। यह भी मालूम हुआ
अधिकारी लोग बदरीनाथ चले गए हैं।

बदरीनाथ—अगले दिन (१७ मई) को साढ़े ४ बजे ही हम रवाना
ए। दो मील नीचे घौली और अल्कनन्दा के संगम पर विष्णुप्रयाग है।
तक उतराई थी जिसमें घोड़े पर चढ़ा की जरूरत नहीं पड़ी। दस
मिल और चलकर हम पाण्डुकेश्वर जा गए। पाण्डुकेश्वर के दा पापाण
न्दिर कत्यूरों के काल के चिह्न हैं। वे अपनी मूर्तियाँ और मन्दिर की शली
विनाश महत्व रखते हैं। एक मन्दिर गुम्बद की तरह का छतवाला है

जा अधिक पुराना है। हममे पत्थर की मूर्ति है और दूसरे में धानु की विष्णुमूर्ति। पहाड़ में भी मैदान की तरह खण्डित मूर्तियाँ का गगन में फेंक देना का रवान है इसलिए न जान कितनी मूर्तियाँ अलकनन्दा में पड़ी भावी गवपका की प्रतीक्षा कर रही हैं। यहाँ एक गणेश की भी खण्डित मूर्ति दमी। कोई शिव चिह्न मालूम नहीं हुआ। लक्षण से मातृम हाता है पान के क्षेत्र में भी पुरानी मूर्तियाँ चिह्न मिलेंगे। पाण्डुकेश्वर में काफी दूकानें हैं। त्रिणुप्रयाग से इधर ऐसी जगह में हम आ गए थे जिसका आठ की भूमि कह सकते हैं। चार आठ में सौ वर्ष ही पहले गिकारी विल्मन न श्वर आलू का प्रचार किया लेकिन आलू स्वयं कहता है 'यह पूवजम की भरी मातृभूमि है।' इसीलिए वह बढ़त और बढ़ा-बढ़ा हाता है। जोर इसलिए मन्ना भी बढ़त है। दूकान पर मसालेदार खड़े पीठे-पीले आलू सने दानकर मुह में पानी आन लगता। अधिक पैसा होने में आलू का अपमान करना मुझे अपराध मालूम हाता लगता है। अभी मवरा ही था इसलिए आजन यहाँ नहीं गया लेकिन जातू हमन खाया। लामवगड हात बदरी नाथ पहुँचन का अन्तिम चट्टी हनुमानचट्टी मिली। वृत्तों के स्थान से ऊपर थी, जोर इसलिए लकड़ी बड़ी मँहगा थी। बेवकूफ ही यहाँ तीन मपया सग पूनी छाड़कर सवा दा मपया सेर वाले आठ में बच्ची रसाई बनाने की कागिग करेगे। वाचस्पतिजी को भाजन नहीं बनाला था। आजन करक कुट्ट दर विश्राम किया, और दाई बने अन्तिम पाच मील की यात्रा के लिए हम चल पडे। राम फुगन वाला चटाई थी लेकिन मैं मजबूत घोड़े की पीठ पर था। पजाब मित्र क्षेत्र के मैनजर न बतून आहूँपूबन अपन यहाँ का गाग म टहरन के लिए चिट्टी लिख दी थी। बदरीनाथपुरी से पहल ही आर जलननता के बाइ तरफ मन्ना पर क्षेत्र मिला। चिट्टी पान ही कम-चागिया न बड़ी जावभगन की, और एक अच्छे स्थान में आनन लावा कर चाय और गरम कपडे का इन्तजाम कर लिया। पजाब मित्र क्षेत्र पश्चिमी पजाबा और तिया भक्त धनिरा की सम्मिलित मन्था है, जिसकी स्थापना इन गतांगी के आरम्भ हात में कुछ पहल ही हा गई थी। समय बीतन क गाय इनक दाताआ की सजा यज्ञ और ऋषिकण म एक छाटा-मा मुन्ना ही इसक मकाना का बन गया। विभाजन के बाद के दाता पूजे

पत्ते की तरह अपनी जन्मभूमि से उड़कर त्रिखर गए। अब वह इस स्थिति में नहीं थे कि क्षेत्र की पहले की तरह उदारता से सहायता करत। लेकिन ता भी जो कुछ हाता है वे करते हैं। यहाँ के भजनजी बडे हो मधुर स्वभाव क मिले।

वाचस्पति का छाटकर मैं मील भर पर अवस्थित पुरी म गया। अभी दा पाई घंटा दिन था। चाहा काइ गाइड की नई पुस्तक ले लू। गाविंद प्रसाद नौटियाऊ की किताबा और गिलाजीत की दूकान पर पहुचा। नाम सुनते ही मालूम हुआ हम वपों म बिल्छुडे मिले। उहान अपनी पथ प्रदर्शिका क नए संस्करण की पुस्तक दा। वहा से मंदिर के सेक्रेटरी श्री पुरुपांतम दगवाडी के पास गया। भरे नाम को सुनते ही वह जल्दी जल्दी काठे पर स नीचे उतर जाए और कहा—आप मील भर दूर नहीं ठहर सकत यहाँ हमारे अतिथि भवन म ठहरना हागा। मैंने कहा घाडे का लौटना है। उहान कहा—उसना लौटा दग हम दूमरा घाटा दग। बदरीनाथ से इतनी जल्दी जान की मरी भी च्छा नहीं थी। अतिथि भवन बना साफ सुधरा गया मकान था। उमके सबसे अच्छे कमरे म हम ठहराया गया। अमल तिन (१८ फरवरी) का रूपया दकर वाचस्पति को छुटटी दे दा। भाजन बदरीनाथ को भाजनगाला सं आता। गगासिंह दुरियाल ने बन्दीनाथ की आ कारस्तानी बनलाइ थी उसका प्रमाण मिल गया, जब वाममती चावल का भात सामने आया। बदरीनाथ का दान करना जरूरी था कयाकि कितने ही लाग त्रिख चुक थ, मूर्ति बुद्ध की है। दान क लिए सत्रस उपयुक्त समय सवेर का बतलाया गया जब कि मूर्ति का नग्न करके स्नान कराया जाता है।

वगवाडीजी ने गगासिंह दुरियाल को हमारा पथ प्रणक बना लिया। दुरियाल लाग बदरीनाथ के चार मुख्य मुरात्रिया म स है। दूसर तान है माणा के मारछा जागीमठ क जागियाल और डिमरी पुजारी बाह्यण। सबक उपर मलाबार का नम्बूदरी रावल हाता है।

उम तिन दापहर बाल गगासिंह का लिए मैं वमुधारा की धार चला। अमली उध्य माणा गांव जान का था पर माणा के सामने का पुल नूले पर लकडी की पटरिया का बठाकर टुस्त नहीं किया गया था। गगासिंह, पूजन

पर भारछा और दूसरे दुरियाल लोग उसी बात को दोहरात थं—बदरीनाथ भाट देग के थोलिंग मठ के देवता थे। भाटियो के भग्नाभक्ष्य खाने मे असतुष्ट हाकर वह मंदिर क दीवाल मे छेद करके निकल भागे। भोटिया ने पीछा किया। मानाधुरा के पास उह बहुत नजदीक आया देखकर बदरीनाथ ने अग्नि ज्वाला की दीवार खडी कर दी। लामा उससे भी पीछे नहीं हटे उनकी दाढी मूछ जल गई। तभी से तिब्बती लागा के मुह पर लाली मूछ का अभाव सा हाता है। हाथ म पटना निश्चित देखकर बदरीनाथ पाम म चरती चवरिया की पूछ म छिप गए। इस कृपा के लिए उहान करदान दिया कि चौरा की पूछ आज से पवित्र नमनी जाएगी। फिर वह इस स्थान म आए। यहाँ उम समय गिव-पावती रहन थे। बदरीनाथ का यह जगह पसंद आई और दण्ड करने की माचन लग। गिव के त्रिगुल क सामन इनकी बसे चलती, इगलिए बर का जगह छल का रास्ता म्बोकार किया। दुरियाला का गाव बावणा पास ही म पडता है। वहा अब भी वह गिला मौजूद है जिस पर सद्याजात गिगु का रूप कर बदरीनाथ क्या-क्या हा करन लग। गिव पावती टहलन क लिए निकले। पावती को वच्च का एजात म पडा देखकर दया आ गई उस उठाना चाहा। जतनाना गकर न मना किया, लकिन पावती अपन चात्मत्य की पीछा बदात करन क लिए तैयार नहीं हुई उठाने ले आई। मन्दिर म लग दिया। लाना प्राणी तप्तगुण्ड म स्नान करा गा। लौटकर जाए ता दरवाजा बर था। कितना ही खट-खटाए, लकिन भीतर म कोई जवाब नहीं द रहा था। पावती चिल्लान और झुपलान लगी। गकर ने मुस्तुरा कर कहा—“मैंन कहा न दुनिया म बहुत छ प्रपच है।’ पावता के कान लाल हा गा। गकर न गात करत हुए कहा—“गाति गाति दुनिया बहुत लम्बी चौडी है। थगडा मत करा चलो हम दूसरी जगह अपना घर बगाएंगे।’ पावती न कहा—‘मैं इमका बला बिना लिए नहीं जा सकती। तप्तबुण्ड के पानी का थप मे ठण्डा कर दतो हूँ, जिसम इम गतान का यहाँ की सर्वो म गरम-गरम पानी नहान को न मिरे।’ गकर न कहा—‘इममे इमका बुरा रहीं हागा, बचारे लाग नाहक नष्ट पाएंगे।’ लकिन, गौगी कुछ भी किए बिना जान के लिए तैयार नहीं हुई। उहने गाप दिया— अर मे इम भूमि म चार

उही होगा। 'दस हजार फुट के ऊपर चावल ?' जना प्राणी पांचे उतरते जब हाचनगगा नाम के सूखे नाले पर से गुजरे तो दग्ग लोग पीठ पर बास्ता लाद हुए जा रहे हैं। पावती ने पूछा— 'क्या लजा रहे हो ?' लोका ने कहा— 'भगवान् के लिए वाममती चावल।' शकर ने मुस्कुरा दिया। पावती के उलझे में लगी चुभ गई। उनका शाप भी यथ गया। यहाँ चावल नहीं पा दूमरी जगह में वासमती चावल आ रहा है।

रास्त में मटा के आसपास दो चार घर मिले। ये मारछा लोग थे। उन्होंने अपने खेतों में घर बना लिए थे। उबम्बर से अप्रल तक ठ महीने यह भूमि बर्फ से ढँकी रहती है। इस समय मारछा लोग अपने पशुओं और प्राणियों को खर खता दिया के परिचित स्थानों में नीचे चले जाते हैं। फिर जाकर खेत तयार करते उसमें जौ या आलू की फसल बाते हैं। माणा के सामने मातामूर्ति तक हम गए। मातामूर्ति की छोटी सा मन्दी हाथ ही में किसी ने उखाड़ी थी, और उसमें एक दरिद्र सी मूर्ति बैठा था थी। यही वाज्र बदरीनाथ की माता हैं। कलयुगी पुत्र माता का क्या सम्भार करे, जबकि उनका देवता भी अपनी माता को जगल में भूखी तपस्या करने के लिए बठान से बाज नहीं आते। वहाँ से लौटकर शाम को पण्डा पचायत ने चाय पार्टी के साथ राहुल साकृत्यायन का मान पत्र दिया। नास्तिफ राहुल जोर जास्तिवता की राठी खान वाले बदरीनाथ के पण्डे, कसा विराधिया का समागम ? पर मस्कृति घम के ऊपर है अभी का यह सबूत था। राशन और कण्टाल का जमाना था वहाँ चाय पार्टी में जितना लाग जमा हुआ था, व कण्टाल की सरया से वही जास्तिव था। फिर यहाँ केवल चाय पार्टी नहीं थी बल्कि जतना अधिक पकाना था कि दस भोज पार्टी कह सकते हैं। यह हमारे देश की मरहद के एक छोर के अतिम अस्थायी नगर में रहा थी। इससे यह भी पता लगता था कि तरुण पण्डा सन्तान कितनी आगे बढ़ी है।

१९ मई का निर्वाण दसल करता था। मकरे ७ बजे के करीब मैं मंदिर में पहुँच गया। मंदिर के तीन खण्ड हैं। सबसे पीछे गभगुट उसका बाद छाटा-मा मण्डप उसका बाद कुछ अधिक बड़ा मण्डप। गभगुट में नम्बूत्तरी रावल और उनका सहायक डिमरी पुजारा का छान और कोई नहीं जा

सकता, न कोई मूर्ति का हाथ लगा सकता। मध्य-मण्डल में द्वार में सटकर मैं खड़ा हुआ। मूर्ति बहा से तीन चार फुट से अधिक दूर नहीं हागी। बगवाटी जी की हिदायत के अनुसार त्रि की टम भी खूब बड़ा ही गई थी। मैं बहा से मूर्ति का अच्छा तरह देव सकता था। स्नान करान के लिए मूर्ति नगी कर दो गई थी। इसीका निवाण-स्नान कहत है। मूर्ति काल पत्थर की थी। आल, नाक, मुह त्रि एक बड़ा सा पत्थर का खण्ड मात्र म हाता है किसा न तराकर निवाण दिया है। लजिन इम तरागा नहीं कहना चाहिए गायन ह्योडे म जान बूधर ताडा गया या पयरा म फेकन यह हिस्सा निकल गया। बाएँ हाथ की भी एत तह पयर की निकल गद था। पचासनस्य बडा मूर्ति के इम हाथ का हथला पैरा पर थी। त्रि हाथ से अधिक पत्थर निकला था जो भूमिम्पग मुद्रा म मालूम हाता था। मूर्ति पचासनस्य भूमिम्पग मुद्रायुक्त बुद्ध की है इसम मुन कोई सन्दृ नहीं। रावल न पीछे बतलाया कि छाती पर जनेऊ की रेखा है। इसम जेन मूर्ति हान का भी सन्दृ हट गया क्याकि वह प्राय त्रिगम्बर हाता ह। एकांग चावर पहन बुद्धमूर्ति के चावर का रूप जनेऊ जसा मालूम हाता है यह मभी जानत है। पाम म और भी कई मूर्तिया थी जिनम नारदजा की धातुमूर्ति भी बुद्धमूर्ति मालूम हाती थी। रावल न बतलाया, कि पीठामन म कुछ रखाएँ हैं जा फूल पत्ते या अक्षर हा सकते हैं। पुरान रावल न और भी समयन किया। २१ मई का उहनि कहा— इस मूर्ति के बुद्धमूर्ति हान म मुये काद सन्दृ नहीं है। मैं सारनाथ और दूसरी जगहा म एसी मूर्तियाँ दखी हैं। उहनि यह भा कहा— १ नाच अलकनन्ता के साथ सट हुए नारद-कुण्ड म और भी मूर्तियाँ हैं। नरद के मन्त्रीना म धार के क्षीण हा जान पर नारद-कुण्ड अलग पर चट्टान से ढसा रह जाता है अत अत्रनाराधृत रत्ता है। मुय लागान बतलाया था, कि मुह मे तल भरकर बुल्ला करन से वहाँ प्रनाग अधिक हा जाता है, और मूर्तियाँ दिखलाइ पडती हैं। मैं वसा ही किया और पानी म पत्रा हूड वितना ही मूर्तियाँ दखी। २ बदरी-नाथ की मूर्ति बुद्ध की है यह पचासनस्य है, बाँहा और मुह का कितना ही पत्थर निकल गया है। छाती पर जनेऊ की भाँति रेखा, निर के निछत्र बचे हुए भाग म का मालूम हाता है। ३ मैं समझता हूँ कि प्राचीन बदरीनाथ-

मूर्ति के नष्ट हान पर पहले मेपेंकी बुद्ध मूर्ति लाकर उसकी जगह रख दी गई। ४ मूर्तिकला की दृष्टि से अखण्ड रहते समय मूर्ति बहुत सुंदर रही होगी।

कल्पना दोट लगाती बहने लगी हिमालय पर से तिब्बत के शासन के उठने के समय जा खूनी मघप हुआ था, उसमें तिब्बत वाला का विशेष पक्षपात हान में बौद्ध विहार और मूर्तियाँ भी जो के साथ धुन बन गई। इस प्रकार ६वीं या १०वीं शताब्दी में यहाँ के विहार की यह बुद्ध मूर्ति और दूसरी मूर्तियाँ खण्डित हो या या ही अग भग हो नारदकुण्ड में पहुँच गई। नारदकुण्ड रूपकुण्ड की लाशा की तरह ऐसी मूर्तियों का संग्रहालय बन गया। बुद्ध मूर्ति पर धातु या पत्थर की बदगेनाय की मूर्ति स्थापित कर दी गई। १८४१ ई० में स्तूपे आए। उन्होंने मंदिर के धन को लूटा और मूर्तियाँ का गला या ताड़ फाड़कर पानी में फेंक दिया। पुराने मंदिर का फिर जीर्णोद्धार करने की इच्छा हुई। स्थापना करने के लिए नारदकुण्ड से यह खण्डित बुद्ध मूर्ति हाथ लग गई। उस कुछ समय तक तप्तकुण्ड के ऊपर रखा गया। फिर गन्धाल के राजा ने उसके लिए वर्तमान मंदिर बनवा दिया जहाँ वह स्थापित हुई।

चाय पीकर कलकत्ता के डाक्टर हिमानु घोष और गंगासिंह दुरियाल के साथ मैं अल्कनन्दा पार हो ऊपर की तरफ भाणा गाव की चला। जमी नीचे से बहुत कम ही लोग आए थे। कुछ स्त्रियाँ इसी समय पीठ पर सामान या बच्चे को लिए अपने घरों को लौट रही थी। यह भारत का अन्तिम गाव माना काफी बड़ा है। ढाईसाल से ऊपर हा गण भारत को स्वतंत्र हुए, लेकिन यहाँ वाला का कोई चीज अगर नई दिखलाई देती है, तो यही कि पहले ही से घरा के टाटा रखने वाले इस गाव को अपने कुछ घर पुलिस चौकी रखने के लिए दन पडे। दारागा साहब भी मिले, जा असाधारण तौर से माटे थे। भला पहानी जगह के लिए यह गरीर उपयुक्त था? भाणा के बाद दूसरा गाव तिब्बत अर्थात् चीन गणराज्य में पडता था, इसलिए यहाँ पर भारत सरकार सनग रहना चाहती है। सरदार पणिककर ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि चीन का समर्थन करने के सम्बन्ध में भारतीय सरकार दो दला में बट गई थी—सरदार पटल, राजाजी तथा पुराने नीकरशाह सम

ज्ञान के विरुद्ध थे, वह समझते थे, कि इसमें अमरिका नाराज हो जाएगा । पर, नेहरूजी पक्ष में थे । उत्तर प्रदेश के मन्त्री जब मुख्य मन्त्री बाबू सम्पूर्णानन्द उत्तर के पड़ोसी से बहुत चिन्तित थे, इसलिए वह भी सीमा के मजबूत करने के पक्ष में थे । माणा गाँव के आगे अन्कनदा पर एक स्वाभाविक पुल है, जिसे भीमस्तन का पुल कहते हैं । कहते हैं आगे एक और भी इसी तरह का पुल है । सभी माणा वाले बदरीनाथ को तिब्बत वाला का देवता मानते हैं, जिससे यही सिद्ध होता है, कि वतमान बदरीनाथ म किसी समय एक अच्छा-खासा बौद्ध विहार था, जिसका सम्बन्ध तिब्बत के थोलिंग मठ से था । अब भी दानो मन्दिरा का सम्बन्ध है और दोनों एक दूसरे के पास भेंट भेजते हैं । तिब्बत का यह पश्चिमी भाग शताब्दिया से डाकुओं का शिकारगाह रहा । लेकिन, माणा जैसे हमारे व्यापारी उसके कारण अपन व्यापार को नहीं छोड़ सकते थे । इसमें लिए हथियारबंद होकर जाना पड़ता था । कम्युनिस्ट अभी-अभी आए थे, इसलिए अभी डाकुओं को उच्छिन्न नहीं किया जा सका था । एकाध ही वर्षों बाद माणावाला को अपन साथ बंदूक ले जान की जरूरत नहीं पड़ेगी ले जाने पर भी उसे सीमांत पर चीनी फौज चौकी पर रख देना पड़ेगा । पर उस वक्त तो बंदूक की बड़ी आवश्यकता थी । माणा वाले १५ बंदूकें चाहते थे, लेकिन हमारी बाठ की सरकारी मशीनरी अपने टग सहा चलती है, उसे किसी के जान माल की क्या परवाह ? किसी तरह की उदारता दिलाने पर एक बड़े सिद्धान्त की जवहेलता करनी पड़ती—भारत की जनता से यहाँ की सरकार की जमा खतरा पहले था, जान पड़ता है, उसे वतमान सरकार भी वैसा ही समझती है इसलिए जनता का वह हिट्या करने रखना चाहती है, और अंग्रेजा के हथियार कानून म जरा भी ढिलाई करने के लिए तयार नहीं है ।

माणा से लोटकर मध्याह्न भाजन में मिच-पजाब-क्षेत्र में भागतजी के यहाँ किया । उन्हें बष्ट हाना, यदि उनके आतिथ्य का छोड़कर अतिथिगाला में आ जाता । यहाँ सभी चीजें मँहगी थी । आटा ढाई रुपये मेर से क्या कम होगा । दूसरी भी चीजें जा चमाली से माटर से उतर या गरड (अल्मोडा) से सच्चरा पर होकर यहाँ आती थीं । भाड़े के मार बहुत मँहगी हो जाती

थी। निश्चय ही सदावर्तों के लिए यह कठिन समय था। जिनके रुपये मेरे लिए वह सौ का भोजन दे सकते थे, उतने में अब बीम को भी नहीं दे सकते। फिर सिंध पंजाब क्षेत्र तो ऐसे दाताओं का था, जिनके नीड उजड़ चुके हैं।

लौटकर बदरीनाथ के पुराने कागज पत्र देखने की इच्छा प्रकट की। जान पड़ा अधिकांश कागज पत्र जागी मठ में हैं। बगवाड़ीजी से कहने पर मालूम हुआ कि वहाँ उमका काफी ढेर है। यहाँ हम १७वीं सती की बहियाँ मिलीं। इनमें चीजों का भाव ही नहीं, बल्कि कभी कभी कितना मुकदमों में रावल का दिया फैसला भी दर्ज था। उस समय दास प्रथा थी। हासकता है दास-गसिया के नये विनय का भी इसमें जिनका हा। गोरग्या गामन के पहलू और उसके समय का भी कागज पत्र मिलेंगे तिनसे गन्वान् का इतिहास पर प्रकाश पड़ सकता है। हमारे विश्वविद्यालय में हर साल डॉक्टरों के निकालने की हार्द लगी हुई है जिनमें अधिकांश 'हल्दी न जान पिट करी, रंग चाखा जाए' के अनुसार चटपट पी एच० डी० या डा० लिट० बनाना चाहते हैं। क्या उनमें से कुछ का जोगीमठ का अभिलखा केदारनाथ बदरीनाथ के पण्डा की बहियाँ के अनुसंधान में नहीं लगाया जा सकता? मैंने बगवाड़ीजी को बहुत कहा कि अकनूवर में नारदकुंड के भीतर की मूर्तियाँ की जाच पटताल हानी चाहिए पर अभी तक उसके बारे में कुछ नहीं हुआ।

मंदिर का घाटा और घोडा की तरह काम न होने से घास चरने के लिए बयावान में छाट दिया गया था। यहाँ घोड़े कभी कभी महीनो जगली घाटा का जावन बिताते हैं। गाम ही गंगासिंह को ताकीद कर दा गई थी कि बड़े सबरे ही घाड़े का ले जाना।

२० मई के सबरे गंगासिंह दुरियाल घाटा लेने गए। मैंने साचा था ७ बजे चल पड़ेगे पर हम बदरीनाथ से निकलने में बहुत देर लगी। बगवाड़ीजी हर तरह की सहायता देने को तयार थे। दा ही तिन में यहाँ कितने ही मित्र बन गए थे जिनके वियोग का मन पर असर हाना ही था। सिंध पंजाब क्षेत्र में भाजन करके हम वहाँ से ११ वज रवाना हुए। उतराई ही उतराई थी, जिसके लिए पैर तयार थे। सूखी काचनगगा पार कर हनुमान

चट्टी छाः जट्टी हरियाली देखन क लिए उतावले हा विनायक चट्टी पर पहुच । गगासिंह पाछे रह गए थ, इमलिए भी थोणी प्रतीक्षा करनी पडी । यही माणावाल कुछ लाग मिल गए । वह कहो लगे, हजारों वर्षों स डोरा और भेट वजरिया का लकर हम गमिया म अपने गाव म आते और जाडा मे नीच चमाली जीर आग चले जात हैं । पहले कभी वहाँ जगल रह होग, जिमस हमार पगुओ का चरने का आराम था । उस समय बोधा होन के लिए माटर नही आई थी, जब ता सिवाय वहा वाले लोगा की गाली मुनन क हमे कोई लाभ नहीं है । हमार पगु किसी के छेन पे चले जाऐं ता सिरफुटीवल हा और जगल म जाऐं, ता जगल । जाखिर दुखियाल लाग भी ता नीच नही जात । वह विनायक, पाण्डुकेस्वर म ही अपना जाडा वित्त देने हैं । उन्होने विनायक क सामन के देवदार और दूसर जगल का खिल्ला कर कहा, जि सरकार यही हम भूमि दे द और हम अपन लिए जाडा का गांव बसा लें । यह विल्कूल उचित माग थी, और जनहित का हृदय म ग्यन वाला सरकार क लिए यह करना अनिवाय था । पर हमारी सरकार की मगीनगी म किसी का समथन की शक्ति है इस पर मैं विश्वास नही करता । पाँच वष बाद भी आज माणावाले उसी चिन्ता म धूः रह हैं ।

पाण्डुकेस्वर म जरा हा ठहरजर कुछ फाटो गिय, गिम्भ माणा की एक मारछा मुदरी कपडा बुनती भी थी । नीती और माणा दाना ही मोन रुमर या किरात जाति क लागी की बस्तिया हैं । यह लाग तालछा और मारछा का जातिया म विभक्त है । तालछा एक तरह की गढवाला बोलत हैं, और मारछा दुभापिया है । यह तालछा की भी भाषा बालते हैं और अपनी भाषा म । मारछा भाषा किरात भाषा है । पानी का वह 'ती' कहते हैं । माणा से आग का एक निजा पडाव तीपानी क नाम से मगहर है अर्थात् एक ही अर्थ क दा भाषाआ क गल को जोड़ गिया गया है । पानी के लिए ती गल चम्बा क लाहूः से लेकर आभाम क नागा लागो तक म मिलता है । किरात लाग मगागियन थ, यद्यपि उनका भाषा का चीनी और तिब्बनी भाषा से अस्तुतः का सम्बन्ध है, लकिन इनके मुखो पर हलकी-सी मगालायित छाप देखकर लोग उःट तिब्बनी समथन की गलती करत हैं, य तिब्बती नही हैं यह मारछा लोग की भाषा बतलाती है । मारछानिया सजत यकन वैरो तव

लटकती एर आदनी लगाती हैं जिसका सिर के सामन का भाग कमखाब या दूसरी तरह म बहुत जलकृत रहता है। जान पडता है यह उनका बहुत पुराना भेस है। गायद कत्यूरा रानियाँ चान्दर स इस तरह का सिंगार करती थी, अथवा तिब्बत की रानियाँ।

हम पौन ५ बज घाट चट्टी म पहुँच गए। जाग जचठी चट्टी दूर मिलता और जाशी मठ छ ही मील था, जहाँ ठहरना मुश्किल था इस लिए रात का घाट ही म ठहर गए। जाज घाट पर कहीं चढन की जरूरत महसूस नहीं हुई। रात का उसका खिलान के लिए दम-बाग्ह स्पय की घास आई जो भी आसानी स न मिलनी यदि गगार्सिंह कहीं मे उसका जुगाड न कर लात। घाट चट्टी से थाना ही उपर जलकनदा को पार करन के लिए एक पुल बना हुआ है, जिसका पार कर हमकुण्ड और फलावर बेली (पुष्प उपत्यका) का रास्ता जाता है। फलावर बेली परमान क त्तिना म हजारों तरह के फूल का उद्यान बन जाती है। हमकी रयानि जब भारत स बाहर भी पहुँच चुकी है। हमकुण्ड बडे ही रमणीक स्थान म एक प्राकृतिक सरोवर है। किसी सिक्ख भक्त न इस देवकर ग्रथ साहब स बाणी निवालकर सावित कर लिया कि दसमेग गुरु गाबिर्सिंह न पिछले जन्म म यहाँ तपस्या का थी। चलो सिक्खा का भी हिमालय एक मुन्दर तीथ स्थापित हा गया नहीं तो यह बडी कमो रह जानी। जैना का भी कां स्थान ढूँढना चाहिए। तीथयात्रा के बहाने लागा का प्राकृतिक सौन्दर्य म स्नेह हाता है उनम यात्रा के लिए साहस उत्पन्न हाता है। हमकुण्ड यहाँ स १२ मील बतलाया जाता था अर्थात् उताना ही जिनना बदरीनाथ।

जोगीमठ—२१ मई का सामवार का दिन था। जोगीमठ म कुछ काम भी था सामकर रावल वामुन्व म मिलना था जोर आज ही आ यड जाना था। हम ५ बज ही चल पडे। विष्णुप्रयाग तक पदच चलाकर घौलीगंगा पार जोगीमठ की चढाई गुरु हुद। घोडा काम जाया। घौला गंगा नौतीघुरा स जाती है जोर जलकनदा माणाघुरा स। घुग यहाँ डाटा (जान पास कातल) का बहते ह अर्थात् जहाँ पर मरम नीचा समझकर किनी पहाड के रोड का पार किया जाता है। न दाना घुरा को पार कर तिब्बत म जान का रास्ता है। दाना नदिया के साथ की दूरी जोर दाना की

घाराजा क दखन पर यह कहना मुश्किल हा जाना है कि इनमे मे कौन गंगा की मुख्य धार है। आजकल ता अलकनन्दा हा का माना जाना है। अन्ध कग का नहीं, बल्कि कुवर की अलका का सश्लिप्त रूप है। और नन्दा नन्द अर्थात् नन्द का। पावती, गौरी अपन नहर म नन्दा क नाम म ही प्रसिद्ध थी, इसलिए उह नन्दादवी कहा जाना है। इनन नाम मे प्रसिद्ध गढवाल कुमाऊँ की सीमा पर अवस्थित गिखर आजकल भारत का सर्वोच्च गिखर है। कलाग के पास वही कुवर का अलका पुरी थी। अलकनन्दा की उपत्यका म बदरीनाथ का मन्दिर है जा पन्हे बौद्ध विहार था। यही पाण्डुकुवर क प्राचीन मन्दिर भी है जिह बौद्ध नही कहा जा मकता। घौंगे की उपत्यका म जागीमठ म कुछ ही मीग ऊपर तपावन है जहा गरम पानी का कुण्ड और स्नान द्वारा ध्वस्त परित्यक्त कुठ पुरान ममय क मन्दिर भी है। कत्यूरिया क अभिग्या म तपावन जोर बन्नीनाथ का उल्लेख जाया, जा टमक लिए भी हा सकता है। भविष्य बन्नी की कल्पना गायद भूत बदरी के खयाल स ही गमक माय जाती गई। यह बदरी घौंग की उपत्यका म है इसलिए प्राचीन एनिहामिज मामग्री क विचार स घौंग का महत्व कम नहीं है।

जागीमठ म पहल मैन नरनिह और दूसरी क्यूगी-वाल की मूर्तिया जोर मन्दिरा का दखा। ४१ बप पहले की यात्रा स खयाल आता था, यहाँ जोर अधिक मूर्तियाँ उस समय मैन दखा थी। रावल मानव न भी इस वान का समयन किया। जान पडता है पुरानी मूर्तिया के प्रमा या सीतागर यहाँ पहुँचन और बुधक म जरदिन मूर्तिया का खिमकान गण। उहनि बनलाया कि मैन यहाँ पन् एक मूय की खण्डित मूर्ति दगी थी पर वह जय नहीं मिलता। रहला क आकर मूर्तिया की खण्डित बग्ग की बात पर धडालु हृदय जल्दी विश्राम करना नहीं चाहता, बघाकि कम दवता का खिब गकिन पर बग्ग लगता है। लकिन वही भी दवता का मूर्ति खण्डित हान पर वह बटग ता लगगा हा। सामनाथ का मूर्ति खण्डित खे विश्वनाथ की मूर्ति खण्डित खे उवन क महाकाल की ना बहा हालन खे कि बग्ग गगन म कौं तब उह बचा मकन है? दवताजा का खुद की यनी मर्जी हागे। रावलजी न बनलाया, कि तपावन की मूर्तियाँ खण्डित हैं किन्तु

जागीमठ की उपलब्ध मूर्तियाँ प्रायः खण्डित नहीं हैं। इसकी व्याख्या यही हो सकती है कि पुजारियाँ न रहेला को काफी रपया या मूर्तियाँ को छिपा दिया होगा। रावलजी ने यह भी बतलाया कि थालिंग से प्रतिवप चिट्ठा आती है जिसमें बदरीनाथ का 'अपना देवता' लिखा रहता है।

जागीमठ के इलाके में सरकार की जार से फल उगाहने का कोई प्रबंध नहीं किया गया। जपन ही लागा ने सेब, नारंगी और दूसरे फल पैदा किये हैं। उनके स्वाद और आकार से मालूम होता है, कि यह फल क लिए अनुकूल स्थान है। लेकिन सर्वांग है दुलाई का। जब तक जागीमठ या उसके नीचे तक माटर की सड़क नहीं जा जाती तब तक इस विषय में कोई प्रगति नहीं हो सकती। रास्ते में मुझे एक सज्जन मिल गए। उन्होंने पिछले माल के कुछ सब खाने का देने हुए कहा—हम अधिक दिना तक इन्हें सुरक्षित रखने की विधि नहीं जानते। अगर भूखर खाद करके उनमें जाड़ा की बफ जमा कर ली जाए तो फल का सुरक्षित रखने की समस्या नहीं रह जाती। लेकिन यह खर्चीली चीज है जिस साधारण गृहस्थ कैसे उदास्त कर सकता है? बहतर यही होगा कि मोटरों यहाँ आ जाएँ और उसी दिन यह फल काटद्वार और अगले दिन दिनी पहुँच जाएँ।

जागीमठ के गकराचाय की गद्दी दा बाइ सी बफ तक सूनी रही। बहुत पहले कसूरियाँ के समय यहाँ गकराचाय नहीं बल्कि पाशुपता का पता लगता है। कसूरी राजा परममाहेस्वर थे इसलिए गकराचाय के समय यहाँ बाइ उनका बेटा मठ कायम हुआ होगा यह सदिग्ध बात है। हा कसूरियाँ के बाद पाशुपता की प्रधानता का गकराचाय के मतानुयायियों ने छीन लिया। उसी समय तपावन या बदरीनाथ का बदरा मंदिर इनके हाथ में आ गया। फिर, जसा कि बतलाया १८वीं सदी में गद्दीघर सयामी के मग्न पर नम्बूदरी ब्राह्मण का गल्वाल के राजा ने गद्दी पर बठा दिया। दूसरे तान तिगाथा में गकराचाय के तान बडे-बडे मठों के रहते उत्तर को नूय दम्बर बगतिरिया का यह दान सटती थी। भारत घममामण्डल के स्वामी नानानन्द ने इसने उद्धार का उपक्रम किया और अपने निप्य स्वामी दयानन्द का गकराचाय बनाना चाहा। लेकिन गकराचाय की गारण गोबधन, गृगरा मठों के गद्दीघर दण्डी सयामी होने हैं और नानानन्द तथा

उनके गिप्य गायद बाकायत अदण्डी सयामी भी नही थ इसलिए बाकी ताना गग्गचार्यों का ममयन उन्हें प्राप्त नही हा सकता था । कुठ भी हा सवाल उठाने वाले सयामी जानान द ही थे । जब अन्तिम निणय का ममय आया, ना उत्तर के ही एक दण्डी का पक्ष दृढ मालूम हुआ और गग्गपुर क पक्षिपावन सरजूपारी कुल के एक विद्वान् और अच्छे अर्थों म चलन-पुर्जे महापुण्य का यह गद्दी मिगी । सूनी गद्दा थी, नय गकराचाय का मारा प्रबन्ध करना था जोर इमम गक नही उहाने सूनी गद्दी का अच्छी तरह आवाद कर दिया । जोगीमठ म पीठ बन गया, ऐकिन यहां रहकर मठ का पोषण आर सवधन नही हा सकता था, इसलिए ज्यातिप पीठ क गकरा चाय का अधिवनर वाह्य रहना पडता ।

जागीमठ स चलकर हम पनाटी चट्टी म जाए । यहां दूकानदार क घर के पास हरी हरी प्याज दबी । मैंने कहा—तुम्हारे यहाँ सामान लेकर भाजन हम तभी करेंगे जब प्याज म मे हम कुछ दा । उन म क्या उजुर हा सकता था ? आखिर मभी घमघ्वजी नोच के यात्री पाम म प्याज के खेत क बारे म जानन हा हाग, कि इमन अपने खाने क लिए इस लगा रखा है । यात्रिया का राव सचमुच ही उत्तराखण्ड पर इतना पग है कि कुठ महीना क लिए लाग मास मछगी ता क्या प्याज-लहमुन से भी अपना सम्बन्ध बिच्छे कर लेन है । हालाँकि ऋषिया न दाना हाय उठा उठा कर घापणा की है— ' उत्तर माम भाजनम् ' । वह समय दूर नही है, जब प्याज लहमुन ही नही मुलभ हा जाएग, बल्कि इन चट्टिया म अण्डे और आमलेट भी मिलन लगेंगे, पका पकाया मांस और मठली भी तयार मिलेगी । ऐकिन, हमारी पीढी का ता अभी उन दिना का हसरत की निगाह म ही दग्गना है । दूकानदार न बहल बगिया चावल दिया था, लीग कितने हा दिना बाद प्याज डाल कर गगार्गिह न आलू का जो सरकारी बनाई थी वह ता स्वर्गीय व्यजन-भी मालूम हाती था ।

भाजन और तिथाम क बाद हम गरु चट्टी पहुँचे । अभी दिन था, किन्तु यात्रिया की भीड थी । देर न पहुँचने पर रात की ठिकान का मिलना मुश्किल हाता, इसलिए यही ठहर गए । आज २१ मील चल कर जाय थे । अब चमागा १३ मील रह गई थी ।

२२ को सबरे साढ़े ४ बजे ही चल पड़े। घोड़े पर चढ़े ही हाट के पुल को पार किया। हाट इधर के पहाड़ा में राजधानी या बड़े नगर का पयाय है। यहाँ का पुराना कत्तूरी कालका मन्दिर उसका समयन कर रहा था। हाट कोई बड़ा गाँव नहीं है। मठ में पहुँच कर हमने चाय पी और साढ़े ६ बजे चमाली में नीचे जम्पताल में गए। मुचम मिलने के लिए सुन्दरियालजी से डा० विश्वास कम उत्सुक नहीं थे। उन्होंने काग़िश की कि तुरन्त छूटने वाली बस मिल जाए लेकिन उसमें कोई स्थान खाला नहीं था। म'याह्न-भाजन के लिए डा० विश्वास अपन बँगले में गये। मैं सबभक्षी और डा० विश्वास मछली के प्रमी थे। वह अफमोस कर रहे थे यहाँ कोई खाने की अच्छी चीज नहीं मिलती, यद्यपि मोटर का अड्डा है। चमाली में मछली दुलभ थी और यहाँ से कुछ ही माल पर गाहना के महासरोवर में लाया राहू खानवाला की प्रतीक्षा कर रहे थे। लेकिन, डा० विश्वास का भोजन कम स्वान्ष्टि नहीं था, और जिस प्रेम के साथ वह सामने रखा गया था उसमें उसे और भी मीठा कर दिया था। अच्छे चावल का भात और जालू प्याज की तरकारी थी। खाकर विश्राम किया। निश्चय था कि ३ बजे वाली बस में जगह मिल जाएगी।

आजकल वन्रीनाथ से लौटे यात्रियों की बड़ी भीड़ थी। हम बस में बैठ गए, किन्तु किन्ना हा को उसमें जगह नहीं मिली। नन्दप्रयाग और कण प्रयाग हाते रद्रप्रयाग पहुँचे जहाँ हमारी परिचित माटर सड़क मिल गई। रास्त में एक गगह मोटर कुछ खराब हुई ता भी साढ़े ६ बजे हम श्रीनगर पहुँच गए। खडगसिंह जड्डे पर मौजूद थे और उनका यहाँ गर्मागरम भाजन भी तयार था लेकिन जिनके साथ छ घंटे हम बस पर चढ़ कर आए थे उनका भी हमारे ऊपर हक हा गया था। उन्होंने कहा आज ही कीर्तिनगर चल चलें। उहाँ की बात माननी पड़ी। सामान ढोने के लिए चादमा मिल गया और साढ़े बस के यानी चादनी रात में अलकनन्दा की ओर चल। पुल पार कर कीर्तिनगर में माटर के जड्डे पर किसी पेड़ के नीचे हम सा गए।

२३ का सबर ५ बजे ऋषिकेश का टिकट मिला। सूर्योदय से पहले ही बस खाना हुई। कीर्तिनगर में ऋषिकेश और चमाली से कोठगढ का सड़कें प्राइवेट बस वाला के हाथ में है। उनके लिए मुसाफिर फोर्ड कीमत

नहीं रखने। इसमें यात्रियों का बहुत कष्ट होता है। सारे भारतवर्ष के यात्री जिन रास्त चलते हैं, वहाँ सबसे पहले सरकारी रोडवेज की बसें चलनी चाहिए किन्तु बस के मालिक ऊपर प्रभाव डालते हैं, और यह काम होने नहीं पाना। दो बसों में हाड़ लग गई थी। एक तेज चलती भी नहीं थी और गस्ता भी नहीं छाड़ती थी। दूसरी उससे आगे बढ़ने के लिए फाड़ बाधे थी। दाना की हो-मूँहम धूल फावनी पट रही थी। रास्ते में व्यासी चट्टी पर दानो आर की बसें ठहरी। घटा भर विश्राम मिला। यहाँ रोटी तरकारी पूरी तरकारी मिल जाती है। समय भी उसी का था, इसलिए सभी खान में लग गए। हमारी बस में सभी तीर्थयात्री महिलाएँ घम कमाने के लिए चली थी, लेकिन दो घड़ी के मेल में न जाने उनके किम स्वाय का ठेस लगी कि वह सारे रास्त वागयुद्ध करती आई।

सारे ११ बजे ऋषिकेश पहुँचा। देहरादून का टिकट भी मिल गया, और बस भी तैयार थी। दापहर की घूप खोपड़ी की मज्जा का पिघला रही था। चल्दी से जल्दी यहाँ से भागना चाहता था लेकिन द्राइवर का उसकी पर्वाह नहीं थी। वह साढ़े १२ बजे यहाँ से चला और दो घंटे में २७ मील चल कर मैं देहरादून पहुँचा। ५० गयाप्रसाद गुल के घर पर पहुँचा। गर्मी का मार बड़ा परमान था, लेकिन साहित्य मध्य में भाषण देना स्वीकार कर लिया था। इसके लिए दो दिन यहाँ रहना जरूरी था। अपनी बेवकूफी पर पछताता रहा। गुलजी में यह सुन कर बड़ी प्रसन्नता हुई कि कमला बिगारद पान हो गई।

२४ का दिन में कुछ वर्षों का है इसलिए तापमान थोड़ा नीच उतर गया। फिल्म घान के लिए अतिरिक्त अच्चे आए।

२६ मई का मायी महमूद का दूहन निकाला। उनके पिता का बगला का बगल दायें हुआ था लेकिन यह बगल वर्षों पहले की बात थी। खर सिता तरह १२ गरकुलर राड में पहुँचा। महमूद का टाइफाइड हो गया था। बचारी रोगी मालो से कमर का राग में पाडित थी, पीछे उमा में उह अपना प्राण खाना पटा। दाना मित्र। बतलाया—अब हम यही रहना चाहते हैं। पतक-मूह में मन्मूय थी बहिन नत्र चिकित्सा का अस्पताय खान जा रही थी। उनकी बायी में ता गरपाधिया न नहीं दगल किया

किन्तु बाहरी घर में वह बैठ गए जिनका हटाना मुश्किल था। महमूद ने ता धन और तुरन्त यश कमान का रास्ता उसी वक्त छोड़ दिया, जबकि वह कम्युनिस्ट बन। किसी समय वह जवाहरलाल के प्राइवट सेक्रेटरी रहे। उस रास्ते से वह आज वही दूसरा जगह पहुँच गए हात। पर तु उह गरीबों का दुख दूर करने में शामिल होकर उसे हटाने का प्रयत्न करना था। डॉ० रंगादजहा भी अनुसूच पत्नी मिली था। दोनों का जाड़ी का जीवन भर एक साथ रहना चाहिये था। भारत में कैंसर का अच्छा हात न देखकर महमूद रंगीदा को मास्को ले गए लेकिन वहाँ से अपनी जानाआ पर पानी फेर कर अकेले लौटना पडा। एस तपस्वी से मिलन का किमका इच्छा नही हागा ?

२५ मई को मयाहल भाजन ५० हरिनारायण मिश्र के यहा हुआ। मिश्रजी का दशन पहिल पहिल १९४३ में हुआ था। तब वह यही के डी० ए० बी० कालज में अध्यापक थे। अब सेवाविरत और बूढ़े हा गए थे। उनका सारा जीवन अध्ययन, अध्यापन और शिकार का रहा है। अध्ययन अब भी जारी था। पुस्तकों का बहुत संग्रह था। दोनों ही कनोजिया हैं जिनकी बग़ावत में निरालाजी के अनुसार मास भानन विहित लिखा हुआ है। गुबलजी हैं जो बग़ावत को बान मानने में इनकार करते हैं मिश्रजी हैं जिनके बल पर अब भी कायकुजा को घनजा पहरा रही है। हर बार देहरादून जान पर मिश्रजी का जाग्रह कायकुजा भाजन के लिए हाता। लेकिन मैं गुबलादनजी के भोजन से कैसे इनकार कर सकता। निरामिय हान पर भी, सच कहता हूँ, स्वाद में वह कम नही हाता। यदि मैं अधिक खाकर हर बार पेट पर हाथ सहलात घर छोडता हूँ तो इसमें गुबलजी या शुक्लादनजी का दोष नही है। स्वाद ही ऐसा हाता है, कि दा कौर कम करने की जगह दो कौर और पेट में चला जाता है। पर मिश्रजी के आग्रह को भी ठुकरा नहीं सकता। और मास तैयार कराने में वह कायस्थ या मुसलमान भाव्या का कान काटत हैं। कहते हैं—हमार थाप-दादा न भी ता सैकडा पोडिया स यह भाजन किया है।

गाम का जुगमंदर म्युनिसिपल हाल में हिन्दा साहित्य समिति की बैठन का मभापतित्व करना पडा। नगर के १५० चुन हुए साहित्य प्रेमा नर नारी मौजूद थे। स्थानीय २३ साहित्यकारा को समिति ने सम्मान

पत्र' दिया। मैंने भी उह वधाइ थी। गोष्ठी मे दखन से मालूम हुआ, कि दहरादून मे साहित्यिका की सख्या कम नहीं है। यह जानकर दु ख हुआ, कि उनकी मिलन मख्या साहित्य ससद् मृतप्राय है। मिलनी के बाद जल पान का दत्तियाम था।

मसूरी—२५ का सवा ८ वजे स्टेशन से मसूरी की बस पकडी। सीजन का समय था, इसलिए बस बहुत जा रही थी, किंतु मसूरी वाला का सतोप नहीं। कहत थे—' इस साल यात्रिया की सख्या कम है। लाग छोट बडे हाटला मे ठहरत हैं वगले राली पडे हैं। इनमे राजा या धनी लाग नहीं ह इसलिए हमारी चीजे ज्यादा बिकती नहीं। उनकी शिकायत मात्रूल थी।

२ मई का हमन मसूरी छापी थी, और २६ मई का वहा पहुँच रहे थे। पीन १० बजे बस त्रिनेग पहुँची और मामान भारवाहन की पीठ पर रख कर ११ बजे घर पहुँचा। कमला के विगारद पास करन का समाचार पहले ही मिल गया था। इधर कई दिन से उनकी नकसील फूट रही थी। भुक्त-भागिया न इसका अच्छे से अच्छा उपचार बनलाया, लेकिन कमला उसे करन के लिए कभी तैयार नहीं हुई। जब नाक से खून बहना, तब याद जाती। कमला के चचेर भाई मंगल ८ मई का ही यहा पहुँच गए। मालूम हुआ कि महादेव भाई का दुवारा आपरेगन हुआ है। २६ दिन की डाग पडी हुई थी उससे भी भुगतना था।

पहला सैलानी

मौसिम

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के साहित्य याजना का काम चल रहा था। डॉ० मलयकेतु फ्रेंच स्वयं शिक्षण लिए शुक्र थे। गीलाजी चीद के उप-यास का 'मकरा' द्वार का नाम से अनुवाद कर चुकी थी। भारोस का माधव बाजपेया राम्या राला के प्रसिद्ध उप-यास जान त्रिस्ताफ का अनुवाद करने के लिए तयार थे। माधव भारोस में पदा हुए थे, जहाँ अग्रेजी और फ्रेंच दाना बालचाल की भाषाएँ हैं। उनका हिन्दी पर भी पूर्ण अधिकार था। आगा बंध रही थी, कि हम दस साल में बीस अच्छी अच्छी पुस्तकों का अनुवाद हिन्दी का दे सकेंगे। लेकिन सभी बात अनुभूल नहीं थी। कुछ महत्वपूर्ण गरिधार बन्धन हुए थे ता भी गाड़ी आगे निकल सकती थी पर छापन की दिक्कत साहित्य सम्मेलन की तरह ही यहाँ भी पन हुई। इसी को दगकर गीलाजी ने अपने अनुवादिन उप-यास को स्वयं प्रकाशित करने का निश्चय किया।

इस साल कमला का दा परोक्षाआ का तयारी करनी थी—साहित्य रत्न प्रथम वर्ष और एफ० ए०। मैं अभी से पुस्तका को देखने के लिए आर दना शुरू किया।

जून का महीना शुरू ही हानवाना था। मसूरी नेहरा में २६ जून का वर्षा का आरम्भ समया जाता है। हमने अपनी ब्यारिया में गीरा मेम फरासवीन आदि तरकारिया का बाज का लिए। जालू में आगा की थी, लेकिन पिछले तजबने उसमें असफल मिद्ध किया। बक में उधार के छ सी

रूपया को निकाल देने पर अब १६ मी रह गए थे, यह चिन्ता की बात थी। उधार जेना मेरे जीवन क सिद्धांत के विरुद्ध है। अब मिलनेवाले लोग जाने लग। २६ का ५० हरिनारायण मिश्र आये। साहित्य की भिन भिन गाथाओ म उनकी रुचि ता है ही, साथ ही वह उर्दू के गायर भी है और फारसी का उनका अध्ययन बहुत गम्भीर है।

३१ मई की रात का खून वर्षा हुई। सबर मालूम हाना था, बपा गुरु हा गइ। इस माल यद्यपि बपा पहले आरम्भ हुई, ता भी इसे मौसिम का आरम्भ नहीं कहा जा सकता। और कामा के साथ पत्र पत्रिकाआ क आग्रहा को पूरा करने के लिए कुछ लेग लिख दना मेर लिए आवश्यक था, इससे कुछ पमे भी मिल जात थ जो ग्यागी सोसे क लिए कम आकषण नहीं रमते थे। लकिन लेस अधिकतर में ऐसे ही गिरता हूँ, जा किसी पुस्तक के जग बननवाल् हा। बदरीनाथ उदारनाथ पर दा लख लिखे।

२ जून को श्री मुकुन्दोलाल जी (वरिस्टर) आय। वह बराबर यहाँ नहीं रहत लकिन उनकी जग्नेन पत्ना अपनी चारपाइ घर पुन पुत्रिया को लेकर सारी गर्मी बरमात यही बितान क लिए जा जानी थी। उस समय वह बरली स दा-तीन बार बन्दर आते है आर हर याना म उह मर ऊपर बृषा मिय बिना नहा रहत। पति पत्ना का कुत्ता का बटुत गोन था। एक उनक पाग ग्रेटडेन बुतिया बटी सुन्दर थी, दूसरे भी बड जात के कुत्ते थे वह भी गर्मी बिनान क लिए यही आत थ। पिछली बार कुत्ते का जिक्र आया था। वह कह रहे थे हम कुत्ते का बच्चा द मरत है लकिन अब ता भूतनाथ इस घर म प्रतिष्ठित हा चुक ब और कमला का स्नेह भी उहें मिल चुका था। उनक आ जान पर फिर घटा दा घटा साहित्य और बला के ऊपर बान चलत समय बीतन दर नहीं लगनी।

३ जून का स्वामी मत्यस्वरूप जी आए। हमारी याजना म संस्कृत हिन्दी और हिन्दा हिन्दी योग भी थ। बहन पर वह उमम सहयाग देन के लिए तयार हा गए। स्वामी मत्यस्वरूप जा पञ्जाब क गाम्ना और बी० ए० एनर अपनी विद्या मे मत्पुष्ट न हा बनारस गए और एक युग म वहाँ रह कर उहाने पाय वेदान्त और दूसर दगना का अध्ययन किया। ज्ञान की पिपामा क साथ साथ उनम विचारा की उत्तारता है और विद्या लिए कुछ

करना चाहते हैं। मैं भी इसके लिए उत्सुक हूँ कि उनके ज्ञान का कुछ उप-योग हाना चाहिए। वैसे अध्यापक के तौर पर वह उसको इस्तमाल करते हैं लेकिन विद्या लिखकर यदि कागज पर उतरे तो और भी उपकारक हो सकती है।

पैसे के पानी को सूखते देखकर चिन्ता मुझे भी होती है, क्योंकि आत्म-सम्मान का मैं अपना सबसे बड़ा धन समझता हूँ बल्कि कहना चाहिए उसे प्राणा से भी अधिक मूल्यवान मानता हूँ। मैं निम्नी तरह मन का समझता हूँ। कमला एसी स्थिति में घबराती लगती। उनका घबरावना उचित भी है, क्योंकि घर और अतिथियाँ का सत्कार उड़ चला पड़ता है। मुझे यह देखने के लिए भी फुरसत नहीं कि किस चीज की जरूरत है और क्या खर्च हो रहा है। बहुत बार कागज का कि खर्च पर नियंत्रण किया जाए लेकिन महीने में पाँच सौ रुपये से कम खर्च की नीयत नहीं जानी। मोचता था जब पहली बार तिब्बत गया था तो बीस रुपये महीने में भी काम चला जाता था। पीछे सौ रुपये भी पर्याप्त मालूम होता था। लेकिन आजका पाँच सौ भी तो द्वितीय विश्व युद्ध के पहले का सवा सौ रुपये ही है। लेकिन ऐसा ममझ लें कि क्या अभाव की पूर्ति हो सकती है ?

कुमठेश्वर जी अब काम कर रहे थे। काम करनेवाले तो जा गये थे लेकिन जब देखा कि नागाजुन जी के वर्धा ज्ञान पर भी अभी तक सिर्फ एक फाम छपा है तो हिम्मत छूटने लगा। नागाजुन जी ने लिखा था— एक कम्पाजिटर है और प्रूफ रीडर है ही नहीं। यदि राष्ट्रभाषा का प्रेस नागपुर में हाना तो कोई दिक्कत नहीं होती। अधिक काम होने पर दूसरे प्रेस में दिया जा सकता था। प्रेस की कोई मशीन विगडन पर बहा मिस्री मिल जाता। कम्पोजिटर और प्रूफ रीडर बकार फिर रहे थे इसलिए उनके मिलने में कोई दिक्कत नहीं होगी। मैंने आनंदजी को कहा था—समिति के दूसरे विभाग हिंदा नगर के लिए काफी हैं प्रेस को उठा कर नागपुर ले जाइए। लेकिन आनंदजी का सब चीजों को आखों से सामने देखने का लालच होता है।

ऊपर की काठी (इन हिल) में बहुत कमरे ग्याली थे यदि कुछ और साहित्य प्रेमी मित्र भी जाकर वहाँ रहे तो क्या हुआ। बनारस के

उन्च प्रताप काजेज के अध्यापक श्री मानीमिहू आए । फिर श्री कहेयालाल प्रभाकरजी भी आ गए । उस तरह धीरे धीरे हमारा यह माहल्ला साहित्यिका का माहल्ला-मा जान पडन लगा ।

'कुमाऊँ' और 'गढ़वाल' का मैंन अतिवन्तर शहर मे लिखा था । कमला और मंगल उनका टाइप करन म लग । कमला का जालिबत्ती पर हाथ पटा हुआ था किन्तु कितन हा महीना म अन्धाम छूट गया था । मंगल रमिगटन के इस हिंदी टाइपराटर स अन्धस्त नहीं थे ता भी ६ जन को उहीन पाच पृष्ठ टाइप किया ।

वक हिमाचल की देखकर जा चिन्ता हा रही थी वह माल भर के लिए दूर हुई जब किताब महल न माच १८५१ तक की रायल्टी म ४३६२ का हिमाचल मेजा ।

हिन्दी का लेखक ठहरा और उन्नी के लिए एक तरह से अपना मारा समय द रहा था । रागापालाचारी न मंत्री के तौर पर वक्तव्य दिया कि गामनीय सेवाजा म हिंदी की परीक्षा अनिवाय नहीं है । महाद्व भाई इमम बहुत खुश थे । वह समझन थे हिन्दी को ही यह स्थान क्या दिया जाए ? पर हिन्दी के अनिवाय न हिन का मतलब था अंग्रेजी का अपनी जगह स जरा भी टम स मस न हाना ! अंग्रेजी का प्रयत्न या अप्रत्यक्ष रूप से किसी तरह का समर्थन प्राप्त हा मैं इमे देखन क लिए तैयार नहीं था । अंग्रेजी को इस अनिवायना क कारण नौरिया पर कुछ लागू का एकाधि-पाय हाना जा रहा है यह भी महन करन की खान नहीं थी । यह ता मैं समझ करता था, कि किसी भी राज्य की विधान-सभा की स्वीकृति क बिना हिन्दी का उसके लिए माय नहीं करना चाहिए । प्रदेश क भीतर अपनी भाषा छोट कर हिंदी का प्रवण बिल्कुल नहीं हाना चाहिए । लेकिन, अन्नप्रान्ताय, केन्द्र और प्रान्ता तथा देग और विदेग के माय क कारोबार म हिन्दी का क्या न स्थान दिया जाए ? क्या वहाँ अंग्रेजी जमी रह ?

१० जून का श्रीमती मत्यवनी मल्लिक अपन पुत्र और भोजि क माय ब्याइ । मसूरी उनक गिा नई चाज नहीं थी, लेकिन 'हनकिष्प' जस्वर था । मत्यवती जी काकाग महिगा हैं । हिन्दी की लेखिका, और मुपमा मयी काशीर दर नगरी श्रीमदन की कमा हैं । दूसरे पुत्पन्नी भी 'हन

क्लिफ ' व दरवाजे पर खड़े होकर जब मामन हिमालय की घबल गिखर पत्तिया जीर उनके नीचे तह पर तह चन्ती पवतमालाजा को देखत ता कवि वनन की कागिश करन भरे चुनाव की बड़ी प्रशमा करते । हालाकि चुनाव करन समय मैंन इसका रवाउ नहा किया था ।

खुवानिया फली हुई थी । यहा वह जून म फन्ती है । और तिचली जगहा म मड म । यहा ता साधारण मी खुवानिया क ही वृक्ष हैं जिनके फला म एक तरह का कमलापन जाना है । विषय खुवानिया विलकुल मीठी बहुत बडी और दक्कन म कमनीय कठवरवाली हाता है । लेकिन उह भी आदमी साल म एक दा तिन मे अविश न्ती खा सकता मन उग्र जाता है । कहीं जाम जिससे पेट भरे जीर जी न भर और क्हा उससे उल्टी खुवानी । भूत न खुवानिया दखा तो खूब हूण हूण करके पट भरा । असरु वाट खूब क करना रहा ।

११ जन को स्थानमिह के यहा मामा खान और तिब्वती चाय पीने की दावत थी । चार मील जाना पन्ता था । लकिन वहा जान म भरा मन कभी नही हिचकता था । जाकर तिब्वती लोगा म उनकी भाषा म बातचीत करन का मौका मिलता फिर उनसे तिब्वत के बारे म कितनी ही बातें मालूम हाती । मामा की गीजान मेरी ही तरह कमला भी हैं । कल्मियाग म बहुत स चीनी और तिब्वती रेस्तारा ह तिनम यह कई तरह की प्रना करता । कमला न बचपन से ही उह खाया था । पर मेरी यह धारणा गलत है कि सभी मांस पसन्द करनवाले जान्मा मामो क जरूर दिलदादा हागे । वहा एक सागपो (मगाल) गंग (पडिन) भी मिले जिहाने भी कुछ बात बतलाइ ।

विनाशनी को अब यहाँ रहना पसन्द नहा आ रहा था । एक तो उनका स्वास्थ्य ठीक न्ती था दूसरे वह ज मजात नता थें इस जगल क नालापानी म रहना कम पसन्द जाता ?

बानपुर क साथी सताप कपूर आए । उन्हाने बतलाया— पुष्पात्मजी अपन साधना प्रेम का बढाना चाहत है । उसम एक लाख रुपये पहले ही लग चुक है । प्रवागन का भी हाथ मे लना चाहत हैं पर प्रस का काइ प्रबन्धक नही मिलता । मैंने कहा— “विमलाजी क्या नही इस काम का हाथ म

नेनी। डबल एम० ए० का बुद्धि बकाव रहने मे क्या लाभ ? काम काम को सिपलाना ह सभाल लें।" दरअसल अखाडे से बाहर रह कर पहलवानी पच बनलाना बहुत जामान है। गायद अपन मत्ये पडनी ता में भी बगलें थावता।

१२ जून का बमला की नवसौर फिर पटी। खून के गिरने मे चिन्तित थी, आर मुझे उन पर झुझगाट आना थी। कहता—' एसा व्यक्ति नहीं दता। अपना नगाई के लिए भी बुद्धि म साचन या तयार नहीं हातो। डाक्टर न दवा दी है उस भी जमे हो खून बन्द हुआ, छाड दिया। डाक्टर कहत है—केल्सियम और प्रिटामिन की कमी है। पर उन्हें लने के लिए तयार नहीं। आश्चर्य आर दुःख हाता है। जीवन भर के लिए अपाहिज बनने का यह रास्ता है लेकिन कौन समझाय ? बजन आठ पौंड घट कर सो पौंड रह गया है। सिरका की गिरायत बराबर रहती है।'

बमला मिटिंग मिलाइ बडाइ अच्छा जानती है। घर म मिलाइ की मगीन हा तो बगुन म सुभात रहने हैं। मिगर की मगीन हडकी और अच्छी हाती है लेकिन लाभ दूना दसलिए हमन स्वस्थो 'उपा' २०४ मपये म मोगला ला।

बैद्य रामरक्ष पाठक छपरा म मरे परिचित थे। उस समय वह पन्ने दुबल खूब छात्र कर असाहय म काम करतवाल १६ १७ बप के लडक थे। रितन भी समय तब वह राजनीति म काम करने रट, लकिन लम्बी चिन्तनी के लिए कई स्याथो महारा भी डूडन की आवस्यमता थी। फिर आयुर्वेद पढकर बच हुए। अपन अध्ययन मे जागी रगा पुस्तकें लिनी। उस समय वह बगूसराय आयुर्वेदिक कालज के प्रिंसिपल थे। इतनी तरक्की कररर मुग मुगी हातो ही चाहिए थी।

बमला दा दा परीक्षाओं के लिए तैयार नहीं हा रही थी। कह रही थी, षण साल साहित्यरत्न प्रथम मण्ड हो गूगा। मैं साचना था साहित्य रत्न की परीक्षा हा जान क बाद तान महान और मिन्ने, निमम एम० ए० का तयारी हा सबती है। पढाइ का जल्दी-जल्दी समाप्त करना मैं करी समाप्त था बयानि भविष्य का क्या पना ?

पता क दयन स मई या महीना भी बहुत प्यारा है। बिहार मे उम

समय लौचियाँ पकती हैं। पर, जून ता महीना का राजा है, क्योंकि इसा समय फलो का राजा आम उत्तरी भारत म आने लगता है। भया न अमृत सर स २२ जून का आमा का टाकरा भेजा। मसूरी म भी आम दुलभ नही हात। हर तरह के आम और फ्रु यहा पहुच जात है लेकिन दाम इतना बढ चढकर हाता है कि मालूम होता है, हम आम नही रपया खा रह है। खरीदने म हाथ भी मकाच से उठता है। यदि टाकरा बाहर से जा जाता, ता आम का भोज हाने लगता। जब कुछ महीना तक आम्र उपामना होगा, इसका उछाह मन म पैदा हाने लगा।

मैने कमला का लिखने के लिए प्रेरित किया। उहाने दा कहानियाँ लिखी और पत्रो म भेजा लेकिन सम्पादका न लौटा दिया। बडे प्रयत्न करन पर वह लिखन क लिए राजी हुई थी, और 'सर मुटात ही आल पडे। उनके उत्साह पर घडा पानी पड गया। मैने बहुत समचाया कि हर लेखक को एसी स्थिति से गुजरना पडता है, लेकिन मेरे कहने ने क्या हाता है? उह तब तक विश्वास नही हुआ जब तक कि उनकी एक कहानी नया समाज" म छप ननी गई। जब (१९५६ इ०) तक उहाने आठ कहानियाँ लिखी है और जाठा अच्छे पत्रा म छपी है। इन कहानिया म मरा बहुत हल्का-सा हाथ है जो धीरे धीरे कम हाता गया है। उनम कहानी लिखन की और निबन्ध लिखने की भी प्रतिभा है। लेकिन, सबसे बडा दोष है आलस्य। कलम पकडन म नानी मर जाती है।

श्री रामरक्ष पाठक छपरा के डा० गिवदास सूर क साथ मसूरी आए थे। एरु से अधिक बार मिलने आए। रामरक्ष का मैने बच्चा सा देखा था फिर जवान भी। डा० सूर की जवानी का चहरा हा मुख याद आता। वह छपरा म डाक्टरों प्रेक्टिस अब कम ही करते हैं। उनके पिता लकमी बापू की दवाइया की छपरा की बडी प्रसिद्ध दूकान थी। बडे भाई गुहा बापू दग मवा के किसी काम म पीछे रहनवाले नही थ। डा० सूर क चेहरे पर अब बुलाप की छाप थी, और सबसे अधिक डायबेटीज का प्रभाव दिगार्ई पटा। वह इस समय मुझसे तीन बष बडे थे।

अब महमान राज और इतवार को विशेष तौर से आन लग। अधिक तर हम चाय का प्रयथ करना पता। स्वागत सम्मान तथा चायपान और

भाजन बरान म कितना आनंद आता, किन्तु खाद्य-नामग्री टुप्पन और महाप्र हा गई थी। इस समय यदि कोई मेहमान कहना कि मैं चाय नहीं पीना, तो मैं बड़े भयत भाव म और दूसरे के भावा पर बिना टेम पहुँचाए बगना— 'आनकल के अनिधि ना चाय न पीना महापाप है।' 'म युग म काइ भी गहम्य इसी के द्वारा जानानी मे अनिधि मेवा कर मरना है। अनिधि-मवा हमारी पुगती बपीती है उमने वचित बग्न बाग आदमी पाप का नागी बरुद हागा। घर म चाय मन पीजिए चाय का व्यमन भी लगाना ठीक नहीं, लेकिन बाहर जान पर अगर काइ एक प्याग चाय द तो उमके पीन म उजुर मन कीजिए।' 'मागूम नहीं, इस व्याख्यान का सितना के ऊपर अमर पना।

ममिति क साहित्य का काम जब उल्साहजनक नहीं रह गया था। जीद क उपयाम ला पात्वा' (मकरा द्वार") के बार मे किमी न जान दर्जी का मम्मनि दा कि वह अग्ल है। हट हा गई। यदि म्म लेखक का दुनिया का चाटी का उपयामकार मानन म उजुर नहीं हुआ ना यह मीन मेव निरागी गई। मैं माचन ग्या क्या ग्यामवाह की यह बला माग ल ? कितना ही जल्दी बू टूटे उनना हा अच्छा।

२५ का जावपुर क खैरवा की जागीरदारनी ठाकुरानी मुलाबकुमारी क यहाँ भाजन करन गए। वह १७५ रुपया मासिक पर कमर लेकर म्ट पलटन म रती थी। अपनी माटर म आई थीं। माय म मुसाहित्य, तीन चार नौकर-नौकरानियां भी थीं। नोजन सामिप और मरिवाड क ठाकुरा सा बट्टन स्वादिष्ट था। मैं माच रहा था, रियामनें गई, जागीरें भी अब जा ही रही हैं। पुरानी आमदनी अब नहीं रहगा। फिर यह खच उठाना क्या आपन माग लेता नगी ? लेकिन आत्मो एव स्थिति म दूसरा स्थिति में पहुँचकर तुरन्त ही अपन का उमके अनुमार नहीं बना मवना।

गुबलजी न बनारस म लगडे आमा का पागमल भेजा जो २७ जून को मिला। बनारस क माय अपना पगगान टहगा हों और दुनिया नी लगडा का लाहा मानना है म्मगि गुबलजी का राम राम मे घन्घवाद लिया।

हिंदा की कहाना दरिवा 'माया' न काई कृति दन क लिए लिखा था। मैंने कहा मध्य एशिया क तात्रिक उपयामकार ऐनी के 'अदीना'

को मैं देने के लिए तयार हूँ। उन्होंने एक अकम चित्र सहित उस छापन का वचन दिया। वह जून के अकम छप भी गया। कुछ चित्र तो मूल तांत्रिक पुस्तक के थे लेकिन कुछ चित्रकार ने अपनी कल्पना से बनाए थे जो अनुरूप नहीं थे। प्रेस का मुह तो 'अदीना' ने देख लिया, लेकिन पुस्तककार प्रशिक्षित होने की नौबत अब (१९५६ ५७ म) आ रही है।

२६ जून को बिनादजी गए। जब ऐसा मालूम हो रहा था स्वामी सत्यस्वरूपजी, कुमठेकरजी और हरिश्चन्द्रजी ही यहाँ रह जाएँगे।

मसूरी की अवस्था दिन पर दिन गिरती जा रही थी। पिछले साल के कितने ही दूकानदार चले गए। कुछ दूकान बन्द हो गई, लेकिन अधिकांश मरने पर सनवाल जा जाते थे। एक को जसफा भागते देखकर दूसरा भाग्य पराधा से कैसे बाज आ सकता था? २ जुलाई का टहलते हुए लष्मीर तक गया। पुरुपोत्तमजी की दूकान बन्द देखी। उनकी तरफ से हरप्रसादजी काम कर रहे थे जिनसे मालिक को सतोष नहीं था। वैसे पुरुपोत्तमजी बड़े अच्छे आदमी थे। कालज मर पड़े हुए थे इसे ता दोष नहीं कह सकते। पर उनके पास देहरादून और मसूरी में दो जगह लाल की दूकानें थी। लडाइ के समय और पीछे लोहेवालो ने दानो हाथा नफा बटारकर अपने का मालामाल कर दिया लेकिन पुरुपोत्तमजी थे कि उन्हें समुन्दर में घाघे भी नहीं हाय आए। इस समय दूकान बन्द रहना अच्छा नहीं था। पर, एक ही दो साल बाद उह दूकान का बिल्कुल बन्द कर देना पया। फिर व्यवसाय से भी हट गए और कहीं नौकरी करनी पडी। दूसरे दूकानदार मुगीरामजी कह रहे थे कि हम ता अपनी पूजी खाक जी रहे है। अपने मास का गला गलाकर जादमी कितने दिना तक जीवन धारण करगा? कबाडिया अपने लिए रो रहे थे। पहल की तरह जब साहब लाला के बगला की चीजें बचन को नहीं मिलना। जो मिलती हैं उनका खरीदार नहीं। एक अच्छा कारीगर बड्ड फला को टाकरा रख के बठा हुआ था। कह रहा था— क्या करें? किसी तरह तो पट को भरना है। काम नहीं मिल रहा था इसलिए फल बेच रहा हूँ। मसूरी के ऊपर अधकार का एक गहरा पर्दा पडता दिखाई दे रहा था। लौटत वक्त प० गोविन्द माल वीय से भी थोड़ी देर बातचीत हुई।

३ जुलाई को स्वामी सत्यस्वरूपजी संस्कृत हिंदी कोण का काम कर रहे थे। कुमठकरजी वनड के एक उपयास का अनुवाद और हृदिचंद्रजी टाइप कर रहे थे।

किसोरी भाई जेठ म थे। वहाँ स स्वास्थ्य खराब हाकर घटना अस्पताल म पड़े थे। यहाँ कुछ भीड थी ता भी आने के लिए लिख दिया। ५ जुलाई का वह आए। आशा थी यहाँ उनके स्वास्थ्य मे सुधार अवश्य हागा लेकिन १३ दिन रहने पर भी वह बसे ही रहे। उनके शरीर पर कभी चर्बी नहीं बनी। जो आदमी दौड़ म चम्पियन बनने लायक हो कसरत और गारीरिक परिश्रम करने का आदी हा, उसका गरीर म चर्बी कैसे बढ़ सकती है ? उनके मन म जसा ही साहस उसी के अनुकूल उनका स्वस्थ गरीर था। देखने मे ही मालूम हाता था कि उनका रोवां रोवां नाच रहा है। जीवन के सभी अंगा मे उन्हाने अपन माहम और निर्भीकता का परिचय दिया था। पचाई छोटकर काप्रेस म शामिल हुए। मुजफ्फरपुर के सबसे कमठ काप्रेस कायकर्ता क रूप म वह हमार सामने आए। काप्रेस को जब उन्हाने देखा कि इससे रडा पार नहीं हागा तो माक्सवाद का अध्ययन किया, कम्युनिस्ट बने, एक बड़े नेता से वह साधारण स्वयं मदक बनन के लिए तैयार हो गए। अपन ग्यानदानवाली और घरवाला की कुछ भी पर्वाह न करके उन्हाने अपनी स्त्री को उस समय पदों म बाहर किया, जबकि विहार म कोई आदमी उसका नाम भी नहीं ले सकता था। पदों स बाहर ही नहीं किया, बलिक उसे काम करने गायन बनाया। अफमाम तरुणाई म ही वह साय छाड गई। किसोरी भाड तज से बराबर अपनी धुन म लग हुए है। उनका गरीर इतना दुबल गात्रित हागा, इसकी मुये कभी आगा नहीं थी। पर, अब गरीर भी और साय-साय मन भी अपन का निबल साबिन कर रहे थे। अब की जेल म रहत उनका आदम उद्देश्य क ऊपर जो जबाम्त प्रहार हुए उनरी प्रतिश्रिया के कारण उनका मन भी अस्वस्थ हो गया। पहला क किनार पर चरन उनको डर लगता था मैं गिर पडूंगा। मन की निपति गरीर की व्याधि स भी ज्यादा बुने हाती है व्याधि की औपधि का कम गारिक काम भी दगा जाता है लेकिन जाधि दुष्विकित्स्य है। उनका मन लगा रह इसक लिए 'भाग्य नहीं बदला' के नये संस्करण की काफी

तैयार करते में उहे सुनाता। हफ्ता बीत गया लेकिन काइ सुधार नहीं हुआ। १७ जुलाई को स्वामी सत्यस्वरूपजी के साथ वह टहलन गए एक जगह बहोश हान लगे। जल्दी जल्दी रिक्शे पर बठाकर उह डाक्टर के पास पहुँचाया गया। उसक बाल किंगारी भाई न कहा बिहार ही जाना अच्छा है। वहाँ पार्टी के काम में शायद मन बहल जाए। १८ जुलाई का मगल के साथ उह पटना भेज दिया।

१६ जुलाई का भैया (स्वामी हरिहरानन्द) भाभी (जानकी देवी) अपनी छोटी बहिन के साथ पहुँच गई। अब की उहोन “लक्समोट” में ही रहने का निश्चय किया था। वसे वह पहला सोजन बिता कर बरसात में आया करते थे। उस समय हमारे यहाँ भी भीड़ नहीं रहती पर उनका कुल्हड़ी में ही रहने में आराम रहता। चीजें पास में मिल जाती। यह भी कहते थे—‘इससे आना जाना भी हाता रहेगा। टहलन में वह शौमीन हैं। सचमुच ७० के पास पहुँचने पर भी उनसे बाल भर सफेद है पर चलते हैं आधी की तरह। किसी काम के करने में उह जालस्य छू नहीं गया।

पिछले साल प्रेम का दहरादून लगान की बात हुई थी। एकाध घर भी देखे गए थे। लेकिन भया की यावहारिक बुद्धि न बतला दिया, कि उसके लिए उपयुक्त स्थान दहरादून नहीं, बल्कि दिल्ली है। यदि किसी कारण काम न भी चला और उस बद करना पडा ता पसा लौटने में देर नहीं होगी। भाभीजी दहरादून का पसन्द करती थी, मैं भी इस ख्याल से नज दीक चाहता था कि अगर मरी पुस्तकें छपेंगी ता प्रूफ के दखने में दिक्कत नहीं होगी। वह तुले हुए थे—प्रेस का बढाएंगे मानो टाइप लाएंगे बनी मशीन भी आ जाएगी।

बुढाप में आमतौर से दातो में दोष पदा हो जाता है। मैं तो समझता हूँ यदि उस समय दाँत न रहे ता अच्छा। अक्सर उनमें दद हा जाता उनक बीच में खाने की चीजें घुमकर कीटाणुना का जन्म देती हैं, जो अत में पायरिया के कारण बनते हैं। पायरिया बडी बुरी चीज है। अपन लिए नहीं बल्कि जिसस बान की जाए उसका भी उसकी दुग ध आती है। मुझे एक बढ का अनुभव था। ७० वर्ष के बाल भी उनकी बत्तीसी बनी हुई थी। इसका वह अभिमान कर सकत थे लेकिन मुह में दा हाथ दूर भी इतनी

गव जाती कि बात करना असह्य हो जाता। शायद उनको न मालूम हातो हा। मर मुट म कुछ गव जा रही थी। मैया न कहा—पायरिया है। वद्ध मित्र का रघाण्ड आन गगा। मैया न कहा—कोई चिंता नहीं। फिनाटल के मद् लेमाल को सीक म रूड लपटकर दाता के बीच हफ्ते म एक बार लगा देन म दा तीन हरे म ठीक हो जाणगा। मैया बंद हैं, लेकिन वृषमडूक बद्य नहीं। चिकित्सा शास्त्र म गा भी तथा आविष्कार हुना है, उमक बारे म हिंदी पना या पुस्तना म जा लेखते हैं, उन बदे ध्यान मे पत्ते है। प्रयाग के 'जिज्ञान क वह उसके जम म ही ग्राहक हैं, और शायद उमका कोई भा अरु एमा नहीं गुणा जिमे उहाने ध्यानपूर्वक उही पना हा। उमकी नया जत्र डपमगान लगी, ना कितने ही वर्षों तर उम मैया न अपन खच से बगया। उह दमने पगशानी हैं, कि चिकित्सा सम्बन्धी आधुनिक आविष्कारों से वैद्य को लाभ उठाना चाहिए और आयुर्वेद की चिकित्सा पद्धति और औषधिया क निर्माण तथा विन्त्रेण के बार म भाइम का उसी तरह उपयोग करना चाहिए जैसे एलापवी क डाक्टर लोग करत है। सामाजिक और राजनीतिक विचारो म भी वह अति आधुनिक हैं। ममाज-वाल-भाष्यवाट पर उरका जट्ट विस्वाम है। कभी कभी वह देत थ—

“विना की क्या उरत है उम बष म ता साम्यवाद आ हो जाएगा।”

मै भी पुमवकडो क लिए जत्र पहले पहल निकला, ता यह द्वाक हमेशा जीभ पर रहना गा— ‘का चिंता मम जीवन यदि हरिविभवम्भरा गोमन।’

अर निरत कम्युनिस्ट चीन का अग बन गया था। गतिपूर्वक ही निरत त चीन म अपन सट्याडिया क पुरान मग्गध का फिर मे म्थापित कर लिया था। दिल्ली के कम्युनिस्ट विरोधिया को ची-चपड करन की आर-धरना नहीं हुई कयाकि यह मर काम गतिमय तरीक से हुआ। गतिमय तरीक म ही हमरा हाता मै नी वालनीय समगता था। क्याकि निरत म भारतीय, चीनी तथा अपन दग की हजारा मास्त्रुतिग धनमाल निधिया मुर्गित्त रखी ह। लहामा का महान और निरत का मव प्राधान बौद्ध बिहार “जा-पड” सातवी मनी के मध्य म बना। बाग भी वडा वह पुगना गताडिया मालूम हातो है, जो आज नी हमारे सामन बँटी हुई है। दा उरन थ करार वही क बिहार पुगना सामग्रिया के जद्मून मग्रहालय हैं।

लड़ाई होती ता उह क्षति हाती जिनकी पूति कभी नही हा सकती थी । फिर हजारों घर उजड़त, आदमिया के प्राण जात दोनो देश म पारस्परिक घणा का सचार होता जा कितने ही समय तक चलता रहता । यह सत्र देखत हुए गान्तिपूण चीन और तिबत क सम्बन्ध का स्थापित हाना वाछनीय था । मैंने स्वागत नवीन चीन नाम से एक लख पहल लिखा और अब हमारा पडासी चीन लिखकर अपने भाइया को बतलाना चाहा कि चीन हमारा हमशा के लिए पडासा है उससे भय खान की जरूरत नहा बल्कि उसके सामने मित्रता का हाथ बढ़ाना चाहिए । सौभाग्य म कम्युनिस्ट चीन के विरोधिया का बल कम हा गया, और हमारे दोना दगा म गहरा भाईचारा स्थापित हा गया ।

महेन्द्र आचार्य यहा क साहित्य विभाग क काम से हटन क बाद मद्रास पहुँच गए । वहा से उनका पत्र आया । भूल चुक क गिण क्षमा भागन का गिण्टाचार दिखाते हुए उहानि कुमठकरका ढागी और क्या क्या लिखा । कुमठेकर वस्तुत एक बडे साधु हत्य के पुरुष थे और सहिष्णुता म तो पृथिवी को मात करते हैं यह पहले ही मैं लिख चुका हू । सत्रक लिए उनका हृदय और जेब खुले रहत है । ऐसे आदमी को पना की हमशा दिक्कत रहगी और न पस रहने पर भी वह गुजारा कर लगा, इसम सदेह नही । उस ढागी कैसे कह सकते है ? वस्तुत महेन्द्रजी का स्वभाव पुगन सस्कृत पण्डिता की तरह का था जिसम कभी-कभी बच्चा का सा भाला पन दिग्वाइ पडता था । वह उदयपुर म अपने साथ गुद्ध धी बनस्तर भरकर लाए थे । मैं देखता था उनके साथी उस उडान के लिए तयार थे, और महेन्द्रजी उस जागा करके कलयुग के अंत तक ल जाना चाहत थे । महेन्द्रजी की इसम हार हुई । पसे म भी वह सभल सभल कर सच करते थे । सचमुच ही हम सबका आश्चय हुआ जब मालूम हुआ कि उहानि कुमठकर को सी या अधिक रुपया उधार द दिया है । यार लाग मजाक करत इसलिए यह काम दाना म चुपचाप हुआ था । कुमठेकर के मेहमान आ गए । जातिव्य म उहान साखर्ची दिसलाई । फिर पसा कहाँ रहना ? महीन म पौन दा सी की ही ता जामदनी गी । चलते वक्त महेन्द्रजी अपना पसा न पा सके और गायद दो एक बार चिट्ठी लिखी ता भी उनका पसा

पहला सलानो मौसिम

लौट नहीं सका। इसीलिए बेचारे कुमठेकर ढोंगी हो गए थे। कुमठेकरजी पीछे भी कई महीना यहा रह। सागवाले का भी रुपया बाकी था, अलवार वाले का भी। चलन बकन नहीं चुका पाए। ऐसे "आत्मद्रव्येषु लाटवन् मानन वाग्ने मस्त मौला। यदि 'परद्रव्येषु लोठवत्' (दूमरे के धन का भी हटा) समझे ता उनको दोष नहीं देना चाहिए। हा अग्यार बार के लिए हम बड़ा दुख हुआ, क्योंकि बेचारा दूमरे एजेंट ने अलवार का चकर मौला का चक्कर लगाकर राज काटियों में उन्हें वाटना था उसे य रूपय दंड भरन पड़े। कुमठेकर बड़े मोघे-माद स्वभाव के थे, और मग भी बसा ही था। हमारा यहाँ काम करनवात्रा म विनाद ही शेरवानी और जवानरगाही पायनाम के पक्षपानी थे नहीं ता बाकी लाग उमरी कोई पवाह नही करन वे। नीचे स अधिन सुदी ता यहाँ थी ही। कुमठेकरजी का कपण बनवाना पला। वह भी गरम गेरवाना पायजामा बनवा लाए। अत्र वह जधिन मन्थ और गिट्ट मालूम होन थे मम मदेह नहीं। जेला की भूय ज्ञानाग और पिटाया न उनक गरीर का बन्त कमवार कर दिया था पट की बनी पिवापन रहती थी बहुधा पात्राटी जोर दूब पर गुतारा करत थे। दूब गरम करन क लिए बूल्ह का जलान की जगह त्रिजली की अगोठी म आमानो थी। वह उमता ही इन्तेमाल करत थे। दूमरे सारी मिफ रागनी के लिए बिजली जगन थे त्रिजली के त्रिल म समान पने क भागी हात थे इसीलिए यह उन्हें पमद नहीं था। वह वह मरत थ, कुमठेकर क्यों चूह की बिजली का अलग पैसा नहीं दत ? मैं बतग चुका हू कि कुमठेकर न घोसा देन के लिए त्रिमो का पैसा अपने ऊपर रखता चाहते थे, और न यही चाहत थ, कि मग सब दूमरे बनास्त करें। लेकिन अपन हृदय की उगारता की दवा कहाँ म गत ?

"हन त्रिफ" ममूरी के एर छार का मग्ने अन्तिम बगला था, यह मैं बनग चुका हू। यह छार जमुना की धार था। इधर मील डेढ मील पर पहाडी गाँव आ जान थे। मरिग वहाँ की चीजें हमारे लिए मुग्भ हाती थीं। त्रिम बकन गाँव म माण-सद्वी नैयार रहती, उन बकन हम आघे दाम पर चात्री मन्त्री मिल जाती। बनिय त्रिमाना को चौघाई दाम भा देने के लिए तयार नहीं थे। इसीलिए मैं बन्त चाहता था कि त्रिग्मोण दाति

लिंग नैनीताल की तरह यहाँ भी हफ्ते में दो दिन हाट लग, जिसमें गाँव वाला की चीजें उपभोक्ता सीधे खरीद सकें। नई नगरपालिका बन चुने जाने पर जाशा हुई थी कि इस दिनांक कुछ होगा। लेकिन उन्होंने कुछ भी नहीं किया। जमुना की मछलियाँ भी जकसर गाववाले लाते थे, और दो रुपए भर की जगह रुपए सैर में मिल जाती थी। यद्यपि यहाँ की मगहूर मछली महासिर शायद ही कभी आती पर दूसरी मछलियाँ अच्छी और काफी बड़ी होती। मछली मुझे माँस से कम स्वादिष्ट नहीं मालूम हाती पर जाने क्या अपने यहाँ बनी मछली में वह स्वाद नष्ट आता जा कि बचपन में छाटी छाटी मछलियाँ में मिलता था। जाड़े के दिनों में गाववाले कभी-कभी जगली मुर्गे भी मारकर लाते थे। गान्ध्या ने ग्राम्य कुक्कुट को अभक्ष्य कहा और अरण्य कुक्कुट का भक्ष्य। मैं ग्राम्य कुक्कुट को ग्राम्य गूजर-माँही भक्ष्य मानता हूँ। पर ऋषिया की बात से भी इन्कार नहीं करता और अरण्य कुक्कुट और गूजर को परम पवित्र भक्ष्य स्वीकार करता हूँ।

प० कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर भी जब कीर्गमियाँ में यही "एन हिल" में रहे। प्रभाकरजी के साथ मेरी दयादेखी १९३८ की है। मैं रूस से लौटते महारनपुर में था हाँ उतर गया। शहर का देखना और यहाँ की कौरवी भाषा के सुनने का जानना लेना चाहता था। जचानक मिश्रजी से भेट हुई और एक दो दिन उनका अतिथि भी रहा। उनकी बल्म मुझे बड़ी प्रिय मालूम हाती है। छोट ठाट बाक्या और छोटी छाटा घटनाओं को लेकर वह कितना अच्छा लिखते हैं, कि दिल खुगहा जाता है। गिकायत यही रहनी है कि इतना कम क्या लिखते हैं। नया जीवन का वर्षों से वह संपादन कर रहे हैं। किस तरह उसके बोझ को बर्तन कर रहे हैं यह बड़ी बतला सजते हैं क्योंकि नया जीवन एक कस्ब से निवर्तता है और उसका प्रचार बहुत मामित है। प्रभाकरजी की भाषा सीखी हुई भाषा नहीं है। हिन्दा की मूल भाषा कौरवी है और यही प्रभाकरजी की मातृभाषा है। उन्हें इतना ही करना पड़ता है कि लाकसभा के उन उच्चारणों और गणना का हटा दें, जिन्हें साहित्यिक हिन्दी में मजूर नहीं किया। मैं समझता हूँ साहित्यिक हिन्दा को इतना अधिकार कभी नहीं हाँना चाहिए, कि वह हिन्दी का उसके मूल सात से सम्बन्ध विच्छेद करा दे। जिनकी मूल हिन्दी

मातृभाषा है, उह मनमान नियमा का मानने से इकार कर देना चाहिए। मिश्रजी, विष्णुप्रभाकरजी और दूसरे कौरवी क्षेत्र के लेखका मे में बराबर यही कन्ता रहा, कि आप अपनी कहानिया, उपयासा और लेखा मे लोक भाषा की पुट दीजिए, ताकि हमारी भाषा मे अधिक लाच जाए। मिश्र क साथ विद्यावती कौसल भी आई थी, जिनकी कविताएँ जक्सर "नया जीवन" म निकठा करती थी। मेरा जीवन ता घडी की तरह चलता है। खुलकर समय व्यय करने म यदि उदारता से काम लू, ता काम स्व जाए, ता भी गाम का एकाघ घटा और इतवार का सारा समय में अपना नही समयना। उसी समय अपन यहा आए हुए साहित्य कमिना मे वातचीत हानी।

१९२० म श्री परमाणंद पोद्दार ने मरी कितनी ही पुस्तका के एक मस्वरण पर २५ हजार रुपया अग्रिम दिया। मुझे क्या मालूम था कि यह अग्रिम जी का अजाल साबित होगा। इकम टेकम आफिसर ने इमका भी वास्तविक जाय क साथ जोडकर उमे २९ हजार बना दिया, और फिर डट कर पाच हजार मुपर टेक्स लगाया। मैंने समजाने की कोशिश की कि यह आमन्नी पर व्याज रहित ऋण है जामदनी नही है। लेकिन, इकम टेक्स जफमर न इमे नही माना। अत म यह मामला रेवेन्यू-बोर्ड के पास गया। एक डे साल ता यही जान पडता था कि इसे भुगतना ही पडगा पर रायल्टी क अग्रिम के एस जीरा क नी मगडे थ। पीछे इत ऋण मानकर मेरा छुट्टी हुई। अग्रिम क लिए मुन पछताना ही पडा। साचना था, यदि अग्रिम न लिया हाता तो मजान भी नही ले सकता और मसूरी म जहा चाहता वहा सस्ता मजान मिलना मुश्किल ही था। जब चाहता तब मसूरी भा टाकर वही दूसरी गगह जा सकता था। मकान लेन म यह लाभ जरूर हुआ कि धार धीरे धार हजार के करीब पुस्तकें जमा हा गई, और उनस में लाभ उठाना रहा। पर अज जम मसूरी छाडने का इरादा हा रहा है ता मजान म लगे आधे दाम का लीग पान का भी में गनीमत समजता हूँ।

गमार मजान के ऊपर दा हा हाय पर अच्छी नासपातिया के दा-तीन वृग है। अग्रेजा न मयन जगलो क बनात वक्त यहाँ फला के उत्पादन की आर भी ध्यान दिया था। हन हिल" म नासपाती सुवाना, आडू आदि

के बहुत से वृक्ष लगे हुए थे लेकिन प्रथम विश्व युद्ध के बाद से ही ममूरी की आर साढ़ेसाती सनीवर ने कदम बगाना शुरू किया था। दूसरी विलासपुरिया से ममूरी की यह निगेपता थी कि यहाँ अग्रेजों ने खुद अपने लिए बगल बनवाये थे नैनीताल में उनकी याजना के अनुसार भारतीयों ने बगल बनाय थे। अपने लिए बनाए बगल में वह सब बात का पूरा ध्यान रखते थे इसीलिए फल फूल पदा करन का अच्छा प्रबंध किया था। प्रथम विश्व युद्ध के समाप्त होना के बाद ही बहुत से और बगलो की तरह हन हिल भी अग्रेजों के हाथ से भारतीयों के हाथ में चला गया। कुछ दिना यह जिन्द के राजा के हाथ में रहा फिर टेहरी न ले लिया। किसी का यहाँ के बगीचा की आर ध्यान देन की फुरसत नहीं थी। उपहित वृक्ष घीरे घीरे सूखन लगे और मरे यहाँ जान के समय जवन हान में एक नासपाती और एक जाड़ू का वृक्ष रह गया। नामपाती बठ नामपानी थी जिसका चटनी ही की तरह उपयोग किया जा सकता है यदि हनुमानजी की मना उह बक्स दे—सौ भूत के रहने भी वह घरमने के लिए तैयार नहीं थी। जरा सा पलक मारते ही वह पचासा की सख्या में जाती और चुटनी बजाने बजाने फला को साफ कर जाती। इमने लिए हम कोई जफमास नहा होना क्याकि नासपाती हमारे काम की नहा थी। लेकिन नही हाथ हमारी सीमा से बाहर की नासपानियाँ अच्छी गति की मीठी मारें थी। कोई उनकी खाज खबर नहीं लेता ना फाल बनाता न खाद डालता। तब भी ये मेवेदार वृक्ष हर साल फल से लदते। काइ फल का रखने वांग नहीं था। भूत के मारे कभी कभी पवन के समय तब आधे रह जात और फिर आमपाम के लकवा के काम आते।

मध्य एशिया का इतिहास" लिखन का सकल पाँच छ वर्षों में था। प्रथम बडा था, इसलिए भी उसके लिखा का काम आसानी में शुरू नहीं किया जा सकता था। १ अगस्त को उमक लिखन में हाथ लगाया। १९१० तक सारी पुस्तक खत्म कर डाली। १९५३ के शुरू में प्रेस में भी चली गई लेकिन १९५६ तक उमरी एन जिल्ड ही निबल पाई।

बहुक इस क्वाल से भी ली थी कि रात बिरान कोई जगली जानवर आए ता उस पर इस्तमाल कर लें और एक्वन्त देव चोरो की भी आन की

पहला सलानी मौसिम

हिम्मत न हा। लगूर फीज बहुत तग करती ता गाग्गे दागता लेकिन शिवार मे सफलता कभी नही हुई। मसूरी म आकर मैं जफरत मे अचिब एगानप्रेमी हो गया। चाहता था कि पहाड म नीचे उतरू ही नही। इसमे कारण डायबेटोज और उनमे लिए दजेकान वा खटराग था। जरा स पाव वो दो महीन मे अचिब सेना पटा। इसमे यह करना जरूरी था। इसीलिए वे-ड्र के भिन्न भिन्न मशालया ने परिभाषा के लिए जो कमेटियाँ बनी थी, उनकी सदस्यता मे मैंन स्वीकार दे दिया। समद न भी एन कमेटी बनाई जिनका सदस्य मुझे भी बनाया गया था जिसके लिए ७ जगमन का मैंन अस्वीकृति दे दो। इसमे दस्तीफा न दना, पर हमारी कमेटी म जो परिभाषाएँ बनाड जानी उनका अनिम रूप दन बाग विद्वान एन आदमी थ जिनका मैं और काद भी अचिकारी नही समजता था।

भून अब पाच महाने म उपर वा हो गया था। मैंने मिम पामग की बात का उल्टा जय लगाकर यही समझा था कि नो महीन वा हा जान पर उमर मिग्यान पतन की वागिग बरती हागी। भून अपन-आप ही सीख-बड रहा था। वह पत्यर वा मुह मे उठा उठाकर लाता और फेंकन के लिए आग्रह करता, ताकि वह फिर उठाकर लाए। यदि न फेंके, ता बच्चा की तरह हठ करने चिल्लाता। 'पत्यर लाओ बहन पर वह पत्यर नी लेन जाता। अश्ममियन तुता वा यह स्मभाव है, वह पत्यर मुह म दावे फिरने है। भून पीछे चार चार के पत्यर को लपर इतर से उपर घूमता और कभी-कभी एक लपर वा लकर ऐसे चलाता कि माकूम हाता मुट म सिगार दबाए जा रहा है।

बिहार सरकार न पालि प्रतिष्ठान कायम रिया जिराकी समिति म मेरा भी नाम था। यह नाल्दा की पुन म्यापना वा उपग्रम था। मवान के जभाव क कारण पहले राजगिरि म उगे गाग गया पीछे नाल्दा म लाया गया। नाल्दा के पुनरुत्थान वा स्वप्न एन वार मैंन बड़े जोर म देना था। मेरे मित्र गिनु जगदीश बरयप इस प्रतिष्ठान के मचायक थे। स्वप्न को जागून दगने मुने प्रसन्नता जरूर हा रही थी, पर उनकी मात्रा म नहा। भारत म अब समझने लगा था, कि कोई भी अनुमधान वा अध्ययन

अध्यापन की बनी सस्था जगल म नही फल फूल सवती । जगल म उसे गहर के तल तक जान क लिए कराडा रुपए चाहिए जिसम कि उसके आमपास नगर बस जाए । तब भी इससे गाने पोने और शिक्षित समाज का हा सुविधा मिलगी अनुसन्धान के लिए तिन माधना की आवश्यकता है, वह वहाँ वर्षों जमा नही हा पाएगे । नालन्दा को उस स्थिति म पहुचान की अभी कल्पना भी नही हा सकतो । सौ पचास विद्यार्थी और बीस पचास हजार पुस्तका स क्या काम बन सनना है ? यद्यपि पटना म सस्था के हान पर उस प्राचीन स्थान का महत्त्व नही मिलता, लकिन वहा थन्डा पुस्तकालय है जच्छा म्यूजियम है, बडी सरपा म कालना क विद्यार्थी और अध्यापक है सबसे सहायता मिलतो है । नालन्दा के लिए तभी जागा हो सकती है, जब कि वहा कृषि कालज बटनरी कालज जस दूमरे भी कई बडे बडे विद्या सस्थान बन जाएँ और विद्यार्थिया और अध्यापका की सरपा हजार तक पहुच जाए ।

श्री सदानन्द महता भारतीय सर्वे विभाग म काम करने थे । उस समय विभाग का एक भाग मसूरी म रहता था । पीछे अककल क अधा न उस दहरादून म बन्ल दिया । मसूरीवाला का सौ दो सौ जादमिया क रहन स जा दाटी बहुत जामन्ना हाता थी वह बन्द हा गइ । मसूरी का समस्या है वर्षों स ताली और तेजा से उजडते बगला का रक्षा कैरा की जाण ? यहा क लागा को जीवित का आत कम मूखन न पाए ? इसके लिए जरूरी था कि दिल्ली क कुछ बडे बने दफ्तरो का यहा भेज लिया जाता । प्रातीय मंत्रिया न भी जाए लगाया क श्रीय मंत्रिया न भी जास्वास्तन दिया पर कोई विभाग वहा स हटन क लिए तयार नही हुआ । मंत्री हमारे पुरान नौकरशाहा क हाथ की कठपुतली भर है । अधिकतर कठपुतली हान लायक ही हैं उनम एमी योग्यता नही कि अपन विभाग क शासन-सूत्र का मभाल सकें या उनकी बारीकिया का जान सकें । जाधुनिक ज्ञान विज्ञान स जिसना छत्ताम का सम्बन्ध है उसरु हाथ म सार भारत का शिक्षा की बागडार है । जिसे माटूम उही चिकित्सा विज्ञान निम चिडिया का नाम है उसे ४० कराड लागा क स्वास्थ्य की बागडार द दी गई है । इसी तरह सभी जगह गूग-बावले भर हुए हैं । फिर क्या वह खान नौकरशाहा पर अकुण

रख सकेंगे। जघा का लाटी वही ता है। मन्त्री यदि किसी विभाग न कार्यालय का ममूरी या गिमला भेजना चाहत है, ता नीच क मुरांट नौकर शाह उसका विराध करत है। विराध क्यों न करे जय कि वे जानते है कि दिल्ली म रहन पर हम मन्त्रिया क लखार म सलामो द सकेंगे, उन पर प्रभाव डाल सकेंगे, और उसका जरिण अपना लान परलफ बनाएंगे— अर्थात् अपनी भी जल्दी तरक्की करंगे और अपनी अगली पौष के लिए अच्छी नौकरियां दिला सकेंगे।

मदानन्द महता इतिहास क एम० ए० थे। पत्रिकारिता और फूसी भाषा म भी डिप्लोमा लिया था। मै जानता था सर्वे विभाग न गिल्ली शताब्दी क मध्य म हमारे बहुत स दशभाष्या का निव्वत और मध्य एसिया की आर भेज कर वहाँ से भूगोल और दूमरी बाता की जानकारी प्राप्त की। जिन लोगान अपन प्राणा का जोखिम म डाल सब काम किया, उनकी कोई पूछ नहीं, और अग्रेजा न सबका थ्ये आप लेना चाहा। एक्स्ट की खाज लगाने वाले थ अद्भुत भेजावी राधानाथ सरकार। यलि उन गिबर का नया नाम रखना भा था, ता राधानाथ गिबर हाना चाहिए था, किन वह एक्स्ट के नाम से मगहूर हुआ, जा कि उससे पहल ही सर्वे विभाग से पेंगान लेबर विलायत चला गया था। किंगनसिंह ननसिंह, किन थोव जैसे बहादुरान न बहु सारी सामग्री जमा की, जिसमे निव्वत और मध्य एसिया का गुद्द नक्शा बन सका। पर, अग्रेज उनका भुला रना चाहत थ। घुमकरड होन से य मरे मग बंधु थ इसलिए मै चाहना था, कि उनका काम दुनिया क सामन आण, और उहाने जा मूल डायरिया तथा दूमरी चीजे सर्वे विभाग का ही थी उह कीडा का मध्य बनने मे पहल ही प्रकाश म लाया जाए। इसीलिए मैने चाहा कि मेहनाजी इम काम का लें, और इम अनुमधान पर पी एच०डी० करे। उहाने उस काम का स्वीकार किया। बहुत ही दिव्वत रासन म आई। अत म आगरा विश्वविद्यालय ने मेरे अधान उह अनुमधान करने का काम मीथा। पर सर्वे विभाग या किंगी सरकारी विभाग क ऊपर क अपनर कथ चाहन हैं कि जा काम न कर सकें उम काई दूमरा कर। वे कदम-कदम पर बाधा डालन रहे। मुने मालूम हुआ कि किंगनसिंह-ननसिंह आदि की डायरिया दफ्तर के किसी

कान में फकी पड़ी हैं। मैं इसके बारे में राष्ट्रपति का लिखा। उन्होंने विभाग का लिखा। डा० गान्तिस्वर्धप भटनागर को आग लग गई। चाहे उन्होंने कभी उन डायरिया के बारे में सुना भी न हो पर वह और नीचे के नौकर-गाहक कम यह पसंद करते कि एक ऐरा-गरा नृत्य खरा उनके कतय की आर अगुली उठाय। भटनागर के पत्र का मैंने मुहंतोड जवाब देन की जरूरत नहीं समझी लेकिन यह जानकर मुझे खुशी हुई कि वे डायरिया देहरादून से मंगाकर दिल्ली के केंद्रीय आलेख भंडार (आर्काइव) में रख दी गए।

१३ अगस्त (१९५१) को माधवजी ने जीन निम्ताफ के एक अध्याय का फ्रेंच से हिंदी में अनुवाद करके भेजा। अनुवाद बहुत सुंदर था और माधव इस काम के लिए उपयुक्त तरण थे। लेकिन मेरे लिए हाथ मलने के सिवा और करन को क्या था? राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की योजना का काम जिस टिप्पणी से हा रहा था उसके कारण मैं निराग हो चुका था। यदि समिति की सहायता और तत्परता मिली होती तो राम्या रोला की यह अमर कृति ही नहीं बल्कि और भी कितनी ही कृतियाँ हिंदी में आ गई होती।

१४ अगस्त का श्री मुकुंदीलालजी आए। वह कला-समालोचक इतिहास और लेखक तो हैं ही, साथ ही वह सिद्धहस्त गिबारी भी हैं। उम्र ६० से ऊपर होने पर भी उनका हाथ कभी कभी बंदूक पकड़ने के लिए फड़क उठता है। गिबारी बनने की तीव्र आकांक्षा मुझे कभी नहीं हुई लेकिन गिबारी यात्रा का मैं हमेशा बड़े चाव से पढ़ता था। उस बदन मन मचलन भी लगता और नहीं तो किसी के साथ एक रात मचान पर बैठ लेना ही नहीं। ऐसे अवसर आए भी पर मैं उनसे लाभ नहीं उठा सका। गिबारी की पुस्तकों को पढ़ने में जा आनंद लेता है उसे यदि किसी गिबारी के मुह से बातें सुनने का मौका मिले तो वह भी रचिकर हाता है। मुकुंदीलालजी गन्वाल के अपने एक गिबारी की बात सुना रहे थे। वह और उनके एक साथी बघेरे के पीछे गए। मुकुंदीलालजी की गोली से बघेरा घायल होकर एक खाड़ी में चला गया। उनकी खाली बंदूक लिए वे खाड़ी के पास पहुँचे। उन्हें आगा था कि साथी की बंदूक भरी हुई है। इसी बीच बुरी

तरह से घायल बघेरे ने क्षपट्टा मार उनकी टांग पकड़ ली। साथी प्राण लेकर भागा। घायल बघेरे और निहत्थे आदमी का युद्ध शुरू हुआ। बंदूक क बुंदा से उसे मारते, और उसने इनकी टांग का चबाना शुरू किया। मनुष्य जीवना है या स्वापद? कितन ही मिनटा तक सदिग्ध लडाईं दानो की हाती रहो। बघेरा बहुत अधिक घायल था, इसलिए कुंदो की मार से उसका काम समाप्त हो गया। जब तक प्राण सबट म था तब तक होना हवाम दुहस्त थे। बघेरा मास और हडिडया का काट रहा था लेकिन उसकी आर उनका ख्याल नही था। वह सिफ रतना ही सोच रह थे, प्राण सबस अधिक मून्यवान् है, उस निमी तरह बचाना चाहिए। बघेरे के मरन के बाद के बहाग हो गए। पैर की कई हडिडयां टूट गई थी। जस्पताल में कितन ही दिना तक जीवन मरण क बीच में पडे रहे। अंत में प्राण बच गया। पैर में बघेरे के चाबने का निशान अब भी पूरी तौर से दिखाई देता है, पर लंगड़े बनन की नीबन नही आई।

१५ अगस्त १९५१ को अंग्रेजों को गण चार साल हो गये। उस दिन त्रिनेप आयाजन किया गया था। गांधी जीक म मुझे बडा पहचाना था। अगस्त वर्षा का समय है, इस समय किसी समाराह का अच्छा तरह होना मुश्किल है। इस साल उम दिन वर्षा नही हुई। लग काफी मस्या म शामिल हुए। टीन हाल म भी समा हुई।

प्रकाशक क बारे में लेखन की गिकायन निर्मूल नहीं हाती, और गायद प्रकाशक की गिकायत का भी मदा निर्मूल नही कहा जा सकता। पर गायक भि तु न होने पर भी अपनी मजुरी पान के गिण हाथ क तीस हाथ रगन क लिए मागूर है, और प्रकाशक हाथ के ऊपर हाथ। इसका वह बहुधा दुपयोग भी करता है।

देहरादून म हिंदी साहित्य सम्मेलन का परीक्षा-केन्द्र था। इस साल कमल साहित्यरत्न प्रथम सण्ड, हरिद्वार विचारद और मंगल प्रथमा का बहा फाम भरन के लिए गया। तीना न परीक्षा दो। हिंदी म कमजीर हान क कारण मंगल उत्तीण नहीं हो सके, बाकी सभी सफल रहे।

एक दिन मो ही में अपना पामपोट दुदन लगा। मैं अच्छी तरह जानता था, कि चमड़े की घंटी म रख कर उसे मूटन म संभाल रखता है। एक

बकम टूटा दूसरा बकम टूटा लेकिन वही उमका पता नहा लगा। फिर भी मुझे दूसरा ख्याल नहीं जाया, और यही समझा कि कहा पडा हागा। लेकिन पडा हा तब मिले न। फिर लडाइ क िना म पासपाट के गुम होन का ख्याल आया। अग्रजा न अपन खुफियावाला का अधिकार द रखा था, कि चाह जस हा वह अपना काम बनाएँ। उनक हाथ म त्रिक लोग नीच से नीच काम कर सकते थे। विश्वासघात तो उनका पैगा था। एक तमन जा अभी स्याइ खुफिया का आदमी भी नहीं बन पाया था अपन मम्बाधी के घर म आन लगा तहा मेरा पासपोट जोर कुछ और चीजें बक्स म रहती। वह बहा से उसे निकाल ले गया। दूसरी चीजा के उसके निकालन का जगर पता न लगा होता ता गायद मुने मालूम ही न होता, कि यह उस जान्मी की कारस्ताना थी। अब मुने उसी बात का ख्याल आया। जप्रेज चले गय। लेकिन उनके जान्मीना क लिए मैं पहल ही जसा खतरनाक था। कलिम्प्याग म भी खुफिया पीछे लगी था भारी चिटिठया मँसर हाती। हमारे रसोइय का खरीदकर उसे देखभाल के लिए नियुक्त किया गया था। तान पडता है, किसी समय बही पासपाट गुम कर दिया गया। मसूरी म भी खुफिया की तदेही उसी तरह थी। जब कृपलानी तक खुफिया की गिवायत करते हैं और सरकार की लाडली अपने महाप्रभुजा के इस विश्वासपान व्यक्ति का भी छोडने क लिए तैयार नहीं ता मुने गिवायत करन का क्या अधिकार ?

दहरादून फाम भरन तीना गय। बाका दाना के ऊपर गदहपचासी न जोर मारा और वह पैदल पवत-यात्रा करते एक दिन पहल ही मसूरी पहुँच गए। जानत, कि पहाड की माटर की सवारी म कमला की हालत बुरी हो जाती है खाली पट रहन पर पित्त निकलने लगती है। लेकिन अबला छाड कर वह चल आए। अगले दिन दापहर का कमला परगान परगान माटर के अडडे पर उतरी और ११ बजे वर्पा म भागती हुई पहुँची।

२४ अगस्त का वर्धा से बुरी खबरें आन लगा। आनदजी कुछ माल पहल हा समिति छाडन की बात कर रह थे, उनके राक रखने म मेरा बडा हाथ था। अब वहाँ दा दल बन गय। एक पक्ष उनने पीछे हाथ धाकर

पडा। मुझे ख्याल आन लगा, क्या मैं उन्हें पहले ही समिति में हटान नहीं
 गिया। मैं सोचता था। समिति को इतनी बड़ी बनाने में जिसका हाथ
 है, उसके द्वारा साहित्य निर्माण में भी भारी काम हा सकता है इसीलिए
 बैमान करन दिया। अब पछता रहा था। दूसरे कामों में लगे हुए भी
 आनदजी ने अपनी लेखनी का ताक पर नहीं रखा, यह इसीमें मालूम
 है, कि उन्होंने जातक जस महान् ग्रथ का पालि से हिन्दी में मान जिल्दा
 में अनुवाद करके हिन्दी में भण्डार को भरा। वे और भी पुस्तकें समय
 समय पर लिखते रहें। समिति में रहने पर वे देश विदेश घूम कर
 भी बड़ा काम कर सकते (जा समिति से हटने के बाद वह कर रहे हैं)।
 यह घाट का सवाल नहीं था। दोनों पक्षों में मरे मित्र थे। मैं किसी का
 पक्ष ले इस सघष में एक तरफ काम हो सकता था ? मरों इस तटस्थता को
 कुछ मित्र पसन्द नहीं करते थे। असल में यह सघष इतना उग्र न हाता
 यदि समिति से कुछ आदमिया को निकालन का प्रयास आनदजी न न
 किया हाता। जा समिति का दम बप से चला रहा हा और जिसे वहाँ जमी
 हुई भिन्न भिन्न विचारों वाली मण्डली में काम लेने का तजर्बा हो उनके
 सामने मैं अपनी राय क्या दे सकता था ? मैं समझता था दाप गुण किममें
 नहीं हात। पर उनके लिए किसी का काम से निकलना अर्थात् राजी स
 वचित करना अच्छा नहीं है।

इधर सम्मेलन में भी सघष उग्र हा गया था। जहाँ ४० ५० हजार
 विद्यार्थी परीक्षाओं में बैठते हो, वहाँ पाठ्य पुस्तकों में अपनी पुस्तकों का
 लगना बड़े लाभ की चीज है, हजारों-लाखों का बारा-न्यारा है। सरकारी
 टेक्स्ट बुक कमिटिया में जा घूम का बाजार गरम दिग्गई देता है उसका
 कारण भी यही लाभ है। जहाँ गुड हा वहाँ चीटियाँ जरूर आती हैं। इसी-
 लिए सम्मेलन की परीक्षाओं के ऊपर प्रचारक भनभनाने लगे। धीरे धीरे
 उन्होंने सम्मेलन पर अपना अधिकार जमा गिया, और अब वे नम्र नत्य
 करना चाहते थे। दूसरे उसके विरोध पर उताऊ हुए। सम्मेलन की नियमा
 वली के सशोधन करने की इमलिए भी जरूर था कि उन पर व्यवसायियों
 का प्रभुत्व न जमन पाय, और विद्वान् साहित्यकार ही उसके भाग्य निर्णायक
 हों। लेकिन, टडननी भी दीधमूर्तता का क्या कहा जाए ? जब समय था,

तब उहाने डिलाई की, अब मुकद्दमेवाजा गुरु हो गई। सम्मेलन को डूबने का डर नहीं, ता उसक काम के बिगडने का डर तो जरूर हा गया। पिछले पाच वष ऐसे थे, जब कि हिन्दी की परिभाषाआ के साथ साथ साहित्य निर्माण का बडा काम किया जा सकता था, लेकिन मुकद्दमवाजी ने उमे ठप्प कर दिया और रिसीवर (जादाता) बैठकर राख क नीचे जाग को बचाये रखन की काशिंग करता रहा।

२५ अगस्त को मन कुछ जाकाग की जोर उडने और कहन लगा— 'हृदय तरंग तो मदा ही उडता रहता है। कभी उसकी तरंगें ऊपर उठती है कभी नीचे। कभी गति तीव्र होती है, कभी धीमी। आज धीमी गति रही, न अधिक ऊपर न अधिक नीचे उठी। य तरंगें यकिनगत कारणो से भी हाती है और समष्टिगत कारणो से भी।'

२६ अगस्त को एक मगाल प्रीट आए जो आज स ३० ३५ वष पहले अपनी जमभूमि को छोडकर तिब्बत चले आए, ये। वहा वषों रहकर तिब्बती साहित्य पन्ते रह। उनरे साथ उनकी एक छोटी लडकी भी थी। बाह्य मगालिया क एक छोट माटे राजा के मन्त्रीपुत्र थ। रूसी क्रानि क बाद उसका जसर मगालिया पर पडा। सुखे बातिर (सुखबहादुर) क नेतृत्व म मगाल जनता ने अपन स्वेच्छाचारी सामन्ता के खिलाफ विद्राह किया। इसी समय यह अपन स्वामि-मुत्र क साथ मगोलिया स भागे। दाना घाडे पर चक्कर बडी मुश्किल स मिक्कांग पहुचे और फिर महीना बाद ल्हासा आए। दाना कुठ दिना तक पन्त रह। इहान तात्रिक शास्त्रा और विधिया का अध्ययन किया, फिर भारत चले आए। भारत म तिब्बती लामा तात्रिका की बडी प्रसिद्धि है। धीरे धीरे यह पटियाला के राजा क पाम पहुँचे और वहा तात्रिक राजगुरु बन गए। राजा को जितना ही स्त्रिया आर कुत्ता का गोक या उतना ही तत्र मत्र का भी। जाय से अधिक सच का परिणाम चिन्ता हाता ही है और उस चिन्ता को दूर करन के लिए राजा न मत्र-मत्र की गरण लनी चाहा। हमारे मित्र वहाँ राजगुरु बनकर कइ वष रहे। अच्छा बगत्रा मिला था नौकर चाकर भी थे और मामिन बतन भी निश्चिन था। जब महाराजा मरे, ता उनक उत्तराधिकारी न पिता की सभी गौनीनी की चीजा को हटाया। मगाल तात्रिक लामा भी घर से बेघर और बराज

गार हुए। १५ २० हजार रुपये उनका पाम था। भूमुरी में लखौरी बाजार का निब्वना गंगा का वह जानन था। यहीं चला आया। सीधे-साद लाग इनमें पूजा पाठ भी करवाते थे। चाहिए था, उन रुपये में काई स्थायी काम करना। पर सा नहीं हुआ। एक तरणी ने लिखा चुरा लिखा। 'बद्धस्य तरणी भार्या प्राणम्यापि गरीयसि', वह प्रेम में पागल था, लेकिन तम्हणा बद्ध का प्रेम में पागल क्या है। दूसरा नौजवान बाच में पडा और खान-उठान में जा लटा पटा बच रहा था, उन ग़बर स्त्री भाग गई। लखौरी भी छांट गई। नून-नल-लखौरी की जागाह बग्ने में बेहाल थे। दा-दो चार-चार आन की मूद घागा, छुरी केचो जैसा चाजे लेकर मडक पर बैठ जाते और उनसे जा आमदना हाता। 'मी पर गुजारा करत था। जाटा में लिखी में चले जाते वहा नी बला बान। मैं उनमें कहा "तिब्वत चले जादय। वहाँ गाँवा में नये स्कूल खुल रहे हैं आपका पतान का काम मिल जायगा।" लेकिन दून का जला छाछ का भी फूकरर पीता है। वह समझते थे कम्युनिस्टों में जान बचाकर मैं मगाटिया में भागा था फिर तिब्वत के कम्युनिस्टों का पाम जाऊँ, ता कही मूद-दर मूद महिला बढना ब न लें। यहाँ रखे हिन्दी भी वह कामचलाऊ सीख गए, कुछ पढ़ भा लते। पर, इतना जान नहीं था कि उनमें माहियिक सहायता का काम कर सकत। पटना, नालन्दा और दूसरी जगह में मुझ मित्रा ने किसी तिब्वत अध्यापक का भेजना का लिए क्या था। मैं चाहता कि वह वहाँ लग जाएँ। पर, उन्होंने आधे मन से हा वागिया की।

३१ अगस्त का कमला का पहली कहानी नारा ममाज में छपी गयी। एतिका का अपार हथ हा, ता इममें अदबय बना, जबकि पत्र एक जगह में 'नारी कहानी लौट आई थी। नया ममाज 'हिन्दी का सर्वोच्च पत्रिका का आ म है। मुने यत् प्रान्तता हुई कि अज कमला का हाथ खुलगा और तिब्वत का लिए तैयार हागी। हाथ खुलगा। उन्होंने अब तक आठ-नौ कानियाँ लिखकर छत्रवादी हैं। उनकी भाषा जोर लगते गला में मगापन करत की गुनाहना कम स-कम हानो गई पर दोषगुणता का काट हलाक नहीं मिला। बरमात में हमारे बगल का सामन का विपन्न पवतधेगियाँ हरि यानी स डेक जाती जा जाटा गुल हान हो गया हाकर तिब्वतों पहायियों

जसी बन जाती। दाहिनी आर पवत पाश्व बृक्षा से ढँक हात हैं। पहाण म जिस तरफ धूप अधिक समय तक ठहरती है उधर नमी की कमी के कारण जगल नहीं उग पाते, और दूसरी तरफ नमी के कारण छायादार जगल रहत हैं। इस नियम का अधिक वर्षा वाल पहाडा पर लागू नहीं किया जा सकता।

घड़ी यत्र की तरह जीवन चलता रह यह अच्छी बात तो नहा मालूम हाता। पर यदि निश्चित किये हुए काम म समय इस तरह बात, तो उसस सताप हाता है। भरे घटे अपन आप काम के बीच से सरकत जाते। हफ्त म सिफ रविवार का जाना मालूम हाता था, क्याकि उम दिन काम का स्यमित रखकर मित्रा के साथ मिलना जुलना होना। बाकी छ दिना क जाने का पता ही नहीं लगता। दिन बीतते सप्ताह, मप्ताह वातन महान महान बीतत वप इसी तरह समय चला जाता है। "कल जा हमार लिए तम्ण थ आज क वद्व भी नहीं नीय पडत और उनकी स्मृति मान बच रही है। पर यह तो जीवन का नियम है।

१५ सितम्बर का साथी महमूद जफर और डा० रंगीदजहा आइ। मैं समचता था वे ठहरंगे। रंगीण का मुन्से बड़ी गिकायत थी। कहती थी— मैं आकर झगडूंगी। पर आध घटा हा रह करके चले गए। पगडा यही करना था, कि मुचे वह उदू का विरोधी समझती थीं। रंगीण स्वय उदू की अच्छी लखिका थीं। हिन्दी का विराघ करने पर मुझे जिस तरह क्षाभ होगा वैसा हा क्षाभ करने का उह भी अधिकार था पर मैं अपने का उदू का विराधी नहीं पाता। इतिहास ने हिन्दी को एक दूसरा रूप दिया जिसम देशी भाषाभा को निवालकर अरबी फारसी क गच्छा का भरा गया। पर अत्र तो वह इतिहास की बात है। भाषा बन चुकी, जोर उसम गालिब-जसा प्रतिभाआ न अनमोल रचनाएँ रची। यह निधि हमारी है। उसकी रक्षा करना हमारा कतब्य है। मैं नहीं चाहता कि पुराना नर् या आग की उदू की कृतिया स हम बचित हाना पडे। उनकी रक्षा हानी चाहिए। उू का बद्धि और विकास करन का मौका मिलना चाहिए। हा, यह मैं जफर चाहता हूँ, कि उू क निर्विना प्रचार क लिए, अधिन-स-अधिन लागत तक पहुँचने के लिए यह जरूरी है कि वह नागरी म भी छप। राज्य भाषा स भी फारसी अक्षर म, बनान का आग्रह वही किया जाए

जिम इलाके या प्रदेश के अधिकांश लोग उसे चाहते हैं। नहीं तो खामखा का वसंतस्य पदा हागा, जो उदू के लिए भी अनिष्टकर हागा। रशीदजहा की कितनी बातें याद आती हैं। जत्र समय से पहले ही इस प्रतिभागालिनी महिला के चल बसन का खयाल आता है, तो बहुत दुःख होता है। वह शगडा करन के लिए फिर नहीं जा। महमूद उनके प्राणा को बचाने के लिए माम्का ले गए, जहा से वह अकले लौट।

मसूरी में दा सौजन (सैलानिया के मौसिम) हात है। एक मई-जून का वर्षा शुरू हान तब एक या डेढ महीन में कभी उममे भी पढ़ते खतम हा जाना है। दूसरा अक्तूबर में वर्षा के बाद प्राय एक महीने का होता है। मसूरीवाला को अपन नगर की अवस्था दिन पर दिन बिगडते देखकर चिंता हानी स्वाभाविक है। वे हर तरफ हाथ पर मारत हैं। अक्तूबर के मौसिम का अधिष्ठ भौंड भाड का करने के लिए महात्मव (फेस्टिवल) करन का रवाज चल पडा है, जिममें दस-बीस हजार स्वाहा कर देन के सिवाय और लाभ ता दखन में नहीं आता। अबका साल फेस्टिवल के उद्घाटन के लिए उत्तर प्रदेश के मुख्य-मंत्री श्री गार्विंदवल्लभ पन्न आए। स्वागत के लिए चार पांच द्वार बनाय गए थे। भाषण हुए। इससे मसूरी की नैया भवर स बाहर नहीं निकल सकती। उसका निकलने का एक ही रास्ता है चार पांच हजार कमचारियां बांटे दिल्ली के कुछ दफ्तर यहां लाय जाएं। वहाँ ऐम दफ्तर हैं जिनका दिल्ली में रहन की कोई जरूरत नहीं। शाम का माल राड पर बिताव घर स कुली तब कुछ गुलजार जम्पर मालूम हान लगता था। अधिकांश सैलानी पजाबी थे। बीच बीच में कुछ बिहारी पगालो भी दीम पडते थे।

३० सितम्बर का रविवार था। पहले मौज्ज में ता कम ही जेजिन दूसरे मौज्ज में अभी-अभी देहरादून वाले भी पिकनिक के लिए मसूरी पहुँच जात हैं। आज प० गयाप्रसाद गुबल के साथ डी० ए० वा० कालेज के २७ छात्र आए। कम्पनी बाग में सवा ६ बजे बस-गाण्टी चली। कुछ लटका न अपनी बकिनाएँ पड़ी, एक का छाडकर बानी का निरी तुनबंदी भी नहीं कर सकते थे। तुनबंदी के लिए भी ता कुछ छन्द और दूसरी बार्ने सौजन की जरूरत हागी है, जिसकी हमारे तरफ जरूरत नहीं समझने। अगर साहित्य

उनका विषय है तब तो कुछ पढ़ने के लिए मिल जाता है, नहीं तो स्वयम्भू कवि अपनी धुन में चाहे जो भी गाय, उन्हें सफलता की आशा नहीं हो सकती। उसके बाद लड़कों के प्रश्नों का उत्तर मुझे देना पड़ा। दापहर तक गाँठी बड़े जान-द से चलती रही। फिर हम घर लौट आए। साब में भया, भाभीजी और गुलजी के साथ कुछ और तरुण भी थे। लोगों का अपनी-जारी खींचने के लिए घुड़दौड़ करने का भी आरम्भ इस साल हुआ। म्युनिसिपलिटि से बाहर और हमारी कोठी के नीचे आधे मील पर अंग्रेजा ने लम्बा चौड़ा मदान पालो के लिए बनवाया था। वह खाली पड़ा था। उसी में घुड़दौड़ कराई गई। सोचा क्या जाने इसी से मसूरी का भाग्य लौटे। उस साल पहला इतजाम था इसलिए अच्छे घोड़े नहीं मिल सके और यही किराये पर चलने वाला लद्दू घोड़ों को दौड़ाया गया। घुड़दौड़ में पस लगाने वाले भी निकल आए। यद्यपि उनकी संख्या इतनी नहीं थी कि वह घुड़दौड़ का आश्रय बन जाते। हमारे ऊपर खाली हल हिल कोठी से पाला मदान दिखाई पड़ता था, इसलिए हम यही से उसे देख सकते थे यद्यपि जावाज यहाँ तक नहीं पहुँच पाती थी। घुड़दौड़ होना जारी है, जूआ हागा इसके विरोध में आज सबेरे नगर में जुलूस भी निकाला गया। इसका यह लाभ तो था कि जनजात लोगों को भी घुड़दौड़ का पता लग गया। पर, जुलूस में उत्साह नहीं देख पड़ता था न उमम अधिक आदमी थे। मसूरी अंग्रेजा के शासन काल में भी कुछ सालों से म्युनिसिपल कमिटी से बचता था उसका राज बराज के काम का प्रबंध सरकार द्वारा नियुक्त अधिकारी करता था। सर्वेसर्वा दहरादून के डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट थे। अंग्रेजा के समय से ही नौकरगाही की ऐसी परम्परा है कि वह जनता से कोई आत्मीयता नहीं स्थापित कर सकती। इस परम्परा को कांग्रेसी सरकार ने भी कायम रखा।

दूसरा जाड़ा

अग्नेजा के जाने के बाद हाननाथ पहले चुनाव का समय आया। सविधान बनाने से पहले एसी चार्जे बनी गई थी, जिसमें मालूम हाता था कि हमारा गामन नीचे में ऊपर तक लायनामिन हागा। बीमिया बय म काग्रेस ने भी सापना दाहरार्द्र था, कि हमारे प्रदग नापाजार बनेगे। लेकिन, गामन के अउन हाथ म आन पर और काग्रेस के मगठन के बाबूड भण्टा चार म हुब जान के बाट ननाभा के मालूम होन लगा, कि इतनी लाक तत्रता हमार हुब म अन्डा नही हागी। पहल प्रान्ता के राज्यपाला की लाक निर्वाचन हान की बात बही गई थी, लेकिन सविधान बनान वक्त इसको हानवर राज्यपाला का न्द्रीय सरकार का पुत्र बना दिया गया। अउ मसद (पार्लियामट) म एव भवन (राज्य-मभा) का भी निर्वाचन म बचित कर दिया गया, और उमकी जगह मसद के लोक-मभा के मन्म्या का उम चुनने का अधिकार लिया गया। जनता का राय को तभी ममद मा विधान मभा ठीक तरह म प्रस्ट करनेवाली बही जा मपता है, यदि पार्टीका का मिले बाटा म अनुमार उनके मन्स्य माने जाएँ। ऐसा हान पर निरचय ही काग्रेस सबेगर्वा नही बन मपती। इसीलिए, आनुपातिक प्रतिनिधित्व का निदान्त नही माना गया।

मगुरी म भी चुनाव की धून मचनवाली थी। हुए मित्रान मुमम बहा, कि हम लोग आपका पार्लियामट म भेजना चाहत हैं। मैं बहा मैं राग हाना नहीं चाहता। मैं ता योन्ड भी नहीं हूँ। बाटर हान के लिए उम

स्थान में छ महीने रहने की शर्त थी, और मैं मसूरी में अभी तीन महीने से आया था। ३ अक्टूबर को यह भी पता लगा, कि अब सोशलिस्ट पार्टी ने अपनी गांधी टोपी को लाल रंग में रंग लिया है। कांग्रेस के भ्रष्टाचार और उसके प्रति लोगो में जो दुर्भाग्य पाया जाता था, उससे कितनी ही पार्टियाँ और दूसरे लोग समझने लग कि कांग्रेस की नया तो अब डूबगी ही, इस लिए हम उसके साथ लगे रहने की जरूरत नहीं। सोशलिस्ट पार्टी चुनाव के मदान में आई। कांग्रेसवाले अपने उम्मीदवार सब जगह गड़े कर रहे थे सोशलिस्ट भा नहीं चाहते थे, कि उनके उम्मीदवार किसी चुनाव क्षेत्र में न रहें। यदि सोशलिस्ट पार्टी ने कम्युनिस्ट पार्टी में समन्वित किया होता, तो इसमें एक नहीं कि पूर्वी उत्तर प्रदेश के अधिकांश चुनाव-क्षेत्रों में कांग्रेस को सफलता नहीं मिली होती। पर जान या अनजाने सोशलिस्ट पार्टी ने मानो समाजवाद को भारत में न जान देने की प्रतिज्ञा कर रखी है।

हार हाने में कोई सदेह नहीं रह गया, तो जर्मनी ने हथियार ढाल दिया। जापान भी बिना शर्त वही करने के लिए तैयार था। उस समय अमेरिका ने जापान के दानगरों पर परमाणु बम फेंककर पूंजीवाद के आतताईपन का प्रमाण दिया। निरोह मनुष्यों को इस तरह मारने का प्रयोजन केवल यही था कि रूस अमेरिका की वैलीशाहा के एकाधिपत्य का दुनिया के ऊपर कायम हान में बाधा न डाले। जब तक वह उसी को लेकर बल बढ़कर गाल बजाता, सारे रूस की सीमा के ऊपर पहुँचकर लड़ाई के लिए ताल ठोक रहा था। यह सब होते भी ६० करोड़ आबादी का चीन देखते देखते अमेरिका के हाथ से निकल गया। सोवियत के नेताओं ने इससे पहले ही कह लिया था, कि परमाणु बम पर जब अमेरिका की इजारागारा नहीं है। पर अमेरिका इसे मानने के लिए कस तैयार होता? दुनिया की सारी जाँके अमेरिका के परमाणु बम के ऊपर नजर गड़ाए हुई थीं। वह समझती थी, कि वसीक कारण अमेरिका आज दुनिया का सबसे बड़ा शक्तिशाली देश है। अगर उन्हें मालूम हो जाए, कि रूस भी इस हथियार में पीछे नहीं है, तो उनकी हिम्मत टूट जाती। अमेरिका अब तक इन्कार करता रहा। लेकिन, अक्टूबर के पहले सप्ताह में रूस ने

नहीं, बल्कि अमेरिका ने घोषित किया, कि सावियन रुस में हमारे परमाणु बम का विस्फोट हुआ।

हिंदी—७ अक्टूबर को सुरजा डिग्री कालेज के प्रिंसिपल श्री पी० डा० गुप्त आए। वे आगरा विश्वविद्यालय के प्रभावशाली स्तम्भ और योग्य प्रिंसिपल हैं। कोई हिंदी भाषाभाषी जब अंग्रेजी में बालन का आग्रह करता है तो मुझे न जान क्या मालूम हाता है। वह कह रहे थे, 'विद्यार्थियों का अनुामन भंग करने में विद्यार्थी ही केवल दायी नहीं हैं।' हरक योग्य अध्यापक यही कहेंगे। यदि वह अपने विद्यार्थियों का दुधमुहा बच्चा नहीं मानता और विद्यार्थियों का भावा का भी आदर करना जानता है, तो उस कभी विद्यार्थियों के अनुामन भंग का दखन का अवसर नहीं मिलेगा। वह कह रहे थे, विद्या को योग्यता विद्यार्थियों में कम हाती जा रही है। साथ ही यह भी बतला रहे थे, कि अंग्रेजी की योग्यता को कभी जिन तरह तनी से गिरती जा रही है, उसने कारण बड़ी हानि होगी। हिंदी में उच्च शिक्षा का माध्यम हाना गुप्ता माह्र अभी दूर की बात या वाछनीय नहीं समझते थे। अध्यापक और विद्यार्थी हिन्दी पुस्तक और हिंदी भाषा का इस्तेमाल अधिकाधिक कर रहे थे। इस स्थाना अब संभव नहीं था। उनका अफसान था, कि अंग्रेजी के शिक्षा माध्यम हान पर सार भरने में जा उच्च शिक्षा की एकता टूटी जाती है, वह हिन्दी के वास्तु भंग हो जाणगी।

गायक फेस्टिवल में सम्मेलन में हा मसूरी में कवि-सम्मेलन भी किया गया। लेकिन, जिनके पास पैसा था, वह एम सम्मेलन में प्रेमी नहीं थे। दूसरा न कह दिया बुला ला। बहुत से कवि यहाँ पहुँच गए। लेकिन, यहाँ सम्मेलन में स्थान का न बाद प्रबन्ध था, न स्थान-धीन का। बचारे कवियों का बरग गीतना पडा। श्री सजदजी (बद्रीपुर) दस फजीलन के बारे में बतला रहे थे।

हिंदी के बारे में नहज्जी बहत हैं वह बठिन नहीं हानी चाहिए। यान्त्रिक बात तो यह है, कि वह चाहत हैं बिना पड़े लिये बाल्बाल से जितना उनका जान है, उसका हिन्दी भाषा का मान दिया जाए। ७ अक्टूबर का रडिया पर यह बाल रहे थे, जिनमें निम्न गला का उहने

प्रयोग किया था—वाक्यात दिमाग, वाक्या हृदय, यकीनन, सन्मा, मौक गायब इ-सानियत, जजबा कश्मकश खतरनाक गलत तरीके, गलत नतीजे जलसे इजहार खयालात आदि। हिन्दीवाले इन शब्दों को नहीं इस्तेमाल करते और ये शब्द यकीनन जनसाधारण की समझ के बाहर के हैं। हिन्दी पढ़े भी इन्हें समझने में असमर्थ है। इसपर नेहरूजी का फतवा है हिन्दी गलत रास्ते पर जा रही है। पहले उन्होंने भी मौलाना के साथ उद्दू का पक्ष लिया था अब हिन्दी के मजूर हो जाने पर चाहते हैं कि हिन्दी उद्दू का रूप ले।

उसी दिन मालूम हुआ पाकिस्तान के प्रधान मंत्री लियाकत अली को किसी ने मार दी। मरते वक्त उन्होंने मुह से निकला था— 'पाकिस्तान को खुदा हिफाजत करेगा।' जिन्ना जीर लियाकत अली दोनों पाकिस्तान के सर्वेसर्वा थे और दाना ही विदेशी थे। पाकिस्तान की सरकार में गणार्थी मुमलमान छा गए पूर्वी पाकिस्तान में पजाबिया का छूट मिली। इसके लिए लोगों के मन में इच्छा है कि कोई आश्चर्य नहीं। उस समय स्वाजा नजीमुद्दीन पाकिस्तान के गवर्नर जनरल थे। अधिकार गवर्नर जनरल के हाथ में नहीं बल्कि प्रधान मंत्री के हाथ में होता है यह समझ कर नजीमुद्दीन अपनी गद्दी में नीचे खिसक आए और रातारात प्रधान मंत्री बन गए। पाकिस्तान में स्थिति बराबर टाँबाडाल रही जोर ऊपर से अमेरिका का पजा उस पर मजबूत होता गया। भारत में भी भ्रष्टाचार और कम जा रियाँ हैं लेकिन पाकिस्तान से मुकाबिला करने पर वे कुछ नहीं हैं।

१२ अक्टूबर को किंगनसिंह ने मोमा का भाज दिया। हम दोनों अपने मन का ख्याल करने यही समयत थे, कि मांस खाने वाला हरक आत्मी इमे पसन्द करेगा। भया का भी साथ ले गया। लेकिन उन्हें पसन्द नहीं जाया। वहाँ से मलिंगार गए। मलिंगार मसूरी का सबसे पहला पक्का मकान है यद्यपि यह कहना ठीक नहीं है क्योंकि सवा सौ वर्ष पहले जिन दीवारा का बनाया गया था वही अब भी मौजूद हैं। इसमें कई दर्जन कमरे हैं और स्थान ऐसी जगह है जहाँ से दूर दूर का दृश्य दिखाई पड़ता है। सर्वे विभाग का एक दफ्तर मसूरी में रहता था जिसके कर्मों यहाँ पर भरे हुए थे। महता जी सपरिवार यहीं थे। उनके यहाँ हम चाय पीने गए थे। चाय पीने का समय

नहीं था, तो भी उहाने तैयारी कर रखी थी। वहा से ५ बजे लौटकर नया क यहाँ दुबारा चाय पी।

२१ अक्तूबर (इतवार), मेहमानों के जाने का दिन था। पहले एक तिब्बती गेगे (पंडित) आय। वह हिन्दी नाममात्र जानत थे। फिर नया नाभी और मेन्नाजी आय। पीछे भरठ वाली गबुन्नालाजी क साथ उनके सम्बन्धी मुरादावाद के एक तरुण साहु आय। मैं अपनी जीवनी से मुरादावाद जाने और वहाँ पर एक साहुजी क महीं रहन का जिक्र करन लिखा था कि उहाने दम दरियाई कमबल रख रहे थ और चाहते थ कि नौ और मानु मित्र पाएँ ता दमबाँ बन कर मैं घर स निकलू। यह मस्झा दाने कभी श्रविक नहीं हुई। काई धुमककड दूमरा क जान की प्रतीक्षा म महीना या वर्षों उनक पास बसा रहना ? आखिर म मडको की मुगई हो मिड हुई हागी जगा मि मैं कुठ मफाह रह कर वहाँ स तिमक कर किया। नग्न न बनलाया कि वह मर ही खचेर परदाग थ। मुझे माग्म था कि साहु की मौ और छाट नाद न मुझे विमयन क लिए बहून प्ररित किया था। तग्न न यह भा बनलाया कि वह ना नही रन लयिन मरे परदाग जब भी जीवित है कृत्वावन वास करन हैं।

२२ अक्तूबर का नया और नाभीजी का बिनादे की चाय पी। उन दिन हम 'लकममौट' गय। बरखान क महीन हमार बहून हँसी-मुग्गी म गुनरत थे क्याकि जून मा जुलाई म आरर नया और नाभीजी अक्तूबर में महीं म लौन थ। अब फिर अगले माल उनम मुलाकान हान बागी थी।

२३ अक्तूबर वाला रविवार का तग्न गिब गमा एक ब्रनवामो मगी तग्न तग्न का लकर आय। मगोलन क मोध गाने म्य का देगकर मालूम हाता था काइ गेंवार हागा। पर मेम स भूल नहीं कग्नी चाहिए इमका मुझे काफी तजर्वा था। तग्न एफ० ए० तक पना हुआ था। मगोल उमका रातगती विद्या था इमगिण उने मन लगा कर मफा था। यहाँ ब्रजगामो डाक्टर भागुरी क साथ अब की गर्मिनी बिनान चग जाया था, और कुठ क्या-बाती करक सब चला लता था। मगान म मग द्वय नहीं है, यद्यपि इन्डियन मगान का मैं पमन नहीं करता। मैं यह भी चाटना हूँ, कि हमारे मगान की स्वर लयि अन्तराष्ट्रीय हानो चाहिए। युरोपीय नाग्न (स्वर

लिपि) आज सारे विश्व में चल रही है। सारे यूरोप सारे अमेरिका, एशिया व भी सभा दश और जापान उसका ही अपनाए हुए हैं। हमारे संगीत को बाहर वाल इस नाटशन द्वारा जासानी से समझ सक्त हैं। जिस तरह सारी दुनिया का एक सध, एक नाप तौल हान से सबका सुभीता है और अपनी टेन्ट की जलग मग्जिद बनाना हानिकारक है उसी तरह अंतर्राष्ट्रीय नाटशन के वायवाट करने की साचना हानिकर और वकार है क्वाकि जाखिर उस अपनाना ही पडेगा। यूरोपीय नाटशन में यह भी लाभ है कि वह ग्राफ या फाटा जसा है। देखन मान से किमी राग की कौन राग से कितनी समानता और कितनी असमानता है यह मालूम हो जाता है। निश्चित तरुण का दगकर मैंन कहा कि संगीत का तुलनात्मक अध्ययन करो और लाकगीता का भी संग्रह करके उह अंतर्राष्ट्रीय स्वरलिपि में बद्ध करा। संगीत घुमक्कड़ के लिए स्वावलम्बी बनाने का बहुत भारी साधन है इसका उदाहरण वह तरुण स्वय था। वह भारत में कितनी ही जगहा में घूमा हुआ था और संगीत बल पर ही।

पैसा कम हो रहा गया था। जो अग्रिम लिया था उसमें २० हजार मकान और पत्नी पर ही खच हो गये थे बाकी भी उड़ चुका था। खच के घटाने के लिए साचना—रसाइय को हटा दे अपने हाथ से मराना बना लिया करें। पर उसका साथ बरतन मंजने का भी प्रश्न उठ खड़ा होता था, जिसके लिए नीचे के गहर की तरह कुछ घटे काम करने वाले नौकर नौकरानियाँ यहाँ नहीं मिल सकत थीं।

३० अक्टूबर का दीवाली थी। मैं तो मसूरी की काइ दीवाला नहीं दग्गी। एक आत्मी की घर देखने की भी जरूरत पडती थी। कमला और लागो के साथ जहर चली जाया करती। आत्मी का त्यौहारा की बटी आवश्यकता हानी है। दुखी जीवन में भी उनके कारण जरा देर के लिए सरसता आ जाती है। मसूरा के दूकानदार बचारे अपना ही माम खाकर जी रहे थे तो भा उहान भी अपना दुकानें सजार्न थी। हमारे आमपास भी पाँच छ दूकानदार हैं जिहान भी लक्ष्मी के आवाहन की वाग्नि की।

श्री कृष्णप्रसाद दर इलाहाबाद ला जन्म प्रस के वस्तुन विप्राता थ। उन्हाने ही एक छाट में प्रस को बढा कर उस एक बहुत बडे प्रेस का रूप

दिया, जोर सबसे बड़ा काम जा किया, वह था, छपाई सफाई में लॉ जनल प्रेस का भारतवर्ष के सर्वश्रेष्ठ प्रेसों में हो जाना। १९३३ से ही मेरी पुस्तकें वहाँ छपने लगी थीं। छपाई-सफाई के साथ जिस मुस्तदी से वह काम करत थे, उनके कारण मैं उनका बहुत प्रशंसक हूँ। फ़ार भी बधिष्णु व्यवसाय अधिकाधिक पूजा की माग करता है। व्यावसायिक उन्नति का ही एकमात्र देगने वाला वह पुरुष दूसरे पहलू को नहीं देपता। ला जनल प्रेस में मशीनों और काम का बदन का परिणाम यह हुआ कि वह पसे वाला के हाथ में चला गया, तो भा उहीन दर साहब की याग्यता को देखकर उह मनजर के पद पर रखा। प्रंस ने अपना प्रकाशन भी आरम्भ करना चाहा। पर साहब न मुझे पुस्तक देने के लिए लिखा, अग्रिम भी दिया और मैंने गढ़वाल, 'बुमाऊँ', दक्षिणी हिन्दी काव्यषाग' तीन पुरतनों को देना स्वीकार किया। 'गढ़वाल' को वह छाप सके, 'बुमाऊँ' माना में पच हा चुका था। उसी वक्त मालिका का दर साहब की जरूरत नहीं रह गई और उहीने उह हटा दिया।

नवम्बर में भूत सात महाने का हा रहा था। दिन में सेर आटा और हप्पन में दो दिन आधा आधा सेर भाश्त उमे मिलता। अभी वह लम्बा छर हरा था। झूब इयर-उयर दौडता था। उसका क्या पता था, कि दंग में अन्न का कितना कष्ट है ?

३ नवम्बर तक सर्दी आ गई, और केवल दापहर का ही उसका पता नहीं लगता। नौकर चला गया था और कमला को भाजन ही नहा बनाना पड़ता था, बलि बरतन भी मलना पड़ता था। कमला को अपनी परीक्षा की तयारी भी करनी थी।

धोमती मोहिनी जुत्थो—माहिनीजी बहुत ही सुसंस्कृत-माहित्यिक महिला हैं। कश्मीरी पण्डिता के परिवार में अमृतसर में पैदा हुई और व्याही गढ़ लखनऊ के इजीनियर मुनीश्वरनाथ जुत्थी के साथ। मोहिनीजी के दादा-परदादा अफगानिस्तान में बड़े ऊँचे पग पर थे। जब उनके अमीर का जमाना बिगडा ता वह भी आकर अमृतसर में रहने लगे। उनकी परदादो फारसी बोलती थी। भारतवर्ष में अंग्रेजी का रवाज १९वीं सदी के चौथे पाद में ही चला था। जा राजमेवा का अपना पुर्तनी पग मानत थे, वे

इस ही से अपन बच्चों का अंग्रेजी पढ़ाने लगे। यद्यपि लड़कियाँ के लिए उतनी अंग्रेजी की माँग नहीं थी लेकिन २०वीं सदी के आरम्भ में पैदा हुई माहिनीजी का अंग्रेजी मट्रिक पास करने का मौका मिला और उसके बाद अध्ययन उनके लिए बस बन गया। अंग्रेजी के साथ उन्होंने भी उनका गीत था उदा कविता कहने लगी। उनके कविगुरु पं० ब्रजमोहन दत्तात्रेय कैंपी थे। और उनकी कविता को मैं टॉन हॉल की मञ्च में सभापति रहते सुन चुका था। वह ४ नवम्बर का और भी सुनने की मैंने इच्छा प्रकट की। जुलूसी साहब बहुत दिनों तक गारखपुर में डिस्ट्रिक्ट इंजीनियर रहे जब अवसर प्राप्त थे। पति पत्नी दोनों की रुचि एक तरह की नहीं थी लेकिन दोनों में सौहार्द बहुत था। जुलूसी साहब हमेशा बात में बड़े उदार विचार रखते हैं। दोनों के तीन पुत्रियाँ और तीन पुत्र हैं। इस दम्पती का व्यावहारिक ज्ञान कितना है यह इसी से मालूम होगा कि उन्होंने अपनी सन्तानों को उच्च शिक्षा दिलाते हुए कला की ओर नहीं बल्कि साइंस की ओर बढ़ाया। एक लड़का डाक्टर होकर इंग्लैंड पढ़ने गया और वहीं प्रक्टिस करते विवाह करके बस गया। अंग्रेज बहू के लिए सास के दिल में बसा ही मन है, जसा कि सा कश्मीरी लड़की के लिए होता। एक लड़का बाप की तरह इंजीनियर और तीसरा रसायन की इंजीनियरिंग करके अमेरिका सात-आठ वर्षों तक रहा। पढ़ते तो जान पड़ता था, कि वह अमेरिका से नहीं लौटेगा। इसके लिए माहिनीजी का बहुत चिन्ता रहती थी। तीनों लड़कियाँ का उन्होंने डाक्टर बनाया। दोनों कश्मीरियाँ से बाहर अपना व्याहृत किया पिता माता का उन्हें पूरी तौर से आजीवन मिला। ऐसे सुसंस्कृत दम्पती से परिचय और सम्पर्क होना बड़ी प्रसन्नता की बात है इसे कहने की जरूरत नहीं। एक साल सीजन में वे नहीं आए, तो हर रविवार का उनका जभाव घटकता था।

हर साल की तरह अब के साल भी ७ नवम्बर को रूसी क्रान्ति का महात्मव आया। रेडिया द्वारा मैं भी उस महात्मव में शामिल हुआ। यह महात्मव सिर्फ रूसिया और सावियत की दूररी जानियों के लिए नहीं बल्कि सारा दुनिया के श्रमजीवियों का महान् पर्व है। साम्यवाद का पहला पहला साकार रूप म पृथ्वी पर रूस में ही अवतीर्ण हुआ। आज वह दुनिया

में अकला नहीं है। पूर्वी युरोप मासम क बनलाए पय पर चलकर सुख और समृद्धि की आश तेजा में बढ रहा है। युगा का पिछडा महान् चीन भी अब उनमें बढम स कम्म मिलाकर चल रहा है। भारत को अंग्रेजा से शासन लिए चार बष हा गया। यहाँ काग्रेस ने नैया रा अष्टाचार क दलदल में फँसाकर लागा का परेशान कर रगा है जब कि दा ही बष में चीन कहीं से बहाँ चला गया ?

युक्त-राष्ट्र क सामाज पर जास्कर, जम्मू-कश्मीर का एक भाग है, जहाँ क लाग लहास की तरह तिबती भाषा और बौद्ध धर्म क अनुयायी हैं। जामा नकारा न हूंगरी से आकर यही बषों रहने तिब्वती पटी। तिब्वती भाषिया के साथ भरा विगप आत्मीयता है। लाहुल क ठाकुर मंगलचन्द और डा० भगवानमिह न अपन पत्र में लिखा कि जास्कर क लाग घाम गया रह हैं। पाकिस्तानी एक बार उनमें भीतर घुम आए थ जहाँ स व भगा स्थि गए, लेकिन जाम्जरिया की काह गाज-गवर लनवाला नहीं है। अपन पुरान सम्पत्त क कारण राष्ट्रपति हा जान के बाद भा राजेन्द्र बाबू क पाम एभा तकलीफा का चिट्ठी द्वारा पञ्चान स में बाज नहीं आना था। मिन उह लिखा। जबाब में मालूम हुआ, कि सहायता में दी गड है। लेकिन सरकारी सहायता का बीच में उडा लेनवाला की मर्या कम नहीं हाती।

मम स आए अब चार बष हा गए थ। कइ बार अपने मन में भी आमा और मित्रों न भी कहा कि इस यात्रा का लिख डालें। अत में १२ नवम्बर को मैं 'रुस में पञ्चोत्त मास' का लिगना शुरू किया। यह १९८४ क अत में १९४७ क अन्त तक की यात्रा थी, और उसक लिख लेन के बापु मुझे इच्छा नहीं हु कि तनीय जीवन-यात्रा में उम काल का भी शामिल करूँ।

बई स्थि अपन हाथ स भाजन बनान और बरतन साफ बरत के बाद बहन पर पहासित बरटिन (घाबिन) न भाजन बनाना स्वीकार किया। मानबरमित्त स यह अच्छा भोजन बनाने थी। इससे कमला का पटन की पुरमन मिला।

नवम्बर क मध्य तक मकल की पत्तियाँ गिर गई थी और व मूले पड में दिशाद दन लग। चम्पनट (पागिर) और नामपानी की पत्तियाँ पीली

पड गई थी कुछ दूसरे बंधो के पत्ते कलेजी रग के हो गए थे। एक बिना गंध का सफेद फूल या जिम मैंने बेहया फूल नाम रख दिया था, क्योंकि कहीं डाल दिया जाए तो बहा स हटने का नाम नहीं लेता। हमने एक जगह उसके लिए स्थान छाड़ दिया था, और कबड़े क तरह के पत्ता वाला यह पौधा हर साल बहा झुरमुट बाधकर खड़ा हो जाता। जाडो म सबसे पहले यह सूखता और बसंत म सबसे पहले हरा होने लगता। बस इसके सफेद छाड़ कर और भी रग के फूल सुगंधी न होने पर भी गुलदस्ते की गंधा बढ़ाते हैं।

१८ नवम्बर को श्री सत्यप्रकाश रतूडी आए। कई वर्षों से उहाने मसूरी से एक साप्ताहिक पत्र 'हिमाचल' निकाल रखा है। वैसे मसूरी स तीन अंग्रेजी पत्र न जाने कितन वर्षों से निकल रहे हैं। उनका कोई खरीदार है इसका भी पता नहीं। पर मसूरी के स्टोर और अग्रजा डग के दूकानदारा को अपने अस्तित्व का पता हरेक बगले तक पहुँचाना जरूरी है, यह काम ये अंग्रेजी पत्र करते हैं जिमके कारण उन्हें बिचापन मिल जाते हैं। यहाँ के सलानी अधिकतर काले चमड़े वाले अंग्रेज हात हैं। अंग्रेजा क नौ वर्ष जान के बाद आज भी मसूरी की सडका मे जितनी अंग्रेजी बाली जाती है, गायद उतनी अंग्रेजा के समय मे भी नहीं बोली जाती होगी। आज जितनी लिप्सटिक और पौडर का खर्च यहाँ है, उतना अंग्रेजो के समय म भी नहीं रहा होगा। ऊपर से ढेर का ढर काजल भी हमारी सुदरिया को चाहिए। ऐसे सलानिया को हिंदी 'हिमाचल' की क्या जरूरत? मुझे यही समझ म नहीं आता था कि रतूडीजी कस इमे चला रहे हैं। कभी वह किसी के यहाँ नौकरी करते और पेट काटकर आठ पष्ठ के हिमाचल को निकाल देन। अध्यापक रहकर भी उन्हाने ऐसा किया। जब इस तरह जादमी जुटा हुआ हो, तो हिमाचल क्यों नहीं निकलता। कभी कभी कुछ हफ्ता या महीना के लिए वह अस्त भी हो जाता पर फिर प्रकट जरूर होता। उसम मसूरा की ही खबरें नहीं रहती, बल्कि टेहरी गडवाल की खबर भी होती, इसलिए बाहर उमक कुछ ग्राहक थे। जब यहाँ उसका चलाना मुश्किल हो गया, तो रतूडीजी उस श्रुतिकण ल गए। वहाँ गायद अधिक अनुकूल परिस्थिति है और अब भी वह निकल रहा है।

राजेन्द्र बाबू ने प्राइवेट सेक्रेटरी श्री चक्रधर शरण के पत्र से मालूम हुआ, कि राष्ट्रपति ने जास्कर सम्बन्धी मेरे पत्र को अपने पत्र के साथ प्रधान मंत्री के पास भेज दिया है। चक्रधर शरण तब से राजेन्द्र बाबू को छाया की तरह से रहे, जब वह बिहार में अधनग्न फकीर की तरह कांग्रेस के काम में दिन रात लगे रहते थे, यद्यपि सभी जानते थे, कि राजेन्द्र बाबू में असाधारण प्रतिभा और त्याग है, पर वह भारत के प्रथम राष्ट्रपति होंगे, इसका किसको पता था ? राजेन्द्र बाबू ने जिसको एक बार अपना लिया, वह सदा के लिए उनका हो गया। मुझे दस समय याद आते थे मथुरा बाबू, जो असाहयोग में बकालत छाड़कर पीछे राजेन्द्र बाबू के साथ हो गए, और चक्रधर बाबू की तरह बराबर उनके साथ रहे। लेकिन मथुरा बाबू, न भारत का स्वतंत्र दाय सके, न अपने 'बाबू' को इस महान पद पर आमीन। उस दिन जब राजेन्द्र बाबू का प्रथम राष्ट्रपति होना निश्चित हो चुका था, उसी समय एक दिन पार्लियामेंट भवन में एकाएक राजेन्द्र बाबू के साथ चक्रधर बाबू में मुलाकात हो गई। उन्होंने पहले ही की तरह पैर खूकर मुझे प्रणाम किया। मैं इसे नहीं पसन्द करता, लेकिन, किसी का हाथ कमे रीजता ! भावी राष्ट्रपति के प्राइवेट सेक्रेटरी होने के बाद भी उनकी सरलता और सौजन्यता इस बात से स्पष्ट थी। चक्रधर बाबू के बारे में इतना कहने की इगलिए भी आवश्यकता पडी, कि थोड़े ही समय तक वह राष्ट्रपति के सहायक रह सकें। फिर उनका मस्तिष्क विगड गया। आज वह काके (रांची) के पागलखाने में हैं। वहाँ रखने के सिवा अच्छी तरह रहने का कोई दूसरा स्थान नहीं रहा था। मनुष्य का मस्तिष्क उसके जीवन के लिए कितनी मूल्यवान् निधि है।

"रूम में पच्चीस मास" के लिखाने के समय यह स्थान आया, कि १९३३ से १९३६ तक की कितनी ही यात्राएँ जो बिना लिखी पडी हैं उन्हें भी लिखवा देना चाहिए। "मेरी जीवन-यात्रा" के तीन भागों में मैं जन्म से ६३ वर्ष पूरा करने तक की बातें लिखी हैं। घुमक्कटों करने के समय की यात्राओं को मैं छाड़ नहीं सकता था, उनमें से कितना का मैं पहले ही लिख चुका था। "रूम में पच्चीस मास" का छाड़ कर बाकी यात्राओं का सन्धेय में इन पुस्तक में दे रहा हूँ, जिसे कारण पुनरक्ति भी हुई है।

२२ नवम्बर को डायरी में लिखा "२०५० रुपये बक में रह गए हैं जिनमें से ५०० उल्लयनारायण पांडे को भेजना है फिर १५५० ही रह जाते हैं। अभी तक मैं दूसरे के मन से जायिक पीडाआ का देखता था, क्योंकि मैं जजगरी वृत्ति से रहता था न अपना कोई घर था, न अपना परिवार। अतिथि प्रदान के लिए देश और विदेश में सकड़ो गृहपति तयार थे इसलिए मुझे नून तेल-लकड़ी की फिकर नहीं हो सकती थी। यात्राआ और शाघ-व्याय के लिए पैसा की जरूरत जरूर थी, लेकिन उनके अभाव में काम में अडचन हाती तो उन्हें कुछ दिना छोड़ देने में भी कोई आपत्ति नहीं थी। लेकिन, अब वह बात नहीं थी। मैं गृहपति था, गृहपति के हरेक कर्तव्य का पालन करना चाहता था। खासकर अतिथि सत्कार में तो मुझे बड़ा आनंद और सतोष आता था। ममता या मैं जीवन भर जा आतिथ्य पाया है उसका थोड़ा सा बदला इस रूप में दे रहा हूँ—अतिथि ऋण से उरुण होने का यह भाग है। सबसे अधिक चिंता इसकी होती थी कि गमियों में वही ऐसी स्थिति न हो जाए कि वृणानि भूमिदक वाक्चतुर्थी 'सत्कार का भरे पास साधन रह जाय।

२५ नवम्बर को दिन भर घादल रहा। कल रात और आज को वर्षा न घरती को ऊपर ऊपर से भिगा भर दिया। नासपाती की पत्तियाँ अरण वण हो गई, और दूसरे साग कितने ही सूख गए। गाठ गोभी, राइ बंद गोभी पहाड़ी मटर पर जाड़े का कोई बस नहीं चलता। ये वर्ष में ढक कर भी फिर हर हरे निकल आते हैं। मिचक पत्ते निम्न तापमान में सूख जाते टमाटर उसमें भी कमतार है। इन दोनों की जडा का अगर हिमीभूत न हान दिया जाय तो अगले बसंत में फिर इनमें हरे पत्ते निकल आने हैं।

'हस में पञ्चीम माम' २६ नवम्बर को समाप्त हो गया। बीकानर के प्रकाशन के पास उसके कुछ भाग छपने के लिए भेज भी दिये। मेरी पुस्तक के अधिक दाम हान की गिकायन अतक पाठका का है। लेकिन, बीकानर के प्रकाशन में काम रखने में हृद कर दी। पुस्तक का दाम पाँच रुपये में अधिक हर्गिज नहीं होना चाहिए था लेकिन उन्होंने आठ रुपये रखा। बचस लेखक बचारा क्या कर। दाम मस्ता रखने के लिए स्वयं

प्रकाश प्रनना और भी आफन माल लेना है यह तीन पुस्तका का स्वय प्रकाशिन करक मैं देख लिया ।

२७ नवम्बर का मासूम हुआ, कि भैया (स्वामी हरिहरणानन्द) न ४६ हजार म दिल्ली फैजवाजार (दरियागज) मे जमीन खरीद ली, जिनका जय है जमीन लन मे १५ हजार तर पहुँच गए हगि । फिर जमीन लेन से हा ता काम नही हाना, मकान बनान क लिए उमम भी अधिक ही रुपया चाहिए । दिल्ली म और ऐमे मौके पर मकान बनाना कभी घाट का सौदा नही हो मक्ता भैया की म दूरदर्शिता का मैं कायल था ।

पहाडी दीवाली—पहाड मे विगोपकर गढवाल और उमके पदिचम वाग निमालय म दीवाली उमी लिन नही होनी, जिन दिन सारा भारत उम मनाता है । हमारी दीवाली ३० अक्तूबर को हुई थी, जबकि पहाडी दीवाली २६ नवम्बर का हुई । हमन सबसे नजदीक का गाँव कण्डी था, जा यहाँ म दा मील क करीब हागा । उम दिन भाजन करके हम कण्डी गाँव की आर चले । सारा रास्ता उतराई का था । हरी का घर गाव स काफी पहुँचे ही पटता था । व हमारे यहाँ दूध और माग-सब्जी दिया करत थे । उनक घर पहुँचने पर ल्या कि वह पीकर भूत बने हुए हैं । घरवाग दूमरे भी उतन मस्त नही थ । गायग माचा—गाम क कराव आन पर पान का समय हाना है । पर हरि न साचा—गुभम्य गीघ्रम् । ता भी उहाने अपनी लुटपुटानी जीभ और लटपटान हाया म हमारा म्वागन-मत्वार किया । यहाँ म और भी काफी नीचे उतरकर हम उम छाटी नली क बिनार पहुँचे जा कम्पनी बाग और चढालगनी के एक पाइव का पानी अपन साथ ल जाकर जत म कम्पनी फाल बनकर गिरती पटती जमुना की गामा म जा मिगती है । पानी पार कर योगी सी चढाई म मेना के बीच लेकिन पहाड की बाहा पर कडो गाँव जाया । ५० ६० घर थ, जिनम २० क करीब ब्राह्मणा और उनन ही गणों और हरिजना क थे । आज दीवाली क दिन कडा गाँव का क्या पूछना ? "मधु वाता ऋतायन" की बात चरिताथ हा रही थी । हवा म नी मद्य की मुगम उड रही थी । गाँव म एक जगह लाग दोर पर नाच रू थे । हमारा घाबी नन्दू मोल बजान मे अवरल था यह दगकर हम भी गव हुआ । आज सब घरों क दरवाज खुटे हुए थ, जहाँ नी

पहुच जाइए मधु (मद्य) का कटोरा सामने हाजिर था। मैं अपने का अभाग्य समझता था। नदू खून पीकर तालसुर के साथ डोल पीट रहा था। नाच के लिए वाद्य अत्यावश्यक है और उसे हरेक आदमी नहीं बजा सकता, इसलिए उस दिन नदू की बड़ी कदर थी। पहाड़ म खग और मदानी दा तरह की सस्कृति है। ऊँची नाक वाले अपन को बड़ा ममय मदानी सस्कृति का अपनात हैं। उनकी दखादखी खश भी उसे मानने के लिए मजबूर हैं लेकिन कडी गाव और मसूरी के इन पहाडो के दूसरे गाँव जौनपुर इलाके पडते है—जमुना के इस पार जौनपुर और उस पर जौनसार है। दाना के ऊपर जमुना क दोनो किनारे खाई का इलाका है। खाई से एक बडी पवत माला को पार करके बनौर (किन्नर देश) म जाया जा सकता है। किन्नर की सीमा तिब्बन से मिलती है। जौनपुर जौनसार खाई बनौर तिब्बत य सभी पाण्डव विवाह वाले देग है। जौनपुर और जौनसार इनम मदान स सबसे नजदाक पडत हैं। पाँचो पाण्डवो का अपनी एक पत्नी द्रौपदी स कस गुजर होता होगा, इस यहाँ आखा दखा जा सकता है। पाँचा पाण्डव द्रौपदी के अतिरिक्त और भी पत्नी रखने क लिए स्वतंत्र थे जो यहा बहुत कम सम्भव है। जहा पाण्डव विवाह चल रहा हा वहाँ खश का पुराना रीति रवाज सबसे अधिक सुरक्षित होगा, यह जासानी से समझा जा सकता है। गाव से बाहर क खेता म होली जली। लोगो को क्या पता कि नीचे होली और दीवाली म चार महीने का अंतर होता है। इहोने होली दीवाली दोना एक ही साथ कर ली। हमारी दीवाली वाले समय पहाड म फसल काटन की भारी भीड रहती है इसलिए वह उस समय तिब्बन्द् त्यौहार नहीं मना सकते। गायद इसीलिए यहाँ वाले उस दिन दीवाली नहीं मनाते।

हाली भी रात को नहीं दिन ापहर को जली। उसक लिए लागा ने घास और लकडी पहले स ही जमा कर रखी थी। जलाकर लोग गाने-बजाते-नाचते गाँव की तरफ लौटे। गाँव क बीच म रख घासे के पूले से लाग रस्सा बटने म लग हुए थे। आज जोर कल यहाँ रस्साकगी हागी, जिसम एक तरफ स्त्रियाँ हागी और दूसरी तरफ पुरुष। यह जरूरी नहीं है कि पुरुष ही हर साल जीते। स्त्रियाँ की सहायता क लिए उनकी लडकियाँ और गायद दामाद भी सहायता करते हैं। वह रट थ, दा साल स पुरुष

त्रिजयी हा रहे है। रस्साकशी रात को हान वाली थी तब तक हम रह नही सकते थे, न अगले दिन ही जाने वाले थे। यहाँ के सभी लोग लम्बी-पतली नाक वाले और गारे थे। गुद्ध खसामुद्रा यहा दीख पडती थी। कभी-कभी मूछा वाले आदमी भी देखने म आ जाते थे। सवा ३ बज गए। देखा, कटे हुए एन खेत मे १०-१२ तरणियाँ और लडकियाँ नाच रही है। नाच बहुत कुछ किन्नरा जसा ही था। वह सूयास्त के समय जमता। हमारे रहने रहते सख्या कुछ और बडी, पर पूरे जाग के साथ अभी नाच गाना शुरू नही हुआ। स्त्रियाँ पाती से लडी हावर हाथ म हाथ मिलाय नाच रही थी। चाहे किसी जात के खग स्त्री पुत्य हा—ब्राह्मण भी—सभी मद्य पीकर नाचने-गाने का आनन्द लेते है। कडी गाँव पवतीय द्रोणी के नीचे है, जिनके चारा तरफ ऊँचे ऊँचे पहाड खडे हैं। दिन के बीतने के साथ सब जगह नीरबता छाती जा रही थी, और उसमे गान वाला के कठ स निकले गीत की प्रतिध्वनि चारो ओर छा रही थी। आज स ढाई हजार वष पहले मैदान म भो यही समी रहा हागा। साडे ३ हजार वष पहले सप्तसिंधु के आय मोम (भाँग) पीकर इसी तरह अपना मनोविनोद करते होंगे। कितनी प्राचीन स्मृतियाँ दम नृत्य के साथ बधी हैं।

१ दिसम्बर को साहित्य-सम्मेलन द्वारा प्रकाशित ३० पुस्तकें जाइ। कुछ तो महारट्टी थी। जनादी लागी को भारत के इतिहास और भूगोल का लिपिन का गौत्र चरयि ता वह कूडा कबट छोड और क्या लिख सकते है।

दिसम्बर के शुरू होने ही जाडे ने काफी प्रगति कर ली थी। दिन म अधिकतम ताप ५० डिग्री पर था, अर्थात् हमारे शरीर के तापमान से ४४ ४५ डिग्री नीचे। पर अभी बफ बनने के लिए १७ डिग्री और नीचे उतरने की जरूरत थी जा रात को किसी समय भी हा जाता था। मिस पामग अपने मरान "बिलडेर" के वेचन की चिन्ता म थी, कोई गाहन नही मिलता था। जिनो समय इस मरान क ६० हजार मिल रह थे। उम यक्त उह क्या पता था कि ममूरी का आज का दिन देग्ना पडेगा। बनी बहिन ७० के पाम पहुँच रही थी शरीर से बहुत कमजोर और हृदय मे और भी दुबल थी जिनके कारण बहुत चिन्ता थी।

चौपरी न दा काफी बडे खेतों म कइ साला से खेती करनी शुरू की

थी। वह खाली पड़े हुए थे। हमारे पास वाला सेन 'अरान हीस' के साथ सम्बद्ध था जिसकी मालकिन मिसज किदवाई एक अंग्रेज महिला थी। इसमें कुछ फलदार और कुछ गौकीना के बक्ष लग हुए थे। चौधरी कई साल जान चुके, तब मिसज किदवाई ने उन्हें बेदखल करना चाहा। लेकिन अब चौधरी का उस पर कानूना हक हा गया। वह अधिकतर मटर और बन्दगोभी उगाते। ये चीज उसे समय पदा हाती जब इनका नीचे अभाज हाता इसलिए अच्छे दाम पर त्रिक जाता। आजकल वह बन्दगोभी उच रहे थे।

हमारे हेपी बली की पुलिस चौकी के दीवान (राइटर कास्टेबल) श्री कुज्जी साहित्यिक रचि रखन वाले तथा अपनी गढवाली भापा के कवि थे। वह अबमर हमारे यहां आकर पुस्तक और अखबारा का पत्ने के लिए ले जाते। उस दिन बतला रहे थे 'आजकल चुनाव की घूम है। टेहरी राजा का नामिनगन पपर रद्द हो गया लेकिन माँ श्री कमलदुमती का नही इसलिए वही बेटे की जगह पर सडी है। छोटा लडका और कितन ही पुराने दरबारी भी कांग्रेस के उम्मीदवारा के खिलाफ चुनाव के लिए खडे ह। जाखिर टेहरी जिले के चुनाव में कांग्रेस का एक भी आदमा नही चुना गया। राजकुमार राजमाता और उनके दरबारी ही बाजीमार ले गये। यह क्या? जनता ने क्या भलाइ कांग्रेसी गायन में देखी थी कि वह उसके उम्मीदवारा को बाट दती? छपरा में एकमात्र चुनाव क्षेत्र में श्री अखिलानंद सिंह स्वतंत्र सडे हुए थे। कांग्रेस की आर स मरे पुरान सहरारी लक्ष्मी नारायणसिंह लड रहे थे। जखिला ने समझा चुनाव धन छोटा है साइविल से एक छार स दूसरे छार का तीन चक्कर एक दिन में लग सकता है, कांग्रेस बरनाम है इसलिए मैं चुन लिया जाऊंगा। पर असफल रह।

४ दिसम्बर का लहासा स श्री निरलमान साहुवा पत्र आया। यह पत्र कर भरे हृदय का भारी बक्का लगा कि एक मास पहले मेने गदान छोम्-फेन् (मधधमबधन) का दहात हा गया। एकाएक मुह स निरला— हम रत उन नुधा पर है जा बिन खिले मुख्या गए।' प्रथम थणी के चित्रकार प्रथम थणी के तिवनी भापा के कवि बौद्ध दगन के अच्छे पण्डित धमबधन तभी हो चुके थे, जब १९२४ में वह मर साथ पहली बार तिवनी से भारत

आए। इसके बाद वह दस बारह वर्ष तक भारत ही में भिन्न भिन्न जगहों पर रहे। अंग्रेजों की योग्यता काफी हासिल कर ली, और सबसे बड़कर बात यह कि दृष्टिकोण आधुनिक और वैज्ञानिक हो गया, इतिहास और सामाजिक अधिष्ठान-समस्याओं के बारे में भी। मर घनिष्ठ सम्पर्क में आने के कारण वह भावसंबन्ध-समाजवाद की ओर चला। उन्होंने अपनी वक्तव्याओं में इन विचारों का रस। दा-तीन माल पढ़ कर अपने दस लौटने के लिए निश्चय हुए। वह निश्चय के सबसे उत्तरी भाग अर्थात् रहने वाले थे। विद्या के प्रेम ने उनमें आराध और सम्मान का जीवन छुड़ाया। वचन में ही वह अकाली लाम्हा मानकर एक मठ के महन्त बना दिए गए थे, लेकिन जब देखा कि उसमें विद्याजनन में स्वायत्त हाता है तो सब छोड़-छाड़कर लहाम्हा में आ बहा के डेपुटि विहार के सबसे बड़े तथा तिष्ठत के भी महान्तम विद्वान् गण शरद के विद्यार्थी हो गए। गण शरद काग वाइ शेक के दरबार में सम्मानित थे लेकिन वह सबसे पहले कम्युनिस्टों की ओर हाने वाले में थे। अब इस तरफ विद्यार्थी के काम का समय आया, जबकि चीन और तिब्बत लगे हो गए। अंग्रेजों की गैरनी और दिमाग अपनी वरामात दिवान के लिए उन्मुक्त थे। लेकिन वह पहिले ही चल बन।

मसूरी में एक तरफ तो यह पुस्तक थी जिससे माय भन्नी लाग भी कम-कम जमानों महानुभूति दिखलाना चाहते थे, केन्द्रीय सरकार के कुछ अधिकारी यहाँ पर स्थानान्तरित कर दिए जाँ पर काम उठता ही रहा था। सर्वे विभाग के सौ लाम्हा आदमी जो अपना अधिकार के माय यहाँ रह रहे थे अब उन्हें भी दहरादून भेजा जा रहा था। श्री महान्तम महन्त ने अपनी पत्नी के साथ ६ नवम्बर को आकर यह समाचार लिया। मसूरी का जाड़ा कुछ उठता के लिए भन्ने अच्छा नहीं था, लेकिन यदि पढ़ाई का एलाउमें लिया जाता तो यह भी यहाँ रहने के लिए तयार हो जाते। वसा करन की जगह आरिग दरारून जाकर लणौर गाँव के दूगानपुरा के दुभाग्य का कारण था।

बादल ही जल-बपा करत हैं। यहाँ तापमान के अन्तर्गत ही जल-बपा करने लगते हैं। दानत लाने हम बाँटने की गतिविधि के विशेष परिणाम मातृक हाँ लगे थे। हमारे नीचे की ओर जमुना की गाम्हा अंग

बहती थी, जिसके रास्ते होकर कभी कभी बादल ऊपर का चढ़ते। जाधपुर की ठाकुरगनी का नौकर दुर्गा तो इन बादलों को देखकर जबरजबरता— दुनिया में बादल ऊपर से आते हैं और यहाँ नीचे से। वह नहीं जानता था, कि मैं स्वयं साढ़े ६ हजार फुट की ऊँचाई पर हूँ। ऊपर कम्पनी बाग के साथ सड़ा चडालगढी का पहाड़ है जिसके परले पार देहरादून की उपत्यका है। यदि नीचे नलगर से और ऊपर चडालगढी के आने वाले बादल टकराते तो वर्षा जरूर हाती। बादल अभी बहुत कम ही कभी-कभी दिखाई पड़ते थे। रात को सर्दों बहुत हा रही है इसका पता सवरे चौधरी के घर की छत को पाले से सफेद हुई देखकर लगता था।

दिसम्बर में मसूरी में सलानिया का कही पता न था। यहाँ के बहुत से दूकानदार भी अपनी दूकानें बंद कर नीचे चले गए थे इसलिए रविवार के दिन यहाँ स्थायी रहने वाले मित्रों में से ही काई आता। ६ दिसम्बर को डा० सत्यकेतु और गीलाजी आइ प्रा० भारतभूषण भी अपने घनानंद कालज के दूसरे अध्यापक जोगीजी के साथ आए। कमला ने स्वागत के लिए हलवा और विनोद तौर से फलाहारी बचाव बनाया। बिस्कुट तो सदा हाजिर रहता ही था। सलानियो का मौसिम नहीं था इसलिए धोबिन को कपड़े धाने की फिकर नहीं था और वह रसाइदारिन बन गई थी। भारत भूषणजी कमला का अग्रेजी पढ़ा दिया करते थे। उनको परीक्षाओं का तजर्बा था इसलिए उनकी पढ़ाई मुझसे कही अच्छी हाती, अग्रेजी कविता ता मेरे लिए भूखी मालूम हाती।

यात्रा के पाने 'क नाम से मेरी छूटी हुई यात्राएँ इस वकन लिपिबद्ध हो रही थी। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति में काम करने वाले साथी अभी यही थे। पता लगा सम्मेलन के सभापति ने मुकदमा कर दिया है, और समिति वक से पसा नहीं निकाल सकती। साथियों को चिंता हो रही थी क्यकि उनका वेतन नहीं आया था और जाग भी उहे पसा को जरूरत थी। आपसी थगडे के कारण होत हुए काम को ठप्प करना कभी उचित नहीं।

'गन्वाल कुमाऊँ' लिख लन के बाद मुझे खयाल आया, दार्जिलिंग और कुमाऊँ के बीच के नेपाल को भी लिख डालना चाहिए। उमम हाय

लगाते हुए मैंने अपन कुछ नेपाली मित्रों का बतलाया, कि नई सामग्री के मग्न के लिए मैं इसी जाड़े नेपाल आ रहा हूँ। श्री धमरत्न यमि के पिता मल्लि साहु ल्हासा में छगिस्ता प्रधान कर्मि थे। एक घनाढ्य पिता की सत्ता के हाते पिता की उदारता के कारण निधनता के दिन उह देखने पड़े, और महा बहू जाकर मुनीम हो गए थे। उनके विचार बड़े ही उदार थे और मेरे लिए तो वह हर तरह की सहायता देन के लिए हर बखत तैयार रहते थे। एक बार अरमसम्मान को ठेक लगी, और उहीने पिस्तौल से अपन जीवन का समाप्त कर दिया। उनका पुत्र धमरत्न को मैं उसी समय से जानता था जबकि वह लड़के थे। किसी आदमी को सयाने हाने पर भी 'घर पाछिला नाम' अनुचित है। धमरत्नजी का बचपन से सघप करना पडा था, और पढन लिखन का अवसर नहीं मिला था। जो कुछ पढ़े थे, उससे और अपने तजवों के बल पर नेपाल के स्वतन्त्रता आन्दोलन में उहीने भाग लिया, वहाँ जल मर रहा। इस समय उह उच्च शिक्षा प्राप्त माथी मिल गए, जिसे धमरत्नजी विद्यार्थी बन गए। अपने तान का उहीने बहुत बढ़ाया। इस समय वह नेपाल सरकार के उप मन्त्री (घन विभाग) थे। उहीने लिखा कि नेपाल जरूर आवें, जा भी सहायता मुझसे हो सकगी, मैं करूँगा।

१६ दिसम्बर का जम्मू कश्मीर युनिवर्सिटी में व्याख्यान देन के लिए निमन्त्रित किया। पहला जमाना हाता, ता खुशी से स्वीकार कर लेता लेकिन अब ता मसूरी में मैंने शोधम-याम ल रखा था और यहाँ से अनि वाय हाने पर ही मैं बाहर निकलता, इसलिए इकार करना पडा।

२० दिसम्बर का हमारे मामन एक नई परिस्थिति उपस्थित हुई। एक माथी भूप हडताल करन जा रहे थे। उहीने अपने एक मित्र को अपने चौक में महीना भागत कराया। भोजन की चीजा का दाम उह मिलना था, और मित्र उनका पढ़ाई में पूरी तौर से उनकी सहायता दे रहे थे। किसी कारण दोना में अनवन हो गई। एक न बहा रसोद बनान का पत्रह रपया माथिन डेढ रपया माथिन बरतन का थिराया आदि मिलाकर ३५ रपया हमारा हाता है। उनका मित्र पैसा के लिए मक्कीधूस नहीं थे। वह बड़े उदार थे, और अपन पैस से एक विद्यार्थी का वाज में पढा रहे थे।

लेकिन जब मूछा का सवाग हा जाए, तो दूसरी तरफ भी वह तन जाती हैं। भूख हटाल करन वाले तरण को बातें कहते कहत आसू भरत और गला रुधन दया ता मुच बहुत दुग हुआ। दूसर मित्र भी इसको कस वदात करत ? सर, बात रफा दफा हा गई।

वतन की जनिश्चितता थी लेकिन २० दिसम्बर को ही दिसम्बर का वनन जा गया ता सबन सत्ताप की सास ली। दिसम्बर के साथ जन साहित्य निर्माण कार्यालय को यहा स वद करने का निश्चय हो गया। तजवा बहुत जच्छा नहीं रहा उसम कारण यही था कि कुछ हाथ का काम करना तही बात बनाना अधिक पसन्द करते थे। २८ दिसम्बर का अब 'हन हिल' (ऊपर की कोठी) गाली हा जान वाली थी।

मालूम हाता था युगा वाद २१ दिसम्बर का भगवती भाई का पत्र आया। श्री भगवतीप्रसाद मुगाफिर विद्यालय आगरा क मेरे सहपाठी थे। हम लाग साथ मपन देखा करत और वदिक धम क प्रचार के लिए वटी बडी योजनाए रनात थे। मुगाफिर विद्यालय के बाद एक उपदेशक विद्यालय खालन के लिए मुझ जालीन जिले म जाना पडा। उसक लिए भगवती भाई पहल ही वहाँ पहुँच के। अब हम दोना वपों स अलग थे। हमारे रास्ता म भी अन्तर आ गया था पर स्नह और पुरानी स्मति पहले हा जसी मधुर थी। उह अभी मालूम हुआ कि मैं मसूरी म रहता हू।

समय समय पर मनुष्य की वक्तियाँ जतमुची हो जाती हैं यद्यपि उमर जिम्मदार अधिकतर बाह्य कारण ही हात हैं। मानसिक जगद क भी झोक हात है जो कभी ह्य बढ़ात हैं कभी जवसाद। जस (वाई) जत्यन प्रगात सागर दुग्भ है वस ही विचारवान् पुरप हृदय वीधि रहित नहा हा सकता। मानव अजब पगु है। पगु हात भी उसमे भिन है। भिन हान क कारण ही उसक अनुभव—हपरिमक या विपागतम—बहुत तीत्र हात हैं।'

२४ दिसम्बर का जानदजी गाम का मूर्यास्त के समय जल्दी जल्दा म आए। अगल ही तिन उह चला जाना था। समिति क दगना म समिति की कायकारिणी न आनदजी का समयन किया था पर अब वह निश्चय कर चुक थे कि उमका मत्रीपद छाट देंगे। अगले तिन वह १ वजे चल भा गए।

उसी दिन जामिया मिलिया के प्राफेसर फारकी के साथ हमारे पिछले साल के तरण मित्र चौहान आए, जिहान विलायत से लौटकर यहा बच्चा के लिए स्कूल खाना था। आजकल के जामिया म अंग्रेजी पढा रह थे। कह रह थे पिछले साल हम कितने ही दिन खाने के भी लाले पड गए थे—एक शाम खात ता दूसर शाम भूखा रहना पडता। अंग्लैण्ड म मजे से अध्यापकी कर रह थे। स्वतंत्र भारत म बटी बटी उमग लेकर जाए थे। खैर, अब उनको काम मिल गया था।

उनके तरण मित्र मुसलमान हाते भी जामिया और आधुनिक समय के स्कूल से मुझे नवीन विचारों बाटे मालूम हुए। उदू लिपि और उदू भाषा का पक्षपात हाना मरी दृष्टि म काइ बुरा नहीं है। कुछ भेंट करन का सवाल आया, ता मैं अपनी 'वाग्दा म गगा क उदू अनुवाद की एक कापी दे दी। मुझे उसका न पहले और न लिखने समय ही ख्याल आया था। अगले साल मालूम हुआ, कि उम तरण अध्यापक न अक्बरवालीन कहानी 'सुरया' जय पढी, ता उह बहुत गुस्ता आया—एक मुसलमान लडकी का हिंदू क साथ ब्याह ? जशनव्य अपराध। उहान अपना गुस्ता पुस्तक का फाड कर उतारा। सचमुच यह अविद्वंसनीय बात थी। मैं इस्लाम का नीचा खिचान क लिए यह नहीं लिखा था। मुसलमान ता पहले ही से लखा की तादाद म हिंदू लडकिया मे ब्याह करते आए थे पर उममे हमारी सामाजिक समस्या नहीं मुल्यी। वह तभी मुल्य सखती थी जब हिंदू मुसलमान दाना परस्पर ब्याह करते और अबर की बगमा की तरह स्त्री का अपन धर्म म रहन की पूरी स्वतंत्रता रहती।

ममाचार मुनन क लिए भारत और पाकिस्तान दाना के रेडिया कइ यपों स मुनता हैं। दूसर प्राधामा क मुनन क लिए समय निमाणा मुक्ति है पर कभी-कभी वह मिल जान पर लोक गीता या लान भाषा क प्राधाम को मुनना पसंद करता हैं। लान गीता म गजब की लवड धीं धीं दखने मे आती है। मालूम गही रेडिया क प्राधाम घनानवाग धीन से लाग हैं ? त भाषा की शुद्धता का ख्याल किया जाता है, न लोगाना के साथ जिम बाने को लाग इस्नमाग करत हैं उगकी आर ध्यान दिया जाना है। मितार इमराज, मारगो, तबग मभी बाजे उनक साथ बजत हुए श्राना क गिर म

पीडा पदा करत हैं। ऐसा क्यों होता है ? दुनिया में कहीं भी ऐसा अत्याय नहीं किया जाता और लोक-गीता को लोक-वाद्या के साथ ही गाया जाता है। रूम चीन या किसी भी दूसरे देश में यही देखा जाता है। बाज बवन तो कोई आधुनिक नौसिखिया कवि नकली लोक-गीत बना कर दे दता है। एक बार 'स्टेटसमन' में एक समालोचक ने लखनऊ के ऐसे प्रोग्राम की बड़ी तीव्र आलोचना की थी।

३० दिसम्बर को कमला मंगलजी के साथ परीक्षा देने देहरादून गई। साहित्य रत्न 'के पास हा जान की आशा थी उन्हें एफ० ए० की परीक्षा की तयारी करने के लिए तीन महान थे।

३१ दिसम्बर को समाप्त होने वाले सन् १९५१ के काम का लेखा-जोखा निम्न प्रकार रहा (१) गढ़वाल (२) कुमाऊँ (३) 'जदीना' (४) रूस में पच्चीस मास (५) यात्रा के पन्ना (६) सूदखोर की मौत (७) 'तिब्बत में तीसरी बार' को लिख कर समाप्त किया। सब मिला कर २५०० पन्ने हुए। अगले साल के लिए भी उतने ही पन्नों के लिखन का सक्ल्प किया।

१९५२ का आरम्भ

१ जनवरी का घप थी। दिन में सर्दी नहीं थी पर गाम का बहुत बड़ गई। न जान क्या मसूरी में गाम का सर्दी ज्यादा मालूम हाती है और सवेर का कम। हालांकि नीचे इस उल्टा देखा जाता है। उस दिन कमरा के साथ में बाजार गया। कुरहड़ी से भी काम चल सकता था लेकिन लण्डीर के मित्रों से मिलन का लाभ रावना हमारे बस की बात नहीं थी। जाने पर मालूम हुआ कि गानसिंह बहुत बुरी तरह से बीमार हो गए थे। पेट में भारी दद था। दो ही तीन दिन पहले यहाँ से दिल्ली गया। लण्डीर का दूकानें उतनी बन्द नहीं थी, लेकिन लाइब्रेरी और कुल्हड़ी की बहुत कम खुली थीं। गुड आठ आना सेर मुन कर विश्राम करन को मन नन्ही करता था। कुछ ही पहले हम १२ १४ आन में ल गए थे। काफी के लिए गुट की चासनी मुझे अच्छी लगती है।

बाजार के लिए निकलन पर गायद ही अभी ७ ८ बजे रात से पहले घर लौटना पड़ता।

२ जनवरी को सवेरे उठकर देखा ता सारा भूमि (बर्फ की) बजरी से ढकी हुई है। थ फुटकियाँ बच्च की तरह नन्ही नहीं, बल्कि मुलायम हाती हैं। जब तापमान पर्याप्त नाचे नहीं गिरता, ता पानी बजरी बनकर धरती पर उतरता है। दिन भर आवाग बादल में घिरा था और हवा तेज रही। कई बार बजरी भी पड़ी। बराबरे में तापमान ४० डिग्री था, बाहर ता वह अव्यय हिमविन्द के पास रहा हागा। आज निचन-पड़न में छुट्टी थी।

मकान में लकड़ी जलाने के साथ बातें करते रहे। सुन्दर साज बज रहा था और नाचने वाला नाचे नहीं तो यह साज का अपव्यय है। उमी तरह यदि लकड़ी की आग जल रही है और उसमें आलू या सब्जियाँ डाली जायें, तो जान पड़ता है आग अकारण जा रही है। कभी अपने माधु जीवन का खाल आता था। प्रशंसा करने का मन करता। माधु जीवन यदि घुमक्कड़ों का जीवन है तो वह बड़ा ही मधुर और आकर्षक होता है। लेकिन अब उसके लिए परिस्थिति प्रतिकूल होती जा रही है। हमारे युग में माधु का कोई मरा-सामान की जरूरत नहीं थी भारत में वही वह विचार सकता था। हमारा तजर्बा ताजा नहीं था तो भी मालूम होता था उसमें कठिनाइयाँ पदाँ गई हैं। पर मुझे विश्वास है, घुमक्कड़ हर परिस्थिति में अपने लिए रास्ता निकाल सकता है। मेरी नवतरुणाई में मिले हुए घुमक्कड़ माधु अपने समय का जब वणत करते तो मालूम होता कि उस वक़्त और भी स्वच्छन्दता और स्वतंत्रता थी।

कमला को एफ० ए० की परीक्षा देनी थी जिसके लिए तीन महीने भी नहीं रहे गए थे। जब उनकी परीक्षा की पुस्तकें सब विमुक्त देखता तो मुझे झुझलाहट जाती और उनकी अल्पस्थित चित्तता के लिए कुढ़ने लगता वह न अपनी जकल से काम करना जानती न दूसरों की बात ही मानती। यह मुझे सुस्त गवाह चुस्त वाली बात थी। कमला का स्वयं इसकी चिन्ता होनी चाहिए थी। इस तरह के कुढ़ने का दबान में मुझ काफी वर्षों बाद सफलता मिली जब कि देखा वह किसी परीक्षा में फेल होने का नाम नहीं लेनी। पर परीक्षा के दिन जब नजदीक जाते तो वह अपने एक एक मिनट का इस्तेमाल करती। बालेज के विद्यार्थी भी तो ऐसा ही करते हैं, और परीक्षा के अन्तिम घड़ियों में किताबों पर धोखा लगाते हैं।

जीवन की पहली परीक्षा पर नजर दौड़ते हुए सोच रहा था— जीवन में हर एक क्षण के मधुर होने के लिए बहुत-सी बातों की आवश्यकता है जिनमें सबका एकत्रित होना कठिन है। इसीलिए जीवन कच्चा मीठा होता है। भौतिक सामग्रियाँ तो साधक राघव होती ही हैं मानव के पारस्परिक सम्बन्ध भी इसमें भारी कारण होते हैं।'

मर पाम एक राइफल और एक पिस्तौल का लाइसेंस था साथ ही रडियो का भी लाइसेंस था वह अन्त में बदलवाना पड़ता था। रेडियो का लाइसेंस में कोई दिक्कत नहीं होती। डाकखाने में गए पुराना लाइसेंस दिगलगाया १५ रुपये दाखिल किए और नया लाइसेंस ले आए। लेकिन हथियार का लाइसेंस बदलवाना भारी सिरदद माल लेना था। उसे सज्जिवीजल मजिस्ट्रेट ही बदल सकता था। आफिस में चलाने लिखवाओ फिर सरकारी बैंक में घटा जाकर प्रतीक्षा करके पैसा दा, फिर इस रमीद का फिर जाकायदा दरखास्त लिख करूँ म एस० डी० एम० साइड के सामने रख कर करूँ म प्रतीक्षा करा। और वही एम एस० डी० एम० हुए, जो रुपय में एक दिन मसूरी के लिए देना भी बुरा मानत है और हर मनीषर का बहा पहचान पर इतिजार् करन के बाद टलीफोन पर खबर देन है कि जब की बार साहब नहीं आएँगे तो दिमाग की कॅफियन के बारे में क्या कहना ? क्या इसके लिए भी उसी तरह की आमानी नहीं पैसा की जा सकती थी जैसे रडियो लाइसेंस की ? माना, सरकार के लिए यह उससे वही जिनके खतरनाक चीज है और इसीलिए सरकार की आर म वही सावधानी बरती जाना है। फिर, रुपया लेकर एम० डी० एम० साइड ही इसके आसानी से कर सकते थे तान जगत् दौडान की क्या जरूरत ? ४ फरवरी का हमन स्वामी मरम्बम्पजी का हथियार देकर भेजा, ता मालूम हुआ, दूमर के हाथ में हथियार भेजना कानून के खिलाफ है। सुद गये। दरखास्त पर स्टाम्प लगाना जरूरी था, लेकिन स्टाम्पफराण के पाम स्टाम्प ही नहीं था। खर उसे लगान का जिम्मा क्लक न ले लिया।

श्री भरतसिंह उपाध्याय द्वारा लिखित 'पालि साहित्य का इतिहास (सम्पलन में प्रकाशित) में पास जाया। अगली पीढ़ी अपन का अयोग्य नहीं मानित कर रही है यह उमका उदाहरण था। हिन्दी भाषियों में पालि का आर विषय ध्यान देन वाला मैं पहला आदमी था। मुने किन्ती अरुचना का नामना करना पडा था, इस जीवन-यात्रा के दूमर भाग में पत्रवाल् अच्छी तरह से जान सकते हैं। मरे आरम्भ करत समय पालि का विगान् बाल् मय बिलुल् अपरिचित-सा था। 'धम्मपल् का छात्र और किन्ती पुस्तक का हिन्दी में अनुवाद नहीं हुआ था, और न इस विगान् साहित्य में क्या-क्या है, इस

बुदेलखण्डी मालवी राजस्थानी ब्रज, बौरवी, गढ़वाली, कुमाऊँनी, अवधि—के सहार लागा व हृदय क भीतर घुसन का प्रयत्न नहीं किया गया उहाने इन लोक भाषाओं में अपना साहित्य नहीं तयार किया। जब तक इस तरह के साहित्य का लागा में पाठ नहीं दिया जाता जब तक यहाँ की लोक कला और लोक गाथा का पूरी तौर से अपनाया नहीं जाता तब तक लोग की जागरूकता रहते हुए भी कम्युनिस्ट उन पर अपना प्रभाव पूरी तौर से फला नहीं सकता।

चुनाव में असल में वामपक्षिया के आपस के बगड़े और साथ बाटरी ने कांग्रेस का जितया। गायद ही कही आधे बाटर बाट देन गय हा। अधि काश ने काउन्सिल हाउ का अनुसरण किया और कांग्रेस सरकार से पलने बाट मारे अपन अनुयायिया के साथ बाट देन पहुँच गए।

२३ जनवरी का नेपाल में फिर एक क्रांति हान की खबर आई। राणागोही का हटाने एक दूसरा तानाशाह ने उसका स्थान लिया। जन साधारण का हित न हान देखकर डा० क० आइ० मिह ने हथियार रखने से इन्कार कर दिया। ममज्ञान के बहाने उह पकड़ कर बाठमाण्डू की जेल में डाल लिया गया। जेल के रक्षक तो मंत्री और अधिराज नहीं हात साधारण गरीबों के छडक हा बंदूक और पत्थर दान हैं जिह प्रभावित करना मुश्किल नहीं। क० आइ० मिह ने उन्हें प्रभावित किया और रक्षिया ने स्वयं जेल में बाहर आने में उनकी मदद की। उहाने राणाओं का छात्र सवदली सरकार कायम करने का माँग की। बाटे से आत्मिया का लखर वह चाहते ता बाठमाण्डू पर अपन अधिकार का कुछ हिना और कुछ महीना तक कायम कर सकत थ लेकिन व्यव की छून-नगरी का पसन्द नहीं किया। वन अपन कुछ साधिया के साथ निजत की बार चले गय। जब नेपाली सरकार का सुल्ल कर वामपक्षिया का दवान का मोरा मिला। काइराला मंत्रिमण्डल ने २५ जनवरी का नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी का गररानुनी घोषित कर लिया। नेपाली मंत्रिमण्डल नहर का अपना जाण्य मानता है और छात्र बाइराला ता नहर का तरह अपना गरवानो में लाल गुलाब भी लगाने हैं।

रसाइये की त्रिकत हमारे सामने बनी हो रही। डा० सत्यकेतु व यहाँ

टहरी का मुसलमान लडका इस्माइल खाना बनाना था। वह आन के लिए तैयार था, लेकिन कमला पसंद नहीं करती थी। वह रही थी—भाभीजी (जानकी देवी) आएँगी, ता उनक लिए खाना कैसे बनगा? पीछे भी एक मतब एन मुसलमान रसाइया कम तनखाह पर मिल रहा था वह तयार था, कि उसका नाम बाई मिह रख दिया जाए। मेहमाना का इनका क्या पता हाना। जाखिर हमारे मेहमाना को अच्छी तरह मालूम है, कि हम सबक हाथ का खान है। जो हमारे हाथ का पानी पीना चाहता है, वह यह जान करक पीता है तमने हमारा घम भ्रष्ट नहीं हागा। फिर हम ऐसे नौकर को रखन म क्या एतराज हाना चाहिए।

जाग म मसूरी जाना भाभीजी के लिए असाधारण बात थी। उनकी चिट्ठी आ चुकी था, और अभी मंगलजी माटर अटडे पर जान की तैयारी हा कर रह थ, कि ३१ जनवरी का भाभीजी जा पहुँची। रमाइया नहीं था इसलिए मेहमान बनकर आई भाभीजी को कमला की रमाइ म शामिल हाना पडा। भाभीजा का इम यात्रा का यत् फायदा हुआ कि उहान जीवन म पहला बार ४ फरवरी का चारा जार बफ की सफे चादर फली देखी। पत्ता पत्ता म बफ मडो हुई थी। बफ बहुत माटी नहा थी, इसलिए दापहर तर प्रहन कुछ पिघल गई। छूब सर्दी थी। जाग जला कर उसके पान बैठे बार्ने करन समय काटना पना। नी तिन रहन के बाद ८ तारीख का भाभीजी यनी म गई।

अप अपना वजन १६४ पौंड दणवर कुछ प्रमनता हुई, कपारि में बहुत समय म साथ रखना था १६० पौंड पर पहुँचने की। वजन कम करन म छापबनाज न महापना दो थी इमम तब नहीं और इसलिए उमम उतनी प्रमनता भी नहीं हा सजना थी। पिछल माल क घाव स गिशा लकर अर में इन्मुत्ति का भक्त हा गया था। जपन इन्मुत्ति तन पर उम जाव ही म शिया जा सजना जहाँ गुठली नी बन जाती थी। तसक मिवा वाइ चारा नहीं था कि इन्मुत्ति लन का काम कमला म्त्रय अपन हाथ म ले।

साबियाबाबू क श्री राघामाहन मटनागर एक विचित्र धुन के जागमा है। पनि पना दाता घर म है, आट का कुछ माली की चकिर्या हैं जिनन म्त्रय क लिए बापी पना आ जाता है। परनी अपन राम भजन म रहनी हैं

और पति व शौक का पसाद नहीं करती। पति को गौक है दान सम्बन्धी मस्कृत व ग्रंथों का ढूढ ढूढ कर जमा करता। वही छपी किसी पुस्तक का बतलाइए, वह पसा खच करके उस मंगान के लिए तयार है। मुयस भी उहो पुस्तका के नाम माग मैं कुछ नाम बतलाय भी। पिछल १५ २० वर्षों से वह इस काम म लगे हुए है। दशन सम्प्रधी मस्कृत और उनक अनुवाद तथा स्पतत्र ग्रंथा की उनक पास हजार पुस्तक जमा हा गइ है। जिन पुस्तका को जमा कर रह हैं उनमे क्या लिखा हुआ है उस जानन का उह पवर्हि नहीं। वह यट भी चाहत हैं कि दशन का अध्पयन किया जाए। उसके लिए लाग सुख सुविधा व साथ वही रह और पुस्तका का उपयोग कर। उहोन दहरादून म जमीन ले ली पीछे उस पर एक मकान भी बनवाया जिसम पुस्तको व रखन व कमरे के अतिरिक्त कुछ रहन व भी कमरे हैं। अभी मकान नहीं बना था तभी मैंने कहा था— जमीन का बच दीजिए। मसूरी म बना-बनाया सस्ता बहुत अच्छा बगला जापका मिल जाएगा। उसम पुस्तकालय खोलवाइय। दशन की पुस्तका के पढन वाल बहुत लाग आपकी नहीं मिलगे। जो थडे से लोग मिल सकते है उनक लिए अच्छा रहन का प्रबन्ध हा जान पर मसूरी भी अनुकूल हागी। पर भटनागरजी का यह बात पसाद नहीं आई। उनकी धुन का मैं प्रसासक हू।

२५ फरवरी का एक ज्योतिषाचार्य तरण (हरिहर पाडे) का लम्बा पत्र मिला। वह मेरे मगात्री और एक जिले के ही नहीं बल्कि मेरी अपना सगा बूआ की ननद क पुत्र थे। उनकी माँ को मैंने छोटी उमर म देखा था। तरण ने अपन जीवन और आकाशाआ के बारे म उस पत्र म लिखा था। उनक खानदान म पुराहिनी नहीं, गुरुआइ होनी आई है—लोग उनस मत्र दाधा लेत थे। उनक बचा एक सफल जातिसी थे, अर्थात् उनकी भविष्यवाणिया पर लोग का विश्वास था। इसी कारण हरिहर पाडे भी बनारस मस्कृत कालेज म ज्योतिषाचार्य हुए। फलिन भाखन व लिए जाचार्य हान की जरूरत नहीं थी। बुद्धिवाणी हान स उनका फलिन ज्योतिष पर स विश्वास मट गया था। सम्भव है अपन सगानो और सम्प्रधी हान व कारण मरा पुस्तका को नो कुछ चाव स पढा हा। अब वह गुरुआइ और जानिसाइ वमन से करत थ। १९१४ म पदा हुए, अर्थात् इस समय २८ वष क हा बुक थ।

उत्तम भागत म काफी धूमे थ । लम्बा चिट्ठी बनला रही थी, कि उनमे लिखन की शक्ति और प्रतिभा है । मुपसे कुछ पथ प्रदशन मागा था । मैंने लिखा, भारतमाय ज्यानिथ गणित शास्त्र का एक नवीनतम इतिहास लिख डाग । वे बगला और मराठी म भी इस विषय क ग्रंथा को पढ चुके थे, इमलिए वे इम काम के अधिकारी भी थे । लेखिन, ज्ञान और अधिभारिता पर्याप्त नही है । किसी का लाठी के हाथ किसी काम म जोडा नही जा सक्ता । जब अपने भानर आग गती है, तभी मनुष्य कठिन मे कठिन काम करन का बीडा उठाता है । हरिहर पाडे के दा तीन और पत्र आए इसके बाद चुप हा गए । ज्ञान के एक-दूसरे विद्वान का—जा ब्राह्मण और बौद्ध दाना ज्ञाना क जानकार हैं—मैंने आग्रहपूर्वक निबती भाषा पढकर उमम अनुशान्ति बौद्ध ग्रंथा क अध्ययन से अपन लिए नया कायभेय बनाने क लिए कहा, लेकिन उमका कोई फल नहीं हुआ ।

पाकिस्तान क बनन के साथ ही मुस्लिम लीग के नेता पूर्वी पाकिस्तान मे बगला का दबाकर उन् का लादने क लिए तुल हुण थे । चार साढे चार वर्षों तक जाग भीतर भीतर मुलगता रहा । १९५२ क फरवरी के चौथे सप्ताह म वह भभङ उठी । मुसलमान अपनी बगल भाषा को अपनी हा भूमि स उच्छिन दमन क लिए तयार नही थ । आन्दोलन न जार पक्का । सरकार न गाण्धी बरमानर उसे दमाना चाहा । न जादमी टाफा म जपनी मात भाषा क लिए तलि चडे । मुस्लिमलीगी नाममा न अपने परा म जपन हाथ म कुल्हाण मारा । हाल म मविधान बनने ममय किसी को यह पूछन की भी हिम्मत नया हुई । पाकिस्तान की राष्ट्रभाषा उन् के समकक्ष बगला क्या बनाई जा रही है ? जम जिन की कुर्बानिया बजार नहीं गइ । आज गहोला के दिन वहाँ तरसाग छुट्टी रहती है, लाग बडे ममान से ज्न बीरा का याद करत है ।

तजवा करन ५ माच को मालूम हा गया, कि कमला इजेकान देना पूरा तौर म मौय गइ । पर उनका हाथ बाँचना था, हिम्मत नहीं हानी थी । आग्रह क जमान म इजेकान देना हरेक स्त्री-पुंस्य का सीप लना चाहिए । जिनको हा दयाल्यो है जा इजकान द्वारा तुरन्त अमर करती हैं, और जिनका उपयोग घर घर हान लगा है । हरक इजेकान क लिए डाक्टर पर

निभर रहना सचीली जीर वजार की बात है ।

यम्बई में डा० जगदीशचन्द्र जन का पत्र आया, कि मैं २३ मार्च को चीन के लिए रवाना हो रहा हूँ । मैंने माधुसाद जीर समझन करते वक्त, कि वहाँ जाकर बड़ा संस्कृत चीनी चीनी संस्कृत कोश तैयार करें । दासाद रहकर डा० जन भारत लौटे । बड़ी उमर में चीनी लगा में रहकर भाषा तो सीखी जा सकती है लेकिन हरेक चीज के लिए नियत अक्षर हजारा की तादाद में सीगना अपन बूते की बात नहीं रह जाती । डा० जन का पुत्री चक्रेश अपन पिता से अधिक भाषा जीर अक्षर सीखकर वहाँ से लौटा । डा० जन के चीन जान के समाचार के सुनने के बाद ही १२ मार्च का डा० जलन के पत्र मिला जिसमें उन्होंने लिखा था कि 'प्रमाणवातिकभाष्य के छपाने का प्रबंध हिंदू युनिवर्सिटी प्रेम में हो गया ।' मैं भाष्य के अपने जीवन में प्रकाशित होने से निरास हो गया था इसलिए यह समाचार बड़ी प्रसन्नता का भारी कारण था । बनी तत्परता से छपकर 'प्रमाणवातिक भाष्य १९५४ में निकल भी गया ।

१५ तारीख का एक बहुत पुराने मित्र के पत्र का पाकर बड़ी प्रसन्नता हुई । १९१५ में मिर्जापुर जिले के अहरीग कम्ब में श्री रामखेलावनर्मि के घर में एक महीने बिल्कुल घर की तरह रहा था । उस समय रामखेलावनर्मी जी आयसमाज के कमठ सदस्य और अध्ययनशील तर्ण थे । उनके घर में रहने समय मुझे चन्द्रवाता जीर 'जासूम' के पठन का मौका मिला था । रामखेलावनर्मी एक आदर्शवादी तर्ण थे । उनके पिता ने अपन सभा निरवलम्ब सम्बन्धिता की अपन राश रखी था । तम्बाकू जीर दूमरा रोज गार खूब चलता था, इसलिए वह भार नहीं थे । पर १९१५ में जत्र रोज गार बहुत मन्ग हो गया था सिर्फ बेर के समीर के साथ वन तम्बाकू का व्यापार ही अवलम्ब रह गया था । इतना जोश वर्गित करना उनके सामर्थ्य में बाहर की बात थी लेकिन रामखेलावनर्मी कह रहे थे—'जब तक तम्ब है तत्र तत्र उन्हें निरवलम्ब नहीं करेगा । उनका बहुत-सा रुपया वज में फसा हुआ था जिस दिन का लाग नाम नहीं लेते थे । आज ३७ वर्षों बाद उही श्री रामखेलावनर्मि 'द्वकवि' का पत्र पाकर बड़ी प्रसन्नता हुई । जत्र वह बढे थे । मैं अपनी जीवन यात्रा के प्रथम भाग में

उनके बारे में जो अपन उद्गार प्रकट किए थे वह उनकी आस्था के सामने से गुजरा। उस समय मैं केदारनाथ था, इसलिए उन्हें मुश्किल से ही समझ में आया होगा, कि उसी व्यक्ति का नाम अब राहुल है। लेकिन अहरोरा का नाम और काल स्पष्ट था। बहुत दिन ही जान के कारण मैं उनका नाम भूल गया था।

१६ मार्च का सवेरे से २ बजे तक बजरी पड़ती रही। दोपहर तक बर्फ का इंच माटी चादर बिछ गई। इसी समय बादल फट गया और सूर्य की तज किरणें बजरी को पिघलाने लगी। रात का भी कुछ बादल और बर्फ पड़ती रही। १७ ताराख का हात में बर्फ पड़ी हुई थी। दक्षिण की तरफ से पहाड़ा पर वृक्षा का सफ़ा सफ़ा पत्ते भी दिवाई पड़ रहे थे। लेकिन शाम या अगले दिन तक बर्फ रुकने के लिए बहुत मोटी तह की जरूरत थी, जो नहीं थी। मार्च में ता जाड़े का मौसम भी नहीं रह जाता, इसलिए इन जाटा का यह अंतिम हिमपात था।

कमला की एफ० ए० की परीक्षा का केन्द्र यही घनानन्द इंटर कालेज था। वहाँ सवेरे पहुँचने की जरूरत थी घर से जान में दो टाई मिल पड़ता इसलिए १८ का अगले तीन दिनों के लिए वह गीलाजी के महा चली गई। मैं भी साथ गया अत्र थोड़ी भी चढ़ाई चढ़ने पर थकावट मालूम होती थी। रासुवर यन्त्रि बात करने में मन भूला न था। मार्च का महीने में लोग अपने लिए बगला या उमरा का रिजब करान लगत है। हरी बली करव के बारे में मिसेज मक्लौड कह रही थी, कि अभी तक एक ही कमरे के लिए कोई माँग नहीं आई।

हाल के चुनाव के बारे में मैं निम्न निष्कर्षों पर पहुँचा था—

- १ अधिन जनता मुक्त है, जिसमें प्रतिगामिया का लाभ हुआ।
- २ प्रगतिपाल दलों ने आपस में लड़कर सचन जनता के वोट का बाँट लिया।
- ३ हिन्दी क्षेत्र में वामपक्षीय बल गिगिता और गहरिया में है।
- ४ उत्तर प्रदेश, विजयपुर उनका पूर्वी भाग वामपक्षिया के अधिक अनुकूल था।
- ५ सांगलिस्ट अपन का प्रगतिशीलता और समाजवादी का इजारदार

मानते हैं। उनके कथन पर पूजापति कितना विश्वास करते हैं यह इसी से मालूम है कि स्वाय और विचार में प्रगतिगामियां ने भी उनका पल्ला पकड़ा और बाटा का रुपये से गरीबन से भी बाज नहीं आए।

६ सोगलिस्टों की कम्युनिस्ट विरोध की यही जघी नीति रही ता वे समाजवाद के नहीं, बल्कि गोपका के समर्थक रहेंगे।

७ नहरे के बादे थोथे हैं। जहा तक देग के भीतर समाजवाद का सम्बन्ध है वह प्रगतिगामिया के अगुवा छाडकर और कुछ नहीं है।

८ जाज के जमान में चीन के साथ सहानुभूति प्रगतिशीलता की कसीटी है।

९ अमेरिकन साम्राज्यवादी विद्व की जनता का जोर उनकी प्रगति का सबसे बड़ा शत्रु है। यह उसने हिरोगिमा पर जणुवम कारिया और चीन पर कोटाणु बम और इरान की जनता की सूते पाटीं का खूनी हाथा ध्वन करके दिखला दिया है।

१० अपने परापर चलना और सभा प्रगतिशील और वामपशियों का समुक्त मार्च यही एउमात्र रास्ता हमारे देग के लिए जागे बन्द का है।

२१ माच का परीक्षा टकर कमला घर चली आई। तीना प्रश्न पत्र सतापजनक हुए हैं। हमका अफसाम हो रहा था कि विगारण की परीक्षा से लाभ उठाकर क्या एक विषय को छोटा दिया। वह सभी प्रिथमा का लेकर जासानी में पास हा जातो। पर उस वक्त तो परीक्षा में बठने की उनकी हिम्मत हा नहीं थी।

उसी दिन जणालत का समन मिला। साहित्य सम्मेलन पर ५० जय चण्जाने मुकदमा कर दिया था और मैं भा उमकी स्थायी समिति का भन्वर था इसलिए यह समन था। मेरी दृष्टि में यह काम किसी भी सम्माननीय साहित्यकार के लिए बिल्कुल अयुक्त था। क्या उनका और कुछ काम नहा रहा, कि सम्मेलन को मुकदमेवाजी का जणाना बनान में अपना अगुवा बन ?

गिबकुमार गर्मा एक माहमी तरण हैं। पत्न में भी अच्छे रहें। यह 'साहित्यरत्न' का परीक्षा में मालूम था। लिखने की शक्ति भी विकसित कर सकत हैं। लेकिन, अधिक जाण आदमी के सोचने की गहराई को कुछ

कम कर देता है। अब वह यात्रा पर निकलन बाटे थे। चाहते थे सभी हिंदा व मुख्य मुख्य पत्रा को यह सूचित कर दें, कि निवकुमार गर्मा यात्रा पर निकल रह हैं। मैं ममझाया ऐसे पत्रा का स्थान सम्पादका की रही को टाकरी हागा। पत्रा की सिफारिश द्वारा परिचय नहीं प्राप्त करना चाहिए और न वह हा सकता है। अपनी ख्वनी से ही परिचय करने की च्छा रखनी चाहिए। दो चार खेव अगर दो चार पत्रा की रही को टाकरी म जाएँ ता उनकी पवाह नहीं करनी चाहिए। लेख की एक काफी अपन पाम र- और दूसरी का पत्रा म भेजकर भाग्य परीक्षा करनी चाहिए। अनक पत्रा के यण यदि उनकी बड़ी गति हो, ता सम्पादका का नहीं अपन का रूप देना चाहिए और आम अपन का मुखारन से वागिग करनी चाहिए।

भया और भाभीजी का लगातार तनाजा जा रहा था कि अमनमर जा जाए। मेर साथ जान का मनलब था, काम की क्षति। मौभाग्य मे भया के अमृतमर व मित्र मास्टर जानीराम जा गए थे, और इही व माय कमला दहगदून से २६ का अमृतमर ग-। माच रा अन नीच के लिए कार्ड मुग्य मौमिम नहीं हाता।

मित्र या किमी भा मन्निबट व सम्पक रखन बाट का वज देना मरी नीति व खिलाफ है। अगर देना हा हा ता पाने व लिए नहीं देना चाहिए। २१ माच का एर परिचिन न कुछ म्पय वज माँगें। अ-रल तो तुरन्त खपाट आया, कि इगका मन-र सम्ब-य का त्रिगाहता हागा। लेकिन कम समय ता मालकिन ही घर म नहीं थी कि उनका देन व लिए सिफारिश करता।

३ अप्रल का मुगर वा-ज व टतिहास व प्रा० रायाटृण्ण चौखरी को चिट्ठी व माय एक पुराने गिलाग्य का पाग आया। य- गव लिपि म था जा उत्तरी भारत व अनिरिक्त जावा म भी मिया है। मैं लिखा, अभा तर मकी वणमाग पनी नहीं मइ है। इसका कारण एक यह भी रग कि प्रभियग कुछ ही अगारा ने मिले थे, यह अभि-य बडा है इम-गिग वागिग करें, ता गायद आप पट मकें। इम गिग म डितोया व चद्र की तरह की गिरासगाएँ, बन्नि गय की आवृति बनानवा-र अगर हाते हैं। हमार ग- म विछ-र मौ माला म पुरान-रीय अनु-गान का नाम हो रहा है, और विछरी थाधा गना-नी तर ता वह ज्यादा तत्परता से हुआ।

पर अभी दंग की पुरातात्विक सामग्री का शतांग भी जाविष्कृत नहीं हुआ। जिस दंग की मस्कृति और इतिहास जितना ही पुराना होता है उसकी पुरातात्विक सामग्री भी उतनी ही माना में अधिक और जमीन के भीतर ज्यादा दूर तक छिपी होती है। पूवगामिया न पुरातात्विक क्षेत्र का पथ-प्रदर्शन मान लिया है। अभी बहुत सी उपलब्धियाँ करने का बाकी है। हमारे तरुण विद्वानों में इसकी तरफ रूचि है यह जानकर खुशी हुई। उन्हें साधना की शिकायत करते हाथ पर हाथ रखकर बठना नहीं चाहिए। एक एक बूद से तालाब भरता है फिर तालाब अपने भस्त्रा का अपना आप ही दूढ़ लेता है।

८ अप्रैल को कमरा के साथ बाजार गए। व कल ही अमृतसर से लौटी थी। लण्ठौर में किशनसिंह से मुलाकात हुई। बीमार होने दिल्ली गए थे, वहा बीमारी और बढ़ी। अभी भी दुबल थे। जान पर "कहा उठावें कहीं बटावें" में वह पड जात और चाय पीकर जान का जाग्रह ता कितनी ही बार मानना पडता। चार हाथ चौड़ी और दम बारह हाथ लम्बी जगह थी, जिसका उहानें तीन काठरिया में बाँट रखा था। बाहर की कोठरी (आमारा) दूकान का काम देती थी बीच की गोदाम का और पीछे की रसाइ थी। पति पत्नी और लम्का तीन प्राणी इसी में गुजर कर रह थे। जीविका का साधन जुगान में दाना का रात दिन एक कगना पडता है। पत्नी निरन्तर जोर चीन के कुछ कपूरिया के सामान लेकर बड़े हाटला में घूमती। किशनसिंह पर से मजबूर थे इसलिए दूकान पर बठ रहते। लडके का पढ़ाने का बहुत वागिगा का लेखिन उमम न उसमें लिए रूचि थी और दिमाग था।

६०वें वष की पूर्ति—६ अप्रैल १८६३ (वर्षागम अष्टमा रविवार मयत् १६५०) का मेरा जन्म दिन था। आज (९ अप्रैल १६/२५) का मेरा ६०वा जन्मदिवस था। रिश्ते ही जन्मदिवस उस वक्त हुए जब मुझ हाग नहीं था। हाग जान और आत्मनिभर ही जान के बाद मुझे कभी खाल नहा आया कि जन्मदिवस का भी काग महत्व है। न कभी किसी मित्र न ही इसका खाल दिलाया। हमारा जन्म कुला में, जिसके ऊपर लक्ष्मी और सरस्वती का वरदम्भ नहा उह इसकी जरूरत ही नहीं पडता। य अमीरा के चाचल हैं इसमें मानता हू। कमला न जब इसका जिन किया,

ता मैंत कहा, जैम ५६ जमदिन बीने वैमे ही ६०वें का भी बीत जान दा । लेकिन उहाने एक न मानी, और ६ अप्रैल (बुध) का उमे मनान का निश्चय कर लिया । मैं रविवार का छुट्टी रखा करता हूँ उम दिन काम क दिन भा छुट्टी मनाई । दापहर बाद एक छाटी सी पार्टी हुआ, जिसम श्री मदानन्द मेहता और श्री गिब गमा क अनिखित गीलानी डा० मत्यवतु और उनक दाना छाट बच्च आय । पहला बार तमन्ति मनाना विचित्र मा मालम हुआ ।

अप्रैल का महीना नीचे गर्मी का है यहा उस जाड़े का अन्त कहा जा सकता है । गिबकुमार यही स ही अपना घुमकण्ठी पर जान वाले थे ।

उधर इन्मुलिन अत्रिन् नियमपूर्वक लन लगा, जिसका कारण बजन का बढ़ना मुझे प्रिय नहीं था । तकिन, प्याम और पगात्र का कम हाना तथा त्रिमागो सुमार का मिटना प्रमत्तना का बात थी ।

बमला पत्न म अच्छा दिमाग रखती है, त्रिगन की भी उनम गविन है । नाना कामा म आलस्य है एमा राय दना जच्छा नहीं हागा । यही कहना चाहिए अभी भातर म जबस्त प्ररणा या बकरारी उह नहीं हानी । मैं भा पत्न लिगन म बहुत अच्छा था लेकिन किसा क कहन पर चल कर महन्त करन के लिए तयार नहीं हाता था । जब त्रिगामा प्रवण हुए, ता स्वय नोद ह्रगम बरन लगी और कितना हा चार कितनाय पकडे या लिचन य भी नहीं मात्रुम हुआ कि अत्र भिनसार हा रहा है । पत्न त्रिचन क अनिखित मुई-बुनाइ-कटाई क काम म भी उनका बहुत दूर तक प्रवण है । बाअ बकन परीक्षा क लिए तैयारी का काम छाटर, क उनम लग जाना । तीउरा गुण उनम है मगोन क लिए बन्त मुदर कठ और जन्ती म किमी भी गीत का अपने गत्र उतारना । उनकी बड़ी अच्छा थी जि मैं काई साज नोमू । हमारा मवान यत्रि गहर के नजरोक हाता ता त्रम पत्रह राया मामित्र पर काई उल्पाहा मिवान क लिए मित्र जाना । मगुरी निम वग क लागे क लिए है त्रिगी लत्रिया क लिए गायन, वादन और नय आज अनिवाय चीन ममगी जानी है । याग्य या धनी क मितन म य गुण गहायन हान है । कितनी ही त्रिगामा तन य त्रिगि कगले अच्छ जात्र मध्य वग म उपेगिन रही । अब पत्रिचम के मम्पक म आन के बाद श्रोगों का

ध्यान उनकी आर गया। पश्चिम के सम्पर्क में जा जितना ही पहले आया उसने उतना ही पहल इन्हें अपनाया। हिन्दी क्षेत्र वाले इसमें सबसे पीछे रहे। हाँ सामंत वर्ग ने इसका पूरी तौर से वायकाट नहीं किया। मसूरी में इसीलिए कुछ संगीतक उस्ताद रहते हैं। और लागा की तरह आज उहाँ भी बड़ी शिकायत थी अब हमारे कदरदान नहीं रहे। कदरदान अधिकतर निम्न मध्यम-वर्ग के शिक्षित थे जो आर्थिक संकट के निकार हाँ रहे थे। हम राज रोज तो उस्ताद का तीन चार मील दूर बुला नहीं सकते थे इस लिए ६० रुपये मासिक पर मंगल बृहस्पति और गनिवार का उहाने मियाँना गुम् किया। साज में वायलिन का पसन्द किया गया। देगी बाघो में मिनार या वीणा जिस तरह अधिक सम्माननीय और कलात्मक मान जाते हैं वही बात विदेशी बाघो में इस हल्के से बाजे की है। साथ ही इसमें यह भी एक खूबी उतलाई जाती है कि इसमें यूरोपीय और भारतीय दाना के संगीत का उतारा जा सकता है। इस कला से मुझे आनन्द न आना हाँ, यह बात नहीं है। पर, संगीतक लिए मुझे कठ नहीं मिला गायद उसी कारण मुझे गान की रुचि नहीं हुई। मंगीत के राग रागिनिया की पहचान के बारे में तो यही कहना चाहिए कि भस के जाग बीन बजाना। लेकिन, जब घर में संगीत सिखाई होना लगा तो सबसे उसे सुनना पड़ता। उस्ताद चाहते थे अपना ढंग से सिखाना, जिसका अर्थ था जगल में भटकने के लिए छोड़ देना। हम जानते थे कि ज्यादा महीना तक हम रुच बर्णित नहीं कर सकते इसलिए सबसे आवश्यक चीजाँ की आर ध्यान देना चाहिए। उसने लिए मुझे प्रयत्न करना पड़ा। कमला और हिन्दी में छोपी संगीत सीखने की कुछ पुस्तकें मँगवाईं जिनसे पता लगा, कि दस ठाँटे मूल हैं बाकी राग रागिनिया उनके ही विस्तार हैं। दो चार बँठका के बाद मैंने कहा पहल इन दस ठाँटे का सिखाय। उस्ताद ने बेमन में उस स्वीकार किया। दो चार दिनों के बाद उस्ताद ने कहा गान की इच्छा तो कोई भी कर सकता है उनमें से कितना को उसके अदा करने की शक्ति भी हाँ सकती है। पर मधुर कंठ और हरज न्यून का जल्दी पकड़ लेना सबसे बस की बात नहीं है। कमला का यह सर्टोफिकेट उस्ताद ने दिया, जा भी सुनते हैं वह इसका मानने के लिए तयार है। संगीतक गहन भेदा को वह बर्णनिक

तौर से अच्छी तरह पहचान सकती है लेकिन यहाँ भी उनके भीतर मद्बाव होना चाहिए। वह दा महीना तक वायलिन और मंगीत मीचती रही। २० २० टाट के अतिरिक्त १० १० जोर राग रागिनिया का ज्ञान किया। वायलिन पर भी हाथ बँट गया। यदि चाहती तो मध्य इमका आग बढ़ा सकती थी, लेकिन वायलिन का ता एक तरह से उहने बंद करके रख दिया। गुणगुणान का गीत पुराना है इसलिए गाइ-बगाइ गा लेती हैं उन भी अधिकतर मिनमा के गाना का। अब भी उनकी अच्छा है, कि वाद्य और मंगीत के लिए और समय लगा कर कुछ सीखें। इस जगल का निवास सचमुच इस विषय में प्रतिद्वन्द्व मिद्ध हुआ।

१२ अप्रैल का हमारा मुल्ले में एक पागल कुत्ता भागना आया। उसका तीन आठमिया के साथ हमारे पड़ोसी लडली माहव का भस्म का भी काट साया। मुल्ले का मज्ज बड़ी जान का कुत्ता हमारा भूनाय है पर मज्ज बूती तथा गरार दाना में चौधरी का टांगर बड़ा है। हपी बली का गर गतिलाला का कुत्ता गब्बू है, जिसके सार गरोर में ही नती चेहर पर भी बड़े बाल हैं। टांगर हा या भूत किमी से भी मिद्ध के लिए वह हर वक्त तैयार रहता है। प्रतिद्वन्द्व का दखन ही अपने पिछले पैरा से मिट्टी फेंकन ललवारता है— हिम्मन है ता आ जाया।” वभी उसे अखाडे में भागन नहीं देवा गया। भूनाय मिड जाते हैं, लेकिन बड़े-बड़े पचरा का जाने-जान उनकी दाँते घिस गइ हैं, जबकि गब्बू की सूई जैसी तन हैं। इसलिए लडन में वह किमी का भी लाइ-लाहान कर सकता है। पागल कुत्ते से भी वह लडन के लिए तैयार हो गुय गया। डर हा गया, वहाँ गब्बू भी उसके पद-चिह्न पर न चल। लेकिन, लम्बे बाला के कारण दाँत भीतर तक नहीं घुस। उगवा देवा से घा दिया गया। हमारे पड़ोसी नदू धात्री के हाथ में भी पागल कुत्ते न मुड़ लगा दिया था, लेकिन दाँत नहीं गहा। उस स्पिरिट लगा दो। सार मुल्ले में आने के छा गया। किन्दनिया मुनी जान लगा, कि उसने गरर के कई आठमिया का काटा है। १३ अप्रैल का माठ ३ बजे गवर वन हमारे पाटन के पास में ज्ञान ऊपर की ओर जाना जिनाई पना। उमना इस तरह छानना चितकर नहीं था। तम्प जान गहरी अपनी बन्दूक और मगल का लिए पाइ पडे। कुत्ता जगल के समन का ओर भागा जा रहा

था। एक जगह जान न बढ़ूँ चलाइ लेकिन कारतूम में आग नहीं लगी। कुत्ता एनाएक पीछे की आर मुँगा। पत्नी पगडडा थी। कुत्ते ने लटली के परा म नात गटाय तीना सँकरे रास्त से नीचे दम पद्रह कदम लुक् कर पाटी स जा र्व। कुत्ता फिर भागा और य दाना आभी भी पीछे पाछे गए। पागल कुत्ते का काटना भयंकर चीज है। जगल से वहाँ वहाँ घूमते फिर वह चालबिल हाटल क फाटक पर जय पहुँचा ता लोग न उस मार डाला। पता लगा लणौर की आर भी किसी पागल कुत्ते ने बूतों को काटा था उसे भी आज ही मारा गया था।

डाक्टर को बुलाया गया। उन्होंने लेटली की भम की बचने की जागा नहीं प्रकट की, ता भी उसरो वइ इजेकान दिए गए। जान का काटन का हम बूत अफसाम हुआ। वह बडे ही मिलनमार और उदार तरण हैं, साथ ही अपने बूत पिता की एकमात्र सनान। इजेकान लिए गए, महीन बाट जब घाव भर गया और कोई दूसरा लक्षण नहीं प्रकट हुआ ता बरसात की थानी भी आशका के हाने भी सबका सनोप हुआ। पागल कुत्ते पागल गीदड क काटन से भी हा जात है। हम भी अपने भूत की चिंता हाने लगी। आगिर उम क्या पता है, कौन कुत्ता या सियार पागल है और कौन नहीं। यहां परियत है कि बघेर क डर क मारे हम स्यास्त क जात भूत का बाहर रहने नहीं लत और सियार अधिजतर रात को ही निकलत है।

श्री त्रिरत्नमान साहु (नेपाल) क पुत्र प्रत्यक्मान ल्हासा में उहुत साला स रहत थ। उनकी चिट्ठी जय तब जा जाया करता थी। पिता न पत्न की बूत कागिश की थी वह उसज लिए सच्च कर सजन थ लजिन पत्न की भी कुल में परम्परा चाहिय वल्कि कहना चाहिय, कि परिवार का बाना बरण विद्या का विराधी नहीं होना चाहिए। नेपाल क नबार व्यापारिया म विद्या का जनावश्यक माना जाता है। लिम्पना पढना और लिमाव कर लना नतन ही भर का उनका जावश्यकता हानी है। तिब्बत क व्यापारिया का ता सबम जागश्यक जा चाज है वह है तिब्बत से जीवित सम्पक स्वापित करत वहा की भाषा और रीति रिवाजा का समथना। इगालिए वहाँ इनने लटक अधिज दीस पडत हैं। जय पत्न का समय बीत जाता है फिर पत्न म समय और थम लगाना मभव नहीं हाता। २२ अप्रैल का र्हामा स प्रत्यक्

मानत्रा का पत्र जाया जिमम मालूम हुआ कि वहाँ क पुरान निहित स्वाय
कम्प्युनिस्टा के आगमन का हक दिल से ल रूढ़ है और कम्प्युनिस्टा के नरम
बताव ता उनको समझाया समझ कर आता रखत हैं कि तम हाने पर वह
तिरत छाड क चर जाएंगे। यह भी मालूम हा रहा था, कि भूमि मृदा
के लिए वहाँ कुछ नहीं किया जा रहा है। बटुजन का अपना तरफ जल्दी
सीवन के लिए यह आवश्यक था कि अत्र दाम किसानों की आर सबसे
पहले ध्यान दिया जाता। ऊपर म दखन स यह नियोजना या तरी अवाधनाय
मालूम हाता है लेकिन कम्प्युनिस्ट अपन और अपनी गति पर विश्वास
करत हैं। वे जिम तरह गानिन क माथ निरगत म प्रविष्ट हुए उसी तरह
वत्ता क लागत का साथ स्वर आग बत्ता काहन ह। उहाँन भद्रस पहले
ध्यान दा चीजा पर दिया। यातायात के लिए माटर सडक क द्वारा तिरत
का चीन म मिला दना और कृषि फामों द्वारा विभागा का जाँसा दिखलाना
कि नय ढग मे कृषि की उपज और भिन भिन माग-मजिया और अनाज
का कितना अधिब पैदा किया जा सकता है।

जागृत जवस्था म मनुष्य बाह्य जगत् से सम्पर्क रखता है। स्वप्न की
अवस्था क लिए बाह्य जगत् का सम्पर्क आवश्यक नहीं है। उसके लिए मन
क ऊपर जीवन भर क जा अनुभव का चित्र अधिन है, वहाँ बाह्य जगत् का
स्थान लय ह। स्वप्न क द्वारा भविष्यवाणी की बात पर मुने विश्वास नहीं
और ने दूसर तौर से महत्व देना। स्वप्न म भी व कभी रभी मनारजन
और मनस्ताप का काम त्त हैं। बहुत मात्र पहले तिरत म एक शर मैन
स्वप्न म दगा था कि दिनान और घमकीतिक नष्ट समये जानवाल मूल
गल्लून शय मुझे सपन म मिल गय। उम समय मुथ उनका ही रपाय करा
वर बना रहता था। २७ अप्रैल की रात का स्वप्न म जायनवाल जा की
दगा। वह कुर्सी पर उगी मत्र क सगरे बडे थ, जहाँ वह लिपन पत्र का
काम करत थ। मत्र कपर के भातर और कुछ धुगे की जगह म थी। मरे
पहूँवन हा मुक्करातर मित्र। ललिन बात नहीं हा पाई। मालूम हाता
था वह इगत्या म थे कुलान पर मे उनक पाम गया था। पुराना मयुर
स्मृतिशील जिम रूप म भी आगे जानतामत्र हाता है। स्वप्न, गायद मनी
दिया ता हा गामिन रही है, यह ता इगो म मालूम था कि हम कभी-कभी

भूत को सात साते भूक्त दखन ये अर्थात् वह भी स्वप्न देख रहा था।

२८ अप्रैल कमला के लिए बड़ी प्रसन्नता का दिन था क्योंकि "नया समाज" उनकी कहानी 'बेधारी सरस' छापने के लिए मजूर कर ली गई। कहानी पहले पहल छप कर आने पर उन्हें अपार प्रसन्नता हुई।

प्रकाशक सबसे चलती पुस्तक का प्रकाशित कराने के लिए लालायित रहने लगे। लेखक का भी उधर युवाव हाना स्वाभाविक है। पर मैं कभी किसी की फर्माइश पर पुस्तक लिखने का आदा नहीं हूँ। मरे एक प्रकाशक ने रमायन पर पुस्तक लिखने के लिए कहा। गायद वह टक्कट बुक के तौर पर उस लिखवाना चाहते थे। मरे मन में पहल ही प्रतिक्रिया हुई। रमायन तो मेरा विषय नहीं रहा। उन्होंने देखा था, मैं अपनी 'विश्व की स्पन्दरेखा' में रसायन की बातें कही हूँ इसलिए उस पर लिख भी मर्ता हूँ। मैंने उन्हें निराश किया। एक दूसरे प्रकाशक ने भारतीय संस्कृति के ऊपर उसी ख्याल से पुस्तक लिखने के लिए कहा लेकिन अपना विषय हान पर भी पाठ्य पुस्तक का ख्याल आते ही लिखनी न चलने से इन्कार कर दिया।

श्री जगदीशचन्द्र गान्धी मेरे बहुत दिनों के परिचित थे। तब वह कल्मिषाग के मिशन हाई स्कूल में पढ़ते थे। किंगारी भाई के साठ हान से भी उनके साथ घनिष्ठता थी। बम्बई में भी वह मिले थे, और अब बीकानेर में गान्धी पब्लिक स्कूल में संस्कृत के अध्यापक थे। उन्होंने राजपूताना युनिवर्सिटी से पी एच० डा० के लिए अनुसंधान करने में मुझे सुपरवाइजर बनने के लिए कहा। मैंने स्वीकार कर लिया। वह कुछ समय उहाँ दिया लेकिन इसके लिए जितनी तमयता चाहिए, उसके लिए वह तैयार नहीं थे। जिसके कारण काम पूरा नहीं कर सके। ६ मई को उसी के सम्बन्ध में वह ममूरी आये।

मई महीने में मित्रों के जान के बारे में चिट्ठियाँ मिलने लगी। घुपनाथ जी ने आन कृष्णार में लिखते हुए बतलाया था—अब गाँव अन्तर्गत में रागन की दूकान खुल गई है। अनाज के बारे में छपरा बहुत दिनों से स्वावलम्बी नहीं है। उनकी घना जावादा भारत में गायद ही किसी जिले का है। छपरा के लाना आदमी दंग के दूसरे गहरा में जाकर राजा कमात हैं हजारों ने विशार के बम घनी जावादावाले जिला में जाकर सेना शुरू कर दी।

१५ मई को ठातुरानी गुलाबकुमारी आई। पिछले मास वह पूरे राजसी ठाठ से आकर स्टेपरटन होटल में उतरी थी। अपनी मोटर थी, साथ में साथे दजन के करीब नौकर चाकर और मुसाहिव थे। अब की कबल एक नौकर और एक लडकी के साथ आई थीं। नये भारत में रिपामता और वहाँ के जागीरदारों पर जो प्रभाव पड़ रहा था, उसका ही यह उदाहरण था। जो सामान "न ते पाव पसारिय, जेती लंगी सौर"। इस वाक्य का जल्दी समझने में ममथ हमें व अर्बिब अच्छे रहेंगे।

निर्वाचन में पहले पिछड़ी जातियाँ में कुछ सुगुगाहट हुई थी, विशेष कर बिहार और उत्तर प्रदेश में वे बड़ी जाति के गामों से ऊँच कर विद्रोह करने की बात कर रहे थे। छूत-अछूत दाना प्रकार की पिछड़ी जातियाँ मिलकर आबादी की ७०-८० सक्के हैं। उनके मन में जो जान पर यह विश्वास ही है, कि लाकत-प्रभ "ब्राह्मण-क्षत्री-लाल" के अगुवापन के लिए कोई सम्भावना नहीं रह जाती। पर बड़ी जातियाँ या उनमें भी भ्रष्टी भर सामान्य जपन सभ्या-बल पर हजारों वष से दंग के सारे बभन के स्वामी हान इहाँ गाँवपिता और पीड़िता का हरियाण बनाकर अपना काम बनाने आये हैं। काप्रेस के "ब्राह्मण-क्षत्री-लाल" पचायतों के चुनाव के वक्त पहरा गये थे उनके पराक नौब में धरती विमनती-भी मालूम हुई थी। उस समय के गायक भूल गये थे, कि गुरु की शक्ति की शत्रु की छूट से घना बसाया जा सकता है। चुनाव के समय उन्होंने ऐसा ही किया। गाँवपित नताशा में जिनको अधिक प्रभावशाली दया, उन्हें काप्रेस का टिकट दे दिया। वे बल की जोड़ी की जय मना लगे। चुनाव के बाद दो चार का पालियाभट्टी सप्रेटरी बना देने भर में उनका काम निरल गया।

तागर हृष्य में श्री धूपनाथमिह आ गये। अब हमारी कुटिया में बहार थी। धूपनाथजी का मने गाय मौशुद्रं तीम वष में ऊपर का है, जिनका उत्सव जीवन यात्रा में जगह जगह हुआ है। उनकी सच्चाई और मरलता सान में मुगध है।

मैं अपने में समझता था, कि तरेक समझदार आत्मो बुद्धि के सामने फिर धुपान के लिए मजबूर होगा, लेकिन तजुर्ने ने बताया, कि दुयोजन के नाम से माटर वाक्य दीव है— तागामि धर्मे न च मे प्रकलितः।

जानाम्यधम न च म निवृत्ति । बुद्धि क मूल्य को जानत हुए भा यदि उसकी सम्मति ठुकराने क लिए आदमी तयार हो जाता है ता इसी निष्कप पर पहुँचना पडता है । बुद्धि जिस वक्त कान मे कुछ धीम धीमे बात करना चाहती है, उसी वक्त दिमाग म पटका लगता है, और आदमी बुद्धि को निराश करके दूसरे ओर दौड पडता है । दुनिया मे सभी आदमियो म केवल गुण ही गुण नहीं हाते कुछ दोष भी हाते हैं । अगर उनक दोषा ही को देखा जाए तो आदमी की जीवन यात्रा कठिन हो जायगी । अपने मित्रो की सरया बढाना जरूरी है । यदि जरा-जरा से दापा के लिए “अय न अय न” कहते हुए सबका प्रत्याख्यान किया जाये ता आदमी अकेला रह जायेगा । लेकिन किसी को हाथ पकड कर रास्ता पर चलाया नहीं जा सकता । मनुष्य का समाज म पदा हाने पर भी बहुत बातो म अपने आप पर छाड दिया गया है । ठोकरें खाकर वह अपने आप ही सभलता है ।

रियासता का विलयन हुआ । वहाँ क राजाओ और सामन्तो के गतादियो नहीं सहस्राब्दिया से चल जात जीवन की समाप्ति बहुत नजदीक है और उसकी समाप्ति के साथ एतिहासिको और समाजशास्त्रियो म ही नहीं बल्कि दूमरे भी पाठका क लिए सामन्ती युग क वारे मे जानने क सारे साधन नष्ट हो जाँगे । मरा ख्याल कितने ही दिना स हा रहा था कि सामन्ती जीवन का लिपिवद्ध करना चाहिये । अपने मित्रो स इधर कुछ वपों से कहता रहा । हाँ भरनवा तो मिले लेकिन करनेवाठे कोड नहीं दीख पडे । मैंने सोचा दसे अपने हाथ स ही करना चाहिए और २६ मई को 'राजस्थानी रनिवास' के लिखन म हाथ लगाया, जा वस्तुत अभी अभी हमारे सामने खतम होते समाज का काल्पनिक नहीं वास्तविक चित्र है ।

३० मई का साहित्याचाय थी बलभद्र ठाकुर आय । चाय पीते समय दूकान पर अपना पाटफेल छोड आय थ लौट कर जाने पर वह मिल गया । उह पहाड की ईमानदारी पर जरूरत स अधिन विश्वास हा गया । किसी समय जरूर पहाड म इमानदारी का राज्ग था पर जबस जीवन-सघष बना उचित थम करने पर पेट भरने का ठिकाना नहा रहा तब स पहा डियो न भी मदानियो का रास्ता पक्का ।

३१ मई का परीक्षा-परिणाम निकल आया । कमला एफ० ए० पास

हो गई, एक विषय छाड़ने का अब अफसास कर रही थी।

अब मलानी सूत्र दिखलाई पड़ रह थे। हमारे देश में आधुनिकता अब असूयपश्याआ तब में फँस गई है बल्कि कहना चाहिए, भाग व सारे माघन मुल्म हाने के कारण उनमें आधुनिकता के तर्जों से फँलने की सभावना और भी अधिअ थी। राजस्थान की रानिया और राजकुमारिया अपनी राजधानी में भले ही असूयपश्या हो भले ही वहाँ वाले सीस लगी बन्द मोटर में उह बाहर जाना पडता हो लेकिन मसूरी के माल पर उह देख कर कोई वह नहा सकता, कि य पर्दे की रानिया है। एक तरण रानी जिनका केग कट चुका है, कभी मिर खोके पतलून पहने घूमनी दिखाई पडती तो कभी घाघरा-भुगडी पहने। उनका अपन राजस्थानी ननिहाल का और युरापियन साज सज्जा का अभिमान है।

२ जून का पृथिवीराज और राजकपूर का नाम सुन करक हम "आबारा" फिल्म दखन गए। अभी उसकी विदेगा में ख्याति नहीं हुई थी तो भी मैंने खिया था—'अब तक देखे भारतीय फिल्मों में अच्छा है इममें सन्दह नहीं। सत्र दृष्टि से अच्छा कहना पड़ेगा।' अधिकतर फिल्मा से मुझे निराण हो लौटना पडता है इसलिए भी 'आबारा' का देखकर सताप हुआ था। लौटते समय बर्षा और ओल पडे। बर्षा के मारे तो हम भीग गए। स्टैण्ड के पास खिगा लिया। गाघी चीर तक आन आत खिगेवाले भी लय पय हा गए और जाग चलना उनके लिए सभव नहीं हुआ। मित्तल जो के स्टार में पडूँच। चाय पिलाकर ही उहान सताप नहीं किया बल्कि भाजन नी कराया। सांटे १० बजे वहाँ से पदल खाना हुए और ११ बजे बाद घर पर पहुँच।

जून में 'मम पच्छीम भाग' का बोखानर में प्रूफ आन लगा। पुस्तका व खिगन में मुने मितता आनद आता है उममें कही अधिअ आन उन प्रूफ दखन में जाना है। पुस्तका का खिया माना उनका ग। म आना है और प्रजागिन हाना जम लना। आत्मी इममें अपन परिश्रम का ममयता है।

६ जून को स्वामी गत्यस्वन्पत्री आए। हमारे लिए अब स्थान की मसस्या थी। बन्नुत एन ही ता खम्बा-भा बमरा है, खिसम विमाजत

वरके हमन दो बना लिया है। और महमान का उसमे रहने के लिए कहन म सकोच मालूम होता है लेकिन स्वामीजी और बलभद्रजी ने उस पसन्द किया।

अतिथियो से भरे साधुओ के मटा को मैंन वर्षों दखा है। वह सह जीवन तथा साधु सेवा मुझे हमारा बहुत पसन्द आइ। अतिथियो का समागम और उनकी सेवा भरे लिए लाप्सा की चीज है। लेकिन यहा दंग रहा था अपना मकान लन पर भी उनका रखने के लिए स्थान दना संभव नहा था। धूपनाथजी एक महीन के बाद १० जून को गए। गर्मिया म उह काम स छुट्टी रहती है लेकिन वर्षों के आरम्भ होते ही खेती के काम का दखना पडता है। वह छपरा के अपन गाव अतरसन म न रहकर भागलपुर म खेती बारी करते हैं। काम म उनका मन भी लग जाता है, और साथ ही जीविका की चिन्ता भी नहा रहती।

डा० किरणकुमारी गुप्ता अपने भतीजे प्रो० प्रताप के साथ जाइ। उन्होंने और मैंन भी साचा था कि साहित्यिक कार्यों के बारे म कुछ काम होगा। तासकर उहान अग्रवाल विवाह प्रथा ' लिखन का जो काम अपने हाथ म लिया था विवाह सम्बन्धों सँकडा गीत जमा कर लिए थ उसके कारण मैं और भी सहयाग देने के लिए उत्सुक था लेकिन आन क दिन ही प्रो० प्रताप को जार का बुखार आ गया। यदि पहाड म आकर अपना या अपन साथी को बीमारी का सामना करना पडे, तो सारा मजा किरकिरा हा जाता है। फिर नीचे लौटने की ही इच्छा बलवती होती है। क्यानि वहाँ चिकित्सा और गुथुपा का अधिक सुभीता रहता है।

११ जून को श्री गयाप्रसाद शुक्लजी, प्रिंसिपल कालीप्रसाद भटनागर की पत्नी के साथ आए। प्रिंसिपल भटनागर हमारे प्रयोग के जान मान शिक्षा विभाग तथा यहा से सबसे बडे कानपुर के डी० ए० बी कालेज के प्रिंसिपल थे। (इन पक्तिया के लिखने के समय अत्र वह आगरा युनिर्सिटी के वाइस चान्सेलर हैं।) प्रिंसिपल भटनागर उदार विचारा के आय समाजी हैं जिसका मतलब है घम के बन्त भीतर घुमकर माथापच्ची करन से दिमाग का अलग रखना। लेकिन, उनकी इस कमी का उनकी पत्नी पूरा करती है। वह योग और आत्मवाद के पीछे मीरा हैं। सचमुच वह मीरा

ही है, क्याकि कीतन म वह बाज वक्त तमय हो जाती हैं। गुरु म अपार श्रद्धा रखनी हैं। सौभाग्य से उह एक महिला मिट्टा मिल गई थी, 'केकिन जान पडता है' घर का जोगी जागिना, आन गाँव का मिट्टा" की कथा चरि साथ हुई। हाथ म आन से अधिक पान की इच्छा रखती हैं। वानपुर म रहत बाल शिक्षा के लिए कुछ समय दती। गर्मिया और बरसात म वर्षों से पहान की जादी हा गद्द, मसूरी आ जाया करती थी। काग्रेज की छुट्टिया का अधिक समय प्रिंसिपल साहब भी यही बिताने थे। उह एक दजन बप से अग्रिम किराए के बगलो म रहते हा गए। प्रिंसिपल साहब उससे मनुष्ट थ। श्रीमती भटनागर की इधर इच्छा होने लगी कि अपना बगला हाना चाहिए, जिमे अपनी रचि के फूला स सजाया जाए, अपनी रचि के अनुसार बनाया जाए। मैंने अपन पडोसी "किलडेर" बगले का दिग्गलाया। उह बहुत पसन्द आया। ऐसे बगले के वानपुर म हाने पर ता २५ हजार रुपये मुह दगाद देनी पन्ता है। कितन ही समय तक यही मालूम हाना था, कि 'किलडेर' की स्वामिनी वही हागी। चाक म जच्छा या बुरा जो काम हा जाता है, वह हा जाता है दर हान म चीज व गुण ही नहीं दोष भी मालूम हान हैं, फिर वह काम नहीं हा पाता। मैं सोचकर कहता हूँ कि मरान को न लखर श्रीमती भटनागर ने जच्छा ही किया।

श्री भारतभूषणनी का इस साल ब्याह हुआ। उम समय मास्टर विदयम्भरदयालजी भी यही पर थे। ब्याह हाकर नई-नई ग्रह आई थी। १२ जून का हम भा बर्तौ पहुँच। मसूरी म मौजूद बहुत म इष्ट मित्र चाय-पाटी म जमा थे। वहाँ प्रेजुएट थी, जा आजकल के जमान के लिए कोई असाधारण धान नहीं थी। मास्टर विदयम्भरदयाल भी गुण थे।

नाण मिलनवाला म १३ जून का प्रयाग के ठा० कपिलदेव व्याम आए। वह मसूरी व गिएनए नहीं थ। मर आन से पहले वह माला तन ता वह हमार ऊपरवागी काठी की बगल म 'हन ली' म टहरा करत थ। प्रयाग व माण्यीय हाने व कारण चाहे डाक्टर हा या वकील, अपने साहित्य और मस्वृति की आर कुछ रचि हानो है। ध्यागजी हर साल आन, 'हन ली' में नहीं टगरत, जहाँ भी टहरें हमार यहाँ दान दन की शृपा जरूर करने हैं।

१५ जून को स्वामी सत्यस्वरूपजी के माथ पटलाद (गुजरात) के ७० वर्ष के एक सैठ आए। वह तीव्र व्रत और परोपकार में काफी धन खर्च करने हैं, जोर विद्या में भी गौरव रखते हैं। बातचीत होना पर मैंने सलाह दी, कि दात पुण्य के पात्रा में साधुआ के आश्रमा का ही नहीं बल्कि साहित्यिका के आश्रमा का भी ख्याल रखना चाहिए। मुझे मालूम होता था कि क्लेरे खरीदकर उसे साहित्यिका का आश्रम बना दिया जाए। यह कहने में मेरा क्या बिगड़ता था यद्यपि मैं जानता था कि कान में बात डालना और उस पर हँस-हँस करने का यह अर्थ नहीं कि वह काम हा ही जाएगा।

यहाँ से १० अप्रैल को ही शिवकुमार घुमकण्डी के लिए निकले। ढाई महीने बाद २० जून का वह जमुनोत्री गगोत्री केदार-बदरी हानर लौटे। अपनी यात्रा का विवरण बड़े उत्साह से सुना रहे थे। यद्यपि वे घिसी पगडडिया है लेकिन घुमकण्डी जीवन के कल सीखने के लिए यह नीचे की रेल की यात्रा से कहीं अधिक उपयुक्त है। उनसे बात हो रही थी, तभी हमारे दाशनिक् श्री रामचन्द्रसिंह भी आ गए। वह भारतीय दान और धर्म निरपेक्ष दिव्य जीवन के प्रचार की धुन में हैं। सारी यात्रा कह लीजिए सस्था भी उनकी जेब में चलती है। चाहे वह व्यावहारिक न हो किंतु जमे शुद्ध सरल और भटवती अद्भुत प्रतिभा के हृदय से बात निकल रही थी उह कौन सुनना नहीं चाहेगा? गाम को अपनी पत्नी सहित सत्येन्द्रजी (बदरीपुर) भी आए। सत्येन्द्रजी और उनकी पत्नी के प्रति हमारी विशेष आत्मीयता है। यह ऐसे दम्पती हैं जिनके आत्पर और स्नेह पाने में हम दोनों एकमत हैं। इतने मित्रों के समागम से आज का शुक्रवार महोत्सव का दिन मालूम होता था। शिवकुमारजी अत्र मानसरावर जाने का सक्त्प और बलभद्रजी भी साथ देने की बात कर रहे थे।

डा० सत्यवन्तु के ज्येष्ठ पुत्र श्री निशरजन ने एम० ए० छोडकर एल एल० बी ले लिया। अबक साल उन्होंने प्रथम श्रेणी में उस पास किया। लेकिन बकालत की परीक्षा वस्तुतः युनिवर्सिटी में नहीं बल्कि कचहरी में हानी है जहाँ सबसे अधिक प्रतियोगिता है और मुश्किल से १० प्रतिशत बकालत निश्चित जीवन बितान में सफल हात है।

पंडित हरनारायण मिश्र देहरादून से आए। वह साहित्य प्रेमी हैं।

पढ़ा बहुत और मौखिक तौर से उसका उपयोग भी बहुत किया, लेकिन उनकी लेखनी हमारा सहाची रही है। उनके फारसी के ज्ञान का देखकर मैंने कहा, आप एक 'फारसी काव्यधारा' लिख डालें। पहले हिचकिचाए, लेकिन जब मैंने बतलाया, कि मैं भी आपका सहायक देने के लिए तैयार हूँ, तो उन्होंने उस काम का अपने हाथ में लिया। कुछ महीना तक तो मालूम हुआ, कि हिन्दी की यह कमी पूरी हो जायेगी और विश्व में एक उन्नत साहित्य की कृतियाँ हिन्दी में आ जाएँगी। मैंने उन्हें बतलाया था मूल का भी नागरी अक्षरों में बाँधें पृष्ठ पर रखें और हिन्दी अनुवाद उसके सामने दाहिने पर। मिथजी डायबटीज के पुराने मरीज थे। अब आँस भी जवाब देने लगी। आदमिया को देख सकता थे। किताब का पढ़ना उनके लिए मुश्किल हो गया, फिर 'फारसी काव्यधारा' का ख्याल छोड़ना पड़ा। कभी-कभी ख्याल आता है क्या उस भी मुझे करना होगा। मैंने संस्कृत काव्यधारा' लिखने के लिए दूसरे मित्रों को कहा था। जब कोई नहीं आया, तो स्वयं ही उस करना पड़ा। 'पालि काव्यधारा' और प्राकृत काव्यधारा' के बारे में भी दूसरे मित्रों का कर्पण से कह रखा है, लेकिन अभी कोई सुगबुगा नहीं रहा है। पहले के दाना हो जाएँ तभी "फारसी काव्यधारा' का हाथ में लिया जा सकता है। जीवन चाहिए, काम की कमी नहीं है।

जून के माघ अच्छे अच्छे आम आने लगे। और मसूरी में महोत्सव ही है। लेकिन वे बिल्कुल सुलभ हैं। २५ जून का था पुरुषोत्तम कपूर (कानपुर) का भिजनाया लम्बाऊ में दमहरी का पामल आया। अनियमितों के माघ आप का इस श्रुतु में भाग हो जाना मामूली बात थी। अधिक प्रेम में आग्रहवा करने के लिए १० बजे दिन का समय हमें ज्यादा अनुकूल मालूम होता है।

२६ जून का गुजरात का राना बरिया आद। प्रौढ़ और बद्ध अवस्था में गामन श्लेष्म की घम की आर विधिप नक्ति होता है। स्वामी सत्य स्वर्ण और उन्नत गुरु स्वामी गगनरानन्द का उन्नत परिचय था। घम की मेरी निरपेक्षा भी घमर्चाओं और घमिना की उन्नता का पात्र नहीं बानी। राना साहिबा का कुछ परिचय मित्र था। उनकी नानी हमारे

विहार के डुमराव व महाराज की पुत्री थी। वह बचपन से ही अपग है सब तरह की दवाइया की लेकिन उससे कोई लाभ नहा हुआ। अम महात्माओं की आगा है। बड़ा गिणिता हैं। गुजरात के राजवशा का राजस्थान के राजवशा से बडा घनिष्ठ सम्बन्ध है दोना की भापाए भी बहुत नजदीक हैं इसलिए गुजरात के अत पुरा म हिंदी का प्रवेश कई असाधारण बात रही है। उहाने चाय छाड रखी थी सयोग से हमारे यहाँ काफी मौजू थी।

ठाकुरानी गुलाबकुमारी भी अभी हमारे बगल म ही ठहरी थी। लेटली के अटें ' के बारे म बातचीत हुई। बूढे लेडला युग के भाडे से एक पसा कम करने के लिए तयार नही होते थे लेकिन किराये पर न लगन के कारण उहान आधे अटें को साढे तान सौ रुपया साल पर दे दिया। मसूरी के मकान माल भर व किराय पर ही उठत है आप चाह बारहा मनीन रह या दा महीन।

३० जून का महीने का अत था। इसी दिन हमारा न घुमक्कड शिव गर्मा और बलभद्रजी पाण्डवों के रास्ते पर पर बत्तान के लिए आग बडे। पाण्डव बल्कि हिम रेणिया के पार नही पहुँचे थे जबकि हमारे दाना तरुण घुमक्कड उसने पार कलाश मानसरावर का धावा बालन जा रह थे। बूटा पहलवान दिस तरह अखाडे के किनार बठवर दाव पच सिखलाता है, बसी ही मुझसे भी आगा रखा जाती है। मैं इसने बार म घुमक्कड 'गास्त्र' लिए चुवा हूँ। मेरे कहन व अनुसार दाना घुमक्कडो न किसी कुली का सहारा न लेकर अपने शरीर व बल पर यात्रा करने का निश्चय किया। आवश्यक चीजें उहाने झाला म भरकर अपनी पीठ पर रखी। गिबकुमार की पीठ पर ३० मर से क्या कम बापा हागा? ठाकुर महाशय के लिए उममा दा तिहाई ही काफी था। यात्रा की प्रगति के लिए आगे की प्रतीक्षा न करन व वास्त यथा लिए देता हूँ। दाना यहाँ म पहाड ही पहाट पदल धराम गए जहाँ व ऋषिनेग हाकर मोटर से भी जा सक्ते थे। उत्तर कागो, हसिल हात भारत के अतिम गाँव नेलग पहुँचे। वभी नलग तिबत का अतिम गाँव माना जाता था महा नही, बत्ति उमसे २० २५ मील और द्यर के जगत् पर तिबत वाला का दावा था। जसे गार्तिपूण रीति से वम्मुनिस्ट तिबत म चल जाए ता हमारी भी मीमा गार्तिपूण रीति से

नेलग और उसके आगे के डांडे तक पहुँच गई। कम्युनिज्म के कीटाणु उघर से भारत की ओर न बड़ें, इससे त्रिण सरकार ने वहाँ पुलिस बैठा दी। दाना घुमकड़ा को वहाँ रात लिया गया, और बतार से बातचीत होने लगी, यह खयाल करने, कि यदि अधिकारियों की अनुकूल सम्मति आ गई, तो आभ जान की इजाजत दे दी जाएगी। शायद एक हफ्ते तक वे वही रुक रहे, कोई जवाब नहीं आया। दाना ही चाहते, तो किसी मिनिस्टर का प्रमाण पत्र ले सकते थे, किन्तु अभी तक ऐसा हाता देगा नहीं गया था। निराश होकर शिवकुमार ने निश्चय किया हम ये हथकड़ी उड़ी लगा बंदी बनाकर ता रखे नहीं हूँ रात को हम निकल भागें। यह मैदानो या हमारे पहाडा का इलाका नहीं था, जहा पगडडिया का पनडकर कुठ मील पर दूसरा गाँव मिल सकता था। बीसिया मील तर वहाँ न कोई गाँव मिला। न पहाडा पर बल-बनस्पति थी। भटककर आदमी नहीं जाता इसका भी पता नही। सौभाग्य से मानसरोवर हुआ आया एन तरुण साधु उह मिल गया जा भी पुलिस के कारण मतिरुद्ध था। बट टोक से पत्र प्रदान करगा, उनकी ना सम्भावना नही थी, क्योंकि एन बार हा आया आदमी ज्यादा से ज्यादा पडाव वाले भोक्तिंग या किमी दूसरे पडाव वाले गाँव को जान सकता था वहाँ पहुँचने से पहले क्याजान में दूसरी पगडडिया मिल सकती थी जा गाँव की तरफ नहीं बलकि त्रिपो चरागाह की ओर ले जाती। रात में आदमी के मिलन या सम्भावना कम थी, और मिलन पर भी तिब्बती भाषा जाना में स किमी का नही मालूम थी। ता भी दाना ने माटम स काम लिया। आधी रात के बाद एन दिन वे भाग निकले। यह मालूम ही था, कि कामटवरा उनका पीछा करने के लिए नहीं आ सकते और यदि जाना भी चाहते ता तब तर वे १५ १६ माट दूर चले गए हाने। बैंग ही हुआ। शिवकुमार थोलींग गए, कालाग लता, मानसरावर की भी परिचया की। पुरड (तबलागर) पहुँच, तभी उह कम्युनिस्ट मनिष मिले। बट रह थे वहाँ कोई पूछ-ताछ करने वाला नही था। कम्युनिस्ट मनिषा ने उह बडी गानिर स चाय पिलाई, और वे राफो प्रभावित हारर वहाँ न चोट।

दा माल रहल अर 'हन विराग' के दाप भी मालूम हो लय। मानस रमा, नाहल हमन २० हारर म ऊपर इग बगल पर रात बिण। अटने

की तरह का कोई बगला चार-पाच सौ रुपये साल में मिल जाता। मन कहने लगा यदि यह बिक जाए या बहा करे। मकान के सूट से बचने में प्रति पहिले पहिले दुर्भाव पदा हुआ।

२ जुलाई का दिल्ली की जामिया मिलिया में कुछ छोटे लड़के अपने दा अध्यापका के साथ आए। कुछ लड़के लहासा के मुसलमान थे और वहाँ के मरे परिचितों को जानते थे। तिब्बती भाषा बोलने से उन्होंने जिनका जात्मीयता महसूस की। लहासा के मुसलमान सभी जगह पुराने विचारा वाले मुसलमानों की तरह धर्म के मामलों में बड़े कट्टर होते हैं। बौद्धों की लड़की ब्याहन के लिए हमेशा उत्सुक रहते हैं लेकिन मजाल क्या कि कोई बौद्ध उनकी लड़की ले जाए। उनके लिए बौद्ध धर्म और विहार तथा उनका साहित्य काफिरा की चीज है लेकिन वहाँ उनकी सरया दाल में नमक के बराबर है। चाहते हैं कि हमारे लड़के उनके मुसलमान हों। इसके वास्ते उपयुक्त संस्था दबबन्द हो सकती थी जहाँ अरबी भाषा और इस्लामी दर्शन का अध्ययन अध्यापन होता है। लेकिन, लहासा के मुसलमान यापारी हैं, उहाँ भारत में जाना-आना पड़ता है। अंग्रेजी के महत्व को समझने हैं, इसी लिए वे अपने लड़कों को जामिया मिलिया में भेजे हुए थे। लड़कों में से कुछ अब समझने की भी शक्ति रखते थे। एक लड़का बड़े गौर से सामने टगो माआ त्से-तुग की तस्वीर को देख रहा था। माक्स और लेनिन से उसका परिचय नहीं था। पर यह जानता था कि जब लहासा की सड़क पर अध्यक्ष माआ की जय बाली जा रहा है। मैंने कहा अरबी पढ़ना तुम्हारे लिए धार्मिक उपयोग की चीज है किन्तु नये विचारों में उठूँ और अंग्रेजी की उतना उपयोगिता नहीं है जितनी कि तिब्बती भाषा की। वहाँ का सारा काम तिब्बती में ही रहा है, यह उस मालूम था। लेकिन अभी उनका पिता पुराने युग के थे।

“राजम्याती रनिवास” पर हमारी कानून नियमपूर्वक चल रही थी और उसका विषय हुए को दाहरान भी जा रहे थे।

मकान का लान वक्त मैंने गलती की थी जो उसे अपने नाम लिया था यद्यपि मैं जानता था कि कमला उसकी मालकिन हैं। अब उस गलती का सुधारने की जरूरत थी। ३१ जुलाई का भुख बन्ना मत्ताप हुआ, जब थी

विश्वरजनजी की सहायता से दानपत्र रजिस्टरी कमला के नाम हो गई। दानपत्र मी के बरबाद हान का सवाल रहा वगले पर ता कई हजार बरबाद कर चुके थे।

रजिस्टरी के बाद हम बाजार से लौट रहे थे, तभी रास्ते में कमला देहरादून से लौटनी मिली। वह रही थी गर्मी के मारे जान निकल रही थी। बड़ी मुश्किल में माटर के अड्डे तक अपने का राबकर लाई जहा के हा गई। 'नेपाल' लिखन की कल्पना मन में चूलुला रही थी। वह अपन माय परिवार लंडन के नेपाल की दा जिल्हा का ले आई थी। मैं माच लिया कि अब नेपाल में हाय लगाना ही ठागा और साथ ही जनवरी १९५३ में नेपाल-यात्रा भी करनी हागा।

५ जुलाई का 'प्रमाणवातिकभाष्य' का पहला प्रूफ आया। मुह में निकला—'कुम्भ दूरा खुदा-खुदा करके'। १६ १७ वष बाद इम प्रय का और मरा सोभाष्य गुला।

उसो दिन गायद उमी डाक से बनारस में एक करुणाजनक चिट्ठी एक तरफ कहानीकार की मिला। उनकी पचामो कहानियां पत्र पत्रिकाओं में छप चुकी थी, पाठक उन्हें पसंद करते थे। उनका अपन और अपने सम्बन्धों का छोट से परिवार का चलाना मुश्किल था। आज यदि आधा पट ला लेते तो कल की चिन्ता दिल का भुगान लगती, भद्र वग के हान के कारण उमके साथ ही सम्भावितम्य चाकीतिर मरणातिरिच्यत'। वह अपमान की जिदगी को जीना कैम पसंद कर सतते थे? कहानिया के लिए कोई प्रमाण पसा देन के लिए तैयार नहा था। प्रकाशक भी तभी किसी पुस्तक का प्रमाणित करन के लिए तयार हाता है जब उमे विश्वास हाता है कि यह पुस्तक बिदगी। नय शक पर वह कम विश्वास कर सकता है? मरी निफारिग का प्रकाशक रही की टाकरी में हा देगा, यह मुझे विश्वास हा था, लेकिन अपन तरफ सधर्मा का निराशापूर्ण पत्र लिखना उचित नहीं था।

६ जुलाई को पटना में आमा का पामल थी वीन्द्रजी न भेना। चार पांच ही गराव हुए किन्तु ये उन माठे नगी थे। उस दिन उत्तरवाणी से गिया बलमद्री का भा ४ जुलाई का पत्र मिला जिसमें मास्त्रू दूआ,

मजदूर सघ में

लाग वनार झूठ क्या बोलते हैं ? एक दिन एक व्यक्ति शराब पीकर आए। मुह से शराब की गंध आ रही थी बालने चालन पर भी उसका असर था। मैंने शराब कभी नहीं पी और इस रकड को कायम रखना चाहता हूँ इसलिए मैंने उमम हाथ कभी नहीं लगाया। लेकिन मैं शराब पीने का पाप नहीं समझता न पीने वाले का दुराचारी मानता हूँ। आखिर मैं न भाग तो कभी पी ही थी। उसका भी नशा हाता है। आत्मी अधिक पीने पर मुघ-बुघ भी खो बठता है। मरी दृष्टि में शराब और भाग में कोई अंतर नहीं। अगर मात्रा की बात है तो दाना के लिए एक सी है। अगर कर्द समयी नहीं है तो उसे दया का पात्र समझना चाहिए घणा का नहीं। लेकिन उस दिन उस व्यक्ति ने कसम खाकर कहना गुरु किया मैंने शराब नहीं पी तो मुझे जरूर बुरा लगा। आखिर गंध तो साफ भेद खोल रहा था।

भदत बाभान महास्यविर पहले पम्प थे जिहोन कुछ बातें बनलातें बौद्ध ग्रंथों में प्राप्ति म्यान का पता दिया। तत्र स हमारो सम्पक घनिष्ठ हाता गया। उस समय (प्रथम विश्व युद्ध के मध्य में) एक धम्मपद छाटकर और किसी बौद्ध ग्रंथ का हिन्दी में अनुवाद नहीं था और न स्वतंत्र तौर से हा एस ग्रंथ लिखे गए थे जिनसे बौद्धधर्म से परिचय प्राप्त करने में सुविधा हो। बगभापी और बौद्ध होने से उन्हें कुछ सुभीता था। उन्होंने एक बगला बौद्ध मासिक पत्रिका का भी ग्रंथ पता लिया था। मैं उन्हें

सकता है, कि बौद्ध साहित्य भंडार के दरवाजे पर पहुँचाने वाले वही थे। इनका देहांत हान पर मैंने 'नया समाज' में उनकी जीवनी पर एक छोटा सा लेख लिखा। लखनऊ में उनका बनवाए बौद्ध विहार (रिमालदार बाग) और उनकी संप्रहीत हज़ारों पुस्तकों को मैं जब भी लखनऊ जाता हूँ देखता हूँ। और उनकी स्नेहिल मूर्ति सामने आती है। उनके शिष्य भिक्षु प्रचानन्द ने अपने गुरु के विहार की रखवाली का ही भार अपने ऊपर नहीं लिया है बल्कि वह वहाँ से बौद्ध ग्रन्थों के प्रकाशन का भी काम कर रहे हैं।

किदवाई पिल्ले—मिस्टर किदवाई आई० सी० एस० हमारे प्रदेश के जिला-जज थे। उन्होंने 'हन क्लिफ' के पास ही एक बड़े बगले (आराम हौस) का खरीदा, जो यहाँ के असाधारण बगला में है। बगला और उनके कमरे ही बहुत बंगाल नहीं हैं, बल्कि उसमें बगीचे के अलावा आगे पीछे काफी लम्बी-चौड़ी समतल भूमि है। इसे देखकर मुझे खयाल आता, कि जिस समय हमारे यहाँ कम्युनिस्ट देशों की तरह बच्चा की पंक्ति का खयाल किया जान लगा, तो यह उनके लिए बहुत उपयुक्त स्थान होगा। यहाँ उनका फुटबाल हाथी, बच्चों के खेलन के लिए बहुत जमीन है और बगले के आम-पास इतना बगीचा है जो फल और फूलों की बहुत बड़ा बारी हो सकता है। मर यह तो भावी भारत की बात है। किदवाई पंगन पाए या गामद बिना पाए ही मर गए। उन्होंने एक अंग्रेज महिला से विवाह किया था जो गर्मी और बरसात में बराबर यहाँ आकर रत्न करती थी। बगले की मरम्मत करना उनकी गति से बाहर की बात थी, उनका दामादा न भी बगले के ऊपर दावा कर रहा था। मुकदमा चला। इसलिए भी पैसा गच करन में सहाय करती थी। गामद किदवाई कोई बड़ी सम्पत्ति छोटकर नहीं मरे थे। किदवाई की एक लड़की पाकिस्तान में और एक लड़का आसाम में सरफांगे नौकर था। बरल के श्री पिल्ले अच्छे इंजीनियर थे। उन्होंने भी एक अंग्रेज महिला से शादी की। उनका एक लड़की किदवाई के लड़के में ब्याहारी थी। दाना मन्तानें इन्दा-आगिपन थे इसलिए वे एन-दूगर का समझ सकते थे। दाना मन्तानें एक ही बार हमी माल यहाँ आकर रही थी। उसमें एक या दो साल बाद बचारा मिसेज किदवाई जाना में ममथी के पास प्रयाग गई, और वही उनका देहांत हो गया। लड़के का

१९४२ क जादालन म डा० गैरोला ने हिंदू विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों का नेतृत्व किया था उस सघष क वे प्रधान नेताआ म थ । सघष के समय ही मुझे उनक वार मे मालूम हुआ था । यहा जाकर मुलाकात हुई । बाबा की पार्टी से मैं उनसे मिलने गया । वे मसूरी क मजूरा क सगठन क एक नेता थ । मैं यहा रहन लगा था, वे यहाँ गर्मिया म कुछ समय क लिए जात थे । उहान जा र दिया कि आप मजूर सभा के सभापति बन । मैं अब लेखना क काम का छाडकर किसी दूसर काम म हाथ नही लगाना चाहता था सासकर मजूरा और किसाना के सगठन म हलक निल से गामिल हाना मैं पसंद नहा करता था । लेकिन उहान बाध्य किया । ३ अगस्त को यहाँ की मजूर सभा का मैं सभापति भी चुन लिया गया जिसकी, सूचना दने उसी दिन मंत्री और उप मंत्री मरे पाम जाए । सभा म बाबा डान वाले और रिक्शा के मजूर गामिल थे । दोनो ही यहा बारहा महीना रहन वाल नही थे । बाबा डान वाल अधिकतर नेपाली थे और रिक्शा वाले गडवाली । गडवाली भारवाहक एक मन से अधिक बोझा उठाने म अपन का असमथ पाता है जबकि नेपाली के लिए दो मन बोझा उठा लेना मामूली बात है । नितने ही तीन मन स भी ऊपर उठाकर ल चलत हैं । नेपाली मजूरी कम लेन का भी तयार थ जबकि गडवाली अपन कम बोझे का कम मजूरी म ले नही जा सकत थे । वर्षों की प्रतियागिता क बाद बाबा डान का काम नपा लिया के हाथ म चला गया और काम का बटवारा हा गया । बाबा केवल सलानिया क सामान क रूप ही में नहीं होता बल्कि खान पीन और व्यापार की दूसरी चीजें भी उसमे गामिल थी । नेपालियो म म बहुत मे जाडा म भी यही रह जान हैं । मजूरा क असली नेता इनम सगठन करन क लिए कभी पहुँच ही नरी । मजूरा का सगठन एक गति है जिस हथियान स दूसरे बाज कम जा सकत थ ? मुासे पहल उनकी सभा क सभापति यहा क एक लयपति हाटलपति थ और मंत्री कई लाखो क स्वामी यहाँ क सबसे धनी व्यापारी । मर एक माल देसन का मैंन निश्चय कर लिया ।

श्री टीवारा म कुज हेपीवली चीना म पुलिम क राइटर कामटबिल थ । व साहित्य प्रमी थ यह मैं पढ़न बनला चुना हूँ, साथ ही बडे सरल और सजजन पुष्प थे । रविवार का व पुस्तका और पत्रिकाओ को रन लोटान

जल्द आया करते थे। दूसरे दिन भी उनका स्वागत था। १७ अगस्त को मालूम हुआ, कि उनकी बदली यहाँ से नेहगढ़ हुआ गई। नौकरी-बग़ा आदमी एक जगह कैं रह सकता है लेकिन स्नेही पुरुष का विभाग तो बुरा लगाता ही है। एक बार चप्ते जान पर फिर नदी-नाब सयोग की तरह वहाँ मिलना? कृष्णसे एक बार 'कुजजी' यहाँ मिलने आए।

श्री कृष्णप्रसाद दर के कारण ला जनल प्रेम 'गढ़वाल' का प्रकाशित करा लगा था। कुमाऊँ भी उनके पास चला गया था। मैं मस्यता था और हिमालय-सम्बन्धी पुस्तिका के प्रकाशन की चिन्ता नहीं रहा और वे अच्छी सफाई व भाव छपेंगी। सितम्बर के पहले मन्नाह में मालूम हुआ, कि दर साहब लॉ जनल प्रेस से हट गए। हमारे यहाँ का पूँजीवाद मुराग में पीछे आरम्भ हुआ, इसलिए इतना बहुत अपरिपक्वता है। जो साधारण व्यावसायिक दैमानगरी और उदारता मुराग वाला में देगी जाती है, उसका भी यहाँ जभाव है। लॉ-जनल का एक छोटे प्रेम से बहुत बड़े और बलापूण छराने करने वाले प्रेम के रूप में परिणत करने का श्रेय कृष्णप्रसादजी को है। जब उममें आमदना नहीं घाटा का मवाल था और बड़ी भावना का भाव हा आगे चला जा सकता था उस समय यन् मारा काम कृष्णप्रसादजी न दिया। प्रेम का बहुत बड़ा दग्ने के स्वप्न न उह यह समझने की पुस्तक नही दो कराउपनि पडियागा व हाय में एक बार जान व बाद फिर खीर बन नही। दर साहब को अब मुठा न करने में लाभ नहीं समझा हालाँकि यह बान पीछे मग्न मारिन हुई। क्याकि दर साहब के हटने व कुछ ही समय बाद प्रेम अपना पुरानी अजित कानि का खा बठा। यह एक ही उदाहरण नहीं है। पटना के जपेशा दैनिक 'मजदूर' का छुन-मगीना एक करक मुग्गी बार्न राया और बडाया था। पीछे पूँजीपति मालिका न उनकी भी वही हालत की। दर लिए ना यह और भी चिन्तनीय बात थी। 'कुमाऊँ' का मानो पर पत्र बरक नय प्रबन्धकों न जोटा दिया, और पत्र व्यवहार में इनकी अनमदता ना परिवार बनी मुने किमी प्रकाश में नही हुआ था। दर साहब अगर रत, ता दात्रिणि मे जम्पू-कामार की सीमा ता के हिमालय-सम्बन्धी मेरी गिया हुई पुस्तकें जब मे पढ़े ही प्रकाशित हा मर हाया। उन समय मिलुन सम्भव था कि मैं जम्पू-कामीर जोर

भूटान आसाम के हिमालय पर पुस्तकें लिखकर सारे हिमालय का परिचय हिंदी पाठकों के सामने रख सकता।

पुस्तक के प्रकाशन की अडचन देखकर अब दिमाग में खयाल आया, कि क्या न स्वयं प्रकाशक बना जाए। कम-से-कम तजर्वा करने में क्या हज़ है।

१२ सितम्बर को गिबकुमार आ पहुँचे। उन्होंने नेलग के रास्ते थार्लिंग, बैलांग मानसरोवर होते गरयांग और अल्मोडा के रास्ते दिल्ली जाने की अपनी सारी यात्रा की बातें बतलाई। कुछ गम्भीरता की कमी तो जरूर है लेकिन इस तरण के साहम की प्रशंसा किए बिना नहीं रहा जा सकता। उन्होंने और किसी यात्रा के बारे में सलाह मागी, मैंने कहा, अल्मोडा जिले की सीमा से घुसकर सारे नेपाल में हाते दार्जिलिंग निकल जाओ।

सितम्बर के अंत में दूसरा सलानी-सीजन आरम्भ हो जाता है। ३० सितम्बर को स्वामी सत्यदेवजी और श्री मुकुन्दीलालजी से मुलाकात हुई। स्वामीजी को देखकर हमेशा मुझे उनका बनारस वाला रूप और सरस्वती में प्रकाशित होने वाले उनके स्फूर्तिदायक यात्रा-सम्बन्धी लेख याद आते हैं। बिना जाने उनके यात्रा-सम्बन्धी लेखों ने मुझे प्रेरणा दी, यह कहूँ तो अनुचित नहीं होगा। इस प्रकार मैं अपने को उनका ऋणी मानता हूँ। जब कभी भी भेंट होती है तो मुझे उनकी बातें सुनने में बड़ा आनंद आता है। वर्षों से वे आँखा से बंचित हैं किन्तु आवाज़ में अब भी वही बड़क है।

किसी कृति का आरम्भ यद्यपि प्रमत्त होता है किन्तु होता है अभाव से ही। इसका उदाहरण मेरा ऐतिहासिक उपन्यास विस्मृत यात्री है जो कि इसी साल (१९५६) प्रकाशित हुआ। १९५१ में नरेन्द्र यात्रा में अपना आरंभ मुझे आकृष्ट किया। फिर खयाल में आने लगा कि ऐसे महान् धूमकण्ड को लेकर कोई उपन्यास लिखना चाहिए। उपन्यास लिखने से पहले ३० सितम्बर को मैंने धूमकण्ड नरेन्द्र पर एक लेख लिखा। दा बप और लग, उस उपन्यास के रूप में कागज़ पर उतरने में। 'राजस्थानी निवाम' का भी आरम्भ इसी तरह अभाव से हुआ। मसूरी आने से पहले यदि कोई कहता कि आप इस विषय पर कभी पुस्तक लिखेंगे, तो मैं मानने के लिए तयार न होता। अब वह ग्रन्थ तयार हो गया था, और दिल्ली के हिंदु

स्नान' साप्ताहिक ने धारावाहिक रूप से उसे निकालने के लिए लिखा था।

मजूर सभा के सभापति हुए ता उसके लिए कुछ करना भी जरूरी था। मजुरा की सभसे बड़ी शिकायत यह थी कि उह बरसात मे बाहर भीगना पडता है और रिकवा के रखन के लिए कोई जगह नही है। कुछ स्थाना पर टिन के घरा के बनाने की आवश्यकता थी। हम दो-तीन आद मियो के साथ उन समय की नगरपालिका के मुख्याधिकारी तिवारीजी स मिलन गय। अभी मरकार ने म्युनिसिपल कमेटी का बर्खास्त करके प्रबन्ध अपन हाथ मे ले रता था और प्रबन्ध एक योग्य डिप्टी-क्लकटर के हाथ म द दिया था। वैसे सर्वेसर्वा देहरादून के डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट थे, मजुरा की शिकायतें हमने रखी, यह भी बनलाया कि इन इन स्थाना पर रिकवा रोड बनने चाहिँ। हमारे मंत्री और उप-मंत्री भी बीच म बात को बतला रट थे। मेरी ता वह इज्जत करन के लिए तैयार थे, क्याकि मैं प्रसिद्ध व्यक्ति था, पर जब हमारे मंत्री और उप मंत्री को उहान मूय कह डाला ता मुने बहुत बुरा लगा। मुने डर लगा मरे साथी भी कुछ जबाब न दे वैठें। लेकिन उहोने बडे जब्न से काम लिया। नौकरशाही म यह बहुत बुराई है कि वहाँ दास और स्वामी दा ही बग है। अपन से ऊपर के जफसर या मंत्री स्वामी हैं। उनकी चरण धूलि सिर पर रखना नौकरशाह अपना धम सम शता है। जब से अंग्रेज गय हैं तब से तो मचमुच ही चरण धूलि ली जान लगा है। जा स्वामी नहीं और अपन समान बग क नहीं हैं, ब सभी दाम हैं उनके माथ उमी तरह वा बताव हाना चाहिये। भला य लोग जनता क साथ आत्मीयता कसे स्थापिन कर सकत हैं। जान पडता है, इस सार मडे टाँचे को उगाड फेंकने क सिवा और कोई रास्ता नही।

वैसे भैयाजी अवनूबर के अन्न तक रहा करत थे लेकिन अब क साल भाभीजी की मानगिब शगा के कारण रहने की इच्छा नही हुई, और वह २३ गितम्बर को हा यहाँ स अमृतमर चके गये। उग दिन हम भी विदाई दन क लिए गय थे। दावराचाय का जलूम निकल रहा था। जागी मठ क दावराचाय अब की वर्षावाग म यहीं रहे। शिक्षा के विस्तार के माय माय गान हा का नही अपना का भी विस्तार होता है प्रवाग का नहीं मूत्ता का भी प्रसार हाता है। शिक्षा का स्तर ऊँचा हाने क साथ यह आवश्यक

हो जाता है। मुझे मालूम है जब मैं पहली बार घुमक्कड़ी के लिए निकल कर मुरादाबाद पहुंचा था तो वहां पाठकजी के सुपुत्र ने मर माथी दहानी अनपढ़ साधु को बटा तुच्छ दृष्टि से देखा था, और उस डरा घमसाकर भगा दिया था। किन्तु वही किसी आधुनिक शिक्षित साधु के सामन साष्टांग पडन के लिए तयार थे। शंकराचार्य अग्रजा के विद्वान् नहा थे लेकिन संस्कृत के अच्छे पण्डित थे और बालने चालने का ढंग भी उन्हें मालूम था। उनक पास दिल्ली से अपनी कार पर लाग सतमग के लिए आते थे। आई० सी० एस० पुस्तक के बारे में तो नहीं लेकिन आई० सी० एस० की स्त्री के आन के बारे में जानता हू। ऐस ब्रह्मलीन पुस्तक विलासपुरी में क्या आते हैं उनके लिए ता तपाभूमिया और तप पून पुरिया उपयुक्त हाती। पर भक्त हो भगवान् को नहा दूढते बल्कि भगवान् भी भक्तों का दूढा करते हैं। के पहले हपी बली के ही एक बडे बगले में रहत थे। किरायेदार जा जान पर मालिक ने उन्हें बाहर के घर में रख दिया। यह अपमानजनक बात थी लेकिन पम का सवाल था। फिर वह कुल्हडी में एक राजा साहब के बगले में चल गए। उनके साथ १२ १४ आदमिया की मण्डली रहती थी। व्याख्यान के लिए लौड स्पीकर लगाया जाता था। कुछ चढागा चढाने पर इकार हाने में लाग समझत थे कि वह किसी से कुछ नहीं लेत लेकिन इसका मतलब यही था कि वह दम दीत रुपया का लेना आवश्यक नहीं समझत थे। यहाँ से जान के बाद महारनपुर में ७० ८० हजार की उनक यहा चारी हा गई। दाई से पेट थाडे ही छिपता है। २४ घटे साथ रहनवाले भवता ने सोचा हागा इतना रुपया उनके पास रहने की जरूरत नहीं एस लिए वह हल्ला करके चले गए। पुलिस न किसी को पकडा या नहीं यह नहीं मालूम। हाँ, यह पता लगा कि दिल्ली में जान पर किमी भवन न मैसूर से चदन का सिंहासन बनवाकर उन्हें जपित किया था। जगद्गुरु का चोमासा खतम हो रहा था, और उसी विदाइ के लिए यह जलूम निराला गया था। जगह जगह तारण बदनयार ग्य। लागा ने आरती उतारा।

सीजन भर हमारे यहाँ बच्चू काम करता रहा। पहली जगह जिन लोगो के यहाँ काम किया उनकी सिफारिशी चिट्ठियाँ उमके पास थी, और हमारे रिश्तेदार वाल पडासी न भी उमकी तारीफ करत हुए यह बतलाया

या कि वह हमारे नौकर का सम्बन्धी है। यदि रमोदया हरिजन हो तो एक विशेष मानसिक आनंद मिलता है। मैं उसे रख लिया। खाना अच्छा बनाना था मुसँद भी था। कमला ने भण्डार भी उमी को सुपुद कर दिया था। २४ सितम्बर को मालूम हुआ वह भाग गया। देखा जाने लगा तो मालूम हुआ कि टिन के दूध और खात की दूमरी चीजें मज गायब हैं। कुछ बरतन भी लापता हैं। दा अच्छी अच्छी कटारिया एक बार गायब हो गई थी, तो उसने लणौर में आय एक तिब्बती मित्र का लट्ठी पर लाइन लगाया था। क्या-क्या चीजें उसने गायब कीं इसका पता उमी दिन नहीं मातूम हो सका। पास-पड़ोस में पूछने पर मातूम हुआ कि वह यहाँ में आटा चावल आलू बरतन ल जाकर बेचा करता था। रजाई-दरा हमारे यहाँ में गायब थी। चौकीदार बरतानसिन्स मातूम हुआ कि उनसे कुछ रुपया उधार ले गया और रतियाला न भी रुपय उधार देने की बात की। भिवसू लाल से मालूम हुआ कि वह रात को १० बजे यहाँ आया था। अन्त में यह भी पता लगा कि वह 'हालीबुड' के चौकीदार की बोकी का भी भगा ल गया। चौकीदार न बहून दौड़ धूप की, लेकिन बच्चू वहाँ से हाथ आना ?

डा० किरणकुमारा गुप्ता के पति श्री बाबूगल गुप्त एम० ए० ही रह गये थे। मजमुच ही पति के लिए बिद्या में अपनी पत्नी में एक सीढ़ी नीचे रहना असमान की बात थी, और गुप्तजा पत्नी में बुद्धि में कमजोर नहीं थे। उन्होंने अपने ही एच० डी० का विषय 'लगा में भारतीय' रिया। वह हलक दिल में अपने विषय में नहीं जुट जसा कि आजकल अक्सर देखा जाता है। अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए बर लका भी गया। मैं उनको कुछ परामर्श दिया था। अब उन्हें अपनी धीमिम पग करनी थी, उसमें पहले मुझे भी स्थितानर गुधार करना सह्य था। मैं भी एक परी क्षर था। ३० सितम्बर को वह आय और उनसे विषय का दंगकर कुछ गुप्तान दिये।

अपनी छोट मातन के मित्रनगा में डा० हमबद्र जानी और छारा के बरीर वायू गिवप्रतापत्रा थे। वायू गिवप्रताप अमत्या के जमान में रहते थे, और उन्हें आदातन में बाप रिया था। दंगकर मजदूर हक

गाँव के पास रहनेवाले हाने से वह उनके घनिष्ठ सम्बन्ध में आये थे, और हिंदू मुस्लिम सांस्कृतिक सम्बन्ध में बहुत उदार दृष्टि रखने थे। उदू पढना बिहार में बहुत कम देखा जाता है और शिवप्रताप बाबू को उसका भी परिचय था। उनसे बिहार के बारे में बातें मालूम हुई। वह तर्कण चेहरा मुझ याद आता था जो बुढ़ापे में परिवर्तित हो गया था।

'किल्डेर' बेचन के लिए प्रसंग बहिन बहुत चिंतित थी। जाड़ा सिर पर आ रहा था। जाड़े से बड़ी बहन के लिए बड़ा डर था। श्रीमती मोहिनी जुली ५ अक्टूबर को जाइ तो उनसे भी मैंने बात की। मैं 'किल्डेर' का आनरेरी एजेंट बन गया था। उसमें स्वाध यही था कि कोई अच्छा पडोसी आकर बस जाय। २५ हजार में वह मिल सकता था। जुली दम्पती ने उसे देखा उहे भी पसंद जाया। मैंने कहा, ऊपर नीचे चार परिवारों के लिए जलग-अलग सूट हैं अगर साढे छ हजार रुपया लगान के लिए चार व्यक्ति तयार हो जायें तो इसे मुफ्त ही समझिए। लेकिन साझे में रहना अभी हमारे यहाँ पसंद नहीं किया जाता। साथ में रहने के लिए एक दूसरे के साथ जिस सहिष्णुता का बर्ताव करना चाहिए, उस हमन सीखा नहीं। ९ अक्टूबर को श्रीमती भटनागर ने बातचीत करके २४ हजार पर किल्डेर का लेना तै कर लिया। हमने समझा श्रीमती भटनागर और प्रिंसिपल कालिका प्रसाद अब हमारे पडासी बन जाएँगे लेकिन निश्चित करके भी बात पूरी नहीं हो सकी। उस सौजन्य में प्रायः पूरे समय जुली परिवार यही रहा, और रविवार को उनका दशन जरूर हुआ करता था। माहिनाजी गायरा ही नहीं है बल्कि कहानियाँ भी उहोंने लिखी हैं। उहान अपनी कई कहानियाँ मुनाइ। विचार आधुनिक और बड़े उदार थे। कहानियाँ सभी स्त्रियाँ की समस्याओं का लेकर थी, और उनकी हमारा कागिशी रही कि अपनी हिराइन के ऊपर पाठ की कृपा को आकृष्ट न किया जाए बल्कि आत्मगौरव और आत्मावलम्बन के लिए किये गए प्रयत्न की पाठक दाए दें। जुलीजा इजीनियर हैं। वह रहे थे कि मुझे थोड़ी-सी जमीन मिल जाय तो मैं पाँच-छ हजार में उसी पर एक छोटा-सा साफ मुकुरा बगना सटा कर दूंगा। देवदार की लकड़ियों की अधिकता के साथ बन बगले का मैं बड़ा प्रशंसक हूँ। कलकत्ता रायचिक्क के नगर आश्रम में एक ऐसा ही

बगले में रहा था, जहाँ दबदार को भीनी भीनी सुगंध उसके दरों दीवार से आकर चित्त को प्रसन्न रखती थी।

१५ अक्टूबर का प्रभा वहिन आ गई। सरदार पृथिवीसिंह का हाल-चाल बतलाया। अंधेरी (बम्बई) में एक बालिका विद्यालय में वे अध्यापिका थी। वहाँ से बहुत-सी लड़कियाँ को संरक्षित करने के लिए लाई थी। उनसे मालूम हुआ, कि सरदार चीन गये हुए हैं। उन्हें उसी दिन मसूरी देखकर लौट जाना था। मैं भी उनके साथ लण्डन के आखिरी मकान मर्लिंगार तक गया, फिर बल्बम हाटल तक पहुँचाकर लौट आया।

१७ अक्टूबर को माचवेजी मधु, शरद, दादा और दूना के साथ आए। दादा (असग) का भी अपना नाम का अचिंगा कहता था, अब वह कुछ बालने लगा था। मराठी और हिंदी दोनों पर अधिकार था। अचिंगा कहने को वह आत्मगौरव पर प्रहार मानता था। उसका स्थान लेने के लिए वहिन दूना तैयार था। मधु—माचवेजी का मतीजे—इलाहाबाद युनिवर्सिटी में साइंस के अच्छे विद्यार्थी थे, अब वे दिल्ली की अनुसन्धानशाला में काम कर रहे थे। थोड़ा ही दिना के लिए मसूरा आए थे। हमारे घर में बच्चों से पहल-पहल होने लगी।

प्रमाणन बालन का आरम्भ हमने 'राजस्थानी रनिवास संवरने का निश्चय किया। श्री विश्वगजन अपने प्रकाशन के काम में लग्नरु जा रहे थे उन्हें आठ सौ रुपये का डाफ्ट नगनल हरल्ड प्रेस के लिए दे दिया। दादरररर से अधिका इन् पुस्तक पर लगे। उसके बाद बाल्या से गंगा 'ने अंग्रेजी अनुपाद को भी हमने छपवाया, अतः मतीसरी पुस्तक, 'बहुरंगी मधुपुरी' प्रकाशन हुई। प्रमाणन में मैं सफल नहीं हो सका था क्योंकि उसका लिए पूरा समय नहीं दे सका था। प्रमाणन परने से भी बहुररर विषय का प्रबंध करता था। जब तक एक दर्जन पुस्तकें न हो तब तक अपना सफरा एजट रचना मुचित है। सफरी एजेंट हमने रमा उन्हें कुछ अधिम दिया, और अपनास यह कि डा० सत्यकेतु से भी अपने विश्वास पर अधिम दिलाया। वह गान्धीवर बठ गए।

१६ अक्टूबर के रविवार को माहिनीजी के साथ उनकी सहपाठिनी गत्या गुप्ता आई। उन्होंने तीन चार साल पहल एम० ए० किया था,

स्वास्थ्य खराब था। कहने लगी मुझे कोई काम बतलाइये। वह सहारनपुर के तीनरो गांव की थी। परिवार दाना के समय से आयसमाजी था, जा लोन कला के लिए हानिकारक बात थी। ता भी मैंने कहा जाप कौरवी लाक गीता और लाक कथाजा की जमा कर। यदि हजार जमा करके ला सकें, तो मैं कुछ और बतलाऊंगा। मैं इस तरह का परामर्श कितना का दिया होगा इसलिए मुझे कसे विश्वास हो सरता था मत्याजी उम बात को सीरियसली लेंगी ?

२० अक्टूबर का पेकिंग से डा० जगदीशचंद्र जैन का पत्र आया। व वहा युनिवर्सिटी में हिंदी पढ़ाने गए थे। अभी चीन का मारा ध्यान आदिक समस्याओं का हल करने में लगा था। इस समय सांस्कृतिक तथा बर्नानिज अनुसंधान सम्बन्धी कामों में पूरा ध्यान देने के लिए उसके पास फुसत नहीं थी। उन्होंने लिखा था, यहाँ अभी अनुसंधान का वातावरण नहीं है। वह इस विचार से गए थे कि यदि अनुकूल हा, तो अपने सारे परिवार को वहा बुला लगे साथ में अपनी बटी लडकी का ही ले गए थे।

१७ नवम्बर तक जत्र सहीं ब्रू गई थी। ऋतु परिवर्तन का असर पडा और नाव जुकाम के साथ पबी-सी मालूम हाती थी। जरा भी घाब या फोडे का से दह हा तो तुरंत उसनी तरफ ध्यान देना चाहिए, यह मैं सीख गया था। पेनिसिलिन ली नाक छूने में भी दद होता था और ठुड्डी में भी एक जगह घाब था। पेनिसिलिन और इन्सुलिन लेते थारपाई पर पडे रहना आवश्यक था। २० तारीख से हा कुछ आराम मालूम हात लगा।

ममूरी में श्री भटनागर नायब-तहसीलदार थे। वडे भल आदमी थे। नायब-तहसीलदार भर्ती हुए और अब एकाध साल में नायब-तहसीलदार के पद से ही पंगन लेने वाले थे। उनकी लडकी गकुतला एक स्कूल में पढाती थी। भटनागरजी बाद के लिए कोई काम ढूँढ रहे थे। बुनाप के साथ जीवन की निश्चितता हमारे दंग में बटिवि निमी भी पूजोपादी देग में असम्भव है। पंगन के बाद वह कभी निमी गजेंट के यहाँ नौकरी करत रह, और कभी किसी के प्राइवेट मकटरी बन। चिन्ता के मारी भार को एकाध हा साल बाद मृत्यु ने उतार दिया उनकी पत्नी और पुत्री निरालम्ब हा गई।

एक घनाढ्य तरुण विद्यया के वार में मातूम हुआ, कि वह अपने सजा

तीय एक डाक्टर स ब्याह करना चाहती ह, जिसके बच्चे और दूसरी पत्नी मौजूद हैं। इतना बड़ा कदम तीन-चार महीन के परिचय स ही उहनि उठाने का निश्चय किया था। मुझे इसके लिए बहुत खेद हुआ। लावा की सम्पत्ति का आज वह मालकिन हैं। नवीन सम्बन्ध स्थापित हाते ही उनके दायादा का मौका मिल जाएगा, जो उहनि फूटी आग्य देयना नही चाहत। उनकी घनिष्ठ परिचितता न भी इस अनुभव लिया, और मैं भी जोर देकर उनसे कहा कि उह ममझावें, कम-कम छ महीन के लिए रुक जाएं। एक और उदाहरण हम लागा के सामने था, जबकि एक डाक्टर महिला ने हमसे ऐम ही डाक्टर स ब्याह किया। आज जिन्दगी भर उम पछताना पड़ रहा है। आज क समाज म ता स्त्रियाँ हाथ पैर बाँवकर पुस्पा क सामने पटर दी गई हैं। बड़ी खुशा हुआ, जब मालूम हुआ कि उक्त तरणी न अपन मयाल को बदल लिया। अब अपन समाज की सेवा म लगी हुई हैं।

चालविल हाटल हमारे बगले म डेरा का फ्लोर पर ही है। सनाय और चालविल दाना यहाँ क बहुत बड़े हाटल हैं जिनम मौ-मौ कमरे हैं। चालविल का यह भा अभिमान है कि पचम जाज क दिल्ली म गद्दी पर बैठन क समय उनका राना यहाँ कुछ लिना रही थी। अफ्रेजो क ग्रासनवाल म उस कमर का खाली रखा जाता था, और वहाँ राजा रानी की तस्वीर विराजती थी। ऐसे हाटल म डाकगान का रहना जरूरी था। पहले चालविल का डाकगाना धारण महीन रहता, लेकिन अब कितन ही वर्षों मे उस १ अप्रिल का गालवर ३० अक्टूबर का बदल कर दिया जाता था। मैंने डाकगान के अधिकारिया म लिया पढा की ता ऊपर म जवाब आया, घाट का यदि आप पूरा करने क लिए तैयार हा, ता हम गाल सजत हैं। इसका अब यही था, कि हम गालना नही चाहत। पुस्तका क प्रूफ बराबर आन थे। प्रमाणनातिकभाष्य ' क कई पामों का प्रूफ आया, जिमे मैंने जपन रसादवा गुगहा' क हाका डालन क लिए भेज दिया। वह चालविल क डाकगान के एन्टर-बक्स म डाल आया। प्रग घाट कितन ही लिना तक इन्जिनियर करने रत फिर लिया। गुगाल म पूछन पर मातूम हुआ, कि वह यहाँ के लटर बाग म हाट आया जा १ अप्रिल १९५३ का ही गुगाल। बड़े पास्टमाटर क पाम कहा उहनि ज्ञान्मी नेजरर उमे निरलवाया।

३ दिसम्बर को मालूम हुआ कि प० रामदहीन मिश्र जन्म नहीं रहे ? दिसम्बर को उनका देहांत हा गया। ६८ वर्ष के आयु की मृत्यु अवाल मृत्यु नहीं हाती, किन्तु वह जब भी कायबिरत नहीं हुए थे। सस्कृत के विद्वान् जोर हाई स्कूल के अध्यापक से यह आशा नहीं की जा सकती थी कि वह व्यवसाय की बड़ी कल्पना करेंगे। उन्होंने प्रथम विश्व युद्ध के समय ही पुस्तक लिप्यन और फिर प्रकाशन का काम हाथ में ले लिया। आज वह पटना के सबसे बड़े प्रकाशक हा गए। उन्होंने जपन सस्कृत साहित्य के गम्भीर ज्ञान का लाभ हिन्दी वाला को देने के लिए कई पुस्तकें लिखी जो हमें याद रहेंगी। मेरी भी दा पुस्तकें के एक संस्करण का उन्होंने प्रकाशित किया था। उनसे और उनके सुपुत्र देवकुमार मिश्र से सदा मेरी जात्मीयता रहा। एक एक करके पके आमा को टपकना ही होता है किन्तु छूजे डालिया कुछ समय तक जरूर खटकती हैं।

८ दिसम्बर का फीजी क नानीदास की चिट्ठी आई। वह १ दिसम्बर को डाली हुई थी। उपनिवेगा म वसे भारतीया के घनिष्ठ सम्पर्क म ध्यान की मेरी हमेशा जाकाशा रही जिसकी पूर्ति कभी नहीं हा सकी और अब तो शायद उसकी तमादी भी रूग गई है। तो भी जब कभी कोई ऐसा जब सर मिलता है तो मैं सम्पर्क स्थापित करन स वाज नहीं जाता। उनसे पास मैंन कुछ अपनी किताबें भजी और उन्होंने भी वहाँ क कुछ प्रकाशन भेज। उनसे मालूम होता था कि फीजी मे हमारे लागे न अपना विशेष स्थान बना लिया है। वहाँ आधे के करीब मख्या उनकी है। कुली बनकर गए हमारे भाजपुरी और अवधी क्षेत्र क नाइ अपनी तीसरी पीढी म सम्य और मुमस्कृत बन दीग रहे हैं। उनके साथ अधिक जीवित सम्प्रदाय स्थापित करन की जरूरत है। वसे भारत क स्वतंत्र होने के बाद हमारी सरकार के प्रतिनिधि इस दिगा मे कुछ काम कर रहे हैं। अंग्रेज उपनिवेगना ने अपन आरम्भिक जीवन पर बहुत सुंदर उपयाम और कहानिया लिखी हमारे लाग भी बसा क्या नहीं करते ? डा० बाबूलाल गुप्ता १ लवा म भारतीया क वार म अपना महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखा। मैंन उह सुशावर दिया था, कि आप डो० लिट० क लिए 'उपनिवेगा म भारतीय' ल और द्रम पर एक बडा ग्रंथ लिखें। वसे हमारे लाग का ध्यान इस तरफ जाएगा जरूर

लेकिन उम जल्दी जाना चाहिए, ताकि बहुत-सी अभी भी उपलब्ध सामग्री नष्ट न हो जाए ।

१० दिसम्बर का सीवान के वातु बजनाथप्रसाद किमी विवाह के सम्बन्ध में देहरादून आकर हमारे पास भी आए । ७० वर्ष के हो गए थे, लेकिन मुझे ता वह वस ही मालूम हात थे जैसा बीस वर्ष पहले दया था । आयसमाज के विहार में वह अग्रदूत थे और सीवान (छपरा) में उन्होंने ६० ए० बी० हाई स्कूल खाल कर उसे डिप्री वाजेज तक पहुँचा दिया उनका जीवन तपोमय है । सभी उनका सम्मान करने हैं । पञ्जाब से प्रौढ आयसमाजिया का दागी रखन की बीमारी लगी, वह विहार में बजनाथवातु तक पहुँच गई । दाढ़ी पूरी सफेद है । दुबल वह हमेशा ही रह, लेकिन स्वास्थ्य की गिकायत कभी नहीं हुई । दर तक छपरा और सीवान के पार में बात हाती रहा । मालूम हुआ, दो साल से छपरा जिले में यह दूसरा डिप्री कालेज चल रहा है । तीन सौ स ऊपर लटक हैं, अभी भी दो हजार रुपया मामिक का घाटा लग रहा है । बनला रह थ कि आर्थिक कठिनाइयाँ भयंकर रूप में लागा को पीडित कर रही हैं, छून और डकती आम हा गई है, जिनके कारण सम्पन्न लग गाँवा का छोड़कर गहरा में आ रह हैं ।

लाल भापाआ और लाल-माहित्य की आर विनोय रजि के कारण वहाँ भी इस विषय में यदि काइ काम हाता हा, ता मैं उसमें प्रसन्न ही नहीं हाता बल्कि भरमक प्रोत्साहन और सहायता भी देना चाहता हूँ । हिंदी-शेखर की सभी लोक भापाआ के प्रेमी इस जानत हैं, और वह बराबर अपनी कृतियाँ और कठिनाइयाँ का मेरे पास भेजन हैं । श्री रामनारायण उपाध्याय न नामाड़ी लाल गाता का एक सग्रह १७ दिसम्बर का मेरे पास भेजा । अभी अच्छे प्रकाशक एसी कृतियाँ का छापन के लिए तैयार नहीं हैं इसलिए अच्छी छपाइ न हात का गिकायत नहीं करनी चाहिए । उपाध्यायजी के सांगीत गीत बहुत सुन्दर थे । मैं उन्हें पढ गया । दया माल (पति प्रियतम) बलाबनी (दुलहा-दुल्हन) आदि गितन हा उमर का बोरवी हंगियानी और मारवाडी न मिला हैं । जिन तरह पचागी या मध्यमगीय भापा ननामाल की तराइ में लकर मध्यम में मराठी जोर छत्तामगढ़ी की मामा हा ए न गढ़, बने ही उमरी दक्षिण पडोसी बोरवी स्पानाय परिवर्तन

क साथ राजस्थानी मालवी हाते नीमाडी तक चली गई। वस्तुतः नीमाजी और मालवी एक ही भाषा है। इसका नवत इस सग्रह के निम्न वाक्यांश मालूम होता है

वनी म्हारा देम मालवा, मुलुक नेमाड गावटा को छे रिनवास। कौग्यो है हरियानी म से भारवाडी मालवी निमाणी मे छे हो गया है।

१८ दिसम्बर को नागरी प्रचारिणी सभा के मंत्री ने सूचित किया कि सभाने मुझे 'वाचस्पत्यसदस्य' निर्वाचित किया। लिखा गिरोघाय है।"

कमला ने इस साल साहित्यरत्न की परीक्षा का फाम भरा था। परीक्षा देने के लिए २२ दिसम्बर को वह दहरादून गई। और वहाँ से ३१ दिसम्बर का लौटी। वह हमगा ही परीक्षा देने के बाद निराशा प्रकट करती थी पर लिखने और ममज्ञान की शक्ति उनम है। परीक्षक अपने दूमरे हजार परीक्षार्थिया के स्तर को देखकर पास फेल करता है, इसलिए मुझे पास हान म सदेह नही था।

२६ दिसम्बर को छाती म हल्का हल्का दर्द जब-तब मालूम होने लगा। सर्दी के कारण हागा। साचन लगा, यदि लामडी की छाल का गम जाकेट इस्तेमाल करें तो गायद दर्द कम हा। दो तीन दिन तक दर्द रहा, उसके बाद बंद हो गया। आन्तरी को सिर पर रहने समय ही रोग याद आता है।

राजस्थान म राजपूत जगली सूअर के भास को बहुत पसंद करत है। हमारे पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार म तो इसे बसे ही अभिष्य समझते हैं जैसे गाँव के सूअर को। राजस्थान म राजा और ठाकुर जगली सूअर का गिकार दूमरे को करत नही देत थे। मरिण उनक लिए वह बहुत मुश्रभ थे। ठाकुरानी गुलाबकुमारी ने २९ दिसम्बर को आठ म्म सर सूअर के साट भेजे। उनक कहने मे मालूम हाता था कि वह बनस्तर का बनस्तर भेजा जा सकता है, लेकिन उहाने यह ख्याल नही किया था कि रियामता और जानीरा के उठने के बाद लोग जगली सूअर के गिकार म बाव नही आएँगे। मेता के चर जान पर भी पहले डण्डे के भय म हाथ नही उठाते थे। मचमुच ही एक दा साल बाद सूअर का उच्छ्रेण सा हा गया और 'गूकर मादव मिलना मुकिल हा गया।

साल का अन्तिम दिन ३१ दिसम्बर था। कमला दहरादून से भागती

हुई आई। जाज माल का लखा जाया किया। 'याना के पन्न' और "रुम म पच्चोम माय छप कर निकल गय। 'राजम्यानी रनिवास" छप चुकी है, प्रेम म बाहर आन की दर है। इस माल क ग्रथ लिखे हैं—(१) "मध्य गसिया का इतिहास (२)," (२) 'गडवाल (३) "नेपाल'। डेढ़ हजार पष्ठ लिखना अमतापजनक नहीं कहा कहा जा सकता।

'नेपाल' म प्राप्य मायग्री का इम्नमाल कर चुका था, और चाहता था नेपाल जान म पहल उस पुस्तकाकार बना लें। इसम भी सफलता हुई थी।

इस माक आदिक कठिनाइया के सामना करन की सम्भावना थी, लेकिन मय निलाकर भी हजार स कुछ ऊपर आमदनी हुई। जमा करना ता मैन साया नहीं है। प्रनागत हाथ म लन स खच बढ गया।

दाम्पत्य जीवन क वार म आचाय मावयन (११०० ई०) न कितना सुदर लिखा है—

'निष्कारणापराध निष्कारणकलहरापपरितापम्।

मामाचमरणजीवनमुग्रदुःख जयति दाम्पत्यम्।'

(जिमम अपारण अपराध अकारण कलह राप परिताप हैं।

एक साथ मरण जीवन, मुग्र-दुःख बाग दाम्पत्य (जीवन) जिदाबाद)

पमला और भर स्वमान म अन्तर है वनि विराध भी है। जहाँ बुद्धि के पीछे जाँव मूँद कर जान क लिए तैयार हैं, वहाँ कमला उमका घना बनाता है। इस पर मुझे आश्चय हाता है। उह मुन पर आश्चय हाता है। वि में क्या नहीं समथ पाता। केकिन आचाय के कहन क अनुमार राप ने परिताप म बदलन म दर नहीं हाती।

आचाय न एर जोर भी बात बडगाइ है, जा कनक समय म उचिन माना जानो थी, जब कि म्थी का समानता का राई विगप न बाध था, न समान म उाका स्थान था—

'गृहिणीशुणेषु गणिना विनय मवा विधेयानि गुता।

मान प्रभुता सम्य विभूषण कामनपतानाम्।'

(गृहिणी क गुता म नम्रता मवा और आताकारिता य गुण फिन गए है। मुनपनाया क मान, प्रभुता और सौम्य का मूषण कहा गया है।)

नेपाल मे

१९५३ का पहला दिन आया। सवेरे देखा आकाश घन बादला से ढका हुआ है। दोपहर तक वर्षा हानी रही और तापमान नीचे गिरता गया। फिर बजरी पड़ी और अतः हिम ने गिर कर सारे भूभाग का ढांक दिया। सर्दी बल से ही बहुत थी और कमरे का आग जलाकर गरम किया गया था। अगले दिन और भी अधिक बर्फ दिखाई पड़ी। पिछले दो सालों में इतनी बर्फ नहीं पड़ी थी। दा-तीन इंच से कम मोटी क्या होगी? सवेरे बर्फ का बड़ा सुन्दर दृश्य था। पत्ते पत्ते और बाड़ की लौहजालियाँ रुपहली हो गई थी। जब तक यह दृश्य मसूरी से बाहर से कोई देखने के लिए आए तब तक गायब हो जाता है। क्योंकि पतली बर्फ ७-८ बजे के बाद पत्तों का नहीं मढ़े रह सकती। दूर से घूना देखने में सामान्यतः सटे मालूम होता है लेकिन ऐसे समय बर्फ पीछे आकर हरेक वृक्ष का अलग-अलग कर देती है। मसूरी में रहने का हिमस्नान एक आनन्द है।

४ जनवरी को हमने सवेरे मसूरी से तेहरादून जा चुक्की के यहाँ भोजन किया। यहाँ सर्दी कम थी। फाटो के लिए कुछ फिल्म खरीद और एनाथ और चीनें। रात का ७ बजे लखनऊ की रेल पकड़ी। डब्बे में अक्के सवारी करने वाले के छून हान की खबर जगदारी में निकली थी। कमला ने आपत्त किया कि पहले दर्जे में न चले। हमारे दर्जे में रात को सोना मिले या न मिल यह भी भय था। पर हम सान के लिए जगह मिल गई। अगले दिन सवेरे पौन ६ बजे गाड़ी लखनऊ स्टेशन पहुँची। उतर कर श्रीमती

प्रकाशवतीजी के यहा जा चाय पीकर बुद्ध विहार गए। अकस्मात स्मृति सायाल से मुलाकात हा गई। आजकल वह ननीताल मे पढ रही थी, और अभी घर आई थी। भाजन के बाद नेगनल हरल्ड प्रेम म "वाल्गा टु गमा" की दो हजार प्रतियाँ छापने के लिए वागज का दाम दे दिया। श्री श्याम-सुन्दर श्रीवास्तव ने प्रेम दिखलाया। छपाई की इतनी अपटू-डेट मसीन गायद ही किमी प्रेस म हागी। आश्चय हाता था, फिर यह प्रेस क्या लस्टम पस्टम चल रहा है।

पटना—रात का ही हमन गाडी पकडी और ६ जनवरी के ७ बजे पटना पहुँच गए। वीरेन्द्रजी, अद्भुतजी स्टेशन ही पर मित्र गए। ठहरने का प्रवच वीरेन्द्रजी के यहाँ हुआ था। पत्रा मे निरल जान के कारण कितने ही इष्ट मित्र आए, लेकिन व्याख्यान देने का नेपाल से लौटन व बाद ही निश्चय किया था। नेपाल विमान से जाना था, जो रोज रोज नही जाता था, हम वह गुरवार का ही मित्रने वाला था।

७ तारीख का भाजन अद्भुत गिबचन्दजी के यहा हुआ। गिबचन्दजी को बचपन ही से मैं जानता हूँ। उनके पिता आचाय कपिलदेव गर्मा का असह्याग व समय म ही मेरा घनिष्ट परिचय रहा है। उनके घर म स्त्रियाँ तक ही नही, बल्कि काम करनेवाली नौकरानी भी सस्कृत बोलती। घर म सस्कृत बालने का प्रण था। एक तरफ वह 'लौट चलो गुहा मानव की ओर' मनोवृत्ति का परिचय दत, दूसरी ओर ब्राह्मण-ब्राह्मणी अपने हाथ से अपन घर व पाताने को साफ करते। गिबचन्दजी न सरजूपारिया से बाहर बगाली लडकी से ब्याह किया, लेकिन इसको कपिलदेवजी न बुरा नही माना। गिबचन्दजी घासपार हैं, यद्यपि उनका यहाँ मकडा पीडिया से माँस खाया जाना रहा। लेकिन पत्नी माँसपार कुल म पैदा हुई। उन दिन मछली व कई प्रकार के व्यजन तपार त्रिय गय थे। नलिनजा और दूमर साहित्यिपन भा गामिल हा गए थ। वह छाटा माटा भोज बन गया था।

भाजन व बाद म्युजियम गया। क्यूरेटर गैर साह्य मिला। अपन लाग सग्रह का दग्गा और नद चीजें जा इधर सगुहीन हूद, उन्हें भी। फिर नीच जायायाल प्रतिष्ठान मे डा० अलवर के पाा गया। डा० अलवर विद्वान् भी ओर बडे पुस्त भी हैं। सचमुच ही जा आदमी बवल वेतन के लिए काम

करता है उममे चुस्ती कहीं से आ सकती है ? डा० अल्तेकर बराबर अनुसंधान म लगे रहते है । भारतीय सिक्को के बारे मे उनसे बडा ममन जाज कोई नही है । तिब्बत से तालपत्रा क फाटो १६ १७ वर्षों से यहा आकर पडे हुए थे अब वह उनक प्रकाशित करान क प्रयत्न म है । मरे द्वारा सम्पादित प्रमाणवार्तिकभाष्य का ता बहुत सा भाग छप भी चुका है । चाय पीने क लिए वह अपन घर पर ले गए । अल्तेकर साहब का इस बात का अपसोस था, कि बिहार म सस्कृत की आर युनिवर्सिटी क विद्यार्थी ध्यान नही दे रहे हैं । बिहार के पण्डिता की महिमा सारे भारत मे मगहूर है—प्राचीन काल म ही नही अर्वाचीन काल म भी । पिछ ५ पचास वर्षों म यहाँ के हर जिले म सकडा सस्कृत क विद्यालय खाल गए । मिथिला मे तो गामद ही कोई ब्राह्मण ग्राम होगा, जिसम सस्कृत पाठशाला न हो । अब हिन्दी द्वारा उच्च शिक्षा का द्वार खुल जान जोर कितने ही सुभीता के कारण एक एक जिले मे दा-दो तीन तीन डिग्री कालजो क हान से कालेजा की पढाई की ओर उन विद्यार्थियो और उनक अभिभावका का ध्यान गया है जो सस्कृत विद्यालयों तक ही अपनी शिक्षा को सीमित रखत थे । इसके कारण सस्कृत के परीक्षार्थिया की कमी हुई है । सचमुच ही यह बडी समस्या हमारे सामने है कि पुरानी परिपाटी के सस्कृत के गभीर विद्वाना की परम्परा को कैसे उच्छि न हान स बचाया जाए ।

८ जनवरी को चाय पीकर हवाई अड्डे पर पहुच । काठमाण्डू स खबर आई, कि अभी वहाँ क अड्डे पर कुहरा है । जब तक वहाँ से कुहरा हट न जाए तब तक विमान कम उडता ? कुछ दर इतजार करना पडा । फिर विमान उडा । गंगा का पार करत समय ही हिमालय क गिखर दिखाई देने लग । फिर छतरा क भीतर से हात गडक पार हम चम्पारन के ऊपर पहुँचे । चौरस भूमि को पार करके नीचे तराई क जगल और फिर चुरिया (सिवालिक पर्वत श्रेणी) आ गई । जगल पिछले सौ साला म बहुत कट गया है, लेकिन अब भी उसक अवशिष्ट भाग को देखने पर कजली वन की कहावत याद आती । विमान नीचे के स्थाना का देखकर ही आग बढता है । नेपाल उपत्यका का पानी बागमती बहा ले जाती है थोडी दर मे विमान उसके ऊपर स उडने लगा । मरी नजर हिमगिखरा पर थी । दाहिनी आर निरभ्र

आकाश म उनकी निमल छटा आँवा के सामने थी, बाइ आर कुछ धुंध थी । उत्तर की आर पूव पश्चिम तक हिमश्रेणियाँ चली गई थी इतक ही परले पार तिबन है । दक्षिण जातर एक हिमश्रेणी दक्षिण की आर भुड जानी है, जिसमे ही धौलागिरि का उच्च शिखर है ।

नेपाल—गिरि मधला को लाभ कर अज विमान उपयुक्त के ऊपर उड रहा था । यहाँ दृश्य अपना गाम आकषण रखता था । भाग्याउ, पाटन काठमाण्डू व नगर अनेक गाँव और बीच-बीच मे बागमती तथा उमकी महायक नदियों की घाराएँ दीख पड रही थी । अड्डे पर पहुचने म दर तही लगी । पटना से चलकर १५ मिनट बाद हम नेपाल की धरती पर उतर गए । अड्डे पर ही थी जनकलाल शर्मा, श्री घमरतन शर्मा उनके चचा श्री मानदास और दूसरे मित्र मित्रे । नेपाल मे प्रवेश करना पहले बहुत मुदिकल बात थी । सिफ शिखरात्रि के दिन एक हफने के लिए छूट मिलती, नही तो राणागाह्री ने ऐसी बडाई कर रखी थी कि कोई भारतीय घुम नही सकता था । हाँ, अंग्रेजा के लिए कोई उतनी हवावट नही थी, सिफ खबर दे देना काफी समझा जाता था । राणागाह्री के उठन का एक लाभ तो यही है, कि आप अपन जिले के किसी मजिस्ट्रेट की दस्तखत मुहर के साथ अपना फोटो बनवा लें, और वेवटक साल के किसी समय नेपाल चले जाएँ । हमारे सामान का बस्टम (जवात) बाला ने दवा, और छुट्टा मिल गई । बारपर पहुच जनकलालश्री के घर पर गये । वहाँ भाजन का इन्तिजाम था । ठहरने के लिए श्री विद्वदर प्रसाद बोइराला ने पुतली सडक पर अवस्थित आपन बगल का द दिया था । बँगला साफ-सुपका था, किन्तु हम तो यहाँ नेपाल-सबधी मामत्री जमा करन के लिए आए थे, जिसक लिए लोगो से अधिक मिलन जुलन का आवश्यकता थी । यह बँगला मुख्य शहर से दूर था ।

गाम को टहलन के त्तिये निरले । मानलामत्री के यहाँ गये, फिर भाजू रतन गाहू व यहाँ । उगी दिन जगतरतन साहू म नी मिल आए ।

६ जनवरी का शुक्रवार था । आकाश बाण्णा से ढँका हुआ था । आधी रात म सर्ती बदनो और सवेरे अधिक हा जानी थी । मसूरी म इसम उल्टा है गाम का यत्र कर आधी रात व बाद वह कम हा जानी है । मसूरी म हपारा पर मात्रे छ हजार फुट पर था और धर नगर चार हजार फुट पर

है। तो भी बादल वर्षा के कारण सर्दी मसूरी जितनी मालूम हाती थी।

प्रफू साथ ले आए थे। उस भी लौटाना था। इसके लिए भारतीय दूतावास के डाकखाने में गए जो ठहरने के स्थान से काफी दूर था। राणाशाही के जमाने में नेपाल उपत्यका की दुर्लभ समतल भूमि का एक बड़ा भाग राणाओं के महल और बाग बगीचे के रूप में परिणत हो गया। निवास के लिए जेल की तरह ऊँची चहारदीवारी का घिरावा आवश्यक था, इसलिए उनके महलों से नगर के सौंदर्य को बर्बाद ही लगा। नारायणहिटी महल एक शताब्दी तक शीथिल पड़ा था। इस बीच पृथ्वीनारायण की सन्तान केवल गुडिया राजा बने रहे। जब शक्ति राजा त्रिभुवन के हाथ में थी, इसलिए वहाँ बहुत चहल पहल दिखाई देती थी। नेपाल में मोटर छाड़ और कोई सवारी नहीं है। सड़कों भी इतनी खराब हैं, कि घोड़े के तागे या साइकल रिक्शे का चलना मुश्किल है। फिर राणाशाही के समय की परम्परा है, कि सामान्य जन ग्रासक जाति के सामने सवारी पर न निकलें। जनकलालजी हमारे पथ प्रदर्शक थे। धूमते घामत माहिला गुरु श्री हेमराज गर्मा के यहाँ पहुँचे। मैं कम्युनिस्ट विचार रखता हूँ, यह उनको मालूम था और मुझे भी मालूम था, कि वह परम निरकुश सामन्तवाद के समर्थक हैं। ताँ भी संस्कृत, भारतीय संस्कृति तत्सम्बन्धी अनुसंधान ऐसा चीजें या जिनके कारण हम में १६ वर्ष से घनिष्टता स्थापित हो गई। सबसे पिछली बार जब मिले थे ताँ माहिला गुरु ग्रासन के एक सबल स्तम्भ और प्रभावशाली राजगुरु थे। अब राणा चले गए इसलिए वह पानी के बाहर मछली जस थे। आयु का उनका ऊपर पूरा प्रभाव था। पहले ही की तरह खुले दिल से बड़े प्रेम से मिले। दो-तीन घंटा साहित्य और अनुसंधान की चर्चा चलती रहा।

धमरत्नजा आकर अपने घर ले गए, जा गृह के भीतर था। यहाँ हम मिलने-जुलने में अधिक अनुकूलता थी, इसलिए अगले दिन से हम यहीं चले आए। उनके पतक घर का सरदार न राजनीतिक अपराध के कारण जन्म कर लिया था जो अभी तक नहीं लौटा था। उन्होंने किसी का अधपरिचयन से निमजिला बहुत बड़ा घर खराद लिया था, जिससे वह संतुष्ट नहीं थे और उसी हानि में अपने लिए बगला बनवा रहे थे। उसी दिन साहू धम

मान के सहकारी ८३ वष के बूढ़े मिले। आँखा से बम सूझता था। सड़क पर चलन बकन मालूम हाता था कि बवाल चल रहा है। पुरान युग के अवगप थे। उनसे कितनी ही बातें मालूम हो सकती थी, लेकिन इस उमर म स्मृति भी ता घाला देती है। उस दिन नाटनकार थी बालकृष्ण सम और दूमर कितन ही भद्रजन मिलने आए।

१० जनवरी का मैं और बमला, जनकलालजी और दूमरा के साथ देवपाठन गए। यह उस मुहल्ले का नाम है, जिसमे भारतविख्यात पशुपति का मंदिर है। यद्यपि बस्ती सटी चली गई है, लेकिन किसी समय यह काठमाण्डू स अलग नगर था। यही प्राचानकाल म नेपाल की राजधानी रहा। १४वीं सदी के मध्य म बगाल के मुसलमान शाह ने तिरहुत की राजधानी समरीनगड का ध्वस्त करके नेपाल पर चढ़ाई का थी, जिसे छिपाने की बराबर कागिंग का जाती रही, यह हम बतला आए हैं। पशुपति मुख लिंग के रूप म है, अर्थात् वह उस काल से पूज्य रहने आए हैं, जब कि पाशुपति धर्म उत्तरी भारत म सक्त्र फैला हुआ था। मुस्लिम आक्रमण के समय पशुपति मंदिर का लूटा गया, मूर्ति का गण्डित किया गया। यह खडित मूर्ति अब नौ मडक पर एक जगह पड़ी हुई थी। पहल यह पास के कलास 'ध्वमावगेष' पर थी, जिस पशुपति के पुजारी न उठवाकर यहाँ सडक के किनारे रखवा लिया। मुकलिंग गिरनालिंग यहाँ काफी हैं। सारा देवपाठन मुहल्ला अपन घरातल और अन्तस्तल मे पिछने दा हजार वर्षों की ऐतिहासिक सामग्री के आधार पर हाता है। किसी समय इसका भी भाग्य चुलगा।

जाज महानवि देवपाटा के दान हुए। वह बहुत बाता म निराला से मिलन जुगते हैं मद्यपि इतन नहीं कि उन्हें अप्रवृत्तिस्थ कहा जा सक। निरालाजी आजकल रितन हो दिना से अब अंग्रेजो म बान बरत हैं। देवपाटाजी अपना एक बडा नाटक अंग्रेजी पद्य म लिख रह थे, जिसम कितन हा भाग का उन्होंने मुाया। उनका अंग्रेजी पर अपिचार है। पर अपनी माया छोड कर अंग्रेजी म बखिना करन से क्या मतलब, जब कि यह निश्चित है कि अंग्रेज अमरिफन नहीं है उनको वृत्तिया की पूछ इंग्लण्ड-अमेरिका मे हाता मुदिना है। रक्ति धुन है। हाँ उन्होंने नेपाली भाषा के उपयोग न

करने की कसम नहीं खाई है, और वह उसमें बराबर लिखते रहते हैं। गद्य पद्य नाटक निबंध, खण्डकाव्य महाकाव्य सबमें उनकी लेखनी निरबाध माधिकार चलती है। मस्तमौला है। कागजों पर कविता उतार रहे हैं, फिर कोई लडका खेलन आया, तो कागज को उसे द दिया या स्वयं ही पाड़कर फेंक दिया। फिर दुबारा लिखने हैं। उनकी कितनी ही कविताएँ नष्ट हो चुकी हैं। मैंने तरुण मित्रों से कहा—इनकी रक्षा की कोशिश आप लोगों को करनी चाहिए।

फिर बालचन्द्र शर्मा से मिलते और कुछ जगहाँ में गए। भोजन वहाँ नेपाल की एक महिला नेता श्रीमती प्रभादेवी के यहाँ हुआ। नेपाली भोजन में मुझे एक विचित्र रस मिलता है। एक बार किसी भोजन के साथ आदमी का जब पक्षपात हो जाता है तो वह कम हाने का नाम नहीं रूता निरामिष भोजन भी मधुर मालूम होता है। दाल भात और कितनी ही तरह की सब्जियाँ सभी नेपाली महिला के हाथ में पहुँचकर अमररस में डूब जाती हैं। राणाशाही के खिलाफ सघप करने वाला मैंने नेपाल उपस्थित सभी महिलाएँ भी शामिल हुई उठाने तरह तरह से अपमान और कष्ट सहे। प्रभादेवी उनमें से एक थीं।

सरकार ने किसानों की अवस्था बेहतर बनाने के लिए भूमि सुधार कमीशन बनाया। मेरे स्वागत में उसकी तरफ से हिमालय होटल में चाय पार्टी का प्रबंध था। ३ बजे हम वहाँ पहुँचे। नगरी के २५ ३० गणमाय पुरुष मौजूद थे। वह भूमि सुधार के बारे में मरे विचारों को जानना चाहत थे, जिसमें मैं बतलाया। वहाँ से उठते उठते अधेरा हो गया। हमारा सामान पहले यमिजी के घर पर चला गया था इसलिए हम वहाँ चले गए। रात के १० बजे तक गाँठी चलती रही। नेपाल में मेरी पुस्तकें पनी जाती हैं। मैं अंतरनाक आल्मी था तब भी छिप कर वहाँ के जो तरुण मरे पास पहुँचत थे अब वह प्रौढ हो चुके थे।

नेपाल राणाशाही के जूय से मुक्त ता हुआ लेकिन इस वक्त एक विचित्र परिस्थिति में था। राणाओं और उनके जस स्वायत्तता की रक्षा के लिए गारखा दल कायम हुआ जिसके पास अब भी बहुत पैसा और पुराने लंगू भंगू हैं। राणा और धिराज के आपस में व्याह-सम्बन्ध हाने रहे हैं जिनके

कारण धिगङ्ग कभी पसन्द नहीं कर सकते, कि राणा कौड़ी के तीन हो जायें। बाकी कई दल हैं, जो सभी राजगिवा केवल अपने हाथ में रखना चाहते हैं। बिद्वेश्वरप्रसाद कोइराला एक समय सबसे गतिगाली मंत्री रहे। विराज स छटपट हो गई। उन्हें हटाकर उनका बड़ भाई मातृकाप्रसाद कोइराला का आग बनाया। दोनों भाइयों का बमनम्य इतना गहरा है कि वह कभी मिल सकेंगे इसमें सन्देह है। प्रजा परिषद्, राष्ट्रीय कांग्रेस आदि कुछ और पार्टियाँ भी इसी तरह अलग-अलग दफती अलग-अलग राग वाली हैं। कम्युनिस्ट पार्टी गैरकानूनी घोषित है, किंतु लोगों का उसकी आर अधिक झुकाव है। यह ता इसी में मालूम होगा, कि कुछ दिनों बाद उपत्यका की नगरपालिका व चुनाव में उही का अधिक वोट मिले। नेपाल की उत्तरी सीमा पर तिब्बत में कम्युनिस्ट जा नवराष्ट्र की रचना कर रहे हैं, उसका प्रभाव नेपाल पर पड़ेगा, इस बहन की आवश्यकता नहीं। यह भी ठीक है कि भारतीय सरकार चाहें कम्युनिस्ट चीन व साथ कितना भी मदभाव रखती हों नहीं चाहेंगी कि लोग उससे प्रेरणा लें। राजा त्रिभुवन आर पीली में नजरबंद बंदी रहे। उन्होंने आज की दुनिया देखी नहीं, इस लिए भविष्य का पय उनका लिए माफ नहीं है। बंधे हुए हाथों का खुला देख कर उन्हें चारा तरफ मारना यही काम है।

भादगाउँ में—१२ जनवरी को जीप से बचाया तब हम जाना था लेकिन साढ़े १ बजे तब जब वह नहीं आई, ता टुडोसेल के अड्डे में आन-जान व १४ रुपये में एक टैक्सी ली। कमला, मर गया पाँच और मित्र साथ थे। रास्ते में टेमी गाँव मिला, जो अपने महनती किमाना व लिए प्रसिद्ध है। आजकल का कृषि बिलान कूह क्या मियगन सकता है? यह अगु-अगु जमान को बेकार नहीं रहने देना। बाठमाष्ट्र साग-भ्राजा बचने जान हैं। वहाँ बनी बूना-बचट या पापाना पटा दखन हैं, ता उसे उठा ले जान हैं। नेवार किमान का मेती करत समय पात्रान में बिल्कुल परहज नहीं। इस बात में यह चीनी और जापाना किमान जम हैं।

साँ १० बजे हम भांगगाउँ पहुँच। बाहर के पकर पोतर पर माटर मशीन कर दो। पांगरे का तल आसपास में ऊँचा है उसमें बापी पानी है लेकिन गात्र रखने की बागिन नहीं की गई है। उनका किनारे बोमिया तिब्बती

स्त्री पुरुष डेरा डाले बठे हुए थे। जाड़े के दिनों में वह चीजा के क्रय विक्रय के लिए नेपाल आया करते हैं। वह इतना ही जानते थे कि ल्हासा में मर्पो (लाल) आ गया है। दो वर्ष हा गए, अब भी उहाने कम्युनिस्टा के किसी काम को अपनी आखा नहीं देखा।

भादगाउ उपत्यका तीन महानगरों में सबसे ऊँचा है, लेकिन पिछले काल में यही प्रधान राजधानी रहा। नायदेव की सत्ता में जब मैदानी राज्य और राजधानी सेमरौनगढ़ की मुसलमानों के हाथ में चले जाने पर भागने के लिए मजबूर हुईं तो वह पत्थर यही आई फिर राजा ने अपने तीन लड़कों में राज्य को बांट दिया जिसके कारण कान्तिपुर (काठमांडू) पाटन और भादगाउ तीन राजधानियाँ हो गईं। तीनों ही नगरों के निवासी नेवार आपणजीवी हैं। आजकल यात्रायत्र की सुविधा के कारण अधिकतर लोग काठमांडू से चीजें खरीदना चाहते हैं इसलिए व्यापार व्यवसाय में उसी की प्रधानता है। राजधानी के पुराने अवशेषों का देखन हम गहर में गए। पहल ही सँ लोगों का पता था। एक जगह भोजन का प्रबंध हुआ। भादगाऊँ अपने जुजुघौ (राजदहो) के लिए मगहूर है। छिठले चौड़े बरतन में दही जमाई जाती है, जो थक्का बन जाती है। कुछ मीठा भी मिला देते हैं। काठमांडू वाले भी जुजुघौ बनाने की कागिग करते हैं, लेकिन उसमें भादगाऊँ जसा स्वाद नहीं होता। नेपाल उपत्यका का प्रधान भाजन भात है। हमारे लिए भात दही के साथ भैंस का मास भी था। भैंस का मास दो-तीन जातियाँ को छाड़ यहाँ के सभी लोग खाते हैं, और वह बाजार में उसी तरह खुश बिकता है जैसे बकर का मांस। नायद अधिक अच्छी तरह से गला कर बनाया गया जाता तो अच्छा लगता। वह चिमटा बन्दूत था। पर जुजुघौ के सामने उसकी क्या पूछ होता? जुजुघौ जितना चाह उतना खा सकते।

भाजनोपरांत यहाँ का राजमहल देखन गए। सुवर्णद्वार यहाँ की अद्भुत वृत्ति है। पिछले भूमि ने पुरानी निगानियाँ का नहीं मिलाया। अब भी राजभासाद तलेजु मंदिर आदि यथापूज्य थे। कितना की दीवारा में चित्र थे।

लोगों के सामने व्याख्यान नहीं दिया, पर खान के समय गाँटी हा

गर् । सब देगने के बाद ४ बजे हम माटर के अड्डे पर चके आए । टैंकसी इस बीच म एक से अधिक बार काठमण्डू हो आई थी । सवा ४ बजे हम उस पर बैठकर ५ बजे अपने दरवाजे पर उतर गए ।

श्री बालचन्द्र शर्मा ने नेपाली म नेपाल का सबसे अच्छा इतिहास लिखा है जिनम मैं भो काफी लग्न उठाया था । उनसे पूर्वाह्न म भी बातचीत हुई । अगले दिन और शाम का तो ५ बजे से ६ बजे तक उनसे ही सारमग होता रहा । मैं अपने लिखे इतिहास के कुछ ही भाग को सुनाया ।

धिराज न काग्रेसी मत्रिमण्डल को ताडकर सलाहकार का शामन स्थापित किया था । जिनम ले दकर एक ही कसरतमगेर का योग्य और वायव्यतर कहा जा सकता था । एक मंत्री को शराब पीकर मस्त रहना और २ बजे दिन मे पहले साकर उठन से फुमत नही थी । उनकी अयोग्यता और दु ग्रासन क फल इनके अधिष्ठाना का भोगना पडेगा, इसम क्या साह है ?

१४ जनवरी की शाम का हमारे रहने क स्थान मे थाडी दूर पर साहित्यकारा को गाष्ठी हुई, जिसम श्री बाबूराम आचाय, लक्ष्मीप्रसाद देवकाटा, बालकृष्ण सम, बालचन्द्र शर्मा भीमनिधि निवारण, मिद्धिचरण, कानरनाथ व्यधित, महानन्द सापकाटा, चित्रधर उपासक आदि सभी महान् साहित्यकार उपस्थित थे । गाष्ठी तीन घण्ट तक रही । कविषा ने कविताएँ सुनाइ, समजी न अपने नाटक का कुछ भाग बडे नाटकीय ढंग स दाखराया । मैंने ना अन्त म कुछ कहा । गाष्ठी म मुझे मालूम ही नही हो रहा था कि मैं शिमा पराई भाषा के साहित्यिका म बठा हूँ । सचमुच ही भाषा और साहित्य क तौर पर नेपाली हमारे हिन्दी-भोज की अनेक भाषाआ म एक है । चम्पा तक फैली हिमालय को भाषाआ से उमना घनिष्ट सम्बन्ध है । इस लए गाष्ठी म नेपाली साहित्य की प्रगति का पता लग गया । उम शिन शायर का भोजन कम्पौडर चन्द्रभानजी के यहाँ हुआ, जिसम मूअर का स्वाणिष्ट भाजन भी सम्मिलित था । चन्द्रभानजी का राष्ट्रीय आन्दोलन के समय बहुत कष्ट उठाना पडा था ।

अबरी मैं उस समय नेपाल मे आया था, जब आगमान बारबार चाला म दिग रहना, रूदाबादी भी हाती रहती थी । यमिनी के हान म

जितनी खाली जमीन थी सब खेत बनी हुई थी। ऐसी उगाऊ भूमि का कसे छोड़ा जा सकता था, जब कि कोई किसान उसे अच्छी मालगुजारी पर लेन के लिए तयार था। नेपाल में खाद डालने की ओर बहुत ध्यान दिया जाता है साथ ही किसान हर वक्त हाथ में कूटाल लिए खड़ा रहता है। बीज भी गताब्दियों से उन्होंने अच्छे पैदा किए हैं, और पानी की भी दिक्कत नहीं है। हमारे हाते में दादा तीन-तीन सेर के गाम्भीक फूल लगे थे जिन्हें यहाँ बड़ा नहीं माना जाता। मूली तो यहाँ दस-दस सेर की काट कर बिक रही थी।

१५ तारीख का मध्याह्न भोजन थी कलानाथ अधिकारी के यहाँ हुआ। कलानाथजी मकमिलन कम्पनी में अच्छे वेतन पर नेपाली प्रवागन के अधिकारी थे। स्वतंत्र नेपाल की सेवा करनी चाहिए यह ख्याल करके नौकरी छोड़कर चले आए। वामपक्षी विचारों को रखते हैं और मौक-बे मौक हर जगह बहस में भिड़ जान के लिए तयार रहते हैं। संगीत का घर भर को प्रेम है। लोक गीत बड़े सुन्दर ढंग से गाते हैं और रचते भी हैं। यदि वह लाव-गीता के संग्रह में लगत तो बड़ा काम करते पर इसके महत्व को समझ नहीं पाते। आधे दर्जन बच्चे और दाना प्राणियों का खर्च एसी बेवारी में भारी मकट का कारण था। भोजन के बाद भी ३ बजे तक हम वहीं रहे। बच्चा ने गीत सुनाये। उनकी बहिन किंगोरीजी बड़ी सुकण्ठी हैं और नेपाल रडियो पर गाया करती हैं। उन्होंने भी अपने गीत सुनाये। मधुर संगीत का आनन्द लते हुए भी बीच-बीच में मेरे हृदय में टोम उटती थी, जब ख्याल करता कि इतने बड़े परिवार की कुछ भी पर्वाह न कर यह तमन अपने निश्चित जीवन को छोड़कर यहाँ चला आया।

आज गाम का सांस्कृतिक सघ में जाकर भाषण देना पड़ा। भर पुराने मित्र डा० तिल्लीरमण रेग्मी अध्यक्ष थे। पहलू महिला गुरुजी भी कुछ बाले।

दूसरे कामा के साथ साथ मेरा ध्यान बराबर अपनी पुस्तक के लिए नये आँकड़े और नई सामग्री लेन की ओर था। यमिजी का मकान अब अखंड गोठड़ी-स्थल बन गया था। लिम्बुने-पड़न का मौका नहीं मिलता था इसक लिए मुझे अफमास नहीं था।

१६ जनवरी को संस्कृत छात्रों की सभा में बालना था। राणाओं के समय के समय यहाँ के संस्कृत छात्रों ने बड़ी हिम्मत का परिचय दिया था। मैं उनकी सभा में जाना चाहता था, लेकिन वह तो घटा दर से आए और उधर ब्या मंदिर का प्राणम सिर पर आ गया था। संस्कृत छात्रों में जाने से इंकार करना पड़ा, जिसका उन्हें दुःख होना ही चाहिए था पर मरा क्या बसूर ? हाँ, उस समय इस इंकार का अधिक अपमान हुआ, जबकि मालूम हुआ कि ब्या मंदिर में सभा नहीं होने वाली है।

१७ जनवरी का मध्याह्न भोजन श्री माधवजी के यहाँ हुआ। माधवजी मारिंगस में पैदा हुए। फिर भारत में आकर उन्होंने युनिवर्सिटी की शिक्षा समाप्त की। आज के सम्प्रदायीय विभाग में बड़ी सम्पत्ता का काम कर रहे थे। मारिंगस का उनकी ज़रूरत थी, लेकिन वह भारत से नेपाल चले आए। फ्रेंच, अंग्रेजी और हिन्दी तीनों पर उनका अधिकार था। यहाँ कोई म्याप्री नौकरी नहीं थी सिर्फ ट्यूशन का भरोसा था। व्याह कर लिया था, और एक गिगु पुत्री भी आ गई थी। मैं तो उनमें बहना था, छात्रों मारिंगस में जाकर काम करा।

१८ जनवरी का म्यूजियम दखन गए। श्री चंद्रमान मास्के बलावार हैं, और राणागाही की जेल में बर्षों रहे चुके हैं। वही इसके ब्यूरेटर थे। पिछली बार इसे देना था, तब मैं अब मामला बहुत अधिष्ठ है। उस अच्छी तरह व्यवस्थित करके रखा भी गया है। लेकिन, नेपाल के लिए ये अनुपम नहीं हैं, जहाँ कि प्राचीन वस्तुओं का भंडार भरा पटा है। किसी अंग्रेज ने लिखा था, यहाँ मकानों से अधिक मंदिर हैं और लोगों में अधिक मूर्तियाँ। इन मूर्तियों में बहुत-सी एडिन जगह जगह खोस्तो, गलिया और सेना में पड़ी हुई हैं। इनमें कुछ डेढ़ डेढ़ हजार वर्ष पुरानी भी हैं। उन्हें म्यूजियम में संगृहीत होना चाहिए। गिलालेगा का इतना काम संपन्न कर जगत्-जगह बरबाद होना के लिए उन्हें छान देना सफलता था। चित्रपटा का संपन्न अच्छा ही बहना चाहिए लेकिन सबमें अधिक संपन्न पुराने हथियारों का था जिनमें द्रव्यगाह और पृथ्वीनारायण के अपने हाथ के शस्त्र भी थे।

म्यूजियम में फिर विहार गए। तिब्बत की पहली यात्रा में यहाँ मैंने अपना नाम किया था। बगोचे के उस एकान्त मकान का दूंगा जियम

जितनी खाली जमीन थी, सब खेत बनी हुई थी। ऐसी उगाऊ भूमि का कस छोड़ा जा सकता था, जब कि कोई किसान उसे अच्छी मालगुजारी पर लेने के लिए तयार था। नेपाल में खाद डालने की जोर बहुत ध्यान दिया जाता है साथ ही किसान हर वक्त हाथ में कूदाल लिए खड़ा रहता है। बीज भी गताब्जियों से उहाने अच्छे पैदा किए हैं, और पानी की भी दिक्कत नहीं है। हमारे हाते में दो-दो तीन-तीन सर के गाभी के फूल लगे थे जिन्हें यहाँ बड़ा नहीं माना जाता। मूली तो यहाँ दस-दस सेर की काट कर विक्रय रही थी।

१५ तारीख का मध्याह्न भोजन श्री कलानाथ अधिकारी के यहाँ हुआ। कलानाथजी भक्तमिलन कम्पनी में अच्छे वेतन पर नेपाली प्रशासन के अधिकारी थे। स्वतंत्र नेपाल की सेवा करनी चाहिए यह ख्याल करके नौकरी छोड़कर चल आये। वामपक्षी विचारों को रखते हैं और मौके व मौक़े हर जगह बहस में भिड़ जाने के लिए तयार रहते हैं। संगीत का घर भर का प्रेम है। लोक गीत बड़े सुन्दर ढंग से गाने हैं, और रचते भी हैं। यदि वह लोक-गीतों के संग्रह में लगते तो बड़ा काम करते पर इसके महत्व को समझ नहीं पाते। आधे दर्जन बच्चों और दोना प्राणियों का खर्च ऐसी बकारी में भारी सक्कट का कारण था। भोजन के बाद भी ३ बजे तक हम वहीं रहे। बच्चा ने गीत सुनाये। उनकी बहिन किंगोरीजी बड़ी सुकण्ठी हैं और नेपाल रेडियो पर गायी करती हैं। उन्होंने भी अपना गीत सुनाये। मधुर संगीत का आनन्द लत हुए भी बीच-बीच में मेरे हृदय में टीस उठनी थी, जब ख्याल करता कि इतने बड़े परिवार को कुछ भी पर्वान कर यह तरुण अपने निश्चित जीवन को छोड़कर यहाँ चला आया।

आज गाम का सांस्कृतिक सभ में जाकर भाषण देना पड़ा। भर पुरान मित्र डा० दिल्लीरमण रेगमी अध्यक्ष थे। पहल महिला गुरुजी भी कुछ बोले।

दूमरे कामा के साथ साथ मेरा ध्यान बराबर अपनी पुस्तक के लिए नये आँकड़े और नई सामग्री लाने की ओर था, यमिजी का मनान अब अलख गाछी-रुख बन गया था। लिखने पढ़ने का मौका नहीं मिलता था, इसके लिए मुझे अफ़सास नहीं था।

१६ जनवरी का संस्कृत छात्रों की समा म बालना था। राणाओं के मध्य के समय यहाँ के संस्कृत छात्रा न बड़ी लिम्बन का परिवर्ष दिया था। मैं उनकी समा म जाना चाहता था, लेकिन वह दो घटा दर से आए और उबर कया मंदिर का प्रोग्राम सिर पर आ गया था। संस्कृत छात्रा म जान से इन्कार करता पडा, जिमका उर्हें दु ख हाना ही चाहिए था, पर मरा क्या बसूर ? हाँ, उम समय इस इन्कार का अधिक अफसास हुआ, जबकि मालूम हुआ कि कया मंदिर म समा नही हान वालो है।

१७ जनवरी का मध्याह्न भोजन श्री माधवजी के यहाँ हुआ। मानव जो मारिणस म पैदा हुए। फिर भारत म आवर उहाने युनिवर्सिटी की गिशा समाप्त की। आज के मम्पादकीय विभाग म बड़ी योग्यता से काम कर रहे थे। मारिणस का उनकी जरूरत थी, लेकिन वह भारत म नेपाल चल आए। फ्रेंच, अंग्रों और हिन्दी तीना पर उनका अधिवार था। यहाँ कई स्थायी नौकरी नही थी सिफ ट्यूशन का भरोसा था। व्याह कर लिया था, और एक गिगु पुत्रा भी आ गई थी। मैं ता उनसे बहता था, छाटो, मारिणस म जमर काम करा।

१८ जनवरी का म्पूजियम दग्धन गए। श्री चंद्रमान मास्व कलाकारह, और राणागाही की जेल म बर्पो रह चुक हैं। वही इमक क्यूरेटर थे। पिछली बार इन दया था तम से अब सामथी बहुत अधिक है। उस अच्छो तरह ध्यवस्थित करके रखा भी गया है। लेकिन, नेपाल के लिए ये अनुस्य नहीं हैं, जहाँ कि प्राचीन धम्नुत्रा का भंडार भरा पटा है। किसी अंग्रेज न लिया था यहाँ मराना से अधिक मंदिर हैं और जग से अधिक मूर्तियाँ। इन मूर्तिया म बहुत-सा मडिन जगह-जगह चोरमना, गलिया और मनो मे पडी हुई हैं। इनम कुछ डेढ़-डेढ़ हजार वर्ष पुरानी आ हैं। उर्ह म्पूजियम म सपूनीन हाना चाहिए। गिलालिया का इतना कम मग्रह कर जगत् जगह घरबाद हान के लिए उर्ह छाट मना मटकना था। विप्राग का मयह अच्छा ही यहाँ चाहिए लेकिन मयम अधिक मयह पुरान हदियारा का था, जिनम द्रष्याह और पृथ्वीनारायण के अपन हाथ के गम्भ भी थे।

म्पूजियम म फिर किन्तु विहार गए। लिम्बन की पहली मन्ना म यहाँ मैंन अपानवाग किया था। बगाप के उम एकाच मरान को र्दूना जिसम

रात के वक्त आध घंटे के लिए बाहर निकलने के सिवा मैं इस स्याल से बराबर बंद रहता कि राणागाही को पता न लगे, और मेरे तिवत जाने में बाधा न हो। पर उसे न देखा पाया। किन्दु में पहले एक विहार था, अब वहाँ तीन बन गए थे। पिछले बत्तीस वर्षों में बौद्ध धर्म की ओर लोगो की रुचि ज्यादा बढ़ी। तीन विहारों में एक का नाम कुंगीनारा है। एक विहार में एक तिबती सम्माननीया भिक्षुणी ठहरी हुई थी।

म्यूजियम से थर आने में परेड का बहुत बड़ा मदान मिला, जिसके एक तरफ सिपाहियों की बैरके हैं। भारतीय सेना के अफसर नेपाली सेना का सिखान-पढ़ान का काम कर रहे हैं। लाग गिनायत कर रहे थे— पहले के सिपाही महन्ता थे। फसल के समय जाकर धरो में काम करते थे। अब विनोपना ने उन्हें सिखलाया है कि तुम्हारा काम सिर्फ बंदूक चलाना और राइफ्ल लपट करना है। इसलिए वह मुकुमार हो गये। हमारे काम चार अफसर और दूसरा क्या सिखलाएंगे? वह सिर्फ अंग्रेजी सैनिकों के बारे में जानते हैं और उन्हें जो अपना आदर्श मानते हैं। उन्हें मालूम नहीं कि चीन और रूस के पास भी भारी पलटन है जो भयंकर लडाइयों में तप कर विजयी हाकर निकली है। वहाँ सेना को सिर्फ बचाव परेड तक अपने काम की इतिथी समयत नहीं दिया जाता। तिब्वत में नहरा और सडवा का जाल विद्यान में सैनिक बढ़ी तत्परता से काम कर रहे हैं।

किन्दु में स्वयंभू गए। यह यहाँ का सबसे पवित्र और पुराना बौद्ध स्तूप है। लेकिन गदगी दल कर तमीयत बिगड़ जाती है। बंदरा ने और सयानाग कर रता है। वहाँ से कुछ नीचे उतरकर आनन् विहार में गए। यहाँ गुरुगुल की तरह का एक विद्यालय सोला गया है जिसमें तीन धर्मिया में विद्यार्थी पढने हैं। भाजूरत्न साहु के उत्साह और भक्ति का यह प्रमाण है।

लौट कर घर आए। श्री बालकृष्ण गमंगर के यहाँ से मोटर आई और चाय पीने के लिए उनके घर गया। बालकृष्ण राणा वगैरे हैं। बहुत सम्भव है वह वगैरे मूलतः मगर नहीं, तो रंग खर रहा, और मगरो के साथ उसका सम्बन्ध भी रहा। पालपा के राजा मगर थे जिनका ब्याह-सम्बन्ध नीचे के राजपूत घराना में होता था। पुराने राणाओं के चेहरे पर मंगला

यित भुग्य मुद्रा बतलाती है कि उनमे मगर गुरु ग जसे किरातवगी जातिया का रक्न है। पर, प्रभुत्व प्राप्त करन के बाद राणा अपने को भूयवगी सीसा-दिया के साथ सम्बन्ध जाडे बिना कसे रह सकत थे? उहाने उदयपुर के राणा तन दौड मारी—हमे अपन बग का स्वीकार कर लें। स्वीकार कर लेते, ता काई हज नही था। आगिर जाज राजस्थान के भूयवगी चन्द्रवगी, जाट और मराठे राजाआ से विवाह सम्बन्ध करने ही है। राणाआ ने यद्यपि व्याहता या खेल् रखन क लिए दरवाजा खाल दिया था पर अपने का श्रेष्ठ साबित करन के लिए जसली उही मताना को मानते थे जो राजपूत स्त्रिया म हाती थी। समजी के पिता भी राजपूत माता की सन्तान नही थे इसलिए वह तीन सरकार के अधिकारिया की मूची म नही आ सकत थे। चाहे तीन-सरकार बनने का अधिकार न हो पर पिता की उदारता का लाभ ता पुत्र का मिलता ही है। समजी के पिता भी मौजूद थे, और समजी भी अब दादा की उमर के थे। राणा बग म इधर विद्या का कुछ प्रचार हुआ पर कला और साहित्य की आर विनोप प्रगति किसा न नही की। समजी इसक अपवाद हैं। उनका सारा घर कला और साहित्य का प्रेमी है। वह स्वयं श्रेष्ठ नाटककार हैं। उनका पुरानी भूतिया का मग्रह बहुत सुंदर और रूढा है, जिमम मालूम हाता है कि वर्षों स उहाने इम तरफ ध्यान दिया था। चित्रकला का भी उह गौर है। पाय पीन परिवार म दानचीत करन म हम बडी प्रमनता हुई।

१६ का रात का भाजन श्री गिवप्रसाद रौनियार के यहाँ इन्द्र चौक म हुआ। रौनियार लाग भोजपुरा इलाक क निवासी व्यापारी हैं। पुरान समय म नी इनक साथ (बारवा) चला करन थे, जिसे मुनकर मुये 'गामनायका' का पवाडा याद आता। गिवप्रसादजी क पूवज नेपाल क साप कपडे का व्यापार रहून पुरान काल मे किया करत थे। कला पर कपडा लाद कर वह यहाँ पहुँचत जीर उम बंचार चल जान थे। एक बार उनका कपडा खिच नही। लोग कपडा लौटा कर ल जान की जगह वह यहा दन गए। फिर ता एंगा हुआ कि वह महीं बम गय। आज उनकी चौथी या पाँचवीं पीढ़ी चल रहा है। अब तेग स उनका इतना ही सम्बन्ध है—कि व्याह गांग करन भर का है। गिवप्रसादजी से नही मालूम हुआ, लेकिन पुनर भदर लह-

रियासराय के स्वामी श्री रामलोचनारण बिहारी स पीछे पना ला, कि शेरगाह क याग्य मन्त्री और पीछे हमचन्द्र विक्रमान्त्य के नाम ने कुछ दिनों के लिए दिल्ली क सिंहासन पर बैठन वाले वीर का चम रीनियार कुल म ही हुआ। पश्चिम के और पूव क बनिया म धाम कर भोजपुरी-क्षेत्र के बनिया म एक अन्तर यह है, कि जहाँ पश्चिम वाले अप्रवाल आदि धासा हारी होन हैं वहाँ पूव वाले मामाहारी। गिवप्रमादजी की मा सिवान (छपरा) की थी। उन्होंने छपरा क डग का सामिय भोजन तैयार किया था।

२१ जनवरी को माहिला गुरु हमार यहाँ चले जाए। यह कोई आश्चय की बात नहीं थी उनका स्नह एमा ही मेरे ऊपर था। पर उनका स्वास्थ्य अब बहुत खराब था, और चेहरे पर बुडापे का बहुत जसर भी था इसलिए मुने यह अच्छा नहीं लगा। मैं उनके पाम स्वय जानेवाला था। वह कहन लग—काइ बात नहीं बहुत दूर नहीं था मैं घोर घारे चला आया। फिर तीन घटे तक उनमे नेपाल के इतिहास पर बातचीत होता रही। वह नेपाल के विश्वकोण थे, इसलिए उनम बात करने म बडा आनन्द आता था। मैंने अपने हिमाय्य सम्बन्धी ग्रथा मे वहा की जातिया क बारे म भी एक अध्याय रखा है। नेपाल के ढाइ-तीन सौ भिन्न भिन्न ब्राह्मण की सूची भी दी है। नेपाली ब्राह्मण कुमाइ और पूर्विया दो भागो म विभक्त हैं। मैं यही सुनता जाया था कि कुमाई ब्राह्मण लग कुमाऊ स आए हैं। महिला गुरु का परिवार भी कुमाइ ब्राह्मण कहा जाता था। जब प्राप्य मामयो का विन्त्रेपण किया ता मुने मालूम होने लगा कि कुमाइ का मतलब आजकल के कुमाऊ मे नहीं है बल्कि पुराने कुमाऊ स है जिसकी सीमाएँ कर्नाली और उनकी गाम्वाआतर फली थी। हा सकता है कत्यूरिया क वक्त सप्तगढी क क्षेत्र म भी कुमाऊँ का गानन रहा हो। यह लोग अपन पुरान सम्बन्ध क कारण कुमाई कह जान रह हामे जिस आज कल क भूगाल के साथ जाडकर लोग यह ख्याल करन लगे कि यह लोग कुमाऊ म आए हैं।

मैंने अपना विचार माहिला गुरु स कहा। उन्होंने समयन करत हुए कहा—यह बिल्कुल संभव हा सकता है।

उस दिन हनुमान ढाका आदि काठमाण्डू के पुराने राजप्रासाद देखने गए। नेपाली बाजार में लामा म बडा असनोप फला हुआ था, क्योंकि नेपाली रुपये का भाव गिरता जा रहा था। जो कभी भारतीय रुपये के बराबर थी वह अब भारतीय रुपये का १५१ रुपये पर पहुँच गई थी—मेरे सामने ही १६० तक चली गई। नेपाल भारत से भारी परिमाण में चीजें मँगाना है, जिनमें से कितनी ही चीजों की होती हैं। जितनी मात्रा में चीजें मँगाना है उतनी ही मात्रा में उतनी ही अपनी चीजें नेपाल बाहर भेज मरता इसके ही कारण नेपाली रुपये का दाम गिरता गया। उस समय व्यापार में किसी व्यवस्था का पता ही नहीं लगता था। कस्टम से आँव बचाकर चीजा की मँगाना, बड़े-बड़े लोग का चारबाजार में गामिल हाना, ऐसी चीजें थीं, जिनके कारण हालत दिन पर दिन बदतर होती जा रही थी। २१ जनवरी को युद्धसठक के एक भाजनालय में हम भोजन करने गए। दा आदमी के भाजन पर चार रुपया खर्च करना पडा, और उस भाजन का बहुत अच्छा नहीं कहा जा सकता था।

नेपाल उपत्यका गारगा गामन में पहल मुद्ध नेवार भाषा का देग था। १८वीं सदा के उत्तरार्द्ध में गारगा गामन राजधानी के स्थापित होने के बाद यहाँ पश्चिमी नेपाल के लोग भी आकर बसने लग। ता भी यहाँ क बन्दुस्त्वक लाग नवार भाषा बालत हैं। जिनका हम लोग नेपाली भाषा कहते हैं, उसे वह गारगाली भाषा कहते हैं। नेवारी भाषा का अपने को नेपाल भाषा कहना बिल्कुल उचित है पर दाना भाषाया का अलग करने के लिए एक का नेपाल और दूसरे का नवार भाषा कहना ठीक होगा। पर, नवारभाषी लोग अपने अधिचार का छाड़ने के लिए तैयार नहीं हैं। नवार भाषा किरात भाषा यंग में सम्बन्ध रखती है यद्यपि उमम सस्कृत के सत्यम और तदभव गार बहुत भारी सख्या में मिलते हैं। इसका लिखित साहित्य भी बहुत पुराना और समृद्ध है। अब ता उगम पत्र पत्रिकाएँ भी निकलनी हैं साहित्य मृजन भी हा रहा है। नवार महिलाओं में अब भी कितनी ही ऐसी मिलेंगी जा गारगाली भाषा नहीं समझतीं। २२ जनवरी का नेपाल भाषा साहित्य-सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन उमा हनुमान ढाका क बिनाल आँगन में हुआ जिनमें आज से पौन दा से वष पहल वह राज

भापा के तौर पर विराजमान थी। नेवार सरस्वती आज उस जागन में मुखरित हो रही थी। बाहर के आगन के एक तरफ के फाटक से हम भीतर के एक छोटे आंगन में गए जहाँ कोत पव हुआ था—काछा महारानी के हुकुम से जगबहादुर और उसके भाइयों ने निहत्थे आदिमियों के साथ खून की होली यहाँ खेली थी, उनका निमम वध किया था। वह शराखा भी मौजूद था जहाँ से उस निहत्थे रानी ने हुकुम देकर इस कीमती दृश्य देखन का आनन्द प्राप्त किया था।

नेवार भापा का यह पहला अधिवेशन था, लेकिन उसके देखन से साफ पता लगता था कि नवारभाषिया में सांस्कृतिक परिपक्वता है।

पटना के श्री कीर्तिराज ढाकना मेरे बहुत पुराने कृपालु मित्र हैं। प्रथम तिब्बत यात्रा में मैं छिपकर नेपाल से वहाँ गया था और महीने भर से अधिक की यात्रा करने के बाद शिमचे में उनके घर पर ठहरा। इन्हीं से मैंने अपना रहस्य बतलाया। कीर्तिराज उस वक्त तरुण थे लेकिन अब बद्ध ३०-३२ वर्ष की अवस्था में तो चुके थे। ढाकना तिब्बत से व्यापार करनेवाले नेपालियों में बहुत धनी और सम्मानित माने जाते थे। कीर्तिराजजी ने मेरी बड़ी सहायता की थी, और यदि मैं टशील्हूपा में रहना चाहता, तो उनका घर मेरा स्वागत करने के लिए तैयार था। उन्होंने अपने घर में भोजन करने को बुलाया। २३ जनवरी का हम उनके साथ मोटर पर चले। रास्ते में वह वृक्ष देखा जिस पर लटकाकर गद्दीद गुन्नाराज गास्त्रा का गोली मारी गई थी। वृक्ष का काटना राणाशाही भूल गई लोका न उसे सिद्धर से टोक रखा था।

वादल खुलने का नाम नहीं लेता था, सर्दियों की गिरावट ज्यादा में नहीं कर सनता था क्योंकि मसूरी की सर्दियों का अभ्यास था। जिस तरह नेवार किसान अपनी भूमि के एक एक अंगुल का मूल्य वसूल करना चाहता है वैसे ही नेपाली गृहस्थ अपने घर के एक एक अंगुल अवनाग का बकाया जाने नहीं देना चाहते। जितनी ऊँचाई में हमारे दो मजिला मकान होते हैं, उतने में वहाँ चौमजिला बन जाते हैं। हमारे 'हन क्लिफ' के बगले की ऊँचाई में तो वह चौमजिला घर बनाते और उस समय विशेषकर जाइलों में यह अधिक आरामदेह होता था कि थोड़ी सी भी आग लाने से

उमके भीतर वी हवा गरम हा जाती । हा, यह गिकायत जरूर होती कि मरे जैस आदमी वा हर दरवाजे म सिर बचान वी कागिन करनी पटती । बाहर स भपाना वा दग्ने से चाह वह बितन ही साधारण स मालूम हात, गन्या और आंगन गद दिखाई पढते, किंतु भीतर वह अच्छे माफ और मुद्दर सजे हुए हात । पाटन व विनन ही व्यापारिया वा सम्बन्ध निब्वत से है । उनक कमरा के सजाने म तिब्वत वी चीजा वा उपयाग किया जाता है । पाटन अपन पुराने मन्दिरा क लिए काठमाण्डू स कम प्रसिद्ध नही है बल्कि घातु व बतना और मूनिया के बर म वह आग है । काठमाण्डू और पाटन के बीच म सिफ बागमती वा अन्तर है जिस कहां भी आप पार कर सजत हैं । माटरके लिए लाह के पुस ही गुजरना पडेगा वा थापाथली म पढता है । पाटन भी नेपाल क तीन राजाआ म एक वी राजधानी रहा । वहाँ वा मध्येद्र विहार बहुत सम्माननीय देवालय है । इगना मम्मन्ध मिद्ध मध्ये द्र स नाहक जाडा गया है । वस्तुन यह बोधिसत्व अवशक्तिदेवर वा विहार है । पाटा व राजाआ व मन्दिरा और महाराज वाने वा बग गोक था । कृष्ण मन्दिर को ता नीचे दग व नमून पर पत्थर वा गिजरदार बनाया गया है । बैम नेपाल क मन्दिरा वी अपना विशय गौली है, जा यहाँ स निब्वन चीन हात जापान ता चली गई है । उनम लरढी वा इस्तमाउ ज्यारा हाता है जिमक कारण भूकम्प वा भा वह जधिर महन कर सकत हैं । कमला ने कुछ बतन गरीद । चाय पीने क लिए फिर हम वीनिरानजी के पर पर गए । नीचे उपत्यका म वर्षा हुई लकिन नेपाल उपत्यका वा घेरत बाले पहाड छ-सान हजार फुट स भा ऊँचे हैं । उन पर बर्फ पड गई थी । उपत्यका म गायद हा कभी बर्फ पढती हा । पर लोटन पर मामूम हुआ श्री विवदरप्रसाद काइराला जाए थ ।

२६ जनवरी वा सराफा १ हताल कर दी । नेपाली रुपय वा भाव हाता अनिश्चिन हा गया था यह इमो म मालूम हागा सि एक दिन म सोन गान राय वा अन्तर पड गया था । नया एमो स्थिति म वीन गिक्की व विनिमय वा काम करन वा शिम्त करला ।

उम दिन ६ बज श्री विवदरप्रसाद काइराला अपनी माटर लेकर आए । उनक साथ वकि लामाप्रसाद देवनाथ क घर पर गए । विवदर

प्रसाद नेपाली सिद्धहस्त लेखक हैं, यद्यपि राजनीति इस तरफ बढ़ने के लिए उन्हें समय नहीं देती। देवकोटा को देखकर तो मुझे बार बार निरालाजी याद आता था—वैसा ही अकृत्रिम सौहाद्र और वसा ही काव्य प्रतिभा। अभी उनकी आयु ४४ वर्ष की थी। उनका तरुण पुत्र हाल ही में मरा था जिसका भारी रज हृदय पर पड़ा था। यह उसे मुह पर आने देना नहीं चाहता था। कितने ही दिनों तक वह “नेपाली भाषा प्रकाशनी समिति” में उसी रूप में भाषिक पर नौकरी करते रहे। बकालत के साथ पटना युनिवर्सिटी के वह प्रेजुएंट थे तो भी वह ऐसी स्थिति में थे। खुद भी वह अपनी कृतियाँ की सुरक्षा की परवाह नहीं करते। लिखते फाड़ते भूलते उन्हें देर नहीं लगती। उनकी २६ पुस्तकें समिति की उपेक्षा से नष्ट हो गईं। प्रमथियेस को उन्होंने नेपाली भाषा में भी लिखा है। एक बार १२ १३ सग लिख चुके थे जो नष्ट हो गए। अब फिर उस दुबारा लिख रहे थे। सेता के बीच में एक मकान में वह सपरिवार रह रहे थे। अब की नेपाल-यात्रा में सबसे अधिक जिस व्यक्ति को आकृष्ट किया वह महाकवि देवकोटा थे।

२५ जनवरी का भोजनोपरान्त जनकलालजी के साथ मैं बौद्ध चला। काठमाण्डू और देवपाटन से अलग स्थान में नेपाल का यह सबसे बड़ा बौद्ध स्तूप है जो आयु में भी बहुत पुराना है। इसकी महिमा तिब्बत और मंगोलिया तक फैली हुई है। नजदीक ही समझा था लेकिन चलत चलत मालूम हुआ कि चार मील से कम न होगा। इस विशाल स्तूप की परिमार्ग चारों ओर दुमजिल तिमजिले घर हैं जिनके निचले भाग में दूरान्तार और उपरल भाग में तीर्थयात्री ठहरते हैं। जाना हान में आजकल बहुत सतिव्वती लाग आए हुए थे। चिनिया लामा के पाग गए। प्रथम तिब्बत यात्रा में इनके पिता से भेंट हुई थी और इनका हा एक घर में दुम्ना लामा के साथ तिब्बत जान की लालसा से स्वच्छापूर्वक मैंने नजरबंदी स्वीकार की थी। उस समय यह तरुण थे। इनके पिता चीना थे लेकिन यहाँ आकर उन्होंने तिब्बती स्त्री से व्याह किया। कितने ही वर्षों बाद मिले थे, इस लिए लामा का पहचानने में कुछ देर हुई। बूढ़े हो गए थे—शिलाभी जीवन और गराव की छूट ना थी। लाग वह रहे थे—खुब धन कमाया है। कुछ देर बैठे धमन से बात करते रहे। उनसे पता लगा कि साक्या के पुनछाक

महल के मर कृपालु लामा अब नहीं रह। उनके बाद डालमा प्रासाद क लामा गद्दी पर बैठ। तिब्बत के तीर्थयात्रियों के मालूम हुआ कि उन्हें अदन माय पैसा लान म कार्ड रनावट नहीं है पिछले साल से भी इस साल अचिर यात्री आए हैं। लाज मैनिर अभी सभी मोमान्तो डांडा पर नहीं पहुँच हैं। जागीरदारी पर अभी काम नहीं लगाया है, किंतु पाठ्यालार्ण जगत्-जगह गाँवा मे मानी जा रही हैं।

बौद्धा की परिश्रमा करव वहाँ के साढ़े ४ बजे घर लौट आए। उम तिन डा० रेगमी क यहाँ चाय पीती थी लेकिन भूख गए।

२० जनवरी का सिद्ध दरबार गए। चंद्रगम्भार न बड़े कराठ लगाकर इन सिंगल महल का बनवाया था। पहले यहाँ जनमायागण की पहुँच कहीं हो सकती थी? अब मन्दिवालय है जिसके दफ्तर कमर कमरा म हैं। मन्दिवालय म कुछ सूचनाएँ देना चाहता था। पुलिस क सर्वोच्च अधिकारी अब भी वहाँ नरगम्भार के जा अबनी पूरता के लिए राणा गामन म कुफ़्तान थे। राजा म माहूम हो रहा था कि गामन म विनना कम परिवर्तन हुआ है। मन्दिवाला म जेनरल कमर गम्भार मदन अधिक प्रभावगण का दृश आर मर पूव परिचित भी थ। उन मिलन क गिर गया, ता वहाँ खती भी थी, रि आगा नहीं थी वानचीन हा मनी। दर हात न म वहाँ म गोट पया। तिती जाग्मा न सूचना था। उन्नि आदमा दीयाया और मक दा म्बय लौट-लौट जाए। मुसम ल पार गाए बड़े ही हा। मुझे अरमान हुआ। मन्दिवाले वानचीन की और २१ तागाय का न वर नक घर पर आन का वनन दिया। क्नापक्टर-माह्य ता नहीं आया किंतु डिप्टी गम्भार क्नाप क्नाप जाफिम म मि। जिना यहाँ म अनुता पय (राहता) लिए विमान वा लिस्ट नहीं मिग्ग म्मागित हम वहाँ जान का मत्रवृ थ।

मिह दरबार का राजा अरुण उपाय कया था मरना है। रिपिन हा बड़-बड़े हा दग, गम्भार दरत गए। विमान हा है विमान सन्द-न-न क विप लगे हुए है—गिरार क विप्रा की वृत्तावन है। मना आधुनिक दग क है। म्मा गम्भार म राणा तानागह अदन अद्वज अनिधिया और प्रमुखा का स्वागत दिया करन थे। ननाल शपरा का दग है, लेकिन न

विशाल महल के बनाने में बड़ा जो ज्यादा इस्तमाल किया गया। वास्तु कला की दृष्टि से यह यूरोपीय इमारतों की अधीन नकल है, जिसमें नेपाली कला का पूरी तौर से बायकाट किया गया है। वहाँ से रेडिया स्टेशन गए। रेडिया की मशीन नेपाली कांग्रेस ने अपने सघन व दिनाम कही से प्राप्त की वही काम कर रही थी।

बाहर निकलकर हम जगवहादुर के घर को देखने चले। यह मुहल्ला थापाथली कहा जाता है। पुराने महल का ढूँढ निकालने में काफी दूर हुई। अब वह सूना है और गिरने की तैयारी कर रहा है। इसी के हात में गणेशजी अवध की बगम और नाना की रानी की हवेलिया थी, जो अब गिर चुकी हैं। वहाँ से बाहर निकलने पर एक और पुराना महल मिला उतना पुराना नहीं जितना जगवहादुर का। हम उसके बारे में जानना चाहते थे, उसी समय एक प्रौढ़ पुरुष निकले। वही उस समय इस महल में रहते थे। नाम मसूरी नामशेर मालूम हुआ। देवनामशेर बड़े ही भले प्रधान मंत्री थे, लेकिन भलमनसाहत के कारण ही उन्हें जल्दी पद छोड़कर नेपाल में भागना पड़ा और उनका स्थान उनके चलते पुर्जे अनुज चन्द्रशमशेर ने लिया। देवनामशेर ने मसूरी में अपने लिए महल बनवाया था। वही पदाज्ञान के कारण पुत्र का नाम मसूरीशमशेर रखा गया। बाकाट और यूरापियन स्कूल के पढ़े हुए थे। वह साहित्य और संस्कृति का अंग्रेजी में ही जानते थे। न उन्हें नेपाली साहित्य से कोई मतलब था न हिन्दी साहित्य से। हा यह सुनकर उन्हें कौतूहल हुआ कि मैं भी मसूरी में रहता हूँ। लेखक जान कर उन्होंने पूछा—आप ता राणाओं के खिलाफ लिखेंगे। मैंने कहा—हाँ किन्तु देवनामशेर के खिलाफ नहीं।

वहाँ से टूटा क्षेत्र, घरद्वारा हात कल की भूल चूक का माफ कराने के लिए डा० दिल्लोरमण रेग्मी के घर पर पहुँचा। सोभाग्य से वह भिल गये। देर तक उनसे नेपाली का राजनीति पर बात हाती रहा। उन्होंने अपनी लिखी पुस्तकें भी दी। लौटते बकन सत्त्व पर गखामुर की यात्रा निकल रही थी। सभी जगह जनता तमांग की प्रेमी हानी है नेपाल में नागरिक उसमें विगप रचि रखते हैं यह जम्हा है।

२७ जनवरी का घुप-छाँह रही। १० बजे तक हम अपने स्थान ही पर

थे। अधिकतर भाजन बाहर ही करना पड़ता था लेकिन सवेरे का जलपान यमिनी के यहाँ होता था। स्वयम्भू के पीछे स्यामी ईश्वानदजी का आश्रम भरस्वनी अथात् था। ईश्वानदजी गिणित, सुमस्त्वन और जनमेवी पुष्प हैं। स्वयम्भू पवत के पीछे की आर ही यह भरस्वनी अथात् पुरान ममय से बना जाया था। यही भाजन हुआ दर तक बातचीत हाती रही। यहां से वह पहाड़ी अग दिवाई पड़ता था जहाँ हाजर भारत में नेपाल माटर-सटन आनेवाली है। दूर तक सेत ही सेत थे। वस्तुतः नेपाल उपत्यका कृषि के लिए बहुत ही उपयुक्त भूमि है। वषा बहुत होती है इसलिए मित्राद के लिए पानी की जलनिधियाँ पहाडा में बनानी मुश्किल नहीं हैं। लगभग हमारा म महनती रू हैं लेकिन उस महनत का परिश्रम उनका नहीं मिलना रहा। नेपाली गिल्यो अपन काम में बडे दक्ष थे। उन्होंने उस स्थानि का गोवाया नहीं है, जा कि निमी ममय चीन तक पहुँची हुई थी। एक बडे राटु से नेपाल मुक्त हुआ लेकिन अभी उस वहाँ जाता है उसका पता भी नहीं है। बतला रू थे यहाँ से पाँच दिन में चिनौन पहुँच सकते हैं। नेपाल का पुगना राम्ना इपर ही से भिषनाठारी हाकर जाता था। भिषनाठारी के पास अब भी रामपुरवा में दो अथात्-स्नमन मौजूद हैं, जा मायद उगो की मागी से रहें हैं। वहाँ से लौटन तक आनन्दकुटी मिथाईठ में फिर गया। ३० ३५ लडना में स्वागत किया यहीं चायपान हुआ।

गाम का ४ बजे माहिण गुरु की अध्यक्षता में 'नेपाली गिणा परिषद्' की ममा में गिन गिरा पर भाषण दिया। मेरे भाषा-सम्बन्धी विचारों के लिए गन्तवहमी हान की गुजाइश न रह इसलिए भाषा-जीवि के बारे में मैं विषय तौर से बहूत हुए बनलाया, कि सार नेपाल में नेपाली (गार गागी) भाषा का बही स्थान है और रहना जा कि भारत में हिन्दी का। पर, नेपाल बहुभाषिय देश है। यहाँ के लोगों का यदि जल्दी से चली मालर और गिणित करना है, तो प्रारम्भिक गिणा का माध्यम उनकी भाषाओं का रखना होगा। नारा भाषा का अपना पुराना लिखित साहित्य है। उसे बसा के लिए पाठ्यालो नपार करना मुश्किल नहीं है। पर गुरु ग मार आर्ति में भाषाभा का भी नागरा गिणि में गिणा का माध्यम बनाना चाहिए, जो अभी तक लिगो नहीं गद है। कुछ लोग का गना था कि मैं

नेपाली भाषा का पक्ष कमजोर करूँगा, लेकिन मैंने कमजोर करने की बात तो दूर, इसे और सबल करते हुए कहा कि जिस राष्ट्र में बहुत सी भाषाएँ हैं, वहाँ एक नम्मिलित भाषा की अत्यन्त आवश्यकता है और सौभाग्य से नेपाल में वह भाषा पहले ही से मौजूद है। इसलिए उसे हम छाड़ना नहीं है। नेपाल अपना विश्वविद्यालय कायम कर जिसमें उच्च शिक्षा का माध्यम नेपाली हो। महिला गुरु ने भी जतन में अपने भाषण में भरे विचारात्मक सहमति प्रकट की। नया नेपाल न भाषा के सम्बन्ध में कुछ गलत सलतयानें लिख डाली थी जिसके कारण उस दिन मुझे अपना विचारात्मक जीरो स्पष्ट करने की जरूरत पड़ी।

२८ जनवरी का मध्याह्न भोजन श्री गणेशमानजी के यहाँ हुआ। स्वतन्त्रता आन्दोलन में राणाग्राही के खिलाफ गणेशमानजी ने बड़ी हिम्मत के साथ लोहा लिया। उन्हें कष्ट भी बहुत भलना पड़ा था। कांग्रेस मनिमण्डल में वह एक मंत्री थे। मुझे उन लोगों की बात सच्ची नहीं मालूम हुई जा उन्हें मस्तिष्कहीन ताता बतलाना चाहते थे। बालन और समझनवाले आदमी थे। वह रह थे— राणा-नेहरू निभुवन के निकट में पड़े कर कांग्रेस मनिमण्डल अपना काम में सफल नहीं हुआ। नेहरू जी उनके प्रति निधि केन्द्रस्वरसिंह यहाँ किसी भी प्रगतिशील काम उठाने का विरोध करते थे। राणा नजरबन्दा से निकलने ही गिराज का बाहर की हवा लगी और वह गुलछरें उड़ान लगे। राणा साल में ८८ हजार खर्च के लिए तैयार थे। प्रथम अन्तरिम सरकार ने उसे छ लाख कर दिया। मातृ का मन्त्रिमण्डल ने दस लाख दिया। अब नेहरूग्राही सलाहकारों की कृपा से बाग लाख से ऊपर सालाना उन्हें मिल रहा है। माहनेगमगर ६० लाख में ऊपर की सान चाँदी की सम्पत्ति नेपाल में बाहर ले जा रहे थे। हमने उसे रोका। नेहरू ने दबाव डाला और हम छोड़ देना पड़ा। सरकार के गृह मन्त्र सिनेमा की जिस राणाग्राही ने भी बस ही रखा था और जिसने दाम छ लाख देने के लिए तैयार थे— गिराज ने अपना कृपापात्र का पहला डेढ़ लाख पर बचन की बात कहा और पीछे एक तरह मुफ्त ही दे दिया। जर्मन के विधाना स्वयं गराव सिगरट और दूसरी चीजों का स्टॉक ने दफ्तर के भीतर लाकर चोरबाजार में देने के लिए तैयार है, वहाँ क्या आया हो

सकती है ? मच्चमुच नेपाल के गामन की भीतरी स्थिति की जो बातें उस दिन मालूम हुई, उनमें नेपाल के किसी हितैषी का भेद हुए बिना नहीं रह सकता ।

गणेशमान का परिवार नेपाल राज्य के बड़े-बड़े पदा पर रहा, सामन्त गाही जीवन में उनका बचपन वाता । नेपाल में गराव पीना आम चीज है । ब्राह्मणों में भी वित्त ही उस पीते हैं । दबी और गक्ति के उपासन होने से उनका इतना बहाना भी मिल जाता है । पुराने जमाने की गराव की मुरा हिणों और छाट छाट चपक उहाने दिग्याये । मेरु साधिया में उमके आनन्द लनवाल भी कुछ थे । चाँदी-मान की मुगहिया में सुदर हुडल और पतली लम्बी टाटा लगा थी । चपक साधारण लागा के बाम क और उच्च बग क चाँदी-मान के हान थे । बटुन ऊपर में पतली धार प्याटे में छाटी जानी त्रिमरु कारण उममें फेन उच्छ्र जाता । इमी फनिल मदिरा का लोग पीते हैं ।

२६ जनवरी का दोपहर बाद में अपने पुराने महायन घममान साहू के घर गया । यहाँ और लहामा में घममान साहू के घर में जब-जब मैं गया, घर की तरफ़ जहाँ स्वागत हुआ । साहू अब नहीं थे । उनके यात्रे मन्त्र पुत्र पालमान साहू भी जवानों में हा चल बस । बड़े पुत्र त्रिरनमान और छोटे पुत्र पूषमान आजकल लहामा में थे । उनकी दूमरी पीढ़ी के कुछ तरण घर में थे । उनकी बटुणें तो मुझे अच्छी तरह जानती थीं क्योंकि नेपाल में बभी-बभी महीना मैं उनका अतिथि रहा, और त्रिरनमान पित्रान का भार उही के ऊपर था । पालमान साहू की बटुन बड़े त्रिनन त्रिरान पित्रान की आग हमारा हमारे यहाँ उनसे थ जय की बार क्या नहीं जाय । मैं अपना दाय स्वीकार किया । त्रिनन, मैं जानता था त्रिरनमान दाना भाई यहाँ महा ५ कमलिण नहीं आया । पहले मिठाई के गाय निव्यनी ताय और स्वादिष्ट म्ययुन (चीनी मूष) जाया । जगा में पट भर गया । यदि मालूम होता कि मामा भी यानी पड़ेगा तो उच्छ्र बस किया जाता । मामा का २ बने पर टाउ किया । सबके ऊपरी मत्रिण पर छाटी-नी छन को दिगलाया गया । यहाँ घममान साहू बैठकर ध्यान-भूजा किया करन थे । यह छोटी मत्रिण न ऊपर है और आगगाय के घरा नी छनें नीची मानूम हानी थीं ।

यहा से सडक शहर का दूर दूर का नजारा देखने म आता ।

धममान साहु ने अपने परिश्रम से अपने को तिब्बत क नेपाली ब्यापारिया म सबथेष्ठ बना दिया । उदारता तथा दान-पुण्य म तो उनका काई मुकाबिला नही कर सकता था । तिब्बत के बडे बडे लामा या अफसर यही उनके घर म ठहरा करत थे । उनकी उदारता और दानशीलता न ही आग उनकी कोठी का आज छठे नम्बर पर ही नही रहने दिया । मूल पूजी से लाख रुपये उहाने बिहारा की मरम्मत और दूसरे धार्मिक कामा म लगा दिय । कुछ कमचारियो ने भी धाखा दिया, जिसस कोठी को संभालना मुश्किल हा गया । परिवार म आधे दजन से अधिक लडक हैं जिनम से चार काम करन लायक है । प्रयक्मान तिब्बत म ही रहते हैं, एक मट्रिक पास भी है । बहू ने बडे दु ख से कहा । अत्र बँटवारा करने जा रह है आप समथाइय ।' उनके घर म मेरी बात चलती थी, इसी विश्वास पर उहोने यह कहा । लेकिन सयुक्त परिवार म यह दिन आता ही है । अभी हमारे व्यवसायिया ने यह नही समझा है कि चूल्हा का बँटवारा करना चाहिए व्यवसाय और पूजी का नही । वस्तुन जिसम किता के दिल म सदेह न पदा हा उम तरह व्यवसाय चलान का गुर भी नही मालूम है, जिसक कारण सगडे पदा होने लगते है । कितनी ही जगह बँटवारे का कारण स्त्रियो का कलह ही होता है लेकिन यहाँ स्त्री बँटवार के विरुद्ध थी । बडा क विलास और आलस्य ने भी कारवार को धक्का लगाया ।

मैंने यहाँ की भापाआ को दख करके अपन नवार मित्रा क सामन भी कहा—नेवार भापा भी उसी किरात भापा की गाखा है, जिसकी गाखाएँ गुरुग मगर, सुनवार तमग, याखा लिम्बू राई ही नही बल्कि नेपाल स बाहर पश्चिम म चम्बा कुल्लू की लाहुली, कुल्लू की मलाणा, कनौर, गडवाल की मारछा कुमाऊ क राजकिरात और पूव म सिक्किम क लप्चा और आग आसाम के नागा हाते दूर तक चम्बाज तक फले लोगा की भापा है । यह यान एक गिहित भद्रपुष्प को पसन्द न आई । किरात गान वस्तुन ससृत्त म बहुत पिछे लागा के लिए इस्नमाल हाता है जा पूर्वी नेपाल म रहते हैं । पर काई जाति सबडा थपौ स यन् पिछडी चली आई है तो भविष्य म भी बह ऐसी ही रहगी यह मानना गलत है । एन देग की रहने

वाणी सभी जातियों का आन के युग म एक मे सांस्कृतिक और आर्थिक स्तर पर जाता अनिवाय है। मैं कहा, किरात शब्द का छाड़िये आजकल के नम्रवक्ता जिस मान्-स्मेर जानि कहत हैं उमा की यह भाषा है जिसम वम्पान और घाट (स्वामी) जैसी जातियाँ भी हैं। इसका यह मतलब नहीं कि जा गग आज किरात भाषा वाचन हैं वह मजबूत मव भूत किरात ये। कितनी ही बार दूसरी जगहों म आई जातियाँ नय म्यान म बहुमदका म यह रट उन्हीं की भाषा अपना ली हैं। इसलिए यहाँ क नवार ब्राह्मण क्षत्रिया के द्वारा परिवार मधेस म आम इस मानन म विमी का आपत्ति नहा है और ऐतिहासिक काल मे आन स तीन ही चार सौ वर्ष पहले एमे बहूत म लाय जाण इसका प्रमाण मौजूद है। आज सभी नवार लागा की जाँस पर ना वाणी-बहुत मंगालामित छाप है, वह उमी रक्त-मम्मिश्रण क कारण है।

३१ जनवरी नेपाल प्रवास का अन्तिम दिन था। उस दिन हम जनरल कमल गमगेर म १० बजे उनक महल म मिलन गए। पहले भी मैं इस महल मे आ चुका था और जनरल न बड़े स्नह और सम्मान क साथ अपन पुस्तकालय का दिखाया था। वह राजनीति और मैतिक विद्या म विशेष र्वि रासत हैं। इन विषया पर मैकंग अंग्रेजी पुस्तकों का एक पुस्तकालय म बहूत अच्छा संग्रह है। दूसरा र्वि उनकी प्राचीन इस्तखित ग्रंथा के संग्रह की है। उनक पास मण्डा हाथपाथियाँ हैं। यद्यपि उनका महल आधुनिक ण पर इट और सीमट का बना है जिम कम-स-कम लखड़ी ग्याई गई है ता ना वाप लगन क डर न इन अनघ प्राचीन पुस्तका का अग्निरहित लाह की आलमारिया मे रगा है। जनरल कमर राजा त्रिभुवन क बहनाई हैं। पहली पत्नी का दण्ड हा चुका है त्रिमम उनका एक पुत्र है। दूसरी राना तन्गी थीं त्रिनके का बच्चा और एक बच्ची थी। उन्होंने अपन परिवार क जेट कराया। मैं दम्पती आर बच्चों का फाटा लेना चाण उन्होंने उन नी तुगी म लन दिया। यद्यपि कमर गमगेरचंद्र गमगेर के मुनीधे गण ध्यापी तानागनी म पत्न, और उमी म बूट हुए। अपन पिता के महान् बन्धु म कराया क म्पामा बन, पर एतना अध्ययनगोण ध्यति नय जमान का र्वि ग अर्तिचा नहीं रह सरता था। गायद इनकी धली हुआ ता

राणा वंश का उस तरह से अंत नहीं हुआ होता जैसा कि हुआ। उनसे बड़े दो भाइयों—मोहन शमशेर और बबर शमशेर—थे जिनमें बबर यथा नाम तथा गुण थे। वे दुर्योधन की तरह कहते थे सूच्यग न दातय त्रिना युद्धेन केशव' (हृकृष्ण, युद्ध के बिना मूढ़ की नाक भर भी जमीन में नहीं दूंगा)। राणाशाही शासन के जाने के बाद भी बेसर शमशेर का प्रभाव नहीं घटा यह उनके सुधरे विचारों का कारण ही है। सलाहकार सरकार में वही एक तरह सर्वोपरि हैं। त्रिभुवन में न शासन की योग्यता है न अच्छी-बुरी सलाह में विवक करने की बुद्धि। केसर शमशेर उस समय भी मरे साथ सौहाद्र प्रकट करने में पाड़े नहीं रहे जबकि मैं नेपाल में बड़ी सन्देश की दृष्टि से दया जाता था। ६२ वर्ष का हुआ चुने है इसलिए फिर मुलाकात होने की क्या जागा हा सकती है ?

वहा से लौटकर माहिला गुरु से विदाई लेने गया। वे तो और पक्का फट हैं स्वास्थ्य भी जग्राव दे चुका है। विदाई के समय वे बात से भी प्रकट करते थे कि अब फिर मुलाकात नहीं हो सकेगा। नेपाल में सस्कृत विद्या और सांस्कृतिक ज्ञान के ये अद्भुत भंडार थे। राजनीतिक विचारों में अपने स्वामी (राणाशाही) के विरुद्ध बह जाकर वहा का रह सकत थे ? त्रिभु और वाता में वे बड़े उदार थे। मैं परम नास्तिक और वह परम आस्तिक थे। मैं कम्युनिस्ट और वह सामंतवादी तब भी मिलन पर कोई बह नहीं सकता था कि किसी तरह का मतभेद रखत हैं। बड़ा लडका जिस पिछली बार मैंने १०-१२ वर्ष की उमर में देखा था जीर पाटा लिया था अब वह छ फुट का जग्राव सस्कृत में साहित्याचार्य करके बी० ए० की परीक्षा देने वाला था। छाटा लडका १०-१० वर्षक बम्बई में रहत पिता में विलायत जान की आज्ञा मांग रहा था। यह उमका गिष्टाचार था नहीं तो जग्राव पर बठार उम इंग्लैण्ड या अमरिका जाने में क्या स्कावट हा सकती थी ? पिता के त्रिण आना दना मुग्गिल था क्याकि यह राजगुरु का बग टहरा राणा जीर धिराज दाता बग का कई पीढ़िया से ये मात्र देने जाए ये। नेपाल में छूआछून और जान पान का ठकनार यही बग रहा है। विलायत जान पर पर क्या वह इन बातों का विचार कर सकगा ? और समय भुक्ति का त। यह थी कि अभी वह अविवाहित था। वहाँ जाकर यदि मम द्याह

लाया तोपिण्डदान से महस्म हाना पडता । चिन्तित थे, लेकिन जानते थे कि आजकल के जमाने में परत उग आए पछी की तरह मयान घेठ का उठने से नहीं राना जा सकता ।

भाजनापगत देवपाटा की आर जयदागश्वरी में गए, जहा नेपाल (गोरखाली) साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन हो रहा था । यही पास में वह बाग है जिसमें तिराज रणबहादुर आकर बसकर रहा करते थे । रणबहादुर ने एक निरहुता विवाहिता ब्राह्मण तरणी कान्तिमती पर मुग्ध होकर उस पर मन्व निहावर किया । उस पटरानी ही नहीं बनाया, बल्कि उसी की सन्तान आज के घिराने हैं । यह प्रतिलाम विवाह था जिसका कारण सन्तान को हिन्दू धर्मशास्त्र के अनुसार ब्राह्मण क्षत्री से निचले वर्ग में जाना चाहिए था लेकिन 'समरथ' का वीर एता कर सकता था । वस कौन-सा राज का दूध का घुगा है ? आजका मौजूद भारत के महाराजाओं में एक के पिता मन्तान उत्पन्न करने में असमर्थ थे उन्होंने इस काम के लिए एक स्वस्थ मुसलमान तरण का अपन यहाँ रखा । जिस बीमादिपा का ये धिराज का अपना मन्व-घ जाडता है उसमें म्वय पढ़ एक अय जानाव विषका पटरानी हुई थी । पुराने शास्त्राचार में कोई फायदा नहीं । जहाँ तक आज का मन्व-घ है, उन पुराने मन्व-घ के कारण किसी का हुकरा पानो बंद नहीं किया जा सकता । चाहे कलियुग कथिय या आधुनिक युग, अरु तो सारा भारत एक वर्ण हान जा रहा है—सबकी रागी उठी एक शक्ती गुरु हा गद है । गायद इस गाली के बाद यह नए रुढिवादिया व बूदापन का सबूत मात्र रहे जायगा ।

सम्मेलन सुली तमह में हो रहा था, जा मन्तान गा नहीं बल्कि एक स्वाभाविक मूले तागाव जमा मात्र में हाता था । नर नारी काफ़ी मन्वा में वहाँ मौजूद थे । निव-घ कविता-गाठ, कथा-कहानी-गाठ मयान और नव्य मभी प्रामाण में थे । नेपाल में कुछ बाता में गता मुक्त वातावरण रहा । यना ता वर्ग के लोग जानते ही नहीं थे और हाल में हुए नारी-नवजागरण के कारण नी हिनया मारी बाग बढा थी । यमगा की कुछ कहानियाँ हिन्दी पत्रा में छप गुरी थी इसलिए वह अपने अधिवार से यनी उपस्थित थी । श्री यादव गार्गी और दूसरे मित्रान आयाज दो महापण्डिता ना कुछ

सुनाएँ। लेकिन महापण्डितानीजी की हिम्मत नहीं हुई।

सम्मेलन से हम अंतिम बार पशुपति के दगन को गए। हमारे दगन का मतलब है ऐतिहासिक वस्तुओं का श्रद्धा भक्ति से अवलोकन, उनका फाटा और उनके बारे में कुछ नोट लेना। पशुपति मन्दिर का सामने से फोटो फाटक के भीतर घुमकर ही लिया जा सकता है और यह मना था। ऐसी जगह पर कैसे काम लेना चाहिए इसका मुझे तर्जुमा था इसलिए वहाँ के रक्षक के नहीं करन में पहले ही मैंने रोलेफ़ेक्स को टिक्कर दिया, फिर भलेमानुस की तरह मैं अज्ञान हान का बहाना करके छुट्टी ले ली। नेपाल उपत्यका की और विदोपकर देवपाटन की खण्डित मूर्तियाँ मद्यपि दसवीं शताब्दी के बाद की ज्यादा हैं पर कुछ उनमें गुप्तकाल और उससे तुरन्त बाद की भी हैं। बागमती के घाट पर प्रायः पुराण प्रमाण बुद्ध की एक खण्डित प्रतिमा बहुत पुरानी है। जनकशालजी ने बतलाया कि परले पार एक लेख सहित पुरानी मूर्ति खेतों में पड़ी है। हम पुल से पार हा नदी के किनारे किनारे उधर गए। किनारे से ऊपर खेत में चलते समय बड़ी बड़बुद जाने लगी। इधर उधर देख रहे थे वहाँ से गंध आ रही है। देखा, जिस खेत की मड़ से हानर हम चल रहे हैं, उसमें ही कृपक दम्पती बाल्टी में भर पागाने का हाथ से बड़े इत्मीनान में थोड़ी थोड़ी जगह पर रख रहे हैं। किसान को ऐसा ही हाना चाहिए। मैंने जापानी किसानों को ऐसा ही देखा। यदि ऐसे किसान हमारे भारत के गाँवों में हाते, तो गाँव इतने गंदे न हाने, कि भीतर घुसते धक्क नाक पर रुमाल रखनी पड़ती। मूर्ति के पास गए। वह त्रिविज्रम की तथा लिच्छवि शासनकाल की (छठी शताब्दी शताब्दी) की थी। इसका उल्लेख किसी विद्वान् न करी किया था। नेपाल में ऐसी अनुल्लिखित बहुत सी मूर्तियाँ और ऐतिहासिक चीजें हो सकती हैं, नेपाल उपत्यका के बाहर सप्तगण की और करनाली की उपत्यका भी सांस्कृतिक बँध रही है वहाँ का अनुसंधान तो एक तरह अभी हुआ ही नहा है। एक बार श्री जनकलाल शर्मा कुछ दिनों के लिए वहाँ जाकर कुछ बात और अभिलेख जमा करके लाए थे। जनकलाल शर्मा जन्म-जात इतिहास और पुरातत्व के अध्येता हैं। 'व्याकरणनीय हान से संस्कृत पर उनका अधिकार है और साहित्य रत्न' होने से हिन्दी के साहित्य पर भी। उहाने पुरानी लिपियों का स्वयं

परिश्रमपूर्वक मीला है। पुराना चीजा के लिए उनके हृदय मे तीव्र जिज्ञासा है। उसी का यह परिणाम था कि हम दूर नेता मे पडी इस त्रिविधम की मूर्ति को देखने गए। यदि उह अवसर मिला, तो नेपाली के पुरातत्व के क वर्निषम हा सकेंगे।

उस दिन रात्रि भाजन श्री त्रिविधम के रीनिषार के यहाँ हुआ। पहले दिन निरामिष था और आज मामिष।

मसूरी मे

१ फरवरी का हमने यमि परिवार से विदाइ ली। मैंने उह लडका घमरतन क तीर पर देखा था। जब वह जायु और नान दोना भे प्रौथे। उनकी पत्ना हम नाना क जातिव्य म जोर भी लगी रहती थी। घर का सारा काम उह करना पडता था। कई बच्चा को सँभालना था। लेकिन वह साधारण चूल्हा चक्कीवाली महिला नहीं थी। जब उनसे पति ने जेल को अपना घर बना लिया जोर काई सहारा नहीं रह गया ता वह अपनी शिक्षा का ब्याकर अन्वेषिका बन गई। जब मौका जाया ता वह स्वतंत्रता की लडाइ म भी कूत्ने स वाज नहीं जाइ। इसम सत्तेह नहीं, उनका वीरता पुरुषा की वीरता म नहीं बल्क चत्कर थी क्यानि तपा म क्रर सामत बादी पुरुषा का शासन था।

साठे जाठ बज चत्कर ६ बजे इन्नाइ जटडे पर पहुँच गए। दा चार बरतन चिउरा जोर कुछ नेपाल की सौगात हमारे साथ थी। कस्टम के लायर काई चीज नहीं था। चार हफता रहने स उपत्यका क सिागिता न नाम गुन लिया था। जनकलालजी मानसजजी, यमिजी जोर दूमर बहुत स मित्र जटडे पर बिनाई दने आए। नेपाल स पटना, समरा वीरगन और पाल्पा तान जगहा का विमान जाया करन थे। विमान चगानवाली कम्पनी भारतया थी। अभी विमान चलन का काम भारत सरकार न अपन हाथ म नहीं लिया था इसलिए प्रन्ध म गन्बडा भी थी। पहल सेमरावाला विमान आया। उसक उड जान पर पटनावाला आघ घटा ल्ट रह कर

आया इमा से श्री खड्गमानसिंह उनर । राणागहा क खिलाफ जादाला म भाग लनवाला । म वह एक प्रमुख व्यक्ति थे । आजकल सरकार क सलाह वारा म थे । हम कुछ ही मिनट तक बातचीत कर सक । फिर श्री वाचंद्र गर्मा, कवि कलरनाथ बंधित श्री धमरन यमि मानसनी, श्री कलनाथ अधिकारी और उनर परिवार स नमस्त की ।

नपाट म नय और पुरान परिचित मद्दय पुण्या और महिआ की मधुर स्मृति लेकर ११ बजकर १० मिनट पर हम पटना के लिए चडे । आगमान साफ था । उपत्यका अपन माहन रूप म नीचे पनी हुई थी । गिरि परनाट का लौघकर विहार की ओर बटे । यादर नगी था लेकिन धुप बूत थी । तराई क जगला का पारखर उम भूमि म पहुच, जहाँ कभी लिच्छविया का प्रनासी गण था । बभकगाला गण क उच्छिन हान पर मगय की परतप्रता स्वाकार करन की जगत् लिच्छविया न पहाट म गरण लना पसद रिया । हम वकन हम आवा घट म उनकी पुष्य नगरी क ऊपर पहुँच गण । लेकिन हमें अपन परिवार और कुछ स्थावर जगम सम्पत्ति लेकर नपाट पनुचन म मत्तानों लग गे । कनी पहल उहाने जयना गामन गण व्यवस्था क जगुमार का स्थापित किया हागा । पीछे वही लिच्छवि राजका हा गया जा कि नेपाल क प्रथम एतिहासिक गामक थे जा र जिनक पुगतामिथ तराप उपपत्ता म मौजूद हैं । प्राचीन लिच्छवि भूमि पहाट गण्डक क पार ना कुछ रग हागी क्वाकि यह गजनाग (गण्डक) मुक्त बना करनी उनका धारें बरना करनी थी । नगक-मरीग धाना क ऊपर म हान नूण हम गगा य । विगाट वाटुता की ओर बटे और उन पार हा मवा १२ बज पटना की घन्ती पर डार । श्री वाचंद्र निधारा वाचंद्र बाबू अरमुननी आदि वहाँ मौजूद थे । मामान लेकर वाचंद्रका क बगल पर छानू या म पहुँच । नर गण्ड नाई श्री मर जमिन् मित्र १० मारगनाथ विवग छना ३ आकर दारगर कर रह थ । उनका पनी वही धामार पनी थी ।

पटना—२ दरवाी का मित्रा स मित्रन निरग । पुगात गाधी नाई चन्द्रमार्गि रामन म मिल ग । चन्द्रमार्गि क रगा ही तरगा क मध्य एतिहास नजर क मामा आ जान है । लाहीर पठयन म मुनारि वनकर शक्तिवारिषा का पीजा शिखन या रगाद्राहा का शक्तिना म मारकर उसक

पाप का बदला चंद्रमा भाई ने ही लिया था। उस समय आतिकारी अपन काम के लिए पैसा जमा करने के वास्ते डाके डालते थे लेकिन ज्यादातर सरकारी खजाने पर ही। चंद्रमा भाई ने रेल के खजाने पर हाथ साफ किया। चाहते थे स्टेशन मास्टर हट जाए लेकिन उसने पकड़ना चाहा, इस पर गोली दागनी पड़ी। संयोग ही समझिए जा फांसी न मिलकर उन्हें आजम कालापानी की सजा मिली। बहुत वर्षों तक जेल में रहकर उन्हें छुट्टी मिली। वह विचारा में जोर आने लगे। उन्हें मालूम हुआ कि कम्युनिज्म (साम्यवाद छोड़ कोई दूसरा रास्ता नहीं। वह कम्युनिस्ट बन तब में जोर बराबर मजूरों की सेवा में लगे हुए हैं। ४०-४२ के दशक के जेल जीवन में हम एक साथ रहे। उस समय चंद्रमा भाई से कितना मजाक होता था कितना आत्मीयता स्थापित हुई थी? आज भी उनका प्रति वही स्नेह और सम्मान मेरे हृदय में था। वह पटना में नहीं रहा करता था। यह मयाग था जो मुलाकात हो गई। पार्टी के दूसरे साथियों से भी भटकी। फिर अपने जिले के श्री गोरख पाण्डे का गूगा स्कूल को देखने गया। वकील बनकर उन्होंने कालात्त नहीं की कुछ दिनों तक अग्रजी समाचार पत्र में काम किया फिर उनका ध्यान गया असहाय गृह बहुर बालकों की आर। अपने ही उनके बारे में अध्ययन किया और अपने ही एक किराए के मकान में पटना में आकर स्कूल चला दिया। हमारा सामान्य थी लेकिन लगन उनका पास थी। उनकी पत्नी भी सहायक हुई। अब यह देखकर बड़ा प्रसन्नता था कि उन्होंने अपना पक्का घर बना लिया है। सरकार भी स्कूल में सहायता देती है। १९४२ में अभा वह तम्पनाई की सीमा से पार नहीं हुए थे, और जब उनकी तीसरी पीढ़ी सामने आ गई है, दादा दादा के स्थान लेने वाले आ मौजूद हुए हैं। उन्होंने स्कूल दिखलाया।

यहाँ से लौट कर योगेश्वर का यहाँ भाजन किया। छपरा के राजनीतिक जीवन के मित्र ब्रह्मचारी मंगलदेव (बनिनापुरी) ने अपने सामूहिक विद्यापीठ के देखने का जाग्रह किया। हम उनका साथ गया था किनारे देशीकी बाठी में गए। ५० से ऊपर विद्यार्थी थे। उस समय संस्कृत वाचन का नियम था और छ सप्ताह में विद्यार्थी उसमें अच्छी प्रगति कर लेते थे। वह संस्कृत के प्रचार तक ही अपना काम सीमित नहीं रखना

घाते थे, बल्कि चाहते थे, कि सान आठ साल पढकर विद्यार्थी मट्रिक की परीक्षा दे दे। मैंने कहा इसमें आप पुरापियन स्कूला की कुछ अच्छी बातें ले लें। वहाँ अंग्रेजी का माध्यम रखते हैं, जिसका हमारी भाषा से कोई सम्बन्ध नहीं है। सश्रुत हिंदो का जीवन सात है। आप इसकी जारी रखें। पीछे न जान क्या विद्यापीठ की इस विदोषता को छाड दिया गया।

उम दिन गाम का चाय श्री माहनलाल विदनाई न यहाँ पी। उहोने आपह पूवक "नेपाल" को प्रनागित करने के लिए मागा। हमने उमके कुछ भाग को उमी समय द भी दिया। यह २ फरवरी १९५३ की बात है आज १९५६ का अंत है तीन वष हो गए 'नेपाल' उनके पास पडा है। ३०४ पृष्ठ छापकर न आग बढन का नाम लेते हैं न पीछे। लेखक क्या करे? इतनी महान करक नए आँकडा के साथ विम पुस्तक को तयार करके दिया वह सटाई मे पढी हुई है। उह टकस्ट बुक ओर दूसरी छपाइया से फुरमत नहीं है। कोफन हाती है स्याल आना है कब ऐसी स्थिति से छुटकारा मिलेगा।

३ फरवरी का सम्मलन भवन म गिवपूजन बाबू से मिलन गय। कमला को क आन लगी। गाडी अभी पूरा तरह म ठहरी नहा थी, मैंन जल्दी बाहर जाकर उह मुह निवालन का मौका नना चाह। गाडी चल नहीं रही थी, पर झाक उसक साय था। गिर गया दाहिन घुटन म दो जगह घूम घूम निवलन लगा। बंदर की मात्र ओर हायवटीज वाले न घाव दाना ही गतरनाक हान है। सँर, गिवपूजन बाबू क कमरे म गया। उनमे थोडी देर बातचीत हुई। हायवटीज उहें भी है। बह ता कभा चर्वोघारी नहीं हुए। हायवटीज मुने भी थी लेकिन मैं उमे चिन्ता की बात नहीं समझता था, यद्यपि आज घाव के कारण न बह चिन्ता की चीज हा गई थी। मैंन उनक कान नि हनुलिन लीजिंग ओर बिना परहज के मत्र चीजें साइय। आप गकर क भक्त हैं लेकिन क्या पता है फिर दुनिया म आन का मौका मित्र या न मित्रे, इसलिय मोठे माठे रमगुल्ला और नुतनी क लड्डुआ से क्या आन का वचिन करे।

देने पर आरर परिगिति न ली। अब तो यही स्याल दृआ नि गाधे मसूरा करे, क्योंकि हनुलिन, परिगितिन, गिवात्रा पौडर क्या आउट-गट की अब एकान्त आराधना करना थी। रामु म बनारग, लयनऊ

तथा इलाहाबाद में भी जाने के लिए चिट्ठियाँ लिख दी थीं लेकिन वे सब प्रायाम् छान्न पड़े। पर पटना के प्रायाम् को तो छोड़ा नहीं जा सकता। उस दिन गाम के सवा ४ बजे बा० एन० कालेज के विद्यार्थियों के सामने भाषण देना पड़ा। अगले दिन (४ फरवरी) श्री शकुन्तलाजी मगध महिला कालेज में लड़कियों के सामने भाषण देने के लिए लगे। पर माइना मुश्किल था, कार पर जान पर भी कुछ दूर चलना पड़ा। चाय सायी चन्द्रशेखर सिंह और उनकी पत्नी शकुन्तलाजी के यहाँ थी। चन्द्रशेखर पार्टी के मेम्बर होने से हमारे साथ घनिष्ठता रखते थे। बुद्ध के दिना में नजरबंद होकर हम एक साथ रहें थे। शकुन्तलाजी हमारे छपरा के पुराने सहकर्मी और मित्र नारायण बाबू की पुत्री थी जिन्हें मैं बचपन से ही जानता था। आज नारायण बाबू की पत्नी भी यहाँ उपस्थित थी और चन्द्रशेखर की माँ भी। पटना से छुट्टी ली। सबेर ५ बजे की गाड़ी पकटनी थी। यात्रा बाबू ने हमें स्टेगन पहुँचाया। पंजाब मेल में जिन दर्जों का टिकट था उसमें जगह नहीं थी इसलिए निचले दर्जों में बठे। अधेरा ही था जब कि ट्रेन चली। पटना और जारा के जिलों के भीतर से दौड़ती वह ८ बजे मुगलसराय पहुँची। १० बजे देहरादून एक्सप्रेस आया। पंजाब मेल से चलते, तो आधी रात का लुक्सर में पहुँचकर गाड़ी बटलनी पड़ती और जब पर में चोट लेकर जा रहा था इसलिए गाड़ी का यही बटलना पसंद किया। दोपहर बनारस पहुँचे। आज मखबर छपी देखी कि राहुल जा २ बजे आ रहे हैं। और हम बनारस से आगे बढ़ें। ट्रेन अयोध्या-फजलाबाद के रास्ते चक्कर काट कर चली। साथ बठे सज्जन रात में यात्रियों के हूँ और लुटन की बात कर रहे थे। कमला घनराई। मैंने कहा— 'दमियों हजार यात्रियों में एक दो की ऐसा जीवन आता है। हम क्या कम अभाग्य में नाम लिखाएँ?' फजलाबाद में क्या विद्यालयों की काइ जफसर महिला अपने बच्चे के साथ चली। उनसे पतिद्वय गाड़ी पर चढ़ा कर जफर विदाइ लाने लगे और ट्रेन चलने का हुई तो पत्नी ने पतिद्वय की चरण धूलि माये पर लगाई। मैंने कमला से कहा 'दया।' वह कितनी ही बातों में प्राचीन पवित्री हैं, लेकिन उन्हें भी यह पसंद नहीं आया।

लखनऊ पहुँचने अधेरा ही गया था। जगह मिल चुकी थी, इसलिए

भीड़ हान पर भी हम कोई परवाह नहीं थी। ६ फरवरी का दरद्वार म मवेरा हुआ। आग इजना को गडबडी व कारण ट्रेन लट हामर साडे ६ वजे टहरादून पहुँची। महताजी सहायता व लिए स्टेशन पर मौजूद थे। गुबर्जी व यहाँ ठहरने का म्याल था लेकिन पैर की चाट लकर अत्र एक दिन भी और मरना पसन्द नहीं आया, और १२ मपये म टक्को पर बाजार से कुछ चीजें खरीद हम सीधे ममूरी पहुँचे। चलाई म भाटर को सवारी करन पर कमला का जवदय व हानी थी लेकिन आज नहीं हुई। गायद जुवाम व कारण प्राणभक्ति का बकार हाना कारण था।

ममूरी—विताउपर स रिक्शा लेकर चले। एक माह पार करन पर बफ मिलन लगी। आज का हफ्ता पहले—१६ १७ जनवरी का—बफ पडी थी जिसक अवगम अब भी कई जगहा पर मिल जो बनला रह थे नि यहाँ फुट डेड फुट बफ पडी होगी। घर पर पहुँच भूतनाथ स्वागत व लिए तयार थे। यद्यपि माटे नहीं हुए थे, पर एक महीने की गैरहाजिरो म काफी ऊब उम्र निगलाई दे रह थे।

कमला पिछले साल कलिम्पाग हा आई थी अब फिर जान व लिए उरसुव थी। मैंन आग्रह देगकर बहा, अच्छा जाआ।

अत्र घाव को अच्छी तरह दगभार करनी थी बाएँ घुटन म काई बान नहीं थी, लेकिन दाहिना घुटना भुन नहीं रहा था। इन्सुलिन और पनिसिम्पिन व इजेकान राज चलन ला। कमला इजेकान स्थान म निपुण हो गई थी। लेकिन, उनके जाने पर इजेकान की भी समस्या थी। श्मा समय उनकी मगलो बहिन व बीमार होन की चिन्ती छाई। उनका जाना निश्चिन था। सुगहाल भी अब काम छाटना चाहता था, यह दूसरी गमसमा थी। पर अब अवन घर म य स्थिति काम किमी न जिसा तरह चल ही जाना।

१५ रविवार का कमला कलिम्पाग व लिए रगना हुई। अबले इतना लम्बी यात्रा रहा बा था और ट्रेन म खून और डरनी को बान गुनकर डरनी भी थी, लेकिन महिलाआ का पाहर मनुन त्रिय हाना है। टहरादून म महताजी म कलकत्ता बाउ मल म बटा मिया, और वहाँ म आन जान म मल्लभ भाद तथा गैरजी सहायता करन व लिए तयार म। लेकिन अब

तक कलिम्पाग पहुँचकर उहाने चिट्ठी नहीं लिखी, तब तक चिन्ता बनी रही।

१७ को ममगाईजी न अपने लडक की बात बतलाई। वह काप्रेस के लिए कई बार जेल गया था। म्युनिसिपलिटो के मामूली कर्मचारी थे। बड़ी कठिनाई से अपन इक्लौते बेटे का उहोने महा के युरोपियन स्कूट और पीछे देहरादून डी० ए० बी० कालज मे पढाया। लडका तेज स्वस्थ था और सना मे जाना चाहता था। परीक्षा मे उसका २४वा नम्बर आया उसे प्रवण मिलन का हक था लेकिन २४ का ३४ बना दिया गया और उनके पान सूचना भी नहीं दी। दूनु होना ता बात उतने ही मे खतम हो जाती लेकिन लडका दिल्ली पहुँचा। आफिम वाले पकडे गए। गलती हा गई 'कहकर उसे स्थान दिया गया। अब भरती कराने मे हजार रुपय स ऊपर खच की जरूरत थी। इस तरह के सकट उपस्थित कर क्या हमारी वतमान व्यवस्था लागो का जवबदस्ती बर्दमान बनान के लिए मजबूर नहा कर रही है।

उमी दिन महादेव भाई क तार स मालूम हुआ कि दोपहर के ३ बजे कमला कलिम्पाग के लिए रवाना हा गई।

२० तारीख को 'पुरानी और नई पीढी' पर एक लेख लिया। मैं पुरानी पीढी को बहुत बाता मे अयाग्य समझता हूँ, कि समस्या का हल निनालना नई पीढी के ही बस की बात है। पुरानी पीढी गरीर स ही निबल और बूढी नहीं है बल्कि मानसिक तौर मे भी वह जक्षम हो है। पहले स गद्दी जमा लेने के कारण फसला पुरानी पीढा के हाथ मे हाता है। वह नई पीढा को किसी तरह का सुभोता देना नहीं चाहती है न उसकी याग्यता को स्वीकार करती है। पुरानी पीढी यह नहीं समझती कि भाग्य का फसला करना उनके हाथ मे नहीं है—नई पीढी क ऊपर उनका फसला लागू नहीं हागा बल्कि नई पीढी का फैसला पुरानी पीढा पर लगेगा। हाँ अधिक मचित पान पुराना क लिए कुछ सुभोता प्रदान करता है। उनर अध्ययन और तजर्बे की गहराइ नई पीढी का सहज महायना पहुँचा ससती है। तो भी फामोला क पास बहुत मोमिन अधिकार हाता चाहिए। नई पीढी को भी हमगा यह ध्यान रखना चाहिए कि हम भी पुरानी पीढी बन जाना है तत्र हम भी वही गलता न करें।

२३ फवरी का अत्र घाव सूखना मालूम हुआ जिमसे कुछ सन्तुष्ट हुआ। १३ मार्च का कमला भी कम्प्याण से लौट आई। चिंता जीर उत्सुकता दूर हुई। अब तक घाव भी बहुत कुछ अच्छा हो गया था। फवरी के अन्त में ममूरी नगरपालिका के चुनाव की धूम थी। कई सालों तक बाइ का हटाकर मरदान अपने हाथ में सारा काम ले रखा था। चुनाव में हाटल के मालिक कप्तान तृपाराम अध्यक्ष पद के लिए खड़े हुए थे। वही ममूरी कांग्रेस के प्रधान थे, इसलिए और साथ ही सबसे बड़े हाटल के मालिक होने से उनकी पहुँच भी ऊपर तक थी, कांग्रेस का टिकट उन्हीं को मिला हालाँकि उनमें भी पुराने कांग्रेस कार्यकर्ता वकील बुकरती माहव मौजूद थे। उनके मुकाबिले में समाजवादी श्री रामकृष्ण वर्मा वकील यश बुकरतीजी खड़े होने, ता निश्चय ही उनका हराता मुश्किल हो जाता। सबेरे हुए।

३ मार्च से साथी स्तालिन बहाने थे। उनका मारा जीवन एक महान काम के लिए अर्पित था। प्रथम महायुद्ध में लेनिन के दाहिने हाथ होकर उन्होंने काम सम्भाला, और दूसरे में विजय प्राप्त करने का वाझ उनके ऊपर था। उन्होंने अपने जीवन के एक-एक क्षण का माट चुका लिया था। ५ मार्च की रात के ६ बजेकर ५० मिनट पर मारवा में उनका दहान्त हो गया। 'जानस्य हि ध्रुवा मृत्यु' — ७३ वर्ष की आयु पाकर वह विदा हुए। उनका यग शरीर ही नहीं काम भी मरने अमर रहगा। मार्क्स ने जिस मार्क्सवाद का दान दिया था और उसे पृथ्वी पर लाने का सम्मान बन गया था उसे पृथ्वी पर लाने में लेनिन सफल हुए। मार्क्सवादी प्रान्ति के लिए साधन जुटाना और उनका मरणापूवक दम्भेमान् करना लेनिन का महान् काम था। लेनिन मार्क्सवादी गति का आधिक तौर में मजबूत करने का निम्नवादी के घातक मरने में पार कराने का महान् काम स्तालिन का था। मैं उनके समय का बचकन में रह चुका था। यहाँ की प्रगति का मैंने आँगा बँगा मना दगा था। मुझे यहाँ की एक एक बात प्रेरणादायक मालूम होना है। पर, स्तालिन की व्यक्ति पूजा गन्तव्यी थी। लेनिन ने ज्याण्डरिन तार बनाया नहीं जा सकता था। क्योंकि व्यक्तिपूजा मार्क्सवाद के विरुद्ध थी। लेनिन ही बड़े हम एक दाप ने स्तालिन के महान काम को

नगण्य नहीं कहा जा सकता। इसी समय ह्याल आया कि स्तालिन पर कुछ लिखू। पहले लेख लिखा। उससे सतोष नहीं हुआ—खास करके यह ह्याल करके हिन्दी में स्तालिन की कोई अच्छी जीवनी नहीं है। 'स्तालिन' का लेख डालन पर साचा लेनिन के बिना पूरी तौर से रूस साम्यवाद का समझा नहीं जा सकता। लेनिन भी लिखा। फिर महान द्रष्टा माक्स कैसे छोटे जा सकते थे। 'माक्स' भी लिखा। एसिया के ६० कराड जाद मिया को साम्यवाद के रास्त पर आरुढ़ करन का जिसन महान काम किया और जिसके पथ प्रदर्शन में चीन आज इस तरह आगे बढ़ रहा है उस मात्रा से तुम की जीवनी का कमे छोड़ा जा सकता था? मैं इस साल य चारा जीवनिया लिख डाली। अगले दो सालों में स्तालिन 'लेनिन' छपकर निकल गई इस साल माक्स भी प्रकाशित हो गया, और मात्रा अगले साल जरूर निकल आएगा।

मुमुक्षु पूजावाद और उमर समथक आतनायी जभरिवन धलीगान आशा लगाए बैठ थे कि स्तालिन ने सभी सूत्रों का अपन हाथ में रखा है उनका मरत ही रूस का मारा गीराजा बितर जाणगा। लेकिन उह उमम पूरी तौर से निराग हाना पडा।

११ मार्च का थी गिवकुमार टिटा अपनी पत्नी मालतीजी के साथ आए। मालतीजी की कितनी ही कहानियाँ पत्र पत्रिकाओं में लखी थी पर यह नहीं मालूम था कि वह बनारस के श्रेष्ठेय प० रामनारायण मिश्र की नतिनी हैं। नाना ने लानो के वार में पत्र लिखकर मुझे परिचित कराया था। इस सुमम्हून दम्पति से अनेक बार मिलन का मौका मिला। टिटाजी अपने काय में बड़े दम और निरालस थे। वह स्वयं भी उठू के कथि थे। निर्वाचन के बाद नगरपालिका में जा दलबंदी और मधुप पत्ता हुआ उसका कुफर उह भी भागना पडा। कितन ही महीना तक अध्यक्ष न उह तिलम्बित कर लिया। फिर बहाला हुई। यह जानकर प्रमनता हुई कि अब उह खडग (बच्छ) के नयनगर के सम्भालन का काम मिला है। आजकल की व्यवस्था में योग्यता की बतर बहुत कम हानो है।

१५ मार्च को यहाँ के तार टेगीफान के अपमर गौनमजी आए। आदमा में युद्ध है। लेकिन जय लप्त हा जाए ता बुद्धि पूरी तौर में अपना काम नहीं

कर सकती। हस्तरेखा और तानिन पर उनका विश्वास है उनके बारे में वह अपने का सब समझने हैं यह बुरी बात नहीं है। पर वे यह नहीं देखना चाहते, कि कोई क्या इन 'महान विद्याओं' का मानन से इन्कार करता है। इसी तरह ईश्वर का भी वह लाठी के हाथ से मनवाना चाहते हैं। वह कविता का भी खप्त है। ऐसे कवियों को कोई कम समझा सकता है कि तुलसीदास कविता नहीं है। आप उद्धम भी कविता करत हैं जोर हिन्दी में भी जोर कितन हा छटा पर अधिकार रखत हैं। मरे पास उन्होंने लम्बी लम्बी कविताएँ लिखकर बड़े बड़े भेजने हुए मीथी गाली छाटकर पूरी तौर से आक्षेप किया। मैं उनका भी जवाब नहीं दिया। उन्हें हम अपनी विजय समझनी चाहिए थी, लेकिन हमम उन्हें मन्ताप नहीं हुआ और तुलसीदास का बराबर पत्र भेजत रहत। मरियत यही है कि मैं उनका यहाँ से बाई-मीन मीन दूर रहना हूँ नहीं तो हर दूसरे-नामरे का घमकत।

बाजबल चाह कम ही भीषण जगल में एगाल में आप घुस जाणें, लेकिन यदि रेडिया हा ता दुनिया की गतिविधि को समझने में त्विगत नहीं जानी। "हम विष्णु में आन ही हमन रेडिया ले लिया था। वह अच्छा तरह काम करता रहा। १७ मार्च का एगएक विगड गया। अभी रेडिया वाली दूरानें आद नहीं थी। मैं स्वयं उठा ठीक करन का विचार किया। आजकल त जमान में बिजली पानी के माफूत तौर में विगड जान पर यदि बाद हम गुजार नहीं सकता, ता मैं समझता हूँ वह आधुनिक का का नाग रिक नहीं है। अभी तरत रेडिया के बारे में भी मैं विचार रखता हूँ। कितन घात में रेडिया एक-एक बार विगल था हम ठीक करन अपने पत्नी मकर का मैंने देखा था। इसलिये हिम्मत नहीं। सोच। बन्धु बराबर नहीं माफूम हान धे कि वहाँ काप है? जान का भी पुन लिखा था लेकिन जागिर में मर ही लिखल न बनगया, कि नीतर डायर घुमान बाग नार दूर गया है। गार गाम तरह का रचना है। लेकिन, मैं मोचा, बाई भी मरदू पाणा हाता ताहित। एक एमा पाणा कर उमम लगा लिखा, और रेडिया काम करत गत। ही उमकी मूर्द जहा पर टास तात मन्ता गती, जगल लिख जोर ना परिश्रम की जरूरत थी। हम अन्त में काम लेन लग। उस

दिन का मरम्मत किया हमारा रेडियो आज १६ दिसम्बर १९५६ का भी काम कर रहा है।

भूनाथ बड़े हो मनमानी करना चाहते थे। अलसेसियन जैसे बड़े कुत्ते का पीट पाटकर ठीक करना भी सम्भव नहीं है। मैं कई कहानियाँ इनके बारे में सुन चुका था। डाटने पर मेरे ऊपर भी उमने झपट्टा मारा था, और कमला व ऊपर भी दो बार। मैं सोचने लगा, इससे पिण्ड ठुडाना चाहिए। लेकिन कमला मानने के लिए तैयार नहीं थी।

यद्यपि घुटन का घाव अच्छा हुआ गया था, लेकिन जब तक पपड़ी सही सलामत उखड़ न आए तब तक उसका क्या भरासा? साते वक्त किसी समय असावधानी से कुछ हरी पपड़ी उखड़ आई। फिर चिन्ता हान लगी लेकिन मैंने सावधान रहने का निश्चय कर लिया था। बीच बाँच में कुछ उदासी मन में उठ खड़ी होती थी जिसका कुछ कारण कमला की जिद भी होती थी। उनसे बराबर गिक्कायत रहती थी कि वे बुद्धि से क्या काम नहीं लेती? मैं चाहता था, उनकी पढाई अव्यच्छिन्न रूप से चलती रहे। जब उन्हें सारे समय मौजा स्वेटर बुनते और रेडियो सुनते देखता, तो बोलना ही पड़ता। ६० वय की अवस्था में घुसने पर जान पड़ता है जीवन का एक नया मोड़ आता है और आदमी समझने लगता है कि जब हमारा समय बात चुका। मृत्यु किसी समय आ जाए, इसकी मुझ परवाह नहीं थी। मैं समझता था इतने सालों में जा करणीय था वह कर डाला। अब न मेरी जरूरत दुनिया का है न मुझे उसकी। कभी सवाल आता क्या ही अच्छा हाता यदि यही सोने मृत्यु आ जाती और ६१वें साल के भीतर। अल्ला अल्ला खर सल्ला। न उधा का लना न माधो का देना।'

३१ मार्च को पता लगा, कमला साहित्यरत्न की परीक्षा में पास हो गई एक बड़ी मजिल पूरी हो गई।

६ अप्रैल का चिट्ठी में शान्ति भिष्णु न लिखा मैं गृहस्थ हो गया। स्वच्छ जीवन से बाधन में आना मैं किसी का पसन्द नहीं करता। गृहस्थ बनने पर आदमी की काम करने की शक्ति आधी रह जाती है। शान्ति भिष्णु न अज तरु का सारा समय विद्या में लगाया था। लिखने पढ़ने दाना की उनमें प्रतिभा है बौद्ध साहित्य और दर्शन का सम्भार अध्ययन

किया है, और उसी के लिए उन्होंने तिब्बती और चीनी पढी।

६ अप्रैल मेरे ६०वें वष का पूनि थी। पिछले साल कमला न उसे पहली बार मनाया था। अब की बार उसी दिन सबसे पहल अमत का बघाई का तार मिला। पिता गोबधन पाडे गायद ४०वें वष की भी नही देल सके। बही अबस्या पितामह जानकी पाडे की भी हुई। मैं उसे डयीडा जी चुवा इसलिए और का लाभ करना उचित नही। ११ का प्रयाग 'परिमल' न भी तार स बघाई दी— 'जीवहु लाख बरीस।' बघाइयां बुतापे को याद दिला रही थी। मुझे भी अतरावलाफन करन के लिए मजबूर होना पडा। सावधान हाने लगा कि बुताप की प्रवृत्तियां ता मेरे भीतर नही आ रही हैं ?

मेहर बाबा—अब की अप्रैल म एक महीन के लिए हमारे ऊपर की काठी "हनहिल" म भारत के एक महान् सिद्ध अपनी गिप्य मण्डली के साथ आकर ठहर। मेहर बाबा का नाम जब-तब मैंने सुना था। लेकिन, सिद्धा महात्माआ के ऊपर न मरी आस्या रह गई थी और न उनकी आर आकषण था, इसलिए मरी काई जिनासा भी नही थी। लेकिन जब व राज टहलन के लिए हमारे फाटव के मामने से गुजरत, ता उघर नजर न जाए यह कस हा सकता था ? मैं अच्छी तरह जानता था, कि मेहर बाबा, अरविन्द और रमण महर्षी से किसी तरह भी कम नही है। यदि वे दाना उनम बाजी मार ल गए, ता उसका कारण यही था, कि वे हिन्दू थे और हमारे दान म हिन्दू ही अधिन बसत हैं। भक्ति म भी यह तबीण साम्प्रदायिकता है। नन्दू मेहर बाबा के पास बाम करता था। वह बतलाना था— 'हन हिल काठी की तरफ किसी का जाने की आना नही है। अपनी हरेत चीज का रहस्यमय बनाना भारतम साधुआ की टवनाप है। मेहर बाबा बाहर आन थ, मडा पर भी चलन थे। लागा से मिलन म उन्हें उनना एतराज नही था। हाँ बीम वष स उन्होंने बाग्ना छाड दिया था। गिप्यमण्डल म उच्च या मध्यम वष के बाग बार्डम स्त्री-मुत्प थ। अधि काग पारसी थ, कुछ हिन्दू अमरिबन और मुराफियन भी थ। जिना जिना पन के ही मसूरी म ख्याति हा गई थी। जयन्त लाग दान करा के लिए पढी नी गत, लेकिन उन्हें निराग हाना पडता। कुछ निराग हुए मुमत

निकायत करत थे। मैं उन्हें कह देता, 'गाम सवेरे वह टहलन निकलते हैं, उस समय दगन कर लीजिये।' 'क्लिंडेर' की पूसग सहादराएँ महर बाजा की पडोसी थी। वे फाटक की सामने से राज उन्हें जाते देखती थी। उन्होंने यह भी देखा था, कि मेहर बाबा की भक्तिनाम अमेरिकन और युरोपियन महिलाएँ भी हैं। क्या कोई ईसाई किसी हिन्दुस्तानी सिद्ध के पीछे पीछे फिरे यह उनके लिए जाश्चय ही नहीं अप्रसन्नता की भी बात थी। रसाई दारिन एक एग्ला इंडियन भक्तिन थी। उनकी आलाचना सुनकर मैंने कहा—सता और सिद्धो की आलोचना नहीं करनी चाहिए। वे यह भी कहती थी कि क्या स्त्रिया ही उन्हें घेरे रहती हैं। जब बाहर घूमन निकलते थे, तो मैं भी देसना, छत्रधारिणी और दूसरी अनुचराण स्त्रिया ही होती। उनके जपन निवाम स्थान में पुरुष का प्रवेग निषिद्ध था। इस पर भी नुसताचीनी हानी थी। उन्हें मालूम नहीं था कि हमारे षेग के परम सिद्ध अरविन्द एन युग स लागी को साल में एन ही दो बार दशन दत थे। हमारा बन्द रहने के कारण डायबेटिज हो जाना स्वाभाविक था। उनके यहाँ चौतीस घट की ड्यूटी करन का सौभाग्य एक महिला को ही मिला था। सिद्धा में स्त्री-पुरुष का भेद नहीं रह जाता। ब्रह्मलीन लाग परम अद्वैतवादी हान हैं। यदि महर बाबा के पास की महिलाआ के माय पुरुषा का सम्पक कम रखन दिया जाता था तो उसके कारण टूटन की जरूरत नहीं थी। मैं महर बाबा का पक्ष ल रहा था और पूसग बहन उनकी नुसताचीनी करन पर तुली हुई थी। वह रही थी। मौन और एकांतवाग के इनन प्रमी है तो बगले में टेलीफोन क्या लगवा रखा है क्यों रेडियो सुनने हैं और क्या अय्यारा का पन्न हैं ?

मेहर बाबा के साथ एन ईरानी भी थे। उनसे फारसी में बितनी ही बार बार्ने हानी। जब मैंने जिनामा नदी प्रकट की और न दगन की मरी इच्छा ही देखी तो उनके भक्तान इगलण्ड और अमेरिका में छपी सीम के करीब मेहर बाबा-मन्त्राणी पुस्तक का डेर मेरी मज पर लगा दिया। उनसे मालूम हुआ कि एन और जिनाम में महर बाबा के बितन भक्त है। एक पुस्तक को मैंने घ्याता में पढ़ा, जिसमें भारतवर्ष के बाबा-बाने के पागला का विवरण लिया गया था, कुछ के फाटा भी थे। मेहर बाबा ने उन सबका सिद्ध

उहान बनलाया, पिछले माल जिस इतिहास अध्यापक को मैंने 'वाल्गा स गगा' (उद्ग) दी थी, उसम मुसलमान लश्करी स हिन्दू के ब्याह करने की वान देखकर उहोन उसे फाड डाला । आजकल के युग म तरण जीर शिक्षित एस रपाल अपने दिमाग म रख सकते हैं यह आश्चय की बात थी ।

२२ मई का बीरेन्द्र का पटना स भेजा लीचिया का पामल आया । लीची और जाम क फलो का मौसिम आ गया । मई के अत तक मसूरी अब जम गई । गाम क वक्त माल रोड पर भीड हाने लगी । व्यवसायी लाग अब भी सतुष्ट नही थे । कह रहे थे लोग तो हैं, लेकिन पैसा नही खच कर सकते ।

श्री भूदेव विद्यालकार—बलदेवजी के बडे भाई—से कानपुर म पीछे भी भेंट हुई लेकिन मुचे उनका १९१७ के आसपास का ही चेहरा याद आता है जब मैं महोवा आयसमाज म ठहरा था, और वह गुरुकुल से अभी अभी स्नातक होकर आये थे । दाना भाई एक ही जगह पहाड पर नही जाते, इसलिए अबकी बार बलदेवजी नही आय ।

२७ मई का वगाख पूर्णिमा थी । दफतरा म छुट्टी देखकर अनुमान हुआ कि गायद भारत सरकार ने बुद्ध जयंती को राष्ट्रीय छुट्टियो म गिन लिया है ।

प्रमाणवातिकभाष्य छप चुका था अब उसकी भूमिका लिखनी थी । टा० अलतकर ने तिवत स लाय बौद्ध सस्कृत ग्रथ भिन्नुप्रकीणक को सम्पादन करने क लिए लिखा था । मैंने स्वीकृति दे दी ।

श्री कन्हैयालाल सहल पिलानी स यहाँ आय । वह अपन साथ राज स्वाना लाक गीत क गायक पिलानी क एक अध्यापक तथा लाक गीता के गायक को लाय । मालूम हुआ कि वहाँ पर लोक-गीता के मग्रह का काम हा रहा है । स्वामी न कुछ गीता क नमून सुनाय जो बडे ही वरण थे । मालूम हुआ, राजस्वान म भी 'निहाल्दे' गार्दी जाती है और इतनी विंगाल है कि सारी वर्षा गान हैं । यह जान कर जीर प्रसन्नता हुई कि वहाँ की निहाल्द का उस्तादा न नही छेगा है, जसा कि कौरवी म न्येा जाना है । कौरवी क उस्ताना न निहाल् और मुस्तान का नया रूप निया जिसके कारण परम्परा स कटस्थ आय गीत की विंगापता बहुत कुछ लुप्त हा गई ।

लाङ्गनीयों के सम्बन्ध में रात्रिस्थान बहुत मजबूत है। जाग नहीं है कि सामान्यवाद क्या गियासना के विरुद्ध है समझ तक बहुत कुछ उठाना क्या आया। लाङ्गनीयों के पावर गायक बहा मौजूद थे जिनका पावर जोर मुख्यतः रात्रिस्थानी रात्रि और टाऊर करत आन थे। अब वह हाथ उठ गया है इसलिए लाङ्गनीयों की समझ परंपरा के नष्ट हान का डर है। यद्यपि लाङ्गनीयों के समझ को ठार अब ध्यान गया है लेकिन उठनी निधि का जमा करके मर्यादा करत है जिन उठन घन जोर परिश्रम की जाङ्ग-स्थाना है वत् सुस्कार के उपर ध्यान न न ही हो सकता है।

डा० राम हमार मुस्ल के हैं। मैं १९७० में यहा आकर रहन गया था, जो लग्नि १९४ में ही जाग मरौद लिया। उनको पत्नी करगया है। ११ मई का उनका पास गया। बचा विरानी है। अभिया के नौन-चार मान यही विज्ञान है। पम्नावाद था है आर प्रकिम्प भी अच्छी है। पाम म गाय कुन्दनगाल की शक्ती का भी दखन गया। बुद्धि के अर्णों परीक धाव क्यों चला रह। मात्र में कामबदोष भी थी और मूर्द केना छात्रर उठनी दूसरो श्वास्त्रा चली रनी। धाव बंद हा गया। फिर निदलिया में आग ला गते। दर के मार बुद्धि काहूहा। पर ता बिल्लु हा मूज कर कांटा से गय थे अब चाग्पादे पकटे थीं। कह रनी थी, अब ता नगवान बुग लें।

१ जून का लमिन' लिप्ता गुरु किया। जात सज्जती आने। दाएर को बँध समरन पाठ उनाम्मान आवाय मादवना मीकमती के नाम आये। चिकित्सा चूनामति मादवती का नाम उनके लिप्यों में ही लिहार में मुन खुना था। आधुनिक काल में आयुर्वेद के ग्रंथों के उद्धार और हमारी प्राचीन चिकित्सा-व्यक्ति के प्रसार के लिए निरन्तर काम मादवती ने किया उठना जिन्हीं ने मर्ते किया। प्राचीन परंपरा के समझ और अनुगामी हान गाय भी वह आधुनिक प्रवृत्तियों के अन्तरे विगमो मर्ते थ। बल्लुन आयुर्वेद की बहूना मा मौखिक दन हैं जिन्हें हमें जानना नहीं है और जिन पर हमारा दा गव कर सकता है। आधुनिक चीन का श्व इनमें अच्छा है। वह बछा का पुगनी परिगणन न गिला दकर कि आयुर्वेद पद्धति के समझन का भी प्रयत्न करता है। आयुर्वेदों के सम्बन्ध में अनुभवान करत न वैद्य जोर

डाक्टरों के सहयोग से आधुनिक टंग से जीपधिया का परीक्षण मूल्यांकन होता है। हाता के निदान में भी डाक्टरों का बचा की विधि से परिचित होना का प्रेरणा दी जाता थी। हमारे चार हजार वर्ष के सांस्कृतिक इतिहास में वैद्या ने अपने परीक्षण द्वारा बहुत से तंत्र और जीपधियाँ प्राप्त की हैं जिनमें से कुछ के गुणों का डाक्टरों ने भी स्वाकार किया है। एक बार तो हमारा सारी जीपधिया का विश्लेषण होना चाहिए।

४ जून का घुमककड़ गिव गर्मा के पिता वैद्य श्री देवराज गर्मा आए। लडके के पीछे बावले थे। वह रहे थे उनकी मा बहुत रोगी है गिव कभी पटियाला जाता भी है ता घर नहीं आता। मैंने कहा—आप उससे जितना अधिक चिपकना चाहेंगे उतना ही वह दूर भागता रहेगा। ऐसा न करने पर वह अपने-आप ठीक रास्ते पर आ जायगा। सबसे अधिक ध्यान देने की बात यह है कि आप उसकी गादी का प्रयत्न न करें। आजकल के युग में गादी के बारे में लडके मा-बाप के वचन के खयाल नहीं करा करते। पीछे मैंने भी गिव गर्मा से कहा वचन में मत पड़ो लेकिन पिता माता का शत्रु समझना बहुत बुरा है।

सत्या गुप्ता के पिता श्री वेदमित्र जी बहुत वर्षों से एकाकी जीवन व्यतीत करते थे। अभी वह प्रौढ़ नहीं हो पाये थे कि उनकी पत्नी का देहांत हो गया। गायत्री और सत्या दो पुत्रिया थीं। खानदान पुराना आय समाजी था। उन्होंने धार्मिक स्वाध्याय और सत्संग में अपना समय बिताया शुरू किया लडकिया का उच्च शिक्षा दिलाई। गायत्री डाक्टर हो गई और सत्या एम० ए०। गायत्री ने एक विवाहित डाक्टर से अपनी मर्जी से शादी किया। पिता का यह नहीं पसन्द हुआ। पुत्री का जितनी भर के लिए दुख नागना पड़ा। वह चाहते थे, सत्या का ब्याह हो जाय, पर सत्या तयार नहीं थी। गर्मिया में वह चार पाँच महीना के लिए मसूरी आ गये थे। तातरा (नहारनपुर) में अपना घर था लेकिन वहाँ गया वर्षों हो गया। जाने हरद्वार या ऋषिकेश में विज्ञान देना। इधर उनका हृदय का रोग हो गया था। उमर में उह देखन गया। पुत्रिया की चिन्ता उनके लिए बुरा है। अपना की शक्ति सात्वता ही उस हृदय में सहायक हानी है। वेदमित्र जी आय समाजी हैं। आयममात्र में एम मान नहीं है जा उन्हें आध्यात्मिक सत्ताप

द सकें टमलिए जिम किशा मन क पाद्य फिरन रहत हैं । मुचने भी इनके वार म पूछा । मैंन कण— अनोकरवाने नामिन क नुम्वा जब इम मर म आपक गिए कागगर नहीं हागा । मनुष्य क मन की अलग जग भूमिकायें हैं इस भूमिका म पहुँचन क गिए आगका फिर म स्वाप्ताय और मनन करना हागा । और आपकी मर ५५ भाग हा गइ । वजन घटान की कागिग कीजिए । ' निरामिपाहारिया क गिए यट जोर भी मुश्किल है क्योंकि उनक प्रिय भाजना म चीना और घी की बहुतायत हाती है जो वजन क घटान मे परम महायक हात है । वेमित्रजी वतून वपों म कम्प निया म लग अपन न्यय क लान पर हो गुजारा करत है जोर वह उनक लिए काफी है ।

इगहावाट के प्रा० महानारायण मकमेना प्राय हर भाग ममूरी आकर यहा गमिया की छुट्टिया विनात हैं । प्रयाग स हा उनने परिचय था । ७ जून का दर तक वान हाता रहा । सगीन की तरफ उनका स्वभाविक रुचि था । एम० एस०भी० प्रथम वष पास किया था, लेकिन उधर जाना नहीं था, इसलिए एम० ए० पास किया । फिर उन्होंने अपना सारा ध्यान सगान की आर लगाया । कितने हा दिना तक इलाहाबाद म एक मगीन विद्यालय म अध्यापक रह । अब मुनिवसिटी म हैं । एसा व्यक्ति प्राच्य और पाश्चात्य मगीत क तुगना मक अध्ययन के गिए उपयुक्त था और साथ ही वह हमार गक-गीतो का भी गम्भाय अध्ययन कर सकता था । उन्होंने बतगाया, मैंने अपन डी० फिल० क गिए ' सत कवि और मगीत' का गिया है । यह महत्वपूर्ण विषय था । विद्यापति म लकर हमार मत कवि ही गीता क पद नहीं बनान थे बल्कि यह परम्परा आठवीं मती के पूवाव क आदि सिद्ध सरत तक जाती हैं । वस्तुतः हमारा बहुत-सा सगान तिन पदा क रूप म सुरगित है वह सिद्धा और सन्ना क ही हैं । उन्होंने जपन हरक पद क माय रागा का उल्लेख किया है । नाटगन (स्वर लिपि) उस समय नहीं थी । इन पदा क द्वारा उन रागा का आकार निश्चित करना एक महत्वपूर्ण बात है । वस्तुतः गिष्ट मगीत और राग सगात क एतिहासिक अनुसन्धान का काम हमारे यहा नहा क बराबर हुआ । मैंन उन्हें यह भी कहा कि अन्त राष्ट्रीय स्वर लिपि क प्रचार की ओर भागान देना चाहिए कनाकि अन्त-

राष्ट्रीय संगीत समाज में इसी व द्वारा हम आसानी से अपनी चीजा को पहचान सकते हैं।

उसी दिन गाम का स्वामी गणेश्वरानन्द जी जाय। नत्रविहीन है। नेत्रविहीन सभी प्रतिभाशाली हैं, यह आवश्यक नहीं लेकिन जो प्रतिभाशाली हात हैं वह असाधारण हाते हैं। ५० मुखलात्जी भी इसका उदाहरण हैं। स्वामी गणेश्वरानन्द जी ने संस्कृत शास्त्रों का गभीर अध्ययन किया है। मेरा परिचय उनसे यद्यपि पीछे हुआ पर नाम मैं पहले ही सुन चुका था। उन्होंने १९२२ में गया कांग्रेस में मेरा भाषण सुना था और उसी समय से परिचित थे। संस्कृत की गम्भीर विद्वत्ता के साथ साथ उनमें रूपमडकता और सकीर्ण साम्प्रदायिकता नहीं है। संस्कृत विद्या के प्रसार का भी उनको ध्यान है। इनका प्रमाण बनारस का उदासी संस्कृत विद्यालय है। अहमदाबाद में चार पाँच लाख लगवाकर उन्होंने बंदमंदिर बनवाया। मैंने उनसे कहा संस्कृत के उद्भूत से ग्रथ अप्रकाशित है कितने ही प्रकाशित होकर अब दुर्लभ हो गए हैं। इन्हें चिरमथायी हाथ के कागज पर निकालना चाहिए। दस बास ग्रथों तक तो आना नहीं रखनी चाहिए कि यह प्रकाशन स्वावलम्बी हो जायेगा पर आगे स्वावलम्बी हान की भी संभावना है। साथ ही बदायतन के मूल ग्रथों का हिन्दी में ऐसा अनुवाद होना चाहिए जिसमें मूल का आनन्द आस टोका न मालूम हो। स्वामी सत्यस्वरूपजी उनके गिण्ठों में हैं, जिनसे साल में एक दो बार मुलाकात हो जाया करती थी। अब भी मैं इन बातों को ओर उनका ध्यान दिलाता रहता हूँ।

राजग जी कृत 'कामायनी' का संस्कृत अनुवाद राष्ट्रभाषा प्रचार समिति में छपने के लिए गया था। मुझे आना था कि अहिन्दी भाषा भाषी प्रायः ही के प्रभाव को मनवानेवाले इस ग्रथ का प्रकाशन अब हो जायेगा पर वहाँ से लौट आया। फिर हिन्दी साहित्य सम्मेलन में आशा हुई। महीना पाण्डुलिपि वहाँ रही। अब चिटठी आई, कि आदाता ने उस प्रकाशित करने की स्वीकृति नहीं दी। आदाता बकील है उच्च साहित्य से विगत रुचि नहीं है। फिर आदमा को सहज हो स्याल हो सरता है कि हिन्दी की समस्या का संस्कृत के ग्रथों के प्रकाशन करने में क्या मतलब? वह यह किस समय सरत है कि हिन्दी के ग्रथरत्न का संस्कृत में

अनुवाद अहिदी भाषाआ के घुरघर साहित्यिकी के पास पहुँच कर अपनी आर जाट्ट कर सकता है। हमारे यितन ही महान् प्रया क अंग्रेजी अनुवादा न एक विस्तृत क्षेत्र म उनकी महिमा पहुँचाई है, यह हम देखने ही है।

१० जून का हर्मिटेज सरकार की ओर से नीलाम हुआ। यह हर्मिटेज बगल का काटेज या कुटीर था। हर्मिटेज' को बिडला न लेकर लाखा रुपया लगा उस बिडला निवास बना लिया। उस समय काटेज एक मुसलमान सज्जन की सम्पत्ति थी जा २५ ३० हजार से नीचे उतरन क लिए तैयार नहा थे। विभाजन क समय वह पाकिस्तान भाग गया। बगल का सारा फर्नीचर और सामान लोग उठा ले गया, छन दीवार जीर दरवाजे रह गये। दरजाजा का भी लोग निरालन लग ये। चौकीदार नहीं ता कौन उनकी रक्षा कर ? नीलाम म बोली बालन के लिए कितन ही लोग जाय थे। श्री माहिनी जुत्सी भी पाच हजार तक जान के लिए तैयार थी। डा० राम के आदमी न साडे सात हजार तक वाली वाली। बिडला की ओर स जत्र आठ हजार दिया गया ता फिर किसो की हिम्मत नहीं हुई। उस दिन तो बात त नहीं हुई, पीछे नीलाम क अफसर न कह दिया कि दस हजार से कम म हम बचने का अस्तियार नहीं है। जगले नीलाम म दस हजार म मकान बिक गया। उस समय जब भी मकानो की कीमत थी। पिछले दो वर्षों मे वह और गिरी। बिडला निवास से लगा हाने के कारण वह दस हजार रुपय मे बिक सकता। जुत्सी जी हमारे पडास म रहने के रयाल से ही उमे ले रहे थे।

एक दिन बादल रहकर १४ फरवरी की रात से ही वषा होने लगी। सवेरे भी कुछ रही, फिर दिन भर खुला रहा। हवा और वषा मसूरी के तापमान पर जल्दी प्रभाव डालते हैं। उस दिन तापमान इतना उठ गया कि एक दो घडी क लिए गरम कपडा और कटोप पहनना पडा। अब बादल वीर वर्षा का सभावना थी। यद्यपि यह नियम नहीं है कि १५ जून से वर्षा आरम्भ ही हो जाय। सर्वेवाले अपने तजबों से २६ जून को वर्षारम्भ मानते है।

१६ जून को लेनित' समाप्त हो गया। जब-तब वर्षा हो जाने स सलानिया का घर याद आने लगे। वह घडाघट मसूरी छाडने लग।

स्तालिन', लेनिन जीर माकम की जावनिया का समाप्त करन क बाद २२ जून स चौथी पुस्तक भाजा म मन हाथ लगाया। उसी दिन उनाथ क एक मुसलमान वरील साहब जाए। अंग्रेजा के गामनकाल म देग म फूट पदा करन के लिए जा मुसलमाना का सह देने रहे उह यह समझना मुश्किल है कि नय युग म पुरान बिलगाव के खयाल का सहायता नही दी जा सकती। उनके लिए कवल वही रास्ता है जिस अकबर ने चार गतात्रिया पहले दिखलाया था। अंग्रेजा के चले जाने के बाद और पुरानी मनावत्ति क कारण तग क विभक्त हा जान पर शिक्षित मुसलमाना का किबतव्यविमूढता-सी आ गई है। उनम से कितन ही निराग हाकर पाकिस्तान भाग गए। पर सब क्या अधिकाश भी वहा भागकर नही जा सकते। जिनक भाईवद पाकिस्तान चले गए हैं वह वहा की बठिनाइया को जान कर अब समझन लग है कि हमार लिए पाकिस्तान नही, हिंदुस्तान ही अच्छा था। यह अवस्था उह मह्य नहीं हाती कि उह काई नही समझा जाए। वकील साहब यह सब दिक्कतें बतला रह थ। मैंने वहा इस्लाम को खतरे म बहना गलत नारा है। हमारे दश म सभी धम स्वतंत्रतापूर्वक रह सकत हैं हमारि पुरानी परम्परा भी इसके अनुकूल है। पर बिलगाव की मनावत्ति को हटाना पडेगा, और मुसलमानो का अपनी विशेषता उतनी ही माननी हागा जितनी इसाई, बौद्ध जन या हिंदू मानते हैं।

आजकल याग्यता नही बल्कि जानि और सम्बन्ध की नौकरिया म पूछ है। प० गयाप्रसाद गुकठ क सुपुत्र श्री विश्वनाथ गुकल न एम० ए० की परीक्षा प्रथम श्रेणी म पास की थी। देहरादून डी० ए० बी० कालज म पढ़े और वहा उनका घर है। यहाँ अध्यापकी मिलता ता घर म रहने के कारण बहुत स मुभात थ। लेकिन, डी० ए० बी० कालज म कायस्या का प्रभुत्व है। कायस्य तीमर दर्जे का एम० ए० भी विभागाध्यक्ष हा सकता है। अध्यापना की जरूरत था। विनापन दिया जाए और काई याग्यतम साबित हा, ता अपन आत्मी का रास्ता रूक जाएगा। सबसे अच्छा तरीका यह समझा गया कि उस समय यह कहकर बान टरका दी जाए कि अभी आत्मी की जरूरत नही है। याग्य व्यक्ति अनिश्चन काल तक प्रतीक्षा नहा कर सकन, वह किसी घाट लग जाएगा और फिर अपन जादमी को चुपके स

बठा दिया जाएगा। विश्वनाथजी अपने विषय के बहुत योग्य थे इसलिए उन्हें वरेली कालेज में काम मिल गया और एक ही दो वर्ष बाद वह अहमदाबाद में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष होकर चले गए। उनका पिता प्रा० गया-प्रसाद गुल्लू देहरादून में अपना मकान बना, यही रहते हैं। घर छाड़कर अहमदाबाद जाना विश्वनाथ को म्चिकर आड़े ही हो सजता था ? देहरादून के डी० ए० बी० कालेज की शिक्षायन क्या की जाए, सभी जगह यही बात है। सम्बन्ध या खुशामद काम करती है। खुशामद में जा योग्य आवित हा वह योग्यता का भी धक्का दे आने सज जाता है। हमारे प्रा० न के एक दुट्ट-पुत्रिया अयोग्यनी हैं जो मन्त्री के कृपापात्र होने के कारण यूनिवर्सिटी के विभागाध्यक्ष बन गए। ऐस आदमिया का सम्माननीय गदिया पर बैठता देखकर सचमुच दिल जबदस्त बगावत करन लगता है। एक दूसरे तरण का जानना हू। आइ० ए० एस० में वह हरेक विषय में सजस अधिक नम्बर पाने वाले तीन चार उम्मीदवारा में था। उसे पास हाना चाहिए था। लकिन नेहरूजी ने पसनल्टी (व्यक्तित्व) सबसे आवश्यक चीज मानी है, जिमके लिए गायद १०० मार्क हैं। पसनल्टी की परीक्षा कुर्सी पर बठे लाग जवानी करत ह और उनका ही फसला आखिरी है। काई भी आदमी देखकर उस तरण को कह सकता है कि व्यक्तित्व में वह तरण किसी से कम नहीं है, लेकिन उसको व्यक्तित्व में १० नम्बर दिया गया। अघेर नगरी चौपट राजा गाय की पूछ कहां हा सकती है ? विशपकर जबकि नेहरूजी इस सन्धि व्यक्तित्व परीक्षा के भारी समयक हैं। उसी तरण ने एक विषय पर पी एच० डी० की थीसिस लिखी। बहुत अच्छी थी यह इसी सिद्ध है कि एक प्रकारक न इस ग्रन्थ का जप्रीजी में प्रकाशित किया। एक यूनिवर्सिटी में भाइ विभागाध्यक्ष बन गए। तरण ने दूसरा निबन्ध लिखकर दा माल हुए उनसे पास दिया। खुशामदी दरवारी का इतनी पुरसत कहां ? अभी उनको गायद वाइस-चामलर बनने की जाशा है। इसलिए उन देवताजा को रिज्ञाना आवश्यक है जिनकी कृपादृष्टि में वह इस गद्दी पर पहुँच सकन हैं। दा वर्ष से उन्हें पुरसत नहीं हुई कि थीसिस को परीक्षकों के पास भेज। एक तरफ एक तरण के जीवन का सवाल है, और दूसरी तरफ इस आदमी का यह कमीनापन। 'धिव्' गायक तम ।

२४ जून का साथी यनदत्त गर्मा अपनी पत्नी सरलाजी के साथ आए । नौ दस वर्ष के भातर इतना परिवर्तन हो सकता है यह मुझे विश्वास नहीं था । कम माल पहले उन्हें दिल्ली में देखा था । साथी यनदत्त एक कालेज में प्राफेसर थे । कम्युनिज्म में लाखों की तरह उन्हें फकीर बनाया । अपनी योग्यता और कमठना का उन्होंने गरीबों के उद्धार में लगाया । वह दिल्ली के कम्युनिस्ट नेता हैं । उनकी पत्नी सरला गुप्ता जपान विद्यार्थी जावन सहा विद्यार्थिनी फिर स्त्रिया और कमरा के संगठन में काम करने लगी थी । जब दोना पति पत्नी है । यनदत्तजी पहले छरहर जवान थे, अब कुछ माटापा आ गया है और काले बाला में कितन हा सफेद भी दीख रहे थे ।

गर्भ परिपक्व हो रहा था । कमला का मेटर्निटी अस्पताल में ले जाना की जरूरत थी । मिन्नरिया का मेट मरी अस्पताल मसूरी के जन्म अस्पताल में है जा हमारे से नजदक भी है । लड्डी डाक्टर ने परीक्षा का । बतलाया खून का दबाव कुछ कम है । विटामिन बी का इन्जेक्शन देने और कैल्शियम खाने के लिए कहा ।

उम दिन डा० धीरेन्द्र वर्मा डा० विश्वम्बरप्रसाद और प्रिंसिपल सद्गुरारण अवस्थी से बातचीत हुई । अगले दिन ५० नरदव गास्त्री जागे । गास्त्रीजी चार मील दूर लण्डीर में हर साल मसूरी में ठहरते हैं, सीजन में जहर दगन में हैं ।

३० जून का जामिया मिलिया के अध्यापक डा० सलामतुल्ला अपनी पुत्री मन्ना के साथ आए । तीन घण्टे तक भाषा और दूसरी बातों के सम्बन्ध में बातें होती रहीं । भर हिन्दी प्रेम का कितन ही लाग उदू ट्रेप समयना चाहते हैं । सुनी सुनाई बातों में लागों का विश्वास भी हो जाता है । मैं उदू को हिन्दी समझकर उसी की तरह उगव साथ प्रेम रखता हूँ और चाहता हूँ कि उदू की अनमाल निधियाँ नागरी में मुद्रित होकर व्यापक रूप में पढी जाए । मैं उदू लिपि का त्याग करने का भी बात नहीं करता । डा० मलाम तुल्ला मानित्य प्रमी तथा उदार विचार रखते थे इसलिए हम एक दूसरे के भावों को समझ सकते थे ।

१ जुलाई का अमृतसर से भया की चिट्ठा आई कि भाभाजा का छोटी जूझड़िन का २६ न का देहा त हो गया । परिपूर्ण गर्मा का बड़ सादधान

रहने को आवश्यकता हानो है। बेचारी गिर पडी। गभम्भाव के माय भोपण रक्तसाव हान लगा। अस्पनाल ले गए। चौह पट के भीतर मर गई। पिछो साल अपनी वहन क साय वह मसूरी आई थी। उमर हा क्या थी किन्तु मृत्यु उमर पूछकर थाडे ही आती है ? नन्हा बच्चा और एक लटकी छा गइ।

मसूरी मे रहत तीन वष हा गए। महा के सब तरह क जीवन का देखने हुए मन मे खयाल आया कि इसको यात्री दूमरो को भी दनी चाहिए, इस-लिए मैं कहानिया लिखन का निश्चय किया। पहली कहानी 'महाप्रभु' थी, जिमे १२ जुलाई को लिखा। मरी कहानिया प्राय एक फाम (१६ पृष्ठ) की हागी हैं। अधिकतर मैं एक बैठक मे एए कहानी समाप्त करता हूँ। महाप्रभु आधुनिक काल के एक घम क दूफानदार गिरामणि की क्या है। मसूरी-सम्बन्धी कहानिया को पहल मैं 'मधुपुरी' नाम मे रखना चाहता था यमी बीच 'मधुपुरी के नाम से किमी का काव्य निकल आया, इस-लिए मुझे पुम्नक का नाम बहुरगी मधुपुरी रखना पन्ना। २१ कहानिया मे यद्यपि एक व्यक्ति के जीवन की छाप अत्रिक हा सक्ती है पर उसके बनान मे जनक व्यक्तिया की जीवनियो को लिया गया है।

१६ का बाजार गए। कुन्हडी मे पता लगा एक वृष पर एक महात्मा तपस्या कर रहे हैं। बाजार से यह पट नजदीक हा था। सचमुच ही वन के वृष पर गम्भा कपटा दिखलाई दे रहा था। मचान-मा बांधकर मुह टाँक काई माधु वहाँ बठा था। मसूरी तपाभूमि नहीं विलामभूमि है। तपस्या करन क लिए बहा का सत्रमे उडा बाजार ही क्या अनुकूल साजिन हुआ ? कुछ लाग समझन लग कि यह निरा भादू है जा इस जगह आवर अपने पाखण्ड स लागो को प्रभावित करना चाहता है। लेकिन, पडबावा—इसी नाम मे उह पुनारा जान लगा—भोदू कहन वाला का भादू समझन थे। बरनात का दिन था जिसक कारण सर्नी भी बढ गई थी। उस समय चौबीसा घटे पेड के ऊपर रहना जन मन को अपनी आर आहृष्ट करने के लिए काफी था। वह मील-ना-मील दूर भी तपस्या करन जा सक्ते थे, पर यत्रि कहीं राठ मे भेंट हा जाता, जा मसूरी क जाम-पाग के जगला मे रहने हैं, ता बचारे की तपस्या भग हुए बिना नहीं रहती, और फिर भक्त और भक्तिनें

उनके पास कैसे पहुँच सकत ? पेडवावा १५ जुलाई को एकाएक यहाँ बठ दिखाई पड़े। अभी तीन ही दिन हुए कि लागा क दिला म भक्ति जवुरित हुए और दशाका की भीड़ होने लगी। लाग कह रहे ये महात्मा न कुछ ताने टन पोने हैं और हर वक्त ध्यान म लान रहत है। पोन क लिए उनक भागते कपडा से काफी पानी मिल सकता था। जार खाना देखन के लिए कौन बहा चौबीस घटा पहरा दता था ? पेडवावा जक नही जाण हागे। उनक सिद्ध सायक ममूरी म अपना प्राणगडा कर रह हागे यह निश्चित हा था। हपना बीतन बीतन पेडवावा बहुत म तिलमिलयकीना का अपनी जोर लीचन म सफल हुए। आयसमाजा और दूसरे नुकताचीनी करत रह लकिन भक्ति की दाढ म उनकी आवाज डूब गई। पूरे महीना भर तपस्या कर लन पर ममूरी म जब किसी का इस महान् तपस्वी के खिलाफ बालन की हिम्मत नही रह गई। वह वहाँ से उतर। एक जच्छे मकान म ल जाकर ठहराय गए। अब उहान कहा कि भागवत की क्या हानी खाहिए, जोर एक बला यन भी। भक्ता ने हजार रुपय जमा कर लिए। भागवत की क्या हान लगी। पेडवावा एक पर पर खड होकर उस सुनान लग। क्या के बाद बिनाई हुई। पेडवावा का जलूम निकला और ममूरी दिग्बिगय करके उमक बिलासिया क हृदय म भक्ति की गगा बहाकर वह यहाँ से बिना हुए। कितन हा आधुनिक ढग क गिभित ग्रेजुएट और कवीला का भी उनक कारण नामित कता के दलदल स उद्धार हुआ। यह २०वीं सती का उत्तराध है क्या भारत म यह मिद्ध हा पाया ?

२३ जुलाई का जारहाट (आगाम) क राजहौली गाव क त्रिनामी घुमककट मेघनाथ भट्टाचाय आय। भारत क बहुत स भागा म घूम घुन ये काश्मीर ही नहीं पश्चिमा पाकिस्तान की सीमा पर भी पहुँच। उनका दुगम पहाडी यात्राया का मुतरर विश्वाम हा गया कि वह आदमी प्रथम श्रेणी के घुमककट हान लायन है। गिधिन हात भी गारीरिक पश्चिम स उनका कोई दुरात्र नही था, यह सोन म मुगधी थी।

२६ जुलाई का पता लगा कोरिया म युद्ध बिराम-नाघि हा गई। जमरिया न गिणी कारिया स मनुष्ट न हाकर उत्तरी कागिया का नी घुटकी बजाने बजात एना चाहा। पर उसन फिट्टू सिगमन री की एसी

दुःखित हूँ कि एक समय जान पडा उसे भी चांग वाइ गन की तरह ममुद्र म टकेल दिया जाएगा । फिर अमरिका खुद युद्ध म कूटा । जत्र उसकी मेनाये पुराना मीमा मे उत्तर की आर बढ़न लगी, ता भारत ने कहा कि एमा नहीं करना चाहिए नहीं ता चीन चुप नही रहगा । चीन अपना मीमा के ऊपर अमेरिकनो का कम देय मकना था ? चीनी स्वयमवक मदान म आय और अमरिका का भागना पडा । उनन उस कर्द दगो का मम्मिलिन युद्ध बनाया था, लेकिन युद्ध म मार जा गइ थे अमरिकन तरण । यन् डालर का व्यय नही था बल्कि आत्मी क प्राणा की आहुति थी । अमरिकन वैलीगाह नना समथन थे, कि हमारा काम डालर बरसाना हागा, और प्राणा की कुर्वानी दूमरे देंगे । अमेरिकन जनता न देखा उलटा विराघ हुआ, और बन म अमरिका का विराम-मिच करनी पनी ।

बदूक और रिवालवर का लादमस मरे नाम था । मरे अनुपस्थित रहन पर कमला का उनकी जन्मन पड सकनी थी, इमलिए लादमस म उन्हें भी साथीगार बनान के लिए मैंने जिला मजिस्ट्रेट का लिखा । उहाने २६ जुलाई का दाना क लादमस भेज दिय । माय हा बदरा से माग सत्री की रक्षा के लिए टापीवाली बदूक देना भी मजूर लिया ।

अब की कुछ दर मे भैया और भाभी मसूरी जा गय । पिछे माल से भाभीजी का मानमित्र राग का मामना करना पड रहा था । छोटी बहिन क मरन क कारण उनकी स्थिति और भी बुरी थी । जान पडा दा माल पहल की भाभी फिर नहीं लौऐंगी । यन् रहन पिछे माग की तरह फिर हमारा एक प्राणी ग घर का जीवन था । हर सप्ताह कम से कम एक दिन मुझे उनक यहा जाना पन्ता । ४ अगस्त का मैं लणौर तब गया । किगत मिह बहुत दुबल ल गय मे चलना फिरना भी मुश्किल था । हृदयगूठ की बीमारी थी, जीवन स निराग थे । लणौर म कुछ दूकानदार भाग चुक थे लकिन दा-तीन सुनारा की दूकानें बड गइ थी । पुष्पोत्तमजी की दूकान महाना म बन् पडी थी । मसूरी म कुछ का लिवाग निकलना और उनकी जगत् कुछ का फिर भाग्य-पराक्षा के लिए आ जाना अब मामूगी बान थी ।

अगस्त का कम्पनी गग म बनभान हुआ । मगल और ठाकुरानीजी के साथ हम यहा न कम्पनी बाग गय । कुल्हणी म भया और भाभीजी

उपा और बाबा का लंकर आय। १२ बजे वहाँ पहुँचते ही मूसलाधार वर्षा होने लगी, इसलिए खुले बाग म नहीं बल्कि उसका एक मकान म गरण लेनी पड़ी। तरह-तरह के पक्वान बनकर जाये थे। हमारा भोज चलता रहा। वर्षा ३ बजे खत्म हुई। फिर हम वहाँ से घर लौटे।

बुद्ध सर सीताराम गमिया म बराबर मसूरी जाते ह। ७० से कम उमर नहीं है, लेकिन जब भी सड़का पर टहलते मिलते। आग्य जहर ज्यादा कमजोर थी। जगजा के कृपा पात्र हाते भी वह देश क प्रति उदासीन नहीं थे। अध्ययन का उह व्यसन है। १५ अगस्त का टोनहाल की मीटिंग से गेटते वक्त उनस दंग की परिस्थिति पर बातचीत होने लगा। सभी जगह ब्रष्टाचार, सभी जगह बकारी यह चिंता का बात थी। वह रह थे इसका या हाल है? मैं वहाँ—कम्युनिस्टा क लिए यह कोई समस्या नहीं है। उह मौका दिया जाये, ता चुटकी बजाने बजात क उन समस्याजा का हल कर सकत है। चीन म ऐसा ही हुआ। पुराना पीढी ऐसी वाता का समझा ही सकती थी। लेकिन पुरान नताआ क घरा म नय ढग की नई पीढी ग गइ है जा तम्बीर के दूसरे रख को देखन क लिए मजबूर करती है। सर सीताराम क पुत्र भाक्सवादी ह जिहान उनक मन स कम स कम कम्युनिस्टा क प्रति द्वेष का हटा दिया है।

अगस्त म 'जोनसार-देहरादून' क लिखन म भा मैं हाथ लगा लिया। न करन लगा कि दार्जिलिंग से उठाय हिमालय सम्बंधी श्रवा को जम्मू इमीर की सीमा तक पहुँचा दना चाहिए।

गहर से दूर रहन का जब एक घुरा फल यह दखन म जाया कि यहाँ अस्पताल दूर है। कमला का न जान निस वक्त आवश्यकता पड़े। भया ने कहा, उन्हें हमारा पाम रख दें। वह १६ अगस्त का वहाँ चली गई। भाय क समय ही आदमी का आत्मा का भूय मालूम होता है। यहाँ न अपन पाथी पतरे का छाड और विसी चीज की फिर करन की मुने स्मृत नहीं था।

सावित्र्य म म क पाम परमाणु बम है उमन उराका विस्फाट किया है। वी सूचना अमरिका न दुनिया का दा। अगस्त क तीमरे सप्ताह म वहाँ 'द्राजन बम फूटा' इमती भी सूचना अमरिका न ही दा। अमरिका के

लिए यह सक्क की बात थी, क्योंकि वह अपने इन्ही अस्त्रों के भरोसे स दुनिया में गाल बजा रहा था। यह यदि अमेरिका के लिए बुरी खबर थी, ता ईरान में उसे खुलाखबरी भी मिली। प्रगतिशाल शक्तियाँ का साथ लेकर मुसद्दिक ने वहाँ के सडे सामन्तवाद पर भयकर प्रहार किया। दुनिया की सभी प्रतिगामी सडे गले हितों को जीविन रखने का ठेका अमेरिका ने ले रखा है। वह ईरान में कैम बर्दाश्त कर सकता था। जब ईरान का ग्राह राजधानी छाड कर भाग गया, तब तो अमेरिकन बैलीगाहा क घरा में कुहराम मच गया। मुसद्दिक दल ने अपनी स्थिति में जल्दी फायदा उठाने का काशिश नहीं की। लेनिन क्रांति के एक एक मिनट को बहुमूल्य ममझते थे और उन्ही जैसे दूरदर्शी पुरुष का यह काम था कि कम में माक्सवाद की विजय हुई। बूडे मुसद्दिक मिनटा और सकडा क मूल्य का क्या ममझन ? जनता के मनोभाव ऐसी स्थिति में एक एक क्षण में बदलत रहते है। वह अनिश्चित काल तक प्रतीक्षा करने के लिए तैयार नहीं हो सकती। बदले भाव से प्रतिगामियाँ न लाभ उठाया और साह फिर जाकर ईरानी जनता की छाती पर कोटा दलने के लिए मौजूद हुआ।

जब मैं मसूरी के एगला इडियन परिवारों का देखता हूँ, ता मुझे वह समय याद आता है जब कि भारत से यूनानिया का प्रभुत्व उठ रहा था। लाखा की तादाद में यूनानी यहाँ मौजूद थे। ज मसूमि से पीडिया स उनका सम्बन्ध नहा था, और अपन जाति भाइया क शासन के कारण ही के यूनानी हान का गव करत थे। प्रभुत्व हटन से पहले ही भारतीय सस्कृति से वे प्रभावित हुए। उनक मिनाटर जस राजा तफ बौद्ध हा गये। इस प्रकार क सास्कृतिक तौर से भारत क दूसर लोग स उतना भेद नहीं रखते थे तितना कि थ एगला इडियन। अग्रेजा ने इस वग को जन्म दिया। अपनी सत्तान हाने स गिशा जा र जाधिक तौर से उनकी सहायता की लेकिन हमगा उन्ह घृणा की दृष्टि से देखते हुए अपन ममाज में अपमानित किया। अपमान सहन हुए भी एगलो इडियन यह देगकर खुश थे कि हम काले आदमिया पर वसे ही घीम जमा सकत हैं जैसे अग्रेज और नौकरो तथा वतन में भी हम विगेष सुविधाएँ मिली हैं। अग्रेजों के शासन के य जबदस्त समयक थे। इन्ह क्या पता था कि अग्रेजों को एक दिन भागना पडेगा,

फिर हमारे जन्म बल्लग जीवन का इस दशक में स्थान नहीं रखा। अग्रजा के जाते ही एग्ना इंडियना में भगन्ड मच गई। दक्षिणी अफ्रीका, आस्ट्रेलिया जाति अग्रेजी उपनिवेशों में उनके लिए दरवाजा खोल दिया। पर तब यह रखा कि रंग रूप में वह अग्रेजा जन्म हा। एग्ना इंडियना में साबले से लेकर यूरोपियना की तरह गार भभूके रंग के नर नारी मिलते हैं। लेकिन इन रंगों में सीमा रेखा एक के परिवार में भी मिलनी मुश्किल है। जिन्हें ज्यादा गारा रंग मिला था, वह अपनी जायदाद बच वाचवर उपनिवेशों में चले गए। जिनका रंग सपनवाला नहीं था उनमें से भी रिक्त दकर कुछ आस्ट्रेलिया और दूसरे देशों में चले गए। इस गडबडी का दखल कर जब बड़ा विरोध प्रकट किया गया तो कितने ही रिक्तों में सपना बरबाद कर तथा अपनी जायदाद को बँच करके भी यही रह जाने के लिए मजबूर हुए।

लेकिन उनकी जायिक समस्याओं के अतिरिक्त साम्प्रतिक समस्या भी कम नहीं है। अभी तक अग्रेजी उनकी मातृभाषा थी जिनकी अग्रेजी राज में सत्रसे अधिक कन्ट थी, और हमारे अंधे पासका के कारण अब भी वह अशुण्य है। एग्ना इंडियना के अपने विधायक हैं जिनमें वेम्ब्रज की परीक्षाएँ होती हैं जिन पर सच भी बहुत आता है। उसका बहुत बड़ा भाग सरकार वर्दाश करती है जिस अब एक कम विधायक साथ पक्षपात हान के कारण वर्दाश नहीं किया जा सकता। एग्ना इंडियना के प्रेक गंधनी जन्म नता यह समय में भी जन्मव्य हैं कि अग्रजा के जाने पर अग्रेजी का प्रभुता नहीं रह सकती। अग्रेजी कुछ भारतीयों की मातृभाषा रहे वह अपना धर्म भी ईसाई रखें इसमें कोई हज नहीं है। हमारे देश की विविधता बहुरंगिता भाषा की चीज है पर, भारतीय भाषा और संस्कृति का वायवाट करके यह हाना अगम्य है। तब हजार वर्ष पहले यूनानियों में भी अपने भाषा और धर्म का अशुण्य रंगन का प्रयत्न जन्म किया हागा परंतु काल और देश की सम्मिलित शक्ति का वक्त मुनाविला कर सकता। सो पचास वर्ष बाद जर्मान् आन में चार पांच पीढ़ी जाने आवाती एग्ना इंडियन मतान इस प्रकार के तिलगाव का कभी पसन्द नहीं करेंगे। तब क्या एग्ना इंडियना की भी वही हालत होगी जा पुगन भारतीय प्रीका

की ? इतिहास म क्या वे बालू क पदचिह्न की तरह मिट जायेंगे ? नदियाँ अपन अस्तित्व का मिटा कर समुद्र म अभिन हा जाती हैं इसे कोई रोक नहीं करता । पर, इतिहास क विद्यार्थी हान क कारण मुझे न्यायल हाना है एग्ना इंडियना की ऐतिहासिक सामग्री का सुरक्षित करना चाहिए । मैं यहा के हर्सी और गिन्सन जम पुरान परिवार का साथ मध्यक स्थापित करके कुछ सामग्री जमा करन की भी कागिग की है । और भी करना चाहता था लेकिन समय की गिकायत ठहरी । ६० वष मे ऊपर का मुठिया स कुछ वाता का पना लगाना चाहता था । मैं आज कल करता रहा, और बुद्धिवा चल बसी । इसी तरह एक और ६० वष मे अधिक उमर के बूडे का पना लगा । उमक पास म भी जान म असमय रहा । मेरे पदामी पूसग का एगला इंडियन परिवार मूलत मसूरी का नहीं है और वही वान लेडली की भी है । बूडे लेडली म भी कितनी ही वानें मालूम हो सकती थी । वह २०वीं मदी क प्रथम दशक ही म यहा जा गये थ और कम स कम पचास वष का मसूरी का इतिहास उह माटूम था । लेकिन उनसे भी मैं सामग्री जमा नहीं कर पाया । लेडली और उनके पुत्र जा गकल-सूरत म अप्रजा से कोई भद नहीं रखन । जान का जब सघष करते देखता हू, ता सोचना है इनके लिए आस्ट्रेलिया म जा बसना मुश्किल नहीं है ।

बूडे लेडली म वान करन म जटा जान द जाता था । वह बडे राकक ढग स पुरान जगत की वानें बतलात थ । कमठ ता इतने थे कि ७० वष से ऊपर क हा जान पर भी समयत ये उनका शरीर अब भी पहने हो जमा है । अपनी फुलवारी म लग रहत टहलने का भी उहे गौक था । कभी कभी ८ ६ बजे रात का मैं उह टहल के लौटते देखा था । पूछने पर कहने— 'केमेल्य वक की तरफ से घूम कर आ रहा हू ।' जाडा अधिक बदन पर यहा बूडा का तकलीफ हा जाती है । सद मुल्का म क्या होता है उनके वारे म वही क बूडे जानें । लेडली का जान और बारबारा गाटा म मदी बदन पर देहरादून भेज दिया करत थे । १९४२ म कहन पर बूड लेडली न कग— निममस करके जायेंगे । इस महान् पष का अपन परिवार म बिनाने की किसकी इच्छा नहा होगी ? लेकिन उहाने गलती का । गकवा मार गया और दो-तीन दिन बेहाग रह कर चठ बसे । मैं भी गव के साथ केमेल्य वक

की सेमटो म गया जहाँ उनकी पत्नी अनांत निद्रायिलीन थी। वही पेटो म बन्द बूटे लडली का भी मुला दिया गया। पादरी न कुछ धार्मिक बचन बहे। जाने वाला म मिसेज कोमरी भी थी। उनके पति आई० सी० एस० अफ सर थे। जो पसा उह यहा मिल् रहा था, वह इग्लड म भी मिल्ता। उनके बच्चे भी इग्लड म थ लेकिन वह इग्लड जाने के लिए तयार नही थीं। पीछ आकपण हुआ यहा का लग पटा बेच कर वह इग्लड गइ। यहाँ का जीवन कितना ही खर्चीला हान पर इग्लड की अपेक्षा बहुत सस्ता है। ३० ४० रुपया जीर खान पर अच्छा बैरा था, जा खाना बनाता था जीर फूल बाग का भी देख लेता था। जमी भी कितने ही इंगलिशभाषी परिवार यहाँ मौजद है इसलिए मिलने जुलने बातचीत करन का भी मुभीता था। इग्लड गइ वहा के खर्चे का देखकर जास खुली। कोइ नौकर नही रख सकती थी पसा पूरा नही पडता। उमर भी अपन हाथ से काम करन की नही थी। वह तम्बु व्याहता हाकर भारत म जाइ, तमस हमेगा नौकर उनका काम करता था। मबस बढ कर उनके लिए इग्लड म कठिनार्ई यह थी कि चीज बहुत महंगा थी। मात आठ महीन बाद वह फिर मसुरी लौट आइ। अपन पर्नीचर का मिट्टी के भाठ बचन का उह अपसोम था, ता भी अब वह नौकर रखकर अपन बद्धापन को इग्लड की अपेक्षा यहाँ अच्छी तरह काट सकती थी, इसका उह सताप था। उस दिन मिसेज कामरी न वहा मरी माँ की भी यही कन्न है। वर्षों स वह यहाँ नही आई थी। पहल चौकी दार रजिस्टर देखकर बनला सकता था लेकिन जत्र उमरा भी कोइ अच्छा प्रग्रथ नही था। हम दोनो न टूटन की कागिंग की ओर अन्न म बन्न कन्न मिठ गइ। वर्षों स तिमो न गुथ नही ला थी। वहग ठगी— 'दमकी मैं मरम्मत करवाऊगा। वह मरम्मत करवा सउनी हैं क्याकि उनक माँ या बाप यहाँ सा रहे हैं। पर उनक बाप कौन दम कन्न की देखभाल करगा? क्या दमस मुर्ता त्तान की प्रथा अच्छी नही है?

१५ अगस्त का लिम्बो लाला की चिट्ठी ३ सितम्बर का मिला। वर्षों बाद यह चिट्ठी मिली थी। तत्र म जीवन का प्रवाह किम तरफ मुट गया। ईगर अच्छा तरह पन्न रहा है, यह सुनकर प्रसन्नता हुई। पर मरा जीवन ता अब कसम जार जान वालो उमकी सताता से बंध गया था। / सितम्बर

को ईगर का जन्मदिन था, इसलिए ४ का मैंने बघाई का तार भेज दिया। कमला को इस पत्र के आने की बात मुनकर बहुत दुःख हुआ। बराबर उह शका बनी रहती है। मैंने कहा—' मरी आवश्यकता यन् है। ईगर ऐसे दग मे पदा हुआ है जहाँ उसकी पढाई लिखाई म काई दिक्कन नगी हा मक्ती। समय बीतता जाएगा। अपनी बिद्या समाप्त करके वह अपन याग्य काम पा लेगा। अब वह १५ साल का भी हा गया है। मैं यह कभी नही कर मन्ता, जपन दाना बच्ची (जया उमी सितम्बर म २० तारीख का पदा हुई और जेता ३१ जनवरी १८५५ का) को छाटना मरे लिए बिल्कल असम्भव है।

जया—१६ का भया क फान स मालूम हुआ कि अभी काई बात नही है लेकिन जगले दिन २० का अस्पताल टेलीफान किया ता पना लया आज २ बज कर २५ मिनट पर जया का जन्म हा गया। जया जब गभ म थी तभी मैंने कह दिया था कि लडकी हागी और उसका नाम जया रखा जाएगा। कमला इसे मानन के लिए तैयार नही थी। जना क वान म भी मैंने दसी तरह दडनापूवक भविष्यवाणी की। वस्तुत इम भविष्यवाणा का इससे अधिक काई मूल्य नही था कि मरे लिए पुत्री नी उतनी ही अधिक प्यारी थी, जितना पुत्र। गाम का सेंट मरी अस्पताल मे गण। मालूम हुआ कि पूर्वाह्न म ही पीटा होन लगी थी, अपराह्न म पीडा बढ चली। रात को नीद लान के लिए माफिया का इजकान दे दिया गया। आज सवेरे पीटा अधिक बढने लगा। मध्याह्न तक वह चरम सीमा म पहुँची। जया का वान आठ पीड से अधिक था इसलिए प्रसव म कुछ जापरगन करना पटा। मैंने देखा बच्ची का मिर और चेहरा गोल बाल काले हैं। गिगु कुठ महीना तक अपन चेहरे को इतनी तजी स बदलता रहता है कि उमके बारे म कुछ नही कहा जा सकता। कमला पुत्र क लिए लालायित थी। पर जया क ससार म आन पर उहे कम सतोप नही हुआ। मुझे तो इसका विशेष जानद हुआ। कमला बहुत कमजोर था, बालन म बठिनाई हा रही थी। अभी दस बारह दिन उह यहा रहना था। उस दिन जया की आर्खें बढ थी। २२ का भी वह उह अच्छी तरह नही ग्याल रही। पाचव दिन मे वह आखें खालन लगी। प्राय सभी माताआ का बच्चे की आख खोलन पर यह स्याल

ज्ञान लगता है कि वह दख रण है। पर वस्तुन दा महीन तक आंख खुली रहन पर भी दच्छा दखता नही। नन और प्रनाग बाह्य लक्ष्य क दानो माधन मौजूद हान पर भी जब तन नन का सम्बन्ध मस्तिष्क क साथ ठीक न स्थापित नही हा जाता तब तक दच्छा नही दखता।

२३ सितम्बर का अस्पताल स घर लौटने पर वेदारनाथ क पण्डा आए मिल। कहन लग गढवा म वेदारनाथ क पण्डा क वार म जा जापन लिखा है, उन पर हम लागा का आपत्ति है। मैं उस स्थल को दया। वहाँ विनालमणि क आक्षेप का जिन जरूर था लेकिन मैं साफ लिखा था कि वह कवन ठीक नही है। पाचीनकाल स इतने प्रतिष्ठित वेदारनाथधाम क तीर्थपुगहित ब्राह्मण छाट दूमर नही हा सकते। और क्या चाहिए था? किसी क मन का यण्डन करन के लिए भी उद्धत न किया जाए यह अयुक्त बात थी। ता भी मैं नही चाहता था कि किसी को दुःख पहुँच। इसलिए मैंने कहा प्रनागक यदि उस अंग को निकालन क लिए तयार हा ता मैं बतलन क लिए प्रस्तुत हूँ। पण्डाजी न यह भी कहा कि इसन लिए जा खर्चा लगेगा हम दग। वह प्रनागक क पास इलाहाबाद गय भी। मैं परिवर्तन क लिए चिटठी भी लिख दी लेकिन वह उत्साह बहुत दिना नही रहा जोर बात या ही रह गई। २७ सितम्बर का वेदारनाथ के दा और पण्डा आय। उनस भी मैंने वही बातें बतलाइ।

२ अक्टूबर का कमला को अस्पताल स लाने क लिए पीन ६ बजे हम वहाँ पहुँच। अस्पताल का प्रबंध बहुत ही मुक्त था। लडी डाक्टर जोर नस सभी दयाता क साथ सहृदयता भी रखती थी। खच के २१२ रुपय बहुत नही थ। जया अब आंग खाल सजती थी। जन्म क समय यद्यपि जया का वजन ८ पाँड ४ औंस था, लेकिन फिर वन ८ औंस कम हा गया। फिर बन्ने लगा। अभी भयाजी का यहाँ रहन का आग्रह था इसलिए वहाँ ले गए जोर ४ अक्टूबर को हा वह घर आ सका। पत्नी और माता की स्थिति म बहुत अनर हाता है यह धीरे धीरे मुझे मालूम हुआ। जब पति-पत्नी बवल ही रहत हैं ता अकसर मतभ्र क्षणिक बडवाहट का रूप लना है पर सतान इस कडवाहट न पहल ता उठन नही दती, और उठने पर जल्दा ही दूर कर दती है। सतान दाम्पत्य सबंध का जबदस्त सीमट है।

मिस पूसग न जया क लिए पहले ही से कपडे और खित्रीन तैयार कर रखे थे। कलेजे की बीमारी के कारण वह अपने हाते से भी बाहर नहीं निकल सकती थी, लेकिन जया की सींगान का उठाने बडे प्रेम से भेजा। जया चौबीस घट सात्र रहन वाली थी। किसी बच्चे को आरम्भ से और इतना अधिक दखन का मुचे मौका नहीं मिला था इसलिए उमकी हर चीज को मैं ध्यान स दखना था। राता बटे जोर स थी। कमला बतला रही थी कि अस्पताल मे भी वह सारे घर का गुजा देती थी। जंगुलिया लम्बी और पतली पतली थी। मिस पूसग न कहा, कलाकारिणी हांगी। जनामिका और मयमा का आकार बिल्कुल समान था। गिगु को कष्ट हा रहा है, इसे जानन के बहुत ही कम साधन है। रोव तो तकलीफ है, लकिन इस पह चानना मुश्किल है। हँसन पर सुग का भान जरूर हाना है।

मा का दूध पर्याप्त न होने पर पीडर दूध का इस्तमाल करना आवश्यक हा जाता। पर्याप्त हान पर भी बानल से दूध पिलान म फायला है कयाकि उसक द्वारा गिगु क भाजन पर नियत्रण किया जा सकता है। यदि पट म गटबडी है ता दूध म पाना ज्यादा मिला दें, यह मा के दूध के साथ नहीं हा सकता। हा सकता है, पीडर के दूध म कुछ विटामिनो की कमी है पर उम ऊपर से दूध म मिला कर पूरा किया जा सकता है। १३ अक्तूबर को भयाजी न अमतसर से जया के लिए बूला मगवा दिया, और उसे बराण्डे और कमरे म टाँगन का इन्तजाम भी कर दिया लेकिन झूल पर हमेशा नजर रखन की जरूरत थी। एक वार रस्ती कटी झूला नीचे आ पटा। गद्दी बहुत थी, इसलिए चोट नहीं आइ। दा-दा महीन तक मनुष्य के बच्चे की आँखा का काम न दना बतलाना है, कि वह कितना असहाय पैदा हाना है। हिरन का बच्चा पला हाते ही दौड सकता है भस गाय का भी अपन पैरा पर खडा हा सकता है। निष्पक्ष कुक्कुट गावक भी स्वय अण्डा ताडकर बाहर आ अपने पैरो पर गडे हा सकते है। मनुष्य का गिगु माता पिता के ऊपर निभर रहता, हाथ-परा पर भी बाबू नहा रखता और न आँव पर ही।

१४ अक्तूबर को जया क जन्म के उपलक्ष्य म हितु मिना का एक छाटा सा भाज हुआ। २० अक्तूबर को जया एक महीने की हा गई। उस वकन २१.५६२ इंच और वजन १० पीड था। नेत्र छोड बाकी सारी इन्द्रिया काम

कर रही थी, बिनापकर स्पष्ट इंद्रिय अधिक तीक्ष्ण थी। गायद मस्तिष्क उतना मंत्रिय नहीं था। ललाट पर बहुत से रामा को दखकर कमला साबन लगी कि इह रगडकर निकालना चाहिए नहीं तो जिदगी भर एस हा रह जाएग। सातव जाठवें महीन का मानव गिशु वानर की तरह अपन सारे शरीर पर बाल रखता है। प्रकृति अपने ही आप उह खतम कर देती है। एम पर कमला का विश्वास नहीं था। पडासिन चौकीदारिन न भी बतलाया, कि मैं ना राख म मठकर अपने बच्चा क रोमा को निकाल गती हूँ। पाच बच्चो की मा का काफी तजर्बा हाना ही था। खर, कमला इतनी जबदस्ता राम निकालने क पक्ष म नहीं हुई और वह अपने आप निकल भी गय। दूसरे महीने को समाप्त करते समय जया लम्बाई म आध इंच बनी और वजन जसा का तैसा रहा। तीसरे महीने की समाप्ति पर जब वह २५ च की थी। पदा हान मारी चर्बी चेहरे पर एकत्रित हा जानी है फिर वह वहा स कम हाकर सारे शरीर मे बढन लगनी है। दूसरे महीने की समाप्ति पर जब वह हँसने और मुनमुताने भी लगी, चीजा का गौर स देखन लगी। अभी उसका सारा ध्यान दूध की जार रहता। जाहार मनुष्य का पहला आव-दयकता है इसलिए गिशु का उसन साथ विगप पक्षपात हा यह स्वाभाविक है। जया बहुत समय लेता, ता भी कमला ने आगरा युनिवर्सिटी क बा० ए० का फाम भरवा दिया। जो भी समय मिलता उगम पढती रही।

१९५३ क छाने सौजन (अकूबर) म नगरपालिका की आर स विगेष उत्सव का प्रबन्ध हुआ। बाघमराय यद्यपि गर्मिया का बिनान क लिए गिमला जाने थे लकिन उनक घाडेँ दहरादून आया करते थे। बाघमराय क खच का गणराज्य घनन पर कम नहीं किया गया बलिव उमे कई गुणा बडा दिया गया। नहल्गाही म खच का घनना प्रताप और मम्मोन का घनना है। चाह वह रपया लागा क मुह क आहार और आँखा क आँसुजा स बनता हा। राष्ट्रपति क प्रथम श्रणी क ४० घोडे घुड़गैड के लिए जाए थे। एनस अच्छा प्रचार किया जा सरता था, किंतु बाठ की मगीन म खच कहाँ ? क रखे गए थे हपीवली क्लब म जहाँ बहुत कम सलानी आत। यदि एन चार इन ४० घोडी का लण्ठीर तक घमा दिया जाए, ता इसम गक नहीं, जनकी दौड देखन क लिए मारी ममूरा दूट पडती। सुना गया मिनमा

तारिकाजा का भी बुलाया गया है। हजारों रुपया का इस प्रकार खर्च करने में देग व लाग मसूरी की आर टूट पड़ेंगे, इसकी सम्भावना कम ही थी। लेकिन सरकारो मन्तव्य का खर्च कर लेने महा अपन काम की दृष्टि से समझती है।

मसूरी नगरपालिका के चुनाव की धूम थी। एक आर कांग्रेसी उम्मीदवार थे। दूसरी आर बागी लागो न मिलकर जनता पार्टी बना ली थी। जनता पार्टी से श्री गम्भूनाथ वैद्य गुप्त हाम निकल गए और उहान डा० प्रकाश का म्युनिसिपैलिटी के अध्यक्ष पद के लिए पड़ा कर लिया। इसमें अध्यक्ष पद के लिए कप्तान कृपाराम का पक्ष मजबूत हुआ यद्यपि हाल की भेडियाघमान में मसूरी कांग्रेस के सर्वेसर्वा हान के कारण वह उतने जन प्रिय नहीं थे किन्तु प्रतिद्वंदी एन नहीं दो थे जिनमें वोट बगन वाला था। डा० प्रकाश का वस्तुन या ही खटा कर दिया गया था क्योंकि सिवाय कुछ दात के मरीचो के उनका जानने वाले वाटर बहुत कम थे। लेकिन जब लड़े हो गए, ता कितना ही हाथ सकोच कर, खीसे व कुछ हजार ता जरूर ही हवा हा जाएंगे। श्रीमता माहिनी जुली कांग्रेसी थी वह भी कांग्रेसी की आर में प्रचार में शामिल थी। मेम्बरी व उम्मीदवारों में गीलाजी भी खड़ी थी। जस जैसे चुनाव का समय नजदीक जाता गया, वैसे वैसे प्रचार का वेग बढ़ता गया। हमारे मोहल्ले में अधिकांश लागो का नाम बोटर-लिस्ट में नहीं था—लेडली परिवार भी नहीं, कुदनलाल भी नहीं, पूसग भी नहीं। लाग बतला रहे थे यह जान बूझकर किया गया है। जिसका समझा गया कि वह कांग्रेस उम्मीदवार को घाट नहीं देगा उसका नाम ही सूची पर आने नहीं दिया गया। हमारे पास भी उम्मीदवार लाग पट्टेच—मैं और कमला दानो वाटर थे। २६ अक्टूबर का रविवार व दिन वोट दान था। हमारे माहल्ले का वोट-म्यान चालविल व प्राइमरी स्कूल में था। हमने जाकर अपन-अपन घाट बहा दिए। कमला जिमनी एक वोट दना चाहती थी उसका वकला ही जल्ला जल्ला में नहीं जान पाइ और दूसर का दे थाई।

वाट देकर हम भया के यहाँ चल। कचहरी में कुल्हड़ी वाला का वाट हो रहा था। मालूम हाना था, उत्सव का दिन है। लाग अपना काम-काज

छाड़ बोट का तमांगा देख रहे थे। मोहिनीजी निःशयत कर रही थी— प्रचार में बहुत गदगो थी, कम-से कम बर्माजा से हम ऐसी जाशा नहीं रखते थे। लेकिन, किसी भी नई चीज में जादमी प्रकृतिस्थ काफी अभ्यास का बाद होता है। अगले दिन (२६ अक्टूबर) को चुनाव का परिणाम निकला। बर्माजी अध्यक्ष चुन लिए गये, यह तो वाट का दिन ही मालूम हो गया था। कप्तान कृपाराम कई हजार के मत्थे पडे। डा० प्रकाश तो हारने लुटने के लिए ही खडे किय गए थे। अगले दिन सभी चुनावों का परिणाम निकल जाए। शीलाजी भी नगरमाता बनी बर्माजी का सहायक वकील जगन्नाथ शर्मा भी आ गए, जो पालिका का उपाध्यक्ष बनने वाले थे। जनता सभा का छ उम्मीदवार चुने गए काग्रस के चार और स्वतंत्र दा। कांग्रेस सरकार ने अपने हाथ में तीन मम्बरा के नामजद करन का भी अधिकार रखा था। वह निश्चय ही वैसे जादमी लिए जाते जा कांग्रेस के थे। इस प्रकार सात कांग्रेस के और जनता के छ मम्बर थे। भाग्य का फसला दा स्वतंत्र उम्मीद वारा के हाथ में था जिन्हें जनता वालों अपनी जार करन में समथ थे। लागो न बडा बडा जाणाएँ बांधी किन्तु यह ता राजा भाज का मिहासन था या काजल की काठरी है। कसा हू सयाना बादमी जाए वहाँ से बचकर निक लना मुश्किल है। पहल की तरह पालिका में अनाप गनाप गच किया गया उनका काल का पूरा हुने पर यह भागा नहीं की जा सकना थी कि कांग्रेस विरोधी दल के कणधार फिर जनता का विश्वासपात्र होंगे।

अब का पाग मदान में १० अक्टूबर का पागो भी खेला गया और घुटदौल भी हुई।

११ अक्टूबर को पता लगा, कि ब्रिटिश गायना के भारी नेहुमत वाली जगन सरकार को कम्युनिस्ट कहकर चर्चिठ न ताड दिया। चर्चिल और इंग्लण्ड की सरकार अब अमेरिका के घमपुत्र थे। अमेरिका दुनिया में वही भी प्रगतिशील सरकार को सहन नहीं कर सकता। फिर वह जगन का अमेरिका की भूमि में क्या एसा करने दता? तीना गायना में भारतवाय कुलियो न जाकर दंग को सरसज किया उहा की सतानें भारी मम्था में वहाँ बसती हैं, इसलिए जगन सरकार का ताडा जाना भारतीयों के लिए विनोय यान थी। जहाँ शान्ति के रास्ते कम्युनिस्ट या प्रगतिशील शक्ति अधिकारा-

रूढ़ हा बहा बलीगाह जनतंत्र के खिलाफ जान का दुहाई दन हैं । और जहा तीन-चौथाई लोग वाट दकर अपन मन क मुताबिक सरकार मगठित कराएँ, वहाँ कम्युनिज्म का लाइन लगा उह हटाया जाना । पूजीवाद दानव निप्टुर और निलज्ज है, वह किमी तरह भी अपना मतलब बनाना चाहता है ।

१८ अक्टूबर को जया क जमापलक्ष्य म भया जोर भाभीजी न अपने यहा चाय पार्टी दी । पिता माता का जाना ही था । डा० मत्पकेतु गीलाजी और पति-सहित श्री माहिनी जुलौ भी आड ।

आजमगढ़ स श्री ज्योतिस्वरूपमिह न कमयोगी ' नाम स एक साप्ताहिक निकालन का निश्चय किया और मुचस भी लेख चाह । मैं चाहता था अपन जिले स जिले की आवाज का प्रकट करन वाला काई अखबार निकल । मैंने स्वीकार कर लिया और अपन बचपन के सम्मरण का सम्बन्ध म तीन दजन क करीब छोट-छोटे लेख लिख । मरे १९१५ से घनिष्ठ मित्र तथा अपन जम के जिले क निवासी स्वामी सयानद (पहल बलदब चौब) अब ससार म नही रह । एक एक करक मित्रा का इस तरह चला जाना खटकता है । उनक प्रति श्रद्धा दिखलान से मरी लेखनी कम रुक सकती थी ? मैंने उनक ऊपर नया ममाज" म एक लेख लिखा ।

२७ अक्टूबर को भाभीजी और भैया अमृतसर चले गए । हर साप्ता की तरह अब क भी कुछ सप्ताहा के लिए उनका अभाव खटकन लगा ।

हिमालय-सम्बन्धी पुस्तका के बारे म मैं यह समझकर निश्चित था कि व ला जनल प्रेम से निकल जाएँगे । 'गढ़वाल' निकल चुका था, और 'कुमाऊँ' का भी माना पर पच कर लिया गया था । लेकिन जमा कि खनलाया जब दर साहब वहा स हटा दिये गए थे और सेठा क अपन डग के लाग वहा भर दिय गए थे जा सिफ यही जानते थे कि हरेक आदमी रुझमी पात्र क सामन नाक रगडने के लिए बना है । मैंन दर माह्य के अधिम न देने की असमयता प्रकट करन पर पटना क प्रकाशक का 'नपाल' दे लिया था । ला-जनल की नौकरगाही न उसको बहाना बनाकर लिखा आपने इस ग्रन्थमाला की एक पुस्तक का दूसरी जगह दकर हमारी करार की खिलाफजर्जी की इसलिय हम 'कुमाऊँ' का छापन के लिए तैयार नहीं हैं । इधर उधर सब जगह पत्र खड-खडाया गया लेकिन उसका कोइ परि-

पाम नहीं हुआ। पच किये हुए घ य का लौटा दिया गया। मैंने भी आये हुए जग्गिम क हजार रुपय भेज दिए। मैं उन्हें राश मकता था लेकिन कौन कगण मोल लेवे ? बडे सठ के साथ यावसायिक सम्बन्ध स्थापित करने का यह पहला तजबा था। अभी तक दूसरा से मुनकर हो म कहता था— 'बैली-गाही तेरा बडा गक हा।' और खुद थलीशाही की करामात दखी। और ऐसा करामात जिसमे हिमाच्य सम्बन्धी सभी पुस्तका का प्रकाशन सटाई मे पड गया। यदि वम प्रेग का गडवाल 'न दिया हाता तो जहा उसका प्रबन्ध हाता गायद वहा से जीर पुस्तकें भी निकल जाती।

३ नवम्बर का हमारा पडासी लाइनमन कन्धार्यामिह सपरिवार मसूरी से बदल कर दहरादून भेज दिया गया। दा लडके तीन लडकियाँ और दो प्राणी खुद सात जना का परिवार और उह मिल रहा था महगाइ भता मिला करके ५६ रुपया मासिक। वपा से बचारा हमारे पाटक क बाहर की काठरी मे रहता। अपन आसपास की जमीन क पत्थरो को चुन कर वहाँ उमने थाडे स मत्त घना त्रिय थे जिसम अपन खाने भर स अधिन साग सब्जी उगा लेना था। इस मोह्ले म जगल अधिक हैं वमलिए बर्कारिया और गाय रख दूए व, अब हरेक चीज का उस मिट्टा के माल बचना वा। १४ १४ रुपय म तीन बकरियाँ बेची, तिनका इससे दूना ता अवश्य मिलता, ओसार गया का सिफ १५ रुपय म दे डाला। मभा जानत थे गरजू है। कितनी क्रूरता था वस परिवार के साथ। यहाँ उम लकडी खरीदनी नहा थी साग-सब्जी खरीदनी नहीं थी। दहरादून गहर म रहत उसे अत्र हरेक चीज का खरीदना पड़ेगा। यहाँ गाय-बकरी स भा कुछ जामना हा जाती थी, वह भी होला गया। मनीना तक वह सूनी कुत्रिया भरा दिल दुखान के लिए मौजूद थी।

१० नवम्बर का एक हृदयदायक खबर सुनी। प्रतिभागात्री तरण इजीनियर वामुदव पाण्डे २६ वष थी उमर म जाप की दुषटना स चल बसा। बिना गणन पाण्डे ही न उसस बहुत आगाण नही बाँवी थी वलिन मैं भी बहूत आगा रखना था। मिर्जापुर की तरफ नहर क काम म नियुक्त हा उमन मुने काम करने की अडचनें लियी थीं। आजकल नौरगाही म याग्यता की कहीं पूछ है ? वहाँ तो गुणामद से सब कुछ हाता है। परन्तु-

मुझे विश्वास था, यामुदव जनी याग्यता का मिकता मनवा नर रहगा । इजीनियरिंग विद्या के सम्बन्ध म हिंदी म बहुत कुछ करन की उसरी इच्छा थी । सभी उमर्गे लेकर एक तर्ण जीवन का जत हा गया ।

अयक्ष के चुनाव म कृपाराम हार गय । पुरप हार का कैम खुशी-खुशी मान लेत । पता लगा श्री रामकृष्ण वर्माने अपन जिनो मुबक्किल का रफया अदालत से बरामत करके अपने पास कुछ समय रफया । इमी मुबक्किल को फाना गया मुकदमा दायर हुआ और तडाज फाक फैमला होकर वर्मा जी मुअत्तल कर दिये गए । गहर मे इसक विरुद्ध हटताल की गई ।

१३ नवम्बर को लेनिनग्राद से चिट्ठी और फोटा आया । उसे देखकर कमला बहुत उद्विग्न हुई । बहुत राई । मैंने अपने भावा का प्रकट करते हुए कहा— मैं कह चुका हूँ कि जया को और तुम को मेरी आवश्यकता है । मैं रस जान को इच्छा नहीं रखता । लेकिन, उनकी इच्छा थी, मैं पन व्यवहार करना भी त्याग दू । क्या इससे आत्महत्या जानान नहीं है । जा पिता ईगर का प्रत्याख्यान कर सकता है, उस पर क्या विश्वास किया जा सकता है ? जिन समय कमला से सम्बन्ध स्थापित हुआ उस समय क्या आशा थी कि रस स फिर सम्बन्ध स्थापित हो सकेगा ? अब यदि यह हुआ तो ईगर के साथ नाता तोडना मानवता के खिलाफ है । यदि कमला यही चाहती है तो भी कोई भयकर कदम उठान से पहले दोनो मा-बेटी का प्रबन्ध ता कर डालना ही होगा ।

इसी सम्बन्ध म १४ नवम्बर को मैंने अपनी डायरी मे लिखा—कल से मैं अपनी नजर म गिर गया, सारे जीवन के लिए । कमला का समझना बिल्कुल ठीक है । मैंने उसकी असहाय अवस्था का फायदा उठाया । हा परापकार, दया दिखान और क्या-क्या बहाना करके । वह क्या मुझ पर विश्वास करने लगी ?

हमारे माहल्ले म मसूरी का एक सबसे बडा हाटल चालविल है । जिसम सौ स ऊपर परिवारा के रहने का स्थान है । तर्ण कालिदास उसो हाटल म घावी का काम वाप क समय स करत रहे हैं । बडा भाई ग्रेजुएट होकर पाच साल पहले मर गया । कालिदास पिछले साल बी० ए० मे फेल हा गए इस साल फिर तैयारी कर रह थे । उनके पिना रह्यखण्ड के ब्राह्मण थे

जिनका प्रेम धाबिन तरणी स हो गया। धोबिन को वह ब्राह्मण नहीं बना सके ता स्वयं धाबी बन गये। अपने काय में दक्ष थे। कितने ही दिना टेकारी के राजा के मुख्य धोबी रह कर मसूरी से बाहर भी घूमने रह। पीछे हाटल में काम करने लगे। कालिदास जन्म में ही मसूरी में परिचित हैं। सीधे साद किन्तु सबके गाढ़े समय में काम आनवाले आदमी। ऐसे आदमी के मित्र भी हात है और शत्रु भी। वह १९४७ के हिन्दू मुस्लिम तूफान के बारे में बतला रहे थे १९४६ में लीगियों का यहाँ बहुत जार था। लष्नीर में उद्दान कहा था—हम सड़क पर गाय काटेंगे। बनिया का कहा हिम्मत थी? उनमें से कुछ भाग गये। १५ अगस्त १९४७ से पहले ही पश्चिमी पंजाब के विभाजन लाहौर के हजारों हिन्दू भाग कर चले आए। नीच नगरों में मकान मिलना मुश्किल था और यहाँ मकान खाली पड़े हुए थे। वह भी मुस्लिम लीग के खिलाफ जन भावों को दिखाने के लिए तयार थे। उनके कारण मुसलमान दूर गये। फोन और रेडियो पर उनका बराबर कान लगा रहता था। सोचते थे, लाहौर के भारत में रहने की खबर आयेगी और हम अपने घरों में लौट चलेंगे। लाहौर पाकिस्तान में गया। उसके बाद खबर आई पश्चिमी पंजाब में हिन्दुओं का कत्ल-आम हो रहा है। यहाँ के मुसलमानों का वह कैसे क्षमा करते? यहाँ भी १७-१८ मीत के घाट उतारे गये। राजपुर में सौ डेढ़ सौ और देहरादून में उसमें भी अधिक मुसलमानों की जान गई। एक झाड़वर न कोतवाली के सामने बस को खड्डे में गिरा दिया जिससे ज्यादा आदमी मरे। खच्चरखाने में चार पाँच मर। सबसे दयनीय मृत्यु यहाँ के एक जक्यूटिक अफसर किदवाई की थी। उनका सारा परिवार राष्ट्रवादी था। उनको विश्वास था कि भरे जसे लीगियों के दुश्मन के ऊपर कौन हाथ उठायेगा? लेकिन उस वक़्त तो कितना के ऊपर पागलपन सवार था। किदवाई रास्त चलते मार लिये गए। अवसर प्राप्त आई० सा० एस० बद्ध हामिद अली उस तूफान में भी सड़क पर टहलने से बाज नहीं आये। मसूरीवालों को डर हुआ कि उन पर भी कोई हाथ छाँट देगा। वह अपने साथ रक्षा के तौर पर किमी को रखने के लिए भी तयार नहीं थे, इसलिए उनसे ५० गज पाछे आदमी लगा दिये गए। बूना सारे तूफान में बसौफ घूमता रहा। मुसलमानों ने प्राणा स ही

मसूरी में

हाथ नहीं धोया बल्कि घनी मुसलमानों का सवस्व लूट गया। लाला का माल मुसलमानों के खिलाफ जहाद बोलनेवाले नेताओं के घरों में चला गया। अभी भी तीन आत्मिया का नाम लोग लेते हैं, जो उससे पहले बिल्कुल मामूली हैसियत रखते थे लेकिन तूफान के बाद लखपति बन गये। मुसलमानों का नवाब रामपुर के बगला और दूसरी सुरक्षित जगहों में रख दिया गया। पीछे वे सगस्त्र सैनिकों की देख रेख में बसा पर बैठा कर नीचे भेजे गये। उस समय सभी बड़ी बड़ी कोठियों में बलती मुसलमान चौकीदार थे सड़क बनाने का काम भी बलती मजदूर कर रहे थे। सभी सवस्व में फँस गये, और फिर मसूरी का खाली करके चले गए।

नवम्बर में "बहुतगी मधुपुरा" की कहानियाँ लिखते रहे। नरेन्द्रय्य के ऊपर एक उपवास लिखने का विचार बितने ही महीना से दिमाग में चक्कर काट रहा था, जिसका आरम्भ २१ नवम्बर से किया। "राजस्थानी रति वास" को नेशनल हरल्ड में छपाने का भी अब प्रबन्ध हो गया।

३१ दिसम्बर का साल खतम होने लगा। लेखा-जोखा करने पर मालूम हुआ, कि इस साल ३००० पृष्ठ से अधिक पुस्तकें लिखीं। साल बुरा नहीं था। हाँ, आर्थिक चिन्ता रही जहाँ तक भविष्य का सम्बन्ध था।

वृद्ध लेडली

१९५४ के नव वष के दिन वृद्ध लेडली प्रयोग पड़े थे। पिछले पाँच छ दिन से उन्नी तबीयत अस्वस्थ थी। १ जनवरी को लज्जा मार गया। उनका ७८ वीं वष चल रहा था वष फलता थे ही जरा भी हवा के बान को जहरत थी। ताप अधिक होन पर देहरादून चल गए हात तो पायद अभी जीर कुछ तिन जी पात। लकव के बात फिर उनका हाग गही हुआ। ६ जनवरी का देनात हा गया और ७ को उन्नी गव यात्रा हुई।

३१ जनवरी का वष पड़ी। कल रात का भी जीर १ तारीख का तो मारे दिन वष पडती रहा। भूमि पर ही नहीं बल्कि बधा पर भा हिमखण्ड लिखाई पडत थे। हिमालय का एक एक अगुल वष स २०० गया था। दिन भर जाग जला कर घर के भीतर बठे रहे। अगले दिन से जासमान माफ हा गया घूप निरन्तरने लगी और वष गुली जगहा म गलन लगी। २ जनवरी की गाम का महाशैव भाद आय। साल म पतना अंतर ता नही हा गजना लकिन बाल ज्याता पर दिगार्त पड रह व। गरीर का बडा बजन बतला रहा था कि अत्र प्रौढ़ अवस्था म पर काफी दूर तन पहुँच गया है।

यद्यपि हिमालय सम्प्रधी लिम्बी हुई पुस्तकें अभी प्रकाशित हान को बाकी थी किन्तु हमन तम्मू वामार की सामा तन के हिमालय को लिपन का निश्चय कर लिया था एगलिए अत्र अन्तिम पुस्तक 'हिमाचल प्रत्या' (जाल्धर-खण्ड) के लिपन म हाथ लगा दिया। २० साल केम्पुनिरट दृष्टि म जनमापारण की भाषा म एक एक फाम के गाड तान दजन पम्पटा के

लिखने का निश्चय किया था। ६ ७ जनवरी का पहला पम्पट 'कम्युनिस्ट क्या चाहत हैं' लिख भी डाला। ७ ताराख सही हिमाचल प्रदेश' में भी हाथ लगाया। जाड़ा में खुला जाममान और धूप अच्छी लगती है। हिमवर्षा भी बुरी नहीं लगती लेकिन यदि कई दिना तरु बादल घिरे और बूदा वादी रह, तो अच्छा नहीं लगता। यहाँ का क्या? हवा बादल चने मर्दी बढ जाए। धूप निकल आय, तो अमन चैन की बगी बजे। महादेव भाई सर्दी क फेर में पडे। दा दिन के लिए हरिद्वारजी अपनी पत्नी और पुत्र क साथ आगर टिठुरते रह। बेवार की इस सर्दी का बर्दास्त करन क लिए बह क्या सवार हात?

१७ जनवरी को फिर जलवर्षा और हिमवर्षा का दौर गुन हुआ। उम दिन दापहर बाद बफ गिरन लगी, लेकिन जमीन ढँकन नहीं पाई। मर्दी तेज हो गई। अगले दिन मध्याह्न स हिमवर्षा हान लगी, और सारी जमीन ढक गई। १६ जनवरी को बाच-बाच में बफ या बजरी पडती रही, हवा भी तेज थी। ३ बजे बराण्डे में तापमान ३२ डिग्री, अर्थात् हिमप्रिडु स एक डिग्री नीचे।

हिम देखन के लिए कितन ही लाग नीचे से आए। हमारे दाना कमरा में आग जली रहती। जया ने दुनिया में पहला जाड़ा देला। डर लग रहा था मर्दी प्रतिकूल न साबित हा, लेकिन लडक काफी बर्दास्त कर लेत हैं। कमला की बहिन गंगा और भाई हरिमगल साथ क दूमर कमर में बाग के सामने बठे रहते। जाग तापत सर्दी दूर करना तिन में बुरा नहा हाता, यदि चात करते और बीच बीच में गरम पय पीते रह। गरम-गरम मासमूप बढन प्रिय लगता है, पर गहर से दूर रहने का एक फट यह भी मिल रहा था कि माम अपनी इच्छा में मुटभ नहीं था।

अमतसर—भया भाभी के यहाँ जाड़ा में जान की पहल सलाह हा चुकी थी। सर्दी से बचने का यह अच्छा उपाय था। चाय पीकर हम २२ जनवरी के ६ बजे घर से निकल। रास्त में बफ खूब पनी हुई थी पडा पर भी लनी थी, जो अब पिघल कर गिर रही थी। जान पडता था, हम चीनी के माटे दानो क ऊपर चल रह है। टाठ क पाम आघ फुट स अधिक भाटी बफ थी। रिकरा के आज तक जिवियाग सडक बफ स लकी मिली। किताय

घर के जड्ड पर कोई टैक्सी नहीं थी। किन्नेग म दा सीटें मिली। ११ बजे चले। ३५०० फुट तक जहा तहाँ सड़क पर बर्फ मिली। बतला रह थे, बल राजपुर म भी बजरी गिरा थी, यदि दा घट और तापमान उसी तरह चला जाता तो देहरादून म भी हिमवष्टि हो जाती।

१२ बजे शुक्लजी के यहा पहुँच। भाजन तयार था। जया और उसकी माता वहा शुक्लाइनजी से बातचीत करने लगी और मैं डेड घटे क लिए मिश्रजी क साथ मत्सग करने चला गया। अबके दिन लिन मे ही अमतसर चलन का निश्चय किया। सांने ३ बजे हम अमतसर की ट्रेन मिली। पहल दर्जे म सीट रिजव थी। नीचे की सीटें मिल गई थी। हरद्वार पहुँचत पहुँचने सूर्यास्त हो गया। लुकसर म पहुँच कर भोजन किया। मध्य रात्रि की भी देख रहे थे वष्टि जारी है और सर्दी तो मसूरी स पीछा कर रही थी।

ठीक ७ बजे गाडी अमृतसर स्टेशन पर पहुँची। भयाजी मौजूद थे। त्रांग पर बठ कर ८ बजे हम उनक घर पर पहुँचे। उस दिन गाम का ३ बजे टहलने क लिए कम्पनी बाग गये। कितनी ही दूर तक रिक्श पर चल। अमृतसर की गलियाँ भी बनारस जसी ही हैं और भील नी बहुत रहती है। मसूरी की सर्दी अप्रिय लग रही थी और यहाँ की बड़ी सुहावना। भया का कहना था— 'चार महीने जाडा के यही बिताआ।' पर जाडा बिताना हा तो जावन का लक्ष्य नहीं हो सकता। लिखे पट बिना दिन कस कइता और उसकी मुबिधा मसूरी म ही थी। वहाँ पुस्तकें थी और वहाँ मिलन जुलने वाल भी बहुत कम आत थे।

२४ जनवरी को ३ बजे रिक्शे पर छावनी गय। फिर वहाँ से पदल कम्पनी बाग। कम्पनी बाग का अर्थ ही है कि इसकी स्थापना १८५७ से पहले हुई थी। चलन म अब थकावट मालम हाती थी अमृतसर गहर का कुछ भाग जल गया है। मदी हिन्दू मुसलमाना का डटकर सघष हुआ था। मुसलमाना की मर्या कम थी इसलिए उनका ज्यादा जन घन की हानि उठानी पडी। अत म एक एक का पाकिस्तान चला जाना पया। वही बात उलटी दिगा म लाहौर म हुई। जहाँ मुसलमाना की बड़ी-बड़ी दूकानें थी वहाँ अब गरणाबियों की छाटी छोटी दूकान लडा थी बडे मवान ता जल कर साक हा गए थ। हिन्दुआ न इह जलाकर अपना ही नुसतान किया,

किंतु उस वक्त किमकी अक्ल ठिकान थी ? इतवार का दूजानें बान रहनी हैं लेकिन गरणाधिया की दूजानें उम जिन भी मुगी थी दूमरी दूजाना स यहाँ चीजें सस्ती मिलती थी। इमलिए गाट्क अधिक् आवें, यह म्नाभाविक था।

३ फरवरा तक हमारी एक ही तरह की दिनचर्या थी। छन पर एक जगह सबसे पहले धूप आती। वही दरी-तलिया लग जाता, जिग पर कमला, जया, मैं, भाभीजी डट जान। भाई साहब बीच बीच म काई और भा काम कर आत, लेकिन हम वहाँ तब तक बठे रहन, जब तक कि दापहर का धूप वहाँ म हट नही जाती। गम्भीर नाश्ता और चाय क बान १० बज माल्टा-मुसम्बिया का दौर आरम्भ हाता। एक पूरी टोन्नी सामन रख दी जाती और हम तब तक काट काट कर धूमते रहते जब तक टोकरी साफ नही हो जानी। भाभी साहिबा परामने म बडी जवन्स्त हैं। मजाल नही कि काई मेहमान गले तक पेट भरे और अजीण लिए बिना वहाँ स हट जाए। भाई साहब ने मकान को अपने मन स बनवाया था, और आम भारतीय मराना की तरह यहाँ भी पाखाने का स्वच्छ प्रबन्ध नही था। वह स्वच्छ प्रबन्ध तब तक नहा हा सकता, जब तक पन्ग का इतिजाम न हा। हम कुछ दिन और रहते लेकिन कमला न बी० ए० का फाम भरा था, और यहाँ पडना नहा हा रहा था। उघर 'बहुरगी मधुपुरी' के प्रूफ भी आने लग थ। कमला के प्रबन्धन की यह तीसरी और अतिम पुस्तक थी।

२८ जनवरी का ४ बजे अब पुराने मित्रा से मिलन के लिए निकले। देगभगन परिवार म बाबा केसरसिंह मिल। यह उन वीरा म थ, जिन्हने अमरिका के सुखी जीवन को लात मार कर विश्व युद्ध क समय देग के मुक्ति-यन म अपने सबस्व की आहुती दी थी। अग्रज सबका फामी पर लटवान के लिए तयार नहा थे इमीलिये बाबा केसरसिंह और उनके कितने ही साधिया का आज म कालापानी की सजा हुई। ७६ वय क हो गए थे। पूरा छ फुट का गरीर, लेकिन अभी भी कमर नही झुकी थी। चल भी लेत। उनस मिलकर दाना को बन्नी प्रसन्नता हुई। क्या पता, यह अतिम मुलाकात है। उनस मालूम हुआ कि तीन चार वय पहले बाबा धरमसिंह धून का दहान्त हा गया। वह भी अमरिका से देश की स्वतन्त्रता क लिए आए थ।

घर के जड़डे पर काई टक्की नही थी। किन्नेग म दो सीटें मिली। ११ बजे चले। ३५०० फुट तक जहा तहा सटक पर बफ मिली। बतला रहे थे, कङ राजपुर म भी बजरी गिरी थी यदि दा घटे और तापमान उमी तरह चला जाता तो देहरादून म भी हिमवट्टि हो जाती।

१२ बज शुक्लजो के यहा पहुँचे। भाजन तयार था। जया और उमरी माना वहाँ शुक्लाइनजी से बातचीत करने लगी और मैं डेढ घटे के लिए मिश्रजी के साथ सत्सग करने चला गया। अबके दिन दिन म ही अमतसर चलन वा निश्चय किया। साडे ३ बजे हम अमतसर की ट्रेन मिली। पहले दर्जे म भीट रिजव थी। नीचे की सीटें मिल गई थी। हरद्वार पहुँचते पहुँचते सूर्यास्त हो गया। लुकर म पहुँच कर भोजन किया। मध्य राति की भी देख रहे थे वट्टि जारी है और सर्दी तो मसूरी स पीछा कर रही थी।

ठीक ७ बजे गाडी अमृतसर स्टेशन पर पहुँची। भयाजी मौजूद थ। ताँग पर बठ कर ८ बजे हम उनके घर पर पहुँचे। उस दिन गाम को ३ बजे टहलने के लिए कम्पनी बाग गये। कितनी ही दूर तक रिक्का पर चल। अमृतसर की गलियाँ भी बनारस जसा ही हैं और भीड भी बहुत रहती है। मसूरी की सर्दी अप्रिय लग रही थी और यहाँ की बडी सहावनी। भया का कहना था—'चार महीन जाडो के यही कितना थ।' पर जाण किताना ही तो जीवन का लक्ष्य नहा हो सकता। लिखे पङ बिना दिन कसे कटता और उसकी मुबिधा मसूरी म ही थी। वहाँ पुस्तकें थी और वहाँ मिलन जुलन वाले भी बहुत कम आत थे।

२४ जनवरी का ३ बजे रिक्को पर छावनी गय। फिर वहाँ से पदल कम्पनी बाग। कम्पनी बाग का अथ ही है कि एसरी स्थापना १८५७ म पहले हुई थी। चलने म अत्र थकावट मालूम हाती थी अमृतसर गहर का कुछ भाग जल गया है। यहा हिन्दू मुसलमाना था डटकर सघष हुआ था। मुसलमाना की सहया कम थी इसलिए उनका ज्याण जन धन का हानि उठानी पडी। अत म एक एक का पाकिस्नान चला जाना पटा। कङ बात उलटी लिंगा म लाहीर म हुई। जहाँ मुसलमाना की बडी-बडी दूनाएँ थी, वहाँ अब गरणाधिया की छाटी छाण दूनाएँ खडी थी, बटे मवान ता जल कर साव हो गए थ। हिट्टा न इट्ट जलाकर अपना ही खुसान किया,

किंतु उम वक्त किमकी अक्ठ ठिकान थी ? इतवार का दूकानें बन्द रहनी हैं, लेकिन गरणार्थिया की दूकानें उम दिन भी खुली थी दूमरी दूकाना से यहाँ चोजें सस्नी मिगती थी । इमलिए गाहक अधिक आवें, यह श्वानाविक था ।

३ फरवरी तब हमारी एक ही तरह की दिनचया थी । छन पर एक जगह सबस पहले घूप आनी । वही दरी-तलिया लग जाना जिम पर कमला, जया मैं, भाभीजी डट जान । भाई साहब बीच बीच म काई और भी काम कर आत, लेकिन हम वही तब तक बठे रहत जब तक कि दापहर का घूप वहा से हट नही जानी । गम्भीर नाश्ना और चाय के बाद १० बजे मालटा-मुसम्बियो का दौर आरम्भ हाना । एक पूरी टाकरी सामन रख दी जानी और हम तब तक काट काट कर घूमत रहते, जत तक टाकरी साफ नहा हो जानी । भाभी माहिबा परोसन मे बडी जवदस्त हैं । मजाल नही कि काई मेहमान गले तक पट भरे और अजीण लिए बिना वहा से हट जाए । भाई साहब न मकान को अपन मन से बनवाया था, और आम भारतीय मकाना की तरह यहा भी पाखान का स्वच्छ प्रबन्ध नही था । वह स्वच्छ प्रबन्ध तब तक नही हा सक्ता, जब तक पत्रा का इन्तिजाम न हा । हम कुछ दिन और रहत, लेकिन कमला न बी० ए० का फाम भरा था और यहाँ पढना नही हा रहा था । उघर "बहुरगी मधुपुरी" के प्रूप भी आन लग थे । कमला के प्रकाशन की यह तीसरी और अन्तिम पुस्तक थी ।

२८ जनवरी का ४ बजे अब पुरान मित्रा से मिलन के लिए निकले । देगभगन परिवार म बाबा बेसरसिंह मिले । यह उन बीराम थे जिहाने अमरिका के सुखी जीवन को लात मार कर विश्व युद्ध के समय देग के मुक्ति-यन में अपने सवम्ब की आहुती दी थी । अग्रेज सबका फासी पर लटकान के लिए तयार नही थे इसीलिये बाबा बेसरसिंह और उनके कितने ही माधियों को आज म कालापानी की सजा हुई । ७६ वय के हा गए थे । पूरा छ फुट का गरीर, लेकिन अभी भी कमर नही झुकी थी । चल भी लत । उनसे मिलकर दाता का बडी प्रसन्नता हुई । क्या पता यह अन्तिम मुलाकात है । उनसे मालूम हुआ कि तीन चार घप पहले बाबा करमसिंह घून का देहात हा गया । वह भी अमरिका से देग की स्वतन्त्रता के लिए आए थे ।

रूम में कितन ही समय रह कर साम्यवाद की शिक्षा प्राप्त कर, वपों दंग व जेलों में रहें। तरुणा का कितना मनोरंजन करते थे? बाबा सोहनसिंह भाखना—अमरिका में भारतीय गदर पार्टी के संस्थापक—अब भी जावित थे। कमर उनकी पहले ही टूटी हो गई थी, अब चलना फिरना भी उनके लिए मुश्किल था और अधिवतर अपने गांव में रहते थे। ३१ जनवरी का उनके गांव जाने का निश्चय था किंतु कुछ बुखार आ गया, इसलिए यात्रा स्थगित करनी पड़ी। बाबा बिसालासिंह जब भी थे किंतु बहुत दुबल। वह तो वपों से टी० वी० के मरीज थे। देवली केम्प वाले और भी साथियो से मुलाकात हाती लेकिन आजकल पेप्सू में पुनर्निर्वाचन हो रहा था, सारे साथी उसी में लग हुए थे।

३१ जनवरी को लोक लिखारी सभा की ओर से रिपब्लिक हाल में मुख्य भाषण देना पडा। साहित्य, भाषा और कला पर बाला। पजाबी भाषा और पजाबी सूब की बात भी आई। सिर्फ लिखारी ही नहीं नगर के दूसरे भी शिक्षित मध्यात वर्ग के लोग मौजूद थे। अमृतसर में इसी एक भाषण से लोगो की मरे जान का पता लगा था। मैंने यह भी कहा कि चढीगढ़ में पजाब की राजधानी बसान जसी बेवकूफी नहीं हो सकती। उनका भाग्य में उजाड़ बढा है। मृत प्रसव इसी का कहते हैं। अमृतसर यदि सीमांत के पास था तो जलघर राजधानी के लिए सबसे अनुकूल नगर था। ऐतिहासिक तौर से भी वह पजाब का सयम पुराना नगर है और केन्द्र में भी है। कुछ ही मील पर कपूरथला से एक हाकर वहाँ न जमीन की विक्रत थी और सरकार आदिमा या लोगो के रहने के लिए मकाना थी। एक घनी पुरुष ने कहा मही साचकर जमान लेकर भी मैंने वहाँ मकान नहीं बनाया। पजाब के अध्यक्षसामी प्रापारी भली प्रकार जानते हैं कि उनके फलन फूलन का स्थान कौन सा हो सकता है? अगर इन्हें अपने गहर का छाडना है, तो वह इमके लिए दिल्ली का ज्यादा पसन्द करेगे। अमृतसर की जन संख्या पहले से बनी है किंतु घर उता गही बढे। कोई भी स्थाया सम्पत्ति या उमका साधन वहाँ कायम करना लोग पसन्द नहीं करते थे। जत्र जयानि पिया की भविष्यवाणी सुनकर हजारा की तागद में लाग गहर छाडकर भाग जाते हैं पाकिस्तान हिन्दुस्तान के सम्बन्ध के तरा से सराब हाने से

हृदय मच जाती है, ता वहा कौन नय कारखाने खालेगा । पहले जमतसर उभय-पजाय और कश्मीर तक के बपडे और कितना ही और चौजा का मुफ्त बाजार था, अब नहीं रह गया है । दमना घुरा प्रभाव अमतमर क बाजार क ऊपर पडा है ।

मसूरी—अमृतमर में बारह दिन रह कर ४ फरवरी का रात की गाडी से हम मसूरी क लिए रवाना हुए । जया की बाँह मे चैचक का टीना लग बाया था । पहली बार का लगाया उभडा नया, फिर दूसरा बार लगबाया । अर वह फूल आया था बुवार भी था । बचारी रा मूड मुरसा गया था । बच्चा का हँसना बेहरा ही अच्छा लगता है । बुवार और चैचक की अवम्या म मसूरा ल जाने की सलाह ता नहीं मिल रही थी, लकिन मजबूरी थी । ५ फरवरी का सबरा सहारनपुर म हुआ । रात भर बर्पा हुई और वह मसूरी तक एसी ही थी । नदिवा की घारा बह गई था घेना म पानी भरा हुआ था । ६ बजे गाडी लुकर पहुँची । गाडी न छकटे का रूप ल लिया था, और मजा बजे ही देहरादून पहुँचा । वहुन से मध्य हिमालय के पहाड भी हिमालय-श्रेणी बन गए थे । मसूरी का देहरादून का तरफ वाला भाग बहुत कम बफ से टँका दखा जाता था, लकिन आज वह भी ढँका था । नाचे रात रा जो वृष्टि हुट था, वह यहाँ हिमवृष्टि के रूप म परिणत हो गई थी ।

डेड वन गुकलजी के घर पर पहुँच गए । अब की टगाहावात म कुम्भ लगा था । भारत के सभी देव महादेव कुम्भ का भग्य देखने और अपना दान कराने वना पहुँच थे । प्रबच करने वाली पुलिम देवताआ के दरवार म उपस्थित हो गए और उघर आदमिया का एसा रला आया कि हजारों आत्मा कुचलकर मर गए । इसकी खबर मिलन पर भी देवताआ की दावतें चलता रला । कैसा क्रूर परिहाम ? कुम्भ मेठे म गुकलजी भी गई हुई थी । कहा—“जिन्दगी का क्या टिकाना । अब ता यन् कुम्भ बारह बप बाद हो बाएगा । गुकलजी क्यों राककर पाप क भागी हान ? तार पर तार खटखटा रह थ, पर प्रयाग म कोई उबाव नहीं मिल रहा था । तार मट खतान वाल वह अकेले ही थोडे थे ? तारा तारा का टीन जगह पर पहुँचाना तारघर वाग के बग की बान नहीं थी । प्रयाग की हृदयद्रावक खबरें अन्ववाग म जिनल रहा थी, जिने पढकर चित्त और बड गई थी । आज

तार आया लेकिन उसमें सकुशल यहाँ पहुँचने की बात थी।

उस दिन धूमते घामत कल्याणसिंह की काठरी में भी पहुँचे। वचारे की अवस्था बड़ी दयनीय थी। सात जादमी शहर का जीवन और रपय दिन के दो भाग नहीं।

६ फरवरी को श्री हरिनारायण मिश्र के यहाँ कितने ही विद्यार्थियों और अध्यापकों का गाँठी रही। भाजनोपरान्त कन्या गुरुकुल में भाषण दिया। घीरे घर इस सस्था ने बड़ा रूप धारण कर लिया है। सौ एकड़ के करीब जमीन है दा लग्ब से अधिक की इमारत है। बहुत समय पहले समाज के लिए आवश्यक इस सस्था का निर्माण हुआ था। पर, स्त्री शिक्षा के बन्दे हुए वग से जितना लाभ उठाना चाहिए था, उतना इसने नहीं उठाया। यद्यपि शिक्षा की आधुनिक आवश्यकताओं की पूर्ति यहाँ की गई है लेकिन आधे मन से ही। यही कारण है जो कन्या गुरुकुल उतना उन्नति नहीं कर सका। डा० सत्यकेतु की पुत्री उषा इस वक्त यहाँ पढ़ रही थी। पढाई का लाभ उन्हें साफ दिनाई पड़ा। भाषा में उसने बड़ी तरक्की की और पढ़ने में भी। वजन काफी बढ़ गया था। लेकिन माँ बाप को खयाल आया कि आधुनिक तरुणी को जसा हाना चाहिए वैसे वह नहीं है। सबको इसलिए कुछ समय बाद उस हटा लिया यद्यपि वहाँ खर्च भी कम पड़ रहा था।

७ का सवरे गुकानीजी आई। लाग बडे खुश हुए। डर होने लगा था कि वह देहरादून की जगह बकुण्ठ पहुँच गई होगी। हमने पौन ११ बजे माटर पकड़ी और साढ़े १२ बजे मसूरी अपने घर पर पहुँच गए। ४ तारीख की बफ अब भी रास्ते पर पडी थी लेकिन २१ जनवरी जिनकी नहीं थी।

जया का टीक के कारण ज्वर था। बच्चा का वरण रुन्त सुनना अमह्य हाता है। घर पर आकर सबसे अधिक आराम बायरूम का था। इतना आधुनिकपन तो अब हमारे में आ ही गया था कि बायरूम कमरे की बगल में हो और पलंग का हो। डायबेटाज ने इस आवश्यक भी बना दिया। ६ को जया का बुखार जब मिल्कुल हट गया, और वह हँसने लगा, तो बड़ी प्रसन्नता हुई। पानी में मिलाकर गाय का दूध भी पिलाया जा रहा था। वह उस हजम भी करने लगी। उसकी सभी इन्द्रियाँ अब काम कर रही थी,

और तन्त्रिय के सहार कुछ बैठ भी सकता थी। उठकर बैठक का ता ताना लगा देती थी।

२ माच का जाड़े की समाप्ति का पना लगने लगा, जब नग वक्षा पर पत्तिया का कुटमलित दाना। इसम हमारी नासपाती सदा पहल रहा करती है। ५ माच का उसम लाल लाल पत्तिया दीखन लगी। ८ माच को जया बठने लगा। 'हिमाचल प्रदेश' का डिक्टेट करके टाइप करात बहुत दूर तक हम लिख चुके थे। हिमालय के किमी भाग वं परिचय ग्रन्थ का हम पूरा नहीं समझ सकते, जब तक कि उमकी यात्रा भी उमम सम्मिन्ति न हो जाए। इसीलिए अबके हिमाचल प्रदेश की यात्रा करनी थी। साय म किसी के रखने की आवश्यकता थी। मैंने धूपनाथजी और जनकलालजी दाना के पास का पत्र लिखा दाना इसके लिए तैयार व।

गुरुजी की पुत्री मुक्ता (कमल) का ११ माच को व्याह था। १० को मैं भी वहा पहुँचा। उमी दिन गाम का बरान आई। इक्लौती लटकी का व्याह माँ बाप ने पूरे उत्साह के साथ करना चाहा यद्यपि लडके वाले इस उतना पसंद नहीं करत थे। विद्वान् के घर मे विवाह हा, ता मवस अधिक पण्डिता का आना स्वाभाविक था। वर कृष्णकांत मिश्र पढ़न म हमसा प्रयम आते रह और यदि तिकडम न लगाया गया हाता तो वह आई० ए० एस० म आ गण हात। वह एक डिग्री कालेज म अध्यापक थ। आशा है ऐमे प्रतिभागाली तरुण का रास्ता सदा रका नही रह सकता। श्री किशोरीदास बाजपया बरातिया की ओर स थ। कया क दादा दादी भी व्याह मे शामिल हुए थे। उहान अपने पुत्र, पौत्र और प्रपौत्रिया तक का दख लिया। नदी की मा ने ता एक और भी पीढी देखी थी। व्याह दिन म हुआ। यद्यपि पाशाक म प्राचीनता रखन की कोशिश की गई थी लेकिन वर म काई सकाच नहीं था और कया भी उतनी छुद्र मुई सो नहीं हुई थी। विवाह करान वाले पण्डितजी ने "गमणस्य" जब कहा ता हँसी आ गई। पुराहित क लिए संस्कृत के जान की आवश्यकता नहीं। व्याह के सम्बन्ध से आए थे सब भी दो व्याख्यान देन ही पडे। कमला भी हमार साथ व्याह म शामिल हुई थी। उह उत्तर प्रदेश का प्रथम व्याह देखन का मौका मिला।

१३ माच का हम टक्सी करके दापहर तक मसूरी पहुँच गए। लेडली के

घर तब पहुँचने में कुछ घन्टाराहत मालूम हुई। दोपहर और रात का भी कुछ नहीं खाया। रात को बुखार मालूम हुआ। इस वक़्त गौतमजा की लम्बा लम्बी तुम्बूदिया में फटकारे जा रही थीं जिनमें बौद्ध धर्म, साम्यवाद का गालियाँ रहती थीं। ऐसे जादमी से कुछ कहा भी तो नहीं जा सकता। कुछ भी अस्वस्थता हान पर चारपाई पर पड़कर पूरा विश्राम करना यही मेरा नियम है। बुखार या पेट की गड़बड़ी होने पर मैं खाना भी छोड़ देता हूँ लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि पढ़ना भी छोड़ दूँ या जाव यत्र प्रूफ आन पर उसे रफ़ छानूँ। जब की चारपाई पर पड़े पड़े मैं प्रमचन्द के गादान को पढ़ना शुरू किया। वर्षों पहले उसे पढ़ा था, जिसका मन पर स्कार भी श्रव नहीं था। समाप्त करने पर डायरी में लिखा— 'अद्भुत खूबी है। कितने गुण हैं? भाषा ही का ललाटे तक देखो कितना कमाल किया। जनता के मुह में निकलने वाले गानों का घटल्ले में प्रयोग करत है। अनापश्यक किष्क शब्दों का हटाकर देहाती गठना का भा प्रयोग किया है। हा मरता है उनमें कुछ एस भी हा, जो हिन्दी के परिचयी क्षेत्रों में नहीं वाक़ जात। पर उनमें लिए नया चित्रण की एक उत्कृष्ट सामग्री का छाड़ अधूरा चित्र अंकित किया जाए? या अनावश्यक तथा अप्रयुक्त तत्त्वम या उद्गू के गानों का लिया जाए? किसान के दुःखमय जीवन का कितना स्पष्ट विस्तृत और गम्भीर चित्रण मिलन किया है?' भारत में ता काइ ऐमा नहा हुआ? काइ अनावश्यक पात्र नहा है—मालती धार खना भी नहा। कितन नाम उपयास में आ जाए उह अन से पन्ना विम्मून या मत न बनाया जाए यह काई उचित माँग नहीं है। 'गोपान' के पात्रों में सबका अपना अपना अलग अलग व्यक्तित्व है।'

१७ मार्च में बटकर काम करना शुरू किया। १६ का कल्याणसिंह आए। 'कमलसिंह' के नाम से अधिस्तर उनका ही जीवनी का लेखक जा मैंने कहानी लिखी थी व माप्नाहिक हिन्दुस्तान में छप चुकी थी। देवराइन में किमी न पत्रों और भाव लिया। उगन कल्याणसिंह का भी सुनाया। कल्याणसिंह कह रहे थे— 'आपने मत्र बानें कम जान ली?' हाँ कुछ बानें मैं उनमें कल्पना में लिया थीं लेकिन उनकी स्थिति के आत्मों के लिए वे बिल्कुल सम्भव थीं इसलिए तुव बठ गईं। जब नई नगर-

पालिका आ गई थी। मैं उनके प्रभावशाली व्यक्तिता से मिफारिंग की, और कल्याणसिंह से मसूरी में बदल देने के लिए दरखास्त लिखवाई।

हमार यहा करीब-करीब सभी त्यौहार दो दिन हात हैं। त्यौहार दो दिन तक रह, लग दो दिन उत्सव मनाएँ, यह बुरा नहीं है। लेकिन, तिथि का निश्चित हाना जरूर बुरा है। इस माहल्ले के लोग १६ को ही होली मना रहे थे अर्थात् १८ को ही उन्होंने हाली जला दी। हमन अपने यहाँ २० को हाली मनाई। पक्वान बने। कमला ने पडोसिना में भी कुठ बाँटा। जया आज छ मास की हो गई थी। कुछ बानों की नकल करन लगी थी। यद्यपि माटी नहीं थी पर दुबली भी नहीं कह सजत थ।

२१ मार्च को पूर्वी पाकिस्तान के साधारण निर्वाचन की खबर आई। जिस मुस्लिम लीग का जेय समया जाता था वह पाकिस्तान के अधिक जनता वाले सबसे बड़े साठे तीन सौ में से दस भी स्थान नहीं पा सकी। मुख्य मंत्री और दूसरे मंत्री सभी चुनाव में पराजित हुए। घम की दाहाई देकर उन्होंने लागा की भाषा बगला का बवाना चाहा विरोध प्रकट करने पर गालिया चलावाई। सेना और सभी बड़ी-बड़ी नौकरिया में पजाबिया का शासन करन के लिए वहा भेज दिया गया। सात वर्षों में वहा की जनता में जा दुर्भाव जमा हाना रहा उसका ही यह परिणाम था।

२३ मार्च का 'आर्यानि पगवा' के चार गण हमार यहाँ भी आए। राजा महेंद्र प्रताप आर्यानि पशवा के नाम को अधिक पसंद करते हैं। इसके योगिक अर्थ में घम के पगम्बर होने की गंध आती है और रुडि अर्थ में भारत के एक गतिशाली वंश की। आज राजा महेंद्र प्रताप यद्यपि बुढ़ाप के असर में पूरी तौर में आ गए हैं और उनकी वाता से सहमत हाना मुश्किल है लेकिन देश की आजादी के लिए जाकुर्बानी उन्होंने की उसको भुलाया नहीं जा सकता। प्रथम विश्वयुद्ध में घर और राजमी भोग छाडकर बाहर निकले तो भारत के स्वतंत्र होने पर ही देश लौट। वह बराबर ब्रिटिश साम्राज्य का विरोध करते रह, आज भी ब्रिटिश साम्राज्यवादिया के वह उसी तरह विरोधी हैं। तप हुए देशभक्त के अतिरिक्त वह बहुत बड़े घुमकण्ड हैं। अनक बार उन्होंने पृथ्वी परित्रमाएँ की और घन के बल पर नहीं। ऐसे पुरुष के सामने भेरे जैसे आदमी का सिर नत हो जाए, यह स्वा

भाविक है। पशवा १० मई को दिल्ली 'पकड़ने' जा रहे थे। मुमालिनी न राम पकड़ा था गायद वही रयाल जायनि पगवा के दिमाग म भी घूम रहा था। वह गण भी लेकिन उनके साथ हजार की भी पलटन ता नहीं थी। वह अपन हिंदी जप्रजी उन् पत्रा म छूब खरी खरी बातें लिखते हैं जा कानून का उल्लंघन करती है। पर सरकार उस पर चुप साधे हुए रहती है इसका भी उह दु ख है। जेल भेजती ता गायन कुछ काम आग बन्ता।

कमला क भाई हरि जीर बहिन गगा का यहा इसलिए बुलाया गया था कि उह पढन का सुभीता होगा। गगा का नाम स्कूल म लिखवा दिया वह पढन भी जाया करती। हरि का नाम भी रमादेवी हाइस्कूल मे लिखन क लिए प्रिंसिपल मलहाना को बिटठी लिय दी। यह स्कूल अपने परीक्षा परिणामा की दृष्टि स ममूरी का सबसे जच्छा स्कूठ है। हरि को यहाँ का जीवन पसन् नही था। घर म अवश्य उसकी दो बहनें और मगल नेपाली भाषा बालनवाले थे लेकिन बाहर वह कलिम्पाग का वातावरण नही पाता था। स्कूल म जान पर अपरिचित जीर दूसरी भाषावाल लडके क सीधेपन स दूसरे लडक लाभ उठा सकत हैं, किन्तु यह कर्ई एमी बात नही थी कुछ त्तिना म सब ठीक हा जाता। हरि अपने मनाभावा को विसा स कहता भी नही था। हम सममत थे वह पन्ने जा रहा है।

अपनी बी० ए० परीक्षा क लिए २८ माच का कमला जय हरि के साथ देहरादून गई। प्रवण पत्र यहा भूल गई था इसलिए कमला को खाना कर हरि लौट आया और दूसरी वम स गया। जया की त्रिलयारी बिना हमारा कमरा मूना मूना मालूम हाता था। साथ ही यह भी रयाग आता था कि माच क अत म अब देहरादून म गर्मी जा गई है न जान उसक ऊपर कमी गुजरता हागी ? ३० का कमला की चिट्ठी भा आई। उसम गर्मी और मखिया दाना की गिकायत थी। १ अप्रैल का १० बज कमला लौट कर आयी तब चित्ता दूर हुइ। जया का मच्छरा न काट रयाया था। पराक्षा क बार म निराग नही थी हाँ इसका अफगास जम्पर था कि एफ० ए० म सभी विषया का ल्जर दिया हाता ता दम साठ भी सभा विषया म परीक्षा दता और पाम हान पर पूरी डिग्री मिलना।

विन्मृत यानी पिछल ही साल पूरा हा गया था। दिल्ली के

'साप्ताहिक हिंदुस्तान' ने उस धारावाहिक रूप से अपना यहाँ प्रकाशित करने की इच्छा प्रकट की। 'हिंदुस्तान' की ग्राहक सत्या का दखन हुए हम पसंद था कि वह पुस्तकाकार छपने से पहले यदि किसी पत्र में निकल जाए तो अच्छा है। लेकिन ऐसे ग्रंथों के साथ जिस तरह की मनमानी की जाती है वह लेखकों को पसंद नहीं जा सकती।

२ अप्रैल का बिहार राष्ट्रभाषा परिषद की ओर से डा० धर्मेंद्र ब्रह्मचारी का पत्र आया कि परिषद ने 'मध्य एशिया का इतिहास' प्रकाशित करना स्वीकार कर लिया है। किन्तु ही वर्षों से यह बड़ी साध और मेहनत से लिखा हुआ ग्रंथ अंतर में लटका हुआ था। प्रकाशक बहुत चुस्त मिले, लेकिन प्रेस में भूता न उसे एसा दवावा कि १९५७ में भी दूसरे तड़के निकलने में सक्षम है।

हिमाचल की यात्रा के लिए धूपनाथजी और जनकलालजी दाना तैयार थे। ५ अप्रैल को धूपनाथजी आ गए, और उससे जगले दिन जनकलालजी भी। जनकलालजी जवान और पहाड़ी थे, साथ ही वैद्यक भी जानते थे इसलिए उन्हीं का साथ ले जाना अच्छा जान पड़ा।

१० अप्रैल का हमने यहाँ से हिमाचल-यात्रा के लिए प्रस्थान करने का निश्चय किया था। तब तक "हिमाचल प्रदा" की आवृत्ति करके उसे ठीक लगान में लक्ष्य रह। ७ तारीख का लष्मीर गए और बड़ी लालसा से कि किर्गनसिंह में मुलाकात होगी। देखा उनकी दुकान पर ताला लगा हुआ था। माया ठनका। वह अब तक तिल्ली में गर्मी बर्दाश्त करने के लिए तहरी रह सकते थे। फिर रामसिंह की बुढिया मा मिली। उसने बतलाया कि १ अप्रैल ही किर्गनसिंह दिल्ली में चले बसे। बनौर में पदा हुए पहाड़ का चक्कर बाटते रहे फिर मसूरी में बसे गए। वह कितने सरल और मधुर थे। मसूरी में उनका अभाव अब हमें होगा। धोबी का दो बच्चा का पालना है, बड़ा बहुत कम अकल रखता है, और छोटा अवाध है। किर्गनसिंह का स्थाल करके इष्टमित्र कभी कभी सहानुभूति प्रकट करेगा, लेकिन सारी विपणता बचारी इस स्त्री का ही भागना है। वह भारत के बराबर आदिमिया में एक थे उनके अभाव का कौन याद करेगा? पर, मैं तो किर्गनसिंह का नजदीक से देखा था। मैं कस उनका अपना जीवन भर भुल्ला सकता हूँ?

हिमाचल प्रदेश में

नाहन—१० अप्रैल को जनकलालजी और मैं साथ-साथ डेढ़ बजे देहरादून के लिए रवाना हुए। उमी टिन रास्ते के लिए केमरे के कुछ फिल्म और दूसरी चीजें खरीनी और अगले दिन के लिए साढ़े ७ रुपये में नाहन तक के बस के टिकट भी खरीद लिए। ठण्डी जगह रहनेवाले आदमी के लिए गर्मी बदास्त करना बहुत है। ११ की दोपहर का बस निकलनेवाली थी। गर्मी के मार में माथा भिना रहा था। हिमाचल सरकार ने जो अपनी बस सर्विसमें जारी की हैं उनमें से एक हरद्वार तक आती है। लौटते हुए उसी न हम लिया। उस जमुना के किनारे जाकर छाड़ना था, लेकिन चूहड़पुर बाजार में भी मवारा लना था। चूहड़पुर जब बहुत बग गया था, जिसमें परणारिया का भी काफी हाथ था। महमपुर के करीब के जल विभाजन से दून उपत्यका गया और जमुना के दो धारा में बँट गई है। सहमपुर चूहड़पुर से काफी दूर ही पड़ना है। चूहड़पुर से लौटकर बस जमुना के किनारे गई। ठीक दुपहरिया का समय और जमना का मध्य बंध जमुना के तट से दूर था। घाट पर गर्मी का क्या पूछना? भलेमानुषा से इतना भा नहीं हुआ था कि ऐस समय नाव की पहल ही किनारे पर लगवान। उमी घूप में मुमाफिरो का घटे भर से ऊपर पड़ा रहना पड़ा। भर कपड़े लत्ते में कोई विगपता नहीं थी, पर उमी बगमें जाए ठाकुर बड़ाया न जनकलालजी से मेरे बारे में पूछा। भर लत्ते नजरों के सामने ग गुजर व, इसलिए नाम

जानत थे। वह नाहन में की आपरटिव इन्स्पेक्टर थे। उन्होंने अपने यहाँ रहने का निमंत्रण दिया।

जमुना की धार यहाँ बड़ी तेज थी पर चौड़ी नहीं थी। नाव का आर-पार गीचन के लिए रस्सा बँधा हुआ था जिसमें प्रवाह नाव को बहा न ले जाय। पार हुए रास्ते में कुछ पानी में चलना पड़ा। भोजा पायजामा वाला के लिए दिक्कत थी। जनकलालजी के लिए और भी मुश्किल थी, क्योंकि उनके पैरों में जवाहरगोही पायजामा था, जिसे पिंढली से ऊपर उठाना मुश्किल था। ठाकुरसाहब ने ५ मील पर अवस्थित गुरु गोविन्द साहब के रहने में पवित्र पावटा साहब के डारुबगले में थोड़ा विश्राम करने के लिए कहा। तब तक बस का भी सवारिया लेनी थी। ठाकुर साहब साथ नहीं जा रहे थे किन्तु उन्होंने अपने एक आदमी का कर दिया। पावटा साहब में शरणार्थी, विशेषकर सिक्ख अधिक आ गए हैं, इसलिए दुकाना ने उस कस्बे का रूप दे दिया है। देहरादून से नाहन ५८ मील है। वैसे जमुना के दोनों तटों तक पहुँचती हैं। पावटा साहब से कुछ जाने पर फिर चढाई आई जो पाच मील से अधिक नहीं थी। गाँव ठाकुर साहब के मकान में ठहरा। थोड़ी दूर में श्री युगलकिशोर सेवल भी सहायता के लिए आ गए। गाँव को बाजार में टहलने गए। नाहन राजा की राजधानी और इस ओर का अच्छा नगर है। यहाँ भी बाजार में शरणार्थियों की दुकानें काफी दीख रही थीं। रात को मुझे ताँ भोजन नहीं करना था लेकिन जब ४ आने में जनकलालजी को मास भान मिला तो मुझे सतयुग याद आने लगा। मच्छरा मक्खिया का इन मकान में पूरा उत्तजाम था। खिडकिया दरवाजा में बाराज जालिया लगी हुई थी। गर्मी को भी शिकायत नहीं थी।

१२ अप्रैल का सबेरे नगर परिदृश्य के लिए निकले। जगन्नाथ मन्दिर यहाँ का सबसे पुराना मन्दिर है। यहाँ के ब्राह्मण बनवारीदास ने (राजा का यहाँ राजधानी बनाने का उपदेश) सन् ३०० वर्ष पहले दिया था। यह राजमाय मन्दिर था। महतजी संस्कृत के पण्डित हैं। बनवारीदास इनसे दस पीढ़ी पहले हुए। पुरान कागज पत्रों में नेपाली राजा गोर्वाण युद्धविजय साहब का एक दानपत्र मिला। राजा जगन्प्रकाश के दिया हुए भी कुछ दानपत्र थे। कितने ही पुरान कागज पत्र अदालत में पत्र थे, नहा तो और भी कुछ

मिलते। पता लगा तरण मृता राजकुमारी के नाम पर महिला पुस्तकालय स्थापित है, जिसमें काफी पुस्तकें हैं। नगरपालिका और जिला स्कूल इस पक्कर ने भी सहायता देना बहुत सौजन्य प्रकटित किया। राजमहल के दरवाजे पर बंदूक लिए सिपाही पहरा दे रहा था, लेकिन राजा जय अधिकतर दहरादून में रहते हैं। चाभी भी उहाँ के पास थी इसलिए राजकीय सगह को नहीं देख सके। राजपुराहित से भी सहायता लेनी चाही। वह ११ बजे अभी पूजा में थी और कहने पर ४ बजे बान कराने के लिए बुलाया। आज का मध्याह्न भाजन मैंने भी कल के परिचित भोजनालय में किया। बंधारा बाबू लागा को चटाई में बठान में सजाच कर रहा था। मैंने कह दिया हम तुम्हारे स्वादिष्ट भाजन को खाने जाए हैं चटाई से कोई मतलब नहीं। श्री युगलकिशोर सबल सेवेर से हम लागा के साथ रहें जिससे परिचय पान में आसानी हुई।

एक पक्क तांगव (जाहड़) की मिट्टी निकाली दिखाई पड़ी। बहुत दिना से इसकी देखभाल नहीं हुई थी इसलिए मिट्टा भर गई थी। जय पानी से भर कर यह तालाब नगर की शोभा बडाएगा। नगरपालिका की आमदनी डेढ़ लाख है, जिसमें एक लाख से ऊपर चुगा होती है। इसीसे नगर के व्यापार प्रधान होने का पता लगता है। भोजनालय का झीवर गिवायत कर रहा था अब पहले जस लाग नहीं जाते, किमी तरह राटी चूनी जाती है। मैंने कहा—आजकल के जमान में इसे भी गनीमत समझना चाहिए।

टाकुर बडोत्रा दापहर से पहले ही आ गए। वह यह पगल नहीं करते थे कि हम उनका यहाँ ठहरें और भाजन भोजनालय में करें। मैंने कहा—हम गहर में घूम कर काम करना है यदि खान का विबन्ध रहेगा तो बीच में समय देना पड़ेगा। नाहन से २५ मील पर दशाहु एक तहसील का मुख्य स्थान है। हमने उस देखने का निश्चय कर लिया था। यहाँ में वहाँ तक बस जाती थी, इसलिए जाने में काइ दिक्कत नहीं थी। ३ बजे माटर चली। सडक पहाड की रोड पर और कभी उतराई पर चली जा रहा थी। कुछ मील तक गिमला की सडक पर ही गए। सूर्यास्त हो रहा था, जब हम दशाहु पहुँचे। आजकल काइ मेला था जिससे लाग लौट रहे थे लेकिन अब भी

नाटक देखने के लिए दो हजार के करीब लोग मौजूद थे। बुस्ती भी हुई। पहाड़ में इसका अच्छा गीक है। दण्डु में हाई स्कूल भी है। बडोना जी ने एक आदमी दिया था, जिसने कारण हमें ठहरने की दिक्कत नहीं हुई।

रेणकाजी—परशुराम की माता रेणका यहां से मील डेढ़ मील पर हैं, और वहां का तालाब जत्यत दशमीय सरोवर है। ५ बजे झुटपुटे ही मैं हम चल पड़े। गिरी नदी रास्त में पड़ी। आरपार करन के लिए पुत्र नहीं। लोहे के तार पर खटाला था जिस पर जादमी बठ जाता, और रस्सी के सहारे इस पार से उस पार कर दिया जाता। इतने सरेरे सटोलेवाला आदमी नहीं था और खटोला भी उस पार बंधा हुआ था। एक आदमी ने पार होकर उसे खोल दिया। झूला इत्र खींचकर हम लोग बारी बारी से पार हुए। रेणका एक मील से कम ही था। पहले परशुराम ताल मिला, जो छाटा और जल से भी अच्छा नहीं था। इसी के किनारे बाईं ओर लाल टिन का गिर्जे की तरह की छतवाला परशुराम का मंदिर है। हमने इसे लौटकर देखा। मंदिर भी नया और मूर्त भी नई। आगे बढ़े। बने तालाब के पहले ही कुछ पुराने मंदिर मिले, और सरोवर के पास मंदिर और पक्का घाट भी था। तालाब तीन मीटर के धरे में है। जासपास घेरने वाले पहाड़ नीचे से ऊपर तक हरियाली से ढंके हैं, जिसमें रमणीयता और बढ़ जाती है। विश्वास किया जाता है कि पिता की जाना पर परशुराम ने अपनी मा रेणका को यही मार दिया था और यहां वह उस तालाब के रूप में प्रकट हुई। ऋग्वेद के ऋषि यामदग्य के धारे में एसी काइ परम्परा वैदिक काल में नहीं मिलती। पर उससे क्या? क्या पीछे गढ़ी गई और उसके साथ सरोवर को चिपटा दिया गया। यहाँ हर साल बहुत बड़ा मेला लगता है। मक्का दुकान लग जाती है, और पहाड़ के नर नारी भर जाते हैं। सरोवर के छार पर पानी में उगने वाले वनस्पति उसकी गाभा का बिगाड़ रहे थे, और उनके कारण मुक्त स्नान करने में भी बाधा थी। यह सैलानिया का तीर्थ बन सकता है लेकिन उनके लिए यहाँ ठहरने और खान पीने का अच्छा इंतजाम होना चाहिए। सरोवर के किनारे लगी वनस्पति का साफ करके कितनी ही नावें रखी जानी चाहिए। यह सब तभी हो सकता है जब कि हमारे प्रति नर नारी की मासिक आय सी रपया हो

और साथ ही कोई निरक्षर न हो। पुरानी मूर्ति या दूसरी कोई चीज नहीं मिली लेकिन नवी दसवीं शताब्दी तक की चीजें जरूर मिलनी चाहिए, यदि पूरी तौर से खोज की जाए।

बस दगाहु से ८ बजे खुलने वाली थी इसलिए हम जल्दी पड़ी थी। हम पौन ८ बजे ही पहुँच गये। चाय वाले ने चाय और अण्डा दिया। दगाहु अच्छा बाजार है और चाय की दुकानें भी हैं इसलिए यात्री के लिए कोई तकलीफ नहीं हो सकती। हाई स्कूल, अस्पताल तहसील हान म भा यह महत्वपूर्ण स्थान है। बस चली। एक चौड़ी शिन्तु वम पानी वाली नदी का बिना पुल के पार किया। फिर चढ़ाई शुरू हुई। गिमला वाला सड़क पर पहुँचे। फिर हाल हा म जल कर साक हुई टरपटीन की फक्टा क पास से हाते तीन घटे म नाहन पहुँच गए। जाज नाहन म बाकी काम करके बल यहा से गिमला जाना था।

१४ सत्र ही सबलजी और दूसर नय बने मित्रा के साथ घूमन निकले। महिमा लाब्रेरी के बद्ध पुस्तकालयाध्यक्ष बालकृष्ण गमा सत न असा धारण सोजय दिसलाया और बिना चाय मिठाई के वहाँ से हटने की इजाजत नहीं दी। पुस्तकालय म मेरा दो दर्जन के करीब पुस्तक था। इसी से महिला पुस्तकालय की विनयता मालूम हुई। इन पत्तिया के लिखन के समय तरु नाहन म डिप्री कालज भी सुल गया इसलिए पुस्तकालय की और बद्धि हागो, एसी आगा करना चाहिए। दापहर का भोजन बदाशजी के यहाँ किया। उनकी बजह से नाहन म किसी तरह का कष्ट नहीं होने पाया।

गिमला—१६ रुपय मे गिमला की बस के दो टिकट लिए। पौन बजे दापहर को हमन प्रस्थान किया। साढ़ सात माल तक ता वही रास्ता था जिससे हम रणवा गए थे। फिर चढ़ाई चरत बस ६००० फुट तक पहुँची। २६ मील जान पर सराही मिला। जप्रेजी म लिखन म यह और बिसाहर रिया सन का सगहन एक हा जाता है और गायद मूल गत्र एक हा रहा हा। यहाँ तहसाल थाना डाकवगला और एक दर्जन से ऊपर दुकान भी हैं। हिमालय वम सविंस का बाबू भी रहता है, जो मुसाफिरा और सामान के लिए टिकट देता है। वम धागे देर ठहरी। किसी किसी न चाय पा। आगे

ववागधार मिला। धार का मनलत्र पवतभेणो है। यहाँ जात्रु का मरकारो फाम था। नैणाटिकरा म भी दा एक दूकानें थी। सार रास्त म चील और बान (आक) ५ वश ही ज्यादा दिवाइ पड। कुम्हारहिंद्री म बालका स गिमला जान वाली सडन मिल गई। सोलन अच्छा-सासा गहर है। यहा चाय पाकर चले कडाघाट म अघरा हा गया। ५५ माल की यात्रा साडे मान घट म पूरा हुइ। रात का किमो परिचित का घर दूडना पमद नहीं आया। रायल हाटल नगदीक ही था। ६ रुपया दिन पर एक कमरा लेकर टुर गए। फान रिया ता मालूम हुआ कि मश्री गौरीप्रसादना मटा गय हुए हैं, परसा लौटेंगे। दूसर मश्री पद्मशंखजी घर पर नहीं ५। उस रात का भा गय। सर्वो मसुरो म अचिन नहीं थो।

१५ का सबर चाय पीकर मॉट प्लेजेंट म बाजापरटिव क डिप्टी रजि-स्ट्रार पण्डित विद्यासागर गमा क महाँ पहुच गए। माटर क अडडे म उनका स्थान काफी दूर था। हिमाचल विद्यान मभा का भवन रामन म पडा। विद्यासागरजी अपन बडे भाए का अस्पनाउ म दस्तन गय थे, अकिन बडे माई (हिमाचल विद्यान मभा क अध्यक्ष) प० जयवन्त क पुत्र गिवकुमारजा वकील घर पर ही थ। गिणित सम्बन्ध परिवार है हर तरह से सहायता दन क लिए तयार मिल। प० विद्यासागरजी न कितनी ही सूचनाएँ और अकिडे लिए। व दननी थीं, कि और न भो मिले ता भी काम चल सकता था।

१५ अग्र हिमाचल प्रदेश क निर्माण का दिवस था जिन बडे उत्साह क मान मनाया जान बाग था। हम जम्पता म प० जयवन्तजी स भी मिते। पहेले चना स्कूल क अध्यापक और वहाँ क मप्रहाण्य क बपो अध्याप रह। हुइय की बीमारी स अम्पता म पडे थे। डाक्टरा न पूण विश्राम लन की सम्न आता द रली थी इमलिए उनकी तरफ न कुछ न कहन पर भी हम राफो समय लेना नरो चाहन थे। गिवकुमारजी न आग्रह किया, कि हाटल स हयार घर चले। सूचनाजा को जमा करन क लिए यहाँ रत्न म मुमाता था, इसलिए लटा-पटा लकर ३ बज हाटल स मॉट प्लेजेंट म चले आए। जिन वक्त हम एक गन्तार्ग म दापहर का नाजन कर रह थ, उसी समय मसुरो मे मिल मगाल मिश्रु मगल मिल गए। बनग रह थ, सारे जाटा लवनऊ मे रह।

साढ़े ४ बजे बाद महात्सव देखने गए। सचिवालय के बाहर थाड़ी-मा समतल जगह थी। यही लोग जमा हुए थे। लोक गीत और लोक-नृत्य के परिदृश्य का प्रबंध था। लेकिन लोक गीता के नाम पर जब मिरासी और मिरासिनें उसे पक्के मंगीत और गजल का रूप देने लगीं तो असह्य हा उठा। लोक कला की वहाँ कोई चीज नहीं थी, बाद्य भा आधुनिक ५। उनम जो काइ अच्छी चीज था वह थी चम्बा के चुराही नर-नारिया का लोक-नृत्य जिह इस साल दिल्ली म गणराज्य महोत्सव के समय भारत का प्रथम पारितापिक मित्र था। स्त्री-पुरुषो की वष भूषा भी स्वाभाविक थी और वाद्य भी। गीत भी माहक थे। ७ ८ बजे तक हिमाचल धाम सचिवालय के प्रागण म उत्सव दखन रहे। अभी दम लाख का हिमाचल अधूरा बना है। कांगड़ा जिले का इसस अलग करके पंजाब म रखना अनुचित है। उसके मिलन पर इसकी सभ्या दूनी हो जाएगी और वह भी दूनी हा जाए यदि गढ़वाल कुमाऊँ का इसम शामिल कर दिया जाए। फिर नइ याजनाएँ यहा घडले से चल सकेंगी।

१६ अप्रैल का चाय पीकर ९ बजे बाद निकले। छाटा गिमला तक गए। अभी मैलानी नहीं आण हैं। आमपास को सारी भूमि हिमाचल क महामू जिले म है और आठ वगमील का गिमला शहर पंजाब म रखा गया है। गिमला क नीचे का कुछ पहाड़ी भाग पन्मू का है। अजब गारखघ-घा, आज गुड फादडे था बहुत न आफिस बाद थे इसलिए मिफ नगर परिदृश्य का ही काम हो सका।

१७ अप्रैल को आकाश खुला था। चाय क बाद सवेरे निकल गए। अभी कन्नाडिया क यहा अच्छी-अच्छी पुस्तकें मिल जाती थी लेकिन अब ममूरी की तरह यहाँ भी अंग्रेजा के चले जाने का प्रभाव दिखाई पटता है। दा एक वाम की पुस्तकें मिली और गिमला तथा चम्बा जिले का स्कूला म पढाय जानेवाला हिंदी भूगोल भी मिल गया। ५० विद्यामागरजी बडी तत्परता मे पुस्तक-सम्बन्धी आवश्यकताआ को पूरा कर रह थ। ५० जयवतजी ने बीमार रहन भा बहुत सी वाने बनलाइ और कई पत्र जिला के हाकिमा का लिख लिए। उनम भी मालूम हुआ कि चम्बा क जिला मजिस्ट्रेट मेरे परिचिन नेगी टाकुरसन हैं।

गिबकुमार और उनके भाई रामकुमार दाना नई पीली व उत्साही शिक्षित तरण हैं। उनम पता लगा कि हिमाचल व लाग पजाबी व्यवसायिया और ठकठारा स कितन तग है।

उसी दिन रात का ८ बज मत्री गौरीप्रसादजी स मित्रने गए। उहान अपन विभाग की सामग्रा टन म सहायता का वचन दिया और पूरा भी किया। मैंन हिमाचल व मत्रिया व पास 'गडवाल' की एक एक प्रति भेजी थी ताकि हिमाचल व वार म कसी पुस्तक लिखने जा रहा हूँ इसरा पता लग। गौरीप्रसादजी न प्राप्त की सूचना ले लकिन मुग्य मत्री और गिशा मत्री का उमका फुरसन ही नही मिली। इसीलिए उनम मिलना भा मैंन वंकार समझा।

हम १८ अप्रैल का सवर ले बस पकडनवाल थे। पता लगा बस माडे ६ बज यहा चल पडती है और हम ही माटे ६ बज गए थे। गिबकुमारजी और रामकुमारजी ने बहुत कहा, किन हम भरोमा नही था। वस्तुन हम अडडे पर जान की जरूरत नहा थी मीट प्लजट स एक ही डेड पन्गि पर १०३ नम्बर की मुरग पर उम पकडना था। बसवाल का टलीफोन भी चला गया था इसीलिए ७ बज हम वहा बस मिल गई। हमारा अगला लक्ष्य विलासपुर था, जा यहाँ स ५३ मील पर अवस्थित था।

विलासपुर—रास्ता बहुत सकरा था। बहुत कुगल डाइवर हा इस पर माटर चला सनता था। लकिन बडी सख बनान व लिए रुपया की बडी राशि की आवश्यकता हाना। ३५ मील पर घाट मिला। गिब मन्त्र दग्य कर बस व रनत ही हम उवर दीडे। मन्त्र व जानार स प्राचीनता टपन रनी थी। पुरान व बूटे वाल पत्थर थ, पर काई खडिन मूर्ति नही मिली। खडिन हा खडित मूर्तिया को नदिया म बहाने का रिवाज सार भारत म है। खडिन हा जान पर उसक दशन स भी पाप लग जाता है, इसलिए लाग जल्दी स जल्दी उह विलाप करना चाहत हैं जिमक साथ मितनी ही इतिहास की मामत्री सदा के लिए लुप्त हा जानी है।

प्राडो म दा-तीन टूनाएँ थी। राटी दाग भी मित्र रही थी। हमने भाजन किया। गिशासपुर १८ मील और रह गया था। आग वह पहाड बालुआ हाने लगा, जिमम विस्तृत खेन सब जगह फूट हुए थ। हम गिमला

क माडे ६ हजार फुट स विलामपुर की एक हजार फुट की ऊँचाई पर पहुँच रहूँ थे। १२ बज कर २० मिनट पर जब अड्डे पर उतरे, ता गर्मी परेगान कर रही थी। ठहरने का स्थान पूठने पर बाजार म एक होटल बनलाया गया। जिसका न फग ठीक था न दरवाजा। मूज की चारपाई जरूर थी। हम दोना को यहाँ घूमकर अपना बाम करना था। एसे अरगित स्थान पर सामान रखकर बस जाते ? लेकिन भाजन के बारे म कोई गिवायन नही हा सकती थी। पाम को सतलुज म मछलियाँ भरी हुई थी, जोर कस्वा इनना नाफी बडा था कि जहा खानेवाल मिल जान थे, इसलिय यीवर न मछली बना रमी थी। जनकलानी ता भात के प्रेमी ही ठहरे और मास मछली नहान पर मैं भी भानप्रेमी बन जाता हूँ। गर्मी क मारे दिमाग परेगान था, ठड पानी की माँग थी। चीजें स्वादिष्ट थी। अच्छी तरह भाजन किया। फिर उसी घूप म छत्ता लगाए निकल। जड्डे के पास एक गिखरदार मन्दिर मिला जिमम बहुत पुरानी कोई चीज नही थी। पास म साधु की कुटिया देखकर अपना पुराना जीवन यात्र आन लगा। बूढे बाबा अपनी जायु का नही बतला मनन व ऐकिन ७० स ऊपर क तो जरूर रह हामि। सारे भारत म घूमे हुए थे। सामने धुनी थी गाँजा बकड का बिलम तथा एक दा भक्त भी मौजूद थे। कुछ देर बठ परिचय बलाया। हमारे होटल स यह जगह अधिक् सुरगित थी यद्यपि यहाँ भी ताला कुडी वाली काठरी नही थी पर बाजा बराबर रत्न व।

हम और भी कुछ पुगन मन्दिरा को देन लेना चाहते थे इसगिए नीच की सडन पकडे गहर स बाहर चले गए। गडक क किनार ही मन्दिरावाला एक स्वच्छ जलकुड मिला। नीचे सतलुज ले किनार कई और पुरान मन्दिर मि। मन्दिरा म मालूम हाता था कि य पुराने हैं लेकिन प्राचीन खडिन मूर्तिया का ता जान-बूझ कर मनटुज म डालदिया गया था इसगिए क कहां म मिलती ? सतलुज यहाँ काफा चौडी है। भाखडा क बाँध क पूरा हा जान पर यह समुद्र का रूप ले लेगी, और दोना तरफ कई मौल तक अपार जलरागि दिग्गइ पडेगी। उम वक्त य सार मन्दिर पानी के भीतर चल जाएंगे। लौटने वक्त हम ऊपर की गन्व म पुरान बाजार की ओर गय। रगनाथ मन्दिर का नाम मुनकर तुरत ख्याल आया, यह दशिन क रगनाथ

के नाम पर जाचारी वैष्णव का बनाया कोई नया मन्दिर होगा, पर यह विष्णु नहीं शिव का और यहाँ का बहुत पुराना मन्दिर है। उसे बतमान राजवंग के पहले क किमी राजा एल्व न बनवाया था। यह ११वीं १२वीं शताब्दी में इयूरवा नहीं हो सकता। जधिकाग मूर्तियाँ यहाँ की नी सतलुज लाज का चुकी हैं, लेकिन कुछेक अब भी मौजूद है, जो अपन समय और उन्नत काग का बनग रही थी।

पूछन पर लागा न यह भी बतलाया था, कि मंगाराजा साहब आनन्दचन्द आजकल यहाँ नहीं हैं। ता भी पुरान और नय महल का दगना था इसलिए मंगान पाग कर हम वहाँ पहुँच। नय महल पर हथियारबंद सिपाही मौजूद थे। उन्होंने भी नहीं हान का वान कहा। हम दगन की उल्लुखता में महल के फाटक के भीतर चगे गए। आदमान बनवाया राजासाहब हैं। नाम भेजत हा वह चल आए और स्वागत करत हुए कहन लग—मैं आपने आन की प्रताशा कर रहा था। मैं ममूरी से चलन में पहल ही बहुत जगहा पर चिट्टियाँ भेज दा थी। राजा जानचन्द अमाधारण तीर स मुपटिन और मुमस्वत प्रौढ पुरुष है। जजमर क राजकुमार काजम म पटन समय वह हमगा अपन कगम में अव्वड हान रह। राज्य की बागडोर सम्भालन पर हान प्रजा की भागडे के लिए बहूत-भा चोजे की गिया की जोर विगप ध्यान लिया। पर, सात-आठ सौ बप पुरान काग क स्वाय का अपनी स्वच्छता स कस छान के लिए तैयार हा जान ? पटल क डडे न विलयन पर ह्यना धर करत क लिए मजदूर किया, लेकिन तब भी उनकी जिद रही, कि उन हिमाचल प्रदेश में न मिलाया जाए। लियाकत में उनके पासग ना नहीं, राजा सरकार के वृपापाश होकर मौन कर गे हैं। यदि आनचन्द जग सा दरबारी मनावति का स्वीकार करत ता वह भी अगली पक्ति में आ जाने। लेकिन उनका अपना माग्गना का अभिमान है।

हम कुटिया में नहीं राजमहल में रात जिताने के लिए मजदूर हान पडा। राजा साहब न इस महल का अपनी हचि में बनवाया था। बनान में स्वच्छता आर आराम का पूरा न्याल किया गया था। कला में भा उनना दूर तर ध्यान लिया गया था, जितनी दूर तक कि वह वृत्त में होगा नहा पडती। कमर बडे-बडे और हवादार थे। सगमरमर का भी खुल्लर इन्-

माल बिया गया था। सारा महल भाखडा सागर के गभ म चला जाएगा। लेकिन राजा साहब का महल का पैसे जरूर मिलेगा। पहले हम स्नान करन की इच्छा हुई जब देखा कि विलासपुर स्नानागार म गरम ठंडे पानी का भी इन्तजाम है। स्नान के बाद फिर घटो राजा साहब स बात हाती रही। उन्होंने अपन राज्य मम्बधी बहुत मी सामग्री और दूसरी सूचनाएँ दी।

१६ अप्रैल का सबेरे चाय पी फिर राजा साहब की बितावा की आल मारिया का दखते रह। २२ आल मारिया का देखन से मालूम हुआ कि यह पुरुष कितना विद्यायसनी है। आजकल के जमाने म गाभा क लिए भी पुस्तक जमा कर ली जाती ह, यासनर आधुनिक सेठो के यहाँ ता अपनी शिक्षा और सम्बृति का राव दिखलान क लिए ऐसा बिया जाना लाजिमी समथा जाता है। आज भी कितन ही समय तक राजा साहब स बानचीत हाती रही। हिन्दी की तरफ उनकी बाई रुचि नही थी क्याकि बचपन स हा अंग्रेजी की घुट्टी मिली थी तीव्र बुद्धि रखन भी भविष्य को वह दूर तक समझ नही सनत थ। तब भी उनकी पागाक और रहन-सहन स मालम हाना था कि वह अंग्रेजियत के राव म नही आए।

११ बजे विलासपुर क डिप्टी कमिन्तर श्री महावीरमिहजी क यहाँ गए। उन्होंने बडे उस्ताह क साथ आँकन क जमा करन म मरी मदद का और एक अफसर का बुलाकर सब विभागा स आवश्यक चीजा का दिलवाने क लिए कहा। दापहर की घुग म एक आफिन म दूमर आफिन म जाना प्रिय नही मालूम हुआ पर अर्थी दाप न पश्यति। डिप्टी-कमिन्तर साहब कह रह थ, जलग राज्य होन से सभी विभाग अलग अलग कायम है। उनकी फाइला पर दस्तखत करने म ही मेरा तो बहुत-सा समय लग जाना।

२ बजे भाजन बिया। राजा मात्य क कृपापात्र गास्त्रीजी न मण्णी क लिए दो टिकट भी ला लिये। ३ बजे स कुछ परल ही राजा साहब स बिगाई लन उनका सहायता क लिए घृतनता प्रकट की और आगा की कि आप अपन पान का हिन्दा द्वारा लागन क सामन रखगे। राजमी कार म अडड पर पहुँचे। ३ बजे हमारी मोटर चल पडा। त्रिगासपुर के आस पास काफी समतल जमीन है। रगनाथजी का मन्दिर गहर क गवसे ऊच स्थाना म है पर वह

भी गिब्रल्टर तक भखटा सागर में डूब जाएगा। भखटा बावक बनाने में जितनी मुस्लिमी दली जा रहा है उमका गतांग भी विलासपुर नगर के बारे में खयाल नहीं। डिप्टी कमिश्नर कह रहे थे यदि हमें बिजली और रापवे पहले से मिल जाए तो हम समय से पहले यहा की सभी चीजा को उस स्थान पर पहुँचा सकन है जहाँ भावी विलासपुर बसन वाला है। पर, ऊपर के लाग बडी-बडी चीजा का खयाल करत हैं। दिल्ली के महादव की यह बात उनक सामन हर समय रहती है— 'छाटी छाटी बाता पर क्या खयाल करत हा ?'

बस पहाड के ऊपर की आर बढन लगी। गर्मी से मुह सूख रहा था। इसी वक्त खरीदा हुई नारंगी याद आई। मालूम हुआ, जनकलालजी न याले के साथ उसे कुटिया में ही छाड दिया। अगर वह नारंगी बाधा के काम आई हो तो हमारे लिए बडी प्रमनता की बात थी। हम विलासपुर के १६ हजार आदमी के उजडे आगियाना का खयाल करत चारा आर देख रहे थे। बस के पहाडी बाहिया का पार करती रहरा के पुल पर पहुँची। यहाँ चट्टाना न सतलुज की धार को सकरी कर दिया है उसा पर लोह का पुल है जा बस के लिए नहीं बनाया गया था। यह कुछ सालो बाद भखटा सागर में डूब जाएगा। उस समय पुल और ऊपर बनाया जाएगा। कुछ आग बत्ने पर दूकानें मिली, साथ ही काइ पुराना मिला भी जो जब ध्वस्त हा रहा था। कुछ आग बस को बहुत चढाई उतराई नहीं पार करती पडी और ७ बजे के करीब हम पुरानी सुकत रियासत की राजधानी सुंदर नगर में पहुँच गए। रियासती लागो की गाढा कमाई राजाजा के गौक में लगती थी इसलिए महल भाथे बगले भा जिहू यदि किसी दूसरे काम में नहीं लगाया जाएगा तो कुछ दिना बाद गिर जाएंगे। बाजार काफी बडा है, जिसके भीतर न चलकर एक जगह बस का पानी में स चलना पना और मवा ८ बजे रात को हम मण्डी के मोटर अड्डे पर पहुँच गए। मण्डी में कई बार आ चुका था, लखिन बिभाजन के बाद गरणाधिदा का जा रला आया उमम उसन बाजार का दूसरा ही रूप दे दिया है। कृष्णा होटल में जाकर ठहर।

मण्डी—तरण था सुंदरलालजी से पहले ही पत्र द्वारा परिचय था। वह मिल। २० अप्रैल का सवेर पहले डिप्टी-कमिश्नर थी अतानीजी के

बगते पर गए, जो गहर से बाहर बहुत रमणीय स्थान में था। अंग्रेज दीवान न अपने लिए इसे बनवाया था, इसलिए पुलवारी, बाग सबक अच्छे कमरे थे। अतानीजी न हर तरह की सहायता देने के लिए कहा, और निश्चय हुआ कि साढ़े १० बजे मैं नीचे आफिस में मित्रू। वहाँ जान पर उन्होंने अपने अधिकारियाँ स मण्डी जिले के वार में जाँकड़ा का देने के लिए कह दिया। भारत में खनिज नमक की एकमात्र खान यहाँ है। हमने चाहा उस दरम्यान में भी नमक की उपज आदि के बारे में बात मात्ूम करें लेकिन नमक विभाग केन्द्रीय सरकार के हाथ में था और अतानी साहब के हाथ में बाहर की बात थी। वहाँ के अमिस्टेट न गुप्त रहस्य कह कुछ भी बतलाने से इन्कार कर दिया कहा—इसके लिए केन्द्रिय सरकार का लियें।

दोपहर का खाना खाकर कुछ देर मुत्तरलालजी और दूसरे मित्रों में बातचीत करके फिर निकल। आज सुबह के परिदृश्य में गहर के भीतर भूतनाथ के मन्दिर में हरगौरी की मण्डित पुरानी मूर्ति देख चुक था। अब पुल स व्यास पार गए जहाँ पुरानी राजधानी थी और अब उसकी जगह एक गाँव तथा बहुत से पुराने परित्यक्त मन्दिर हैं। त्रिलोकनाथ के मन्दिर में सबत् या गक १३३७ का गिलालेख लगा हुआ है। गेय बना है। हममें गद नहीं कि मण्डी का यह भाग हिन्दू-काल का है। मुस्लिम काल में पत्थर का लूटा और ध्वस्त किया गया होगा। फिर मत्तलुज के बायें किनारे राजधानी बसाई गई। बाईं तरफ भी नदी के किनारे यमराज के मन्दिर के हान में गिब की कुछ पुरानी मूर्तियाँ हैं जिन्होंने इधर भी नगर का एक भाग पुराने काल में रहा होगा।

गाम का ६ बजे साहित्य मदन में साहित्यकारों की एक छाटी-सी मण्डली में भाषण दिया और ६ बजे चौरस्ते पर नावजनिक सभा में गानि पर बालना पडा। अब तक मण्डी के शिक्षिता का मरदान का पना लग चुका था।

बुल्लू—२१ अप्रैल का चाय की जगह लम्मा पीपलर हिमालय सरकार का जनता वस पर बठ गए। इसमें सौट रिजिन का वायण नहा था। जा पहर आ गया, अपना रुचि के अनुसार बठ जाना। मुझे द्वादशवर्ष के पाग जगह मिल गई थी। ७ बजे गाड़ी चली। ४४ मीटर पर बुल्लू था। गाँव के

हिमालय प्रदेश में

चलते चलते लाङ्गुल के ठाकुर निमलचंद अपनी पत्नी के साथ चलने मिले। मैंने १९३३ में उन्हें देखा था, यद्यपि १९३७ में भी लाङ्गुल गया था पर उस वक्त सायद मुग्धागत नहीं थी। परिचय हुआ और उन्होंने अपने यहां टहरने का आग्रह किया। कुल्लू में भी अब एक अपसर की सहायता मिलने का निश्चय हो जान पर यात्रा सुफल होने की सम्भावना बढ गई। २६ मील पर थोटा आया। यही कुल्लू और मण्डी की सीमा मिलती थी। कुल्लू के हरेक यात्री का आटा ब मोठे बठूर भूल नहीं सकते। यहां कुछ दूनाई हैं। हान से लारिया एक समय एक ही दिशा में चल सकती हैं। आटा में जरा-सा आगे शिमगा स अनी होकर आने वाली सड़क मिल गई। यहाँ से ११-१२ मील पर बजार है जहा मोटर जाती है। मैं गलत समझता था मण्डी से मोटर की सड़क बजार हानर जाएगी और वहाँ डा० भगवानसिंह स मिलन का मौका मिल जाएगा।

१५-२० मिनट टहरने के बाद हमारी बम चली। बजौरा ६ मील पर मिला। यहाँ विदेवदेवर का ऐतिहासिक प्राचीन मंदिर है लेकिन उसका देखना मैंने अगले दिन के लिए छोड़ रखा। कुल्लू के ढाङ्गपुर, मुलतानपुर अगलाटा आदि कई मुल्लू हैं, जो एक-दूसरे से हटकर बसे हैं। ढालपुर पहले पडता है। यही मूल, अस्पताल, बचहरिया और डाकबगरे हैं। ठाकुर निमलचंद का स्थान भी यही था। कुल्लू उपत्यका हिमालय की बहुत सुंदर उपत्यकाओं में है। हिमालय के बहुत भीतर होने के कारण चार हजार फुट ऊंची इस जगह पर भी बर्फ पडती है। यह व्यास की उपत्यका सिफ प्राकृतिक ऋषि ही के लिए अपनी विशेषता नहीं रखती बल्कि अब तो यह सेवा के लिए ब रूप में परिणत हो गई है। पहले सारे हिमालय का अध्ययन नहीं किया था, और लाङ्गुल के बार में इतना ही जानत थे कि वहाँ ऊपर के लोग निवृत्त होते हैं और नीचे के लोग पहाड़ी भाषा। और अब मालूम था कि निवृत्तिया और जाय भाषा बालने वाले लोग स भी पहले यहाँ किरात लाय रहने थे, जिनकी भाषा के अन्वेष अब भी जहाँ-तहाँ मिलने हैं। चन्द्रा और भागा लाङ्गुल में जहा मिलकर चन्द्रभागा बन जाती हैं उसमें काफी नीचे तक लाङ्गुली लोग किरात भाषा बालने हैं। ठाकुर निमलचंद मोट

भापी थ, लेकिन वहा कुछ किरातभापी लाट्टली भी मिल गए जिनसे कुछ भापा क नमूने लिये । कुल्लू क सबसे बडे जफमर असिस्टेंट कमिन्तर से मिले । उनसे अपनी पुस्तक और जाबजो के बारे म बानचीत की । उन्होने भी सहायता दी । दूरिस्ट यूरो के इंचाज न और भी मदद की और बहुत से जांभडे तथा छपी सामग्री उसी दिन मिल गई । कुछ के कल मिलन का वचन मिला । टहलते हुए नदा (गौरी) पार सुल्तानपर गए । कुल्लू राजा के महल यही थे । शतादिया तक हिमालय का यह राजवंश स्वतन्त्रतापूर्वक यहाँ का शासक रहा । सिक्खो से लड पडा इसलिए उहान राज्य को खत्म कर दिया । अंग्रेजो ने जब सिक्खा क राज्य का जपन हाथ मे लिया ता उह क्या पडी थी कि राजा को फिर उसकी गद्दी पर बठाते । उन्होने उसे एक जागीर द दी । लेकिन कुल्लू लोग अपने राजा को राजा ही मानते रह । अंग्रेज उह राय भगवर्नासह भल ही कहे लेकिन लोग उह राजा भगवन सिंह कहते और उनके कुवर को टीसा (युवराज) कह करके पुकारते है । टीका साहब का ब्याह नेपाल क जनरल कसर गमोर के अनुज कृष्ण गम शेर की लडवी से हुआ । राजा साहब ने अपने वंग क सम्बन्ध म उन् म लिखी एक ऐतिहासिक पुस्तक दिखलाई । वहाँ से कुल्लू के तीमरे और सबसे बडे बाजार म अखाडा बाजार गए । पहल यह इतना जमा हुआ नहीं था अब ता वहाँ बहुत दूकानें हा गई थी ।

मनाली—२२ अप्रल को मौसम अच्छा था । हम ७ बजे चाय पीकर टैक्सा—बस से रवाना हुए । १२ मील पर कटराई मिली जहाँ से ब्यास पार करके हम कभी नगर म रोयखि निवास म गए थे । अब वह खाली पडा था नहीं ता उसक साथ नगर के प्राचीन स्थान को भी दगलत । पहल कटराई म दानो तरफ की माटरें एन-दूमरे को पार करती थी अब काई बँसा नियम नहीं है । डाइवर अपन ही समय दगलर चल देने हैं । १२ मील और आग जा ११ बजे मनाली पहुच । वही बस १२ बजे लौटन वाली थी । डेड मील आग बसिष्ठ कुड का गरम पानी का चन्मा था और उमकी प्राचीनता क बारे म लागा ने बहुत बातें बतलाई थी । डाइवर ने कहा, आप वहाँ से हाकर आ सतत है । हम वहाँ से चल पडे । जगह डेड माल रही हागी, और आध घट स कम हा म हम वहाँ पहुच गए । कुछ दूर तक ता

हिमाचल प्रदेश में

लाहल जाने वाली समतल सड़क पर गए, फिर दाहिनी ओर चढ़कर सेना में हान वमिष्ठ कुण्ड पर पहुँचे। बच्छा-सामा गाव है, जो ७००० फुट में ऊपर होने के कारण वर्षा की जगह में है। यहाँ पास में देवदार के जगल भी हैं। जो गेहूँ व हरे हरे खेत लहलहा रहे थे जिनमें जगह-जगह स्थलकुमुदिनी फूली हुई थी। कुण्ड का जल बहुत गरम नहीं है। उमी की बगल में वमिष्ठ का भट्टी परिवार की मूर्ति है। उसमें कुछ हटकर राम का बच्छा शिखरदार नमूना इनमें मिलता था। पागाव यहाँ वही ऊनी डारू था जा चम्बा से टामो (चुम्बी) उपत्यका तक देया जाता है। मिर पर फमाल वाघना भी पहाड़ी मित्रिया की अपनी विशेषता है। दूकान में मिश्री और गरी मिल गई। हम लोग खात हुए वहाँ से लौट पडे। मनाली में मोटर अड्डे पर पहुँचने पर अब भी समय था और हम माम भात खाकर माडे १२ बजे गाडी से लीटे। मनाली कुल्लू का सबसे रमणीय स्थान है, और यहाँ चारों आर सेवो के बाग तथा पहाडो में देवदार के वन हैं। कटराई में पहुँचने पर एन वार तो खयाल आया, नगर चले चलें। फिर खयाल छोड देना पडा।

अवाडा बाजार में ही गाडी से उतर गए। अक्स्मात् पुण्यसागर मिल गए। इधर वह स्थिती में स्नूँ में जघ्यापक थे। जाडा में वहा से चले आए थे। अब फिर अपने काम पर जाना चाहते थे। अभी जोन पर बफ वुत थी रास्ता पुरा नहीं था इसलिए स्थिती के आदमिया के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। कुल्लू अपने जनान गालो के लिए प्रसिद्ध है। शुद्ध पामीने का साल ५० रुपये से कम में नहीं मिलता। हमने सौगात के लिए २४ रुपये का एक ऊनी शाल ले लिया। आज ही हमें विजौरा हा आना था। आदवर ने बडा लिया, लेकिन ढालपुर पहुँचकर पुजा टूट जाने का वहाना करके उतार दिया। प्राइवट बसों में मुसाफिरो की गत बन जाती है। हिमाचल प्रदा का कार ने अपने यहाँ मरवारी बसें चला दी हैं और कुल्लू पजाब सरकार है इसलिए यहाँ प्राइवेट बसों का राज्य है। पहाडी लोग पजाब सरकारी से जो न नाराज हो, जब वह देखने हैं, कि सारे अयागम के साधना का वह अपने हथियाण हुए हैं। सडकों की बडा बडी ठेकेदारियाँ पजाबी करत हैं, बडे बडे अपमर पजाबी हैं, दुवानें और व्यवसाय भी उन्ही के हाथ में हैं।

माटरें भी वही चलात हैं। फिर ता पहाडी केवल कुलीगिरी के लिए प्रनाय गए हैं।

दो घंटे का समय बरबाद हुआ। फिर एक दूसरी बम बिजौरा के लिए मिल गई। हम साढ़ ३ बजे चलकर गवा ४ बजे वहा पहुंच गए। सड़क से विश्वेश्वर का मंदिर दिखाई पड़ता है। मुस्लिम-काल में उसकी मूर्तियां का ताटा गया लेकिन गाव वाला और पुगतत्व विभाग का भी धयवान दना चाहिए कि काफी मूर्तियां अब भी वहा मौजूद हैं। पास में हाट गांव है, वस्तुतः मंदिर भी उसी से सम्बन्ध रखता है। कुमाऊँ-गढ़वाल के उदाहरण से मैं जानता था कि पहाड़ में हाट का मतलब राजधानी है। मालूम हुआ, पहल यहाँ काइ राजा रहता था उसी न मन्दिर का बनवाया था। भिक्खान मंदिर का नष्ट किया, यह आम धारणा है। पर उस पर विश्वास नहीं किया जा सकता क्योंकि सिक्ख तो अभी अगली नहीं बन य और उनकी घमणालाओं में मूर्तियां के लिए भी स्थान था। फिर सांस्कृतिक तौर से सिक्ख और हिंदू एक ही बमलिए वह मूर्ति पर कस शक डाल सकते। मंदिर के तीन तरफ अलग अलग गणेश विष्णु और दुर्गा की मूर्तियां हैं। कई लकुलीग लिन बनग रह थ कि यहा पागुपना का किसी समय जार था। मंदिर के बाहर भी कुछ मूर्तियां रखी हुई थी। उनसे हटकर व्याम की ओर खेता में भी कितनी ही खण्डित मूर्तियां पडा थी। हिमाचल प्रदेश के भिन्न भिन्न स्थानों के विषय विवरण हिमाचल प्रदेश में मिलेंगे, इस लिए यहा उनके बारे में बहुत लिखने की जरूरत नहीं है।

जान के लिए ता बिजौरा चल गए लेकिन अब लौटने की समस्या थी। मण्डी से बमें ताम समय पर ही आना थी और पता नहीं उनमें काइ जगह मिल या नहीं। क्या जान रात यहा बिनाको पडे लेकिन साढ़े ५ बजे की बम में जगह मिल गई। उमा में पगा प्लाज के गियार गुम्बा सिद्ध लामा अपने परिवार और गिप्पा के सहित मिग। मुझे तिबतों में बालन हुए दानर लामा के पुत्र न स्वयं पूछ दिया आप राहुलजी ता नहीं हैं? हम अगले ही गाँव तक भाव चरन वाक्य इमतिग नलने जलनी में कुछ बातें हुई। यह गालसर साथ करन आ रह थ। सिद्ध अम्दा के रहने वाले थे और घूमते भ्रामन पगी के भात्रियाभाया इलाके में जा गए। सिद्ध हान में

हिमाचल प्रदेश में

महामुद्रा का रत्ना आवश्यक है फिर पुत्र और मूँ भी वा उपस्थित हुए।
 मारा परिवार सुमस्तुत था। यही अपमान रत्न कि हम दर तक माय न
 रह सक। उहनि पगी आन का निमत्रण दिया। चम्प्रा हम जाना भी था
 लेकिन पगी जान की सम्भावना नहीं थी।

मण्डी—२३ अप्रैल का पुण्यमागर और ठाकुर मगलचंदजी माटर के
 अड्डे तक पहुँचान आण। जनता म जगह पान क लिए दा आदमी अवाडा
 बाजार ही म बैठ करक जाए ये। अत्र की हम पीछे की सीट मिली थी
 जिसन कारण बाहर देखन का सुभीता नहीं था। ६ बजे आठ पहुँचे। डा०
 भगवानमिह का मेर आन का पता था। मुयमे मिलन ही वह कुल्लू जा रह
 थे। मैं त्रिच चुवा था मैं वजार आऊंगा। लेकिन अब वजार का हूँ मे ही
 मगम करक निकल जाना चाहता था। यह सधाग ही था जा इसी समय
 डाक्टर माह्व भी आ गए। उनम भी ज्यादा मुये वजारन जान का अपनाम
 था। उनकी लडकी प्रेमरत्ना बचारी वहाँ वनी आगा लगाए बैठी थी। डा०
 भगवानमिहन वजार स आग तिमल क गन्ध पर अनी म घर और खेन
 बना त्रिया है। वह नौकरी म २० साल दिमम्बर म अवमर प्राप्त करन
 वाते व। कहन लग अनी म रहता हमारे लिए मुदिक् है क्याकि लटक
 लटकी की पडाइ का भी खयाल रखना है, जिसका सुभीता कुल्लू म ज्यादा
 है। वहाँ रहते वह प्रेक्टिस भी करत, और साथ ही बौद्ध धम के प्रति अनु
 राग रहन के कारण कुल्लू म एन बौद्ध विहार की स्थापना के लिए भी कुछ
 काम कर सकत थ। कुछ ही मिनट बानचीन कर मये इसका अपनास रहा
 त्रिन मित्र जान म बचन सन्तोप हुआ।

मवा ६ बजे बम चली। वह व्यास के साथ साथ चल रही थी। महा
 एक जगह व्यास का बिनाल पहाड के वाटने म गावो वप लगे होंगे। वहाँ
 नदी सक्ती हा गई थी और नदक को भी मुदिक् से बनाया गया था। एक
 जगह स्लेटी पत्थर की खान थी, जहाँ से उह निकालकर लारिया पर
 लादकर ले जाया जाता था। मण्डी से जाते ही हम बह गए थे कि दोपहर
 की बम से आणगे। ११ बजे जब अड्डे पर पहुँचे, तो श्री हुतागन गाम्ना,
 मुदरगल और डूमर मित्र वहाँ मित्र। पिछली बार उहाने हाटल से घर
 ले जान क लिए बहुत कहा था लेकिन हमन लौटने समय के लिए बहकर

छुट्टी ले ली थी। अब मास्टर जयवधन के मकान पर गए। यही खाना खान का भी आग्रह था जिसे हमने नहीं माना, क्योंकि उसके बनन में दर हाती, और इस समय हम हाटल में बने बनाये खान को खाकर अपने काम में लग सकते थे। अन्तानो साहब के पाम सारी सामग्री तैयार मिली। नमक वाले इंजीनियर ने भी सहायता की। डाक में कमला की दो चिट्ठियाँ मिली। जया के दस्त नहीं बच ही रहे हैं वह दुबली हो गई है यह पढ़कर तुरंत लौट जान का मन हो रहा था किंतु चम्बा तक तो जाना जरूरी था। कमला ने वी० ए० के प्रश्न पत्र अच्छे किए हैं यह भी चिट्ठी से मालूम हुआ।

कागडा—२४ को सबेरे भोजन हुआशन गर्मा गार्स्की की ससुराल में था। नाम शायद गार्स्कीजी ने अपने हाथ से रखा था। हुआशन क्या अग्नि भी नाम आजकल सुनाई नहीं पड़ता। उन्होंने जल्दी-जल्दी में मण्डा का भोजन तैयार कराया था। साढ़े ७ बजे ही हम अड्डे पर पहुँचना था इस लिए इस्मोनान से बाइ काम नहीं हो सकता था। अड्डे पर मित्र लोग पहुँचाने आए। ड्राइवर में परिचय कराया। वह २५ वष का सुंदर तरुण तबला बजान में अद्वितीय है। रियासत रहती तो इसे मोटर का चक्का नहीं पकड़ना पड़ता। बारीक अँगुलियाँ जो बला में अपनी प्रवीणता दिखलाती वह चक्का चलान में लगी थी। तरुण का सुंदर चेहरा बहुत सौम्य था। हमारे साथ खनिज इंजीनियर साहब भी चल रहे थे नमक की पानें रास्ते में थी। पिछले साल डेड लाय का नमक निकला था। यहाँ खाने के नमक के अतिरिक्त काला नमक भी मिलता है। नमक का ता पहाड़ खटा है। अभी उसमें थोड़ा ही काम हो रहा है।

१२ बजे हम बजनाथ में उतर गए। स्थान हजार फुट से कुछ ही अधिक ऊँचा होगा फिर दापहर की गर्मी क्या न परमान करती? बजनाथ किसी समय किरप्राण के नाम से एक अच्छा-खासा व्यापारिक नगर था। बीच में वह उजड़-सा गया था। मोटरों ने फिर उस आवाद कर दिया है। मिननी ही डूबानें हैं। एक भाजनालय में सामान रखकर खाना खाया फिर वहाँ का ऐतिहासिक मन्दिर देखन गए। गिखरदार मन्दिर पहाड़ में कम हाथ हैं, और यह हिमालय के प्राचीन तथा अति सुंदर मन्दिरों में है। मन्दिर के जगमोहन में ११वीं शताब्दी के दो गिलालेन लग हुए हैं, जिनसे पता लगता है कि

यहां बंशनाथ शंकर का मंदिर था। कितनी ही खण्डित मूर्तियां हैं। कितनी ही साला तक भ्रष्ट होने के बाद मंदिर मूटा पड़ा रहा। फिर एक साधु ने यहां डेरा जमाया। फिर से पूजा शुरू की, और भूकम्प के कारण ध्वस्त होत मंदिर की मरम्मत भी कराई। मूर्तियां में एक तीर्थंकर की भी मूर्ति थी, जिससे जान पड़ा कि यहां जन भी थे। एक बूढ़पारी मूय और सदिग्ध बुद्ध मूर्ति भी देखी। यहां सबसे ममामम था। किर्याम के लिए जाने के साथ नाम भी नष्ट हो गया, और लाग शंकर के नाम पर ही इस स्थान का बंशनाथ कहने लग। नीचे बिन्दू नदी बह रही थी। उस दापहर की तपना घूम में भी स्थान रमणीय मालूम होता था। सुबह गाम और बरसान में ता यह स्थली सौंदर्य की खान मालूम हानती होगी।

दो बजे हम मला (मलाना शहर) के लिए बस पर खाना हुए। नाम गुर लेकिा दूकानें तीन-चार ही थीं। हम पठियार में हिमालय का सबसे पुराना गिलालेख देखने जाना था। मामान का दूमानदार के पाम रख दिया और जनकलालजी के साथ चल पडे। यह उपत्यका बहुत चौडी है कही-कही ता दग का भ्रम हा जाना है। पठियार बहुत बडा गाव है। मात सौ घर और बर्द टोले हैं। सौ राठी चार सौ घिय चौधरी, बीस ब्राह्मण, सौ हरिजन परिवार रहत हैं। लोग ने पठियार की सडक ता पकडा दी लेकिन ईमा पूव दूमरी गतावनी का ब्राह्मी गिताख कहा है मका किसी का पना नही था। म् टाई मील तक उमी कच्ची सडक पर चले गए। कुछ दूकानें मिली। लाग न बतगया यहां स जाधा मील पर खेता में बह चट्टान है। भूलते भटकत खता और घरा का पार करत उस स्थान पर पहुँचे, जहा कभी राठी बानु की पुष्करिणी थी। पुष्करिणा का अब नाम निगान नही है। इस भूमि में जगह-जगह गिलाएँ जमीन से उपर निकली मिलता हैं, उही में स एक पर ब्राह्मी और खराष्टी में लिखा था —“वाकुलम पुष्करिणि”। अभिगेव का रट्टी गद अब भी यग के सौ राठी परिवारा के नाम ने जुटा हुआ है। उस समय राश्ट्रिक कोई सरकारी पद था। मामत वाकुल ने यहां अच्छी विंगाल पुष्करिणी बनाई होगी।

बहां में लौटे और माडे १ बजे मला में पहुँच गए। माटरें कागडा का जा रही थी लेकिन जान पडन लगा हम जगह नहीं मिलेगी। निराग हा

वह यहा अपनी जीविका कमा सकेंगे । यदि ऐसा नहीं हुआ, तो घर आदमी को कैसे बाध सनता है ?

हम ऐसे समय वज्रेश्वरी के मंदिर में गए जब सूय डूब चुका था । आज वहा जाकर फाटा लिए । आज ही ज्वालामुखी चलन का निश्चय हुआ ।

ज्वालामुखी—भाजन करके साढे ११ बजे मोटर से चल दिये । ज्वाला मुखी यहा से २४ मील है । ज्वालामुखी रोड के पास तक सडक अच्छी थी । फिर पहाडी कच्ची सडक मिठी । १ बजे हम ज्वालामुखी पहुँच गए । अप्रैल के अन्तिम दिना का मध्याह्न था उसक साथ ज्वालामुखी नाम भी मिल गया । वहाँ की घूप असह्य मालूम होती था । सामान हम अपन साथ नहीं ले गए थे क्याकि लौटकर काँगटा चला आना था । अड्डे से माई के स्थान की ओर चले । टेढी मेढी गली और उसके दोना तरफ दूकानें पडी । अन्तिम सिरे पर चढाव की दूकानें ज्यान्त थी । जान पडता है, यहाँ भूकम्प न अपना जोर नहीं दिखाया । आखिर आपरूप दबी जो यहाँ मौजूद थी । फाटन के भीतर गए । फिर ज्वालामाई के मंदिर में घुसे । पुजारी ने बनलाया मोन का छन महाराज रणजीतसिंह न चढाया और उनकी बटी न चानी का द्वार बनवाया । भीतर दावार में तीन और कुण्ड में दो टेम जल रही थी । इतनी क्षीण थीं कि एक दने पर बुझ जाती फिर गस की गंध निकलती । मंदिर के भीतर इनकी घूपप्रतियाँ जलाई जाती हैं कि उसमें प्राकृतिक गैस की गंध छिप जाती है । इसमें कही विशाल ज्वालाएँ निकलती बाकू में मैंने देखी थी । यद्यपि बनी की बडा ज्वालामाई की जोन पहली बार १६२५ में मेरे वहाँ पहुँचन से दम-वारह वष पहल ही युगा दी गई थी । पर, इसमें गब नहीं कि वह जोत इससे कनी बटी रही हागी । मैंने अपना रूस की दूसरी यात्रा में रेल से बड़े प्रचण्ड ज्वालामाई निकलत दग्नी थी जिनके सामन इन ज्वालामाई की कोई गिनती नहीं हा सकती थी । पर अब बाकू की ज्वालामाई निर्वाण प्राप्त कर चुका है । हमारे लिए तो यही ज्वालामाई रह गई हैं । किसी समय ज्वालामुखी सयामा अगाध का बहून बडा कन्द्र था । यह भारत के अद्यत्त वापारा था । दग में ही नहीं बल्कि नेपाल मध्य

एतिया तिब्बत जीर चीन तक व्यापार करत थे । अब उनकी इमारतें ध्वस्त, त्यक्त और उगास थी ।

लौटकर अड्डे पर पहुँचे । कुछ ही मिनट पहले अगर आप हात ता काँगडा की माटर हम तयार मिलती । पास में एक अच्छी घमगाला बनी हुई थी । वही दो घट से ऊपर निरागा न साथ प्रतीभा करनी पनी । फिर एक बस ज्वालामुखी राड स्टेशन तक पहुँचाने के लिए तयार हुई । वहाँ जान पर दूसरी बस पठानकोट में घमगाला जान वाणी मिली । काँगडा में अड्डे के पास ही हमारा सामान था । इसलिए उस लेकर हम उसी दिन मवा ७ बजे घमगाला पहुँच गये । यह गिमला और मसूरी जसा ठण्डा है बल्कि यहाँ उनसे भी ज्यादा बर्फ पड़ती है । मसूरी और गिमला की तरफ जहा एक हा हिमाल श्रेणी है वहाँ इधर तीन-तीन श्रेणियाँ है, जिनमें सबसे दक्षिण वाली घमशाखा के पास पड़ती है । हम उस दिन जाकर हिन्दू हाटल में ठहर गए ।

घमशाखा—२६ अप्रैल का दिन घमगाला के लिए था । काँगडा जिला के सरकारी दफतर यही हैं । यद्यपि काँगडा जिला पञ्जाब में है, लेकिन है वस्तुतः हिमाचल प्रदेश का ही अंग । कुल्लू के लिए यह एक ही जिला जनसख्या में सार हिमाचल प्रदेश के बराबर है । उस दिन चाय पीकर जनकलालजी के साथ बाहर निकल । ममशा डिप्टी कमिश्नर में मिलना आफिस में प्रेहतर बगले पर हागा । ८ बजे पहुँचे । काड भिजवाया । साहब बहादुर न हुकुम दिया, दस बजे आओ । काड के पहले भी हम चिट्ठी लिख चुक थे जिसमें आन का उद्देश्य भी बतगाया था । हमने कहा, चला इन दो घटा में घमगाला के ऊपरी छोर तक देख आएं । साडे ६ आना देकर हम ऊपर वाली वार पर बठ गए । ता मेकलौडगज तक जाती थी । यही घमशाखा की फीजी छावनी है जिसमें गारखा सना रखी जाती है । सन जगहाम अंग्रेजों ने गारा जीर गारखा के लिए छावनियाँ बनाई थी । वहाँ में हम मील भर पर अब स्थित भाकसूबुण्ड गए । यह घमगाला का तीर्थ है, और वस्तुतः भाकसूनाथ के दर्शनार्थियों के लिए ही किसी ने घमगाला बनवा दी थी जिसके नाम पर इस नगरी का यह नाम पड गया । भाकसूनाथ के महत रामदयाल गिरि बधभूयण हैं । शिक्षित हान स दुनिया-जहान की खबर रखते हैं । यह कहना

मुश्किल है कि उहान राहुल की काई पुस्तक पढी थी लेकिन व्यवहार उनका परिचित जमा ही हुआ। यहा कुण्ड म पहाड स भीतर स आकर एन बनी घारा गिरती है। इसी पानी का नल के द्वारा घमशाला म सब जगह पहुचाया गया है। भाक्सूनान बडे परापकारी हैं, यह तो हम प्रत्यक्ष उनक जल वितरण स देख रहे थे। गिरिजी ने उतकी जो जीवनी सुनाई उसमे हम जोर भी प्रभावित हुए। भाक्सू और पहाडनिह ७ भाई बाकानर जाध पुर की बार क रहने वाल थ। बडा भाइ पहाडसिंह राजा था और छाटा कुवर। अपन यहा जल का कष्ट देखकर उनको बहुत दु रा हुआ और लागा के उद्धार करन का ग्रीडा उठाया। मालूम हुआ उत्तराखण्ड मे एक पहाड का नाम ही जल घर है जहा बहुत सारा जल है। दोना भाई वहा म चले। यहाँ हान आग डेन मील क रास्त पर नागडल महासरावर का पता लगा। किसी न बनलाया पानी तो बतरा है लेकिन हजारों नाग उसकी रक्षा करते है। बडा भाई गतरा मोल लेन के लिए तयार नही था। उसने बहाना किया— 'पाम क पहाड पर तपस्या करन की बडी अच्छी जगह है। मैं तो यहाँ भजन करूंगा। छोटे भाइ न अकले ही वहाँ पहुचन का निश्चय कर लिया। किसी न काइ युक्ति बता दी और वह नागा का मुलाने म सफल हा डल का जाघा पानी चुराकर भागा। कुण्ड के स्थान पर पहुँचते-पहुँचते डठ का राजा नाग भी पीछा करता जाया। उसन भाक्सू को डम लिया। भाक्सू न अत म गिबजी महाराज का नाम लिया। नाम लेत ही गौरा पावती सहित पहुच गए। गिबजी मन्तराज भाक्सू क साहस से बहुत प्रसन्न हुए और कहा दा वर म स एक वर माँग ली—पानी या प्राण। उस महासत्न न कहा— मुम प्राण नही चाणिए। लागा को पानी मिले मैं यहा चाहता हूँ। गिबजी न एवमस्तु कहा और साथ ही उस अपना रूप बनानर बनी बटा दिया। भाक्सू गकर पास क मन्दिर म विराग रह हैं। इम स्थान क साथ दूमरी कथा भी जुडी हइ है। बाबा उमेन्गिरि यहाँ आकर तपरया कर रट थ। राजा घमच द गिबकार करन क लिए यहाँ आय। गिनती की— 'बाबा क्या सवा कर ?' बाबा न कहा—“बच्चा, धुनी का लकड दे द।’ राजा राजधानी म लौटकर एग जग म भूल गया। बाबा ने जगल को जलानर उसी का धुनी बना दिया। राजा को होग आया, तो आकर यह चमत्कार

दत्ता । क्षमा मांगो और मेज़ बन गया । बाबा उमदगिरि न जान ही महा समाधि ले ली । उनक और उनके उत्तराधिकारी महन्ता का समाधिया यहाँ बना हुई हैं । मन्दिर म काइ जागीर बागीर नहीं है । काइ ताज्जुब नहीं, यदि गिरिया का जगटा यहाँ अघ्रेजा न आन से पह्ण रग हा । महन्तजी न चाय पिलाए बिना वहा म आन नहीं दिया ।

बम के जडडे पर आन म पह्ण बह चली गइ थी । उत्तराई थी इसलिए पैदल ही चल पड़े । डिप्टा-कमिन्तर क बंगल पर पहुच ता मालूम हुआ क० एल० कपूर साहब दहात घूमन चल गए । हम अफमान करन की काई फरत नहीं थी । आखिर हम उनक पाछे बहुतै हिरान भी नहीं हुए थे । साहब आई० सी० एस० हैं और किसी मश्री क रिन्तदार भी—करला जीर नीम पर चला । कचहरी म जावर मुबद्दमा करना चाहिए, लकिन रिन्तबी ही बार टलीफात सटक जाता है—साहब बंगले पर ही इज्जास करेंगे । बंगला ग्दर क एक् छार पर है, जीर कचहरा दूमर छार पर । एमे आदमी स यही आगा हो सकता थी ।

हम नीचे घमगांग म गए, जहाँ बहुत स सरकारी आफिम है । सोचा पन्मिटी आफिसर (सूचना-अधिकारी) म कुछ काम चलगा, व्मलिए श्री मंगनराम गन्ना क पास पहुँचे । उन्होंने कुछ सूचनाएँ दी, और बाकी क भेज दन का जिम्मा लिया । ईसा-भूब दूमरो-तीमरा गताली क एक गिलालेख को हम पठियार म दख आए थ । दूमरा गिलालेख खजिया म था । अब हम ऊपर चले । श्री गन्नाजी न रास्ता बनलान क लिए दा पर्गंग तब अपन जादमी को भेज दिया । हमारा गन्ना अधिकतर उत्तराद का था, चढाद नाम की थी और जाना था पगटडी स । सटक म जान पर व्दुन चक्कर लगाना पडता । गारपा का एक गाँव मिग, जहा पन्तर मपागे बम गए थ । फिर एक-दा और गावठा म हान घमगांग स खजियार जान वाणी माटर महक पक्का । एक आदमी न नीचे उतरती पगटण्डी का दिखला दिया और वन लाया कि नजनीन ही मेन म के चट्टानें हैं । बहुत मटकना नहा पडा । हम दोनों के बीच स उमरी उस चट्टान क पास पहुँच गए तिम पर अभिलेख है । यहाँ कृष्णग न आराम (भिक्षु विहार) बनवाया था । वस्तुतः चट्टान दानी म है, लकिन मगदूर है खजियार के नाम से क्योंकि बहुत बड़ी बस्ती

है। किसी समय यहाँ भिक्षुआ का आवास था। पठियार में पुष्करिणी थी, और लंग से पता नहीं लगता कि उसका साथ कोई विहार या या कोई और धार्मिक आश्रम। पर यहाँ तो जाराम साफ लिखा हुआ था। यद्यपि इसका अर्थ उद्यान भी होता है लेकिन उस काल में बौद्ध विहारों का आमतौर से आराम कहा जाता था तभी इतने महत्वपूर्ण लक्ष के लिखवाने की जरूरत थी। हम शोना वहाँ से ऋटकर फिर उसी जगह सबक पर पहुँच और उसका साथ ऊपर की ओर बढ़ते मूर्धास्त के बाद घमगाला पहुँच गए। जनकलालजी का एक नेपाली साहित्यकार का पता मालूम था इसलिए वह उसी रात उनसे मिलने श्यामनगर में चले गए। वह वहाँ से सवा १० बजे रात को लौटे। इसी बीच 'तालिब' साहब किसी से मुनकर अपने एक मित्र के साथ आ गए थे जिनसे देर तक बातचीत होती रही। और भी कितनी ही सज्जन आए। मालूम हुआ हमारे आज के कथानायक को ब्रिज से फुरसत नहीं रहती और एन मन्नी साहब की लड़की इनके बेटे से ब्याही जान वाली है। 'सया भये कालवाल, अब डर काह का।'

डलहीसी—तटके पठानकाट जाने वाली बस ५ बजे मिलती थी। ५६ मील का रास्ता था। हमने जाकर उसी का पकड़ा। रास्त में नूरपुर मिला। यहाँ के राजा ने वालगाह नूहदीन जहागीर के प्रति भक्ति दिवाभ के लिए इत्ते धमगे से बदलकर नूरपुर कर दिया था। ता भी घमरी (घमगिरि) बटुत दिना तक लागा के मुह से छूटा नहीं। १८वीं मन्नी के अग्रेज यात्रिया न भी इसी नाम का स्मरण किया है। कहते हैं पहले राजधानी पठाननाट में थी। मदान में हान से वह शत्रुओं से उतनी सुरक्षित नहीं थी, इस लिए उस यहाँ लाया गया और एक चट्टान पर किला बनाकर वही राजधानी बस गई। घमगिरि का सम्बन्ध बौद्ध धर्म से है, यह कोई निश्चय नहीं है लेकिन हा भी सक्ता है क्योंकि दूसरे लोग अपने देवताओं के नाम पर नगरों को रचना ज्यादा पसन्द करते जबकि बौद्ध धर्म के दास होना चाहते हैं। पठाननाट से पठाना या अफगाना का अर्थ नहीं समझना चाहिए। मुस्लिम इतिहासकारों ने भी इसका नाम पठान बतलाया है, जो प्रतिष्ठान का अपभ्रंश है। काट ता किले के कारण उसके साथ जाड दिया गया। यह सबम उत्तर का प्रतिष्ठानपुर था। दूसरा प्रयाग के सामने गया पार शूनी

भी प्रतिष्ठान था, जीर तासरा महाराष्ट्र में जीरगाबाद से दक्षिण गोदावरी के किनारे आज भी पैठन के नाम से मशहूर है जा आंध्र राजाओं की राजधानी रहा। आम-अमुर या दिवोदाम गम्बर के युद्ध के समय इस नसगिक पहाड़ी किले पर जस्टर गम्बर के सौ दुर्गों में से यह एक रहा होगा। विनोपकर यही से पहाड़ों में घुसने का रास्ता हाने से इस स्थान का महत्व ज्यादा था। हमने चाहा फोटो ले लें, लेकिन सभी डाइवर एक तरह के नहीं होते। एक मिस्ट के लिए भी फुरसत नहीं थी, सीधे जाकर अडटे पर जरा देर के लिए ठहरे, सवा ८ बजे पठानकोट पहुंच गए।

विभाजन के बाद पठानकोट बहुत बढ़ गया है। पहले इसका महत्व चम्पा और कागडा मंडी जानेवाली सड़कों के कारण था। अब यह पाकिस्तान की सीमा के नजदीक हान से भारी सैनिक छावनी है जीर पश्चिमी पाकिस्तान से आए लोग भर गए हैं। कश्मीर जाने का रास्ता भी यहीं से जाता है, इसलिए व्यापारिक सुभीता ज्यादा है, इसे कहने की आवश्यकता नहीं। जयल के अंत में पहाड़ से बिल्कुल नीचे मगान में बसी इस बस्ती की गर्मी का क्या पूछना? पर हम आध घण्टे से ज्यादा ठहरने की जरूरत नहीं पड़ी, और कुछ नाश्ता करके हम पीने ६ बजे डलहौसी की रास से चल पडे। मैदान पार कर पहाड़ में घुसे, फिर चक्कर काटते, ऊपर से ऊपर चढ़ने ४५ मील जाकर बनी सेत में पहुँचे। अच्छा ग्राम बाजार है। यहाँ से एक रास्ता चम्पा को जाता है और दूसरा पाच मील पर डलहौजी का। हम उसी गाने से डलहौजी चढ़ गए। एक क्षांकी करती थी। मुझे हिमालय की पुरिया में डलहौसी सबसे अधिक सुन्दर मालूम हुई। इसका कोई काना हरियाली से खाली नहीं। विंगलकाय देवदार जगह जगह राडे थे। दोपहर का समय था, लेकिन गर्मी का कही भी पता नहीं था। डलहौसी को यह लाम है कि यहाँ फौजी छावनी है। सीमात के पास होने के कारण यह आबाद रहेगी इसकी भी पूरा आगा है। आजकल जनेल साहब आने वाले थे इसलिए सैनिकों के कारण बदनवार लगा रखे थे। अडटे पर जाकर हमने सामान एन भोजनालय के पास रखा, जीर साचा कम के लौटने में तीसघंटे की देर है। तब तक डलहौसी को देख ले। १ बजे हम पहुँचे थे। 'गत विहाय भाक्त्य'—पहले पेट पूजा की, फिर चले नगरी का देखने।

चौरस्त पर पहुँच। जयेंता ने लखन क अपने प्रिय चौरस्त का नाम म्म द्दर चेरिंग नाम बना दिया था। कुछ नोचे उतरकर मुख्य बाजार म पहुच। दरानीवार स हमरत बरस रही थी। ३० अप्रल गर्मी का दिन था। विभाजन स पहल हाना ता अतक यहा ह्वारा सैलानी आ गए हान। आग द्दाना म ताला बन् था। लागों न बनलाया १९४७ स तनका ताग कभी नहीं सुग। एक प्रौ पुग्प बट रह थ— यग हिदू थ मुसलमान थ। मब आन थ। डलहौमी गुज्जार थी। जब ता बाजार की प्रहुत-मा दूकानें माला म बन् हैं। हमन भी दवा ठना का स्प्टे ह्ट गर्ट थी काई टीक करत बाग नहा था, बग्मान का पानी घर क भीतर जाना हागा। ममूरी की दुग्बम्या पर ही हम खँवत थ लकिन वहा बाजार म ता हमने एमी हालन नही देखी। कभी यहा घम क नाम पर मिग्फुटीवल हाती थी मन्जि के मामन बाजा नहा बजना चाहिण। बाग आय, अनाय मनाय मभी मन्जि मून पटे अपन भाग्य क गिए रा रह थ।

कितना हा दूर और चक्क लगाकर फिर हम मुख्य पवन का परिश्रमा म निकर। उमादार साडू लिए सन्व माफ कर रण था। म्म आन्तवग ही क्ना चाहिण, क्याकि महरों पर ता अब आन्मी कम ही चलन थ। कह रहा था— क्या पूछन हैं? बल्लैमी की गाभा ता मात्र गगा क माय चगी गइ। माह्व लगा क जान क गिए जकसाम करनवाले लाग विगमपुरिया म काफी मिग्गे। एक और आन्मा मिला। वन् कुछ आगावान् था। कह रहा था—जग महीने (मई) क जन्त म बन् गगा आणेंगे। त्नुन कशा खाक आणेंगे? परिश्रमा करत घूम फिर अन्धे पर पचैच गए। ४ बज क करीब घग मिल् गइ। लीन्त वक्त मात्रम हुजा, भारत के महामनापति राजर्द्रमिन्जो जा रन् हैं—ही की स्वागत की तैयारियाँ ना रही हैं। बनाखन म आकर चम्पा की मात्र पकडा। अभी वमें मिरन्ड की चीज थीं चाह वन् सरकारी वमें ही क्यों न हा। समय की वात् पात्रगी नही। टावर वन् कुग था। वन्तुन यहाँ म चम्पावागी मन् मात्र क गिए उपयुक्त नगी था। वन् मवरी जीर जनराई भी तज थी। मवम अल वान यन् थी कि त्दव क ता मित्र त्मको बगल म बठ गए और निद्व वान करन लग। यह आरागिा क प्राग के माय खन् करना था। फिर

कलीनर न भाविल आदल वा खुला डब्बा हम लोगा के बीच म लाकर रख दिया। कपडे पराए हा उमकी वग म। सवारिया के अतिग्विन नी मन साग-साजो के वनम भी भरे ये। रास्त म जब चम्बा १४ मील रह गया तो एक्टरफा होन क कारण गाडियो की रचना पटा। मुने भाविल आदल और ड्राइवर से बात करना बहुत बुरा लगा। मैं गिवायत की किताब मांगी। डाइवर ३ कहा— हमारे पास नहीं है। घूम का घूट पीना पटा, लेकिन आग यह बहुत नरम पट गया। अपन जादमी को डाटकर भाविल आदल का डगा बहा मे हटवा दिया। एम बुर रास्त से चलकर साडे ८ बजे रात चम्बा पहुँचान म जिम कौगल का उसन परिचय लिया उससे सारा मुस्ता हट गया। चम्बा म नेगी ठाकुरसेन डिप्टी कमिश्नर थे। १९४८ का उनसे काफी परिचय था। पीछे भी चिटटी पत्री होती रहती थी। लेकिन, डिप्टी कमिश्नर का बगला जयान् पुरान अग्रेज सर्वेसर्वा का महल न जान कहा हाता, और रात म जाकर तकलीफ देना पडना इसलिए हम वहा नहीं गए, और १० जयवतराम का मकान पूछत उनके घर पर पहुँचे। घर पर उनके भाज श्रीनिवामजी मौजूद थे। उहान एक साफ सुधरे कमरे म ले जाकर ठहराया। मजान बहुत अच्छा था लेकिन भारतीया के स्वभाव के अनुसार पाखाने का पूरी तौर से गंदा रखना, और दूर भी होना जरूरी था। डाय-बटीज क मरीज को पेगावखान का दूर होना गामत की बात है।

चम्बा—२८ अप्रैल का सबेरा आया। जासमान साफ देखकर बडी प्रसन्नता हुई। फाटा लेन क लिए और लोगा मे मिलने के वास्ते भी अच्छे मौसम की आवश्यकता हाती है। डाकखाने मे कमला की नीन चिटिठयाँ मिली। मैं रास्त से आधा दर्जन चिटिठया लिख चुका था, लेकिन उह सिफ एक मिली। मज जानकर चिन्ता दूर हुई कि जया अत्र अच्छी तरह है। पहले हम डिप्टी कमिश्नर नगी ठाकुरसेन से मिलने गए। उहान कहा— 'हमारे यहाँ आदर।' यद्यपि चम्बा के बारे म अधिक सहायता उहीसे लेनी थी जिसम यहाँ आन पर सुभीता हाता, लेकिन हमने यह कहकर क्षमा-प्रायना की कि अभी ता वही रहन लें भरमौर से लौटकर आपके यहाँ ठहरेंगे। जिल के मिन मिन विषया सम्बन्धी आँकडा को जमा करन का जिम्मा उहाने ले लिया। नगी ठाकुरसेन दूसरी ही तरह के अपसर हैं जो

आजकल के नौकरशाहा में दुर्लभ हैं। वह चाहते हैं जनता की हालत बहुत हो। जहाँ सारी मशीन बिगड़ी हुई है, वहाँ एक आदमी क्या कर सकता है? लेकिन, पुरुषार्थी हाथ पर ढीले करके बठा ता नहीं रह सकता। उन्होंने कनौर के दुर्गम पहाड़ी इलाके में जन्म लिया। कृषि में बी० एस०-सी० किया और ये दानो गुण जन सेवा के लिए बहुत उपयोगी हैं। व्याह्र नहीं किया, कि उससे हमारे काम में बाधा होगी। लडाईं के दिना में नौसना में कुछ साल रह इसलिए फौजी अपसरो का अनुशासन भी है। पहाड़ में पदा होना का यह मतलब नहीं कि हरक आदमी पक्षिया की तरह उड़ते हिमालय के दुर्गम पथों को पार करेगा। चम्बा से भरमौर होकर सीधे लाहूल जान की एक जीत की कठिनाई कबारे में मैं पढ़ चुका था। नगी साहब ने कहा, कृषि कालेज में पढ़ते समय मैं इस रास्ते गया था।

चम्बा बहुत पुराना नगर है। समुद्रतल से ४००० फुट से नीचे ही है, लेकिन मदान में बहुत दूर तथा अक्षांश में भी अधिक उत्तर जाने से यह मसूरी और शिमला के पहाड़ों की ऊँचाई के स्थाना जसा मन् है और यहाँ हर साल बर्फ पड़ जाता करती है। यहाँ पुराने मंदिरों की एक पाँती है, जिसमें लक्ष्मीनारायण, लालपा, हरिराय चम्पश्वरी के मन्दिर प्रसिद्ध हैं। न जान कितनी बार मूर्तिभङ्ग यहाँ आए नगर को लूटा और मूर्तियाँ ताँची। पुरानी खण्डन मूर्तियाँ अधिकतर राबी लाभ कर चुकी हैं। तो भी कुछ दखन में आइ। मन्दिर गिलखरदार अपने पुराने युग के कौशा के प्रतीक हैं। १२ वजे तक घूमते पाटा लेने, लागा से घात करने नगरी में घूम। नगर से बाहर एक टेकरा पर चामुडा का मला था। देगा स्त्रियाँ खुड की झुड जा रही हैं। यह स्त्रियाँ का ही मन्त्र है। चम्बा की स्त्रियाँ अधिक सुन्दर और अपने पगवाज (पगवाज) में बड़ी क्विलती थी। यह पगवाज मुगल सभृति का प्रतीक है। पुराने समय में यहाँ भी दातू (ऊनी चान्दर) पहनी जाती थी। फिर रानिया ने मुगलानिया की तरह पगवाज पहनकर दूसरों को रास्ता दिखलाया। राजस्थान में भी भद्र महिलाएँ घाघरा-लुगडी नहीं पगवाज पहना करती थी। लौटकर भोजन किया। फिर निकल। डाकघाने के सामने बहुत बड़ा मन्त्र है। डाकघाने के पास भी एक पुराना मन्दिर है, और डाकघाने से करीब कराब सटा ही प० जयवतजी का निवास।

चम्पेश्वरी का मन्दिर देखने गए। राजकाया चम्पा क नाम पर नगर का नाम चम्पेश्वरी पड़ा। चम्पा किसी मिद्ध के सत्तमग म जाया करती थी। राजा का अपनी पुत्री पर सद्दह हा गया और उमका अत्यहित कर बैठा। पीछे सच्ची बात मालूम हुई तो उसने पुनी क नाम पर बसाई इस नगरी मे अपनी राजधानी कायम की।

चम्बा भारत के उन स्थाना म है जहा सबसे अधिक पुरातात्विक सामग्री प्राप्त हुई है और जिसके राजकाय स पुराना भारत म काई राजकाय नही। यहा का गामन अधिकतर अग्रेजा ने किया हाँ, राजा का नीवान हाकर। उहाने जगलात का अच्छा प्रबन्ध किया। माटर का ता नही लेकिन दूसरी सडके बनवाइ, डाकबगले तयार किए, स्कूल और अस्पताल खाले। इही मे यहाँ का भूरीसिंह म्युजियम भी है जिसम बहुत-सी मूर्तिया और उनसे भी महत्वपूर्ण ताम्रपत्र सुरक्षित हैं। पुस्तके भी काफी जमा की गई थी, लेकिन उम से बहुत-सी उड गई हैं। मुझे बतलाया गया कि पिछले साल ही एक प्रभावशाली नेता वहा पहुँचे और पुरातात्विक महत्व की एक पुस्तक दान के लिए ले गए, आज तक वह लौट रही है।

२६ अप्रैल का फिर म्युजियम म गए। वहा चित्रा और किन्नर हो अभिलेखा के फोटो लिये। कुछ दुर्लभ पुस्तका म भी फाटो उतार। गाम के वक्त फिर म्युजियम म गए। वस्तुतः यहाँ इतनी चीजें देखन और पढ़न की थी जिनके लिए दा हफ्त भी पर्याप्त नही हात। शिथिल तरण मण्डली को इमन अपने आने का पता नही दिया था। लेकिन, हिमाचल म उद की अपना हिंदी ज्यादा प्रचलित रही है, इसलिए शायद ही एसा काई शिक्षित तरण हा, जिसने मेरी एकाध पुस्तक न पढ़ी हा। उम दिन रात के १२ बजे तक हमारे यहा तरण आते रहे।

भरमौर—कम से कम चम्बा की पुराना राजधानी भरमौर का दख लेना हमन अत्यावश्यक समया। वसे जब तक चद्रभागा क तार के पगो-लाहुल इलाके का आदमी न दख ले, तब तक यहाँ की प्राकृतिक सुपमा का अदाजा नही लगा सकता। पर वह हफता का काम था, जिसके लिए हम तयार नही थे। नेगी साहब ने दो घाडो का प्रबन्ध कर दिया, और वह शाम को ही माटर क अन्तिम अड्डे राख के लिए खारा हा गए थे। किसी ने

वहा अघेरा रहते माटर जाती है इसलिए हम साढे ५ बजे ही अडटे पर पहुँच गए। बस सवा ६ बजे खाना हुई। रास्ते के वारे म क्या पूछना ? कामचलाऊ सडक थी जिम पर भी मोटरा का रामभराम चलाया जाता। शहर से काई पाच मील गए हागे। गाडी माघारण गति से जा रही थी। म ड्राइवर के पास बठा था। देखा गाडी दाहिनी ओर जा रही है। ड्राइवर बतरी कोणिग कर रहा था। लेकिन, इस बात क कहन के लिए मैं जितना समय लूगा उतना समय नहीं लगा। कयो ऐसा हो रहा है अभी यह साचने क लिए दिमाग तयार हा हा रहा था कि बस करवट बठ गई। ड्राइवर चक्के म फँसा था लोग एक दूसरे क ऊपर थ। ड्राइवर का तो हाग ही ठिकान नही था। मैंन कहा—“निकलो भी ता।” वाएँ वाली खिडकियाँ आसमान देख रही थीं। कुछ उससे बाहर आए। लोगो को भी पक्क पक्कडकर निकला। जाज क्या किसी क बचने की उम्मीद हो सकती थी ? पहाड म सटक छोडकर बस गिर और एक भी आदमी धन गरीर न हा ? मैं अपने को अक्षत गरीर समझता था, लेकिन पीछे देखा पैर म एक जगह कुछ छिल गया है जिमम जरा मा खून भी निकला है। सब लाग अपन अपने देवताआ का मनाने लगे। जब सब उतर आए तो हमने समझा यहाँ इतजार करन की जरूरत नही है कयोकि चम्पा मे जल्दी किमी के आने की उम्मीद नही है और हमार लिए ६ साडे ६ मील आगे राख म घाडे इतजार कर रह हैं।

श्री विद्याधर एम० एल० ए० भी हमारे सहयात्री थे। वह भी साथ चलन क लिए तयार हा गए। भगवान् का धयवात् दन थक नही रह थे। सचमुच प्राण वाल बाल बच थे। उस समय ही रामनाम सत् हा जाना, तो मरी कितनी ही पुस्तकें लिखने को रह जाती। जीवन और मरण की चिन्ता मे मर जाना मर लिए घणा की बात थी। मैं जिम भगवान् को धयवाद दना जय जानना हूँ कि वह कभी न घा और न है। विद्याधरजी क साथ बान करत हमे राख पहुँचन पता नही लगा। वहाँ साईस घाडे लिय हुए तयार थ। सोचा यहाँ से कुछ नास्ता-पानी करव चलें। जरा सुम्नात ही दूनरी बस म पुलिस और मोटर सविस का एक अफसर आ पहुँच। इपर लाला बबभूवद बिना भाजन कराव जाने दन क लिए तयार नहा थ। हमने

एक दूसरे क्षीवर में भाजन बनाने के लिए कह लिया था उस मना करना पडा। पुलिस ने बस-दुर्घटना के लिए जोगा के बयान लिए। मैं बनलाया— कैसे पहिले की बात न मानकर दाहिनी ओर चल और टाइवर सब करक हार गया। वस्तुतः ड्राइवर का कसूर नहीं था। इन पहाडा में स्टियरिंग और ब्रेक का दुरस्त रहना हर बस के लिए अनिवाय होना चाहिए लेकिन इसकी तरफ ध्यान नहीं दिया जाता। इन साल (१९५६ इ० में) इसी तरह एक बस हिमाचल प्रदेश में गिरी, जिसके सभी आदमी मर गए। हमारी बस यदि दस ही कदम ऊपर जाकर बाएँ जाती, तो गायद हममें से एक भी घटना को बतलाने के लिए नहीं रह जाता। एम० एल० ए० साहव ने भी अपना बक्तव्य लिया। वह मजान बनवा रहे थे, जिसकी छत के लिए अच्छे किसिम का स्लेट इधर ही मिलने वाली थी उसी का इन्तजाम करने के लिए जा रहे थे। मकान बनना बदा था, इसीलिए विद्याधरजी बच गए, किसी भगवान् न उह नहीं बचाया।

लाला बकशूचन्द राख के बडे दूबानदार हैं। अब हम कहते हैं कि बनिये खून घूसने वाले हैं, लेकिन सनातन से वह न अपने को ऐसा समझने से और न दूसरे। शास्त्र कहता था 'लक्ष्मी वसति यापारे।' इनमें खून घूस मकरीघूस भी थे, और सरल श्रद्धालु दयालु लोग भी। लाला बकशूचन्द ऐसे ही सरल श्रद्धालु पुरुष थे। हम ही नहीं उहान और भी वितना को चाय पानी या भोजन से तप्त किया होगा। हम भोजन करके घोडे पर चने। कुछ मील जान पर राबी के बाएँ किनारे से दाहिने किनार आना पडा। यहाँ के सोफियाना (हलक फुलके) यूला को देखकर प्रसन्नता हाती थी— इतने कम खर्च में पुल के बन जाने पर कहीं पर भी उसका बनना आसान है। माटे लाठे के तार थे, उसके नीचे पट्टियाँ लटक रही थी। लेकिन, बीच में पहुँचने पर जब 'बाल रे चिनगिया' होने लगता जयाद् पैर दाहिने बाएँ नाचने के लिए तयार हाते तो इस पर विश्वास करना मुश्किल होता कि हम उछलकर रागी में पहुँच नहीं जाएंगे। उस समय "जा भी हा" कहकर आगे चलना ही अच्छा होता है। आगे की बस्ती में श्री विद्याधरजी लाला के यहाँ बात कर रहे थे। वहाँ थोड़ी दूर ठहरना पडा। हम फिर खाना हुए। राम से १६ मील चलकर दुरगढी में पहुँच। टाक्कगला गहा पर था

इसलिए खटमन पिस्सू से बचने की उम्मीद थी, नहीं तो यहाँ न कोई दूकान थी, न और जाराम। सरकारी घोड़े थे दाना पास में था, और घास चौकीदार ने मुहैया कर दी। साईसा ने खाना भी बनाया। जनकलालजा को उपवास करने की ज़रूरत नहीं पड़ी।

भरमौर—भरमौर अब ११ मील रह गया। पहले दिन हम अधिकतर पदल ही आए इसलिए आत्मविश्वास बढ़ गया था। १ मई का साढ़े ५ बजे हम घाड़े वाला को जल्दी आने के लिए कहकर आगे बढ़े। रास्ते में एक अच्छी दूकान और टिफान देखकर खयाल आने लगा कल यही आ गए होत ता अच्छा था। और आगे हम रावी को पार कर उसके दाहिने तट पर आना पड़ा। रावी अब छूट रही थी। वेदा की यह परम्पना बहुत दूर ऊपर से आ रही थी और भरमौर की नदी यहाँ से नीचे ही रावी में आ मिली थी। भरमौर की नदी छोड़कर यहाँ पहाड़ का पार करने का यही मतलब था कि नदी ने पत्थरों से ऐसे काटा था कि जहाँ रास्ता नहीं बनाया जा सकता। लेकिन आज के डाइनामाइट के जमान में पहाड़ बचारे क्या कर सकते हैं? सवाल है रुपया का। हिमाचल सरकार ने भरमौर तक मोटर रास्ता बनाने की सब नाप-जान कर ली है। पुल पार करते ही चढ़ाई आई। जनक बच्चिया को पार करती दस मील की सड़क चढ़ाई है। हम ठहर गए। दखा घाड़े भी आ रहे हैं। साचा चढ़ाई भर तो उनका इस्तेमाल कर लेना चाहिए। घाड़े आए फिर हम उन पर चढ़कर चले। चढ़ाई पार कर लान पर गहर का एक छाटा-सा गाँव मिला। मटमठे पानी के कुण्ड से हम कोई लाभ नहीं उठा सकते थे। उसका एक आर लडको का स्कूल था और दूसरी तरफ एक गणार्थी भाई ने छाटा-सा दूकान खोल रखी थी। हमने यही कुछ चाय पानी किया। मालूम नहीं था कि भरमौर में चीजा के मिलने की बड़ी दिक्कत है नहीं तो यहाँ से कुछ साथ ले चल जान। घोड़े पर चढ़कर खाना हुआ। डेढ़ माल रह जाने पर भरमौर गाँव न्यियाई पड़ा। भरमौर का वरमौर भी बन्द है पर वस्तुतः ब्रह्मपुर का बिगडा हुआ रूप है। इस भूभाग का वह राजधानी रहा। राजधानी बनने के बाद आज से हजार ग्यारह सौ वर्ष पहले इस राज्य का नाम चम्बा पड़ा। पहले क्या नाम था? गायक ब्रह्मपुर ही कहा जाता होगा। पञ्च पूर्वी पहाड़ी कुल्लू

का नाम कुलूत तां प्राचीन काल स मशहूर है। आजकल भरमौर म नापा हा रही थी। गायद बाकायदा नापी पहनी बार की जा रहने थी। रास्ते म एक दो गात्र मिल घरा के दरवाजे अधिकतर बंद थ। वरमौर के लाग मनु कहे जाते है और इलाका गदियान। गद्दी किसी एक् जान का नाम नहीं है। इनम ब्राह्मण अ ब्राह्मण सभी शामिल हैं। भेड-बकरिया पालना जीविका का एग प्रधान साधन है। भरमौर के खेत उह अपने काम भर क लिए अनाज और जन्तु से ज्यादा आलू द देते हैं। ७८ हजार फुट की ऊंचाई पर यहाँ क गाँव हैं। जाड़ा म यहाँ चारा आर बर्द फुट माटी बफ पड जानी है। उन समय लोग यहा रहना पसंद नहीं करत। पंगुओं के लिए चार की तनलीफ हाती है और प्राणिया का काम नहीं रहता। इसलिए पंगु प्राणी भारी मख्या म नीचे जाने हैं। गरीब स्त्रियाँ भटियात (निम्न रावी उपत्यका) क गहस्या क घरा म चावल कूटती मेहनत मजूरा करती हैं। पुरुष भी कुछ काम करत हैं। अधिक पंगु वाले उह जगलो म ले जाकर चरात हैं।

मइ महीना आन पर, भरमौर उपत्यका का अधिकाग बफ से मुक्त हा जाता है। उस वक्त गद्दा परिवार अपन गाँवा का तरफ लौटत हैं। स्त्रियाँ पीठ पर सामान लादे पुरुष भी मन डे मन का भार उठाए अपनी गाय या किसी दूसर पंगु को हाँकने ऊपर चलते हैं। हम वह रास्त म मिल रह थ, लेकिन यह सत्रमे पहले का काफिला था। गद्दी बहुत मद जगह मे रहत हैं इसलिए स्त्री पुरुषा का सारा बपडा ऊनी हाता है। उनकी कमर म ४० / ० हाथ की काली रस्ती पिपटी रहती है। नजदीक से देखन पर उसकी कला का पना लगता है। मालूम हाता है नरम काले उन को जमा दिया गया है जा दखने म मन्वमल जसा मालूम हाता है। गद्दी बच्चा भी चोगा पहनने ही रस्ती बिना नहीं रह सक्ता। एक गद्दी मित्र ने बतलाया, गिबजी महाराज ने बरदान दिया कि जब तक कमर म यह रस्ती बँधी रहेगी तब तक तुम्हारी भेँ काबू मे रहेगी। मैंने भी कहा— हजार हजार भेँ को एक चरवाणा कस समाल सक्ता है ?” उसन कहा—“हा, इसीलिए हम लाग रस्ती कमर म बाँध करके रखन हैं नहीं तो हजार भेडें हजार चार चली जाए और हम वहीं क न रह।” गद्दा अपने जाडो की कमाई की बरतन

भाड़े या जिमी और रंग म बदल लेते हैं। वीन युगा म उनके लिए काम का सुभीता अधिक रहा होगा पर जब भटियात म खुद भुक्खड कमकर मौजूद हैं। लोग अपन घरा म लौटे नहीं थे इसीलिए बहना म ताले लग हुए थे। रास्ते म हमन वन विभाग की तत्परता नी दयी। एक गह चार चार पाच पांच हाथ वाले देवदार के हारा अमाला का जगल था। जसे मनुष्यो और पशुओं के बच्च प्यार लगते हैं वैसे ही य जमाल भी लग रह थे।

साथे ११ बज हम गघेरन (गदियान) की रागधानी म पहुच गए। यहा डाक्बैंगला, अस्पताल डाक्घर मिडल स्कुल पुलिम चौरी नामवतह सीलदारी है। तहसीलदारी पुरानी काठी म है। आफिस इतन हैं लकिन खान-मीन की चीजा की लोगा की बनी तनलीप है। मुमकिन है हम पहले आए थ। मई के अंतक जब सभी घरा म लाग आ जाएंगे तो हालत बहतर होगी। नागा बाबा ने यहाँ अपनी संवाआ से अच्छा नाम कमाया है। लकिन वह पिछल प्रयाग क कुम्भ म गए तो अभी तक नहीं लौटे थ। हमारे पास सामान तो बस इतना ही था कि आडन क लिए एक डा कम्बल थे। मौमिम का कोई ठिकाना नहीं था इसलिए पहले मन्दिरा के दान और फाटा लेने का काम खतम कर लना चाहत थे। भरमौर जसे भारत म बहुत कम स्थान हैं जहाँ कि इतनी पुरानी धातु की मूर्तियाँ सुरतिन हा। इसत यही पना लगता है कि रान्ने की कठिनाइया को जानकर मूर्तिभजव यहाँ कभी नहीं पहुँचे। बीच म हरिहर का गिखरदार विंगाल मन्दिर है जा बस्तुन गियनी का मन्दिर है। उमर सामन नरमिह का मन्दिर उसमकुछ छाटा है। दानों के बीच म गकरनी की ओर मुह किय पीतल का (करीब नराव पहाडी माँड क कठ के बराबर का) माँड खना है जिमक ऊपर गुप्ताक्षर म लख है। जमिलस म माटूम हाता है इसे मरुवमा न बनजाया था—

‘आ। प्रामाण्यमरुमहा हिमवन्तमूषनि कृत्वा स्वय प्रवररम्मगुदरनेक
तच्चद्रगालरचिन नवनाभ नाम प्राग्नीवववविशिषमण्डपनैरचिन ।
तस्याग्रता वपभपीनरपोत्काय मलिपृक्मवकुन्तो ननदवयान
श्रामस्वम्मचनुरादधिकीतिरपा मातापितु सतनमा मपगुबद्ध ॥’

मरुवर्मा सातवी गताली म मौजूद थे। लगणात्वा क मन्दिर म देवी का लेखयुक्त पीतल की मूर्ति है गणग की पीतल की मूर्ति भी बनी भावपूण

है। पागुपन लकुलीगा का किसी समय यहा गड था यह उनका निवर्तित बतला रहे थे। तहसीलदार साहब न हमार भानन का प्रबंध किया, जा इस जगह की बसरा मामानी का दखकर तकलीफ दना ही था। अगर हम रोमा जानत, ता चम्प्रा या राय से अपन साथ कुछ सामान ल आत। भरमौर गाव बहुत बडा नही है। सभी गद्दी लाग हैं जिनम ब्राह्मण, क्षत्री और ओहार तीना शामिल हैं। ब्राह्मण भारद्वाज गात्रवाले हैं। जान पटता है संगोत्र व्याह इनक यहा पहले स चला जाया है। गुड खाना बेहरा माहरा दिखलाई पडता है। खाना का स्वच्छता जीवन भी यहा देखन म आता है। क्या न हा जबकि अब भी यह लाग मपपाल हान क कारण जय धुमत्तु जीवन व्यनात करले हैं। गद्दी अपन भेडा का लेफर बुक्याला (१२०० फुट से ऊपर वाले पर्वतपृष्ठा) को दूढने जम्मू स कुमाऊँ तक का चक्कर लगाते हैं और आज मे नही, बल्कि सैकडा बप स। गर्मी-बरसान के दिना म जब उनके घर आयाद हान हैं, तब भी घर के आधे लाग भेडा के साथ रहत हैं। भेडा के ऊन को बचना उनकी जीविका का प्रधान साधन रहा है। जब से बकरिया का दाम बढ गया है तब म उन्होंने उनकी ओर ज्यादा ध्यान दिया। उर लगता है, कही बकरिया भेडा को खा न जाए। लाखा भेडा को पालने वाल यह गद्दी उनकी नम्ल सुधारन मे बडे साधक हा सकत हैं। उनकी तरफ मति ध्यान नही दिया गया ता आर्थिक लाभ और मधप उह मपपाल से अजपाल बना ल्या।

भरमौर उपत्यका इस वक्त अपने सौंदर्य का पूरा प्रकट नही कर रही थी क्योंकि अभी हिमकाल का अंत था, और बसंत नही आया था। जाहा के पहले के बाय मेहूँ के खेत मुरखा रहे थे। लाग बाहि बाहि कर रहे थे। दस समय कुठ बरस जाना चाहिए। सौभाग्य से उसी रात बहा कुछ वर्षा हा गई जिसमे किसाना की जान म जान आई। हम यहा जा कुठ करना था वह १ मई का खतम हो गया। २ मई को आममान म बादल घिर हुए थे इसलिए फाटा लेन का कोई काम नहीं हा सकता था। गाँव ता कल ही घूम आए थे और बहा के बडा मे कुछ बाने भी जमा कर ली थीं। गद्दी ल्यागा का विदवास है कि गकर हमार हैं और हमारी तरह वह भा गद्दी हैं। एक आर वह हिमाच्छादित गिरार भी दिखलाई पडता है, जिसे मणि-

महेश कहते हैं और जहाँ अपनी गदियानी के साथ शकर बराबर रहते हैं। लाग सावन के महीने में वहाँ मन्त्र के लिए जाते हैं। यहाँ के शकर बकर की बलि लेते हैं जबकि मदानी शकर जबदस्ती घामाहारी बना लिए गए हैं। शकर पावती के बहुत से गीत गद्दी लागा के पास हैं। सम्भता और शिक्षा से दूर रहने के कारण मानवतत्वीय अनुसंधान के लिए उनका पास बहुत सामग्री है। नाच-गाने का उन्हें बहुत शौक है। पुराने युग की तरह कपड़े-शुल्क बड़ी कड़ाई से बसूल किया जाता है। जो अपने भावी समुद्र का पसा नहीं दे सके वह बचपन ही से कई वर्षों के लिए समुद्र के चाकर बन जाते हैं। निर्दिष्ट समय पर लडकी से व्याह कर वह अपने घर जाते हैं।

पुन चम्बा—२ मई का रविवार का दिन था। अपने कृपालु मजद्वाना को जनक धर्मवाद देते हम ५ बजे ही वहाँ से चल पड़े। मेहर में पहुँच कर शरणार्थी भाई के यहाँ साय लाने भोजन को खान के लिए ठहर गए। यहाँ तक घोड़े पर आए थे उत्तराखण्ड में उनकी कोई जरूरत नहीं थी। हम पौन बजे चले और सवा ४ बजे रात्र पहुँच गए। डर था चम्बा जाने वाली बस खली न जाय और हम रात को वही न रुक जाना पड़े। वम हमारे आन के बाद आई। इस भूभाग में पशुपालन जीवन प्रधान था जातियाँ हैं—गद्दी भेषपाल है और गिवजी के अनाथ भक्त और गूजर भैसपाल और सभी मुसलमान हैं। हाल में गूजर अब कुछ कुछ बसने लग हैं, नहीं तो गर्मी बरसात में ऊपर के पहाड़ी चरागाहों में वह अपनी भैंसे ल जाते और जाड़ा में नीचे के जंगलों में रहते। गढ़वाल कुल्लू सभी जगत् य फल हुए हैं। हिंदू मुस्लिम बगड़े में रह भी कुछ नुससाने पहुँचा लेकिन ये पाकिस्तान भागने के लिए तैयार नहीं हुए। इनका पास अच्छा भैंसे हाती हैं। बहुत विंगाल भैंसे पायद रख भी न सके, क्योंकि उन्हें दुग्ध पहाड़ों में जाना पड़ता है।

६ बजे चलकर ७ बजे हम चम्बा पहुँच गए। अब की नगी टाकुरमन साहब के बगल पर टहर। रात को एक बँगले के दरवाजे से गुजर रहे थे ता पहरदार न बहा—इधर से रास्ता बंद है। ज्यूडिगियल कमिश्नर साहब के लिए लोग सबक से न जान पाएँ यह विचित्र लावनती गाय है।

अब तब चम्बा के साहित्य प्रेमिया का भर आन का पूरी तौर में पता लग गया था इसलिए घटा उनकी गाँधी में बोलने। नाम के वक्त मनातन

घम लाट्घेरी में बोलना पडा। इसकी स्थापना १६३६ ई० में हुई थी। अल्परम्भ से भी समय पाकर काम बढा हा जाता है यदि कायकर्ताओं में लगन हा। इसका उदाहरण यह पुस्तकालय था। वम तीन हजार से ऊपर पुस्तकें हैं। १५वीं १६वीं सदों में कुछ हस्तलिखित ग्रंथ हैं, जिमें 'तत्व-चिन्तामणि' के 'व्युत्पत्तिवाद' समाहूत हाता है कि इस पहाड में भी उच्च शिक्षा का लाना का गौक रहा। एक घर में छत्तासत्र पर एक ताल-पायी आई। ताल पोथों का मतलब है मुस्लिम-बालों के पढ़ने की पुस्तक। चम्बा में और भी पोथियाँ मिल सकती हैं। मुमनजी कवि हैं। लाक-कविताएँ भी करते हैं और पुरानी पुस्तकों के संग्रह करने का गौक रगते हैं। आज का चम्बियाली भाषा दखकर भ्रम हा सकता था कि वह अब लग भाषावर्ग से अलग है, परंतु उदू अगारा में चम्बियाली पुस्तक के आधी गताला पढ़ने छपी हबीमन पादरी की चम्बियाली पुस्तक का देपन से मालूम हुआ कि यहा पढ़ने, का, क गिए, रा, और गा, के लिए ला, इस्तमाल हाता था। जसा कि चम्बा से नपाल तक अब भी हाता है। पजाबों में का के लिए दा और गा के लिए गा रहता है। वह हिन्दी की सहाय्य है, इसे कहने की आवश्यकता नहीं। चम्बा के निचले भन्जियान इलाके में भी दा-गा का प्रयोग है और कागन में भी।

नगीनी किसानों में घुल मिल जाना जानते हैं। उनको कसे उठाया जाय, बराबर इस पर ध्यान रगते हैं। इसीलिए वह खूब जनप्रिय हैं। घूमन घामन में उह आलम नहीं है इसलिए मुश्किल रास्ता वाले गावों में पहुँच जाते हैं। उनसे मुझे अपन काम में पूरा सहायता मिली, और श्री-निवामजी ता हर तरह से मदद दन के लिए तयार ही थे।

अमतसर—४ मई की ५ बजे ही अड्डे पर पहुँचे। वष ६ बजे रवाना हुई। साडे ८ बजे बनीखेत आया। यहा स पठानकाट की बस पकडनी थी। बस दिक्कत हाती लेकिन नगा साहब ने टेलीफोन कर लिया था, और उनके मिलने में दिक्कत नहीं हुई। बनीखेत से पढ़ने बाथडी का अच्छा खासा बाजार मिला था। वम में एक दुल्हन भी विदा होकर जा रही थी। बनीखे की लडका थी, हाथ-पैर बहुत भँभालकर बैठता था। लेकिन बेचारी के करती करती बसुप हो गई। बनीखेत में आगे एक जगह हम थोड़ी देर

ठहरना पड़ा। वहाँ दोना ओर मे मोटरें आकर रूकती है, क्योंकि एक समय एक ही आर का रास्ता खुलता है। पौन बज रहा था जब हम पठानकोट के स्टेशन पर पहुँचे। 'मई का आन पहुँचा है महीना। बहा छोटी स एडी तक पसीना।' इसे कहन की आवश्यकता नहीं। जम ही पता लगा कि अमृतसर जानवाली जनता ट्रेन तैयार है हम तुरंत कूट पडे। ट्रेन में पर रखने रखते गाडी चल पडी। हरक बम्पाटमेन्ट म दा दा पखे व जिनके कारण जान बधी। रेल म कुछ ता सुधार हुआ है। रास्ते म गुरदासपुर मिला और बटाला भी। गर्मी मे खाने का मन नहीं करता था। यदि इच्छा होती थी, ता ठण्डे पानी की। अमृतसर ६७ मील ही था इसलिए ४ बजे हम वहाँ पहुँच गये। रास्ते म पजाब के गाव दिखाई पडे—वे गाव जहा हजार बप से हिंदू मुसलमान एक साथ रहते आय थे। पहले भी कभी-कभी दाना जगड जाते थे। लेकिन अंग्रेजा ने उह एक दूसरे के खून का प्यासा बना दिया। मस्जिदें खडी थी। कितने ही के मीनार टूट रहे थे। पजाब भसा और गाया की अच्छी नस्ल के लिए प्रसिद्ध है। अब भी वहाँ सबसे अधिक दूध घी खाया जाता है। इस वक्त गर्मी म गारी हरियाली चुलस गई थी। बडे-बडे बसो का छाडकर हरे पत्ते दिखाई नहीं पडते थे। ता भी दुपहरिया की घूप म जहा-तहाँ खेनो म डार चर रहे थे। अपना बचपन याद आ रहा था उस समय ऐसी ही घूप म नगे पैर में रानी की सराय के स्कूल म पढन जाया करता था। आज क्या बसा कर सकता था ?

अमृतसर स्टेशन पर कुछ बुरकावाली स्त्रिया बो दखनर सचमुच आश्चय हुआ। पजाब म अब मुसलमान का देखना मपना हा गया है। वही बात पश्चिमी पजाब म हिंदुजा क बारे म भी है। दा रिकगा पर सामान रखनर हम दोना पहले पजाब आयुर्वेत्तिक फार्मसी गय क्योंकि बुर्यावाली गली म भया के घर का पता लगान म मुश्किल होती। भया दिलनी गय हुए थे लेकिन भाभीजी घर पर ही थी। चिट्ठी में पहले ही आने क लिए लिख चुका था। अब सारा समय पखे के नीचे गुजारना था। सूर्यास्त के बाद छत का पानी से घाया गया। थोडी देर कुछ गर्मी रही फिर हवा चला। रात बडी सुहावनी थी। मुने बाहर जाने की हिम्मत नहीं थी, लेकिन उस दिन भी जनकलालजी अमृतसर का चक्कर लगा आये।

५ मई को १० बजे कुछ बूदा-बाढ़ी हुई। दिन भर जमीन और आसमान आग उमलत रह। आज भी हमने वही बाहर जाने का नाम नहीं लिया। दुहरी ता सबसे निचली कोठरी में पसे के सहार बितायो। जनकलालजी गहर देखने फिरे। चाय पीन का भी मन नहीं करता था। साढे १० बजे भैया भी दिल्ली से आ गए, और उनके साथ भाभीजी की बहन कमला भी। एफ० एम०-बी० की परीक्षा पिछल साल दी थी। पास हो गई हाती तो डाक्टर बनने का रास्ता खुल जाता। मिलने मिलाने के लिए ही हम यहाँ आय थ, नहीं तो ठडी जगहा के वासी का इस भटठी में आना कब पसंद हो सकता था। ६ तारीख को भी किसी तरह बिताया। भया और भाभीजी से कुछ बात करत रहे कुछ जनकलालजी से। तहखाने में दिन भर पला चलता रहा। आज जल्दी करते-करत ६ बज कर २५ मिनट पर निकल पाय। र्व रेल की ट्रेन के लिए बहुत चौकस रहता हूँ, और एक घटा पहले चलना पसंद करता हूँ। यहाँ रास्त में सचमुच इतनी भीड लग गई थी कि रिक्शा का आगे जाना मुश्किल हो गया। रेलवे पुल पर पहुँचे तो पता लगा दोना कैमरे छाड आये। यदि जनकलालजी लेने जाते, तो फिर ट्रेन नहीं मिल सकती। साधा इस वकन उनका कोई विशेष काम भी नहीं है। भाई साहब अपने साथ लेते आये। हवडा मेल में देहरादून का टिकट लगा था, उन्ही के तीसरे दर्जे में बठ गये। अम्बाला तक सान की छूट रही, फिर हरद्वार तक भेडियाघसान। अमृतसर में एक लम्बे तिलकधारी आचारी ढाँच में चढे और श्रीमन् नारायण नारायण" का इतना जार का घोष किया कि सारा स्टेगन गूज उठा। मालूम होता है बूटे हाकर साधु हुए थे, इसलिए तौर तरीका मालूम नहीं था।

७ मई का सबर ७ बजे अब भी बूदा बाढ़ी हो रही थी। रात का भी वही वही वर्षा हुई थी। हरद्वार पहुँचने पर अधेरा हट चुका था। सवा ७ बजे हम देहरादून पहुँच गये। गुकलजी के घर पर गुकलाइनजी मलेरिया में पडी हुई थी। वृष्णकांत और कमल आजकल यही थे। यद्यपि गर्मी यहा भी थी, लेकिन जिस भट्टी से अभा अभी हम निकलकर आये थे, उससे इसकी क्या तुलना? १ बजे हम खलगा दखन गये। यही खलगा जहाँ नेपाली वीर बलभद्र ने अपनी वीरता द्वारा अपने गुरु अग्नेजा का चकित कर दिया

या। गुक्करी के घर से यह स्थान बहुत दूर नहीं है। प्रायः सग मूखी रहनवाली रिस्पना के बाएँ किनार पर कुछ ऊँची-नी जगह है जिसे टोला नहीं कहा जा सकता। यहीं कुछ मोचावदो सी करके बलमद्र के नन्व में नेपाली मैनिक तैयार थ। जेनरल गिलस्पी का प्राण देना पटा और अग्नेज सेना पीछे हटाइ गई। अन्त म खलगा पर अग्नेज अधिकार कर पाय लकिन लाहे क चन चवाकर। यहाँ पर उहाने एक स्मारक खटा किया जिसम गिलम्पी की विरदावली थी और बलमद्र का भी। गिलम्पीकी विरदावली को किसी न गायब कर दिया है।

घाने पर यात्रा क फिल्म अधिकतर अच्छे आये। श्री सत्यद्र जी अपने साथ बट्टीपुर ले गय। उनक ८३ ८४ वष क बूढ़े ताऊ अब भी स्वस्थ हैं, और अपन हाथ से वाग म कुठ काम भी कर लन हैं। दा पत्र पपीन दिय। बट्टापुर अपन वासमती क लिए पहले ही से प्रसिद्ध है। दहरादून गहर म काइ वासमती नहीं हाती। मबस अरुठा वासमती पदा करनवाल गाँवा म बट्टापुर भी है। आजकल ऊव भी यहा की प्रधान आजीविका हा गई है। ११ वष बाद हम बट्टापुर आए थे। कुठ घर बड़े मालम हा रह थे।

८ मई का पीन १० बज की बस पनटा। किंग म उतर कर १ बज हम दाना हन किंग" पहुच गए।

सैलानियों का मौसिम

मई का प्रथम सप्ताह आ गया, मसूरी के लिए सैलानिया का मौसम शुरू हो गया था। घर पर डा० वाचस्पति और श्री इन्दुप्रभा भी मौजूद थे। मेरे कनिष्ठ भाई श्रीनाथ पाण्डे भी आवे हुए थे, और धूपनाथ बाबू को तो मैं छाड़ ही गया था। एक महीने की टाक में पहले भुगतना था। उससे भुगतना मुश्किल नहीं था लेकिन आर्थिक कठिनाइयाँ परेशानी पैदा कर रही थी। वह तो तभी से शुरू हो गई थी, जब से मैं मसूरी आया था। वैसे जिन तरह समय गुजर रहा था उससे परेशाना करने की जरूरत नहीं थी। लेकिन, जब तक वह कुछ महीने की सर्ची न हो मन कम गान्त रह सकता है? अनिश्चिन्ता सबसे ज्यादा घुमती है। श्रीनाथ १० तारीख का गये। बहुत सकोची हैं। लिल्ली म वषों से रह रह हैं, काम है वहीं मिठाई बनाकर बगल-बगल पहुँचाना। मैंने एक बार २१०० रुपये दिए भी, पर यदि ऐम व्यवहारकुशल हान तो इतन माला में लिल्ली म रत्कर अपना कोई स्थायी प्रबन्ध न कर लिये हाने? अब मैं उनकी मदद करने की स्थिति में भी नहीं था।

यदि मई के मध्य तक दूकानदारा की, विगेषकर शौकीनों का चीजें बेचनवाला का, बिफ्री अच्छी न हो तो यही समझना जाना है कि उनके लिए मौजुद खराब है। बनारस होसवाले इमने लिए थमापीटर थे। अच्छी से अच्छी साडियाँ और दूसरे कीमती कपडा के वह दूकानदार थे। कह रह थे चीजें बिक नहीं रही हैं। बहुत दिना बाद तडक भडक का बर्दों पहन

रिक्का सीचनेवाला के साथ इन्दौर के पुराने महाराजा महारानी को घूमने देख कितने ही लोग यह सोच कर सताप कर रहे थे कि अब मसूरी का भाग्य जायेगा राजा रानी ने फिर कृपादृष्टि की है।

मसूरी में भी कभी कभी तेज तूफान आता है, और उसके साथ वर्षा भी। ११ मई का ऐसी आधी आई कि मालूम होता था छत उड़ जायगी। टिन की छता का उड़ जाना कोई असम्भव बात नहीं है। वाचस्पति जी बड़े कमठ तरण हैं। शूद्र यद्यपि बचपन की तरह दुबली पतला नहीं है किन्तु उनका स्वास्थ्य बहुत सराब रहता है। डा० वाचस्पति परमाणु गभ पिजिकम के पण्डित हैं। शरीर और दिमाग दाना ही उनका चलता रहता है। एस आदमी यदि अबसर पाएँ तो वह भारत का मुख उज्ज्वल कर सकते हैं। इस समय (माच १९५६ में) वह कनाडा में अनुसंधान करने गये हैं।

१३ मई को श्री जनकलाल जी गये। उनकी वजह से हमारी हिमाचल-यात्रा बड़ी अच्छी हुई थी। उनमें जरूरत से ज्यादा भोलापन है कुछ अब्भावहारिक भी हैं लेकिन स्वभाव बहुत मीठा है। ऐतिहासिक और पुरानात्विक वस्तुओं के ज्ञान के साथ साथ भारी जिनासा भी रखते हैं। पश्चिमी नेपाल में वह इससे सम्बन्ध में अपनी यात्रा कर चुके हैं। वहाँ के बारे में बहुत कम अनुसंधान हुआ है। एस मित्र में बार-बार मिलन की इच्छा हाती है।

हरि को आप पाँचवा महीना हो रहा था। स्कूल में उसका मन नहीं लगता था। राज यहाँ से जाता। हम ममयन्त थ पढ़ने जा रहा है। लेकिन वह स्कूल न जाकर और जगत् अपना समय बिताकर लौट आता। गिका-यत करता था लड़के चिन्तन ही हैं एक मास्टर भी नेपाली दाई कहकर व्यग्र करत कहते हैं कि तुम तीन वर्ष में भी मद्रिक पास नहीं हो सकते। यदि ऐसी बात थी तो यह स्कूल के लिए भी बुरी बात थी। लेकिन, बात यह नहीं थी। उसका मन ही यहाँ नहीं लगता था। एक दिन चलने रास्ते प्रिंसिपल मन्हात्रा मिल गए। पूछन पर मालूम हुआ हरि तो दो महीने से स्कूल नहीं आया। अप्रेजी क्लास को मैं बराबर पढाता हूँ मैं उससे नहीं दगा। २० मई को आखिर कलाई छुल गई, जबकि वह प्रिंसि-

पल के नाम से स्वयं चिट्ठी लिखकर ले जाया। उसने अपना इतना समय खराब किया। यदि पहले ही कहा होता तो उसे कलिम्पांग भेज देते। शर्मिला लडका था यहाँ उसका मन नहीं लगता था। जब कलद खुल गई, तो वह डर के मारे यहाँ से अतर्बान हा गया। कमला का तरह तरह की चिंता होने लगी, लेकिन शाम को किदवाई व बगले के नौकरा की कोठरी से आ गया। पीछे पता लगा उनका स्कूल इसी काठरी में कई महीना से लग रहा था।

ज्या २० मई का नौ महाने की हा गई थी। चलने में दाना हाथा को इस्तमाल कर रही थी, कुछ शानुकरण भी करती थी। हम समझत थे कि दातो के निकलने में कठिनाई होगी, लेकिन देखा वह अपने आप निकल जाए हैं। स्वास्थ्य भी अब उसका ठीक था।

खच की दिक्कत से अब हान सवाच करने की आवश्यकता थी। सबसे अफसास की बात हुई कि हरि और धूपनाथजी व साथ मगल भी यहाँ से चल गए। हमने यहाँ और देहरादून में कोशिश की कि टाइप करने का काम मिल जाए। टाइप में वह बहुत दक्ष थे, और गति भी तेज थी। हमारी बहुत सी पुस्तका का डिक्टेगन पर उहाँ टाइप किया था। ढाई तीन घट में एक फाम टाइप कर सकत थे। लेकिन सभी जगह मटिक पास की आवश्यकता थी। भला हिंदी टाइपिस्ट के लिए इस योग्यता की क्या आवश्यकता? जिस योग्यता की आवश्यकता है, उसे अपने सामने देखा जा सकता है। उहाँ मटिक की परीक्षा दी थी जिसका परिणाम पीछे निकला। सभी विषया में पास हा गए थे, सिर्फ गणित में नौ अका की कमी थी फेल हा गए। परीक्षा लागा की जिदगी खराब करने के लिए है आम बढ़ाने का साधन नहीं है, यह इससे साफ है।

मैलानिया के मौसम में कितन ही पुराने मित्रा से मुलाकात हाती है और कितन ही नए मित्र बनते हैं। श्री रद्रनारायण शुक्ल २३ मई का आए। वह अग्नेज प्रकाशक मेरुमिलन कम्पनी व उत्तर प्रदेश के बारवार व एजेंट हैं। यह ता मुझे मालूम था कि सवरिया का तरह कनीजिया में भी साकृत्य गायवाले हैं। यह भी मालूम था कि कनीजिया परम्परा के अनुसार वह सवरिया से ही आए हैं। लेकिन, सवरिया साकृत्य पाडे हाते है और कनी

जिए गुल। खैर सगान बधुत्व तो हमारा थाही। उसी दिन मडलेश्वर स्वामी सबदानदजा भी आए और महात्माआ क साथ आए। उनक साथ साधुओ के भविष्य और सस्कृत के सवधन के वार म बातें होती रही। मैंन अपन विचारा का रक्ते हुए कहा, साधुआ का सख्या कम हागो, यह तो निश्चय है पर उनका उच्छेत् नही हो सकता। सस्कृत का भाग्य भी अब उनके भाग्य स बंधा हुआ है। आजीवन सस्कृत क विद्यार्थी रहनवाले अब उही म मे मिलेगे।

अगले दिन स्वामी सत्यस्वरूपना आए। तत्वचित्तामणि की नया कहा तब गइ इसरी जिनासा हानी ही थी। इसम लगे हुए थ और जउ उत्तन निगना नही मालूम हाते थे। उसी दिन बनीपुरी भी आघी पानी की तरह आए। मसूरी म चार घटा क लिए आए थ, जिसम एक घटा यहाँ भी दिया। यह मुनकर बडी प्रसन्नता हुइ कि बनीपुरी ग्रंथमाला का स्वागत हुआ है। साहित्यिक यदि अपनी जायु क अन्तिम दिना म आधिक तौर स निश्चिन्त हा तो हमार दग क लिए यह एक बडी बात है। बनीपुरी जउ सानेसाती सनीचर के फेर से बाहर जा चुके थे। आग क स्वरूपा क वार म बतला रह थ। गाँव म भहल बनवा लिया है यह मुन जच्छा नगी लगा क्याकि गाव म पक्का मतान जहरत पटन पर एउ पसा भी नही दता। यह निश्चिन्त ही है कि बनीपुर स जितना स्नह रामबृग का है उतना उनक छटक का नही हागा। पाना तो गायद मुश्किल ही स कभी जर्न हाँकन जाएगा। निजी तौर स प्रयत्न बग्के वाई गाँवा का सस्कृति और शिक्षा का बद्र नही बना सकता। यह ता दग क उद्यागाररण और श्रुपि क कत्रीकरण पर निभर है जा भारत क लिए अभी दूर की बात मालूम होती है।

मौसम क समय मध्य त्रित्त सलानी मसूरी म वाफा इगटठा हात है इसलिए सभा सम्मन् भी हा जाया करता है। अब तो श्री मानवेद्र राय के अनुयायिया—रटिकल ह्यूमनिस्टा—का ग्रीष्म त्रिजाल्य चला जा यहाँ स नजदीक ही दबदार काठी म था। वहाँ जाए कुठ साथी हमार पास ना आए। सबस बडा सम्मन् ५७ जून का दहरादून म हुआ। कद्राय साहित्य सम्मलन की गाणी ता स्वार्थी की टक्कर क कारण दलदल म पडी

हुई थी। प्रांतीय सम्मेलन को जगाए रखना इस वक्त आवश्यक समझा गया था। उद्घाटन भाषण के लिए मंत्री डा० उष्यनारायण तिवारा ने हम लिखा। उधर स्वागतकारिणी न डा० काटजू से उद्घाटन कराना चाहा। स्वागतकारिणी को स्वागत के लिए पता की जरूरत थी जिसमें डा० काटजू व आनम सुभीता था। धैलीसाह ऐरे गर नत्थू धरे व लिए अपनी दला थोडे ही राल सनता है। मुच यदि पता लग गया हाता तो उद्घाटन करन के फले स वच जाता। मुझ उसकी बाइ इच्छा नहीं थी। पर जान पडा दाना हा उद्घाटक वहाँ पहुँचगे। ऐन मौक पर डा० काटजू नहीं आए और मुग वह काम करना पडा। उनक लिए जा अभिनदन पत्र तयार किया गया था उस पर चिप्पी लगाकर मुच द दिया गया। सर कार की हिंदी सम्बन्धी वेरणी की में बडी आलाचना करता इसलिए हमारे हिंदी प्रमी मित्र चाहते थ कि मैं ही उद्घाटन करूँ।

पूर्वी पाकिस्तान (पूर्वी बंगाल) में मुस्लिम लीग की घोर पराजय हुई थी। हकन मन्निमण्डल बनाया लेकिन वहा ता गवनर जनरल की ताना शाही थी। जब नीचे स सहायता नहीं मिली ता ऊपर स हुकुम निजला और मन्निमण्डल को ताट दिया गया। लेकिन बंगाली मुसलमाना को— जो कि पाकिस्तान में भी बहुमत रखते हैं—डडे व जार पर थोडे ही दवाया जा सकता है? अपने धूक को फिर पाकिस्तान सरकार को चाटना पडा लेकिन काफी बाद जबकि नवाबजादा मुहम्मद अली को प्रधान मंत्री पद हटाया गया। पाकिस्तान व सविधान में हक का सहयोग मुस्लिम लीग व लिए नहीं बलिन उनक लिए मँहगा पडा। लेकिन इसका दोष हक का ही नहीं दिया जा सकता। उनक प्रतिद्वन्दी सुन्रावर्णी ने पहले मुस्लिम लीग से सहयोग करना गुरू किया जिसमे हक और उनका दल जगल में भटकता फिरे। बुडडे न भी एसा घाविया पाट मारा कि सुहरावर्दी न तीन व रह न तरह व। इसका फल मुस्लिम लाग विषापकर पश्चिमी पाकिस्तान व प्रमुआ का बहुत अच्छा हुआ। हक का दल अपन निवाचन में जिन बातों का वादा कर चुना था उससे मुन्ग गया। पाकिस्तान व सविधान में न सयुक्त निर्वाचनका माना गया और न गणराज्यक साथ इस्लामिक विगण को ही हटाया गया। अपने भविष्य का अनिश्चित तथा वहा की कठि-

नाइया का अधिक दखकर भारी सख्या में पूर्वी बंगाल से हिंदू भारत चले आ रहे हैं। यदि सारे हिंदू वहां से निकल जाए, तो फिर पूर्वी पाकिस्तान का बहुरमत नहीं रह जाएगा।

३१ मई का घूमते समय रास्ते में सर सीताराम मिले। हर साल ही उनके दशन हात हैं। इस साल पिछले साल के बहुत कम परिचित चहर दिखाई पड़े रहे थे। उनका अभाव सटकता था। नगरपालिकावाले बतला रहे थे कि इस साल लग बन्दूत आए हैं। पर दूकानदार शिकायत कर रहे थे कि प्रिन्सी नहीं हाती।

२ जून को चिनी (बनौर) का हडमास्टर श्री समुवालजी आए। बनौर हिमालय के उन कोना में है जिसके साथ भरा विनायक है। मिडल स्कूल अब हाई स्कूल हो गया है यह सुनकर प्रसन्नता हुई। समुवालजी जैसा कमठ और योग्य तरण बहा गया यह जानकर भी खुशी हुई पर वह वहां से अपनी बत्ती बरवाना चाहते थे। गढ़वाल के हान से पहाड़ उनके लिए अरुचिकर नहीं हो सकता था, पर कह रहे थे कि खान पीन की चाजा का वही दिवस रहती है। यदि डाक की व्यवस्था हाती तो बल्बत्ता-बम्बई से चीनी का जितना महसूल है उतना ही रामपुर से लगता है इस प्रकार डाक के द्वारा खान की भी बहुत-सी चीजें मगाई जा सकती। लेकिन जान पड़ता है उसकी भी अव्यवस्था थी। अबक साल प्रमनाथ और बीणा राय दा सिनेमा तारक ममूरी को सीमाग्याली बनाने आए। जिधर निकलते उधर लोगो की आँखें विच जाती। मैं एक दिन जा रहा था किसी ने उनके बारे में बतलाया। साल में एकाध ही बार मैं कभी कोई फिल्म दखता हूँ इसलिए सिनेमा जगन के नक्षत्रा से परिचित न हाना भर लिए स्वाभाविक था।

देहरादून—५ जून का सम्मेलन में सम्मिलित हान के लिए देहरादून गया। दगा, बन्दूत में मलानी नीचे भाग जा रहे हैं। बल रात बपा जा हा गई थी। उन्होंने समया अत्र अपन यहाँ नी बपा हा गई हागा, इसलिए गर्मी का डर नहीं है। वर्षा यद्यपि धाने का था और जब क साल असला बपा प्राय सार जून भर नहा हुई और ८ जुलाई का हा उसका मौसम

आरम्भ हुआ। पर इस वक्त ता लोमा को भडकाकर इन छोटा न मसूरी का बरवाद कर दिया।

गुलजी व यहा मयाह भोजन व समय पहुँच गए। ५ बजे सम्मेलन व समय बहा गए। अब भी धूप थी और वाग व वशा नी छाया काफी नहीं थी। ता भी रात की वर्षा से तापमान कुछ नीचे जरूर रहा। सम्मेलन का उद्घाटन भाषण मैं किया। समापति हिंदी के प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री वृंदावनलाल वर्मा थ। उनका भाषण हुआ टडनजी भी बोले। लागा की उपस्थिति काफी थी यद्यपि गहर की जनसख्या के अनुष्प नहीं थी। एसा हाने का कारण भी है—गिनित मध्यवित्त लागा म काफी सख्या शरणा दिया की है जो हिंदी स परिचित नहीं हैं। उनकी जगली पीढी हिन्दी पढ रही है लेकिन उसको समाज म स्थान पाने म अभी दस पन्द्रह साल की दर हागी। गिहित होने पर भी सांस्कृतिक तल ऊँचा नहा है इसलिए वह उत्साह से ऐसे समाराहा म भाग नहीं ले सकते। उद्घाटन न भी करना हाता तो भी मैं यहाँ आता जरूर क्योंकि यहा सारे प्रात स आए हुए कितन ही साहित्यकारा से मुलाकात हाती। डा० उदयनारायण वाचस्पति पाठक गान्तिप्रिय द्विवेदी गुरुभक्तसिंह 'भक्त कमलेश श्री कमलाश्वी चौधरी आदि आदि के दशन हुए। सम्मेलनवाला ने कला और साहित्य-प्रदशनी का भी आयाजन किया था। कोशिश की थी कि देहरादून जित व सभी साहित्यकारा की अधिक स अधिन वृत्तियाँ उसम रखी जाएँ। मरी भी उपलभ्य पुस्तक वहाँ मौजूद थी। देहरादून के चिनकार श्री सक्सना न चित्रो की प्रग्शनी का बहुत अच्छा प्रबन्ध किया था।

६ जून का टाउन हाल म श्री विद्वम्भरनाथ प्रनी की अध्यक्षता मे कौरवी भाषा सम्मेलन हुआ। हिंदी की मूल वालो के इस नाम का प्रचार मैं किया था। कोइ आविष्कार करन के खयाल स नहीं बल्कि मूल भाषा को कोई एक नाम देना जरूरी था। मैंने भी उसक लिए कई प्रयोग किय। कभी "जाति हिंदी" कहा कभी 'मेरठी' और कभी बुठ। अन्त म उसका सचम उपयुक्त नाम कौरवी ही मालूम हुआ क्योंकि यह भाषा कुर और कुर जांगल (हरियाना) म बाला जाती है। हमारे सांस्कृतिक और साहित्यिक इतिहास म कुर का स्थान बहुत ऊँचा है। मैं पिछल पच्चीस वर्षों स बहुत

व्यग्र था कि कौरवी लोन साहित्य का बड़ा सग्रह किया जाए। वित्त ही सालो तक यह अरुण्य रादन रहा। ललितन अब तरण कुरुपुत्र उधर काफी ध्यान दे रहे हैं, यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई।

७ जून को साहित्य गोष्ठी हुई। साहित्य गोष्ठी की तरफ सम्मेलना में अधिक ध्यान देने का जश्न है। वह अधिवेशन द्वारा जनसाधारण के पास तक हिन्दी का संदेश जरूर पहुँचता है और यह उपेक्षा की चीज नहीं है। सम्मेलन द्वारा सरकार को भी बतलाया जा सकता है कि तुम अधिक दिना तक हिन्दी की उपेक्षा नहीं कर सकते। लेकिन, हिन्दी साहित्य निर्माता तो साहित्यकार हैं, वही उसके माथे को ऊँचा कर सकते हैं। जब किसी सम्मेलन के कारण उन्हें झुंझा होने का मौका मिलता है तो उनके समागम से वह परस्पर बहुत लाभ उठा सकते हैं। गाष्ठी में डा० देवराज शांतिप्रियजी और कमलेशजी भी बोले। कुछ तरुणाएँ अपनी कहानी कविता और एकांकी सुनाएँ। मध्याह्न का भोजन वाप्रेम नता श्री लक्ष्मणदेव के यहाँ हुआ। सभ टटनजी तिवारीजी और मैं भी शामिल हुए। इसने पहल दिन का मध्याह्न भोजन स्वागतकारिणी ने बड़े भव्य रूप में किया था। देहरादून की महिलाओं ने सारा काम अपने हाथ में लिया था। जान पड़ता है दूसरा की अपेक्षा कुरु पुत्रियाँ ज्यादा दक्ष हैं। वही देहरादून के बड़े भूमिपति सठ रामविशार की पत्नी भी उस लक्ष्मी के साथ आई थी जिसने बार में कहा जाता है कि उसने अपने पूज्यम की माता का पहचान लिया था और रोठी के घर पर जाकर बहुत सी चीजों को भी बतलाया था। जिस पुत्री का अवतार उस माना जान लगा था उसका मैं भी १९४३ में देता था। हिन्दू युनिवर्सिटी में गायत्री एम० ए० में पढ़ रही थी। क्या-क्या जाताक्षाएँ और उममें उसकी थी? देहरादून का उसके रूप में महिलाओं की अच्छी सेविका मिलती, पर बचारी तरुणों में ही मर गई। उसका दुःख माता पिता का हाना ही चाहिए था। फिर यदि अवतार की कहानी मिल जाए तो यह डूबते का तिनक का सहारा क्या न हो? भारतवर्ष में एने प्रत्यक्ष पुनर्जन्म की क्याएँ असंख्य हैं बहुत निरलक्ष्य रहती हैं। इनमें वित्तना ही में तो केवल धारणा बड़ी हानती है, और यदि किसी में कुछ सत्यता का लक्षण है तो यही कहा जा सकता है कि विचारों का दानादान सभी-सभी बिना

भापा व भी हो जाता है। बडा के विचार छाटो आयु के बच्चा के मन म चउ जाएँ ता काई आश्चय नही।

७ जून ही का डा० तिवारी श्री वाचस्पति पाठक श्री दवनारायण द्विवेदी तथा बधुद्वय श्री जयगापाल तिवगापाल मित्र भी मसूरी आए। दा लिना क लिए हन किलफ न अपन लिए अहामाय समझा। हमन भी सिष्टागमन अनघाय रता और मसूरी दिखलान म समय गिनाया। वाचस्पतिजा पाठक बड विनोद जीव हैं। न जाने कितन घुटपुल उन्हें यात हैं। कलम कमजार नहीं है लेकिन दूसरे कामा के कारण अब उहाने उसे विश्राम द रता है। एक कला प्रेमी की बात कह रह थ। प० धीनारायण चतुर्वेदी क पास कुछ पुरान मुद्र चित्र थ। जब उह पता लगा तो वह दयन के लिए आठ अपने माय ल गए। देखकर बडे विश्वास क साथ चतुर्वेदीजी क पास लौटान गए। गिनती तो पूरी थी लेकिन चतुर्वेदीजी ने दला कि एउ बदल लिया गया है। कला प्रेमी न भूल न्यीकार की और गीटा दन क लिए बहा स जो निकले ता प्रयाग म भी किमी स्टान पर नही ठे गगा पार चूमो म जा गाडी पकड़ी।

मित्र समागम का यह आनन्द जन ही तन रहा। ६ जून को मव लोग चले गए। हमारे दरारदून म अनुपस्थित रहन के समय गास्त्री बैद्य वाचस्पति श्री इश्वरदत्त वर्मा आए थ। पजाब क हैं लेकिन उनकी इच्छा सबम पिछडे पहानी लागा की सेवा करन की थी इसलिए अपनी पत्नी क माय जीनसार चले गए। बैद्य भी हैं, जीन कानो-लगन भी। वहाँ दूरान और बाजार स दूर एक गाव म उनकी नियुक्ति हुई। एउ ठा वप तक उनक आत्मावात् न सहायता दी। लोगा म घुल मिल गए। उनिन मुगिहित मुमस्कृत आत्मी कितन लिना तक दनवाम मेवन कर सनता है फिर उहनि अपनी बन्नी मैदान म करवा ली।

मौसिम क समय डा० मत्यक्तु क यत्न भी सम्बन्धी और महमान आते लते हैं। अरकी कर्न उनका बनएत वागी बहन अपन लडक और लडकी लते हैं। वह माठ पीनी की अग्रवालिन घामाहारी और यहा भाई का -साय आद। वह माठ पीनी की अग्रवालिन घामाहारी और यहा भाई का र भर माम म आनन्द लन वाला। उनके आगमन क कारण घर म गाताना मुक्किल था। बुआ की यह हालत और भाजी उपा हठी चिचाड रही

थी। जगली पीढिया कैसे पुरानी पीढी के आचार विचार पर पुचारा फेरती हैं, यह उसका उदाहरण था। ऐसी वहिन के सामने घर में गाने कसे बनता लेकिन तरुण कम्युनिस्ट वरेली के श्रीवास्तवजी ठहरे हुए थे उहान आज विशप तीर से मासपाक का कौशल दिखलाया था। श्री शांतिप्रसाद वेद कुमारी, सत्यवैतु परिवार और हम भी श्रीवास्तवजी के भाग में शामिल हुए। बदकुमारी गणित की एम० ए० हैं वीकानेर में लटकिया के स्कूल में पढ़ता है। उनको लोक गीता का भी शौक है। उहान पजाबी और राजस्थानी के कुछ लोक गीत सुनाए। गला अच्छा और गाने के ढंग में भी स्वाभाविकता थी।

नवें महान में पहुँचकर जब जयानता श्री वज्राना भी शुरू कर दिया। “छाम नानी छाम-छाम” कहने पर मजे से ताली बजाती साँसन का भी अनुकरण करने लगी। सात बत्त बहुत दिना तक उमकी आत्त रही कि दाहिन वान पर हाथ रखकर खाए। विस्कुट कहा रहता है, यह भी जानती थी। मनुष्य का बच्चा दुनिया में आकर किस तरह धीरे धीरे अपन भीतर की गतिभया का प्रयाग करने लगता है इस बच्चा को देखने से अच्छी तरह समझा जा सकता है।

१३ जून का इतवार का दिन था। आज कइ महमा आए। आध्र के चियकार तरुण कुमारिल स्वामी अपन कद्र मित्रा के साथ आए। हमारे पडासी डा० राम भी परिवार सहित उपस्थित हुए। उनका छोटा लटका बिज्जू पिछले साल बहुत जस्वस्थ था अब बच्चा हा गया था। मध्याह्न भाजन के पहल हा भयाजी और भाभीजी भी आ गए। सुखरामा भाभाजी का हीरा नौकर मिला था, जो उनकी लात मार सबका धुपचाप बर्नात करने के लिए तयार था और मगान की तरह काम करता था। जब बल से उसका सराबार नहीं था, जो गुसल मालकिन के लिए अच्छा ही था। बड़े तटक उठकर रात के १२ बजे तक वह काम में लगा ही रहता। जिस काम का अभ्यस्त था, उसे अपन मन से करता नये काम का बतलाना पडता। उस दिन सुखरामा ने बड़ी मदद की नहीं तो एक नौकर के मान की वान नहीं था। मसूरी में धूम चहल पहल है, इस देवन का ता हम कम ही मौना मिलता था लेकिन जब उसका छार पर अवस्थित हमार घर में भी

महमान आ जात ताहम मातूम होता नि मसूरी इस वक्त फूली नहीं समा रही है। जाज इटावा के जिला कांग्रेस क भूतपूर्व सभापति ठाकुर माहन भी आए। जमुना क किनार औरैया क पास कुछ ही पानी पहल इनका एक राज्य था। सन् ५७ म अंग्रजा क खिलाफ तलवार उठाई और राज्य छिन गया। यही क वन म जगममनपुर आदि क पाव राजा हुए। राजधानी पहले चम्बल और जमुना क संगम पर अवस्थित थी। उनका यह यही गुराफियन स्कूल म पढ़ते हैं। इसलिए पत्नी बराबर यही रहती है, और जाग बरसान म ठाकुर साहब भी आ जाते हैं।

१५ जून का आगरा म डा० गुप्ता का तार आया, जिमम मातूम हुआ, जमना बो० ए० का परीक्षा म पास हो गई। धीर धीर वह अब अंतिम सीढ़ी पर पहुँच रही हैं। इसका अप्पास ता जस्टर था कि पूरा विषय नहीं दिया पर अब एम० ए० का रास्ता खुला हुआ था।

मसूरी का यह मीजन परिवारा और सम्बन्धिया के मिशन का भी है। आनवाली का इसका भा आकर्षण होता है। जिन सखीएँ जीवन तो है हा, इसलिए वही यहाँ आ सकत है जिनक पास पैसा है। एक मारवाडी आमवाण सेठ बतला रह व कि नई पीढ़ी म शिक्षा ता बड़ी है लेकिन वह विलासा होना जा रही है। नई पाठा स इस तरह की शिक्षागत बजा है। लेकिन, नई पीढ़ी को अब परलोक के मुख पर भगसा नहीं है, इसलिए स्वग के प्रलाभना के ऊपर बट इस जीवन क भाग का कैसे छाट सकती है ?

१८ जून का कुमाऊँ क श्री चन्द्रावर शास्त्री आए। वन वनांगस म साइंस पगत हैं, लेकिन इधर कई सालो स नेपाल और तिब्बत पर एन एतिहासिक उपयास लिख रह व जिसके बार म श्री बालकृष्ण शर्मान मुने उल्लास था। नेपाल के राजा अंगुशमा का कथा "भकुटा" तिब्बत क प्रनापी सम्राट सााचन गम्बा का ब्याही गई थी। इस ब्याह ने तिब्बत और भारत के सांस्कृतिक सम्बन्ध का स्वापिन बरत म बन्ना काम किया था। 'भकुटि' उनक उपयास की नाविका थी। उन्होंने उपयास के कई स्थला का मुनाया। वस उपयास का यो भी कठिन रास्ता है, पर एतिहासिक उपयास म ता बड़ धैर्य और अनुसन्धान का आवश्यकता है। वर्तमान समाज हमार सामन है उसका अण प्रत्या का हम जानत हैं, इसलिए आजकल क

मम्बय में उपयोग लिये मैं हमें बहुत सुभाते प्राप्त हैं। बीते समाज का उल्लेख हम बहुत कम मिलता है उसकी उपयुक्त सामग्री भी दुर्लभ होती है। इन सबको बन बन करके जमा करना होता है। बड़ी सावधानी से कलम उठानी पड़ती है, कि कहीं कोई ऐसी बात न लिख जाएँ जो उस समय के देग-काल-पान के प्रतिकूल हो।

१६ जून का श्री जगदीशचन्द्र माथुर अपनी पत्नी के साथ आए। माथुरजी हिन्दी के नाटककारों में अपना विशेष स्थान रखते हैं, साथ ही हिन्दी-साहित्य और लोक कला में उनका अमाप्यारण प्रेम है। बिहार के गिम्भा सचिव रहकर उन्होंने लोक रंगमंच के लिए बहुत काम किया और हिन्दी सृजन के लिए बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् जैसी एक साधन सम्पन्न संस्था गड़ी कर दी। भाजपुरी के जननाटककार भित्तारी का हमारा साहित्यकार गवार समझकर अपना ही दृष्टि में देखते थे। मैं पहले ही से भित्तारी ठाकुर का लाहा मानता था। माथुर साहब से यह सुनकर बड़ी प्रमत्तता हुई कि उन्होंने भित्तारी के सभी नाटकों को जमा कर लिया है और नाटककारों में अपनी पद्यरत्न जीवनी भी लिखकर दे दी है। रामभूमि खुरजा के नजदीक हान से उनका लिए तिल्ली अनुकूल थी पर बिहार वाला उन्हें छोड़ने के लिए तयार नहीं था। पर अंत में दिल्ली ने उन्हें खींच ले लिया और वह वहाँ रहकर महासचालक होकर आ गए। रेडियो का भारी लाभ हुआ लेकिन बिहार का भारी घाटा।

२० जून का हिन्दी के प्रसिद्ध कहानीकार श्री विष्णु प्रभाकर कुमारिण स्वामी के साथ आए। मैं विष्णुजी में गितायन की—जाप बु-पुत्र हाकर कौरवी भाषा में अपनी कहानियाँ में क्या नहीं महायता लेते? उपयोग और कहानी एक माध्यम हैं, तिनका अर्थ हम हिन्दी की मूल भाषा कारनी से पाठकों का परिचय करा सकते हैं। प्रमत्तता में सज्जा भाजपुरी गंगा का बड़े सुन्दर ढंग से अपना क्याआम डाल दिया है। विष्णु प्रभाकरजी जमे क्याकार अपने क्षेत्र के जीवन का चित्रित करते वक्त बड़ा आमाना से कौरवी मुत्तरा और गंगा को गमकते हैं। हमसे हिन्दी का अपना मूल खात से जीवित मम्बय स्थापित हो जाएगा जो उनका लिए बहुत कल्याणकारी होगा।

धोमर ढढवाल से २१ वा डा० उदयनारायण निरारी की चिट्ठी आइ । ममूरा आन पर मातूम हाता है हिमालय न उनक दिल म आकषण पैश किया । पत्नी स कहा हागा । उहनि उलाहना दिया । मैने भी बनला दिया था कि बदार बदरी जाना अब बहुत आमान है बहुत दूर तक ता माटर चली गई है । दाना उसी यात्रा पर निकले थे ।

२३ जून का थो मुकुंदीलालजी वरिस्टर भी आए । दा घटे तक पिछला मुलाकात स बीच क समय और दूसर बिषयो पर बातचीत हानी रहे । यह खुशी की बात थी कि एस रिखायमना पुस्प स साल म दा-तीन वार मुलाकात हा जानी ।

अगले दिन एक अमरिक्न मिन्नरी क मात्र एक तरण आए । मिन्नरी जीनपुर इलाक म भय प्रचार करत थे । छ साल म भारत म थे । हिंदी बाल स्त थे । पहा अल्माग जिले के जाहार इलाक म रहत थे । तिबन का मौमा क पाम रहना अमरिक्न मिन्नरिया की सम्प्यपूण बान नहीं है । अम रिवा स किमा उगार विचारा के व्यक्ति का भारत म आकर काम करने की अभी इजाजत नहा मिल सकता । वहा से एम हा आदमी भेने जान है ना अमरिक्न बलोगाहो क समथक हा । भारत न तिबनी मौमा क ५० मोन तक बिदगा मिन्नरिया का जान म रोक दिया । किन्ती मिन्नरी प्राय मभी अमेरिक्न है, इस कहन की जरूरत नहीं । यह उलाहना द रह थ कि जाहार म हम रहन नहा दिया गया ।

हमार रसाई घर म पहल मान-आठ ताना वाला एर ऊँचा चूहा बना हुआ था । न जान बनान बाल न कम बनाया कि घूण की चिमना रत्त टूण भी घर न धूजा नहीं निकलता था । हमन एक अधिक वार ताकर धूजा निकलन के रास्त बा बूल्ह का बनाया, लमिन मफ नहीं हुए । ६० म्यय लगाकर इन साल भी बनबाया पर धूजा जमा का तैमा रहा ।

आधिक चिन्ता के दूर होन का एक ही रास्ता था कि आप निश्चिन्त हो । एक प्रकाशक स बातचीत हुई । वह अग्रिम दन के लिए तयार हुए, और कुछ दिया भी । और जान पडा कि अत्र बान टोक हा जाएगा लकिन अन्त म नव टाम-टाँप फिम हा गई । और भी प्रकाशक स इसा तरह धूजा । हिंदी साहित्यकारा की कठिनाइया का मैं मली प्रकार जान सनता था ।

मेरी पुस्तकें का जच्छा स्वागत हाता है तब भी जब यह हालत है तो नय साहित्यकाग के बारे में क्या कहना ? तीन पुस्तकें का अपन यहाँ से हम प्रस्तावित कर चुके थे । छपवान के साथ ही दो दो ढाई ढाई हजार एक एक पुस्तक के देन पड़े । लेकिन मित्री का कोई प्रबन्ध नहीं कर सका । एक सज्जन का एजेंट होने के लिए २० ६० रुपया हमने दिया । सबसे बुरी बात यह हुआ कि डा० सत्यनन्दु न भी पचासक रुपय दिलवा दिया । हमारे विश्वास पर उद्दाम किया था, और उक्त सज्जन का पीकर बैठ गए ।

जाजाल भारत में चीन के प्रधान मन्त्रा चाउ एन लाइ आये हुए थे । भारतीय जनता हर गगह लिल गोलकर उनका स्वागत कर रही थी । चीन के सम्बन्ध में भारतीय सरकार भी अपन मदभाव का दिगलान के लिए किमी श पीछे नहीं रही । यह जहाँ गए, लगान उट्ट सिर गंगा पर बठाया । भारत और चीन का दो हजार बष का सम्प्र व दाना दगो के लिए अविस्मरणीय है इसलिए चीन के महामन्त्री ता ऐना म्यागत हाता ही चाहिए । २६ जून का वह भारत की यात्रा समाप्त करन बर्मा के उिए खाना हा गए ।

एशिया के बहुत बडे भाग में सुन और समृद्धि का विज्ञान ही निरण फल रही हैं । उधर दुनिया का राहु अमरिका अपना चाला ग बाज जान के लिए तयार नहीं । गतामाला में जरा-सी उदार सरकार आ गई जा अमरिका डडे को बर्नाशन करन के लिए तयार गही थी । फिर क्या था, शास्त्रा की बर्पा करन सरकार ने गिलाफ अपने पिटठू भज दियार लिये । इन सारे काम का अमरिका निगजातापूर्वन करन का मन कर रहा था । आसिस्कार अमरिका पिटठुआ न वहाँ सरकार को बागडार सम्भाली । अगले साठ यहा बात आताना में अमरिका न की और सयम जयन्त प्रनिगामी गलीगाहा पापक लाया का शासन की बागडार सम्भालन में मन्त्र की । जिनन दिना तब अमरिका न धैलीगाही दुनिया में उरवात मचाती रहगा, मानवता का अभिगाप ब्या रहेगी ?

२ जुलाई का लगनऊ के विप्रसार श्री रामचन्द्र माथी कृमारिजा के साथ आए । माथी उन्नीसमा विप्रसार हैं । उस्ताली के नाम पर तिस तरह में मगीन की दुगति का बर्नाशन नहीं कर सकता, वन ही नाना पागण्य के

नाम पर प्रकृति से काइ सम्बन्ध न रखने वाला उमम त्रिकुल उलटी चिम
 कला का भी पम्पद नहीं करता और अपने इन विचारा का प्रकट करने में
 वाज नहीं आता। नये पुराने कई एम उस्ताद हमार दग न हैं, और जब से
 विलेगा में एसा का लम्बी नाक वाला न मिर पर उठाना शुरू किया, तब से
 हमार यहाँ वाला का भा हिम्मत बढ़ गई। साथी व चित्रा का दायकर यह
 प्रनयना हुई कि उनके पैर ठाम पधिवी पर ह। ठाम पधिवी पर पैर रख
 भी जानसी कल्पना का उजान में मानवें आममान पर पहुच सकता है यह
 हम अपनी की चित्रकला में मालूम है। साथी व कृष्ण कल्पनामय चित्र 'सी
 नर' व ५।

३ जुलाई का शिवाव महल का शरलटा का हिमाश आया। मालूम
 हुआ पिछले मा १७०० रुपये का आमदनी हुई अर्थात् उमक उल पर
 हम मासिक हरे मौ रपया भी खच नहीं कर सकत। कभी-कभी माचता या
 समय एसा भा दवा जबकि पचास रुपये में भी मरा काम चल जाता पर
 उन समय में घुमककट था त्रिदुन्द था, अपनी चादर व अनुहार पर फला
 मरता था। अब ता व वान नया। जया मामन था। वह प-प अ ज कन्द
 लगी थी। तमन्, ठाका और भू (भूत) भी कह रहा थी। दूसरा की मुग
 मुग का दायकर वह उमक भावा का भी समय जानी। आम तीर से राती
 नहीं हैंमनी और हैंमाना रहता। जया का इम लाक में लान की जिम्मवागे
 हमार ऊपर था, यह खयाल कर मन और भी भारी हो जाता। उसे कुछ
 जुकाम हा गया था। बगल दिन कुछ दुपार भी रहा। भैया न पतिमिलिन
 का इजकाम दना चाहा लेकिन मूर्ख शुभ नहीं पाए। बचारा का मुफ्त की
 तनपाए हुए।

तरा भा गुम्ना आया पर मुखरामा के ऊपर हाथ छोड़ दना भाभीजी के
 लिए मामूली बात थी। वह समझती थी, यह निरा बुद्ध है इतम अक्कल छू
 नहीं गई है। वह मारना कर्ण करती आया था इससे भी यग धारण
 पक्का हुआ था। ५ ताराख का वह भाग गया। जय आद-शा का भाव
 मालूम हुआ। कई मिजाज की मालकिन व लिए एसा नोकर आनाना से
 नहीं मित्र सरता। भैया भा नहीं पसन्द करत थे कि उमे निरा पंगु माना
 जाय।

आज की खबरा से मालूम हुआ कि पूर्वी पाकिस्तान की तानाशाही न वहाँ की कम्युनिस्ट पार्टी का गर कानूनानुसार धोपित कर दिया। कम्युनिज्म कहा कानून की छाया में पला ? इन्को चीन में वियतनामिया से प्राप्त बुरी तरह पिटा रहा था। अमरिका की महायत्ना कोई काम नहीं आ रही थी।

६ जुलाई को मरे जनुअर श्यामलाल के द्वितीय पुत्र रामविलास की चिट्ठी आई जा ५ का उन्होंने लिखी थी जिसके कुछ अंग थे—'पिताजी की इस समय बड़ा हालत है जा मरने से कुछ समय पूर्व बाबा की हुई थी। वह केवल नरकनाल के रूप में बतमान है। जिस जमान और इज्जत को उन्होंने अपन सून से बनाया था, वह उनका सामन जलकर राख हो रही है। एसा परिस्थिति में उनका बाबा की तरह पागल हो जाना आश्चर्यजनक नहीं है। घर प्रायः भूमिसाह हो चला है। इस वर्षा में गायद नहीं हो सकेगा। बला की सादाददा है वह भी स्वस्थ नहीं। अतमान हालत में इस साल धान इत्यादि की मेनी करना सम्भव नहीं दीखता है। एम प्रकार हो सकता है उस सारी जमीन से हाथ धाना पड़े। एसा हालत में बनला में नाना पूण किया समाप्त हो जाएगा।' चाहे परिस्थिति में अतिशयोक्ति से काम लिया गया हो लेकिन वह दुःख थी, इसमें क्या कर ? पर उपाय क्या ? हमारी आर्थिक स्थिति किसी प्रकार से सहायता देन लायक नहीं थी। देश की भीषण स्थिति हमारे सामन साकार थी। भारत में ऐम लाखों घर उजड़ रहे हैं। बल का अच्छा खाता पीता परिवार आज अमहाय हो रहा है। धर्म द्वारा और हाता दीयता है पर मृजन कही नहीं।

अपराह्न में श्रीमती रजनी पणिवर अपन पति कप्तान पणिवर के साथ आई। पंजाबी नगर लागा ने अपने का नगर बनाकर मलाबारिया का भ्रम पदा किया। हिंदा की क्या लेखिका रजनीजी ने मलाबारी से ब्याह करके अपने का सचमुच मलाबाला गिद्ध कर लिया। छ वर्ष पहले जब ममला में दना था तब वह पत्नी छरहरा थी। अब जहरत से ज्यादा पत्नी हो गई थी। एघर उन्होंने कई उपवास लिए हैं। मालूम हुआ था प्रभाकर माचव रडिया छाडकर अब साहित्य जनादमी में आ गए। इनके लिए यह अधिक उपयुक्त स्थान था। अगले दिन गाम का घूमन गए जा २२ अपवाद मदाम मारी का दान हुआ। १९३२ में परित्त में उनसे

मुलाकात हुई थी। अब दिल्ली में ही रहती हूँ और वहाँ आल् इंडिया रेडियो में काम करती हूँ। चलते चलते कुछ दूर तक बात हुई। ४ जुलाई की रात से ही बपा गुरु हो गई थी। ८ की रात से गुरु हुई, तो अगले दिन दापहर तक बराबर जारी रही। फिर ताकभी जोर की ओर कभी बूदा बाँदी रहती। जासमान कभी ही निरभ्र हाता था। जहाँ अब अपनी बसर निकालना चाहती थी। साधारण सलानी जा चुके थे और उनकी जगह अब पंजाब के सलानी ले रह थ।

मसूरी के हितमिना में बंध गम्भूनायजी भी हैं। वह डी० ए० वी० फार्मसी के सचालक हैं। गर्मी बरसात में यहाँ रहते हैं जाड़ा में देहरादून और दिल्ली में अपना काम दमन प्रविटस करते हैं। उनकी दा लटकिया है। ६ तारीख का मालूम हुआ उन्होंने एक लडका गोद लिया। आजकल के नामाने में लडकिया के रहते काइ शिक्षित लटके को गोद ले, यह साचन की भी बात नहीं। नाम के लिये? नाम तो अपने परदादा का भी बिरल ही जानते हैं। ११ जुलाई इतवार को श्रीमती मुधा अपने पति श्री प्रतापसिंह के साथ आईं। डा० मंगलदेव की पुत्री का मैं उसका सभी भाइया और बहनो के साथ बचपन से ही जानता था। बराबर देखता रहे तो आत्मी का आश्चय नहीं होता लेकिन दस बारह बप की लडकी का जब बारह बप बाद देखने का मौका मिल, तो आश्चय क्या न हा? मालूम हुआ उनका एक भाई डाक्टर हूँ और आजकल जासाम न है। डा० मंगलदेवजी अब भारमुक्त थ। लडकाने काम परड लिया है और लडकियाँ विवाहित हाकर अपने पतिकुला में चली गई।

१४ तारीख को निसी पत्रिका में डा० रामबिलास गर्मा के लेख पर नजर गई। मतभेद होना काइ बुरी बात नहीं और उसकी नुक्ताचीनी की जाए इसका भी मैं स्वागत करता हूँ। उन्होंने मर्यादा तोडनर यह काम किया था, मुने उकसाया भी था लेकिन मैंने उसका जवाब देना पसन्द नहीं किया, दूसरा न ही जवाब दिया। अत्र दला उन्होंने लिया था—सरकार राहुलजी और डा० रघुवीर का लासा रख्य दकर परिभाषाएँ बनवा रही हैं। इस सफे शूठ का भी काई अ त है? एसा जादमी कम प्रार्ति का भवन भी हो सकता है? मुच एक प्रतिभागाली आदमी के इस पतन पर बूढ़व

अफसाम हुआ। परिभाषा के काम को अगर सरकार मन स करवाती, तो मैं उसमें सहयोग देने के लिए तैयार था। सविधान की परिभाषा का निर्माण मैंने बसा किया भी। पर जब देखा कि शिक्षा मंत्रालय उसमें रोक अट काना चाहता है, तो मैं उससे अलग हो गया। डा० रघुवीर और हमारी परिभाषा निर्माण-सम्बन्धी नीति में जमीन आसमान का अंतर है। उनका साथ मेरे नाम को जोड़ना यही बतलाता है कि शर्माजी बहुत निचले तल पर उतर आए हैं।

१५ जुलाई का बपहा करने के रेक को पकड़कर जया खड़ी हुई रेक उसके ऊपर गिर गया। चाट लगी बहुत बुरी तरह से रान लगी। बच्चा का कितना ही सँभालकर रखा जाए किंतु काई-न काई ऐसी घटना ही जाती है, खासकर जब वह अपने हाथ पर को इस्तमाल करने का बहुत आग्रह करने लगते हैं। दस महीने की हाकर जया जमीन पर अच्छी तरह हाथ पर क बल स चलती थी। हर समय चारपाई से नीचे गिरने का डर रहता था। चार दाँत निकल आए थे। कुछ गठ्ठा का अनुकरण भी करती थी।

यद्यपि भाषा मन्त्रालय ने स्वीकार किया है कि हिन्दी की मूल भाषा कौरवी है अर्थात् वह भाषा जो कि गंगा जमुना क बीच के महारनपुर मुजफ्फरनगर मेरठ के पूरे बुलन्दशहर के आधे जिले गंगा क पूव त्रिजनौर जिले और जमुना के पश्चिम पंजाबी मारवाड़ी ब्रज की सीमाओं तक क फल प्रदेश में बाला जाती है श्री जम्बिकाप्रसाद वाजपेयी ने अपने एक लेख में इस धारणा का कित्बुल गलत बतलाया। 'कौरवी ही हिन्दी की मूल बाली है' इस पर मैंने एक बला लेख "मम्मेल्न पत्रिका" क लिए लिख डाला।

इन्दा चीन में फ्रांस अमेरिका की गह पर लड़ रहा था और चाहता था कि अब भी वहाँ पुराना उपनिवेश बकरार रहे। लेकिन द्वितीय युद्ध क बाद एशिया क लग यूरोप के जूए को उठाने क लिए तैयार नहीं थे। कारिया में सिगमनरा की चीन की अमेरिका में गह लिया और अपने लगू मग्गुआम नी मन्द पान की इच्छा की लेकिन परिणाम यह हुआ कि अमेरिका ने नौबाना वाले जाकर भारी मख्या में बटवाना पडा। इन्दा चीन में कारिया का तरह वह सीधे जाना नहीं चाहता था, दूध का जला था। फ्रांस वहाँ तक अपना

जवानो क खून स हाली खलता ? अमरिका जोर देता ही रहा लेकिन फास ने स्थायी सन्धि कर ली । सारी दुनिया म उस दिन हथ प्रकट किया जा रहा था और अमरिका न थलीशाहा क घर मे मौत की उदासी छाई हुई थी ।

कुछ चीनी व्यजना म मैं और कमला एकसी रचि रखते हैं । कलिम्पोग मे कमला के पटोस म चीनी भोजनालय था जहाँ की कितनी ही चीज वह वचपन मे ही खाकर परिचित है । मुझे मोमो स परिचय तिवत म हुआ और अण्डे वाली संवयाँ तथा कीमा मिला ग्य युक (चीनी सूप) भी बहुत पसंद आता । मसूरी म कुल्हडी म 'क्वालिटी' का भोजनालय सभी तरह के भोजनो क लिए विशेष प्रसिद्धि रखता है । २२ जुलाई को भया क यहाँ जाते वक्त हम वहाँ चले गए । भाभीजी न साना बनाकर तयार रखा हागा लेकिन 'क्वालिटी' ने हम अपन भीतर खीच लिया । चीज महगो थी । चाउचाउ मुझे पसंद नहीं आया लेकिन ग्य युक बहुत स्वादिष्ट लगा । भाभीजी के यहाँ भी कुछ खाना जरूरी था नहीं तो उनका बनाया पक्वान बेवार जाता ।

श्री सदानंद महता मरे गुझाव पर पी एच० डी० के लिए भारतीय भौगोलिक अनुसंधान कर्ताआ क ऊपर थिसिस लिखने के लिए राजी हुए थे । पहले मैंने चाहा देहरादून डी० ए० बी० कालज के किसी प्राफेसर के निरीक्षण म काम करें क्यकि महताजी अब वही सर्वे विभाग म काम करते थे । दो तीन के साथ लिखा पढी हुई, कभी कोई अडचन उठी, कभी काइ । २४ जुलाई की गाम का मेहताजी क आने पर मालूम हुआ, आगरा विश्व विद्यालय न मुझ सुपवाँइजर बनाया है ।

भतीजे के पत्र से चिन्ता बहुत हुई थी, यद्यपि बसा करके मैं कोई सहायता नहीं पहुँचा सकता था । २६ जुलाई को श्यामलाल का पत्र आया । वह घर का राना कभी मर सामने नहीं रोता । घर की जमींदारी म कुछक काश्तकार अब भूमिघर बन गए थ । उसक मुआवजे मर नाम ८२ रुपये आए थ जिसके लेन के लिए लिखने क वास्त उहोंने काइ कागज भेजा था । अब भी ३५ ४० एकट खत उनके पास थ । पुरान जमाने की तरह दूसरा क भरोसे अब काम नहीं हो सकता था । बडा लडका एम० ए० करक अब बाहर स्कूल मास्टरी कर रहा था । दूसरा लडका एम० ए० करक म

जुटा हुआ था। घर में दो जोर लडके रह गए थे, जो डीहा हाइ स्कूल में मट्रिक में पढ़ रहे थे। मेरे बचपन में यहाँ प्राइमरी स्कूल था और हमारे गाँव के पढ़ने वाले लडके याड़े ही थे जो तीन मील चलकर वहाँ पहुँचा करते। थोनाथ के दो लडके दिल्ली में उनके साथ थे। अगली पीढ़ी में कोई खेती सँभालने के लिए तयार नहीं, क्योंकि सभी पट लिख गए हैं और रोनी अपने भुजबल पर ही होन वाली है।

२७ तारीख को भाई पृथिवीसिंहजी आए। सरदार पृथिवीसिंह से मेरी बहुत घनिष्ठता रही है, यह जीवन यात्रा के दूसरे भाग से मालूम होगा। अब उनके स्वास्थ्य पर जायु का असर दीख रहा था। स्वास्थ्य के लिए ही वह कश्मीर जान हुए यहाँ आए थे। उनकी जीवनी के दूसरे संस्करण में कुछ जोर घातों भी मैं जाड़ना चाहता था। क्योंकि उसे लिखे दस ग्यारह बप हो गए थे। पाँच छः दिन अच्छे बटे और जीवनी के लिए कितनी ही सामग्री भी मिल गई। यह दूसरा संस्करण बाराणसी के पानमण्डल में प्रकाशित किया। सरदार पृथिवीसिंह का सारा जीवन देग की स्वतंत्रता के सपनों में गुजरा। बीस बप के ही थे जब अमेरिका के सुगमय जीवन को लात मार कर प्राति करन भारत आए। उनकी कम आयु को देखकर ही फासी की सजा की जगह आज़म कालापानी मिला नहीं ता उह तरुण बरतारसिंह की तरह फासी के तरुने पर झूलना पडा होता।

भैया (स्वामी हरिहरणानन्द) का हर सप्ताह दो तीन बार समागम होता रहा। हमारी आर्थिक कठिनाइयाँ का उह किसी तरह पता लगा और जब यह भी सुना कि मैं गांधी देग से बाहर जान की इच्छा रखता हूँ ता एक दिन (३ अगस्त) गम्भीर किन्तु सहज भाव में कहा 'बाहर जान की जरूरत नहीं है। हमारे पास काफी है।' उनकी महदयता और उदारता का मैं स्वीकार करता था और यह भी जानता था कि हमारा सम्बन्ध बहुत घनिष्ठ हो गया है। पर मैं ता अपने बल पर ही लडा हाना चाहता हूँ इमे छाडकर दूसरा रास्ता पनडना मेरे लिए प्रिय नहीं।

आजकल पातुगाड और प्रँच अधिनार में पडे भारतीय क्षेत्रों की स्वतंत्रता का आन्दोलन चल रहा था। प्रँच भयिन्धयता के बार में कुछ सोच बनन थ। मामभय का पोनुगोज सानागाह अमरिका और इंगलण्ड के

बन पर कूट रहा था। लखिन प्रच वस्तियों को भी बिना कुर्बानी के खाली नष्ट कराया जा सनता यह निश्चित था।

अब का कवाचिया क यहा से जा पुस्तकें खरीदकर लाए थे उनमें स एक म एक जगह दार्जिलिंग क एक मारवाटी सेठ के दक्ष कारपदाज प० नगनारायण तिवारी क बारे म पन्ना। पुरानी स्मृति जाग उठी। नगनारायण तिवारां याग्य थं। कमाकर घर की हालत बेहतर बनाना गुरु ही किया था कि उनका दाना जाँच जाती रही। कुछ अग्रजी पढ़ हुए थ। अग्रजी गायन के खिलाफ थे। असह्याग आदालत छिडत ही वह उसम कूट पड। और फिर जब तक जीए तब तक राष्ट्रीय आदालत म भाग लन रहे। हर बार जल जात रहे। १९२१ म मैंन एकमा (उपरा) म काग्रस का काम गुरु किया उमी लिन वह मरे साथी हुए। हम बराबर गाँव-गाँव घूमत थ। तिवारीनी अपनी वाली (भाजपुरी) म अच्छा यास्थान देत और गीत बना- कर गात थं। शायद "मला आचल क लेखक रेणुजी के जिले पूणिया म भी वह स्वराज्य के प्रचार म घूम ये क्योकि उनक इस थोष्ट उपयास म एक जगह तिवारीजी क नाम से उनक पद की एक पानी उद्धत थी। नाम याद आन ही मन न बहा कि जो जादमी आँखो से मजबूर होन पर भी स्वराज्य की रट लगाए उसक लिए दुख झेलते चल बसा। उसकी स्मति फिर एक वार नई पौनी का जिलानी चाहिए और मैंने एक लख लिख दिया। सभो जगह का तरह लक्ष्मीपात्र अग्रजा के समय दग की आजानी की नही बलिन राजभक्ति की पवाह किया करत थे। अब ता काग्रस म आने खतरे की वान नही, और अपत पथ क ज्यादा सम्बर बनवाना भी चाएँ हाय का छल है। मसूरी काग्रस सभापति और मंत्री ऐसे हा थे। पुरान समय से काग्रस की सेवा करन वाल उनम जलते थे। एक दिन मुना बहुत स हस्ताक्षर कराक लोग प्रांतीय काग्रस के सभापति के पास आवदन पत्र भेज रहे हैं कि उह हटा दिया जाण। कितन भाल हैं ये लाग ? इनकी अकल पर तरम आता। नही समयत काग्रस म गुणात्मक परिचतन आ गया है उसकी कायापलट हा गर्व है। उसक बडे-बडे नता अब मुखडा की जमान क नही हैं न उनका स्वाय उनके साथ सम्बद्ध है। अब तो उच्च वग के घनी मानी उनक हितमित्र हैं जयानी या गिष्टाचार के नाते ही नही, बलिक विवाह

सम्बन्ध भी अब उनके लक्षपतियों करोड़पतिया से नीचे क साय नही होते । वह मसूरी के काप्रेसिया के चिल्ला को क्यों सुनने लग ?

नहरून नारा दिया 'काम काम काम और फिर आराम हराम है।' निहित स्वायवाला और उनके पक्षपातियों के नारे खाखल हात हैं । उनका काम जनता के ध्यान को बँटाना है । दा पैम भर अक्कलवाला जादमी भी जान सकता है कि भारत म गिम्मित हा या जगिम्मित गाव के हा या गहर के सभी काम चाहिए काम चाहिए 'चिल्ला रह हैं । मोर से उठने हैं और आधी रात तक उनकी यही रटन रहनी है । पत्ते लिख लाग दफनरा म घूमन हैं अफनरा और सेठा की खुगामद करत है कि हाड चाम इकट्ठा करन क लिए नाई काम मिल जाए । भूख रहने रहन गाव क गरीब तग आ जात हैं ता घर छोट चार चार पाच-पाच सौ मील दूर काम की लाज म जान है । कितन ही खाज करत करते वही मर जात हैं कितने ही धक्का खाने फिर अपन घरा की आर लौटन हैं । भला इन लागा क सामने आराम हराम है कहना निरी बचना नही है । उनका आज की ब्यवस्था मे काम कसे लिया जा सकता है ? जब पूजीवाट क गिरामणि दंग अमरिका म भी लागा आत्मी हर वक्त बकार रहने हैं ता हिन्दुस्तान उस ममस्या को हल क म कर सकता है ? वकारी का उच्छेद कवल समाजवाणी देगा म हुआ । चीन म चुटकी बजात बजान यह काम किया गया । एमा क्या हुआ ? उन देगा म आत्मी क बौद्धिक और गारीरिक श्रम को बन्त मूल्यवान पूजी माना जाता है उनका बकार न रक्क कर काम म गगाना राष्ट्र अपना कतव्य ममसता है । इमलिए बडी बनी याजनाए बनाकर लोगा का काम पर भिटा लिया गया । कहा जलनिधिया बन रही हैं नहरें खुद रही हैं गाँव गाँव प्लूग स्थापित हा रह हैं नय-नय कारखान बन रह हैं । दम तरह सबका काम मिल रग है । भारत म मुह स चाह कुछ भी करें लकिन काम स पलागाहा का खुग रगना उनक स्वाथ पर कम म-कम आँच जान दना उरकार का कतव्य है । आँखा क मामन भ्रष्टाचार हा रहा है । ६६ प्रतिशत नारी स्वय गन तक उम कीचड म दब हुए हैं । बनी दूमरा का भ्रष्टाचार म प्रलग रहन का उपरग दन हैं उसक उमूगन क लिए कमेटियाँ और अफगर नेयुक्त करन हैं । अगर सचमुच हा टुनिया म काई भगवान हाना, ता एम

बचका की जीभ निकाल लेता उह जलाकर खाक कर देता। अंग्रेज जब थ उम ववन भी लागा की हालत बुरी थी उस वक्त भी रिश्वत और भ्रष्टाचार था, लेकिन उतना नहीं था जितना आज सात वष बाद दिखाई दे रहा है। एक त्नि डा० सत्यवतु स चर्चा चल रही थी। उहान कता ५० पीसनी लोग राटी के लिए त्राहि त्राहि कर रहे हैं। मैं उनस सहमत नहीं था। हो सनता है फसल कटते वक्त त्राहि त्राहि करनेवाला की सख्या आधी हा पर साल क अधिक दिना म उनकी सख्या तीन चौथाई स कमनही। अत्र इनम के लाग भी गामिल हा गए हैं जा सात ही आठ वष पढ़े पुगहाल समवे जाते थे।

सरकार क कणधारा क ढाग और बचना क्या एक दा है कि उस गिनाया जाए ? हमार दग क एक बहुत अमेरिकापरस्त साहेब न वन महात्सव आरम्भ किया। अब हर साल बरसात क गुर् म सठा के जखबारा म वन महात्सव क बारे म प्रचार किया जाता है कराडो वक्षा के लगाए जाने क आँकड दिए जात हैं लासा रुपय इसम बरबाद किए जाते हैं। लेकिन यह महोत्सव कसा सफल हा रहा है इसका उदाहरण मसूरी म ही मिला। अखबारा म छपा कि मसूरी म १० हजार वक्ष लगाय गए। मैं समझता हूँ सख्या म बहुत अतिशयाक्ति स कामनही लिया गया कि तु क्या वे वन हैं ? एक दा अगुल चौनी ज्यादा स ज्यादा एक हाथ लम्बी एक वनस्पति यहाँ पहाड म हाती है। ऐसी वेहया है कि यदि कही भूल स भी पड जाए, ता वहाँ स हटने का नाम नहीं त्तो। उसम फूल भी हात हैं लेकिन मुत्तर नहा। वस उसी का सटक क त्रिनारे दो दा हाथ पर लगवा दिया गया। दूसरा जगहा स यहाँ क वन महात्मव मनाने वाले ईमानदार कट जाएँगे, क्याकि और जगह लगान भर क लोग जिम्मवार हात हैं। उनन वहाँ स विमनत ही हफ्त भर म तिसी पीधे का नामानिगान नहीं रहता। लेकिन इन बह्या वनस्पति म स बहुत मो दो साल बाद आज भी आपका त्निवाद पडेगी।

१६ अगम्न का अग्रवाला की विवाह पद्धति पर डा० किरणशुमारी गुप्ता का पुम्नन छरी मिला। मैंन आधी दजन महिलाआ का त्सन लिए प्ररित किया था और उहनि स्वाकार भी किया था। लेकिन उम किरणजा

ही पूरा करन में सफल हुई। पुस्तक बहुत जल्दी तरह लिखी गई। उद्दान सार अग्रवाला का नहीं बल्कि कदोमी अग्रवाला तक ही अपन का सम्बन्धित रखा और उनमें भी उही को लिया, जिनकी मानभाषा ब्रजभाषा है। इस पुस्तक के द्वारा बृद्धाभा के कण्ठ और स्मृति में ही सुरक्षित सारे विवाह की रीति रिवाज जोर दा सौ के करीब गान चमा हा गए। हरेन भाषा-क्षेत्र को दा-दा तीन तीन जातियाँ के बारे में इसी तरह की विस्तृत अनुमयानपूर्ण पुस्तकें यदि तैयार हो जाएँ तो नतत्वीय तुलनात्मक अध्ययन का काम कितना जागे बड सकता है? हमारी शिक्षिता तरुणियाँ का डघर ध्यान नहीं है। जब ध्यान जाएगा तब बढ़ाएँ अपन साथ बहुत-सी विभिन्न विधाना और गीतों के लिए मर चुकी रहगी।

१९३७ में रुस जाते समय इरान की राजधानी तेहरान में कुछ समय ठहरा था। उसी समय सरदार रामसिंह से मुलाकात हुई था। वह किसी सैनिक ठकदार के कार्यदर्ताज थे। कबटा से रेल में जाते हमारा परिचय हा गया था। महीने के महीने से ज्यादा हम दाना एक दूसरे के सम्पर्क में नहीं रहेंगे पर सम्पर्क ऐसा जरूर था कि हम एक-दूसरे का भूख नहा सकते थे। एक सैनिक अफसर मिन से उह मरे बारे में पता लगा। चिट्ठा भी भेज चुक था। उस दिन १६ अगस्त को एकाएक आ गए। घर पश्चिमी पाकिस्तान में था लेकिन गरणार्थी हान में पहले ही वह कारवार के सिल सिल में यहाँ आ वासी में रहने थे। १७ वष में वाली दाली मफ्त हा गई थी। दादी छोटी से उनकी कोई काम नहीं था, लेकिन बाप दाद मिक्क होने से दादी रतन चले आय थे, इसलिए वह उम दान के लिए तैयार थे। मैं कभी-कभी सोचता हूँ कि पंजाब में दादा-चाटिया न कसा वतनमीजी का तूफान बडा कर रखा है? पढ़ते ऋषि मुनि नहीं मनी लाग जम से ही अपन बाला की मनी को मृयु तक बचाकर ले जान थे। फिर बडा का यह काम सौंभा गया, और जवाना न दादी से छुट्टी ल ला। बग आज १ सात आठ सौ वष तक अगुण्य चले आय थे। लम्बे का का सनागर रमना पुष्प भी आवम्पक समपन थे। जयचन्द्र के दरगारी बनि द्विफाबडा चिकुरा (दा फाँक करके बोधे का) का प्रगसा वतन नहा सकते थे। फिर मनचले तरुण निरले जिहने तान चौवाद निर का लम्बे का से

खाली कर दिया। पूजा के समय बिल्वर बाला म गाठ लगा 'ओ जाती थी, जो सकडा वष वाद धार्मिक अनुष्ठान बन गया। यदि मारे केश का माफ कर लिया जाता तो पूजा के समय गाँठ कम वधता ? इसलिए बीच म काफ़ी बाल चुटिया के लिए छोड़ दिये जात। नियम बनाया गया कि चुटिया गौ के खुर क बराबर हो। माटूम नहीं गुजराती गाय क खुर के बराबर या एक दिन की बछिया के बराबर। मद्राम क ब्राह्मणा न अभी हाल तक इस बचन को पालन का कागिण की। पाँछ से देखने पर किसी किसी की चुटिया तो महिलाओ क केश की तरह माटूम होती। चुटिया स छूट्टी लेने वाल सवस पहले बगाली रह। धीर धीर यह राग मारे हिंदुस्तान म फल गया। अब नवशिक्षित हिंदू-त्तणो म चुटिया सपना हा गई। बंशा का हमारे यहाँ यह इतिहास है। सिक्खा म कंग दाढी को घम का अग माना जाता है, लेकिन नई रोगनी मे बचिन जवान भी दाढा मुडा रना मामूली बात समझते। अब तो छूरे से नहीं कचा स बडी चतुराई के माय ाढी छाटी की जाती है। कितने ही लोग केगो को भी बीच पाच स निकाल लेते हैं। बहुत मे शिक्षित नौजवान तो अब उससे बिल्कुल मुक्त हा गम है। इस्लाम मे भी दाढी पर बहुत जोर था। तेहरान म मैन एक ईराना का हमार भाइया को देखकर कहते सुना—

'हमा मदुमा आदम गवद इ रीगिया ताहनाज आदम नमीगवद।' (मभी मन् आत्मो हा गय, य राजा वाले अभी भी आदमी नहीं हुए।) दुनिया म कगा के ऊपर सभी जगह आफत आई है।

अब की १५ अगस्त के समारोह म मैं गामिण नहीं हुआ था। गाधी चौक पर समाराह दखन कमला गई थी, और वहा वहाग हाकर उडी खडी गिर पडी। समाग म पास म परिचित लाग भी थ, उहान मरद की। टाउन हाउ म सभा हुई, ता वहाँ काग्रेसियों और गर काग्रेसिया म जगडा उठ खडा हुआ। काग्रेस वाला म भी जहाँ नवृत्व क लिए जगडा नहीं है, वहाँ घनिया क नय नेनूव के प्रति घणा ता है ही, इसलिए वह भी गर-काग्रेसिया क साथ सहानुभूति रखते ह। कहते थ डेढ घटा तक सभा म हल्ला गुल्ला रहा बहुत स लोग उठके चल गए। इस दिवस का ता हम राष्ट्रीय पब क क्षीर पर मनाना चाहिय कयाकि इस दिन दा सौ वष स स्यापिन विदेशी म्वेच्छा-

चार का अंत हुआ था। दिल के गुबार का निकालने के लिए और अवसर मिल सकते हैं। पर, यह समझे कौन ?

मसूरी और दहरादून पर मैं लिखने का खयाल आते यहाँ के पुराने एंग्लो इंडियन परिवारों की ओर ध्यान आकृष्ट हुआ। हमारे पास के बड़े होटल चालविल के बारे में किसी ने यों ही कहा विल्सन नाम के जर्मेन ने अपने पुत्र चालविल के नाम से इस स्थापित किया था। यह भी बतलाया गया कि यह वही विल्सन था जिसने गंगा में पहल पहल लकड़ियाँ बहाई और जा देहरी रियासत का बड़ा ठेकदार था। ता मुझे ११ साल पहले देखा हॉसिल का बगला याद आने लगा। मैं उसके पीछे पड़ा। सूचनाएँ इकट्ठा नही मिली। जरा जरा सा जमा करने पर पता लगा कि उसका नाम फ्रेडरिक विल्सन था। १८४० ई० में वह स्थायी तौर से भारत चला आया था और वहाँ गिकार ही उसकी जीविका का साधन रहा। गंगोत्री के पास की भूमि को उमन अपना निवास स्थान बनाया। वही मुखवा की एक लड़की से ब्याह किया। फिर हॉसिल में वह बगला बनवाया जो सौ साल बाद भी अभी सुदृढ़ खड़ा है। उसके दो लड़के थे। चार्ली बड़ा था। विल्सन पीछे जंगल का ठका लेकर लाखा का स्वामी हो गया। उसने जगह-जगह मकान बन गये। उसके पास छठ, सात सात हाथी रहते अग्रज और दंगी कितने ही अफसर थे। पिछली गताती के चतुर्थ पाद के आरम्भ में ही उसका देहांत हो गया। चार्ली ने गायदास का खून बरवाया किया। उसकी ७० साल में ऊपर की बीबी अब भी दूहगदून में रहती हैं। उनसे भी मैं पूछ ताछ की। विल्सन ने एकान्त गिकारी जीवन का आनंद लिया और जब तक परा में बल रहा पश्चिम तथा मध्य हिमालय में घूमता रहा। वह एक जाण्य घुमक्कट था इसलिए गिकारी विल्सन की तन्फ मरा आकृष्ट हाना स्वाभाविक था। मैं उसकी एक छोटी सी पोवनी लिखी।

दूर से दूर पर पालतू जानवरों का रखना बवल खुशी-खुशी की बात मालूम होती है लेकिन वह बनी बात नहीं है। कुत्त चूक कमरे में साथ गान-बैठते हैं। वह बाहर में घोमारिया का ला सजते हैं। उन्हें बराबर धा-धाकर रगने की जरूरत पड़ती है। भूत अलमेसियन है इसलिए उसके बाल घन हैं। बालों के जगत् में कितने ही जंतु पलते हैं। पिस्मुआ से पिण्ड

छुड़ाना मुश्किल हो जाता था। हफ्ते दो हफ्ते में दवाई से घाने पर भी पिस्सुओ का कुछ नहीं बियड़ता था। डी० डा० टी० सूने पौडर को भूत डालने नहीं देता था। इधर न जान कहीं से किन्नियाँ बटोर लाया था। आसपास दूसरे कुत्ते हैं ही उनसे या मौसम के बक्त जगह जगह बगला के बाहर भर्मे और गाभें रहती हैं उनसे लाया हागा। कुछ किलनियाँ घर में भी रेंगती, और कुछ खून पीकर गोलमटोल मटर जसी हो बाना के पास लटकती जिन्हें निकालने देना भूत अपनी गाभा की हानि समझता।

रुखनऊ के कप्तान गुक्का मनमौजी जीव हैं। घूमन का गौब है, चौधे पन में पर रख चुके हैं और गरार हलका नहीं है तो भी समझते हैं कि हम दुपम पवता पर चढ़ना चाहिए। हर साल गर्मिया में यहाँ आ जाने और हम भी दशन दे जाते हैं। लेकिन अक्सर बरसात के आखिरी महीने में आने हैं। इससे पहले हिमाचल में कहीं सँबर चुके रहने हैं। २३ अगस्त को आए। अबकी दो-तीन महीने हसिल मरहे थे। विल्सन के बगले ने उह भी आकृष्ट किया था। उहाने भी विल्सन के बारे में जानने की वागिशी की थी। बतला रहे थे लोग कहते हैं—विल्सन ने पहले मुम्बवा के एक ब्राह्मण लडकी से ब्याह करना चाहा। वह वहाँ के लोगो में घुल मिल गया था। लोग उसकी उदारता से बहुत खुश थे। लेकिन, जब लडकी दने का सवाल आया, तो पण्डा लोग बिगड़ उठे। फिर उसने धरौली की एक धत्री की लडकी को याहना चाहा। उसमें भी सफल न हाकर मुम्बवा के ढाली (हरिजन) की परम सुन्दर लडकी से ब्याह किया और और माँ-बाप को निहाल कर दिया। पीछे जगल का ठेका लेकर लखपती हुआ। श्री मुकुन्दीलाल बेरिस्टर कई वर्षों तक देहरी के चीफ जज रह चुके थे, उनसे भी कितनी हा बातें मानूम हुई। विल्सन ने अपने लडका को अच्छी शिक्षा देने की चाही, लेकिन वह बिगड़ गया। जब तक गिनारी विल्सन जिला रहा तब तक सब लोग उसका लिहाज करते थे। फिर चाली और हतरी ने अपन स्वेच्छाचार से ऊधम मचाया। कोई खून भी हो गया। राजा ने दसकी गिवायत अप्रेज रजीडेंट से की। वह इन अचगारे जवाना को क्या बन्ना देन उगा? उहे देहरी से बाहर निकाल लिया गया। कप्तान गुक्का वह रह थे, विल्सन के बगल को अब सरकार ने ले लिया है।

हमार हैपीवेली मुहल्ले के सबसे बूढ़ हैं 'गादीलाल', जिनकी उमर ७० के करीब होगी। दस-बारह बप के थे तभी वह देग से मसूरी चले आए। कई बंटे है। बेटा से अलग ही रहते हैं। पुरानी मसूरी खासकर हैपीवेली की बहुत-सी पुरानी बात उन्हें याद हैं। उन्होंने बतलाया कि चालविल का पहला नाम हासन था। हासन चाली और विली दो लडके थे जिसने नाम पर उसने इस बेंगले का नाम रखा, और बेंचत वक्त यह बात की कि इसका नाम बदला न जाए। हेर्सी परिवार भी मसूरी का सौ बप पुराना एग्लो इंडियन परिवार है। उस परिवार की पुत्री बृद्धा मिसिस वाइट न बनलाया कि गिबारी विल्सन या उसके लडके चाली विल्सन से चालविल होटल का बाई सम्बन्ध नहीं है। लाला गादीलाल १८६२ ई० में अपने चचा की दूकान में टेकारी-काठी के नीचे काम करते थे। बतला रहे थे टेकारी-काठी की जगह पहले भसवाडा था। सवा सौ बप से पहले आस पाम के गाँववाले गर्मी बरसात में मसूरी के जगला को अपना पशुआ की गोबरभूमि के तौर पर इस्तमाल करते थे। जहाँ-तहाँ भसवाडे या गायो के झोपड़े हाते थे।

हेर्सी परिवार के लोग बाल्गोंज में रहते हैं यह जानकर २४ अगस्त को हम वहाँ पहुँच। लाइब्रेरी में हेर्सी 'पर एक पुस्तक देख चुके थे जिससे मालूम हुआ कि अग्नेज हेर्सी टीपू सुल्तान से लड़ने वाला अग्रज अफगना में एक था। उसने टीपू के हरम की किसी बेगम को उड़ाया। उसी परिवार का एक हेर्सी टेहरी के राजा का परिचित हो गया और उस राजा ने काफी जागीर देकर वहाँ रखा। उसने ही बाल्गोंज में इस बगले का वाजिदअली गार्ह की लडकी के रहने के लिए बनवाया। शाहजादी और तरण हेर्सी की आँखें लड़ गईं और वह उसे निवाल भागने में सफल हुआ। मिसिस वाइट बड़े गव से बट रही थी— 'मरी रगा में गाही मून है।' उनका भाई हेर्सी अब भी यही एक झोपड़ा बनाकर रहता था। अनेका दम था, कुछ जमीन थी उसी पर गुजारा करता था। मिमेन वाइट के पास बहुत जमीन थी। सौ बप पढ़ा था बेंगला अत्र गिरन ही वाला था, लेकिन अभी भी बुढ़िया को परण दन के लिए तयार था। बुढ़िया के लड़न-लड़कियाँ में से कुछ इंग्लैण्ड चले गए, और सबसे छाटा यहाँ था, जो दग्गन में गन प्रतिगन अग्रज मालूम हाता था, इसलिए आस्ट्रेलिया या यूजीलैण्ड में जासानी से उसकी

खपत हो सकती थी। लखामपुर में हमी परिवार तालुकदार के रूप में अभी तक रह रहा था। अब जमींदारी उठ जान स उसकी क्या हालत हुई होगी, नहीं कहा जा सकता। हमी और विरसन परिवार के इतिहास पर नजर दोड़ाने पर एक पुराना युग जीवा के सामने नाचने लगता है। अग्रज हिंदुस्तान में बनिय के रूप में आए। उस वकत टह रायाल ना नहीं था कि हम दिव्य जाति के हैं। वह हिंदुस्तानिया के माय बैस ही मिलते जुलने थे जैसे हिंदुस्तानी आपस में। काइ सिपाही बनकर हिंदुस्तान के राजाशा और नवाबा की पलटन में काम करता, कोई मुसाहिब बनता। काई शिकारी बनकर ही किला जगह रह जाता। हिंदुस्तानी खाना उसक लिए प्रिय खाना, पांशाक भी खाया सोतर आधा बटर रहती। लेकिन जब राज हाथ में आया तो उन्होंने धीरे धीरे अपना रूप पहचाना। पर पूरे तौर में दिव्य पुरख बनने में उन्हें गतालिया का र रहई।

भया ने दिल्ली (फज बाजार) में अपना मकान की दो मंजिले तयार कर ली थी, तीसरी बनने का रह गई थी। कह रह थे उमें अगल माल बन जाएंगे। जितना चाहते थे उतना पसा कमा लिया था। आर्थिक तौर में निश्चिंत थे। वह पैसा के काम कभी नहीं हुए, यद्यपि पसे के मूल्य को समझते थे। अब दिमाग में कल्पना उठ रही थी कि आयुर्वेद के अनुसंधान और प्रचार के लिए इसी मकान में आयुर्वेदिक सगम स्थापित किया जाए। एक प्रतिद्वंद्व बछराज को भी लिखा पढा करके ठीक कर लिया था। वह श्रद्धावस्था में इस पुण्य के काम में समय देने के लिए तयार थे। प्रेस भी अमृतसर से बही लाकर चलाना चाहते थे। दा मौ रूपसे मामिक पर किसी राजबेकार मनजर का तलाश में थे। मैंने कहा प्रेस और मनेजर की काई खान नहीं लेकिन कृपया सगम के वार में जल्दी न कीजिये। मेरी समझ में यह 'आ बैल मुन मार' की बात होगी। सगम हजार दा हजार महीने का खच मांगेगा। एक मार पैस गय, तो फिर निकलना मुश्किल होगा। काई अपने मुनहले स्वप्न का कह रहा है और दूसरा बिना किसी भूमिका के उस खान के महल पर निष्ठुर प्रहार करने लग, ता बसा लगगा? मैंने उस ही किया था लेकिन भया न बुरा नहीं माना। पीछे धीरे धीरे वह खयाल अपने आप हट गया।

अगस्त के अन्त में जया के साल पूरे होने में तीन ही हफ्ते की देर थी। अब वह काफी चेतन हो गई थी। अपनी तस्वीर को पहचानती थी। मुह खोलना कहने पर मुह खोलती, दाँत दिखलाती। अभी बट पा, वा माँ तीन ही अक्षर बोल सकती थी। एक वय की हान पर अपन बल पर वह खड़ी हो सकती थी पर चल नहीं सकती थी। नमस्त मलाम-टाटा हाथ से करती। भूत व भूकन की भी नकल करती। न दिय स्नान को भी आँख बचाकर मुह में डालना चाहती। नाचती भी थी। उसके जन्मदिन के लिए कमला न छोटी-सी पार्टी की जिसमें शीलाजी सत्यदेवतुजी बच्चू महताजी और कुछ और मित्र शामिल हुए।

३ सितम्बर की रात का किसी नाम से बापसूम व बाहर वाले दरवाजे का खलना पडा। भूत निकल गया। पास ही में हमारा बठ नासपाती का पेड है। वट वहाँ जाकर भूकन लगा फिर चुप हो गया। भीतर चले आए। मालूम था हाता था कि नासपाती पर नर-सर हो रही है। बन्दूक लेकर जान की इच्छा हुई पर गिकारी बरिस्टर साहब ने कह रखा था आपकी राइफल की गोली भार नहीं घायल कर सकते है और जानवर फिर बार कर सकता है। इसलिए बाहर नहा गया। साबा कोई रीछ आया होगा, नासपातियो को खा रहा होगा। बीच में कभी-कभी फला व गिरन की घम-घमाहट भी उमी बात का समयन कर रही थी। सवरे उठकर देखा तो नासपाती के ऊपर एक भी फल नहीं है। एक छाटो डाल टूटी हुई है। मन न लालबुधककड हाकर कहा जरूर भालू आया। लेकिन, फिर सोचा यदि भालू आया था तो भूत क्या दो-एक बार भूककर चुप हो रहा। यह समयन में दर लगी और इसमें जान लडली की राय ने भी महायता दी कि नासपाता ताडने वाला भालू नहीं बल्कि मुत्ल का ही कोई आत्मी था, जिस भूत पहचानता है। भला रात का चोरी करन की क्या जरूरत थी? नासपातियाँ हमारे काम नहीं आती थीं। खट्टी-खट्टी बस्वाद थी। माँगने पर हम ऐसे हा दकर पिण्ड छडात। कहीं जा उम रात राइफल दागी होती, यह साचरर रागटा खडा हो जाना था।

गिकारी विल्सन व पीछे में पडा हुआ था। अब मालूम हुआ विल्सन का पहला पुत्र चार्ली १८४६ ई० में पदा हुआ और १९३२ में मरा।

गिकारी का स्वयं देहान्त १८८६ में हुआ।
 ६ सितम्बर का कम्पनी वाग मवन भोज था। हम लोग इधर से भया
 और भाभीजी कुल्हड़ी से और साथ ही आचाय यादवजी श्रीकमजी भी
 अपनी पत्नी तथा तीन पुत्रियाँ के साथ आए। हम लागो का यही भोजन
 करना था लेकिन यादवजा भाजन करके आए थे। थोड़ा-सा पकवान भर
 उहाने लिया। महिलाएँ सब बल्ब कुल को गिप्याएँ थी इसलिए वह
 पकवान भी नहीं पा सकती थी। पिछले साल की तरह इस साल भी वन
 भाज में वर्षा न विघ्न करना चाहा और हम चाय के रस्तारों के लिए बनी
 काठरी में पड़े रहे। आचाय श्रीकमजी एक सफल वृद्ध हैं। चाहते तो घन
 कुवर बन जाते पर वह लक्ष्मी की मर्यादित पूजा करना ही जानते थे।
 चिकित्सा करने के अतिरिक्त आयुर्वेद के ग्रन्थों का उद्धार करना भी वह
 अपना वतय समझते थे। वर्षा बाद हाने पर हम चाय पीकर ५ बजे घर
 लौटे।

७ सितम्बर को कमला के एम० ए० (प्रथम) का फाम भरवान के लिए
 रमादेवी उच्चतर विद्यालय के प्रिंसिपल मल्होत्राजी के पास गया। मल्होत्रा
 जी इधर नगरपालिका की राजनीति में भी भाग लेने लग्ये जिसे मैं पसन्द
 नहीं करता था। लेकिन अपनी-अपनी रुचि है। वह यहाँ के सबसे धार्म्य
 प्रिंसिपल हैं। उनके स्कूल की परीक्षा का परिणाम हमारा सत्रस अच्छा
 निकलता है। लागो का भी उनके ऊपर विदवास है। घनानन्द इंटर कालज
 से असंतुष्ट होकर इस स्कूल की स्थापना की गई थी जिस मल्होत्राजी जसा
 प्रिंसिपल मिल गया। लड़का की सत्ता बराबर बढ़ती गई और उसा के
 अनुसार मकाना की भी। उहाने स्कूल की इमारतें लिखलाईं। नई इमारत
 में साइंस की प्रयोगशाला भी बनी है। लड़का के शारीरिक व्यायाम के
 लिए भी एक छोटे से मदान की आवश्यकता महसूस कर रहे थे जिस उहाने
 जातिर में बनवाया। पहाड में समतल भूमि मिलना मुश्किल है, इसलिए
 स्कूल को विस्तार करना आसान नहीं। इसी साल कमला की वहीन गया भी
 मटिक की परीक्षा दे रही थी। वया स्कूल तीन मील पर पढता था इस
 लिए गया का वहाँ से हटा लिया गया। उस घर पर ही कमला पढाती थी।
 मसूरी वया विद्यालय की प्रिंसिपल महादया ने फाम भरने में सहायता की।

दफ्तरशाही दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। फाम भरन के लिए क्या दो पष्ठ काफी नहीं थे? पर अब उसमें एक दर्जन पष्ठ हाने हैं। उत्तर प्रदेश में बाड़ की परीक्षाओं में पौने दो लाख परीक्षार्थी बैठते हैं। कागज का कितना अप्रयोग है? जिस तरफ दवा उस तरफ दफ्तरशाही का बोलचाल है। कागज को काला करन के लिए ही बनार के लाखों आदमी लगा दिए गए हैं। मंत्री लोग या दिल्ली के महादेव लाल फीतागाही पर बरस कर केवल विडम्बना मात्र करते हैं। ६ सितम्बर को भया और भाभीजी में कुछ सट पट हा गई थी। भाभीजी को तो महिलाओं के विद्रोही दल का नेता बनना चाहिए। वह मर्दों के खिलाफ जहर उगल रही था। मैं दार्शनिक बन गया था। सोचन लगा—१ बृद्ध को तरणी से ब्याह नहीं करना चाहिए २ जिसने गृहस्थी की जिम्मेदारियों को पचास साल की उमर तक नहीं जाना उसे तो नवचनवच। ३ इतने समय तक गृहस्थी के बंधन में बंधने का मतलब है उसके सामने कोई आदम था। एस पुरुष को तो और भी यह फँदा गले में नहा डालना चाहिए ४ जिसने छुमकड़ी में दीर्घ जीवन बिताया उसे तो विवाह के विन्कुल पास नहीं पटकना चाहिए ५ यदि साथ ही विद्या का व्यसन है तो तीग-तावा।

१३ सितम्बर को श्री मुकुन्दलालजी आए। अब की वह पटना भी गए थे। वहाँ उन्होंने मेरे चित्रों के सग्रह को देखा था। कह रहे थे तिरुत के बाहर अन सुन्दर चित्रपटा का सग्रह कहीं नहीं है। पटना म्यूजियम में अब भी मेरे सभी चित्रों को प्रदर्शित नहीं किया गया है। मैं भी तिरुत से लाने समय उनके महत्व का नहीं समझता था। उन समय गायद कुछ इधर उधर भी हो जाते लेकिन १९३२-३३ में लन्दन और पेरिस में प्रदर्शनी होने पर उनका जब मूल्य मालूम हुआ तो मैंने उन्हें सुरक्षित रखने का निश्चय कर लिया और यह समझन में दर नहीं लगा कि इनकी रक्षा किन्ती सरकारी म्यूजियम में ही हो सकती है। डा० जायमवाट्स सभी व्यक्तियों परिचय नहीं था, वहाँ से मैंने चित्रों को सग्रहालय को देने के लिए चिट्ठा भेजा। वह यूरोप से साधे पटना आ गए।

१४ सितम्बर का मध्याह्न भोजन औरयापे ठाकुर साह्य के यहाँ हुआ। अंग्रेजों से विद्रोह करन के कारण उनका दादा परदादा न राज्य को

खोया, पर जनना उह राजा साहब' ही कहती। कमला और हम गए।
 कप्तान चुकल और डा० गरोला भी थ। महमान भी समय पर नहीं पहुँचे।
 और भाजन म इतनी देर होती देल पेट म चूहे चुलबुलान लगे। रानी
 साहिजा ने स्वय पक्वान बनाने की जिम्मेवारी ली थी। कमला उनसे बहुत
 प्रभावित हुइ। मास भी राजपूत क घर का था। भोजन ता स्वादिष्ट था ही,
 साथ ही हम लोगा को बात के लिए भी बहुत अवसर मिला। कप्तान चुकला
 पर बुलापे का कुछ असर है कुछ रहस्यवाद जोर नये आविष्कार की धुन
 भी सिर पर सवार रहती है। वह गंगात्री के पास वही सुमरु गिखर को देख
 आए थे, और उस पर जोर देकर कह रहे थे। मैं भी अपनी भूल स्वीकार
 करता हूँ क्योंकि हिमालय क परिचयात्मक ग्रयो को लिखने म न लगा होता
 और उसके द्वारा हिमालय के हरेक भाग से घनिष्ठ परिचय प्राप्त करने का
 मौका न मिला होता तो मेरे लिए भी उसकी बहुत सी चोटियाँ और स्थान
 रहस्यमय मालूम हात हाँ देवताओ के निवास नहीं, दूर के अद्भुत भूतलण्ड।
 १५ सितम्बर को श्री बलभद्र ठाकुर की चिट्ठी मिली। गिव शर्मा और
 ठाकुर एक बार मानसरोवर जाने क लिए निकले थे। गिव शर्मा जान पर
 सेलवर निकल गए ठाकुर उसक लिए तयार नहीं हुए। पर इसका यह
 अर्थ नहीं कि वह घुमक्कडो की योग्यता म पीछे रहे। शिव शर्मा का स्वभाव
 उबल पटने का है और ठाकुर मोशाय गम्भीर हैं। वह घुमक्कड भी है,
 ससृष्ट के अच्छे पडित हैं और साथ ही कलम के घनी भी। अब की वह
 मानसरोवर भी हो आए और मनीपुर भी। मानसरोवर के न जान का
 सन्ताप ता मैं अपनी ल्हासा की ओर की यात्राओ से कर सकता था लकिन
 पूर्वोत्तर भारत और मनीपुर क पहाने की यात्रा की लालसा तो मन की मन
 म ही रह गई। ठाकुर माशाय ने लिखा था, मैंने तीन उपयास लिखे हैं।

सरहपा के चरणों में

१९३४ में दूसरी बार मैं तिवत गया था। तालपाधिया का दूढ़ते अपन प्रिय मित्र गंगे धमबदन क साय सा-क्या पहुँचा। सा-क्या क महन्त राज क सबसे प्रभावगाला अफसर चागावा दोनो छेन्वो क घर पर ठहरा। महतराज स लेकर उनक अफसर तक सभी हमारी सहायता क लिए तैयार थे। बहुत सी तालपोधिया का पता ता तीसरी यात्रा में लगा। उस समय भी कुछ अमूल्य पुस्तकें देवन में आई। इसके वार में 'यात्रा' की दूसरी पोथा में लिख चुका था। पुजारी के यहाँ तालपोधियो क पता के बदल काट-काटकर भक्तों में प्रसाद बाँटन क लिए रखे हुए थे उन्हीं में आदि सिद्ध सरहपा क दाहाकाग क पत्त भी थे। दाहाकाग पहल महामहोपाध्याय हरप्रसाद ग्रास्त्री और फिर उमसे अच्छा डा० प्रबाधचन्द्र बागची द्वारा सम्पादित हाकर प्रकाशित हा चुका था। सा क्या स लाय हुए में पत्त बीस वप स मेरे पास पड़े थे। पहला पत्रा लुप्त था। पर उसमें एक ही पृष्ठ की क्षति हुई थी क्याकि आदिम पत्र क पहल पृष्ठ को खाली रखा जाता है। दूसरे पत्र क पहल पृष्ठ क अन्तर घिसकर बहुत में अपाठय हा गए थे। एक दिन इन पत्रा का या हा देखा। स्थाल जाया इन्हें मिलाना चाहिए। हर-प्रसाद ग्रास्त्री की प्रति मेरे पास थी। पता लगा कि उसमें ५० स अधिक दाह नहीं हैं जबकि इस तालपायी में १६० स अधिक हैं। डा० बागची का प्रति का मिलान पर मालूम हुआ, कि हमारी प्रति विषय महत्व रखती है। बागची क दोहाकाग में ११२ तिब्बना अनुवाद में १३४ और इसमें

१६३ 'दाह' है। मैंने तालपत्र से उस उनछूना गुफा किया और महसूस किया कि इसे सम्पादित करना चाहिए। उस वक्त ता यही खयाल जाया था कि एक सक्षिप्त भूमिका के साथ इस प्रकाशित कर दिया जाए। लेकिन, जब उसम लगा, ता काम अपने ही दूर तक खींच ले गया। अपभ्रंश भाषा सरह की कविता तथा दार्शनिक विचारा पर छोटी भूमिका नहीं लिखी जा सकती। वह काफी बढ गई। फिर रजाल आया कि सरह के १४-१५ अपभ्रंश ग्रंथ तिब्बती में अनुवादित हैं। क्या न सरह की सभी अपभ्रंश कविताओं को हिन्दी में कर दिया जाए। फिर उसको भी हाथ में ले लिया। प्रकाशन के लिए विश्वभारती, जायसवाल इन्स्टीट्यूट और बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् तीनों जगहों से माँग आई। इन्स्टीट्यूट और परिषद् में प्रतिद्वंद्विता लग गई। मैंने श्री जगन्नीशचन्द्र माथुर के ऊपर छोड़ दिया और अंत में परिषद् की ओर से ही प्रकाशित होने का निश्चय हुआ। इन पंक्तिों के लिखते समय से पहले ही उसे छप जाना चाहिए था किंतु वह ऐसे प्रसंग दलाल में फँसा जिसमें नेपाल कई सालों से पढकर उबर नहीं रहा है।

सितम्बर के अंत में 'नया समाज' में कमला की कहानी 'बायन' छपकर आई। कमला की कहानियाँ में कुछ विशेष गुण हैं। उनको गन्ध की परत और घटनाओं को ठीक से चुनने की बात महसूस है। लेकिन, सबसे दोष है कठम चलान में उन्हें बहुत आलस आता है। आरम्भिक कहानियाँ में भी मुझे भाषा में थोड़ा ही सुधार करने की आवश्यकता पड़ी थी और अब ता उसकी ओर भी कम पड रही है। मैं कितनी ही बार कहता कि १६ कहानियाँ लिख डाला ता पुस्तककार निकल जाएँगी। लेकिन वह अभी नौ पर रुकी हुई है। जया अब मज से अपने परा पर घूम सकती थी। ऊपर के कितने ही दाँत निकल आये थे। बहुत चंचल थी, गिरने पडने और चाट खाने की पवाई नहीं करती थी।

८ अक्टूबर का बिहार के साथी कार्यान्वयन शर्मा आए। गर्माजी से मरा परिचय १९२१ के असह्याग के जमाने से है। "नय भारत के नय नता" में मैं उनकी एक छाटी जीवनी लिख चुका हूँ। जवानों से कटकावीण मांग पर उन्होंने पर रखा और आज भी उसी पर अविचल चल रहा है। बहुजन

का हित उनके लिए हमें आदेश रहा। जब उन्हें मालूम हुआ कि यह साम्यवाद ही सही साबित हो सकता है तो १९३८ में बिहार में कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना के साथ ही उसने मेम्बर बन गये। बिमाना की बहुत-सी लष्कारियाँ लड़ी। यदि उन्होंने कटकाकीण रास्ता छोड़कर सुन का रास्ता पकड़ा होता तो आज बिहार के दूसरे कांग्रेसी नेताओं से बही आराम में रहते। घर-द्वार छोड़कर अकल जीवन बिताना उतना तपस्या का नहीं है जितना कि गर्माजी जस लागे का जिहान सब-कुछ का अपने और अपने परिवार वालों का भाग्य में बचित कर लिया। उनका स्वास्थ्य इतना गिराव रहता था। दिल्ली आये थे, वही संकुच समय के लिए चल आये थे।

अब नूतन में मसूरी का ग़रद सीजन था। मशिया को बुलाकर और दूसरे तरीके से मसूरी के भाग्य का मुद्दा करने की काशिश की जा रही थी। राष्ट्रपति के घाटे ने फोला मदान में अपने कृत्य दिखलाए। कद्राय सरकार के मशिया में किदवाद् जन महावीर त्यागी और केमकर आए। प्रदण के मुख्य मंत्री पन्नी भी पहुँचे। मशिया का पधारना सिर जाखा पर लेनिन मसूरी का उमस क्या बनता है? उसको तो पाँच सात हजार क्लर्कों वाला एक दा आफिसा की जरूरत है। दिल्ली में उनके लिए घर बनाने में कराडा रुपया खर्च होगा मदान मिलना मुश्किल है। यहाँ अच्छे अच्छे मदान रहनेवाला के बिना गिर रहे हैं। मंत्री नौकरणाहा के कठपुतला हैं—

सबे नचावें रामगुनाड। आफिस भजने की बात कह करके जान हैं। छुराई नौकरणाहा उसका विराध करत हैं। सभी टाय टाय फिम हा जाती हैं। दिल्ली दरबार में रहने से नौकरणाहा का हरलोक-परलाक बनता है इसलिए वह वहाँ में क्या हटेंगे?—परलाक से मनल्य उनका घट पाने हैं, यत्कि वटियाँ और बट्टे भी बढ सकत हैं, क्याकि कानून का ताव पर रख कर भी वटियों गहा का बनी-बटी तनखाहा पर रखा गया है।

१४ अब नूतन को लष्करीर गये। अब के साल मानसरावर के गण में तिब्यत वाला का कुम्भ लगा था जिममें हमारे कुछ शम्बा मित्र भी गए थे। कह रहे थे लूट पाट अब नहीं है। चाह जहाँ फिरत रहा किन चीजें बन्त महंगा हैं। दा रुपय में एक गाम भी पट नहीं भरता। सधमुच यहाँ का रुपया वहाँ की दौड में पीछे था। तिब्यत में अब मजूर जितना एक राज

म बनाता है उनका हमार रचना म मूल्य नौ-रुप है। "सल्लि वहाँ क मजूर क लिए " चा न नहीं नहीं मालूम हगा वह हमार आदमा का जन्म माूम हानी बसाकि यहाँ पाच हया इमान म ६ घटा नहा वल्लि तीन चार निन लगान हानी वौर उसक साथ काम का अनिचित हाना नो गामिल है।

प्रयाग—एकान्त निवास रहन म एक घट भी घाटा थाकि कही जाना आना मुक्ति था। गमानी आ गय थ मैं नाचा दा हसन कही चक्कर लगा जाऊँ। पुस्तिका क प्रकाशन का भी कुछ काम था और मित्रा न मिलना भी। १६ जवतूबर का दहरादून पहुँचा। चार्लो विल्सन का बीबा स मिला। बुटिया क पाम पुरानी नामध्री नहीं थी। बाप क दिन गय मदान मे चिर-रागिणी वहिन क माय अपन जतिम दिन बिता रहो थी। पति ने बहुत पहल अपन बाप क बार म स्टटममन म एक लत्र लिखा था जिसकी कटिंग उठाने दी। उमा निन रात का इलाहाबाद तक जानवाले डब्बे म बैठ गया। सवरा होन समय हमारा ट्रेन मुरादाबाद म पहुँची। हमारे डब्बे म ही पूनिया जिले क मनिहारी क महन्तजी थे। महन्तजी हायरस वाले तुलसा साहब क सम्प्रदाय क थ। साधुओ का पथ कितना जल्दी दूर दूर तक फल जाता है? कहाँ हायरस और कहीं मनिहारी। तुलसीसाहब के भक्त बहुत जगता पर हैं, और मनिहारी क महत्त उनके सम्मानित गुरु हैं। हायरस जाकर व मुरादाबाद के भक्तो के पास आए। उहे बहुत से भक्त रेल पर पहुँचा आए थ। आदमी डत्र म कुछ ज्यादा थ, लेकिन बैठने म उनको बड़ाभाग्य समयिय एनक माय चलने को। सचमुच ही मैंने अपने का अहो-भाग्य समया क्याकि तुलसीसाहब के वचना का ता कुछ पग था पर उनवे किसी अनुयायी या महत्त स परिचय नहीं हुआ था। महत्तजी शिक्षित और मरी कुछ पुस्तका का पढे हुए थे, इसलिए हम दोना ही ने अहाभाग्य समझा। मध्य एशिया का इतिहास ' का बहुत सा प्रूफ मेर पास था, जिसे देखकर लखनऊ क स्टेशन म डालना था, इसलिए अपने सारे समय को सरसग म नहीं लगा सकता था। लखनऊ म वह दूसरे डब्बे म चल गए

और मेरा डब्बा प्रयागवाली ट्रेन में बटकर लग गया, जहाँ ७ बजे रात को पहुँचा।

मैंने श्रीनिवासजी को चिट्ठी लिखी थी, लेकिन बहुत देर से। मैं सनीचर को पहुँचा। अगले दिन रविवार को चिट्ठी मिल नहीं सकता, सामवार को मिली, ता मिश्रा को सूचना नहीं हो सकी। आजकल दशहरे की छुट्टिया भी थी। पत्रा में अगर खबर निकली होती, तो दरस परस का सुभीता हाता। सोमवार का मैं प्रयाग में ही रहा और खुद ही धूम धूमकर मिश्रा से मिल लिया। मम्मलन के वणघार लखनऊ गये हुए थे। डा० उत्पनारायण परनी व आग्रह के कारण अलोपी बाग व अपनी पुरानी काठरियो का छाडकर एक बगले में रह रहे थे। पर, कोठरियाँ उह इतनी जल्नी छोडनेवाली नहीं थी। अत में उही का सुधारकर बहा रहना पडा। सामवार को श्री क्षेत्रशचन्द्र चट्टोपाध्याय से बात हाती रही। मैंने इधर अपने अगले ऐतिहासिक उपयास के लिए ऋग्वेद का दाराराज युद्ध पुना था। उसके बारे में कुछ अध्ययन भी किया था। चट्टोपाध्यायजी का तो सारा जीवन ही एक तरह वेद के अध्ययन में लगा था। वह अपने धार्मिक विचारों से ता परम रुडिवादी हैं किंतु अनुमान में परम नास्तिन। उनसे शिष्य डा० रामनारायण राय ने ऋग्वेदिक ऋषियो पर अपने डी० लि० का निबन्ध लिखा था उस भी चट्टोपाध्यायजी ने लिखलाया। मैंने निश्चय किया कि कम काल के समाज के बारे में लिखने पर रुडिवादी आपत्ति उठाएँगे इसलिए पहले ऋग्वेदिक समाज के भिन्न भिन्न अंग पर जलग अलग मप्रमाण लन लिखू। मैंने चाहा था उह चट्टोपाध्यायजी देखकर कुछ सुपाव दन। लेकिन लिखकर सुझाव दन में वह एक नम्बर के दाधसूत्रा हैं बैठकर चाहे घटा आप उनसे गुनिये जान पता है, पान का अपार समुद्र आपक सामन लहरें मार रहा है। इस पान के समुद्र का पताग भी वागज पर न उतर सामकर ऐसे विषया पर, जिम पर अभी बहुत कम लिखा गया है ता चट्टोपाध्यायजी का अगले जम में सहायाराशय जरूर बनना पडेगा, क्यकि वह ऋषि ऋण से पूरी तीर से उकरण नहा हुए।

अगले दिन निरालाजा के दान के लिए दाराराज गया। असबद्ध बाने करन का ता उनका स्वभाव है। काई आदमा असबद्ध बान करन लगगा,

यदि उसका जागृत और स्वप्न की मट्टें टूट गई हो। आज उनका मुह स
 पहर पल्ल एकाध अलील गान मुन लेकिन यह तकिया कलामवाल थे
 जिम कुछ गुम्मा आन पर कितन ही प्रकृतस्य लाग भी मन् स निकाल दन
 हैं। वह अप्रजी म वालन कभी उठू म भी—मैं निराला नहीं हूँ मैं डा०
 मुहम्मद हुसन हूँ। निरागा का दक्कर सरहपा याद आ गय। तिनका अभी
 अभी भी मैं अध्ययन कर रहा था। सरहपा अब सं १२०० वय पहले पदा
 हुए थ। वह भी महान् कवि थ, वह भी असबद प्रलापी थ साथ हा जब
 सबद बाने करत तो उनक मुह स माती परत। निराला न सिद्धा का पय
 नहीं पकडा यद्यपि सिद्धा क समा गुण उनम थ। यदि पकडा हाता ता कौन
 कह सकता है कि वह पाठीचरी और तिरुवन्नामल क सिद्धा स आग न बड
 जात। पुराना न एस निरकुण परतु महान् पुरुषा का अधिक मयत बनान क
 लिए एक उपाय निराला था। वल्लि कहना चाहिय सिद्धा न अपन-आप
 उपाय निकाल लिया था। सरह नाल्ना म पढकर महापण्डित हुए वही
 साला अध्यापक भित्तु रत्न। जब अपन समय क पावण्ड सूठे मालूम हुए ता
 एक क्षण क लिए भी नहीं रुक। भिक्षुजा का भेन और आठम्बर ताड फेंका।
 पढिनाई क सम्मान का सलाम किया। लाग उनके प्रति अत्रिकात्रिक घणा
 करे वसक लिए कटिवद्ध हा गए। गराव पीन लग। फिर एक बाण का
 फल बनानवाली (मिकलागड की) तरुण कया का साथ म ले लिया। खुद
 भी बाण का फल तयार करन लगे। गर बनान क कारण लोग न उनका
 नाम सरहा रख दिया था। वह अपनी तरुण सगिनी—जिस सिद्धा की भापा
 म महामुद्रा कृत हैं—का लिए एक जगह से दमरी जगह घुमन लग।
 सयाना न कहा, कान् अमबद प्रलापी पागल है। काई कहता—दुराचारा
 गरावी, लुगाइ लिए फिर रहा है। चारा बार स पहल दू पू क गल मुनाई
 दन लग। सरह यहा चाहत थ। वह खुग हात थ। लकिन वतुन त्तिना तक
 दुनिया उनका उपशा नहीं कर सका। साधारण जन उह महात्मा कहन
 गय। सरह अपना पढिताई का कोई उपयाग नहीं कर रह थ। मन्वृत का
 छात्र चुन थ। कभी कनी लागा की भापा म बाल पढत जो दादा का रूप
 लन। उनका भापा इतनी सरल था कि उस समय का साधारण आत्मा
 भी ममज्ञ सरदा था लकिन उसका लथ इतना गम्भीर नी हाता कि कि

पडिन भी गाता खान लगते । बहुत वप नहीं बात कि सरह का सब लागी न मिर माथा पर चढ़ाया । बड़े-बड़े पण्डित उनकी चरणधूलि स्नान के लिए दौड़ते । बड़े बड़े मुकुटधारी उनके पैरों में अपना मुकुट रखते । सरह का वभव को जरूरत नहीं थी सम्मान की जरूरत नहीं थी । वह अपनी अपभ्रंश की कविताओं द्वारा अमर होने की इच्छा भी नहीं रखते । भारत में कई गतालियाँ के लिए वह मर भी गए । तिरवत ने उनका रक्षा की और वहाँ अब भी जीवित और परम सम्मानित बन रहे । जन्त में हमारा दंग भी उनके भुलान के लिए पश्चात्ताप करने लगा ।

सरह समाज के डोंग और पाखण्ड से तंग थे । चाहते थे कि लोग उन्हें छोड़कर सहज जीवन बिनाएँ । धर्म के नाम पर जितनी जलाय बलाय घुसा जाइ थी उमके ऊपर उहोंने जबदस्त प्रहार किया । गारख बबीर और दूसरे फक्कड़ मत उही के रास्ते पर चल कर पाखण्ड खण्डन करते रहे । निराला ने कवितादेवी की आराधना की । कभी कभी में ख्याल करता हूँ यदि वह सिद्धा के मांग का अपना कर महामुद्रायुक्त हुए हान ता अधिक उपकारक हान । महामुद्रा जैमी-तैसा तरणा नती हा सजता । सिद्धा के सम्प्रदाय में उसका नामिख का जो वणन है उस पर उतरनवागे कुछ पद्मिनियाँ ही हा सजती हैं । यदि मिसा पद्मिनी ने निरालाजी के लिए आत्मात्मग किया हाता, तो वह भी घय घय हाता ।

मम्मलन का आर से अंग्रेजी हिंदी बांग यन रहा था । उनका दफ्तर में इन्कटा हा डा० बानूराम सक्कना डा० बीरेंद्र वर्मा डा० बाहरी श्री रामचंद्र टंडन जादि स मुआकान हा गई । वही प० रामनरंग त्रिगठी भी मिल । जगत् तिन थद्ध प्र टंडनजी के दंगन लिए । उनका क्षाप्र टूजा कि मैं प्रयाग में रहूँ । पर प्रयाग की गमिया बरमाना का मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता था और काम के लिए तो स्थान बना नहीं सकता था । उम तिन अमन पत्रिका के त्पतर में एक छागे-मो चाय पार्टी हुई तिमम मरत्पा के दाहारोग के ऊपर मैं चला । पत्रिका ने तालपत्र के फाटा के साथ मरी कई वानें भी छापीं । अब की एक युग के मित्र में मुआकान हुई । १९१५ १६ में मैं आगरा में जरवी पत्ना था । उम समय वहाँ के वपनिम्न हाइ स्कूल के प्रिंसिपल श्री ममुजल बादजक से परिचय प्राप्त करने का अवसर मिला

था और उनके सौहाद्र स मैं इतना प्रभावित हुआ था कि मैं जीवन-यात्रा के पहले खण्ड म उसका उल्लस किया था। उनक पुत्र था जगन्गीकुमार सस्कृत और हिन्दी क पण्डित हो प्रयाग क क्रिश्चियन कालज म दाना भापाजा के विभाग क अध्यक्ष थ। उहाने मरी पुस्तकें पढत पत्न उन पक्तिया का भी देखा जिनम मैं उनक पिता का स्मरण किया था। जगदाङ्गकुमार जी न मरे पास चिटठी लिखी और अपना परिचय दिया था। मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। वह पुराने मित्र के योग्य पुत्र थ। इसका तो ह्य हाना हो था। साथ ही यह जानकर कि जगन्गीकुमार न वह आन्श उपस्थित किया जो कि नय भारत क इसाई तरुणा का हाना चाहिए। घम म वादवल, ईसा मसीह के मानने म कोई हज नही पर सस्कृति म सभी भारतीय एङ हैं चाहे जास्तिक हा या नास्तिक चाहे हिन्दू हा इसाई या मुगलमान। ईसाई तरुणा को जगदीग कुमार न रास्ता लिखला दिया। जब उहाने बतलाया कि पिताजी भी यही जाय हुए हैं, ता मैं उनके मिलन क लिए लालायित हा गया। शाम का वहाँ कुछ मित्रा की चाय पार्टी हुई। समुजल—श्यामलाल म बदला हुआ नाम—साहब की बटी बनी मूछें सकेली थी, देगा गुभ्र वप म थ। गायद घाती पहन हुए थ। छाती लगा कर मिले। उसो दिन मेरी पहली उडान क कलकत्ता क साथी श्री महादेव प्रसाद मिले। यह ५७ वप पहले की बात है। लकिन महान्त्र प्रसाङ्गी से इलाहाबाद म जब-तब मुलाकात हो जाती थी। बद्ध मालूम ही हाना चाहिए। हमारी उमर के वह भा थे।

प्रयाग स अब श्री जयगापाल मिश्र के साथ बनारस जाना था। यद्यपि ममूरी स यही निश्चय हुआ था था कण्ण बरी क यहाँ हम ठहरगे पर प्रयाग म श्री दवनारायण द्विवेदी का पत्र आ गया था जिसम बाबू गिब प्रसाद गुप्त और मन्मथ का उल्लस करते हुए जार कर लिया था कि सवा उपवन म श्री मत्स्यद्र जी क यहाँ हा ठहरें। सबमुच ही बाबू गिब प्रसाङ्गी क स्नेह और मम्मान को भूलना मर लिए समभव नही है। जब मैं सारनाथ म ठहरता ता वह वहाँ मिलने आत थ। भारतीय स्वतंत्रता और सस्कृति के वह अनय आराधन थ। चूकि मैं बहतर भारत क पुरान सम्प्रदा का जागत करन म लगा हुआ था इसलिए उनका मरे प्रति विशेष

पक्षपात था। एमे कामा म वह हमेशा महायता देने के लिए तयार रहते थे। छावनी मे स्टेशन से उतरे ता द्विवदी जी और बेरीजी दाना मौजूद थे। इतनी जल्दी म पत्र मिला था कि हम बेरीजी को सूचित भी नहीं कर सकं। बडे दुविधा म पडे। बेरीजी का समझाया और सवा उपवन चले गये। इसके लिए ररी जी को नाराजगी हुई हा यह स्वाभाविक था। लेकिन करता क्या? दोपहर का स्नान भोजन करने स पहले स्टेशन स आते हुए रास्ते म अपने विद्यार्थी जीवन स घनिष्ठतया सम्बद्ध मोतीराम क बगीचे को देखन गया। बनारस आन पर इमका देखना मैं नहीं भूलता। बगीचा खतम है। जहाँ कोयरी खती करता था, वहाँ गायनका मस्जुत छात्रावास है। भीतर अभी जमीन खाली पडी हुई थी। ब्रह्मचारी चन्द्रपाणि की कुटिया अब भी खडी थी। पुरान निवासियों म स अब काई रह नहीं गया था।

सवा उपवन म जाकर स्नान भोजन और थाडा विधाम किया। इमक बाद फिर मित्रा से मिलने के लिए निकला। हिन्दू विश्वविद्यालय म पडित हजारी प्रसाद द्विवेदी घर पर ही मिल। वच्चो ने उलाहना दिया यह क्या नहीं ठहर। वामुदेवशरणजी क घर पर गये। वह इस वक्त कलकत्ता गये हुए थे। लौट कर उपवन म थाडा ठहरा। प० रामचन्द्र गुक्ल क पाते ने पहल ही वचन ले लिया था कि हमारे घर पर गुक्लजी क फोटा का उद्घाटन करें। जिन सेता म गुक्लजी ने अपना घर बनाया था वह मेरे परिचित थ और परिचित थ रानी बडहर के मकान और मन्दिर। वहाँ जाकर चित्र उद्घाटन किया। यन्त्रि देगी समय के मुताबिक काम हाता ता कही न कही प्राणाम दून्ता, इसलिए आग्रह का न मान कर समय पर ही उद्घाटन और भाषण किया। गुक्लजी ने अपन क्षेत्र म हिन्दी के लिए कितना बडा काम किया यह इसी से मालूम हुआ कि अब भा उनक हिन्दी क इतिहास को परास्त करनेवाला काई पदा नहीं हुआ। वहा स ५ बजे भईना म तुलमा पुष्पमालय म स्वागत हानवाला था। असी सगम गूदर-दाग का अखाडा, मोतीराम का बगीचा कागी क य वह स्थान थे, जहाँ मैंने सस्कृत ही नहीं पडी, बलिन जहाँ नागरिक और साहित्यिक जीवन स परिचय प्राप्त करने का मौका पाया। तुलमी घाट यही है। लेकिन मर समय

म अभी तुलसी के नाम से कोई पुस्तकालय नहीं बना था। पण्डितता में अब मरे परिचितता में स कोई नहीं रह गया था। बहुत कम ही पण्डित कुत्तप तक काशीवास के लिए रह जाते। विनापकर यदि उनका घर बनारस में नहीं हा। वहाँ कृतज्ञता प्रकट करन थोड़ी दर 'आज' कार्यालय में हा बरीजी क हिली प्रचार पुस्तकालय में और उनक विद्या मन्दिर प्रम में गय जा मान मन्दिर क पास था। समय क साथ हमारे प्रम आग बढ रहे हैं, और छपाई क आधुनिक साधना स सम्पन्न हा रह हैं यह बरी जा क इस प्रेस स मालूम हुआ। यही श्री परमश्वरालाल गुप्त त्रिभुवननाथ श्री ठाकुर प्रमाण सिंह और दूसर वृष्ट मित्र भी आ मिल। वहा स कचौरीगली हात आदि विन्वश्वर क पास प० गिवगापाल मालवाय क यहाँ थोड़ी देर क लिए ठहरे। इनन बधुआ से मिल कर बन्ग आत्म-मताप मिला और ६ बज हम उपवन लौट।

०२ क साठ सात बजे ही जयगापालजी और श्री द्विवेनीजी का साथ लिय सारनाथ पहुँचा। काशी-यात्रा में यहाँ आना अनिवाय होता है। महा-वाग्नि स्कूल की इमारत काफी बढ गई थी। लद्दान का एक बघ कई तम्बा माधुआ का लिए ल्हासा जा रहा था। उसन अपन यहाँ की हाल्वाल बताई। मन्दिर और पुरान ध्वसावगापा का देखते बर्मा घमगाला में महा-स्वविर कितिमा स मिल। चौपन में यदि गरीर मूखता है ता वह फिर कस हरा हा सकता है। कितिमाजी न अपना नारा जावन भारत में और वह भी भारत और बर्मा क सास्त्रनिक सम्बन्ध का पुनरुज्जीवित करन में लगाया। मर भतीजे उदयनारायण पाण्डे अब यही महावाधि स्कूल में अध्यापक थ और रहन के कितिमाजी क पाम। उनक दा लडक और दो लडकियाँ थी। गहपली भी यही रहती हैं। गिंसित और सस्त्रुत जावन के लिए आज क गाँवा में वहाँ स्थान है? पहा क जा जाविका क साधन थ वह भी अब नतम हा रह हैं इसलिए इस वा का ता आन या कल ता गाँवा स माना हागा, या हमारे लागा क तल पर रहना हागा।

उदयप्रताप कालज में बालन का आग्रह था किन उवर १० बजे कागा विद्यापीठ में नी समय द दिया था, इसलिए कालज में मान मिनट स अत्रिक बाल नहीं सका। विद्यापीठ में भाषण दन क बाद डा० भगलन्व

जी के यहाँ गया। सभी जगह जल्दी चली थी। मध्याह्न भोजन बेरीजी व यहाँ करना था। कितनी ही जल्दी करे, लेकिन समय स डेढ़ घण्टा बाद पहुँचे। उनका घर बनारस की टेनी मढ़ी गलियों में था, जहाँ स्वयं पय प्रदशक बनना पटा था।

वहाँ मे फिर साथी रस्तम सटिन और मनोरमाजी के यहाँ चाय पीने गये। फिर ४ बजे नागरी प्रचारिणी सभा में स्वागत के लिए उपस्थित हुए। यहाँ बहुत से परिचित बंधुआ के दशन हुए। ५० चन्द्रबली पाडे भी थे, ५० हजारीप्रसादजी भी। फिर कार में दौड़े विश्वविद्यालय की साहित्य सहकार समिति में। स्वागत गाण्ठी के लिए उपस्थित हाना पडा। गाण्ठी ५० मनन द्विवेदी व अनुज अवध द्विवेदी व निवास पर थी। श्री मनन द्विवेदी का नाम मुनकर हृदय में टास पैदा हाती है। यह हिंदा का प्रतिभा शाली लेखक और रवि जवानी में ही अपनी मारी क्षमनाआ स हिंदी माता का वचित कर चल चला। उनको भाजपुरी की वसततल-सम्बधी कविता की पांतिर्या अब भी मेर वाता में गुनगुनाती हैं। सरकारी नौकरी हाने से छद्म नाम से उनके लेख "प्रताप" में निकलते थे, और हमार जस तरुण उसक एक एक जक्षर का घोट कर पीत थे। ऐसे पुरुषों का इतना जल्दी क्या चला जाना चाहिए? उनको बहुत दीघजीवा हाना चाहिए था। उनमें अनुज भा साहित्य के एक बहुत ममन हैं। जैगरी के अध्यापक हैं, पर हिंदी का स्नेह अपन जप्रज स पाया है। कहना चाहिये राटी अप्रजी का खाते हैं और काम हिंदी का करते हैं। कई वर्षों से आँखा का ज्यानि जाती रही, लेकिन उह सदा प्रमान दया जाता है। विश्वविद्यालय से अब फिर अन्तिम प्राध्यापक पूरा करने के लिए गोशील्या में सरस्वती प्रेम में पहुँचे। यद्यपि श्रीपतिजी और अमृतजा न अब अपना स्थान प्रयाग में बदल दिया है लेकिन इस मकान को अभी भी अना पास रखा है। यहाँ माकर्मिय कठन में बालना पडा, और माडे ६ बजे रात का लौटकर अपन निवासस्थान पर पहुँचे।

बनारस के पत्रों में आने और रहने के स्थान की सूचना निकल गई थी, इसलिए मित्रों को पता हा गया था। २३ के आधे दिन तक हम यहाँ रहना था। मवेर ७ बजे स ही इष्ट मित्रों न दान देना शुरू किया। अधिनतर

ऐस ही विद्वान आए जिनस मिलकर कई काम की बात करनी थी। प्रिसि पल राजवली पाठे डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी श्री परमेश्वरी लाल गुप्त, श्री महेंद्र शास्त्री यायाचाय श्री दलमुखभाई मालवणिया, स्वामी सत्य-स्वरूपजी और स्वामी यागीरानन्द से ६ बजे के बाद तक बातें होती रही। सभी अपने-अपने काम म तमय हैं यह जान कर प्रसन्नता हुई।

इस यात्रा का एक निजी प्रयोजन भी था वह था अपनी पुस्तका क प्रकाशन का प्रवच करना। एक प्रकाशक ने पहल चिट्ठी द्वारा आशा दिलाई थी कि हम बहुत सी पुस्तक छाप देंगे और कुछ जर्जिम भी देंगे। उहान यनि आने क दिन ही कह दिया हाता तो हम पुस्तका के प्रकाशन के प्रवच करन म सुभोता होता। जब प्रस्थान करन म दो तीन घटे रह तब अस मथता प्रकट की। कुछ पुस्तकें श्री सत्येद्रजी न प्रकाशित करनी चाही यह जानकर हम सताप हुआ।

१० बजे भारत कला भवन गये। इसका आरम्भ रायवृष्णदास ने नागरी प्रचारिणी सभा क तत्वावधान म किया था। अब वह अपने समुचित स्थान पर विश्वविद्यालय म आ गया था। श्री परमेश्वरीलालजी उसके क्यूरेटर थे। मुज सप्रहालय की सूतिया, चित्रा और मुद्राआ के देखन की उत्सुकता थी, म्युजियम का अपना मरान बन रहा था, अभी वह अस्थाई तौर स एग बेंगले म था। परमेश्वरीलालजी स्कूल से पढाई छोडकर स्वतंत्रता आन्दोलन म लग गय। एक बार पढाई छूट जाने पर फिर मुद्रिकल स ही आन्मी तरे पर लगता है। लेकिन जिसम लगन हा वह फिर अपन रास्त को पकड लेता है। परमेश्वरीलालजी का ध्यान पहल पत्र कारिता की तरफ गया। फिर पुरातत्व और प्राचान मुद्राआ ने अपनी आर इतना अधिग स्तीचा कि वह उसी क हो गय। आजमगल म रहते उनक एक मन क करीब कुपाण और पुरान सिक्का का मैं लेन चुका था। उच्च शिक्षण सस्याएँ उनका दृत्कारती थी क्याकि उनक पास उनम प्रवश करने क प्रमाण पत्र नही थे। लेकिन क्षमता रखने वाले जादमा का कत्र तक दूर रपा जा सकता है? उहाने अपन लेखा द्वारा अपनी विद्या का परिचय दिया। वह सीधे एम० ए० म भरती हाकर सम्मान-महिन उत्तीण हुए। आजकल क जमान म जब डाक्टर की उपाधि टक सेर बना दी गई है, ता

उसका आकषण भी नहीं हो सकता। लेकिन, परमश्वरीलालजी के लिए वह वाइ कुम्भ चीज नहीं है। कागस वह फिर बम्बई के म्यूजियम में बुना लिए गया, जहाँ डा० मोतीचन्द के साथ अब काम करते हैं।

कागी का अबका निवास कितना व्यस्त रहा यह ऊपर के वणन में मालूम होगा। लौट कर भाजन किया। श्री सत्येन्द्रजी के साथ छावनी स्टेशन पहुँचे। बाबू शिवप्रसादजी अपने दाना नानिया का शेर और भालू कहते थे जो उनका गरीर का दर कर उलटा हो गया। सत्येन्द्रजी अपने नाना से अधिक मिलते हैं और उनके अनुज दुबले पतले हैं।

पटना—गाड़ी चढ़नेवाली थी जब कि हम डब्बे में पहुँचे। १ बजन वाला था। हमने मसूरी में समझा था कि अक्टूबर के अन्त में अब नीचे गर्मी का डर नहीं रहेगा लेकिन अधिकतर हम पक्षे की मदद से ही रहे। ट्रेन सीधे पटना जानी थी। बक्सर में कुछ तरुण मिलने आय, उन्हें पत्रा में मालूम हो गया था कि हम इसी ट्रेन में जा रहे हैं। आराम भी कुछ पूछताछ हुई थी। ६ बजेकर २५ मिनट पर हम पटना जंक्शन पहुँचे। जयगापालजी बनारस में ही लौट गए और हम अकेले थे। स्टेशन पर श्री देवेंद्रजी कुमुम धीरेन्द्रजी और अद्भुतजी आए जिनके साथ हम देवेन्द्रजी के निवासस्थान पर पहुँचे। देवेन्द्रजी इधर रुमी पत्न के लिए दा गाल लाने गए हुए थे। सस्कृत के माहिर्याचाय और मधारी पुरुष हैं। रुसा भापा पत्न में उनका मन भी लगा और मान आठ महीने और रहने दिया गया हाता तो वहाँ से व बी० ए० की जगह डाक्टर बन कर आते। उन्होंने चाहा एक साल बिना बतन की छुट्टी मिले लेकिन आजकल नौकरिया में निरन्तर बहुत चलती है। लान का डाक्टर दूसरा से आगे बढ़ जाता इसका भी रुसा था। उन्होंने कुमुम अपने एक दीपक और लटकी दीप्ति का भी बुला लिया था। कुमुम अपने दाना बच्चा का लकर अकेले लाने चला गई यह कम साहस की बात नहीं थी। पिता (५० गोस्वनाथ त्रिवन्ना) अपने समय के मास्टर के बटुन मधारी छात्र थे। यह यदि सादर की उच्च शिक्षा के लिए जमनी गई हाता तो एक पीढ़ा पहुँच ही यह रुसा उठ गया हाता कि समुद्र पार जाने से घम नष्ट हो जाता है। लेकिन, वह प्रथम विश्व युद्ध का समय था। तब से अब जमान आसामान का अन्त

हा गया है। अब ता ब्राह्मण हो या कोई भी जाति, बिलायत में लौट आये का सम्मान बटता या जान स निवान्न का किसको सहस हा सजता था ? देवदत्ता क पिता सस्वृत क दिग्गज विद्वान् यदि आज जीवित हाते तो न जाने अपनी बहू क इस काम का कस लेते ? दस महीने रहकर बच्चों में सप्रसे ज्यादा परिवर्तन दखन म आता था। बहू जहा गुद अंग्रेजी बाल रह थे, वहाँ साथ ही अग्रज बच्चा की सफाद और व्यवस्था को भी स्वाभाविक ढंग से साख आय थे।

२४ अक्टूबर का इतवार था। गिवपूजन बाबू सम्मेलन भवन म ही रहते हैं यह सुनकर उनके पास मिलन गये। एमा मरल और मधुर स्वभाव साहित्यकार मुन्विल स मिलगा। बहू टी० बी० सनिटारियम मे गय लो सभा हिंदा प्रेमियों का बहुत दु ख हुआ। अब वहा स ता बल आय, लकिन गरीर बहुत कमजोर था। उहान जीवन भर साहित्य आराधना को गले पढी चीज नहीं समजा। जब गिन गिन कर पसे मिलन थ, तब भी बहू उसी नमयता के साथ सबा करते थ। इस समय बहू स्वास्थ्य के क्याल स भी मेहनत करन से बाज कैसे आ सकने थे ? सभी लोग कहत थे—कम मेहनत किया करें दूसरा से काम में। लेकिन गिवजा महाराज जा ठहरे। जीवन क एक एक क्षण का माल चुका लना चाहत हैं। बहुत लागा न उन्हें लेक्चर दिया हागा। मैंने भी दिया, ता क्या पुरा किया ? अगले दिन पता लगा, चहाग हा गये थ।

माजनापरान्त नागाजुनजी क साथ भूजियम गए। जायमवाल प्रति रठान स तजूर के उत भागा का लेना था, जिनम सरह की कविताजा के अनुवाद थ। वही फेजर रोड पर पार्टी का आफिस था। यद्यपि मैं इस पार्टी का मेम्बर नहीं था, लेकिन मैं पार्टी का था उसकी कमिया क माय असाधारण घनिष्ठता होनी भी स्वाभाविक थी। पुरान माधिया से मुला कात हुई—इन्द्राय, चन्द्रायर, शायर रामावनार। कुछ दर तक उनम बातचीत हुइ। घर लौटने पर दखा, शिवजा वहा मेरी प्रतीया कर रह है। प्रसन्नता और चिन्ता दाना ही होनी थी। उहनि चिंता प्रकट करन पर कहा—“नहीं, मैं रिक्ने पर आ गया था।” सरह ब्रवावलि और ‘मध्य एमिया क इतिहास’ क बारे म कुछ बातचीत करनी थी। उन दिन गाम

का धूपनायजी भी आ गए। बिहार में प्रगतिशील गिनियाँ विभक्त थी यह दुःख की बात थी। सांगलिस्टा कम्युनिस्टा की परछाई भी लंगिना नहीं चाहते थे और जब तक यह मनावृत्ति दूर नहीं होनी, तब तक जल्दा किसी बड़े काम की जागा नहीं हो सकता।

२५ अक्टूबर को जायसवालजी के परिवार में मिलने गया। उनकी पुत्री घमगीला ने अपना बगला बना लिया था। जायसवालजी का सन्ताना में ज्येष्ठ पुत्र चेतसिंह हीरा निबल। मुझे पहले ही से उनसे यह आगा थी। कितना उदार वह पुरुष था। बरिस्टरी पास करने समय वहाँ से अपेक्ष तस्ली को परनी बना कर लाया। पिता पहले ही पुत्र का ब्याह कर चुके थे इसलिए यह उठे पसन्द नहीं आया। नया बरिस्टर अपने परांपर इतना जल्दी खड़ा कैसे हो सकता था? चेतसिंह उलटे परांपर लौट अपनी प्रेमिका का लान्छन ले गए और वहाँ अपनी विवगता का दिखलाने उससे छुट्टी ली। कुछ वर्षों भारत में रहने के बाद चेतसिंह मलाया में बरिस्टरी करने चले गए। १९३५ में जापान जाते समय उनसे आखिरी बार मुलाक़ात हुई थी। तभी उनकी बरिस्टरी जम गई थी। महाभुद्ध के जमान में पता न लगने में तरह-तरह की आगाका हा रही थी। अब चेतसिंह जायसवाल मलाया के निवासी हो गए हैं। वही परिवार है घरबार है। एसी अवस्था में उह कथा जरूरत थी कि बीस हजार रुपया देकर भाइया का उद्धार करत। जायसवालजी के बगले के लिए भाग्या और बहना में मुत्तमा चल रहा था। भाई कहते थे, यह हमारी सम्पत्ति है। बहिन कहती थी हमारा भी हिस्सा हाता है। जायसवालजी ने कोई बिल किया था पर मुझे उमका पता नहीं था। यद्यपि मैं उनके घर का एक व्यक्ति-भा था पर धरू बाता में न मुझे रचि थी और न वह उसका बारे में बनलात था। हमारे पास दूगर विषय बात करने के लिए बन्त थे। जायसवालजी के दूगर लडक बिट्टू कृषि विभाग में अच्चे पद पर थे। नारायण भी डाक्टर थे लेकिन चतुर्भुज और दीप उसी बगले में पिलानो हाटल ग्यालर अपना जीविका चलाने थे। बगला स्टेशन से नजदीक है यह अनुभूतना थी। पिछली मनच मिलने पर यही चिन्ता हा रही थी कि कही बहन जीत गई और उहाने बगल का बाँटना चाहा तो जीविका टिन जाएगा। अब वह अपन बड़े भाई का रोम-

रोम से हुआ द रहे थे। नइ पीढी किस तरह समाज के पुराने बंधना को तोड़कर आगे बढ़ती है, यह यहाँ दिखाई दे रहा था। बरिस्टर धमनीला का अब उनके पति के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। सबसे छोटी बहिन नान-नीला का ब्याह एक प्रोफेसर से हुआ। सोच समझकर शादी की थी पर पुरानी बहावत को चरिताय किया "मन मिले का भला, नहीं तो भला अवला।" वह यहाँ से डाक्टर होकर लन्दन ऊँची डिग्री लेने के लिए गई थी। बहिन बतला रही थी, वहाँ उनका मन नहीं लग रहा है।

गाम को ६ बजे सम्मलन भवन में गोष्ठी हुई। सौ के बरीब साहित्य-कार आए थे। सभा से साहित्यकारों की गाष्ठी अच्छी हाती है क्योंकि इसमें हिल मिलकर लोग बठते, अपने विचारों को प्रकट करते हैं। लेकिन, गोष्ठी की सख्या सीमित हानी भी जरूरी है। मैं भाषा और लिपि पर बोला। सारे देश की सम्मिलित भाषा होने और हमारे साहित्य और संस्कृति के वाहन बनने के कारण हिंदी हमारी प्रेमास्पद है। लेकिन मैं यह मानने के लिए तैयार नहीं हूँ कि हमारी मातृभाषाएँ—भोजपुरी, मगही मथिली आदि—उपेक्षित कर दी जाएँ। वहाँ उपस्थित साहित्य-कार बंधुआ में किसी की भी मातृभाषा हिंदी नहीं थी, और कुछ तो ठेठ भोजपुरिया थे, जिनका प्रायः मारा क्या सलाप अपनी मातृभाषा में होता है। कुछ बंधुआ ने बड़े जोरदार शब्दों में मेरे मत का खण्डन किया। कुछ के कहने का यह भाव था कि गड़े मुर्दे का क्या उखाड़ते हैं? मैं क्या मान लूँ कि भोजपुरी गढ़ा मुदा है। मरी अपनी मातृभाषा के लिए यह शब्द मैं सहन नहीं कर सकता था। मैंने अपने ऊपर बहुत सयम किया लेकिन प्रतिवाद में अपनी टांग को कामल नहीं रख सका, इसका मुझे तुरंत खेद हुआ। हमारे जा भी विचार हा उसे तब और मुक्ति-सहित दूसरा के सामने रखा। दूसरे चाह जिस तरह से भी उसका उत्तर दें, उस ठंडे दिल से सुनना चाहिए। यही मरी सामय नीति है। इसका यदि स्वयं उल्लंघन करूँ तो क्या न दुख हो।

नालदा—२६ अक्तूबर को दीवाली का दिन था। और यही दिन मेरे पास बच रहा था। उस दिन दापहर को श्री जगन्नीश्वर मायुर के यहाँ भाजन का निमंत्रण स्वीकार कर अच्छा नहीं किया था। क्योंकि तब

तब हम नालन्दा से लौट आना था। सवेरे साढ़े ५ बजे ही देवेन्द्रजी, दीपक, दीप्ति यागेन्द्रजी के पुत्र मुना के साथ योगेन्द्रजी की मोटर पर चले। उस वक़्त जधेरा था। आकाश में बालू धिरे हुए थे। कभी कभी बूँट बूँट भी हो जाती थी। फ़तुहा बरिनयारपुर बिहारशरीफ़ होते डेढ़ घंटे में नालन्दा पहुँचे। प्रायः ४० मील प्रतिघंटा का चाल रही। नालन्दा के पुनरुज्जीवन के साकार प्रयत्न को देखने में पहली बार नई साल बाद आया था। बड़े पाखरे के सामने पालि प्रतिष्ठान की एकमजिला इमारत करीब करीब बनकर तैयार हो गई थी। काश्यपजी ने सभी चीज़ें दिखलाइ। गाव के एक पक्क दोमजिले भवन को किराए पर लेकर उसे पुस्तकालय का रूप दिया गया था। नालन्दा को कभी विस्मृत किया जा सकता? क्या पुरानी इमारतों का डेरा का खुदका कर तरपी लगा देने भर से सतोप किया जा सकता है? इसने घमकीर्ति जैसे दिमाग का पदा किया। आजकल सक्डा वर्षों तक भारत के सांस्कृतिक सम्बन्ध को दूसरे देशों से टूट कराने का महान काम किया। यहाँ कितने ही देशों के भिक्षु और विद्यार्थी मौजूद थे। नालन्दा सरकार को भवन बनवाने और दूसरे साधना का जुटाने के लिए दाख्य कर रहा है। बिजली के नलकूप की तयारी हो रही है। परिदशन करके भिक्षु जगदोग काश्यपजी की बुटिया में मध्याह्न भोजन किया। काश्यपजी इन्स्टीट्यूट के आनरेरी डायरेक्टर हैं। वह रह रहे हैं डायरेक्टर पद से इन्तोफा देना चाहता हूँ ताकि काम करने में मुझे ज्यादा आजाती रह। मैंने कहा जल्दी करने की आवश्यकता नहीं। नालन्दा से राजगढ़ जान के लिए अब समय नहीं रह गया था इसलिए सिलाव जाकर वहाँ के प्रसिद्ध चूरा और राजा को खरीना। फिर गाड़ी पीछे मुड़कर दोड़ी। १ बज देवेन्द्रजी के यहाँ लागा का छाडकर मैं सीधे मायुर साहब के बगल पर गया। भोजन के साथ बातचीत हुई। फिर चाय पीने के लिए अस्तकर साहब के यहाँ।

रात का सारे गहर में दीपमाला हुई। मसूरी में भी दीपमाला हानी है लेकिन मैं उस देखने कभी नहीं गया। रात का ही डा० बनेबिहारी मिश्र मिल। हमारे दण में गाधीजी ने 'लौटा गुहा-मानव की धार' का नारा लगाया। उन्होंने इस सदिच्छा से लगाया था, लेकिन अब हमारे

भाग्यविधाता उमके द्वारा जनता को जाना म धूल झारन का काम करने हैं। देहाती विश्वविद्यालय सारे जा रह हैं जनता बालेज बनाए जा रह हैं। बालेज और विश्वविद्यालय से अभिप्राय है उच्च शिक्षण सस्थाएँ। उच्च शिक्षण सस्थाएँ गावा म कैसे फल फूल मकनी हैं? वहा एक नए नगर बमाने क लिए पमा खच करने की सामर्थ्य कहाँ है। बिना नगर के छात्रा और अध्यापका का सांस्कृतिक जीवन का सुभोता नही रहगा जिसके बिना वह वहाँ टिक नही सकेंगे। फिर इन सस्थाआ क लिए बने पुस्तकालय सप्रहाय तथा छात्रा की भारा सन्या को आवश्यकता है। मैं ता नागदा क पालि इस्टीट्यूट का भी आगल अनुपयुक्त स्थान म पाता हू लेकिन नागदा का अपना एक इतिहास है, जिसे विम्मति क गभ म स्वच्छा मे जाने नही दिया जा सकता। वह धीरे धीरे बडी सस्था हागी, वहा नगर का बानावरण भी हा जाएगा।

बिहार सरकार न देहाती विश्वविद्यालय क सगठन के काम म डा० बाकेबिहारी मिश्र को नियुक्त किया था। मैंने कहा, यदि देहान मे रखना ही है ता ऐसे विश्वविद्यालय को नालदा मे रखें। वहाँ एक इस्टीट्यूट है ही, यह भी हो जाए और साथ म एक कृषि बागज रू ता कई सस्थाएँ मिलकर अपने दूमरे अभावो को पूति कर लेंगी। लेकिन अत म उमे मुजफ्फरपुर जिल क गाँव सुरवी म बैठाया गया। १९५६ की यात्रा म डा० मिश्र मिले, तो वह बहुत सतुष्ट नही थे। वह उन्नत विद्यालयमनी जीव हैं। जा आन्मी एक अच्छे हाई स्कूल की हैडमास्टरी छाटकर किमा सत्याग्रह म मरी जगह जान क लिए तयार हो जाए उसक साहम क बारे म क्या कहूँ? लेकिन डा० मिश्र भारत म अग्नेजी राज्य क इतिहास के गभीर विद्वान् हैं। उसकी रग रग का जानन हैं। तन्न म रहकर उहाने दमी पर पी० एच० डी० और डी० एच० डी० नही किया, बल्कि ब्रिटिश म्यूजियम को उम दिनाल सामग्री का भी अवगाहन किया, जहाँ अग्नेजी नामन क इतिहास क मूल रकाड भारी परिमाण म जमा है। उसक लिए भारत के एनिहामिक रेवाडों की देख रग का काम हाना चाहिए था।

रान को ही दिनकरजी, नागाजुनजा थो रामखेलावन पाड और दूमरे साहित्यकार मित्र आए, तिनसे साहित्य के सम्बन्ध म बाने हानी रहीं।

दिनकर के भावों में अब भी परिवर्तन नहीं हुआ था। वह एक तरफ देश की परतन्त्रता के खिलाफ अग्निबोधा घडा रहे थे, और दूसरी तरफ अंग्रेजों की नौरुगी कर रहे थे। अब नए प्रभुओं से मेल रखने के उनका प्रयत्न के वारे में लोग बुरा भला कहते हैं। मैं तो दिनकर की कविता को देखता हूँ। उस कविता में निर्भीकता है। वह अब भी दहकने अगारों जैसे गानों में लिखी जाती है। मैं दिनकर का प्रशंसक हूँ।

लखनऊ—पटना से पश्चिम आते वक्त कुममय की ही गाड़ी पकटनी पडती थी। भला रात के तीन बजे बाईं उठने का समय है? अपन उठने का मतलब घर भर को उठाना है। ८ बजे धूपनाथ और बीरेन्द्रजी स्टेगन पहुँचाने के लिए गए। पजाब मेल पकडा क्योंकि वही साथे लखनऊ पहुँचा सकता था। कम्पाटमट में मसूरी जाने वाले दो तरुण-तरुणियाँ भी थीं। आजकल मसूरा में वही जात है जा वहाँ पढते हैं। य वहाँ के छात्र छात्राएँ थीं। रास्ते में और पटना में भी बूढ़ा-बाँदी थी, लेकिन बनारस की ओर इसका कोई पना नहीं। रेल के सफर में इस्लामिक लन का नियम स्यगित रहता है, उमर बिना ही भोजन किया। बाईं बजे गाँगी लखनऊ पहुँची। साथी गिब वर्मा और यगपालजी की पुत्री मटा अपन भाई के साथ मिल। भिक्षु प्रनानन्द भी आए थे। उनका बहुत सत्ताप होता यदि मैं रिमालदार बाग बौद्ध विहार में ठहरता। लेकिन, मित्रा का मिलने जुलने में सुभीता यगपालजी के यहाँ रहता है इसलिए उनके और प्रकाशवतीजी के अनुपस्थित रहने पर भी उनके ही घर पर ठहर। श्रीमती माहिनी जुलगी और जुलगी साहब भी आए। दूसरे बौद्ध विहार में मचू भिक्षु मगलहृदय भी मिले। दुर्गा भाभी के घर जान पर उनके पुत्र सतीश का पहली बार देखा। मतीश के ३ साल बाद अमेरिका से पढवर लौट थे और अब किमी सर्विस में लग हुए थे।

यद्यपि पिता माता नहीं थे लेकिन मटा और नन्दू न आतिथ्य सत्कार में किमी तरह की कमी नहीं हाने दी। दाना ने नाटक भी लिखलाए। अगले दिन नगानल हेरल्ड प्रेस गए। 'मध्य एशिया का इतिहास' का दूसरी जिल्द यहाँ खटाई में पनी हुई थी लेकिन अब प्रकाशन होकर श्री सीताराम गुठ आन वाले थे इसलिए उनकी तदेही पर पूरा विश्वास था। हम पहली

जिल्द को भी वहाँ पर दे आए। नगनर टेररड देग का एक बहुत बड़ा प्रेम है लेकिन उसकी व्यवस्था औद्योगिक युग के अनुरूप नहीं सामन्ती युग-भी मालूम होती है। वह अपना खर्च भी नहीं निकाल सकता और वज के बाप में दबना जा रहा है। उसका सम्बन्ध रफी अहमद किदवई जैना बमठ आत्मी है जो नहीं चाहता कि हाथ का लगा विरवा मुरवा जाए किमी पूजापति के हाथ में चला जाए। बहुत में कामा के कारण रफी साहब का समय भी निकालना मुश्किल है लेकिन जब गज की पुकार हुई तो भगवान् नग पर लौटने के लिए भी तैयार हो गए। प्रेम का ठोस ठाक करन के लिए वह गुठेजी का जाए। लेकिन गुठेजी के जान का सब बात तय हान से एक हफ्ता भी नहीं बीता कि रफी साहब लाखा को रलाकर चले बस। गुठेजी से तब भी कुछ हान की आगा थी लेकिन जहाँ सारा मानव यन टी० बी० का मरीज है, वहाँ एक आत्मी क्या करता? मैं उसी समय गुठेजी का कह दिया था कि सम्मेलन प्रेम को न छानना। सम्मेलन वाले भी उह छोटन के लिए तैयार नहीं थे। गुठेजी का क्या जब यहाँ कुछ हात नहीं देखा, तो प्रयाग लौट गए। वहाँ काम भी था और अपना घर भी।

गाम का ६ बजे बौद्ध विहार में बुढ़ के जीवन और काय पर कुछ बोला। ६ बजे साथी प्रेम (निवाम-स्थान) में माहित्यकारा की गांठी हुई। यहाँ पर भी हिन्दी जप्रेजी तथा हिन्दी-अन की मातृभाषाजा की समस्या पर बालन हुए मानभाषाजा का मैं बड़े जोर के साथ समथन किया। लेकिन लखनऊ के दास्ता न पटना वाला के जितन ही मित्रा की तरह कोई अमतोप नहीं प्रकट किया। कोई यदि सदेह प्रकट करता तो मैं पटना की तरह अपने गढ़ना में गर्मी लान के लिए तैयार नहीं था। श्रीमती रजिया बगम भी आई। साथी सज्जाद नहीर की पत्नी हान के कारण उनका विशेष मद्भाव हाना स्वभाविक था। मुझे उनका वह रूप भी याद है जब नई-नद ब्याहकर आई थी और मुन-मुना कर समझ गया था कि मैं उलू विराजी हूँ इसलिए बड़े गुम्न में मर मामन अपने भावा का प्रकट कर रही थी। लेकिन मैं उलू का विगधी तो कभी नहीं था। उलू-माहित्य हिन्दी अक्षरा में भी छप, दस विराष नहीं कहा जा सकता। अक्षरी उहाने जब कहा कि अपने मतीजे नतीजिया का भी

दंगल न लिए तगरोफ लाए। योगिन बरत पर भी जय में उमर लिए समय नहीं गिनाल सवा सा इसका अफगात बहुत समय तक रहा। वहाँ आया घंटा भी निपाला पी पुरता नगी थी और मसूरी आने पर जान पता था, मैं समय गिनाल साता था और मुन उरता था पाणि था। साथी मजान जहार यपों म पाकिस्तान की जेग म बरत हैं और यह थीर महिला अगत मून पर अप। बचो पा सभा १ हूण यहाँ है। रजिया कहागी गिगती है। हिन्दी म भी गिगन लगी हैं। जगत म मा की भटक है नहीं सा हिन्दी बाल का उदू म और उदू बाल का हिन्दी म लिगने क लिए भारी सवारी पी आयस्यता नहा हाती। यन्दि बोता दलिया पी पुस्तकें नागरी म छपा लगे तन सा और भी सुभीता हा सनता है।

२६ अक्तूबर का साथी गिव वर्मा न साथ 'जगुग कार्यालय म गा। साथी रमन और दूगरे भो मिले। बगरो सामाजी क साथ देग और जाता पी सवा करन वाली सस्थाआ और ब्यक्तियों का बमा कट्ट उठाता पडता है और बितती प्रतिभूत समम्याआ का सामाग करना पडता है इस उरा समय से जानता हूँ जबकि मैं छपरा जिले म काग्रग का काम करता था काम पी सबसे बनी जिम्मेवारी मेरे ऊपर थी। आदोलन कभी गरम होता तो सभी साधन जल्दी जुट जाते। जब टडा पड जाता लोगो म निरागा फल जाती ता गिगिटयो के लिए टिट का जुगता भी मुदिबल हा जाता। मरीना मवाग का बिरावा गही चुताया जा सनता था। लेकिन जिस काम पी आयस्यता हानी है यन्दि उसन करन वाले हो तो यह रन नहीं सनता। जगुग पी आवश्यकता थी, उसम काम करने वाले साथी भी मौजूद थे। अपना प्रेम नहीं था। सस्ता छापन क लिए कम्पाज भर अपने यहाँ करा रत थे, फिर दूतर प्रस म छपरा लेत थे।

मध्याह्न भाजन श्रीमती माहिनी जुगशी क यहाँ हुआ। अपना मवान निरायेगार मे छूट नहीं रहा था, इसलिय उह हातर म रहना पडता था।

मसूरी—२६ की रात का कानपुर से आग वाले देहरादून क ट्रे पर बठा और अगल दिन साढ़े ८ बज सवरे देहरादून पहुँच गया। स्टेशन से सीधे मसूरी आगे म सुभीता रहता है, क्यारि वही बस या टक्की मिल जाती है। लेकिन, यहाँ भापण देना स्वाकार पर लिया था, इसलिए चुकलजी क यहाँ

पहुँचा। उसी दिन ११ बजे साथी कार्यान्वय और मेहताजी भी मसूरी से आ गए। हालचाल मालूम हुआ। ४ बजे दयानन्द कालेज के हिंदी विभाग और साढ़े ५ बजे इतिहास समिति की ओर से भाषण दिये। यहाँ के अध्यापक म प्रो० मुकर्जी अपनी खास विनोयता रखते हैं। प्रतिभा व माय अपने विषय—इतिहास—में उनकी असाधारण रुचि है। उन्होंने पश्चिमी उत्तर प्रदेश में गदर पर डाक्टरेट के लिए अनुमान मेरी देख रत्न में करना चाहा। मैंने स्वीकृति दे दी और यह भी बतलाया कि ब्रिटिश म्यूजियम में इस सम्बन्ध में जो सामग्री है उसकी प्राप्ति का उपाय डा० बैंकिविहारी मिश्र बतला सकते हैं। चिट्ठी लिखने पर डा० मिश्र ने बतलाया भी। सभी सत्याग्रह में अब योग्यता का नहीं बल्कि जात पात और सम्बन्ध को देखा जाता है। यहाँ के इतिहास विभाग के अध्यक्ष थड डिवीजन के एम० ए० थे। यदि उनकी देख रेख में एक दा डाक्टर हाँ जाएँ, तो महिमा बढ़ जाती, इसलिए पीछे प्रो० मुकर्जी को इसके लिए बाध्य किया गया। उन्हें बहुत सकोच हुआ मेरे पास जान में भी। जब मुझे यह मालूम हुआ तो मैंने कहा—मुझे इसके लिए जरा भी अफसास का ख्याल नहीं हाँ सकता, क्योंकि मैंने तो आपके ख्याल से स्वीकृति दी थी। मुझसे जो सहायता हो सकती है उसे निस्सकोच आप मुझसे लीजिए। प्रो० मुकर्जी के विद्यार्थी उनकी हमेशा प्रशंसा करते नहीं सकते। कालेज के पालिटिकस से उनको कोई मतलब नहीं अपना काम से काम है। यही डर लगता है कि ऐसे योग्य आदमी की सेवा से कहीं कालेज बर्चित न हाँ जाये। कालेज के धनी धोरिया को इसका लिए क्या अफसास हाँगा? वह अपने दूसरे किसी आदमी को ला बठाएँगे। शिक्षण सत्याग्रह में इस तिकड़म को देखकर सचमुच ही दम घुटता है। लेकिन इस देश में किस जगह दम नहीं घुटता? सभी कूना करकट, सभी दमघाट स्थितियाँ के हटान का एक ही माँग है वह है लाल भवानी साम्यवादी आति।

३१ अक्टूबर का मध्याह्न भोजन प्रो० मुकर्जी के यहाँ हुआ। बगला भोजन था। मछली कई तरह की बनी थी। १ बजे टैक्सी नहीं मिला, फिर बस भी चली गई और ३ बजे की बस पकटकर हम विरुग पहुँचे और पीने ६ बजे घर पर थे। जान बक्त अभी भी मसूरी की सड़का पर बहुत से

आत्मी त्रिलोई देन थ, लेकिन अब वह सूना थी। जया ता बिलुल भूल गई थी लेकिन जल्दी-जल्दी स्मृति फिर से जागृत हो गई। दो हा हफ्ता बाहर रह लेकिन दसा म बडी और माया मालूम होनी थी। इसका कारण मनोवर्णन था। कल्पना का एक और तरण आ गया था जिससे नपाल म हमारी मुलाकात हुई थी। भारत सरकार क शिक्षा विभाग का निमंत्रण मिला, यहाँ सवमा की सगीति म तीन चार बौद्ध विभाषन भेजे जाने वाल हैं उमम में भा जाऊँ। मैं स्वीकृति द दी। इस तरह पासपोर्ट भा आसाना से मित्र जाता यह भी ख्याल था। लेकिन पीछे प्रतिनिधि मण्डल क जान की जरूरत नहीं पडी।

इधर हैपीवेली म एक दुघटना की खबर मिली। १६ अक्टूबर का एक गुण्डा गराबी इधर गुारा। मसूरी क बाहर क पहाडी गाँवा म गराब बनाने की छूट है वह सस्ता मिलती है। पियकरड यहाँ जाकर पी आन है। गुण्डा पीकर आया। पहले उसने कल्याणसिंह क बच्चे को घमकाया। चिल्लान पर चौधरी ने ललकारा यहाँ म भागा। फिर रतिलाल क यहाँ उलझ पडा। यहाँ से चालविल पाटन मे आग प्लेजास क सामन पहुचा ता गर्मा स्याल बागी और डा० रघुनन्दनलाल मिल गय। उसन छरा दिवलाया। गर्माजी क पास एक रुपया और कुछ पस थे। उसे छीनकर यहाँ से रफूचकर हुआ। गर्माजी प्रभावशाली व्यक्ति है। स्यालबाट के जपन लाखो क बार बार को छोकर यहाँ आय और अब भी उनका बडा कारबार है। डा० रघुनन्दन लाल मेडिकल कालेज के बडे पद म पगान पानर अधिनतर यही रहते हैं। उनक साथ यह घटना हुई और पुलिस कुछ नहीं कर सकी। हालाँकि यह पता लग गया था कि वह यहाँ क एक हिन्दू सटिक का सम्प्रधी है। आखिर पुलिस किस मज की दवा है और क्या पहल से तिगुना चौगुना उस पर खच किया जाता है? जान तो पडता है कि अब वह कवल गामक दल की आत्मरक्षा का सगस्य साधन मात्र है नागरिक स्वतंत्रता की एक एक बात को कुचलना उसका काम है।

इधर डा० सत्यकंतु एक महीने के लिए चीन गए थे। १० नवम्बर को उनक स्वागत के लिए चाय पार्टी दी गई। सभापति का आसन मुझे स्वीकार करना था। २० से ऊपर मसूरी के सभी गण्यमाय लोग यहाँ मौजू थे।

डा० सत्यकेतु चीन की प्रगति से बहुत प्रभावित हुए। अभी बुल पांच ही साल ता कम्युनिस्टा का बहा गामन मेंभाले हुए थे। चीन मे बेकारा नहीं है, वहाँ भ्रष्टाचार बिन्बुल नहीं है। य दा चीजें भारत स गय हुए किसी भी समझदार का सबसे ज्यादा अपनी ओर आकृष्ट कर सतती हैं। बतला रहे थे, उच्च शिक्षा नि गुन्न है। जिस कालेज मे छात्रों की संख्या कुछ सी थी, वहा अब उनकी संख्या हजारो हा गई है। चिकित्सा भी नि गुन्न है। अन गन का लाह कारखाना १९४६ म पाच लाख टन लाहा पैदा करता था अब वह बीस लाख टन कर रहा है। डा० सत्यकेतु राजनीति और अध्यास्य क विद्वान् हैं इसलिए वह हरेक चीज के आँकड़े अपन साथ लाय थे। उहोने पत्रों मे अपनी यात्रा पर कई लेख लिखे। थोताआ म जिनका आर्थिक कठि नाई भी नहीं है, उनके मुह म भी डा० सत्यकेतु की बातों का सुनन पानी आ रहा था।

हम सरहपा की कविनाआ क ऊपर भिडे जिनका मूँ नष्ट हो गया है, उह ति वही स हिंदी म कर रह थे। काफी परिश्रम का काम था। इस समय याद आता था कि यदि हम मसूरी की जगह बरिम्पाग म रहते, ता बहुत अच्छा होता। वहाँ कोई न कोई निम्बनी विद्वान् सहायता दन के लिए मिल जाता।

१४ नवम्बर को श्री डा० लक्ष्माधर गास्त्री आए। १७ १८ माल ल दन म रह। सस्कृत के विद्वान् थे, वहाँ जाकर डाक्टर हुए। कभी कभी आर्थिक कठिनाइयो म भा पटना पडा। तो भी यहाँ से बहुत अच्छी हालत म रहे। निश्चित जीवन बिता रह थे। कानून क अनुवाद क लिए स्पेगल अपसर नी नौकरी क लिए भारत सरकार ने बिनापन दिया। वह कानून के भी विद्यार्थी थे, सस्कृत के पंडित थे। अंग्रेजी म दन कानूनों का हिन्दी म अनुवाद करने की उनम पूरी क्षमता थी। लेकिन बिनापन मात्र से नौकरी थाडे ही मिल सतती था। वहाँ मे लिखकर माफ करा लेना चाहा, लेकिन सद्दह ही म रखा गया। खतरा नहीं लेना चाहिये था, लेकिन अपन स्वतंत्र देग का आकषण बहुत था। हवाई जहाज का कई हजार का खच उठाकर यहाँ आए। पंडित सविम कमीशन म गय। कह रह थे—यहाँ ता पहले ही मे सब ठीक ठार था, इष्टध्यू के लिए या ही बुलाया गया था। “कस्तो खुदा

पर छोड़ के लगर या ताड़ के आय के अब पछता रहे थे। लौटकर जाने के लिए सर्चा नहीं था वहाँ जो नौजरी थी उससे स्त्रीफा नेकर आय के और यहाँ दिल्ली में बोर्ड पूछन वाला नहीं था। डा० पाडे के माय मानव भारती में ठहर हुए थे। विपद जवेली नहीं आती। बेचारे गिर गये बड़ी चाट आर् और महीने स ऊपर चारपाई पर पडे रहे।

२० नवम्बर का हमारे मुहल्ले में रतिलाला की लडकी कम्पनी की गादी हुई। वाराण गाजियाबाद से आई। बर ग्रेजुएट और हटटा कटटा था। मुहल्ले वाल दगनर वही प्रगसा कर रहे थे। लाला कह रह थे पाँच हजार गिनवा ता लिया, लेकिन बर का देखकर हम सतुष्ट हैं। क्या भी स्वस्थ जीर अच्छी मट्रिक्स पास थी। हमार यहाँ गादी के साथ जिस तरह घरबादी हाती है इसका एक उदाहरण हमारे सामने था। जितने रुपये वहाँ दिए उससे कम की चीज यहाँ नहीं दा होगी। ऊपर स सौ के करीब घराती बराती मेहमाना का तीना दिन तक भाज रहा। आजकल मसूरी के सभी बनिय अपने भाग्य के लिए रो रहे हैं। रतिलाल बूडे लाला गादीलाल क पुत्र का एक दजन स ऊपर का परिवार है। उम बोझ के साथ साथ इतना खच। बिदाई के दिन भोज में हम भी शामिल हुए। तरह-तरह के पक्वान थे। अभी सब भाइया को मिलाकर आधे दजन लडकियाँ ब्याहने को हैं। यह सबसे बड़ी लडकी थी। हरेक के ब्याह के लिए दस दस हजार रुपये कहा स आएंगे ?

दिल्ली—दिल्ली में नावियत भारत मत्री सघ का सम्मेलन हा रहा था। मैं उसमें शामिल हान के लिए २४ नवम्बर का मसूरी से चला। मेरे मित्र श्रीहरनारायण मिश्र के पुत्र प्रो० रुपनारायण मिश्र आगरा यूनिवर्सिटी में पी एच० डी० के लिए मेर निर्देशन में अनुसन्धान करना चाहते थे। मैंने स्वीकृति दे दी। मैंने साचा दिल्ली से देहरादून की यात्रा रेल स तो बहुत कर चुका हूँ जरा मोटर स कुरुभूमि की सँर करता चलू। कुछ हफते अगर कुरुभूमि में विचरता ता बहुत सतोप हाता यदि वह सम्भव नहीं है ता यही सही। २५ तारीख को देहरादून से सीधे दिल्ली जाने वाली बस पम्डी। वह सवा १० बजे खाना हुई। बस से एक बार पहले भी सिवालिक को पार कर चुका था। यह दूमरी बार जा रहा था। यहा रास्ते पर पडनेवाला

सिवालिङ्ग मूला नहीं है। एकी, मुत्तयत्तनगर द्वार में बस योग-
योगी दर के लिए श्री। बुद्ध का हंग नग मुनि बंदी प्याज मालूम नहीं
थी। जान पटना है लोगों न एक एक शुरु शर्मन उन दारों के। मी शरी
हुए गया की नहर निकले। उसन बुद्धमि का मी नग मरु से का मी
ज्यादा सहायता की। हमारी बस मार ४ दंडे मिली ३ अत्रनगे दंडाई
पर पहुँची। हमार नहुपासिया म एक मिकव दमनो अत्रन १-३ २२ के म
बच्चा क माय जा रह स। उहानि अत्रिओ में कायन की काय मी री दी।
यदि कायन जम का रग का न लेवत का मालूम गया कि कोई अत्र-
दमनो को रह है। कायन वस्त्रे ममूग के शिमी का दंड में मरु शरी।
वहाँ की मोरा अत्रेजी वहाँ मूत्र न जाय ममिगि माता गिगि का शिहर
पनी थी। उहाँ क पास अत्रन तान वस्त्रों क माय एक और पत्रागी माली
थे। पिता का रग बिबुल मालिन जैसा था। वय मूला मरु मालिन
और शिगिन मालूम हाठ में लकिन महीन अत्रन वस्त्रों म अत्रेओ म मालिन
की एक बार भी कोशिया नहीं का। क्या ममक गिगि मिकव ममनी का दंड
लिया जाए? यह हमारी सहायता का भागे अपमान म, मरु एक मरी।
लेकिन उसक अपराधा वह है जा इस अपमान का कर्वा मरु। मरु मालूम
है कि उच्च नौकरियों अत्रेजी की पायता क बिना नहीं पा जा मरुता, मरु
अत्रेजा की घुटा पीकर मरुनु हुए। उनके अचकन और पायता म मरुन
की जरूरत नहीं उनका राम राम अत्रेजियन उ भीणा हुआ है। मरुता
स्वतंत्र भारत म अत्रेजी और भी वनय रती है अब तक उनका मालिन
मौजूद है, सब तक ऊँची नौकरियों का दरवाजा म्माक गिगि मरुता, म
अत्रेओ की पूरी शीर म नक क मके।

सिवालिङ्ग द्वार मुत्तयत्तनगर काकारी बटा कायन मिया। नाम म मालूम
हा रहा था इस विमा पूर्वी शिगि म है। मरुता म कायना क पास बस
खी हुई। मालीरना अच्छा कायन है। मरु नाम म्माक पुत्रों का किना
प्यारा था? पन्चमा पाकिस्तान के म्माक म मालीर है मरु कृष्ण
म मालीर है और दमिगा कनायक म मी। मरुता की म्माक वरुत वरी
मांग थी। खरीने पर अच्छा म्माका कम्बा है। मुत्तयत्तनगर मरु म
मरुन बंद गया है। मरुत क बार म ता कृता शी कता? कृष्णमि म उरुत का

सेती बहुत हो रही है और चीनी की मिठे भी काफी हैं। नहर न इसक लिए सुभीता पैदा कर दिया। बस के अड्डे पर तांगा नहीं मिला। कुछ आग जाकर बुली से सामान उटवाया और फिर भयाजी के घर पर, २२ फज बाजार पहुँच गया।

२८ का १० बजे सवेरे नई दिल्ली में कांस्टिट्यूशन क्लब में पहुँचे। आज यहाँ सेम्पोजिया था। हमारी भाषा में जबदस्ती कुछ गढ़ा को लादा जा रहा है। सेमिनार, सेम्पोजिया, रिपोर्ताज ऐसे ही गढ़ा हैं। अभी तो लादना ही मालूम हो रहा है। लेना न लेना यह अगली पीढ़ी का काम है। सेम्पोजिया का अर्थ है लिखित गाँधी जिसमें लोग अपने-अपने लेख पढ़ें और उन पर दूसरे अपने विचार प्रकट करें। मुझे ही उसका अध्यक्ष बनना पड़ा। हिन्दी और पंजाबी साहित्य के सम्बन्ध में कुछ लेख पढ़ गये। बरान्निक्कोफ के "रामचरितमानस" के रूसी अनुवाद पर डा० रामविलास शर्मा ने अपना निबंध पढ़ा। विज्ञान के सम्बन्ध में दो अधिकारी प्राफमरो ने जीवन की उत्पत्ति के सम्बन्ध में रूसी साइन्सवेत्ताओ के काम पर प्रकाश डाला। मैं भी बरान्निक्कोफ के अनुवाद के सम्बन्ध में कुछ बोला। १ बज तक गाँधी रही।

दिल्ली गहर लम्बाई में बीस मील और चौड़ाई में भी बीस मील तक चला गया है। यदि आधुनिक यातायात के सुभीते न होते तो सबमुच ही जाने आने में बहुत मुश्किल होता। घाडे के ताँगे बहुत महंगे हैं, बहुतों को मोटर के ताँगे—जिन्हें लाग फटफटिया कहते हैं—सा गये हैं। साइकल रिकशा कुछ ही जगहों पर चल सकते हैं। कनाट सबसे में चार आने में हम माटर रिकशा पर बैठे और आकर घर पर उतर गए। यदि घोड़े का ताँगा होता, तो दो-तीन रुपये से कम क्या लेता? मध्याह्न भोजन आज भैयाजी के साथ मानीमहल में हुआ। पेशावर के भाइयों ने बड़ी बेसरा सामानी में यहाँ अपना भोजनालय खोला था। शुरू से ही पठानों का पुष्ट और स्वादिष्ट भोजन उचित दाम पर उहाने देने का व्रत लिया था। अब तो मोतीमहल सारी दिल्ली में मशहूर हो गया है। सक्का आदमी मासिक हिसाब पर यहाँ से भाजन मँगवाकर खाते हैं और उनसे कहीं अधिक यहाँ बैठकर खाते हैं। भाजनालय के दो भाग हैं। एक में घासाहारी और दूसरे में मासाहारी

चैठने हैं। तद्दूर की राटिया ता गरमागरम स्वादिष्ट होनी ही हैं लेकिन ग्याम चीज यहाँ का तद्दूर म भुना मुगमुगल्लम है। हमन डटकर भोजन किया। लौटे ता घर पर श्री प्रमाकर माचवे गरदजी क साथ मिले। उनमे चारों हानी रहा। गाम का भी अधिवेशन था लेकिन हम उमम नही गए। आज सारा परिवार सकम देखन गया। भाभीजी कितन ही मालो स मिनमा नही खती थीं लेकिन सकम म डर नही था। हम सान आदमी थे। तमागा गुरु हान स दो घटे पहले ६ बजे पहुँच, लेकिन टिकटघर पर दूर तक कई पातिया का क्यू था। टिकट पाना आसान नही था। डेन घट म किसी तरह टिकट आया। सवा तीन घटा मक्स देखन रह। जानवरा के कइ खेल थे। डेर कटघरा के छडा के भीतर आकर अपना तमागा दिखला रह थे।

२६ नवम्बर का कुछ जोर कबीर पथी महात्माआ क साथ बाबा नरसिंह दाम आय। 'महात्मा कबीर फिल्म बना था। फिल्मवाले भला नौदय और श्रृंगार को पूरी मात्रा म लाये बिना सफल कस हा सबत ये ? कबीरपथी साधुआ म इममे बहुत असनोप था और वह चाहत थे कि इस फिल्म का बन्द किया जाय, अथवा इमम से उन बाता को निकाल दिया जाए जिससे कबीर के अनुयायिया क भावो का ठेम लगता है। बाबा नरसिंहदास स मिलकर बडी प्रसन्नता हुई। अमहयाग के जमान के जेल के साथी थे। वह सरकार को एक आवेदन पत्र दना चाह्ने थे। जिस समय हमारी महात्माओ से बात हो रही थी उसी समय मूचना विभाग के सेक्रेटरी श्री लाड आ गये। फिल्म का शिवायत भी इन्ही के पास जानवाली थी, इसलिए हम सिफारिश करन के लिए दूर जाने की जरूरत नही थी। महात्माआ के सामने लाड साहव से भी बातचीत हुई। वह कह रहे थे कि यदि चरिन पर कहीं आशप हाना, ता उस चीज को निकालन क लिए हम कह सकते हैं। कबीर माह्व की जीवनिया क बारे म जहा दा मत हैं वहा एक मत को निकालन का आग्रह नही माना जा सकता।

ममूरी—२६ नवम्बर को ही हम गान्धी म यद्यपि दूसरे दर्जे म बैठे थे, लेकिन ग्यान पान या सान म कोई दिक्कत नही हुई। दहरादून क पाम पहुँचते वक्त ममूरी म बादल दिग्वाइ पड रह थे। स्टेशन पर महताजी मिले। स्टेशन बगन मे दो रुपय म सीट मिल गई। डाइवर परिचिन और भलेमानुन

था। पौन ६ बजे चलकर आष घटे में हम कित्ताच घर पहुँच गये, और पौन ११ बजे हान क्लिफ़ । ज्वर चार दिन पहले भी आ सकता था और उम्र वक्त यात्रा में बिघ्न होता। उसने बची महारबानी की जा मसूरी पहुँच जाने के बाद २ दिसम्बर को फेरा दिया। मैं ७ दिन के लिए चारपाई पर आराम करने लगा और निश्चय कर लिया कि जब तक पूरी तरह से भूय न लगे तब तक खाना नहीं खाऊंगा। ३ तारीख को पानी भी नहीं पिया। ऐसे समय हलकी पुस्तकें के पढ़ने का अच्छा मौका रहता है। चाणक्य पर एक उपन्यास सम्मत्यथ आया था। सम्मति यती दी—उपन्यास लिचम्प है। लगन ऐतिहासिक उपन्यासों के साथ अनौचित्य बरतनेवाला अवला नहीं है। पग-पग पर ऐतिहासिकता और भौगोलिक स्थिति में विरोध है। पटना के पास पहाड़ बठा दिया गया है। चाणक्य का एकाध नाटको में जा कुछ बणन आया है उसी को लेकर अपनी कल्पना और स्याही-कलम के भरोसे यह पाथी लिख डाली गई। कही कही तो बहुत असह्य ठिठई दिखाई गई है।

कल्याणसिंह का बच्चा बीमार पड़ा। दवाई दपन भी करा लेते हैं लेकिन अभी उनके जैसे लोगों का विश्वास सयानो पर ज्वाल है। सयाना बुलाया गया वह भी अपना मन्तर-तंतर कर रहा था और सत्यनारायण की कथा की भी व्यवस्था थी।

८ तारीख का एक बड़ी सुशखबरी मिली 'किल्डर' २२ हजार में बिक गया। यद्यपि मिम पूसग और उनकी बहिन का मसूरी से जाना हम परसद नहीं था। बहुत अच्छे सहृदय पड़ोसी थे। लेकिन बुढ़िया के लिए मसूरी का जाड़ा बहुत खतरनाक था। उनके लिए यह बहुत अच्छा हुआ। पाँच सात वष पहले उन्हें इसने ६० हजार मिल जाते लकिन अब तिहाई पर भी बहुत खुश थे। कितना ही मामान साथ ले जाना था जिमके लिए रेल का डब्बा ठीक किया गया था। उस वक्त अभी हम ख्याल नहीं था कि हम भी एक दिन इसी तरह मसूरी से बारिया विस्तर बाँध कर जाना होगा।

अब मैं ६२वें वष के अन्त में था। तीन साल पहले भी शरीर में जितनी शक्ति का अनुभव करते थे अब उतनी नहीं थी। जरा भी चलने फिरने में थकावट मालूम होती छाती भीतर से दुसने लगती।

१२ दिसम्बर का श्री संमुवाल्जी आया। अभी भी वह चिनी हाई स्कूल

म हेडमास्टर थे। बदली कराने में सफल नहीं हुए। कहते थे, अब खान की चीजा की उनकी निश्चिन्ता नहीं है। डाक का प्रबंध पट्टे से अच्छा है और राजाना डाकू जान का प्रबंध हा रहा है। तिब्बत की सीमा का रपाल करके यहाँ भी सामान पुलिस रगन का निश्चय किया गया है। चिनी को इसक लिए अनुकूल स्थान न समझकर अब स्कूल और दूसरे सभी दफ्तर कोठी में ले जा रहे हैं। कोठी किनी ममय पहले भी राजधानी रही है। यह वहाँ की सुन्दर पत्थर की मूर्तियाँ बतला रही थी। ७००० फुट पर खान से यह गिमला जमी है। यह भी बनला रहे थे कि रोगी के नीचे से हाकर कोठी तक मोटर की सड़क बनने जा रही है। मोटर सड़क पर जगह-जगह काम भी लगा हुआ है। चिनी में अब कई दूकानें हा गई हैं, चाय और भाजन का होटल भी है। १९४८ की यात्रा के बाद अब कितना परिवर्तन हा गया ?

भूत हमारे घर की रखवाली करने में बडा सहायक था, लेकिन सर-सपट्टे से वाज नहीं आता था। हाँ, चौपरी के टाइगर की तरह वह लण्डौर तक को दौड नहीं मारता यही पास-पगोस और कुछ जगला के भीतर तक जाता। शाम के वक्त बघरा का नवाला बनने से बचाने के लिए उसका घर के भीतर रखना आवश्यक है। १५ दिसम्बर को अधेरा हा रहा था उसे बुलाकर ले आये। फाटक के भीतर आया, तो न जाने क्या चीज देखी, वह दूसरी ओर घाबिन के घर की तरफ दौडा और जरा देर में गायब हो गया। कमला ने भूत के लाने के दिन बहुत त्राघ प्रकट किया था। कहा था— 'क्या लाये।' और अब जब कुछ देर तक उसका पता नहीं लगा तो वह अधीर हो गई और पागल की तरह इधर उधर दून लगी। अंधेरे में जिस तरह वह गायब हुआ था उससे अनिष्ट का भारी डर था। कमला तो निराश हो गई थी, समझा उसे बघरा जरूर ल गया। फिर फूट फूट कर रोने लगी। हम भी भूत का अपमास था, लेकिन इतनी अधीरता नहीं दिखलाते। खर, कुछ और देर तक जगह जगह 'भूत, भूत' कह कर बुलाया गया और वह सनी-सलामत घर में लौट आया।

२२ दिसम्बर की रात का कलजे में दर्द होने लगा। गरम पानी की बोतल रखी, लेकिन उससे बहुत कम लाभ हुआ। मन कहने लगा अगले माल से दिसम्बर से माच तक के महोनों के लिए मसूरी को छोडना पडेगा।

सोचने लगा बगल को न लिया जाता, तो अट्टा था। अब किसी तरह बिक जाय, तो जाठ महीन र लिए यहाँ किराय पर मकान लेकर रहूँ और चार महाना दहरादून में। अगले दिन गहर गये। डा० ज्वाला प्रमाद न धून का दबाव देना। वह १८५ था होना चाहिए था १६२। तो भी बहुत ज्यादा नहीं था।

एक दाँत को भरवाना था। बुल्हड़ी में एक दाँत के डाक्टर को देखा। सीताजी ने अपने परिचय की बात कही तो समझा अच्छा है भरवा चल। पहले दाम-ब्याम भी नहीं किया। उसी भर कर वहाँ १५ रुपये। यह सरासर अनुचित था लेकिन अब तो गलती कर बैठे थे और झगड़ने की आत नहीं थी। खर उमका भी कोई अफमोस नहीं होता लेकिन वह तो पूरा ठग था। उमन ऐसी दवा दाँत में भर दी कि वह हमगा के लिए काला हो गया। अब कोई दखता है तो पूछता है आपका एक दाँत टूट गया? उस समय अपनी बबकूफी और उम ठग की सूरत याद आती है।

बम्बई से एक भाषण का निमंत्रण आया था। वहाँ बड़े बड़े हृदय रोग के विशेषज्ञ रहते हैं, यह मालूम था इसलिए एक पथ का काज था। हमने मजूर कर लिया। पहले तिल्ली गये और वहाँ से ३१ दिसम्बर को बम्बई के लिए रवाना हुए।

जेता का जन्म

बम्बई यात्रा—हमारी ट्रेन १ जनवरी का साढ़े ६ बजे बम्बई सेंट्रल स्टेशन पर पहुँची। अभी अँधेरा ही था। स्टेशन पर राष्ट्रभाषा व श्री जोगी जी व्याख्यान के प्रकाश करनेवाले श्री अरविंद देशपाण्डे और श्री पोद्दारजी व ज्येष्ठ पुत्र उपस्थित थे। वहाँ से साधे पाद्दारजा व घर पर मलावार हिल पहुँच। अभी भी अँधेरा हा था। ममूरी म गर्मिया म कभी हफ्ते मे दा मनने मे स्नान करता है नही ता हफ्ते मे एक मनवे सापुन से गरीर धाना पर्याप्त समझता है। लेकिन बम्बई म ता सर्दी कभा हाती हा नहा। महाँ दिसम्बर जनवरी म भी पसे की जरूरत पडती है, इसलिए दिन म दो बार स्नान करन का इच्छा हा ता काई अचरज नहीं। स्नान और चायपान के बाद साढ़े १० बज कार से निकला। बड शहरो म कार की उपयोगिता आराम और ममम की बचन दोना के हयात से बटून है। लेकिन मे ता चोट फेट व डर से इसकी बडी आवश्यकता समझता था। फोट म जाकर डायरी खरीदा। मालूम हुआ देगी कम्पना न विल्सन नाम की एक फौटोनपन बनाई है जिसका प्राय साग भाग दंगो है। लालच हा आई। स्वदशी का प्रम ता है ही। सवा आठ रुपय म जमे खरीद लिया। वह दिन्ला का लड्डू साबित हुई—साये सो भी पहनाए न खाये सो भी पहनाये। "यदि न खरीदे हाता तो मन कामता, स्वनेगी खोज का तुमने लिया नही और कितनी सस्ती थी? अब खरीदा तो मालूम हुआ, वह लिखन व लिए नही बनाई गई है सिफ भक्ति प्रदर्शन व लिए है। कभी लिखन व लिए जब मजबूर

होना पड़ता है तो निवृत्त का उल्टपर लिखता हूँ और फिर बड़ी सावधानी करके पर भी वही स्याही का एक बड़ा घुंटा बागज पर गिरा ही देता हूँ। फिर यात्रा आता है सप्ताह रोके बार-बार, महेंगा रावे एक बार। 'खर यह सब तजर्वा उरा दिन नहीं हुआ। म्यूजियम गए, तो आज नत्र वष की छट्टी थी। आदमी मे पता लगा माटुंगा म डा० मातीचंदजी व पाम पहुँचे। हम ता एक ही व दगन स अपन का कृताय समझन लेखिन वनी डा० वामुदेव गरण और रायचृष्णदास भी मिल गये। डा० वामुदेव गरण ता वविमनीपी परिभ स्वयम्भू हैं। गारा समय अध्ययन म लगात हैं, और हमारे लिए नई नई रोज करने रहत है। डेरा घटा वही सरसग म बीना। आजकल बम्बई प्रदग की सरकार न हिंदी के सम्बन्ध म एक नया गुल खिलाया है। पहल हिंदुस्तानी व नाम से हिंदी व मुद्राविले म उदू को छडा दिया जाता था। उसम सफलता नहीं हुई ता अब हिंदुस्तानी का दरवाजे स नहा तो विडनी स लाना चाहत हैं। यहाँ व कुछ लोगा की खापडी म समाया था कि सघ की भाषा व तौर पर जा हिंदी स्वीकृत की गई है वह वह हिंदी नहीं है, जिसका व्यवहार हिंदी प्रान्तवाले करत है। अर्थात् इस प्रकार नई हिंदी गन्त का मौजा मिल जाय और हिंदुस्तानी को लाकर सिंहासन पर बैठा दिया जाए। हिंदी का रास्ता अब भा साफ नहा है यह ता इन लोगा की चालो स मालूम हा हा रहा है लेकिन दुनिया म वही भी परमाइण पर भाषा नहीं गनी गई बल्कि जो सिद्ध समामनाय (प्रयाग म आता व्यवहार) है उसी का लाग मानते हैं।

२ जनवरी का अधेरी गये। सरदार भावनगर म थे। प्रभावती वहेन अजित और प्रजा मिली। वहाँ स फिर डा० जगन्नीशचंद्र जन के पास पहुँचे। वह दो एक दिन म आन वाल थे। उनकी पत्ना, पुत्री चक्रेश मिले। फिर अपनी पुस्तका व मराठी अनुवादक और प्रकाशक मोडक साहब के पास पहुँचे। प्रकाशन से काम नहीं चलता था इसलिए अब वह निणय सागर प्रेस म काम करत हैं। भोजनोपरांत सवा ४ बजे प्राथना समाज म विजय मण्डल द्वारा संचालित हिन्दीविद्यालय मे गये। श्री एम० के० पाटिल ने प्रमाण वितरण किया, मुझे भी वालना पडा। पाटिल बम्बई के काग्रसी वाघ हैं। मभी निहित स्वार्थों के समथक हाने से उन्हें सेठा का विदवास

प्राप्त है। यद्यपि बाज वक्त्र वह बाटजू की तरह दाढ़ निवालन म भी जरा नहीं टिचकते, पर वह कूनीतिन भापा पर भी अधिकार रखन हैं। बम्बई म हिंदी का प्रचार पहले ही सरहा है क्पाकि भारत म जहाँ पर भी कई भापाए इक्टठी होती रहीं वहाँ किसी एक को सम्मिलित भापा अपनाने की जम्मत पडती, और शताब्दिया के तजबे ने बतला दिया था कि वह मध्यग की भापा ही हा सकती है। कलकत्ता म भी यही हुआ और वही बात बम्बई म भी हुई। मद्रास म बहुत कम हुई क्पाकि वहाँ उत्तरी भापाआ स सम्भव रखनवाली भापाआ क वाग्नुवाले काफी नहीं गय। जिस भापण क लिए मैं विशय तौर से निमत्रिन हुआ था वह राष्ट्र भापा समिति म जानसय की ओर से होनेवाला था। सरहपा पर मुच दो तिन भापण दता था, जा सरह के दोहाकाशा की भूमिका क रूप म पीछे प्रकाशित हानेवाला था। यहा पर बहुत स हित्ग साहित्यिक मित्र भी आय, और महाराष्ट्र महिलाआ और पुरपा की ता यह सभा ही था। उस तिन छे पटा भापण दिया और साडे ६ बजे वाद निवामन्यान पर लौटा।

३ जनवरी को मध्याह भोजन क बाद पढ़े श्री नाथूराम प्रेमीजी स मिलन गया। अब उहाने गह सयास ले रता है। चौमजिले पर रहते है। वहाँ स चढना उतरना हृदय के रोगी क लिए खतरनाक है। भानुचद्रजी स मिलकर उनक घर पर गय। भानुचद्रजी न प्रकाशन का काम जोर गोर से निवाला था पाद्दरजी क ज्यष्ठ पुत्र कह रहे थे बहुत-सा रुपया फसा दिया और बित्तबे विन नहीं रही हैं। भानुचद्रजी कुछ ममय तन बम्बई स अनुपस्थित रहकर अब फिर उहाने अपनी बुक्सलरी की दूकान सभाल ली है। प्रेमीजी क यहाँ पहुँचने पर यहाँ इक्टठा ही कई महात्सव प्राप्त हुए। अपभ्रग क दिग्गज विद्वान् डा० हीरालाल जन और प्रा० उपाध्ये (कालहापुर) भी वही उपस्थित थे। त्रिमूर्ति स दरस-परम और बात करन का मौसा मिला। डा० जन अब नागपुर विश्वविद्यालय स अवसर प्राप्त कर चुक हैं। जन घम के अद्भुत ग्रय 'जय घवला' के प्रकाशन म लग हुए थे। प्रेमीजी का स्वास्थ्य पहल स कुछ गिरा था, पर बाकी वाता म अभी जरा पर विजय प्राप्त किये हुए थ। सीडिया पर कुछ उतर ता जनेद्रजी मिल गय। फिर लौटे, और याही देर बातचीत हाती रही।

गिरीगंजी पाद्दारजी के यहाँ अध्यापन जोर दूगरा धाम करत है। उहाँ लेजर कुछ तरीदन का काम लिया। कुछ साठियाँ लना थी और कुछ अम्लान लौह (स्टेल्स स्टाल) क बरता। हृदय का परीक्षा क बार म पाद्दारना स सगा ह। घुकी थी। बम्बई अस्पताल म पाद्दारती क परिवार का काफी दान है। मारवाणी मटा न इस बिगा अस्पताल का खाला है जिस मने जर श्री जयन्त्र मिहानिया क। उनका भी लेजर पाद्दारजी क साथ बम्बई क प्रसिद्ध हाट सर्जिस्ट डा० दाते के पाम पहुँच। उहाँन एकमरे किया कार्डियाग्राम लिया। रक्त का दबाव १०५ २१० बनलाया यह बहुत अधिक था। फिर उहाँन कहा रक्त मूत्रादि की भी परीक्षा होनी चाहिए। श्री सिहानियाजी न अगले दिन ६ बजे उसका इन्तजाम कर दिया।

४ जनवरी का उपवास रता बिना चाय भी पीय ६ बजे अस्पताल पहुँच। आध आध घण्टे पर पाँच बार चीनी का गरबत पिला नस के खून धौर पगाव की भी जाब की गई। परीक्षा की रिपोर्ट अगल दिन मिलने वाली थी। भारतीय विद्या भवन म डा० भयाणी स मुलाकात नहीं हो सकी। गाम का ६ बजे हिंदी विद्यार्थी मण्डल के तत्वावधान म एक छोटी सी बठक चक गट म हुई। यही मुद्गानजी और प्रदीपजी भी मिल—फिल्म जगत् म हिंदी के यही दा लेखक और कवि रह पाए है। दूगरे हिंदी लेखनी क धनी क्या नहीं जम, इमके बार म प्रदीपजी की राय से मैं सहमत हूँ। वह पत जोर प्रसाद की भाषा फिल्म म ले आना चाहने थ जिसक समयनवाले इने गिने मिलने। उँह पुरानी कहावत घाद नहीं आइ जो नहिं चाह देन विदाई। पूछ बेमज की कविताई। कगावदास चुन चुनकर कठिन गदा को अपनी कविता म भरते थे। बहुता क सामने उसका पढ़ना भैस क सामन बीन बजाना था। इसलिए कविता म रस न आने पर किसी क खोसे पर हाथ कस रखा जा सजता ? यहाँ फिल्म म भी एक क नहीं बल्कि लावा क खीमा पर हाथ रखना है। गीत की भाषा ऐसी हानी चाहिए, जिस समयन म लगा का अधिक कठिनाई न ह। म पत प्रसाद की भाषा और उनकी कविता का प्रगासक हूँ खासकर प्रसादजी को ता भारत के सर्वोच्च कविया म मानता हूँ। पर, जनसाधारण क लिए बच्चन की ही भाषा सबसे अच्छी है और वही इस विषय म सबसे बड़े कवि मान जा

समत हैं। बच्चन मिनेमा म नहीं गया ता बुरा नहा किया। उदू कविनाआ म भी वुत म गन् मुननवाला के पल नहा पडत पर चलती भापा चलत उदू क छद और उसक साथ गिनमा क घनी धारिया की धीगामुस्ती सन मिगाकर काम बन जाता है।

रल म गुजरात पहुँचन पर ३१ डिसेम्बर स कलेज का दर बंद हो गया था। मैंने समया सर्तो हा उमका कारण हा सनती है। डा० दात न बतलाया न हमना सर्तो कारण है और न छ सान हनार फुन का ऊँचाई ही कलेज पर काइ बुरा असर करती है। यह बात ५ वा सत्य मालूम हुई जब दद फिर गुरू हा गया। मुय कलाकार म्वेतम्लाव रापरिक का बात प्रामा- निक मालूम हुई। उहान कहा था हूय म कभी कभी ऐमा हो ही जाता है फिर वह अपने आप प्रवृत्तिस्थ भी बन जाता है। १९५५ ५६ क जाटा क काफी समय का मैंने मसूरी म बिनाया। सम्पन रहा था कलेजे का दद फिर लौट आएगा लकिन वह नही लौटा। वही बात १९५६ ५७ म भी हुई।

५ जनवरी का सवेर ९ वज बिहारी एसामियशन म गया। वंस भाज- पुरिया की सरया बम्बई म लावा हागी लकिन वह अधिकतर मजूर है। उह मभा एसामियशन स काई मनलव नही। ऐम ही हाली लीवाली को मिल मिला लन हैं लकिन उनम कुछ बुद्धिजीवी तथा नाममान क व्यापारी से हैं। उहान अपना एमोसिएशन कायम किया है। बिहारी एगामियशन राजनीतिक सीमा क अनुमार बनल बिहार भर का नही हा सकता क्योंकि आरा छपरा और गाजीपुर बलिया गारखपुर क भीतर भापा जीर सस्टुति सम्बन्धी सीमा रखा नही खीची जा सकती। मुये अपने भादयो म मिलकर बडी प्रसन्नता हुई और उह भी।

मघ्याट म सरदार पथिवीमिह आय। उनका स्वास्थ्य बसा हो था जमा कि पिछली बार देखा था। भावनगर म काफी जमीन लकर एक टुपि फाम साला था। लकिन आज क जमान म जब तर खुल आदमी किसान न बन तब तक खती चल नहा सकती। ऊपर स इधर दा-तीन साल से मोराष्ट्र म वर्षा टोन स नही हुइ जिसना भी असर पण। सोच रह थे कस इसम विण्ट छुनाया जाय ? आगिर सरदार को अपन राजनीतिक कस इसम विण्ट छुनाया जाय ? आगिर सरदार को अपन राजनीतिक जीवन मे अवताग लने का तो अवसर नही मिल सकना और वह उनसे

सारा समय माँगता है। पार्टी आफिस में गयी। मंड्रस्ट रात्र के उमी राज भवन में जहाँ पहले भारत की वैकीय पार्टी का कार्यालय था, अब महाराष्ट्र पार्टी है। कन्द्रीय पार्टी दिल्ली में चली गई है। दिल्ली राजधानी होने से वहाँ सम्मिया के आन जान का मुभीता है और कितने ही बड़े-बड़े नेता पार्टियामेंट के सदस्य भी हैं, इसलिए दिल्ली छात्रों के एक फोन में पार्टी कन्द का सम्मना सम्भव नहीं था। साथी जमाघ्याप्रगात्र नासी के बहुत पुराने प्रातिनारी और पार्टी सम्बर हैं। अब वह यकी मजुरा में काम करत हैं। वह बन्गीव ल गय तहाँ गिशा के माध्यम पर बालो टूए मीने तहाँ प्रारम्भिक गिशा का माध्यम ता मानभापाया का ही हाता चाणिए। वहाँ स मारवाकी पुस्तकालय में नापण लिया। यही बम्बई में हिंदी का सप्रस बण पुस्तकालय है।

हमार मजुरान श्री घनश्यामदाम पोद्दार के सरल और मनुस्त्रभाव के बार में पहले भी कह चुका हूँ। उनकी पीकी बहुत बाता में मारवाडी न रह भारतीय हो गई है। मठानी भी हिंदी पुस्तका के पत्रन में रचि रखती है। और बडा लडवा तो पिता से आगे है। अपन मद्रास की ओर के सर सपटटे की बात बडे राचा ढग से बनला रह थ। किसी अपने मिल के कम चारा नौजवान का साथ ले गय थे। वह इनकी क्या सहायता करता हाटल में ठहरता और गराव पीकर अटेचित हा जाता। गराव और गान्त अब आजकल की पीकी के लिए धुणा की चीज नहीं है। उनिन पीलिया से मास के प्रति जा घणा लिंगा में बटाई गई है वह अब भी बहुत से सठ पुना में देखी जाता है। अधिउतर उनमें अडे तक हो जा पाते हैं। जान का तो तरुण पोद्दार कई गहरा में गय लेकिन उन्हें मजा नहीं आया। हूँ साथी कदम कदम पर विज्ञाता और साथ ही हूँमना रहा। घनश्यामनासजी बने देखने में अस्वस्थ नहीं मालूम होने, लेकिन डाक्टर तो कराडपति सेठा के ऊपर हा पलने हैं। यदि देखन मुनन में आदमी का स्वास्थ्य अच्छा मालूम हाता है तो वह दंत हैं हाट की बीमारी नून का दवाव है। जेचार्ड की काफी फीस मिल जाती है। हमारे भारत साविथत सस्त्रुति सघ के प्रधान डा० बालिगा की भूरि भूरि प्रशसा कर रह थ। वे इस वकन बम्बई के सप्रस बडे सजन हैं। दिल्ली में अबकी उनसे परिचय हो गया था, लेकिन वह हून्य के

विगेपज्ञ नहीं व इसलिय मैं उसके पास नहीं गया। पादारजी का ता उहान बहुत सफल आपरेगन किया था। वह रहे थे, महीना मैं फीस देना व लिए व्यग्र था और वह विल नहीं भेज रह था। पादारजी का एक मकान दिल्ली म भी है, जिसका बहुत सा भाग उहान किराण पर दे रखा है जेकिन दा तीन अल्ले कमरे अपन लिए रखे है। उनसे कहा कि दिल्ली म आऐं ना वहा ठहरें। उहान अपन आत्मी का चिटठी भी लिख दी। उनक ज्यष्ठ पुत्र न चिटठी म यह भी लिख दिया कि अगर राहुलजी को स्पए की जरूरत हो ता दे देना। पर उधार स्पया लेना मेरी आदन के विरुद्ध है।

६ जनवरी की रात का तरुण पादार और गिरीगजी स्टेशन पर पहुँचान आए। सीट ऊपर की मिली थी, जा कुछ कष्टप्रद ता जरूर हुई, पर सोन म कोई दिक्कत नहीं थी। ७ के सरे हमारी ट्रेन रतलाम म थी। श्री माचवजी भी इसी ट्रेन स जा रह थे। हमारे नीचे वाली सीट पर जा सज्जन थे, वह रतलाम म ही उतर गए। एक तरुण दमूजा सैनिक अपनर दिल्ली तक के लिए साफी रहा। काटा से आन कम्पाटमट म हम ही दाना रह गय। फ्राटियर भल था इसलिये दूर दूर क स्टेशन पर खडा होता था। माने मात वजे गाम का दिल्ली पहुँच, और रिकान ल भयाजा क घर पहुँचे।

८ तारोख का दिन भर दिल्ली म रह। पार्टी क माधिया से मुगवान हुई। साथी घाटे बीमिया वप से हृण्य के मरीज हैं। कहन थे इनम उट-काग नहीं जाना और न इसत डरना चाहिए। न डरना चाहिए इससे सबूत वह स्वय सामन मौजूद थे। देवली म हम एक साल साथ रह। उस साल भी वह हड्डी चपडे के घनी मुट्ठी भर के गरीर म हृदय के राग का पाल हुए थे और अब भी वह विहकुल वस ही थे न घट न बडे। उहानि बतलाया, "माने पीन म थाण समय चाहिए दा चार दवाइया करनी चाहिए और प्रसिद्ध डाक्टरा के पीछे नहीं पडना चाहिए। सभी नय व्यक्ति पर तजर्वा करत हैं।" मुझे भी भुवनभाणी की चिकित्सा अधिक पसन्द है, दायवगीज क तजर्वा नयही मिललाया है। भया न सपगचा की गालिया दी, और द्राक्षासव पीन के लिए कहा। मैं बहुत दिना तक वही करता रहा।

गाम का १० वजे दहरादून की गाडी पकडी, और ८ का सरे दहरा-

दुन पहुँच गया। जरा सी गात्रघानी न करन से टक्की नहीं मिली और वस
नी चली गई इसलिए अब दापहर का रम पक्कनी थी। मुबल्की व यहाँ
गए। पति पत्नी तिसी उलगव म गए थ। भाजन प० हरनारायण मिश्र के
यहाँ हुआ। फिर आरर १ वज वाली वम पक्की, २ वज रिन्नेग पहुँच।
वाई रिन्ना नयी मिला, इगलिए लाग्गरी तर पदल चलना पडा। चलाई
ना थी, बहुत धीरे धीरे चले, ता भी बहुत बुरा हाल था। मन म यही बात
काम कर ही रही थी रि हृत्पयी कीमारी वाल को चढ़ाई चढना बुरा है।
लाइन्नेरी स रिन्ना तरर घर १ पास तक चल आए। पूसग बहिनें रिम्बर
म ही यहाँ स चली गई। वितनी सहृदय थी। गया व दगन सगसे पहल
हुए। अबकी वट पहचान गई। लाल सगम नमस्त, प्रणाम जागव अज
चार चार तरह १ नमस्कार करना जानता है।

ईगर की चिट्ठी आई थी जिस में रिन्ना ही क लिए ल आया था।
कमला १ पहले हा दम लिया। फिर वही आग्रह। ईगर को कभी पत्र न
लिखें। यद्यपि मैं समझता था कमला क भावा का सबम ज्यादा ह्याल
ररना हागा। सिफ उनके लिए ही नहीं बल्कि बच्चा के लिए भी। पर यह
समझ म नहीं आता था, कि ईगर की चिट्ठिया से उसम क्या बाधा पड
सकती है? मैं जानता हूँ कि जया और उसन आने वाल अनुा को ही मुझे
अपना बाकी जावन देना है क्योंकि वह एस देग म पटा हुए है जहाँ बच्च
राष्ट्र के अबउम्न की काई आगा नहीं रख सकत। माता पिता ही उनक
सबस्व हैं। पर ईगर भी मेरा प्रिय पुत्र है पिता म सलाह मगौरे की ता
आगा रखता है। वह साम्यवादी देग म पदा हुआ है वहाँ समय चीनन की
जकरत है, वह जपो आप अपनी क्षमता के अनुसार निरबाध पड लिख
लेगा जीर काम भी पक लया। यदि म पत्रा का भा जवाब न दू ता यह
मरे ऊपर भारी लाउन होगा। क्या करूँ। आग्रह हा या दुराग्रह कमला
की ही बात माननी पडगी' यही दिखाई पडता था।

१० जनवरी का पूर्वाह्न म दो बार कलज म पीडा हुई। डा० दान की
वतलाई दवाई नियमपूर्वक खाने लगा और द्राग्नास भी। ऐसा मालूम हो
रहा था, अब जाग म मसूरी स हटना ही पडेगा। कुछ रिन्ना ता यही ह्याल
दिमाग म चकरा काटता रहा, कि मसूरी का मकान यदि धिक जाए, तो

दूसरा आठ-दस हजार म देहरादून म ले लें। देहरादून से २५ २६ हजार गणार्थी जबसे चल गये, तब से वहा भवानो का दाम गिर गया था। लेकिन मैं निश्चय कर चुका था आगे भवान लेन देने का जो भी काम होगा, वह कमला म ऊपर छाडना है।

११ जनवरी को राजेन्द्र बाबू की चिटठी आई, जिसम हमारे 'प्रत्यक्ष-शरीर कोण' के शब्दों को उद्धृत करके डा० सुन्दरलाल ने जो आक्षेप किये थे, उमे भी भेजा था। मैंने जवाब म लिख दिया, और वाता मे चाहे जसे गन्त इस्तेमाल कर, लेकिन जहा तक परिभाषाओं का सम्बन्ध है, उसम भारत की सभी भाषायें—असमिया, बंगला उडिया, तलुगू तामिल, मलयालम, कन्नड मराठी नेपाली, गुजराती आदि—बगबर के हिस्सेदार हैं। पिछले दो हजार वर्षों मे भारत और बहतर भारत म एक ही तरह की परिभाषाएँ इस्तेमाल होती आई हैं। जब तक इस परम्परा को ताडने के लिए तैयार न हो तब तक परिभाषाएँ सरल तत्सम गदा म बनें, यह छाड दूसरा कोई रास्ता नहीं है। यदि सुन्दरलालजी के अनुसार खोली (मन्त्रिमडल) और विचित्रिदी (वेद) की तरह के शब्दों को बनाया जाने लगा, ता वह हिंदी क्षेत्र से बाहर बिल्कुल स्वीकार नहीं किये जायेंगे। दा ही रास्ता है। या तो डू की परम्परा को अपनाकर अरबी से शब्दों को ला या बाकी भारतीय भाषाओं की परम्परा को लेकर तत्सम शब्दों को।

हमन बोलगा' (अप्रेजी) "राजस्थानी रनिवास' और 'बहुरगी मधुपुरी" तीन पुस्तकें छपवाकर प्रकाशन का तजर्वा कर लिया। यद्यपि उनमे लगे रुपया के निकल आन की आशा थी, इसलिए इम तजर्वों को बहुत बडवा नहीं कह सकते तो भी असफल रहा यह ता निश्चित है। प्रकाशन वही कर सकता है, जिसके पास काफी पूजी है, और सारा समय उमक लिए दे सकता है। हमारे पास शाना नहीं थे। कई लेखवा न अपने प्रकाशन वाले हैं और उनम मशफाल और अश्वजी जसे असफल भी नहीं रहे हैं। पर लेखकों के लिए अच्छा यही होगा कि यदि वह कलम रखन के लिए तैयार नहीं हैं, तो प्रकाशन मे हाय न लगाने।

दिल्ली—कमला अतवली थीं। सलानी सीजन का समय होता ता मसूरी म सेंट मेरी अस्पताल प्रसव के लिए सबसे अच्छा था। वंसा प्रबन्ध

तो दिल्ली में भी नहीं था। पर, इस वक़्त जाड़ा में वह बच्चा था इसलिए दिल्ली जाना ही अच्छा मसला गया। १५ जनवरी को जया और कमला को लिए हम टैकी में सीधे स्टेशन पहुँचे। गाम का भाजन कमला ने वही किया। एक रुपये में मास और देहरादून की वासमती का बड़िया भूत दग़-धर मालूम हुआ, सतयुग लौटना चाहता है। कमला का आग्रह था कि मैं मुक़्तगी के यहाँ तक चला जाऊँ किन्तु परिपूर्ण गर्भा को इस तरह छोड़ना मैंने पसन्द नहीं किया। सीट पहले से रिजर्व नहीं की गई थी पर रिजर्व करने वाला तरण भरे नाम से परिचित था। उन्होंने एक बहुत अच्छे कम्पाटमेंट में नीचे की सीटें रिजर्व कर दीं। जया ने पहले-पहल रेल जोर रेल का प्लेटफ़ॉर्म देखा था। वह ताँपलेटफ़ॉर्म पर तिसती देर तक टहलनी रही। बहुत सारा आसपास चल रहे थे, लेकिन उनकी उम्र पचाह नहीं थी। हरक चाज का गौर से देखती और कुत्ते का देखकर "भूत भूत" कहने लगती। चलने से पहले महताजी और उनकी पत्नी भी आ गयी।

१६ जनवरी का पौने ६ बजे हम दिल्ली पहुँचे। वर्षा थोड़ी हो गई थी। भया स्टेशन पर आए थे। ताँगा लेकर हम उनका घर पर पहुँचे। जाड़ा की रात बनी हानी है, इसलिए अभी भी अधेरा था। ऊपर रहने की जगह पर गए। जया ने जल्दी इसे अपना घर बना लिया, और भाभीजी उनकी माताजी तथा भया सबसे हिल मिल गई। मुना (भाभीजी की बहिन का पुत्र) से मिलना तो चाहती थी लेकिन उसने एकाध बार घक्का दवर गिरा दिया फिर दूर-दूर रहने लगी। "हित अनहित पमु पछिउ जाना बाबा न ठीक ही कहा है। बम्बई से डाक्टर की रिपोर्ट भी पाहारजी ने भेज दी थी जिसमें दवाइया का नाम था। विशेष तो वही सपना था थी जिसे बहुत महंगा अप्रेजी नाम देकर बेचा जाता था। भाई साहब ने अपनी फार्मोसी में उसकी गोलियाँ बना रखी थी।

कमला के लिए कौन सा अच्छा अस्पताल होगा, इसकी खोज करनी थी। हाजरा बगम से मिले। वह महिलाओं में काम करती थी। उन्होंने डा० सुशाला दुग्गल का नाम लिया जिसका अपना निजी अस्पताल था। अगले दिन (१८ जनवरी को) डा० सुशीला के यहाँ खान मार्केट (नई दिल्ली) में गए। उन्होंने कहा प्रसव समय २५ के आसपास है, और यह भी कि लड़की

हागी । मैंने कहा—भरी भविष्यवाणी तो अभी तक खूटी नहीं हुई है । मैंने पिछली सन्तान के लिए कमला संगत लगाई थी और पहले हा से नाम जया रख दिया था । वही बात हुई और अबकी मैंने लडके का नाम जता पहले ही से रख छाडा है । खर, यह मालूम हुआ कि इस महीने के अन्त तक प्रसव हा जायगा । वहा स पास म ही श्रीनाथ क पुराने रहने के स्थान म गए, पर वह वहाँ स चले गए थे । गिब गमाजी सवेरे ही आ गए थ । वह नपाल आरपार करना चाहते थ लेकिन एक तिहाई रास्ता नापन पर मले-रिया न आ घेरा और उह लौट आना पडा । अपूण यात्रा का पूण करने का अब भी ख्याल रखते थे ।

डाक्टर न बहुत-सी चीजा की लिस्ट बनाकर दी थी जिनमे से अधिकांश का चादनी चौक से खरीद लाये । जामा मस्जिद क पाम कुछ पुरानी उतू की पुस्तकें मिली । उदू के खरीदार अब कम ही हैं । बहुता का ता ५० फी सदी कमोशन पर भी देने के लिए तयार थ । बुकसलर अपना राना रो रहे थे ।

एक दिन माटर रिकश पर कही जा रहे थे । साथ बैठे दो सज्जन कह रहे थे—'दखा, सन १९५७ आ रहा है । भयकर घटना घटने वाली है ।' हमारा देश आधुनिक युग म तब तक नहीं आ सकता, जब तक ज्यानिपिया और इस तरह की बातों पर विश्वास है । १८५७ म गदर हुआ १७५७ म पलासी के युद्ध म अंग्रेजा ने विजय प्राप्त की इसलिए इन औंठी खापडिया को सभा १७ कार्द न कोई भयकर घटना लाने वाले हैं । १९५७ १५५७, १४५७, १३५७ सभी दुघटना लाने वाले थे, क्या ? जिन स्वार्थी का अभी हानि उठानी पडी है और जा अपने गुरुघटाल की तानाशाही कायम करने का स्वप्न देख रहे हैं वस्तुतः वह सन् ५७ की घटनाआ के जवदस्त प्रचारक हैं ।

२० की शाम का श्रीनाथ आये । कमला का समाचार पूरी तौर मे बतलाया, जिसम मालूम हुआ कि घर की हालत उतनी धुरी नहीं है जितनी रामविलास न अपनी चिट्ठी म लिखी थी । हा चोरिया होती हैं । पुराने मजूर अब अपने बाप-दादा जैसे नहीं रहे । सहस्राब्दिया तक आदमी का कसे गुलाम रखा जा सकता है ? जिनका उनकी गुलामी म ही हित था उह अब सबक सीगना हागा ।

२१ जनवरी को भया भाभी और हम डा० सत्यवतु और नीलाजी व यहाँ गए। वह भी जाना व कारण मगुरी से यहाँ चले आए थे। जब तब पार्लियामेंट की बैठकें शुरू नहीं होतीं तब तब व लिए ससद् सदस्यों के मकान खाली ही पड़े रहते हैं। ऐसे ही एक मकान में वह रह रहे थे। पार्लियामेंट व सदस्या की संख्या बहुत बढ़ गई तो उनके रहने व स्थान का बढ़ाना पड़ा। यह भवन बसा ही था। उसमें आराम का और स्थान के पूरी तौर से उपयोग का ख्याल रखा गया था। डा० सत्यवतु के आचार्य आणक्य ऐतिहासिक उप-यास पर कलकत्ता की एक संस्था न हजार रुपये का पारितापिक दिया था, उसके लिए वह कलकत्ता जानेवाले थे। ऐतिहासिक उप-यास व साथ-साथ वही कर सकता है, जो उस समय व इतिहास की सारी उपलब्ध सामग्री के संग्रह और गार्गेडन के लिए तयार हो, और अपनी जिम्मेवारी को भी समझता हो। डा० सत्यवतु इसके योग्य थे, इसे कहन की आवश्यकता नहीं।

२२ जनवरी को कुछ हिन्दी पुस्तकें और स्याही पेन्सिल के लिए हम फजवाजार की कित्तव की दूकाना में गए। एक राज्जन ने कहा— 'वी डोट बीप स्टेनरी' (हमारे पास कलम बागज नहीं हैं)। फिर साप्ताहिक 'हि दुस्तान' के बारे में पूछने पर कहा— 'वो डाट है व हिन्दी पेपर (हमारे पास हिन्दी पत्र नहीं है)। वह केवल अंग्रेजी बोलने की वमम खा चुक था। उनका यदि इसना कुछ भी पता नहीं था कि हमारे देश में अंग्रेज का राज्य नहीं है इसलिए अंग्रेजी का राज्य नहीं रह सजा तो इगम उनका क्या बसूर? वह ता दस रहे थे कि अभी भी हमारे महाप्रभुओं के कारण दिल्ली में अंग्रेजी का ही बोलबाला है।

२३ जनवरी को श्रीनाथ और उनके परिवार से मिलने १० नम्बर किम्सवे में गए। १० नम्बर की काठी ता केन्द्रीय मशीन की है। वहाँ भला श्रीनाथ के लिए क्या स्थान हो सकता था? उसके पीछे नौकरा के कवाटर थे। काठीवालों के पास उतने नौकर नहीं थे। बहुत-सी काठरियाँ खाली पड़ी थीं। गरणार्थिया के हल्ले के समय उनमें बहुत से आकर रहने लगे। राम हल्ले में श्रीनाथ जैसे अक्षरार्थिया ने भी लाभ उठाया। छोटी छोटी काठरिया में नर नारी कच्चे बच्चे भरे हुए थे। उही में से एक में श्रीनाथ,

उनकी बीबी और दो बच्चे रहते थे। बड़ा लडका १८ वर्ष का कहीं स्कूल में पढ़ रहा था। छाटा (जयप्रकाश) ६ वर्ष का था। मैं जाकर चारपाई पर बैठ गया। अपने बड़े भाई का अभिमान तो होना ही चाहिए था, उन काठरिया में रहने वाले कुछ और भी जानते थे, इसलिए वह भी नमस्त करन के लिए आया। आजकल काठी में श्री क० सी० नियागी रहते थे। श्रीमती नियागी का मालूम हुआ, ता उन्होंने श्रीनाथजी से मिलान का आग्रह किया था। पर मैं समय नहीं निकाल सका। श्रीनाथ की जीविका का साधन मिठाइया बना फेरी करके बेचना है। खर्च बहुत कम कर लिया होगा लेकिन दिल्ली में चार प्राणिया का जीवन निर्वाह तो करना ही था। उस परिवार को देखकर मैं जान सकता था कि हमारे दश की भारी समस्या किस अवस्था में रहती है।

२६ जनवरी को स्वतंत्रता और गणराज्य दिवस था। जिला में उनकी बड़ी तैयारी थी, लेकिन वह अधिकतर सरकार की आर स ही था। फर्रुखाजार की सड़क बहुत बड़ी सड़क है, यह बाजार भी अब विशेष महत्व रखन लगा है। जितनी बसें इस रास्ते जाती हैं उतनी दिल्ली की किसी सड़क से नहीं जाती होंगी। उस दिन ६ बजे से हा यानायात बंद कर दिया गया। राष्ट्रपति का मलामा देकर सारा सैनिक जलूम यहाँ से लाल किले की आर जान वाला था। हमारे घर के बराण्डे के नीचे पर परली आर से उसे गुजरना था। साँचे ११ बजे जलूस आया और छे घंटे में यहाँ से पार हुआ। सेना, काँग्रेस, हस्त गिल्ड उद्योग बंधे आदि का प्रदर्शन था। पर, हमारे देश की असह्य दरिद्रता का छिपा रखा गया था। उसके लिए जनानों जमावच्च करना भर नाग्रेस के नेताजा का काम था। कभी गांधीजी के नाम पर लागा की आग में धूल झाने, अब के आवडी-काग्रेस में समाजवादी का नाम लिया गया और मौक बमोक उसकी दुहाई दी जाती है।

उस दिन गाम को माचवजी और गारदजी आया। उनके साथ हम उनके घर गए। डा० मुगीला के यहाँ जाने पर उन्होंने बतलाया कि चार ही पाच दिन और हैं। दद गुट हाते ही आ जाएँ। लौटने वकत बड़ी मुसीबत में पम। तमांगा देखन वाल लाग अपना घर-दार छोड़कर मुग्ध मुख्य सड़का पर आ गए थे। टकमी एक जगह जाकर रुक गई। फिर टैक्सीवाला दान से

इन्वार परन लगा । क्या करत ? साठे चार पौ जगह नौ रपया देना स्वीकार किया और बहुत चक्कर लगानर ६ बज वह हमारे घर पर पहुँचा गई । ट्राफिक का प्रबंध क्या हमारी पुलिस कभी नगी कर सकेगी ? जहाँ राकना चाहिए, वहाँ राकन क लिए कोई तयार नही और जहाँ चारा ओर से सवारियाँ पहुँच जाण वहाँ रोवन क कारण सवारिया की लम्बी पंक्तियाँ सडी हो जाएँ ।

श्री ऋषिजी से पहले ही से पत्र-व्यवहार था । वह रूसी हिन्दी काग म लगे हुए थ । मस म दा साल भारतीय दूतावास म रह चुके थ इसलिए भापा का अम्यास किया था । हिन्दी उनकी बहुत मजबूत नही थी और ससृष्ट का परिचय भी नही था, लेकिन अभी नौजवान थ, अध्यापन स अपनी योग्यता बढ़ा सकते थ । बहुत परिश्रमी थे इस कहन की आवश्यकता नही । उहान महाकवि पुश्किन की प्रसिद्ध कविता सिगान (रामनी) का रूसी स हिन्दी म अनुवाद किया और उसम काफी सफल रह । पूछो पर मैंने कहा था—रूसी स हिन्दी करन क काम का ला और उसक अगा को प्रकाशित करत जाआ । पत्र वाल छापन या नहा इसम हिचकिचाहट कर रहे थे । लेकिन हिन्दी क पत्रो न जब छापना शुरू किया ता उनकी हिम्मत खुल गई । काग बहुत बडा काम था । चाहते थे यह अच्छे स अच्छे रूप म छप । मुनसे भी सहायता लेना चाहते थ । मैंने कहा—यही समय है शाम का आ जाया करो ।

२८ जनवरी को उदू बाजार म बुकसेलरा की दूकानो की राक छानता रहा । एक जगह तारीख तिवरी (फारसी) देखी । मैंने तुरन्त उस पर हाथ मारा । बतला रह थे यहाँ ता इसे काई पूछता नही, हम पाकिस्तान भेजने ही वाले थ । यह बहुत पुराने इतिहास ग्रन्थो म है जिसमे ईरान और मध्य एसिया पर जरबा के विजय क बारे म बहुत लिखा हुआ है ।

आज नगनल स्टेडियम (राष्ट्रीय अखाडे) म राक नृत्य हाने वाले थे । हम भी वहा गए और सवा ६ बजे से ९ बज तक रहे । अखाडे म जितन आदमी बठ सकते थे उसके चौथाई ही मुश्किल से थे । पागी (हिमाचल चम्बा), कश्मीर पजाब, पेप्सू बुंदेलखण्ड भरतपुर, मारवाड, सौराष्ट्र बम्बई, गोवा मद्रास पाडीचरी उडीसा, मध्य भारत मध्य प्रदेश, सिक्किम

नागा मनीपुर आदि के जन-नृत्य दिखलाए गए। कुछ नृत्य नक्ली कला-चारो और कलाकारिनिया ने दिखलाए यह खटबने वाली बात थी। दशका की आँख म घूल थाकना अच्छा नहीं है। सबसे अच्छा नृत्य मनीपुर पागो, नागा, ब्रज और राजस्थान के थे। बम्बई का सिंह नृत्य भी अच्छा रहा। राष्ट्रपति भी आय थे।

साथी यनदत्त गर्मा ने आग्रह किया कि मैं किसी प्रतिनिधि मण्डल म विदेश जाऊँ। मैंने कहा मैं चीन ही जा सकता हूँ, और उसम भा तिअत जान का मुझे लालच है।

अब की अपनी कितावा के बदले म बुकसेलरो स डेट-दा सौ पुस्तकें लीं। प्रकाशन का यह ता लाभ होना ही चाहिए। समय मिलने पर उनमे स कुछ पढता भी रहा। नागाजुन क बल्चनमा को समाप्त किया। ग्रामीण जीवन का बडा ही सजीव चित्र है। गिकायत यही है कि पाठक प्यामा ही रह जाता है।

जेता का जन्म—रात का डेढ बजे ही से कमला को दद हाने लगा था। पहले १५ २० मिनट के अंतर से फिर जल्नी जल्नी। ३१ जनवरी को साडे ४ बजे तक किसी तरह बिताया। उम समय टैक्सी मिलने म भी दिक्कत थी और डाक्टर की भी परेगानी थी। जाना बहुत दूर था। फिर भैया और हम कमला का लेकर डा० सुगीला के पास गए। उन्होंने तुरत मँभाल लिया। पौने ६ बजे कहा अभी पीढा का आरम्भ ही है। गाम तक गायद प्रसव हागा।

सवा १० बजे फोन किया, तो डा० गिल न बतलाया कि १० बजने मे १० मिनट था, जब पुत्र पैदा हुआ। रमन मार्ट ने अपनी कहानी म कहा, कई बहना के बाद मेरी पीठ पर जब भया पैदा हुआ ता मेरी पीठ पर भेली फोडकर प्रसात् वाटा गया था। भाभीजी और अम्मा ने भी अनुमान कर रहे हुए तुरत भेली मँगवाइ और जया की पीठ पर फोडी। सब रुग डोलक लेकर भाभीजी उनकी माँ, भाजा भाजी हम और जया सभी डा० सुगीला के अस्पताल म पहुँचे। अब की बहुत कष्ट उठाना नहीं पन्ना। कमला लेडी डाक्टर की तारीफ कर रहा थी। यहा मॅट मेरी जस सब साधन मौजूद नहीं थ, तो भी नस बहुत अच्छी थी। अगले दिन जाने पर दवा,

जेता न बीबें गोट दी हैं। पैरा हान वक्त जया स नी जरिन बजन जेता का था जयान् साइ ८ पीड। डाक्टर की फीस १५० रुपय, आठ दिन रहन का गच ६४ रुपय और नौकर चाररा क लिए कुछ सब मिलानर २५० रुपय दना था। ७ फरवरी का कमला अस्पताल से चली जाएगी यह डाक्टर न बनला दिया।

उन दिन 'आजकल' कार्यालय म गया। चन्द्रगुप्तजी सत्याधीजा ममयजी और दूसरे साहित्यकार मिले। डायरेक्टर मिहा सारे विभाग क अध्यक्ष हैं। यह अग्रजी म ही बाल लकत हैं और उसी क कारण ता इम पत्र पर है। उन्होंने बुद्ध गताली क सम्बन्ध म प्रकाशित हानवाली पुस्तक के लिए एक पत्र मांगा था। मैंने दीपकर श्रीजान पर एक लेख लिख कर भेज दिया उस 'आजकल' न छाप दिया। अब दूसरा माग रहू थे। कह दिया गाति रक्षित पर भेजेगे। वहाँ से कुमारिलजी के साथ हरिजन निवास गये। बियागा हरिजी वहाँ नहीं थे। कुछ दर वहाँ घूमकर चले जाय।

जम्मा का छाडे तीन दिन हा गये आर इतन ही म जया भूल गई। अच्छा ही था नहीं ता रा रा कर तग करती। बच्चा का प्रम बटा रहे ता अच्छा है। ३ फरवरी का जया का साथ ले गये। उसन जेता का बडे गौर स दखा। नमस्त, सलाम चुम्बन और प्यार भी किया। जता दिन म अधिकतर साता रहता। अभी जन्म के बाद की डायरियाँ नहीं हुई थी। पेट साफ करन क लिए पकृत न डसका नियम बना रखा है। इसी दिन राजद्र बाबू की चिट्ठी मसूरी से लौटकर आई। उन्होंने लिया था मेरी चिट्ठी को सुन्दरलालजी क पास भेज दिया है। प० सुन्दरलाल का मरा भापा क सम्बन्ध म मतभेद बहुत पुराना है। लकिन, उसक कारण हमारे सम्बन्ध पर कभी कोई असर नहीं पना। अगल दिन दोपहर बाद जन द्रजी भी आए। फज बाजार इसी पाँती म ८ नम्बर क घर म रहते हैं। मैं भी वहाँ गया दर तक बात हाती रही।

५ फरवरी का पार्टी जाफिस म साथी अजय से बातचीत हुई। मैंने फिर से पार्टी मेम्बर हान की बात कहा तो उन्होंने कहा—बहुत अच्छा स्वागत है। इसी समय मैंने आवेदन पत्र दे दिया। यह तो सभी जानत थे कि मेम्बर न रहन के समय भी मैं पार्टी का ही था, और अपनी लेखनी स

उसका काम भी करता था। अब भी लेखनी द्वारा ही काम कर सकता हूँ यह मैंने कह लिया। स्वास्थ्य की इस अवस्था में चलन फिरने का काम हा नहीं सकता। मुझे उस दिन बड़ी प्रसन्नता हुई। मैं डरता था, पार्टी मम्बर न रहत वही महाप्रयाण न करना पड़। चिरकाल से पोषित मरे आत्मा का प्रतीक है पार्टी। अपने पुराने साथियों से मैं बराबर लिख खालफर मिलता था लेकिन एक तरह का विलगाव देख कर तबोयत असंतुष्ट हानी थी। मैंने कहा, अब जीवन भर के लिए पार्टी का मम्बर हुआ।

श्री लाठ का कण्ड ब्राह्मण है जो मराठ ब्राह्मणों में शिक्षा और सामाजिक सुधार में बहुत आगे बढ़े होते हैं। श्री घमानंद का गाम्भीर्य से उहोने बौद्ध धर्म का अध्ययन किया था। संस्कृत में बहुत प्रवीण ही नहीं है बल्कि उसका अध्ययन में उनकी बड़ी रुचि है। अब भी प्रौढावस्था में पहुँच कर भी दशन ग्रथा में अध्ययन के लिए गुरु के पास जात हैं। साथ ही वह मराठी में कवि हैं। धम्मपद और भक्त हरि शतक का उहान मराठी में पद्यबद्ध अनुवाद किया है। सत तुकाराम की कृतियाँ पर एक अनुसंधानपूर्ण ग्रन्थ लिखा है। इससे मालूम होगा कि वह केवल पुराने ढर्रे के आइ० सी० एस० नहीं हैं। बसकर मन्त्रालय के दक्ष सचिव हैं। ऐसे आदमी से साहित्य के बारे में बातचीत करने में आनंद आता है। उह बौद्ध दशन में अध्ययन की रुचि है। माचवेजी ने उनकी तरफ से कहा—लिला में उनके यहाँ ठहरा करें। लेकिन जब भयाजी का मकान बन गया तो उनका घर छोड़ कर दूसरी जगह ठहरना मुझे पसंद नहीं। लाठ साहब में एक क्षण भी है—सारी भाषाओं का छोटा छोटा धरौदा को मिटा कर हिन्दी ही एनमात्र भारत भाषा होनी चाहिए। यह अत्यावहारिक है यह तो इसीसे मालूम होगा कि उहान मराठी साहित्य की सेवा की है और अब भा कर रहे हैं। उहान अपने इन विचारों का अपने ड्राइंग रूम में किसी सनहा कहा, बल्कि मराठी साहित्यकारों का सामन भी इस पर बोलें। उह यह कितना अरुचिकर मालूम हुआ होगा इसे कहने की जरूरत नहीं। उसकी जरूरत क्या कि मराठी गुजराती या भारतवर्ष की और भाषाएँ नामरोप हो जायें, और उनकी चिन्ता पर हिन्दी कहे प्ये।

७ फरवरी का श्री भरत मिश्र राष्ट्रपति के निजी सचिव श्री बाल्मीकि

चौधरी व राय आए। भरत मिश्र को छपरा में लग सोह स्वामी कहन लगे हैं। प० रामावतार गर्गा व गिष्य और अनुयायी अर्थात् नास्तिक लेकिन हिंदू नास्तिकता-आस्तिकता या समन्वय करना जानता है, विनयकर आह्वान। वाल्मीकि बाबू स पत्र द्वारा परिचय था क्योंकि चक्रधर बाबू के विद्वत् मस्तिष्क होने व बाद अब वही राष्ट्रपति व निजी पत्र-व्यवहार और दूसरे कामों का जिम्मा लिए हुए थे। मैंने पिछले पत्र में राजेंद्र बाबू का लिखा था—मैं दिल्ली में आऊँगा तबिन आपका समय बेकार लना नहीं चाहता। राजेंद्र बाबू में मिलन जुलन में मुझ व भाई सकोच नहीं हो सता था। पर, राष्ट्रपति हान व बाद उनके दशनाथिया की संस्था बहुत अधिक बढ़ गई है इसलिए मैं उसमें एक की संस्था और बनाना नहीं चाहता था। जब वाल्मीकि बाबू नवम्बर ११ फरवरी का रात ५ बजे आप मिलने आये, तो मुझे अपने पत्र व लिए पठतावा हान लगा। मैंने यह क्या लिख दिया कि आपका समय नहीं लेना चाहता। अब तो जाना ही पड़ेगा।

इसी समय फजवाजार व डाकघराने में एक घटना घटी। आजकल अकबर नाट्य देन पर चीज लेकर बाकी पस लेना मैं भूल जाता हूँ। उस दिन टिकट लिए और १ रुपया १० आना वही टिकटवाले बलक श्री चतराम के पास भूल आया। अगले दिन गया तो उन्होंने पैसे वापस कर दिये। अभी भी, और दिल्ली शहर में ईमानदार लोग हैं इसका यह उदाहरण था।

सरहपास दाहावांग की जो (१०वीं—११वीं गतादी की) ताल पोथी मुख तिब्बत में मिली थी, और जिसे मैं अब सम्पादित कर रहा था प्रकाशकों की इच्छा हुई, कि उस सारी ताल पोथी का लाख पुस्तक में दे दिया जाए। दिल्ली में ब्लॉक मकर ढेरा पड़े हैं। कई जगह देव दाखकर मैंने चावडी बाजार व एक्सप्रेस ब्लॉकवाला को पसंद किया। दस साल पहले एक तरुण ने इस कारबार का शुरू किया और यह कोशिश की कि काम में कोई कसर न हो, गाहक खुश रहे। इतने दिनों में उसका काम जम गया था। मेरी पोथी के कई लाख लेन थे। मैं भी चाहता था, और मुझसे भी अधिक तरुण मालिक का इस बात की फिकर थी कि कोई प्लेट अस्पष्ट न रह पाए। किसी किसी के दो दो तीन तीन प्लेट उसने रही में डाल दिए, जितना अच्छा हो सकता था, उतना अच्छा ब्लॉक बनाया। काम

उसका काफी बढ चुका है, और, और भी बढान की बात कर रहा था। मुन शी कृष्णप्रसाद दर की बात याद आती थी। अगर काम बढान के पीछे इतने पागल न हाते तो अपन रोपे विरवे—ला जनल प्रस—स दूध की मक्खी की तरह न निकाल जाते। मैंने सावधान किया काम बढाने क ख्याल स सठा के पास मत जाना।

राजकमल के यहाँ जान पर देवराजजी न एक किताब उठाकर कहा यह एक नए लेखक का बहुत अच्छा उपयास है। मेरे पास समय भी था और मैं सक्डा पुस्तकें इस वक्त जमा कर रहा था। मैं मला आचल" भी ले लिया। उस लिए जैनेद्रजी के यहाँ जाना पडा। जनद्रजी दागनिक न बनते तो अच्छा हाता, लेकिन किसी क दिल को कस रोका जा सरना है ? उहाने 'मला आचल' को देखकर कहा मैं इस निष्पट (थ्रेष्ठ) ता नही कहता, पर दि गुड (अच्छा) कह सकता हू। जनद्रजी का इतना सर्गो फिन्केट भी नय लखक क लिए काफी था। दागनिक अपने हरेक गान को तोलकर बालना तो जानते हैं। मैं उस पुस्तक को आधोपात पठ गया। सधमुच ही उसके पढन म प्रमचद की कई महान् कनि याद आती थी। मैं फणीश्वरनाथ रेणु की लखनी का कायल हा गया। मैं तो समझता हूँ वडे उपयासा म प्रेमचद के बाट ऐसा सुन्दर उपयास कोई नही लिखा गया। मैं उसक वार म नाट भी किया था— अच्छा लिखा है। विविध्य सौंदय पूण यथाय चित्रण है।" लखनी म वडी सम्भावना है।

११ फरवरी को सवेरे गिव गर्मा के साथ उनके कला भवन म लाजपत नगर गया। कला भवन का मतलब है हिंदी साहित्य विद्यालय। वह दिल्ली के एक छार पर है। वहाँ तरुण तरुणिया पढकर पजाब मुनिवर्सिटी के प्रभा कर, रत्न और मटिक का परीक्षाए दर्ती थी। पजाब म इस तरह क निजी विद्यालयो की स्थापना का बहुत रवाज है। कुछ लाग इन पर नाक भी मिचोडत हैं और कहते हैं ये गिाण सस्याए नही गिाण दूकानें हैं। मैं नही समझता कही भी गिाण-सस्याओ क लाग हवा पीकर रहत हैं सभी तनखाह लते हैं। यहाँ भा यदि गुल्फ लकर पटाने हैं तो क्या बुरा ? यदि यहाँ पढ़ हूए लडक लडकियाँ परीक्षाआ म पास नही हाने, तो पढने क्या आत ? और जब बाकायदा स्थापित कालेजा और स्कूला क लडकों के माय

बैठकर वह परीक्षा में पास हो जाना है तो इनकी गिनामत क्या? गिर सार्मा का जाग कभी कभी उह बहुत जार से उठा ले जाता। उस समय उनकी व्यावहारिकता पर सन्देह होने लगता है। लकिन यहाँ दिल्ली में यही इस भयानक समस्यापक और प्रधानाचार्य थे। वह साहित्यरत्न अच्छी तरह पास हुए थे हिन्दी साहित्य को उनकी योग्यता बहुत अच्छी है। यादों ससृष्ट भी पनी थी। अंग्रेजी पढ़ने की इच्छा ता होती पर नच न प्रवृत्ति ' (उधर मन चलता ही नहीं था)। उनका सहायक अध्यापक में अग्रजी क प्रेजुएंट भी थे। इस सस्या को चलाने उहोंने अपनी 'व्यावहारिकता का प्रमाण दे दिया था। इन सबके हात भी व हैं घूमककड इसलिए बीच-बाच में महाना क लिए विमक जान है। उनका माता पिता भी माय थे। व समयते थे, मरी ही प्रेरणा से उनके पुत्र न जपन माता पिता का स्वागत किया।

दो दिन पहले मैं ५० भगवद्दत्तजी को कह चुका था कि ११ तारीख को मैं आपका यहां आऊंगा। मैं समझता था पटेलनगर और लाजपतनगर पास ही पास हैं। अब मालूम हुआ दोना में २० मील का अंतर है, दोना दिल्ली क दा छोरा पर हैं इसलिए जाने का विचार छोड़ देना पडा। लाजपतनगर में गणनाथियों के लिए सरकार ने मकान बनवाये थे। पहले ६ हजार में जा मकान बिवा था अब नीताम में सरकार ने उसके दस पंद्रह हजार पाए थे। सरकार यदि इस तरह से मकाना को देने लगी तो सभी मकान बडे बडे धनिका के हाथ में पहुँच जाएंगे और साधारण वित्त वाले बघर के ही रह जाएंगे। यह अंधेर है लकिन समझाए कौन ?

आज ही पार्टी क मुसपत्र "यू एन" में निकला कि मैं फिर कम्युनिस्ट पार्टी में सम्मिलित हो गया। जब पार्टी से जलग था तब भी खुफिया पुलिस परछाई की तरह पीछे पडी रहती थी, इसलिए उसके काम में कोई अंतर नहीं था। सयोग देखिये, उसी दिन साढ़े ५ बजे राष्ट्रपति भवन में राजेंद्र बाबू से मिलन जाना था। टैक्सी ने वहाँ तक पहुँचा दिया। दिल्ली क जबबर जस दूसरे वात्साह भी इतने बडे राज्य के प्रमुख नहीं थे। शायद इतिहास में भारत में एना काई राज्य अधिष्ठाता नहीं हुआ। इसलिए यदि वहाँ के नौकरा की तडक भडक देखकर आख चौंधिया जाय तो कोई अचरज नहीं।

फिर राष्ट्रपति भवन वही मकान था जिस पढ़ते वायसराय भवन कहा जाता था और जिसके बनाने में अंग्रेजों ने बर्बरों से प्रजा की गाढ़ी कमाई का स्वाहा किया था। मैं समय पर पहुँचा था इसलिए जरा ही देर में राष्ट्रपति के पास पहुँचाया गया। राजेंद्र बाबू वस हा सीधे-साथ बैठ हुए थे। मैं भी बैठ गया। स्वास्थ्य साहित्य और निव्वत के वार में बातचीत हुई। सरस्वा की तात्पार्थी का उद्धान बड़ी लिचस्यो स दया। पूछा—कहाँ सहायता की जरूरत है? मैंने कहा—यद्यपि मेरा स्वास्थ्य बहुत जमा नहीं है पर आजकल विज्ञान में पुराने मठा और पुष्पकाल्या के गोरने से जा खबरें मिल रही हैं उनके कारण मैं तिरन जाना चाहता हूँ। उसक लिए पासपाठ के वार में आपको सहायता करनी पड़ेगी। उस वक्त मुझे माग्म नहीं था कि उत्तर प्रन्ग सरकार ने पासपाठ दन से दत्कार कर लिया है। राजेंद्र बाबू ने पासपाठ के लिए वागिंग की। आबिर उड़ी के नाम पर ता पासपाठ मिलन हैं इसलिए कन्द्रीय सरकार क्या इशार करन लगी।

राजेंद्र बाबू हमारा म मकाची रह। इसका यह मतलब नहीं कि वह प्रतिभा में पीछे रह। जाम्मी आम्मी का स्वभाव होता है। स्तना सनाच उन्तने कहा स सीखा? बड़े भाई मट्ट बाबू का अन्न अनुन्न के ऊपर एसा घनिष्ठ प्रेम था जैसा बहुत कम देखा जाता है। राजेंद्र बाबू उनके मामने हमारा अपन का छाग-मा वालक ममयन थ वस ही सम्मान और स्नह रखत थ। गायन मकाच ना जारम्भ वही हुआ हा। कुछ भी हा। बाज-वक्त अपन भावा का प्रकट करन में उनका मकाच करना अच्छा नहीं होता। वह भारत के प्रथम राष्ट्रपति हैं। गतान्विषा वा भारत में पहेल-पहेल मगराज्य स्थापित हुआ और दमद मगरानि बनन का उह मौका मिला। वह जा रास्ता विचारोंग उमका अनुसरण वून पीछे तक किया जाएगा। न नहुर् लिफाफिया परिवार में पदा हुए जिन्ग्या नर लिफाफिया रह। न उह अपन पसा से स्वच करन में रभा ल हुआ, और न भूखी-नगी जनना से जमा किय हुए पम में आग लगान में काइ सकोव। इसका उद्धारण उनका कर्गिन विभाग है। उनके राजहून वस तरह को ह्यहीनता के लिए भाहूर हैं। विजयलक्ष्मी पण्डित ता गाहनाती हैं। मास्का के दूतावाम के

राजा के पर्चीकर का तरीकन वह यन्त्र हवाई जहाज से स्वीडन गई तो फार्ड अचरज की बात नहीं थी। उनका दम बकरार रहना चाहिए जिस दूतागम में भी पधारेंगी उस मुगल दीवानेपास वनाके छोरेंगी। मास्को में एगा ही किया वागिंगटन में एगा ही किया लन्दन में एसा ही कर रही हैं। जब तब बड़े भया हैं तब तब वह राजदूता बनकर इसी तरह अपने गरीब दंग की असली अवस्था पर पर्दा डालकर दूतागम का गौरव बनायेंगी। मनन साहब से जागा थी वह सकाच करगे लेकिन वह भी लन्दन में राजदूत हाते ही रात्सराइस जसी अत्यन्त मर्चीली मोटर खरीदने में लोभ की रोक न सक। इन लागों के बारे में क्या गिकायत हो सकती है ? लेकिन राजेन्द्र बाबू का तो उनकी बात में नहीं पडना चाहिए था।

यह ठीक है वह बहुत नहीं बड़े। अब भी उह खानी के उसी पुराने घाती कुर्ते में देखा जा सकता है अधिकतर वह अपनी इसी पागाक में रहते हैं। पर, नेहरू ने सिगला दिया है कि मर्यादा रखने के लिए गचकन और चूड़ीदार पायजामे की बड़ी जरूरत है, इसलिए राष्ट्रपति उस पागाक में भी देखे जा सकते हैं। इस बात में उह डा० राधाकृष्णन का अनुकरण करना चाहिए, जिन्होंने कभी अपनी घोड़ी नहीं छोड़ी। पर जसा मैंने कहा, उनका सकाच वाज वक्त बुरा होता है। नेहरू भाजपुरी बहावत के अनुसार— 'याड-याड गइल बिता भर पगहा ले गइल' सीधे सादे राजेन्द्र बाबू को भी कितनी ही जगहा में पथभ्रष्ट करने में समय हुए। राजेन्द्र बाबू हमें जनता के आदमी थे। जनता में घुल मिल जाने में ही वह सन्तुष्ट होते थे और दिवावे के लिए नहीं, बल्कि उनका कुछ ऐसे ही स्वभाव बन गया था। अब वह बिना शरीर रक्षक की पलटन के कही जा नहीं सकते। यह ठीक है कि उनका समय में हिस्सदार हजारों आदमी और हजारों काम हैं लेकिन उसमें भी कभी कभी घटा दो घटा निकाल सकते हैं। उस समय यदि वह मोटर का दूर ही छोड़ अकेले अपना पुरानी पागाक में तिल्ली की गलिया में घूमते तो क्या बुरा हो जाता ? वह तो गणपति हैं पुराने राजाओं में भी कितनों ने ऐसा किया था। इसका क्या लाभ होगा ? उनके लिए तो नकद होगा, और गरीब जनता का भी सताप होगा। वह अपने दिल की बातें कहने का कभी कभी मौका पाएंगी। सबसे बड़ी बात होगी कि आगे के राष्ट्रपतियों के

लिए रास्ता निकल आएगा और नेहरू का रीढ़ जाता रहेगा।
मुझे घड़ी की आर देखते हुए राजे द्र बाबू ने कहा—उसकी पर्वटि न
कीजिए। लेकिन काम की बात तो कर चुका था। कुछ मिनट ही और
बठा। आध घंटे बाद वहाँ से चला आया।

१२ फवरी को डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी डा० राजबला पाण्डे आए।
कहने लगे नागरी प्रचारिणी सभा ने हिंदी विद्वक्कांग प्रकाशित करने की
एक योजना केन्द्रीय शिक्षा विभाग के पास दी है। छ लाख रुपये के खर्च से
पाँच साल में इस काम को पूरा करना है। भारत सरकार ने इस मजूर
किया और पाँच हजार मासिक और भी देना निरद्वय किया है। प्रधान
सम्पादक और चार सहायक सम्पादक होंगे। हमारे काम की बड़ी अडचन
दूर हो जाएगी यदि आप प्रधान सम्पादक होना स्वीकार करें। मैं सरकार
नौकरी करने के लिए कैसे तयार हो जाता ? उस वक्त तो कुछ नहीं कह
सका लेकिन पीछे अपने विचारों को लिख भजा। उन्होंने फिर अपनी कठि-
नाइयाँ रखी और कहा दूसरे को प्रधान सम्पादक बनाने में कई उम्मीद-
वार हो जाएँगे और विवाद हान का डर है। फिर शिक्षा मंत्रालय उसे
मानने में गड़बड़ी करेगा। मित्राने भी ऊँचा-नीचा मुझाया यह भी बत-
लाया कि यह काम तो सभा कर रही है सरकार तो केवल अनुमति देती
है। कई महीने पीछे मैंने अपनी स्वीकृति भेज दी।

१३ फवरी को जेता के जन्म पर चाय पार्टी हुई। इसा वहाने दिल्ली
के साहित्यकारों के दशन का मौभाग्य प्राप्त हुआ मरी भी उसमें सहमति
थी। डा० सत्यजितु चंद्रगुप्तजी, ममथनाथजी सत्यार्थीजी वाचस्पति
पाठकजी देवनारायण द्विवेदीजी भगवतीप्रसाद वर्मा नरेन्द्रसामा, जनेन्द्रजी
माचवेजी नवलपुरी सच्चिदानन्द आदि घर बाहर के ३६ पुरुष और
महिलाएँ उपस्थित थी। ऊपरी बरान्धे की जगह काफी सावित हुई। चाय
पान के साथ साहित्य चर्चा भी हुई। श्तरवार का दिन था इसलिए प्राय
सभी काय से विरत थे। गीलाजी, भाभीजी, कमला आदि ने प्रत्येक अपने
हाथ में लिया था। श्रीनाथ और उनके परिवार ने भी मतीज के उत्सव में
भाग लिया था।

१४ फवरी का मैं चावठा बाजार में ब्लाका की बापी लन गया था।

चांदनो चौक और चावली बाजार में भीड़ जकमर रहती है। एक जगह भीड़ हुई। मालूम हुआ एक आदमी जान बूझकर रास्ता रोक रहा है। मैं उस पर गुस्सा हाने का रहा था लेकिन उस समय दूसरी आर ख्याल नहीं गया। आगे गानर काई चीज खरीदकर जब पमा देने लगा तो दखा चमड़े का गाल मनी थग गायब है। सयोग से मैंने सभी अण्डे एक टोकरी में नहीं रखे थे दम रूपय का नोट अलग भी था, इसलिए दूकानदार का पमा दे दिया। बटुये में चार पांच रूपय तो जरूर हाने। उससे भी ज्यादा बटुए का मोह था। १९४६ में गतिनिकतन में इस लिया था। वह वहाँ के निवास का चिह्न था। पुराने बिचारवाला के गालों में कहता था वह बटा भगमाना था। कभी ऐसा नहीं हुआ कि वह पमे से खाली हा। मैं हैरान हा रहा था तिनती सफाई से पानटमार जाकेट के ऊपरी जेब से उस उठा ले गया। लेकिन, यहाँ सफाई की भी कोई एसी बात नहीं थी। जब उडानवाले कई मिलकर यह काम करते हैं। जिसने भीड़ के बगान रास्ता रोक था वह उही में स था। दूसरा बगल से थला निवालन की ताक में रहा। ११ १२ वष पहल बगलौर में एमा ही हुआ था। कई ने मिलकर यात्रना बनाई थी। एक न मेरी सफर फौटेनपन उडाई। उसन किसी जीर के हाथ में थमाई उनका एक साथी जीर से भागन लगा। मेरा भालापन कहिय मैं उसके पीछे दौडा और आगे जाकर पकड भी लिया। वह कसम गान जीर नगाझारी दन लगा—'मैंने कलम नहीं चुराई। मैं तो अपन काम से भागा जा रहा था।' सचमुच ही वह कलम लिए हाता ता पन्थान के लिए ऐस क्या दौडता ? तिल्ली के पाकेटमार उससे भी ज्यादा हाणियार थे। पर जिन्दगी में दो चार बार ऐस अनुभव घुरे नहीं हैं हालाकि इसमें सदेह है कि आदमी उससे काई लाभ उठा सकता है।

उसी दिन २ बजे श्री रामलाल पुरी न मर उपलक्ष्य में साहित्यकारों के लिए एक चाय पार्टी दी जिसमें डा० नगेन्द्र श्री बाकबिहारी भटनागर माचवेजी आदि तीस के करीब साहित्यकार मित्र आए।

उसी (१४ फरवरी) रात को हम देहरादून की ट्रेन पकडनी थी। गाम का भया भाभीजी गिवकुमारजी श्रीनाथ आदि स्टेशन पहुँचाने आए। ट्रेन १० बजे चली और अगले दिन ८ बजे के करीब देहरादून पहुँच गई।

मसूरी से मन भर गया

१५ फरवरी का हम देहरादून में रह गए। गुक्काइनजी नये बाग-गापाल का देखकर बड़ी प्रमत्त हुईं। हम अब कमला की पराक्षा की चिन्ता थी। वह अब के साल बहुत कम पढ़सनी थी, मुश्किल से एक महाना मिला था। जा भी समय था, उस पढ़न में लगाना था।

अगले दिन (१६ फरवरी) का हमन टैक्सी की, और अपन फाटक के मौ गज तक उस लाए। बीस रुपया किराया और पाँच रुपया नगरपालिका के आना पत्र का देना पडा। साढ़े ६ बजे हम अपन घर पर थे। टण्डी जगहा पर अब भी बर्फ मौजूद थी। अत्र क माल बर्फ अच्छी पडी थी, लेकिन हम उस देखन का मौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ। पहले कलजे के दद से भागते फिरे, इधर महीने भर क लिए टिल्ली चले गए। आनकल सवाय हाटल में विन्व कार्टोग्राफी (भूचित्र निर्माण) सम्मेलन हा रहा था। उसमें भारतीय प्रतिनिधिया न चीन गणराज्य का सप्तस्य बनान का प्रस्ताव किया, पर अमेरिका और उसक पिन्टू उस क्या पसन्द करन लगे? सभी जगह उसी का बहुमत भी है। तुर्की का कोई प्रतिनिधि न हान पर भी उसका उपाध्यक्ष चुन लिया गया। भारतीय प्रतिनिधि अपने प्रस्ताव में सफल ता नहीं हुए, लेकिन उहने खूब तरी-वोगी सुनाइ। अमेरिका समय-भमय पर अपन का नगा करक लिखला दता है। उस दुनिया की जनमत की कार्टे पवाह नहीं है। वह अपने डालरा और आनतायापन पर फूटा नहीं समाता लकिन एक दिन यह नगा उतरेगा जरूर।

१८ फरवरी का विद्युत् सरकार की ओर स दस पुरस्कार के लिए आई पुस्तकों को देखकर अपनी राय दी। यद्यपि पहले सूचना मिली थी कि यदि कोई दूसरी पुस्तक भी नजर में आए, तो उसके लिए हम लिखें। उस समय तक 'मला अचल' को मैं देखना नहीं था। नहीं तो इसमें एक नहीं मैं उसी को पहला नम्बर देता।

कमला का परीक्षा की तयारी में अरु सारा समय देना चाहिए था। मैंने कहा कम से कम देहरादून जाने तक दा हफ्ते के लिए कोई नौकरानी रख दी जाए लेकिन उन्हें यह पसन्द नहीं था—खर्च बढ़ेगा। हाँ खर्च तो बढ़ेगा दस पाँच रुपया, किन्तु वह बच्चे का कपड़ा धोयगी उस खिलाएगी। मरी एक न मानी।

जया फरवरी के अन्त में डेढ़ वष की हाने जा रही थी। अब वह कच्चे त प ब जदरा का बोल सकती थी। टवग और महाप्राण अक्षरा को बालन में असमथ थी। इन्हें बच्चे बहुत दिना बाद सीखते हैं। मैं अपने उपन्यास 'सप्तसिंधु' के लिए सामग्री जमा करने में लगा। पढ़ने के बाद कितने ही स्थानों से अघवार हटता गया। ऋग्वेद में बिलरी सामग्री भारत में आने के तीन शताब्दिया बाद सप्तसिंधु के आयों की कितनी ही बातों का साफ करती जा रहा थी। उपन्यास के अभी जल्दी लिखने की सम्भावना नहीं थी। पर लेख लिख डालना चाहता था।

देहरादून—परीक्षा देने से एक हफ्ता पहले ही जया जेना को लिये कमला और हम ६ मार्च को देहरादून गये। पहले जाना चाहते थे लेकिन हाली के हुडदग का डर था, इसलिए उसे मसूरी में ही भुगतान कर आए। अब हम जया की देखभाल करनी थी और कमला को पाठ्य पुस्तकें पढ़नी। बीच बीच में प्रो० वृहस्पति शास्त्री, प० हरनारायण मिश्र से सारसग होता। १६ का प० किशोरीदास वाजपेयी भी आ गए। आजकल हिंदी पाठ्यक्रम के लिखने में लगे हुए थे जिसे नागरी प्रचारिणी मभा अपनी ओर से लिखवा रही थी। उसका बहुत सा भाग वाजपेयीजी ने लिख भी लिया था जिसकी टाइटल कापिया विभापनी के पास भेजी गई थी। मैं भी देखकर मुग्ध दे रहा था।

१८ मार्च तक मौसम गर्मी का मालूम हाने लगा। सबसे तरदुत् था

मखियो म । गर्मी बढन ही वह आ धमकती । मखिया और मच्छरो का सवनाग तभी हा सकता है, जब सारे शहर म गदगो न हो । और यह घली-साही राज्य म हान की बात नही ।

ठीक डेढ वष के हाने पर जया ने कितनी ही चीजा के नाम रख लिए थ, जैसे गाय-बा खाना-जवा बहरी-माँ विल्ली मा, माटर पापा । अक्षरा म का, चा, जा, ता, ना पा बा मा बोल सकती थी । उस घूमन का बहुत गोक था । झट स हमारी अँगुली पकड सडक पर चलन के लिए तैयार हो जाती थी ।

मसूरी—२१ माच को कमला की परीक्षा (एम० ए० प्रीवियस) समाप्त हुई और अगले दिन हम मसूरी लौट आए । इस समय महादेव भाई कल्कत्ता स आ गए थे । उन्होंने गंगा की पढाई म भी सहायता दी ।

दिल्ली—२३ माच का फिर दिल्ली के लिए रवाना हाना पडा, जहाँ अगले दिन सवरे पहुँचा । सैनिक विभाग क विदेगी भापा स्कूल म तिबनी की परीक्षा लेनी थी । सूचना स कुछ ऐसा मालूम हुआ गायद कल्म्पाग स डा० जाज रोयरिक भी आने वाल हैं । इसी लाम से वहाँ गया था । २५ माच का धौलपुर होस म पल्लिक सविस कमिशन क आफिस म गया । डा० जाज रायरिक ता नही, पर उनक अनुज स्वेतस्लाव रायरिक आय । वह पिवायफ में तथा विदेगी भापा स्कूठ के सचालक मुकजी साहब वहाँ थे । सनिक विदशी भापा स्कूल के लिए रूसी अध्यापकी क उम्मीदवारा का देखना था । तातियाना वास ही सबसे योग्य साजित हुई । उनकी मातभापा ही रसा नही थी, बल्कि रूसी की कवि और लेखिका भी थी । दूमरी तरुणी वालन चालने म बहुत अच्छी थी पर उसका भापा का ज्ञान उतना गम्भीर नही था । मवने तातियाना हा को स्वीकार किया ।

२६ माच का हम फिर लौटकर मसूरी आ गए । महादेवजी उसी दिन गए । आन दजी अपने दा साधिया के साथ कट आए थ । सयोग था जो मैं आज आ गया, क्याकि अगले दिन वह लौटने वाले थे । सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि 'जातक' का हिंदी अनुवाद भी समाप्त हा गया और आखिरी जिल्द छप रही है । अब ५० के हा गए हैं । मैं पहल पहल १६२६ म मेरठ म उन्हें देखा था । तब से २६ वष हुए । [बुनापे का अमर दिखलाई पड रहा

था। पूछ रहे थे—दूनरे किस काम म हाथ लगाऊ ? मैंने एक-दो सुझाव दिये। उसी दिन मचू भिंगु टगी छिड पो (मगल हृदय) भी मिले। उनसे ममूरी जीर गिमला म मुलाकात हा चुकी थी। वह वस्तुतः मधू थे, लेकिन आजकल गुद्ध मधू बहुत कम रह गए हैं। उनम से अधिराग भाषा, भेस म चीनी बन गए हैं। वैसे जातित और भाषात मधू मगाला के बहुत नजदीक हैं, और उही की तरह कितने ही तिब्बत म आकर पढ़ने है। मगल हृदय हमारे पास आना चाहते थ। रसाईघर के ऊपर का ही कमरा रह गया था। हमने कहा, वह हाजिर है। कितने ही दिनो तक वह वहाँ रहे। फिर उहे 'आर्टेन' म अनुकूल स्थान मिल गया, इसलिए वह वहाँ चले गए। उहाँन ससृष्टत पढने की इच्छा प्रकट की। हमने कहा, अच्छी बात है। लेकिन, जान पडता है, एक उमर के बाद कम स कम भाषाओं का पढना आदमी के लिए मुश्किल हो जाता मन उसम नहीं लगता और मेहनत नहीं होती।

आन-दजी जब से अपन ज-मस्थान स निकले तब से फिर नहीं गय थे। गाँव ता उनका अम्बाला गिले के खरड तहसोल म था पर, उनके पिता अम्बाला के स्कूल मे अध्यापक थे और आन-दजी (पूव नाम हरिदास) का अधिक समय वही बीता। वही मेट्रिक पास किया और कालज मे जाने की जगह वह असहयोग म चले गये। फिर कुछ समय बाद अपनी पढाई लाहोर के वामी विद्यालय म पूरी की। वह ५० बलदेव चौके—वाद म स्वामी मत्यानन्द—के सहपाठी थ। सहपाठी के निवास पर ही मेरठ म मेरी उनसे पहले पहल मुलाकात हुई। उस समय क्या मालूम था हमारी इतनी घनिष्ठता हो जायगी। अब वह अपनी ज-मभूमि देखना चाहते थे। मैं अनुमोदन किया। एक ही छाटा भाई था, जो पटियाला म कही पटवारीगिरी करता था। कुछ कमाया ता साबुन बनाने का कारबार घुसू किया पूजी गँवा बठी और अब फिर पटवारी के पटवारी।

मगल हृदय से मैंने सरहपा के दोहाकोशा के अपने हिन्दी अनुवाद करने में सहायता लेनी चाही। लेकिन, त्रिजती अनुवाद म भी सिद्धो की भाषा अपनी विशेषता रखती है। मगल हृदय उससे परिचित नहीं थ इसलिए बहुत सहायता नहीं कर सके। ५ अप्रैल को अफराल्लु म चडीगढ के सरकारी कालेज क तीन प्राफेसर जाए। वहा की बातें बतला रहे थे। मालूम हुआ

चण्डीगढ़ स्टेशन हिंदी भाषा क्षेत्र में है। एक छाटा-सा सूखा नाला है वही पंजाबी और हिंदी भाषा की सामा है। हमारे प्रभुआ को भाषा से लेना देना क्या है? उनकी चक्र ता बंगाल की राजधानी आसाम में बनाई जा सकती है। एक इतिहास और संस्कृत के पण्डित थे। उनसे मालूम हुआ, रापड़ में हाल में जो खुदाई हुई है उसमें मयमल रण के बरतन मिले हैं जिनको बर्दिक-कालीन कहा जाता है। पर, इस तरह के बरतन तो हस्तिनापुर में भी निकलें जा श्रुतवद के काल के हार्गज नहीं हैं। मैं उत्सुक था श्रुतवदकालीन बरतनों और दूसरी चीजों को देखने के लिए। जा चीजें उस समय से लेकर पीछे तक चली आती थीं उनसे सप्तमिधु के आर्यों के ऊपर पूरा प्रकाश नहीं पड़ सकता।

कमला ने मेरे जन्मदिन का याद दिलाने का निश्चय कर लिया था। ६ अप्रैल १९५५ को मेरा ६३वां जन्मदिन था। उस दिन कनक हरिचन्द, झंडला दम्पती, महतापी आए। गीलाजी और डा० सत्यकेतु गुरुकुल कागड़ी चले गए थे, इसलिए वह अब के नहीं आए। चार पांच दिनों के लिए साथी साइडलकर भी आ गए थे, आज चाय के बाद वह चले गये। चाय पान हुआ। डा० हरिचन्द पेंशन प्राप्त सिविल सजन हैं, उन्होंने ही मिस एनग से 'क्लिंडेर' खरोदा है। मकान के बारे में क्या गिफायत हा संपत्ती थी? लेकिन, यहा का एकांत जीवन उन्हें पसंद नहीं आ रहा था। सीजन से पहल आ गए थे, इसलिए एकांत और भी अधिक था। कहने लगे, कोई सरीलार हा तो ढूँढ लीजिये। उस समय जान पड़ता था, २२ हजार की चीज का कुछ घाटा सहकर भी बच देगे। लेकिन जब साल भर बिता चुने तो घाटा सहकर बचने का सयात् छाड़ दिया। अक्ले आदमा हैं अग्रज पत्नी मर चुका है। एक पुत्र है, जा भारतीय फौज में तोपखाने का मजर है। एक लडका अग्रज से ब्याह कर विलायत में रहती है। इतने बडे बँगले में अक्ले के कसे मन लगे? ७० वष के ऊपर के हैं लेकिन अभी भी स्वस्थ हैं, धूम फिर देने हैं। हम तो ऐस पडोसी स विनेष लाभ है। कभी अपने ही टुल्लते हुए पूछने के लिए आ जात हैं, नीर काई भी दान होनी है, तो हम उनक यहाँ पहुँच जात है।

१३ अप्रैल को नेपाल से श्री कलानाय अधिकारी अपने एक दूसरे जन

गायक जागी के साथ आए। कलानाथ अच्छी नौकरी को त्याग कर स्वतंत्र नेपाल में लौट गए थे। एक दजन के करीब का परिवार कैंसी आधिक कठिनाई में पड़ा हुआ था देखकर भी दुःख हाता था। अधिकारी-जी लोक गीता के अच्छे गायक हैं। संगीत में उनके सारे परिवार की रुचि है। लेकिन, शुद्ध जनगीता की जगह वह अपन बनाय लोक गीता को गाना ज्यादा पसंद करते हैं शुद्ध लोक धुना की जगह उसमें अपना भी प्रवेश कराना चाहते हैं और इसको वह दाप नहीं समझते। वस्तुतः यदि यह दाप नहीं होता, तो उनका गला बहुत ही मोटा है। वह बहुत सुंदर गा सकते हैं। तरुण हैं घूमने फिरने में आलस नहीं है यदि वह दो चार हजार नेपाली लोक गीतों का जमा कर डालते तो अमर काय होता। पर उसके महत्त्व को जब खुद समझें तब न। बतला रहे थे, नेपाल की स्थिति पहले से भी बर्तमान होती जा रही है। यहाँ कुछ दिना रहकर मसूरी देख दाना तरुण चले गए।

यहाँ रहते मेरी भारतीय भाषाओं में पुस्तकों के कई अनुवाद हुए। मद्रासीजी ने चार पाँच पुस्तकें—अधिकतर उपमास और कहानियाँ—गुजराती में अनुवादित और प्रकाशित की। केरल छोटा प्रदेश है लेकिन वहाँ सबसे अधिक साक्षरता है इसलिए पुस्तकें भी अधिक निकलती हैं। वहाँ तो कई विद्वानों ने अनुवाद करने की होड़ लगा रखी है। बोला मे गंगा का अनुवाद करने की ओर रुचि स्वाभाविक है। अब तो वह भारत की कोई साहित्यिक भाषा नहीं है जिसमें उसका अनुवाद न हुआ हो। असमिया और कन्नड़ में पुस्तकाकार नहीं छपीं लेकिन बहुत से पत्रों में उसकी कहानियाँ निकली हैं। मलयालम वालों ने विश्व की रूपरेखा को सारे चित्रों के साथ छापने की हिम्मत की इसमें मुझे मालूम हुआ गया कि उसमें पुस्तकों की खपत ज्यादा है। इधर तो दो विद्वानों ने 'द्वान दिग्दर्शन का अनुवाद करके छापना शुरू कर दिया। मरा इसमें दाप नहीं था मैंने कहा था तीन महीने के भीतर उसका कुछ फर्मों का छपा मेरे पास भज दें। जब एक ने ऐसा नहीं किया और दूसरे ने अनुमति माँगी, तो मैंने उस अनुमति दे दी। उसके बरस सवा बरस बाद कितने फर्मों को छापकर शिकायत करते हैं, कि ऐसा क्या ?

२८ अप्रैल को भी रह रहकर फेफड़े में सुइयाँ सी चुभ रही थी। अगले

दिन कनल चाँद न देखा। उन्होंने कहा, यह भीतर का दद नहीं है, ऊपर मसल्स का दद है, जा मालिंग करने से ठीक हो जाएगा।

१ मई को हरद्वार से सरदार जसवन्तसिंह आए। वह शरणार्थी साहित्यकार है। एक छाटा-सा प्रेम चलाते हैं। पर्याय-काश बनाने की ओर उनका ख्याल गया। पहले शायद पजाबी में बनाना चाहते थे फिर ख्याल आया, हिन्दी में इसके लिए ज्यादा क्षेत्र है। ऐसे कोश के बनाने के लिए हिन्दी और अप्रेंजी का ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है बल्कि सस्कृत का भी कुछ ज्ञान होना चाहिए। यह कमी जरूर है लेकिन उसकी पूर्ति सरदार अपनी धुन और सग्रह के परिश्रम से कर लेते हैं। आखिर ऋषिजी में भी रुसी हिन्दो कोश बनाने के लिए यह कमी थी। पर मैं समझता हूँ उनका काम अच्छा होगा। वह अपनी कमियाँ को दूसरा की सहायता से पूरा कर रहे हैं। सरदार के इस काम में भी मेरी दिलचस्पी थी और जब कभी भी वह मेरी सहायता चाहते हैं उसे देने के लिए तैयार रहता।

हन निलफ बेचने का हमने निश्चय कर लिया था और मई के महीने में 'स्टेटस मन में एक विज्ञापन भी निकाल दिया। ८१० ग्राहकों के पत्र जाये लेकिन मकान बिकने की नौबत नहीं आई। आधे दाम पर भी फँकने के लिए तयार थे देखें कौन आग बन्ता है? उस समय मेरा ख्याल यही था कि मसूरी में आठ महीना किराय पर रहगे और चार महीने के लिए देहरादून चल जाएँगे। पीछे कमला की सलाह हुई अच्छा होगा कलिम्पाग जाना। वहाँ ४००० फुट की ऊँचाई होने से जाड़े-गर्मी में अलग जगह ठूठने की जरूरत नहीं होगी। कमला के पीहर का ही प्रेम इसमें कारण नहीं है बल्कि वहाँ वह काम कर सकती हैं। फिर लम्बे असें तक तो उह ही बच्चा को संभालना है।

६ मई को डा० सत्यनारायणसिंह का सामान ऊपर 'हन हिल में जाते देवा। न उन्हें पता था मैं पास के बँगले में रहता हूँ, और न मुझे मालूम था कि वह ऊपर के बँगले में अपनी पत्नी और पुत्री के साथ आ रहे हैं। उनके विवाह की बात भी मुझे मालूम नहीं थी। डा० सत्यनारायण से मेरा परिचय बहुत पुराना है बल्कि थोड़ी-सी अतिगयोक्ति करत कहा जा सकता है कि उस समय से जबकि उनके दूध के दाँत टूटे नहीं थे। उनके

रामविनायक सिंह तो असहयोग के जमाने में छपरा में हमारे सहकारी थे। पहले पहल मैं तभी दखा था जर्मि बारायत मून बातों में उहाने जिमी हाड में विजय प्राप्त की थी। उस समय बिमगा मालूम था यह बालक भारी घुमघनड बनेगा एन के बाद एन भापाओ का फडफड सीखता जाएगा। मैं भी भाषाण सीखी है, पर मैं अपने को भाषा नीखने में बहुत चतुर नहीं मानता। मैं भाषा भाषा के लिए नहीं सीखता बल्कि उससे काम लन के लिए। फिर वह काम भर की हो रह जाती है। सत्यनारायणजी यूरोप की कई भाषाएँ—जिनमें रूसी भी है—पर पर बालत हैं। जब उनको मुक्त होकर विचरण करने का मौका मिलता है तो वह अपने रूप में दिखाइ पड़ते हैं। आबारा' न यह क्या किया? यह पत्नी और परिवार कसा? पर अब समय सही सही उनके बाल बहुत सफेद थे। यद्यपि इसका मतलब यह नहीं कि वह बुढ़ापे में दाखिल हो गये थे। इधर उहाने पार्लियामेंट में कम्युनिस्टा के ऊपर जबदस्त प्रहार किया। मैं उसकी याद भी दिलाना नहीं चाहता था लेकिन वह स्वयं समझते थे और कुछ व्याख्या भी करना चाहते थे। लेकिन, उससे क्या हाता है। किसी विषय में हमारे मतभेद घोर हो सकते हैं लेकिन उसके कारण हम अपने पुराने सम्बन्धों को चाड़े ही छाड़ सकते हैं। जब उन्हें सावियन जान का उसी साल बीजा मिल गया, तो बड़ी खुशी से कह रहे थे— बाबा मुझ सोवियत सरकार में बीजा द दिया। मैं वहाँ कहीं जाकर घूम सकता हूँ और उसके बारे में लिख सकता हूँ। वह गए और हाल ही में उनके कई लख पत्रों में निकले जो अच्छे थे।

मसूरी में नौकरों की हमारा दिक्कत रही। कुछ तो अच्छे नहीं मिले इसलिए हटाना पड़ा। दो ने चारी की। कुछ अच्छे मिले तो हमारी गलती से रहन सक। १० मई को हमने महंगा का नौकर रखा। गायद यह जाकिर तक मसूरी में हमारे साथ रहे। कुछ दाप है प्पाल गिलास बहुत ताडता है काम करते ऊधता रहता है। रमाइया भी उनना अच्छा नहीं है पर जब हम जानते हैं कि सत्रताभद्र नौकर नहीं मिल सकता इसलिए अपने ऊपर अकुश रखन की जरूरत है।

जेना भा आँखें खुली हान पर भी टो महीन तक किसी चीज का देख

नही सकता था फिर वह देखने लगा। चौथे महाने में पहुँचने पर वह अपने आस पास की चीजाँ का बहुत ध्यान से देखता। जया से १६ दिन बड़ी सत्यनारायणजी की पुत्री मजू थी। दाना आपस में अकसर मिला करती थी। पत्नी लखनऊ में पैदा हुई बंगाली तरुणी थी। बलिन में भारतीय दूतावास में काम कर रही थी, वही 'आवारे' से भट हुई, और दोना बघन में बँध गया। सत्यनारायणजी बराबर आते जाते रहते थे। उनकी पत्नी सिर्फ एक बार आई। मजू रोज आती। कुछ बातें मजया उससे आगे बढ़ी थी और कुछ बातें मजजू। मजू के सिर पर बड़े बड़े बाल थे जिन्हें माँ ने बाँटकर रखा था। जया के छोटे-छाटे बाल थे। जेता के पैदा होने बाल का नाम नहा था और १४ महीने बाल भी अभी जरा ही जरा दिखाई पड़ता था।

मई में सलानिया का सीजन शुरू हुआ गया था। बहुत से मित्र और परिचित जाने लग गये। १५ मई को डा० भगवतशरण उपाध्याय अपने कनिष्ठ पुत्र के साथ आये। देर तक बातें होती रहीं। जिस आयु में मैं उनका पुत्र को देख रहा था, किसी समय में उस आयु में पिता को देखा था। भगवतशरण का ऐतिहासिक अध्ययन बहुत गम्भीर है, सबसे बड़ी बात यह है कि वह अपने किसी बात को लिखते वक्त दण्ड का मूल्य जानते हुए इस्तमाल करते हैं। उनके लिखने की शैली बड़ी राचक होती है। आम इतिहासकारों की तरह उसमें रूपापन नहीं होता। आखिर वह क्याकार और सफल निबंधकार भी तो है।

अब रविवार के दिन घर मेहमानों से भर जाता। अपराह्न की चाय में तो जरूर दस बारह मित्र आये रहते। अच्छी चहल-पहल हो जाती। पहली यात्रा (१७२३-३७) में जब मैं सिंहल में था तो वहाँ के विद्या-पिया को पढ़ाने के लिए मैंने पाँच सस्कृत पुस्तकें लिखी थी जिनमें चार भाषा और पाचवी छन्द-अल्कार सिखलाने के लिए थी। वे वही सिंहली भाषा के साथ सिंहली अक्षरों में छपी थी। रयाल आया कि उह हिंदी के साथ नई तरह से लिख कर प्रकाशित किया जाये तो अच्छा हो। इधर जब कभी कोई मुझसे सस्कृत पढ़ने की कोशिश करता, तब और भी इस आर रयाल जाता। मंगलहृदयजी का पढ़ाने वक्त यह रयाल आया और मैंने निश्चय किया कि उस सगोधित सर्वधित करने सस्कृत पाठशाला के रूप

रामविनाद सिंह ता अमहयोग क जमाने म छपरा म हमार सहकारी थ । पहले पहल मैं तभी दखा था जकि वारीन सून कातन म उहाने किमी हाड म विजय प्राप्त की थी । उस समय किमको मालूम था यह गालफ भारी घुमकन्ट बनेगा एक क वाद एफ भापाआ का फडफड सीखना जाएगा । मैंने भी भापाए सीखी है, पर मैं अपन को भापा सीखने म बहुत चतुर नहीं मानता । मैं भापा भापा के लिए नहीं सीखता बल्कि उसस काम लेन के लिए । फिर वह काम भर की हा रह जाती है । सत्यनारायणजी यूरोप की कई भापाएँ—जिनम रूसी भी है—पर फर बालन हैं । जब उनका मुक्त होकर विचरण करन का मौका मिलता है तो वह अपने रूप म दिखाई पटत है । आवाग न यह क्या किया ? यह पत्नी और परिवार कसा ? पर अब समय स ही सही उनके बाल बहुत सफेद थे । यद्यपि इसका मतलब यह नहीं कि वह बुढापे म तालिल हा गय थ । इधर उहाने पालियामेट मे कम्प्युनिस्टा के ऊपर जबरस्त प्रहार किय । मैं उसकी याद भी दिलाना नहीं चाहता था किन्तु वह स्वय समयते थ और कुछ व्याख्या भी करना चाहते थे । लेकिन, उसस क्या होता है । किसी विषय म हमारे मतभेद घोर हो सकते है लेकिन उसके कारण हम अपने पुराने सम्बन्ध को थाडे ही छाड सकते हैं । जब उह सावियत जान का उसी साल बीजा मिल गया, ता बडी खुशी स कह रहे थे— बाबा, मुझे सावियत सरकारन बीजा दे दिया । मैं वहा कही जाकर घूम सकता हू और उसके बारे म लिख सकता हूँ । वह गए और हाल ही म उनक कई लख पत्रो म निबले जो अच्छे थ ।

मसूरी म नौकरा की हमेगा तिककत रही । कुछ तो अच्छे नहीं मिले इसलिए हटाना पडा । दा ने चोरी की । कुछ अच्छे मिले ता हमारी गलती से रहन सके । १० मई को हमने महंगा का नौकर रखा । गायद यह आखिर तक मसूरा म हमारे नाय रहे । कुछ दाप है प्याले गिलास बहुत ताडता है काम करत ऊपता रहता है । रमादया भी उनना जच्छा नहीं है पर जब हम जानते हैं कि सवतोभद्र नौकर नहीं मिल सकता इसलिए अपने ऊपर अकुश रखने की जरूरत है ।

जेना भी आखि खुला हान पर भी दो महीन तक किसी चीज का देख

नहीं सकता था, फिर वह देखने लगा। चौथे महाने में पहुँचने पर वह अपना आम-पाम की चीजाँ को बहुत ध्यान में दंगता। जया में १६ दिन बड़ी सत्यनारायणजी की पुत्री मजू थी। दोनों आपस में अक्सर मिला करती थी। पत्नी लखनऊ में पदा हुई बगाली तरुणी थी। वह भी भारतिय दूतावास में काम कर रहा थी, वही आवासे' में भेंट हुई, और दाना बंधन में बंध गया। सत्यनारायणजी वरावर आते जान रहते थे। उनकी पत्नी सिर्फ एक बार जाई। मजू राज आती। कुछ दाना में जया उससे आग बढी थी और कुछ दाना में मजू। मजू के सिर पर बड़े बड़े बाल थे जिन्हें मैं न वाँटकर रखा था। जया के छोटे-छोटे बाल थे। जेना के पदा हान बाल का नाम नहीं था, और १४ महाने बाल भी अभी जरा ही जरा दिखाने पड़ता था। मई में सैलानिया का सीजन शुरू हुआ गया था। बहुत से मिन और परिचित आने लग थे। १५ मई का ढा० भगवतशरण उपाध्याय अपने परिचित पुत्र के साथ आये। देर तक बातें हाती रहें। जिस आयु में मैं उन पुत्र को देख रहा था किसी समय में उस आयु में पिता को देखा था। भगवतशरण का ऐतिहासिक अध्ययन बहुत गम्भीर है, सबसे बड़ी बात यह है कि वह अपने किसी बात का लिखन वक्त गद्दों का मूल्य जानते हुए लिखन करते हैं। उनका लिखन की शली बड़ी राखव हाती है। आम लिहासकारों की तरह उसमें रूपायन नहीं होता। आखिर वह क्याकार और सफ़्त निबंधकार भी तो हैं।

अब रविवार के दिन घर महामाना से भर जाता। अपराह्न की चाय में तो जरूर दम-दार मित्र आये रहते। अच्छी चहल-पहल हो जाती। पहली यात्रा (१७२३-३७) में जब मैं सिंहल में था, तो वहाँ के विद्या-पिया का पदान के लिए मैंने पाँच संस्कृत पुस्तकें लिखी थी, जिनमें चार भाषा और पाँचवी छन्द-अलंकार सिखलान के लिए थी। वे वही सिंहली भाषा के साथ सिंहली अक्षरों में लिखी थी। रयाल आया कि उन्हें हिन्दी के साथ नई तरह से लिख कर प्रकाशित किया जाय, तो अच्छा है। इधर जब कभी बाद मुयस संस्कृत पत्र की वाणिज्य करता, तब और भी इस ओर रयाल जाता। मंगलहायजी का पदान वक्त यह रयाल आया और मैंने निश्चय किया कि उस सगापित-मवधित करके संस्कृत पाठमाला के रूप

रामबिनाद सिंह ता असहयोग के जमान म छपरा म हमारे सहकारी थे । पहल पहल मैं तभी दखा था जबकि वारीक मून कातन म उटाने किसी हाड म विजय प्राप्त की थी । उस समय तिमरो मालूम था यह वालन भारी घुमक्कड बनेगा एक क वाल एक भापाआ का फडफड सीखता जाएगा । मैं नी भापाएँ सीखी है, पर मैं अपने को भापा सीखने म बहुत चतुर नहा मानता । मैं भापा भापा के लिए नही सीखता बल्कि उसस काम लेन के लिए । फिर वह काम भर की ही रह जाती है । सत्यनारायणजी यूरोप की कई भापाएँ—जिनम रुसी भी है—पर पर चालत है । जब उनको मुक्त होकर विचरण करन का मौका मिलता है ता वह अपन रूप म दिखाई पडत है । आबारा न यह क्या किया ? यह पत्नी जोर परिवार कमा ? पर जब समय से ही सही उनके बाल बहुत सफेक थ । यद्यपि इसका मतलब यह नही कि वह बुटापे म दाखिल हा गय थे । इधर उहाने पार्लियामेंट म कम्युनिस्टा क ऊपर जबदस्त प्रहार किय । मैं उसकी याद भी निलाना नही चाहता था लेकिन वह स्वय समझते थे और कुछ व्याख्या भी बरना चाहते थे । लेकिन, उसस क्या हाता है । किसी विषय म हमारे मनभेद घोर हो सकते है लेकिन उसके कारण हम अपने पुराने सम्बन्ध का थोडे ही छाड सकत हैं । जब उह सावियत जान का उसी साल बीजा मिल गया, तो बन्नी खुशी मे कह रहे थे— बाबा मुग सोवियत सरकारन बीजा दे दिया । मैं वहाँ कही जाकर घूम सकता हूँ और उसके बारे म लिख सकता हूँ ।' वह गए और हाल ही म उनके कई लग पत्रो मे निकले जो अच्छे थ ।

मसूरा मे नौकरा की हमारा दिक्कत रही । कुछ ता अच्छे नही मिले इसलिए हटाना पडा । दो न चारी की । कुछ अच्छे मिले ता हमारी गलती से रहन सके । १० मई को हमन महेग का नौकर रखा । गायद यह आखिर तर मसूरी म हमारे साथ रह । कुछ दाप है प्याल गिलास बहुत ताडता है काम करत ऊपता रहता है । रमाइया भी उतना अच्छा नही है पर जब हम जानत है कि सबताभद्र नौकर नहा मिल सकता इसलिए अपन ऊपर अकुग रखने की जरूरत है ।

जेता भी जखि खुली हाने पर भी दो महीने तक किसी चीज का देख

नहीं मक्कना था, फिर वह देखने लगा। चौभ महोन म पहुँचने पर वह अपन आस पास की चाजा का बहुत ध्यान स देखता। जया मे १६ दिन बड़ी सयनारायणजी की पुत्री मजू थी। दोनो आपस म अक्कर मिला करती थी। पत्नी लम्बाऊ म पैदा हुई बगाला तरुणी थी। बलिन म भारतीय दूतावास म काम कर रहा थी, वही 'आवारे' म भेट हुई, और दाना बघन म बंध गय। मत्यनारायणजी बराबर आत जात रहते थे। उनकी पत्नी सिफ एर बार आइ। मजू राज आती। कुछ बाना म जया उसस आगे बड़ी थी और कुछ बाना म मजू। मजू के मिर पर बडे बडे बाल थ, जि ह माँ न वाक्कर रखा था। जया क छाट छाट बाल थ। जेता के पदा हाने चाल का नाम नहा था, और १४ महीने बाद भी अभी जरा ही जरा दिखाई पडता था।

मई म सँजानिया का सीजन गुरु हो गया था। बहुत से मित्र और परिचित आने लगे थे। १५ मई का डा० भगवतदरण उपाध्याय अपन कनिष्ठ पुत्र के साथ आय। देर तक बात होती रही। जिस आयु म मैं उनक पुत्र को दल रहा था, किसी समय म उस आयु म पिता को देखा था। भगवतदरण का ऐतिहासिक अध्ययन बहुत गम्भीर है, सबसे बड़ी बात यह है कि वह अपन किसा बात का लिखत वक्त शब्दों का मूल्य जानते हुए इस्तमाल करत हैं। उनके लिखन की शैली बड़ी राचक हाती है। आम इतिहासकारों की तरह उसम रूपापन नहीं हाता। आविर वह कथाकार और सफल निबन्धकार भी ता हैं।

अर रविवार के दिन घर मेहमाना से भर जाता। अपराह्न की चाय म तो जरूर दम बारह मित्र आये रहत। अच्छी चहल-पहल हा जाता।

पहली यात्रा (१७२३ ३७) म जब मैं सिंहल म था ता वहाँ के विद्या-पिया का पढ़ाने के लिए मैंन पाँच सस्कृत पुस्तकें लिखा थीं, जिनम चार भाषा और पाचवी छंद अलकार सिखलाने के लिए थी। वे वही सिंहली भाषा क साथ सिंहला अक्षरों म छपी थी। स्याल आया कि उह हिन्दी क साथ नई तरह से लिख कर प्रकाशित किया जाय, ता अच्छा हो। इधर जब कभी काइ मुसल मस्कून पढ़ने की कोशिश करता, तब और भी इस ओर स्याल जाता। मगलहूदयजी का पढ़ात बबत मह स्याल आया, और मैंने निश्चय किया कि उसे सगोधित सर्वाधिन करके 'सस्कृत पाठमाला' क रूप

म तयार करूंगा। २६ मई को मैंने स्वयं उसे टाइपराइटर पर लिखना शुरू किया। पाँचा पुस्तकें बई हफ्ता बाद तैयार हुई। इसमें पाठों का सरल रीति स देन का उपक्रम था। जिनमें भाषा की कठिनाइयाँ घीरे घीरे सामने आई, इसकी ओर ध्यान रखा। साथ ही पाठों के रूप में सशुद्ध माहित्य व कितने ही प्रयास उद्धरण भी दिये। इसी दौरान में रखा गया 'संस्कृत वाक्यधारा को किसी न हाथ में नहीं लिया क्या न मैं ही' उस लिख डालू। फिर उसमें भी हाथ लगा कर पूरा किया। १९५५ व आरम्भ में भी मुझ खाल नहीं आया था कि मैं संस्कृत के सम्बन्ध में इन पुस्तकों को लिखूंगा।

२८ मई का मेरे चाचा बसी पाडे व पुन चंदर आए। बरस डेढ़ बरस की उमर में मैंने उन्हें कितनी ही बार खिलाया था। अब उनके बाल मफेद हा गए थे। मेरे दादा जानकी पाडे घर के सरदार थे। उन्होंने अपने तीनों चचेरे भाइयों को अपने साथ मिलाकर रखा और उनके मरने के बाद बल्कि मेरे जन्म के भी बाद ही जलगा बिलगो हुई। बसी काका उही तीन घरों में से एक के सरदार थे। उनके छोटे भाई किना (कृष्ण) मेरे लगोटिया यार थे। चंदर से मालूम हुआ कि किना का पता नहीं कहा चल गए। बसी काका मर चुके हैं। चंदर घर की हालत बतला रहे थे। कनीला में जाती हुई जमीन से भी अधिक परती जमीन थी जिसे आवाद करके अब गाव के ब्राह्मण लोग अच्छी हालत में हो गए थे। समझ रहे थे दसी तरह कम से कम दा तीन पीढी तक तो निद्वन्द्व हाकर चैन की बनी बजती रहेगी। लेकिन, जमाना उनके इन मासूबा पर हंस रहा है, इसका उन्हें क्या पता था? कनीला में बड़ी जाति से छोटी जाति की सख्या कुछ अधिक है। पहले जमाने में छोटी जाति में छूत अछूत का भेद बहुत बाधक होता था। लेकिन छोटी जाति वालों ने देखा गरीबी और अधिकार बचित हाने में हम सभी एक साथ हैं। गाव के मालिक ब्राह्मण हैं, खेत उनके हाथ में हैं। हम उनके हरबाह चरवाहे होकर ही अब तक जीते आए हैं। अब समय हमारे पक्ष में है। उनमें से कितना की थोड़ी-बहुत जमीन भी मिल गई वह भूमिदार बन गए हैं, लेकिन अधिकांश अब भी वेखेत के मजूर हैं। छोटी जाति में अहीर, भर, चमार, दर्जी, चूडीहार मेडिहार तथा महार हैं। पचायत के चुनाव में

सरपंच एक भरा तड़प चुना गया। मेरे बचपन में उनमें अभी कोई पढ़े लिखेगा। इसकी सम्भावना भी नहीं थी, पर अब कई पढ़ रहे हैं। चंदर का अपना खेत जंगल में बिसा छाटी जाते-के आदमों के नाम लिख दिया था। हा सजता है, चंदर ने उसे जानने का दरखास्त नहीं चाहते थे कि खेत पर उमरा हक है। मुझमें से सफ्त नही होगी। वह रहे थे, थाप सिफारिश कर दें कि जलपाल बहा से बदल दिया जाए। मैं भला कैसे सिफारिश कर सजता था ? उन्होंने हलवाह को अपने अच्छे खेत में से चार-पांच जिमवा दे रखा था। ब्राह्मण ठहरे अभी हल जानने में परहज करते थे, इसलिए हलवाह बिना खेती नहीं हो सजती थी। इस साल अपने खेत में ऊस का रूथ था। हलवाह के टुकड़े का नी साथ में पानी से सींच दिया। जाने के लिए ऊस का भी काटकर रात का पाना में डाल दिया। सजरे ऊस खान के समय हलवाह ने जाने से इन्कार कर लिया। गांव भर के जितने भी हल जानने वाली जातिमा थी सबके हाथ-पर पड़े चिरीरी जिनती की लेकिन कोई अपने बग के साथ विश्वासघात करने के लिए तयार नहीं हुआ। यदि आज खेत नहीं बोया जाता, तो उमम लिया पाना बजार हो जाता, और जाने के लिए भिगाद ऊस भी खराब हो जाती है। गांव भर के ब्राह्मणों ने समझा आज तो यह बला चंदर के साथ है कल हमारे साथ भी आएगी। अपने तात्रालिक बग और मनमुटाव का भूलकर सब लोग चंदर के खेत पर पहुँचे। सब ने हल चढ़ाने की कागिरी की। लेकिन एक दिन में हल चलाना थोड़ा ही आता है। सभी असफल हुए पर एक नौजवान ने किमो हल चलाने में मफलता पाई। खेत बामा गया। चंदर हमसे पूछ रहे थे—“क्या करना चाहिए ?” मैंने कहा— समार का चक्का उलटा नही घुमाया जा सकता। पुराने दिना का भूल जाओ। क्या सब पुरानी बातें सुम्हार यहाँ चल रहा है ? उन्होंने कहा— हल जानने के लिए नियम को तो हमारे सारे गांव ने तार दिया। पुराना समय जाना, तो इसी पर सारा गांव रोटी-बेटी नहीं कर सकता था। लेकिन अब सजरे घर में बसन्तर देवना आए हैं, इसलिए कोई किमो के ऊपर जंगुला नही उठा सकता।

पीछे उसी इलाक के एम० एल० ए० बाबू काश्मिराप्रसाद सिंह भी बह रहे थे कि हमारे पूर्वी जिला में बड़ी छाटा जातिमा में जवददस्त अयोपिन

युद्ध—शीन युद्ध वह लीजिए—छिडा हुआ है, मालूम नहीं जब वह घोषित युद्ध में परिणत हो जाए। दूसरा समय होता तो बड़ी जातवाले डण्डे का हाथ दिखलाते, लेकिन अब तो प्रतिद्वन्द्वियों के पास अधिक डण्डे और अधिक हिम्मत है। इस युद्ध का कहीं अंत हागा ? अन्त वही हागा जबकि अधिकारवचिंत भी अपने अधिकारों को पा जाएंगे। भारत में यह भेद नहीं रह सकता। चन्द्र ने यह भी बतलाया कि अब जाति की दूसरी मर्यादाएँ भी टूट रही हैं। उनके एक चचा ने विधवा विवाह कर लिया है। उनके पुत्र अच्छे कामें खा रहे हैं। एक दूर के चचा की बात बतला रहे थे उसने चमार की लड़की अपने घर में डाल ली है। ऐसी और भी बातें यही बतला रही हैं कि सब एक बण्डा हो जा रहा है। बस एक-दो पीढ़ियों की देर है।

तो क्या किया जाए ?—चन्द्र ने पूछा।

—सारे गाँव के सुख से ही जब एक घर को भी सुख मिल सकता है। उस दिन ऊँच बोलने के वक्त तुमने दंग ही लिया कि सबका सहयोग न हाता, तो काम बरबाद हो जाता। सारा गाँव सहयोगी खेती करे, तभी सिरदद हट सकता है।

—यह तो सम्भव नहीं मालूम हाता। किसी के पास ज्यादा खेत है किसी के पास कम। पुराने जमान से यही प्रथा चली आई है कि एक घर का दो और दो का चार घर बने।

—पहले एक खेत का दो और दो का चार हुआ करता था। अब उस उल्टे तौर से करना होगा।

—गायद हम अपने चारों घरों नहीं तो तीन घर का इकट्ठा करने में सफल होंगे।

मैंने कहा—चार घर को इकट्ठा करके तुम अपने सिरदद को तत्काल के लिए कम कर सकते हो। और मुसीबत देखेंगे, तो तुम्हारी पट्टी के सभी घर इकट्ठा हो जाएंगे। यह भी हो सकता है गाँव के तीनों पट्टी वाले वस गत पर इकट्ठा खेती करने के लिए राजी हो जाएंगे कि अपने खेत के रकबे पर भी उन्हें दो तीन मन प्रति वाघा जनाज अलग से दिया जाय। पर यदि गाँव के सभी ब्राह्मण ऐसा करने में सफल हुए तो वसका पल अग्राह्यता के ऊपर क्या होगा ? क्या वह काम और भूमि से वचित होकर चुप रहेंगे ? पेट

आदमा म क्या-क्या नहीं करवाना ? अभी जा युद्ध की आग भीतर ही भीतर सुगम रही है वह भयानक उठेगा। तुम्हारे लिए एक ही रास्ता है कि देर या मरने मारे गाव क नेता का दृष्टिगत कर दो। छोटी बड़ी जान सबका उमम शामिल करा। हाँ, निमरा जितना खेत है उस पर भी थोड़ा-सा अनान दे दो, धाकी का हरेक परिवार क काम के अनुसार बांट दो। मैं जानता था, यह अभी दूर की बात है। पर, आत्मी का समय मरने दूर की जगहा पर पहुँचा देना है। उस समय वह असंभव नहीं रह जाता।

१ जून का चन्द्र गण। चन्द्र न थोड़ी समृद्ध पदा है। बहुत वर्षों पहले बनारस म मित्र थे। मैं उनके लिए एक पाठशाला म विचारित कर दी थी। ज्यादातर काम लायक पढ़े हैं, लेकिन हमारे गाव क ब्राह्मणों को जजमानों का काइ काम नहीं है।

आचार्य गावधन की बात मालह आना पाव रसी मच है। दाम्पत्य जीवन म अकारण घटपट हा ही जाती है। हमारे घर म कभी कभी हा जानी और दाना आर दिमाग का पाग बहुत ऊँचा चढ़ जाता। इस समय अपत्य का मूल्य मालूम हाना। सचमुच ही यदि मन्मान न हा ता दाम्पत्य सम्बन्ध हिमविन्दु ही नहीं, कभी-कभी उबाल विन्दु पर पहुँचकर महान् विस्फोट पैदा कर द।

हम घर के भीतर ही दग्ना नहीं था। बघु मिन आत रहने थे। कुछ दिना क लिए गावधनी दवी अपने पति क साथ आई। पति मिहल भिक्षु स अब गृहस्थ बने थे। अगले दिन ५० जगनाथ उपाध्याय था श्यामनारायण पाठे क साथ आए। उपाध्यायजी बनारस मस्त्रुन कालेज के दान क अध्यापक हैं, और श्यामनारायणजी कनैला के पास गाजीपुर जिले म भुन्कुडा के इष्टर कात्र म अध्यापक। वह भी गावधनी तक मस्त्रुन पढ़े थे। दाना एक महीन यर्ग रह। रसोईघर क ऊपर का कमरा ही बाकी था और उसमे के बहुत आराम स रहे। उपाध्यायजी तर्ण हैं, बौद्ध दान उनक आचार्य परीक्षा का विषय रहा, और अब भी अध्ययन म तत्पर रहत हैं। अभी उनका समय था यन्नि निम्ननी भाषा पढ़ लेन ता बहुत काम कर सकत थे। अन म जब उनकी इच्छा हुई, ता मैंने एक ता हप्त द्रतना पदा दिया कि जिसम के आग ब सक्त थे। मरी यह हर्गिज इच्छा नहीं थी कि जब-

दस्ती किमो का घबला जाए। हाँ, इतना जरूर रपाल था कि कान में डाल देना चाहिए गायन वहाँ आगे बढ़ चल।

कौरवी लोग गीता के संग्रह के लिए मैंने दजना तरणा से कहा। कोई कुछ नहीं कर मना। सत्या गुप्ता को भी या ही कह दिया था जाणा नहीं रपता था कि यह दूमरी साबित हागी। पर, कुछ महान बाद आकर उहोसे अपने काम को तिसलाया ता बहुत प्रसन्नता हुई।

११ जून को डा० सत्यवतु के यहाँ एक अच्छी-न्यामी माहित्य गाष्ठी हुई जिममें हमारे यहाँ से मैं ५० जगन्नाथ उपाध्याय श्री श्यामनायण पाडे गए। मसूरी में उपस्थित उस समय के जौर भी कितने हा साहित्यकार— श्री जगन्गीचन्द्र भायुर श्री मानसिंह मेगर ५० विगारीयम वाजपेयी तथा दूसरे पुरुष और महिलाएँ उपस्थित थी। श्री भागवतगरणजी वाजपेयी, भायुर साहय और सेंगरजी ने गाष्ठी में भाग लिया। उसे जवमर से लाभ उठाना बहुत अच्छा है। अबकी हमारे महमाना में कलफता के साथी धरणी गोस्वामी भी कितने ही दिना रहे। वह मरठ कम्युनिस्ट पडयत्र कस में पकडे गए थे, जौर भारत के प्रथम पीढी के कम्युनिस्टों में थे। एक बार कम्युनिस्ट होने पर फिर बादमी कम्युनिस्ट हा रहता है यदि स्वाथ या प्रलोभन भ्रष्ट करने में सफल न हा।

१५ जून को जया पीने का वष में तान चार दिन कम थी। उसने साहस यात्रा का परिचय देने में पिता का मात कर दिया। पिता के पहले पहल १२-१३ वष की उमर में पख निबल थे। मौसी गंगा बाजार गई। उसका भी जान का आग्रह था पर रात्र लिया गया। सब लाग समय रहे थे रसाइधर में जाकर महेश के साथ खल रही होगी लेकिन कुछ देर बाद धावन सँभाले ले आई। धोवन न पूछने पर कहा— पाचा' जर्वाद् बाजार जा रही थी। गोदी चढे रास्त देख ही रिया था। यहाँ से मिलडर के पाटक की ओर गई, फिर नगरपालिका की सडक पान एक माड पर मुडी दूसरे माड को भी छाड टाल के सामने पहुँची फिर रतिलाल की दूकान के बाहर बाहर सडक से ऊपर जा रही थी। लोग ने देखा लेकिन रपाल किया कोई आगे आगे जा रहा होगा। बिडला निवास के पाम पहुँचने वाली थी। उसी समय सामने से धोविन आते मिली। धाविन से जया का परिचय था।

पूछने पर जम्मे बतगया—भावा । उस उठाकर लाई । अगर धारिन न मिली हानी तो मालूम नहीं मह माहम-यात्रा कहाँ मनम हानी ?

१८ जून का अलागड युनिवर्सिटी के अरबा के अध्यापक युगपियन जैमे गारे अल्मामून साहब आए । ६५ वर्ष के वृद्ध हैं । भिरिया जन्मस्थान है । ३१ वर्ष में वह भारत में हैं और अब भारत के नागरिक हो गये हैं । रूसी जन्म, फ्रेंच अंग्रेजी, तुर्की और अरबी जानते हैं । अरबी तो घर उनकी मानभाषा ही है । उदार विचार के और सूफी मत के मानने वाले हैं । कितना देर तक उनमें बातचीत हुई । जम्मे वाप एक दिन वह आय ।

१९ जून का श्री जयगापाल और श्री गिवगापाल मिथ्र आए । जयगापालजी निरालाजी के पण्ट गिप्य और कवि हैं । कवि हान के लिए आदर्शन याचनानाओं की उनमें कमी नहीं है । उनका अनु रनायन शास्त्र के एक अच्छे छात्र हैं । डा० कि०० किया है उनसे बहुत आगा है । पर, वह भी अपने जपज की तरह साहित्य में जन्म में अधिक समय न रहे हैं य अच्छे लक्षण नहीं हैं ।

जून में तद्वत् तीनों हफ्तों के लिए हम-यात्रा पर गये । वना उनका हर जगह भय स्वागत हुआ जिसकी मजरे हमारे पास और भास्वा रहिमा में मालूम हो रहा थीं । हम यात्रा में हमारे दाना जेग एक-दूसरे के बहुत नजदीक आएग यह जानकर प्रसन्नता हुई ।

२८ जून के आनवाला में आजमगड के वसील श्री पद्मनाभ सिंह एम० एल० ए० भी थे । बतग उनके निर्वाचन क्षत्र में पण्टा है अर्थात् उनके योटरा में हमारे घरजाल भी शामिल हैं । वह भी चन्दर की बात का समझन कर रहे थे और कह रहे थे कि हमारे जिला में बगी छोटी जातियाँ का सघष बहुत उग्र है ।

१ जुलाई का श्री मुकुन्दलालजी आए । हर भोजन में उनके दान की उत्कण्ठा रहती है । मैंने पगावर काण्ड के वीर चन्द्रसिंह गढ़वाली की जीवनी लिखन का निश्चय किया था । मुकुन्दलालजी ने उस मुकद्दम में गढ़वालीजी की पैरवी की थी । मैंने उनके पास लिखा था । वे मुकद्दम की फादल मुझे दे गये निमस मुझे काफी महायता मिली ।

गगा पद्वहता मतिव में फल मालूम हुई । एकाएक नेपाल की जगद

हिन्दी माध्यम लेखर परीक्षा दा थी और सा भी निजी तौर स पढ़ कर । २ जुलाई को पास हानवाले छात्रा की जा सूची मिली उसस मालूम हुआ कि पास हो गई । घर भर को बडा प्रसन्नता हुई । उसरी मसूरी यात्रा मफल रही । उसक लिए हम दोना चाहत थ कि तिल्ली म नसिंग कालेज म दाखिल हो जाए । दाखिल का समय बीत गया था लेकिन बीच म कोई लटकी चली गई थी और मित्रा क प्रभाव क कारण वह स्थान मित्र गया था । पर, गंगा का नम नही अन्यायिका बनना पसंद था इसलिए हमन वह स्थाल छाड दिया और अन्त म वह टेलिंग पान क लिए कलिम्पोग चली गई ।

सौजन म ठाठुरानी गुलाबकुमारी ' आर्टेन' म आकर रहन लगी थी । उनकी नौकरानी लडकी कान्ति अवसर जया को अपन साथ खेलने क लिए ल जाया करती थी । बच्चो को खेलना पसंद है और वह उनक लिए लाभदायक भी है । हमारे यहाँ उसकी उतना सुविधा नही थी । उचारी जब खेलना चाहती है तो झिडकी खानी पडती है और कभी कभी जम्मा हलका सा हाथ भी लगा देनी जिसस वह कान्ति के साथ जाने क लिए तयार रहती । एक बप दस महीन की भी अभी नही हुई थी । एक दिन आत बकन उमन कान्ति स कहा—' कल आना' । जब वह कल का अथ भी समझने लग गई थी और असली मनसा ता यह थी ही कि हम आकर तुम्हार साथ खेलेगे ।

अब क साल जुलाई क पहले हफत म एक बार वर्षा हुई फिर रक गई । लोगा के मन म तरह-तरह की जागका होन लगी । इस वर्षा स चारा आर हरियाली दिखाई पडती थी ।

डा० बन्नीनाथप्रसाद के पुत्र श्री प्रकाशचद्र क ब्याह का निमन्त्रण आया । खनऊ म ब्याह हो जा रहा था । क्या पजाबी और उसम भी सिक्क थी । तरण पुरानी मडो को ताडेंगे जिसकी देग का बडी आवश्यकता है । डा० प्रसाद की बडी लडकी का ही ब्याह अपनी जातियो म हुआ । लडके ने पजाबी लडकी से ब्याह किया तो उसकी छाटी बटिन ने पजावा लडक से ब्याह कर के बज चुका दिया ।

कनैला बहुत पिछ्छा हुआ शहर तथा रेल्व से बहुत दूर बसा गाँव था ।

लेकिन आज एमा दखा जाती भूमि हमगा एमी रही हा, यह वान नहीं। हमार कागी कौगल जनपद म मनुष्य का इतिहास बहुत पुराना है। मैं सुन रता था हमारे गाँव की बड़ी पोखरी म बटा-बड़ी इटें निकलती हैं। उस दिन चढ़ न बतलाया, आज को जमीन स कुछ हाथ नीचे दूर तक इही इटा स उस पाखरी का घाट बँधा है। दघर लाग गाडिया म खोदकर ले जाया करत थे। 'यामलाल' का लिखने पर ता उहाने बतलाया कि इटा की लम्बाई १६ ८ इच, चौडाइ ८ २ इच, माटाई २ ७ इच है। यह मौय शुग-काल की इटें हैं इसम सत्हेह नहीं। था पद्मनाथजी न भी अपनी आर क गावा म पुरानी जगहा का पता बनाया था। बड़ी पोखरी की इन बड़ी इटा न दिमाग म खलवली मचाई और मैंन मौय काल क सामन्त की 'बड़ी रानी' क नाम स एक कहानी लिख डाली। यह भा प्रकट किया कि पुरान समय म मँगई नदी व्यापार भाग का काम दती थी। उसक किनारे मीला तर फला सिसवा का घ्वसावणेप एक सामन्त की राजधानी थी। मगई क गाना तरफ राजधानी जोर उसक उपनगर फैल हुए थे। कनला उमा क भातर था। और गायन उसका कनहट उपनाम पुराना है। श्याम नारायणजी न सिसवा स चार कास पूव मगई क किनार अवस्थित घ्वसाव गणा स पचीसा पचमाक सिक्का की छाप भेजे, जिसन सिद्ध कर दिया कि मगई-उपत्यका मौय-काल म एक समद्ध उपत्यका थी।

१५ अगस्त का पानुगालिया क दामना म पडे गाआ क मुक्ति आगालन ने सत्याग्रह का रूप लिया। फरिस्त पोतुगाल म और आगा क्या की जा सकती थी? ३१ सत्याग्रहिया का पानुगालियो न भून दिया, और कितन ही घायल किय। सत्याग्रह का असर उस पर पड सकता है जहा कुछ गिष्टना, ससृष्ट और जनमत का आदर हा। पानुगाल म गालाजार की निरकुगता घोसिया बप स चल रही है जिसन अपन ही आदमिया के छून स हाथ रंगन म आनामानी नहीं की वह भारतीया का कस क्षमा कर सकता था? फिर उमकी पीठ पर अमरिका और इग्लैड क तानागाह हैं। यद्यपि अमरिकन थलोगाहा न खुलकर बहुत पीडे कहा गाआ पातगाल का प्रदण है पर उस वकन भी यह बात किसी स छिपी नहीं थी कि अमरिका का क्या रख है। पानुगाल और स्पन की तानागाही स अमरिका को क्या इतना

प्रेम है ? यह आकस्मिक बात नहीं है। अमेरिका में खुद जब्तस्त थलागाही की तानाशाही है। इसलिए उसे कम्युनिज्म से भय लगता है और दुनिया-भर में दूसरा का भी डराता फिरता है— कम्युनिज्म से हाथियार रहो'। लेकिन उस इस पर पूरा विश्वास नहीं है कि गाढ़े में लोग उसका काम आएंगे। यह कोरिया में दखा गया बियतनाम में देखा गया। जहाँ की जनता का फका और सालाजार जैसे तानाशाह ने कुचल दिया है उस देश को अमेरिका अपना गाढ़ा मित्र मानता है। भारत का थलीगाह ता अमेरिका की जय मनाने ही रहा है यहाँ का प्रभुओं में भी एक प्रभावशाली दल है जो अमेरिका के हाथ में देश को बचने के लिए तैयार है। उनका सपना बड़ा स्तम्भ उठ गया और नेह उनका साथ नहीं। इसलिए हमारा थलागाह दिल में सोमकर रह जात है। आज यदि गोआ परतन है ता पोतुगाल का कारण नहीं बल्कि अमेरिका का कारण। उसमें कोई सन्देह नहीं। आज पाकिस्तानी हर साल पचास जगह हमारी सीमाओं के भीतर घुसकर गालियाँ चलाते हैं उसका कारण भी अमेरिका है। अमेरिका कम्युनिज्म का खिलाफ पाकिस्तान का हथियारबंद करने की बात कहता है। आज का कम्युनिज्म ३८ वर्ष पहले का कम्युनिज्म नहीं है कि निबल की जोर सारे गाँव की भाभी हो। यदि कम्युनिज्म ने हमला किया ता पाकिस्तान का तीसमार खाँ एक फूक में उड़ जाएगा। पाकिस्तान को अमेरिका जो नये नये हथियार दे रहा है वह हमारे खिलाफ जमा भा इस्तमाल ही रह है और आगे भी हागे यह किसी से छिपी बात नहीं है। डलेस या आइजनहावर छिपकर गिकार नहीं कर सकते। भारत जानता है, मुह में राम बगल में छुरी रख कर कोई मगत नहीं बन सकता।

हमारे पड़ोसा जान लेडली ने डेरी खोलकर उस जमा लिया है। सीजन का वक्त सारी मसूरी में उनका दूध जाता था। अपनी भी दस बारह गाँवों और दा-तीन भूम हैं लेकिन इतने दूध से क्या बनता ? गाढ़वाला से जाँचकर दूध लेते उसे काठियों में भजते हैं। जाडो में कोई काम नहीं रहता इसलिए बाहर के दूध को लेकर मनीन से श्रीम बनाते श्रीम ताल कर ही दाम दत्त हैं। इसमें पाना डालने से कोई फायदा नहा हाता। श्रीम से बनाया घी गुद हाता है, लोग उसे चाव से लेते। पिछले जाडो में उन्होंने ४० ५०

टिन घी बना डाला। अबकी सीजन में उसकी बिक्री बहुत कम हुई इसलिए कई टिन उच रहें। दिमाग पर बनिया न कहा—'इसका तो स्वाद रिगड गया है।' मैंने ता स्वाद रिगडा नहीं देखा। अब वह सर पीछे चार आना बाठ आना घाटा सहकर बेच रहे थे चाहत थे कि किसी तरह जल्दी निकल जाए। इधर जब लागो ने देखा कि "हन लाज" डेरी जम गई है, ता प्रति-यागिता बगन वाले भी खड़े हा गये। श्रौम बनानेवाली मगीन खरीद कर एक दो न गाँवों में जाकर दूध लेना शुरू किया। किन्हीं न साजन के बवन डेरी ग्योली लकिन उससे लडली का ज्यादा नुवमान नहीं हो सक्ता था, क्योंकि 'हन लाज' के गुद्ध दूध की धाक जम चुकी थी।

शिमला यात्रा से कर्वाडिया से एक पुरानी पुस्तक लाए थे जिसमें ब्रिटिश साम्राज्य के धीरा की जीवनिर्दा आकडा के साथ बडे दिलचस्प ढग स दी गई थी इसमें १७५७ में १८५७ ई० तक अग्नेजा न किस तरह अपने प्रभुत्व का विस्तार किया, और हमारी कमजोरिया से लाभ उठाया, इसका वणन था। मैंने २२ अगस्त से जमना अनुवाद करना शुरू करके कुछ दिना बाद खतम कर दिया।

भया और भाभीजी अबकी बहुत पीछे अगस्त में आए। आगा थी छेड-दो महीना तो जरूर रहेग, लेकिन तार आया, अमृतसर के मकान की छत गिर गई इसलिए वह २३ अगस्त को यहाँ से चल दिए। कुछ ही दिन में भाभीजी भी चली गई। छत की कडिया चीट की थी। बीस पच्चीस वष हा गए थे, चीड को इससे अधिक क्या आमु हा सकती थी? ऊपरी बठक के कमरे की छत गिरा और भीचे की छत का भी लिय लिय नीचे चली गई, फर्नीचर गीग, तम्बारें जा कुछ भी कमरे में थ सब चूर चूर हा गए।

हमारा पितशाम बनला अपने गम में मौय गुगनालान अवगया को ही छिपाय हुए नहीं है, बलिन आदिम मुस्लिम काल के भी चिह्न वहाँ मौजूद हैं। सयद बाबा की कोट और उसके अत्याचारा की कितनी ही कथाएँ मैंने भी बढा के मुह स सुनी थी। हमारे गाँव के सारे खुडीहारे और दर्जों मुसल-मान गायद उसी समय के परिचायक हैं। ४ सितम्बर का मैंने सयद बाबा' कहाना लिख डाला। एसा दिखार्डे पडने लगा, बनैला पर और ऐतिहासिक

कहानियाँ लिखी जा सकती है। 'कनला की कथा' का बीज मन में पड़ गया।

'बोलगा से गंगा का बँगला अनुवाद हाल में प्रकाशित हुआ था। आज भारत की सभी भाषाओं में इस पुस्तक का अनुवाद है, लेकिन जसा कला आवरण पृष्ठ बँगला का है वसा किसी का नहीं। एक पत्रिका 'होमगिर्ला' में किसी ने उसकी आलोचना करते गुण दोष तो दिखाया ही, लेकिन साथ ही यह भी कह डाला कि यह भारतीय सस्कृति पर जबदस्त प्रहार है, इस लिए सरकार को चाहिए कि इसका प्रचार बन्द कर दे। हिन्दी में जब पहल पहल पुस्तक निकली थी, ता बहूता ने बावैला मचाया था, लेकिन शायद किसी ने इतनी दूर तक जाने की जरूरत नहीं समझी थी जितना कि यह बँगला के समालोचक। भिन्न भिन्न काल में हमारे खान पान, वप भूषा और रीति रवाज में जबदस्त परिवर्तन हुए, जिनको गवाही हमारी पुरानी पुस्तकें और पुरातात्विक सामग्री देती हैं। भारतीय सस्कृति के प्रति किसी से कम मेरे हृदय में प्रेम नहीं है। सच पूछिए ता जीरो का प्रेम दिखाव का है। उनके लिए ईश्वर, धर्म बदात, योग, टोटके टोने आदि अनक जादर सम्मान की चीजें हैं जिनके सामने भारतीय सस्कृति गौण पड़ जाती है। मेरे लिए तो वही सब कुछ है। उसका बलता रहना दाप नहीं गुण है। वह अब भी बदल रही है और आगे भी उसके रास्ते को कोई रोक नहीं सकता। उस लेखक को पढकर मैंने सोचा कि 'सप्तसिंधु' उपन्यास लिखने से पहल उसकी मूल सामग्री के आधार पर लेख लिखने का निश्चय ठाक है। समालोचक पहले उस पर आक्षेप करें, तब उह उपन्यास पर कलम दौडाने का हक होगा।

इस काल के कामों में बडे भाई चन्द्रसिंह गढवाली की जीवनी लिखना भी शामिल था। मैंने ७ सितम्बर में उसमें हाथ लगा दिया। बडे भाई ने अपनी जीवनी पहले स्वयं लिखी थी जिस सुधार कर किसी न १९३५ तक पहुँचाया था। मैंने बडे भाई को लिख दिया था कि इसक लिए आपका यहाँ आना पड़ेगा।

दिल्ली—विदेशी भाषा स्कूल में त्रिबती की परीक्षा लेने के लिए बुलावा था। और भी कामों को देखकर मैंने जाना स्वीकार कर लिया,

और २४ मितम्बर व दापहर को देहरादून पहुच गया। प्रा० रूपनारायण मिश्र के परम भारी चोट आ गई थी। पिता की तरह दहें भा गिकार का गौरव या दजना बड़े-बड़े बाघ खुद मारे और उनस भी अधिन उन राजा साहब स मरवाय, जिनक सत्रटरा थे। यह अच्छा ही किया कि जमीनारी उठने स पहल नौकरी छोडकर अध्यापन गुरू कर लिया। गिकार का गौक था, जब भी छुट्टी मिलती मिवालिक् व जगलो म जात। और छुट्टियां म ता दूर दूर की दी- मारते। पिछल साल की गर्मिया म वह महाराज के दुमराव व साथ कुटलू म लाल भालू के गिकार व लिए गये थ। वस साल गगात्री की तरफ जान की इच्छा थी। दुसराह पहाटिया म नहीं घाखा हुआ, और यहाँ देहरादून शहर म जीप स जाते वकन एक माड पर लुडक गए पर टूट गया। कितने ही हपना तक प्लास्टर बांधे चारपाई पर लेटे रह। अब वह चल मकत थ लकिन अभी पूर इत्मीनान व साथ पर के प्रयाग म दर थी।

साथी महमूद जपर यही थ। उनम मिलने गए। उन पर हृदयरोग का जबरस्त प्रहार उसी समय हुआ जब मैं भारत साकियत मशी सघ के सम्मलन म गया था। वह सघ व सक्रेटरी थे। इम वकन अच्छे थे लकिन हृदय के रोग म अच्छे वुरे का कोई निश्चय नहीं है। महमूद कलम व घनी हैं, लकिन शागव स ही अग्रजी म पल, इसलिए उसी पर अधिकार रखत हैं। मैंने कहा—'अब इधर उधर घूमन का ब्याल छोट दें, और लिपना शुरू करें। अग्रजी म लिखें हिदी अनुवाक का मुन लें।' जिस हारा आदमी कहत हैं वस ही हैं यह महमूद। इहाने कभी घन-सम्पत्ति की जिन्दगी का स्वाव नहीं देखा, साम्प्रदायिक सवीणता उनके पास छू तक न गई। अपनी प्रिय पत्नी रगीदा को गँवाने का प्रभाव उनके दिल पर बहुत बुरा पडा इसम स-देह नहीं। यद्यपि उनकी सहज मुस्कराहट को देखकर उसके बारे म कोई ह्याल भी नहीं कर सकता।

गुबलजी का हाल ही म नतिनी हुई थी। पन्ना हाते वकन चार पाँठ की थी, अर्थात् जया और जेता की वजन स आपे से भी कम। बहुत दुबली-पतली थी लेकिन उसकी कसर घने काले-काले वाला ने निकाल दी थी। चिन्ता करन की आनयकता नहीं थी। हमारे आज के समाज म चाहे

लड़कियाँ का मूल्य कम हो और उनकी बहुत उपेक्षा की जाती हो, लेकिन प्रकृति उन्हें बहुत मजबूत बलेवर देती है जिससे वह ममी आपत्ता को झेल कर आगे बढ़ जाती हैं।

रात की तिल्ली जाने वाली गाड़ी पक्की पहले से रिजर्व न करने पर भी फस्ट क्लास के अच्छे कम्पाटमेंट में नीचे की सीट मिली थी। दूसरी सीट पर एक और सज्जन थे और नीचे ही तीसरी सीट खाली थी। श्रीमती बकतुल्ला किसी दूसरे कम्पाटमेंट में अकेली थी। आजकल रेलों में शून्य हान की सवरे छपती रहती थी इसलिए वह भी इसी में चली आई। वह ईसाई महिला थी। उनका पति बकतुल्ला पञ्जाब के अपने सम्प्रदाय के सबसे बड़े पादरी थे। यह भी धर्म प्रचार का बड़ा धुन रखती थी। मैं थोटा था ही उन्होंने कुछ लेखन दिया इसका बाद ईसा के पहाड़ी उपदेश की एक पुस्तिका देकर पूछा, ता मैंने कहा तीसरी सीट पहले इमे पना था। अच्छा फिर पढ़ लूंगा। उस बक्ता कोई काम था नहीं। माया बुनिया का लेखन सुनने से अच्छा है इस पुस्तिका ही को खतम कर कर दें। खतम करने के बाद फिर लेखन शुरू होने देता मैंने कहा—मुझे ईसा के भक्ता और भगवान् के भक्ता के साथ महानुभूति है लेकिन मैं पूरी तौर से समझता हूँ कि बुनिया में भगवान् नाम की कोई चीज नहीं है। मैंने कुछ नरमो से और घुमा फिराकर कहा था जिसमें कि बुनिया के दिल का काफी घमना न लग।

१५ मितम्बर को ६ बजे से कुछ पहले अघरा रहने ही दिल्ली पहुँच गया। रिक्शा लेकर चला, तो साथी फारूकी मरे लिए स्टेशन जाते रास्ते में मिले। पहले साथी यन्त्रदत्त और सरलाजी के निवासस्थान पर गया। ठहरना तो ता मुय भाभीजी के यहाँ ही था लेकिन बहुत से काम थे, माया यहाँ मिलते ही जाएँ। चाय पी। सरलाजी दिल्ली नगरपालिका की सदस्या हैं। उनसे गंगा के नर्सिंग स्कूल में भरती करने की बात कही थी। उन्होंने प्रसिपल से बातचीत करके ठीक भी कर लिया लेकिन जसा कि मैंने पहले लिखा, गंगा ने उस पर ल नहीं किया। भाभीजी ने चाय नाश्ता कराया। वहाँ से पार्टी आफिस गया। अब 'हन क्लिप' को बेचना निश्चय हो गया। पता लगा था साथी डाने ट्रेड यूनियन के लिए मसूरी में कोई मकान

सेना चाहते हैं। मैंने सोचा यदि घाट पर बचना ही है तो ट्रेड यूनियन को ही क्या न दे दिया जाए? माथी डींग न दाम पूछा। मैंने कहा दाम हजार। उन्होंने कहा एवमस्तु। अक्टूबर में जाकर लिया पढ़ी करने का बात भी त हा गई। मुझे बहुत सताप हुआ। चला एक बड़ी चिन्ता दूर हुई लेकिन अभी प्याल और बाठ में काफी दूरी थी।

आज का मध्याह्न भाजन साथी फारुकी और उनकी पत्नी विमलाजी के यहाँ हुआ। फारुकी ने पूछा मुगल बाग़ाहा क्या गुर हात थे। सन् १७ क गदर में जब चेला पर आपन आई तो कुछ किस वचन? इसलिए वह भागकर मुजफ्फरनगर जिन्हे के किमी गाव में चल गए। उसी गुरु धरत में डूबा वय बकीर का उपजे पूत कमाल" के अनुसार कम्युनिस्ट फारुकी पदा हुए, और ब्याह किया एक काफिर कम्युनिस्ट को से। कुछ व्यजन दिल्ली के भी थे। सरलाजी कई पीढ़ियाँ की निरामिपाहारिणी थी लेकिन वही बात उनका पति यनदत्त समा की भी थी। सरलाजी गुप्ता से गमा हा दा सीढी ऊपर ही गई। लेकिन आजकल तो सब घान चार्डम पमेरी है। गाकाहार का रोव ता दाना के दिल से उठ चुका है, पर सरला बवारी डाक्टरा के परामर्श के कारण गास्त नहीं खाती।

सितम्बर का मध्य था। गर्मी के मारे तबीयत परेशान थी ता भी रिवाज ल करके इधर उधर जाना पडा। १६ सितम्बर का मित्रा से मिलने निकला। पहले माचवेजी के यहाँ गया। वही मराठी के महान नाटककार मामा बरदरकर से मुलाकात हा गई। मध्याह्न भाजन यही करना था। साहित्य अकादमी के सचटरी कृपयानीजी से भी मिला। सनी माचवे दम्पती के यहाँ मध्याह्न भाजन के लिए निमन्त्रित थे। कमला की परमाइश थी सादी की एक रंगमा साडी लाने की। मुना कनाट प्लेस में एक बहुत बड़ी साग की दुकान खुली है जिसमें डाय की बहुत सी चीजे विकती हैं। मैं वहाँ गया। सबमुच ही यह दुकान दिल्ली के देवताया और दविषा के अनु गूँ था। आधुनिक डग से पर कलापूण और मुस्लिम के साथ सभी वस्तुएँ सजाई गई थी। बेचन वाली कितनी ही लडनियाँ थी जा पर पर अग्रेजी बाल रही थी। मुझे आगा नहीं थी यहाँ भी मरा कोई परिचिन मिल जायगा। ननोताल के श्री बौकलाठ कौसल के छाट भाई यही काम करत

थे। एक और विहारी मित्र मिल गए। दूकान का काम शुरू करने में कुछ देर थी। बौमलजी ने कहा जरा हमारे मनेजर से मिल लें। मनेजर का आफिस ऊपर का आवरण में था। बड़ा स्वागत किया। लेकिन मैं ऐसे मौने पर पहुँचा था जवकि साडे १० बजे दूकान खुलने से पहले भगवान् की प्राधना जरूरी थी। मनेजर साहब ने सहज भाव से कहा— 'आप भी चल' मैंने भी सहज भाव ही से जवाब दिया— 'मैंने भगवान् पर विश्वास नहीं है।' कमचारिया के रखने समय भगवान् पर विश्वास होना जरूरी तो नहीं समझा जाता? लाठी के हाथ से भगवान् कब तक लोका के दिलो पर शासन करेंगे। मैं वहीं बठा रहा। दूकान खुली एक साडी ली। ११ बजे मुझे परीक्षा देने के लिए प्रतिरक्षा विभाग के विदेशी भाषा स्कूल में जाना था। अब उसमें दम ही पन्द्रह मिनट रह गए थे। जगह देखी हुई नहीं थी। टैक्सी ली, धूम धुमावे रास्त से उसने कहा पहुँचा दिया। सचालक साहब ने बतलाया आपकी स्वीकृति की भूचना नहीं मिली पर मैं तो जवाबी तार दे चुका था। यदि सरकारी तारा के साथ ऐसी उपेक्षा हो सकती है तो साधारण लोगों की बात क्या? खर जिन तीन विद्यार्थियों की परीक्षा लेनी थी वह सब यही के सनिक अफसर थे। आध घंटा पीन घंटा देर हुई। टेलीफोन करके सबका बुला लिया गया। मैंने उनकी परीक्षा ले ली। उनके अध्यापक सिक्किम के भरे पुराने परिचित निकले। बहुत आग्रह किया कि आएँ तो हमारे यहाँ ठहर।

यहाँ से छुट्टी लेकर माचवेजी के यहाँ भोजन पर गए। वरेरकरजी साहित्यकार थे। कृपलानीजी तो विश्व भारती में सालों रह वहाँ के वातावरण से प्रभावित थे। चाय पीने के लिए यही नई जिल्ली में चन्द्रगुप्त जी के यहाँ जाना था इसलिए और महमानों के बिना हो जाने पर भी मैं वही आराम करता रहा। असम जब अचिगा नहीं था और उनकी बहिन दूना भी खूब बाल रही थी। उन्हीं से मनबहलाव हाता रहा। सस्कृत पाठशाला तयार हो गई थी, और 'सस्कृत कायधारा' के भी कुछ अंश तयार कर लिए थे। श्री चन्द्रगुप्तजी के यहाँ चाय पी। उन्होंने अपने एक प्रकाशक मित्र के बार में लिखा था कि वह उन पुस्तकों को छाप दोगे। इसलिए उनका उन्हीं के पास रख दिया। श्रद्धेय पुरुषोत्तमदास टडन आजकल यही थे। चन्द्रगुप्तजी

के साथ वहाँ चले। रात में डा० मयनारायण मिल गए। मिलते ही बाल
—'बाबा मैं मृत्यु जा रहा हूँ। सावित्रन दूतावाम न मारा प्रबंध कर दिया
है।' मैंने मुग़ाबरादी दी। टहनजी न याही दर बान हूँ। अंधेरा होने
पर फज बाजार लौटा। सोचा मातीमहल का मुग़मुमल्लम अकले खाना
खपियों के वचन के विरुद्ध है—'कचलाया भवति केवलाणी' (अकल खान-
वाला केवल पाप खाना है)। यह विश्वास था कि गर्मी हान पर भी तंदूर
का भुना मुग़मुमल्लम मसूरी तक नहीं मलामत पहुँच जाएगा। और वह
सही सलामत पहुँचा। जन्मास यही हान लगा कि दा क्या नहीं लाए। रात
का दरदरून को गार्दी पकटी।

अगले दिन ७ बजेकर ५० मिनट पर दरदरून पहुँचा। दाईं मध्य में
सुरत टकमा मिली। नी बजे क्रिकेट पर खना पटा। आध घंटे बाद जब
यह खुला तो लादबेरा पहुँच। वहाँ से रिक्शा ले १० बजे के करीब घर
पहुँच गए।

आजकल आवकारी अफसरा की यही पर काफ़ीस हा रही थी। श्री
जमुनाप्रसाद बल्लभ आगक भी समझ आए हुए थे। मिलने आय। अगावजी
न हिन्दी बयाकारों में सम्मानित स्थान प्राप्त कर लिया है। हिमालय न कई
ऊँचे दर्जे के साहित्यकार पैदा किये लेकिन उनमें बहुत कम ही ऐसे हैं, जो
अपनी कृतियाँ में अपनी जन्मभूमि की छाप आन देन हा। अगोत्रजी अपनी
बयाजा में गन्दाऊ का नहीं भूलते यह उनकी विशेषता है।

अन मसूरी का दूसरा सौजन था इसलिए कितने ही परिचितों के
मिलने की सम्भावना थी। अगले दिन रविवार का श्री माहिनीजी जुगुनीजी
के साथ आए। इस साल वह यहाँ आ अन्माटा चले गई थीं। गूग बहरे
स्वर्गा के अध्यापक का सम्बन्ध ही रहा था, पटना से श्री गारखनाय पाठ
अनना पत्नी के साथ आये। आजमगढ़ की बात बनला रूँ थे, लेकिन अब
मेरी तरह हा उनका भी सम्बन्ध आजमगढ़ से टूट-सा चुका है।

२० सितम्बर को जया का जन्मदिन था। आज वह दा गाल का हा
गई थी। गब्दा ही नहा बाबया का भी बाल लनी थी। एक दिन गिना ता
उसके गन्दाऊ में करीब सी गब्द मालूम हुए। चायपार्सी में उपा-बाबा
डा० मत्स्यनु गालाजी ठाकुरानी गुलाबकुमारी श्री। मृदुलीला, कमा-

कार नोटियाल और दूसरे मित्र आए । जया अभी अपन जन्मदिन को क्या समझती ? हाँ, यह दाय रही थी कि बित्तन ही परिचित और अपरिचित चेहरे साथ बैठ कर पा रहे थे ।

२४ सितम्बर तक पाम को सामग्री के आधार पर बड़े भाई की जिवनी लिख डाली थी । उनक जाने की प्रतीक्षा थी, और वह २६ सितम्बर का आ भी गए । दुःख का पूरा असर था यद्यपि उत्साह अब भी उनमें तरुणा जैसा था । अब अपराह्न में उनसे पूछ कर नोट देने और अगल दिन पूर्वाह्न में जिवनी टाइप पर डिप्टेट करने का काम शुरू हुआ । बड़े भाई के स्वभाव से कमला भी बहुत खुश थी । निर्भीकता और निर्लौभनकी वह साक्षात् मूर्ति हैं । अपने विचारा पर इतने दृढ़ कि सार जायिक वपु की पर्वाह नहीं करत ।

२७ सितम्बर का जुगुजी और उनक कनिष्ठ पुत्र यागीनाथ भी आए । यागीजी अल्मोटा में इजीनियर थे । अभी ३० के भा नहीं हुए कि पत्नी मर गई । दो जुड़वाँ लडकियों के अतिरिक्त एक लडका और एक लडकी—चार बच्चे हैं । उनको सम्भालने में दादी बहुत हाथ बटा रही थी । उसी तरहदुद के कारण वह अबके साल पहले मीजन में यहाँ नहीं आई थी । यागीजी ने लडके-लडकी को ननीताल के चाबेट में रख दिया था । उनका विचार ठीक था । वह कह रहे थे, बच्चा का संभालना अम्मा के लिए तरहदुद का काम होगा । सबसे छोटा बच्चा भी जरा दाखिल करने लायक है तो इसे भी वही दाखिल कर दूंगा । माहिनीजी का कहना था— वहाँ खच भी बहुत पड़ेगा और साथ ही पारिवारिक स्नह नहीं मिलेगा । तो भी पुत्र की राय के बजन की स्वीकार करती थी । माता पिता अपन तरुणपुत्र को पत्नीविहीन नहीं देखना चाहते थे—माहिनीजी विशपवर ? हमार यहा के कश्मीरी ब्राह्मणों के कुछ ही हजार परिवार हैं जो एक दूसरे से सुपरिचित हैं । लडकियों के ब्याहने की उनक यहाँ भी समस्या उठ खडी हुई है । किसी लडकी वाल न माता पिता पर जोर दिया हागा इसलिए वह भी अपन पुत्र पर जोर दे रही थी । पुत्र कह रहा था— अभी मैं ब्याह करने की स्थिति में नहीं हूँ । बच्चा पर बहुत खच करना पडता है । परिवार के लिए पसे कहाँ से आएँगे ? माता यह विश्वास तो नहीं कर सकती थी कि सोनेली माँ आवर बच्चा को संभाल लेगी ।

भया २ अक्टूबर को अमृतसर से आ गए। अभी भी छत बनाने का काम पूरा नहीं हुआ। उहाने गलती की जो दूसरी कमजोर छत का भी उजाड़ डाला। साचा एक ही माथ लोहा-मीमट लगा कर पक्की छत बनवा दें। पर इसी साल पजाब में जबदस्त बाढ़ आइ हजारा घर बरबाद हो गए। सीमट मिलना मुश्किल हो गया। भाभीजी पहले ही चली गई थी भया का काम नहीं रह गया था इसलिए सोचा दा चार तिन के लिए मसूरी हो जाए। मकान बच देने के पक्ष में वह पहले ही से थे। कह रहे थे कुल्हड़ी या लाइब्ररी के आसपास कार्ड बंगला ले लें हम भी वहीं जाकर रह लिया करेंगे। कमला बाजार के उनना नजदीक नहीं रहना चाहता थी मैं भी इस सहमत था। अगर किराय के बगले में जाना पड़े तो थोड़ा हटकर ही रहना चाहिए। अगले तिन भैया ने प्रायः सारा तिन यही बिताया। बड़ भाई से भी उनका परिचय हुआ। पेगावर-काण्ड के दौर गन्वा लिया का नाम किसने नहीं सुना? भैया कह रहे थे— अन्न जितनी भर हाथ हाथ पट्ट पट्ट करना अच्छा नहीं है। जानकी को दिल्ली में बठा दिया। उनके लिए मकान के किराय से पाँच छ सौ रुपये आ जाएंगे। फार्मोसी से पाँच छ सौ रुपये मासिक हम मिल जायेंगे। और क्या करना है? चार मास मसूरी और चार चार मास इधर उधर बिना देंगे। वह मुझसे दा-तीन रुप बड़े थे बाल बिल्कुल सफेक लेकिन अब भी उनके शरीर में निबलता नहीं थी। चलने में हवा से बातें करत थे।

अब की छोटे सीजन का उद्घाटन मुख्यमंत्री श्री सम्पूर्णानंदजी ने किया।

६ अक्टूबर की चिट्ठिया में अहरोरा (मिर्जापुर) के पुरान मित्र श्री रामशेलावनजी प्रहरी बद्ध कवि की भी थी। बुलाप में अपने साथी समाजी बहुत कम रह जाते हैं। उस वक्त पुराने मित्रों से साक्षात् या पत्र द्वारा मिलने में बड़ा आनंद आता है। श्री रामशेलावनजी ने १९२७ में ही कालेम के आलान में भाग लिया था। लडका मट्टिक फेल हो गया है। घर की आविक स्थिति तो ४० रुप पहले भी अच्छी नहीं था। चाहते थे, लडके का कही नौकरा मिल जाए, लेकिन आजकल नौकरी मिलना आसानी नहीं। चार सप्ताह द्वारा सात्वना दन के सिवा और मैं क्या कर सकता था।

७ अक्तूबर को बड़े भाई गये। बड़े जीवटवाले पुरुष हैं। कमठ और स्वच्छ हृदय भी। पानसचय में बहुत उत्साह नहीं रहा। नहीं ता और भी सीख सकते थे, लेकिन तब भी उट्टाने काफी सीखा है। विवाह ने भी बाधा पहुँचाई। आर्थिक कठिनाइयाँ से लोहा लेना पड़ रहा है। उन्हें अपनी नहीं लेकिन अपने बच्चा की चिन्ता बहुत रहती है— मेरे बाद उनकी कौन बेसमाल करगा यही साचत रहने हैं। बीबी न बहुत कष्ट सहा। आर्थिक सघम में पड़ने से मिजाज चिड़चिड़ा हो जाण तो जाश्चय क्या ?

८ अक्तूबर का राजा महेंद्रप्रताप आए। स्वतंत्रता सघम में जीवित गद्दीदा की वह ज्वलन्त मूर्ति है। मैं ममज्ञता था ७० से ऊपर के हूँ, लेकिन अभी उम्र ६८ की ही थी। स्वास्थ्य इस अवस्था में जसा हाना है, उसे देखते बुरा नहीं था। ससार सघम की धुन उन्हें बहुत वर्षों पहल ही से हैं। जानत हैं बात सुननेवाले भले ही मिले लेकिन माननेवाले नहीं मिलते। तो भी उदू, हिन्दी अंग्रेजी तीनों में अपने “ससार सघम” को निकालते ही जा रहे हैं। मैंने अपने मकान में बेचने का विनायन दिया था। उसका ही सारे में बातचीत करन आय थे। लेकिन उनके जसे स्वास्थ्यवाले आदमी का इतनी दूर मकान लेना कैसे ठीक हो सकता था ? मकान की बातचीत बीच में ही पड़ी रह गई और दूसरी बातें चल पड़ी। वह प्रथम श्रेणी के धूमककड़ हैं। राज रियासत छाड़कर बेसरो सामानी से देण स निकल गय। अंग्रेजों के कुत्त उनके पीछे पड़े रहते। सगे सम्बन्धी उनकी ग घ स भी डरते। पर, आजीवन वह अपने विचारा पर डटे रहे। अंग्रेजों के प्रति उनकी अपार घणा कभी नहीं घगी। कई बार उन्होंने पथवी परिश्रमा की। सिर्फ होटलों रला और जहाजों वाले रास्ता पर ही नहीं गय बल्कि तिब्बत के दुराराह पवता का भी पार किया। ऐसे पुरुष की जीवनी कितनी रोचक और प्रेरणा दायक होगी यह साचकर मरा मन हाता, उसे लिख डालू। उन्होंने अपनी छपी अंग्रेजी जीवनी भेजी जो मेरे लिए पर्याप्त नहा हो सकती थी। एक तो वह सारे जीवन की नहीं थी, और दूसरे वह नाट के रूप में थी। ठीक जीवनी तभी लिखी जा सकती थी जब मैं उनके पास बठकर पूछ पूछकर नोट कर लूँ। मैंने पीछे लिखा पर वह लगातार दो चार हफ्त दे नहीं सकत थे। उनके पैरों में अब भी चक्का बँधा हुआ है, इसलिए राजपुर में दो चार

नि रहने के बाद फिर वह किसी तरफ चल पडत है जीवनी लिपन का सकल्प मन का मन ही म रह जाना मात्रूम होना है ।

१२ अक्तूबर को जेता को बुखार आया । उसने दूध नहीं पिया । उधर दस्त भी बढ हा गया । चौथे दिन रेंडी का तल देकर जुलाब कराया । वचारा सुस्त हा गया । बुखार धीरे धीरे हटा । हमने ममया, यों ही मामूली बुखार का गया है । कर्क निना बाप पता लगा कि उसका दाहिना हाथ उठ नहीं रहा है । 'पालिया' का नाम मुनकर दिल डर गया । कल्याणसिंह की लडनी के दाना पैरा और दाना हाथा पर पालियो हुआ था । डाक्टरों ने निराग कर दिया था किन भैया ने कहा— मालिग करा । धीरे धीरे ठीक हा जाएगा । जेता न वारे म लिपने पर उहाने एक दवाई भेजी और कहा—“डरन का जम्हरत नहीं । देर लगगी, हाथ अच्छा हा जायगा ।” कई महीना तक हम बहुत चिन्ता रही । फिर थाडा थोडा हाथ उठने लगा । आज ५ महीने बाद हाथ पर ता उसका पूरा काबू है और मुट्टी बाघन म ता कभी भी उसको दिक्कत नहीं हुई । लेकिन अभी भी बाएँ हाथ के बराबर दाहिने हाथ म बज नहीं है ।

सरकारी दफतरा स जब सम्पक करना पडता है ता हमारे जैसा को भी अनुस लगन लगता है दूसरा को तो और भी घुरी गत होती होगी । हर साल इन्कम टैकम के लिए दफतर की कदमबानी करनी पडती है जिसका कोई महीना निश्चित नहीं है । कभी मई-जून म, कभी उसक बाद और अब क तो अक्तूबर की १६ तारीख, सो भी दहरादून म बुलाया गया । सो भी एक छोडकर जितन भी अपमर मुये मिले, सभी सज्जन थे । अब क साल आयन्ता ६७०० थी । इसम कुछ अग्रिम थ, और कुछ सरकारी सपर खच आनि के भी । पर, उनका अलग करके प्रहम करन की जगह में घटी बेहतर समझना है कि उस पर भी कुछ टक्स लग जाये । दहरादून गया । काम होने म कुछ ही मिनट लग । चाय गुक्लजी क यहाँ पी, और स्टेगन से टक्सी लकर उसी शाम मसूरी लौट आया ।

२२ अक्तूबर को डा० जयनारायणगिरि अपनी पत्नी मुजन क साथ आए । हमारे घर म मुये छोडकर सभी नपांगी और बघ-नपाली हैं, इसलिए नेपाली महमान से प्रसन्नता होनी ही चाहिए और गिरिजी तथा उनकी

पत्नी का स्वभाव कुछ इतना मधुर था कि वह आत ही घर जैसे मालूम होने लग। डाक्टरों पास करके आजकल वह लम्पनऊ में विधेय शिक्षा ले रही थी। पत्नी को इसी गत पर ब्याह था कि वह पढ़ेंगी। बाप ने बिल्कुल अनपढ़ लड़की के लिए और रास्ता नहीं देखा, और मास्टर रखकर पढाया। गुजन मैट्रिक पास किया अब पटना में एफ० ए० में पढ़ रही थी। मैंने कहा—इह जीव विज्ञान में एफ०एस-सी० करके डाक्टरी में डाल दीजिए। पति पत्नी दोनों डाक्टर रहेंगे बहुत अच्छा रहेगा। पर, गिरि परिवार घनाढ्य है। अभी भी उनका दिमाग में पुराने विचार चक्कर काटते हैं—हमारे पास खाने पीने के लिए बहुतरा है तरद्दुद करने की क्या जरूरत? एक बड़ा भाई डाक्टर हाकर अधिक शिक्षा के लिए विलायत जान वाला था। उसे लेकर आया, फिर विलायत कौन जाय? पटना में होटल खोल कर बठ गया। सबसे बड़ा भाई नेपाल के स्वतंत्रता आन्दोलन में एक नेता थे। कोइराला मन्त्रिमंडल के समय मोरंग का राज्यपाल बना और कोइराला के बहनाई बनने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ। जाते पाते भारत में ही नहीं टूट रही है, नेपाल पर भी इसका छिटा पड़ रहा है। पुराने आचार विचार के ठेकदार स्वयं महिला गुरु के छोटे साहबनाद में एक राणाकुमारी से ब्याह किया। गिरि ने ब्राह्मण कुमारी से ब्याह किया। नेपाल के गिरि पुरी का समाज में वही स्थान है जो हमारे यहां के गहस्थ गिरि लोग का। यह निश्चय है कलियुग सिर्फ भारत में ही आकर नहीं रह जायेगा।

२७ अक्टूबर को श्री मुकुन्दलालजी आये। इस साल का उनका यह अंतिम फेर था। परिवार का नीचे ले जाने के लिए आये थे। गन्वाल में रूपकुण्ड की हिमानी में सबको लाने मिली थी, जिनके बारे में तरह-तरह की कल्पनाएँ हो रही थी। मुकुन्दलालजी का कहना था—जम्मू के जेनरल जारावरसिंह के साथिया की ये लाने नहीं हो सकती। हमारे यहां पहाट में बीच-बीच में नन्दादवी का कुम्भ लगता है जिसमें हजारों नर नारी नश्वर करने के लिए जाते हैं। वहां वफ के सूफान में किसी समय दब कर मर गये। यह भावतलाया कि वहां गणेश की मूर्ति पर 'यगावर उत्कीर्ण मिला है। जब चम मास सहित आदमिया की बटा अनेक लाने

हैं उनके परा के चप्पल और दूमरे सामान भी हैं, ता पता लगान म क्या मुश्किल हा सकती है ? लेकिन १५ १६ हजार फुट के ऊपर विगेपना का जाना भी तो मुश्किल है । जोरावरसिंह के आदमिया व होने म एक बडी आपत्ति यह है कि वही सिन्धवा की भी लाशें मिली हैं । आज से सौ वष पहले, कश्मीर के हाथ म जाने से भी पहले जम्मू के जेनरल जारावरसिंह ने ल्हास पर हाथ साफ करते पश्चिमी तिब्बत का लेना चाहा । जाडो मे वह सदलत्रल मार गय । उनके कुछ आदमी भागकर अल्माडा हात लौटे थ । १६ १७ हजार फुट के ऊपर की हिमालय की भूमियो म और भी कितने ही रहस्य निकल सकत हैं । क्याकि सदा हिमिन भूमि पुरानी चीजा को अपन भीतर गतान्त्रिया तत्र सुरक्षित रह सकती है । त्यानसान और साद-वरिया म हजारो वष पुराने मनुष्या और जंतुआ की लाशें मिली हैं । अभी हमारे यहाँ लोग घती या नरवानर को ही दूढ निकालने के लिए परेशान हैं । लेकिन, जा महत्वपूर्ण अवगेप वहाँ मिलेगा, वह ऊपर चलता फिरता नही, बल्कि नीचे दबा मिलेगा ।

जाड़े की यात्रा

जाड़ा आ रहा था। पिछले साल तापमान क ४० डिग्री के नीचे पहुँचने पर कालेज में तकलीफ़ें हाँ गई थी इसलिए इस साल भी आशंका थी। निश्चय कर लिया कि सर्दी बढने पर नीचे चले चलेंगे। जेता का दाहिना हाथ हथेली से पहुँचे तक ठीक से काम कर रहा था किंतु कंधे के पास अभी कसर थी। उसकी मालिग हो रही थी।

सरह के दाहाकोण के आठ फार्मों के प्रूफ मैंने डा० शहीदुल्ला के पास डाका भेज थे। उह वह राजशाही में मिल। ताका युनिवर्सिटी से जवसर प्राप्त कर अब वह राजशाही में अध्यापन कर रह थे। डा० शहीदुल्ला संस्कृत और अपभ्रंश के पण्डित हैं। सरहपा और कण्हपा के अपभ्रंश दोहा पर उहोंने अपने डाक्टरेट की थिसिस लिखी थी। मैंने चाहा था ममनो के पास प्रूफ के रूप में कोश का भेज दूँ ताकि उनके सुधाव प्राप्त हो सकें। डा० शहीदुल्ला का उत्तर शुद्ध हिन्दी में आया था। बगला भाषिया के लिए शुद्ध हिन्दी उदू से आसान है। बल्कि यह कहना चाहिए कि यदि वह उदू के गद् और त्रिया रूपों को जानते हैं तो जहा उदू के लिए हजारों फारसी जरबी के गद् का डूढना पडगा वहाँ जपन बगला गब्दा का इस्तेमाल करके वह उच्च श्रेणी की हिन्दी में लिख सकते हैं। बगला के मुसलमानों ने अपनी मानभाषा के लिए प्राणा तक को दिया और जन्म में पाकिस्तान संविधान सभा का बिना चू चिरा के उदू के साथ साथ बगला को भी राज्य भाषा स्वीकार करना पडा। डा० शहीदुल्ला अपनी बगला के जव

दस्त प्रमी और सेवक हैं। यद्यपि संविधान ने बंगला को मजूर कर लिया है, लेकिन २३ मार्च १९५६ के गणराज्य के उद्घाटन के समय जो भाषण कराची में हुए, उनसे मालूम होता था कि पाकिस्तान के घनी धारिया ने पंचो का 'याव सिर माये पर, लेकिन पनांग बही रहेगा' वाली कड़ावत का स्वीकार किया है। रेडिया पर नताआ के सार भाषण कुछ अंग्रेजी छोड़ कर उद्धृत हुए बंगला के राष्ट्रभाषा होने का बड़ा कही पता नहीं था। निश्चय ही धीगा मुस्ता बहुत दिना तक नहीं चलेंगे। लेकिन पश्चिमी पाकिस्तान वाले एक और तरफ से पाकिस्तानी बंगालिया का जड़ सादन के लिए तयार हैं। पाकिस्तानी बंगाली घोंस दिखलाते थे कि हमारी सख्या पाकिस्तान में सबसे अधिक है। उनके समयक मुल्ला पूर्वी बंगाल में ऐसा बातक फला रहे हैं कि वहाँ के हिन्दू भागकर भारत चले आए और इस प्रकार पाकिस्तान में बंगालिया का बहुमत खतम हो जाए।

आदमी अकेले रहत वक्त्र विनेपकर घमक्कर, आर्थिक चिन्ताओं में नगे पड़ सकता। कम से कम मरा तजर्बा यहाँ था। लेकिन, घरबार, बाल बच्चे होन पर बनी बेपर्वाही नहीं रह सकती। उस बल की कितना होता है, और उस बल का और जबकि यह नहीं रहगा। मरे दिमाग में यही विचार चक्कर काट रहे थे। यद्यपि किताब महल वाला ने रायन्टी को २० सैंकडा से १५ सैंकडा कर लेन पर १०० रुपया मामिक नियमित रूप से देने के लिए वचन दे दिया था। चीन या चकोस्लोवाकिया में चलन की बात कहन पर कमला टस से मस नहा होती और कहतीं— 'जोरा के भी ता बच्चे हैं?' हाँ, ठीक है जोरा के भी बच्चे हैं, लेकिन उनमें से बेपारी मददगारा की हालत कसा जाती है यह भी हम देखन हैं। 'कम से कम दो-तीन वप के लिए चलो'। पर उह ता 'हमें हैं प्यारी हमारी गलियाँ' यात्रा आता है। यह समझनी है कि एम० ए० करन में एक ही साल है। कल्पिया में पढान का काम पकड़ लूंगी। पर पढाई में सौ डेड सौ रुपए मामिक से अधिक नहीं मिलेगा, जिससे जाया तो मवान के किराए में ही चला जाएगा।

नवम्बर के चौथे सप्ताह में मरी दिनचर्या था ७ बजे सारे उठना, साढ़े सात बजे चाय-नास्ता करना, फिर बठकर टाइप राश्टर पर साढ़े ११-१२ बजे तक पुस्तक लिखवाना। साढ़े १२ बजे नाश्त, ममाचारपत्र डाक

पढना । सगाधन करते ३ सप्ते ३ घंज जाता । कभी एनाघ घटे के लिए सा जाना ५ वा चाय पीना । फिर लिंगाय हुए बागजो या प्रूफो को रात के सवा ८ बजे तक देखना आघ घटा रडियो पर खबर सुनना फिर काम करत साड १० बजे क करीब सा जाना । इसा बीच म जया और जेता क साथ सेलना भी गामिल था । जया अब बहुत बातें करने लगी थी ।

२४ नवम्बर का रीवा जिले क तरुण घुमक्कड गम्भूत्याल त्रिपाठी आए । २० वष की उमर होगी । बडी मुश्किल से मट्टिक प्रथम श्रेणी म पाम हुए । साइस पत्ने की उत्सट इच्छा थी पर जागे बढन का कोई रास्ता नही । कुछ साला तक स्कूड म मास्टरी की । ६० ७० रुपये मिल जाते थे । आग की पढन और घुमक्कडी की जाकाशा ने चन स रहने नही दिया । मेरी कुछ पुस्तकें पढ चुके थे । सोचा पश्चिम मे भारत की सीमा पार करते ही पाकिस्तान जा जाएगा जिसस लगा ही अफगानिस्तान है फिर तो दो कदम पर सावियत रुस है । यदि वहाँ चले चल तो सा स के पत्ने का रास्ता खुल जाएगा । किसी तरह सीमा पार करके पाकिस्तानी पजाब म पडुचे । पकड लिए गए । 'क्या आए ? —पूछने पर कुत्ते बिल्ली की कहानिया कहने लग "पाकिस्तान म नौजवाना क पत्न का बहुत अच्छा प्रबध है यही सोचकर मैं चला आया ।' जवाब मिला— आए तो भला किया कानून ताडा, इसलिए एक मास गोलघर म चलो ।" सजा काट लेने पर फिर सीमा क पास लाकर कहा गया—' अब यहा से तुम चले जाजा । बचारे अमनसर आए । पास म पसा सडी नही लकिन घुमक्कड को ईमा नदारा के साथ किसी भी काम करने से आनाकानी नही करनी चाहिए यह शिक्षा उहे मालूम थी । होटल म जाकर कुछ हफता तक दरतन घाते रहे, फिर वहा से चलकर चण्डीगट आए । वही पढने का रास्ता नही मिला । जत म घूमते घामते मसूरी म पहुँचे । मैं क्या सहायता कर सकता था ? तरुण का दग्वकर बहुत तरम आता था । भिखमगे की मली और पटी पोशाक थी । पैर नगा ओढने के लिए टाट ले रखा था । न जाने कितना भूखा था ? भोजन कराया बड् परिचय पत्र दिए । एकाध जगहा का नाम बतलाया, जहाँ टेक्नीकल गिखा मिल सकती है । यह भी कहा कि यदि तुम साइस छोडकर सस्कृत पढना चाहते हो, तो साधु बनकर यह काम आसानी

स कर सकते हैं। पर, न वह साधु वनन के लिए तैयार थे, न ममृत पढने की इच्छा रखने थे। 'शिवास्ते सतु पथान' (तुम्हारा कल्याण है) यही कामना हम कर सकते थे।

अब व जोधपुर की ठाकुरानी गुलाबकुमारी २८ नवम्बर का मसूरी स गए। यह बवल उहा की वान नही थी पुरान राजाआ जागोरदार और जमीनारा क वग की यही हालत है। वह अपनी राजधानिया म नही रहना चाहत। जहाँ पर पीलियो स उनका निरकुण गसन था, वहा वह जनमाधा रण की तरह कम रहत ? रहत पर भी चापलूम, लगू भगू मुसाहिव आ घरत। किसी के घर व्याह है किसी क लडक की पढाई नही चल रही किसी क घर म खर्ची नही आदि आदि मच्चो बूठी बातें कहकर वह कुछ पान का आगा रखते। न दन पर उनक काप और निदा का भाजन हाना पडता। सकोच करत करत भी कुछ दना ही पडता। आमदनी थाडी और नपी तुली। इन सबमे वचन क लिए जिनका मसूरी जमी किसी पहाडी जगह म रहने का इतिजाम है वह यहाँ सबसे पहल आत और जाडों म ही लौगते। तालुकनारा न अपने महल जस भवाना का अच्छे किराए पर सर कारी दपनरा क लिए दे दिया। किराए पर छोटी मोटी वगलिया ल रग्वी हैं जिनम मन मारकर वह जाडो क दा चार महीन गुजार देत हैं। सबसे ऊंचे वग की आज यह स्थिति है। उनको अपने पैरो पर खडे हान के लिए पमे यदि मिले भी ता उमका ठीक स इस्तेमाल करना उहान कभी सीखा हा नही। कुछ ता दिवगन महाराणा उदयपुर की तरह समझत हैं—अपनी जिन्गी भर पुराना ही तरह रह ला, आग की बात आग वाल देखेंगे।

दिसम्बर के पठ मप्नाह तन ससृत काव्यधारा (५० कविया का काय मग्रह) समाप्त हो गई। मैं हरेक कवि का इतना उदाहरण देना चाहा कि जिससे कवि की विगपता पाठक ममज्ञ सक। पुस्तक म वाइ आर मूल ससृत और दाहिनी ओर प्रतिपत्ति हिंदी अनुवाद रता है। कविया का उन कालम स रखकर परिच्छेन को तत्कालीन बोलचाल की भाषा के अनुरूप काल विभाजन द्वारा उपस्थित किया है। छत्रम या ससृत काल के लिए ऋग्वेद क कितन ही कवि (ऋषि) दिए पालि काल क लिए महाभारत और रामायण स उद्धरण लिए। प्राकृत काल म अश्व-

घोष से कालिदास—गूढ़व तव की कविताएँ दी। अपभ्रंश-काल में दण्डी से हीर-पुत्र श्रीहृष के नमून दिए। तीन कवि और कवयित्रियाँ मुगलकाल की भी जा गई। कालक्रम से इन कविता-यात्रा पठने से सस्मृत काय साहित्य की भाषा और भावांक विकास का अच्छी तरह पता लगता है। सारी पुस्तक पर एक विस्तृत भूमिका अभी लिखनी है। हरिक काल के लिए एक छोटी भूमिका और हरिक कवि का दस पाँच पवित्र्या में परिचय दे दिया है। सक्षेप करने का ख्यात रहते हुए भी ५० पाम का ग्रन्थ हा गया।

७ दिसम्बर का 'मध्य एसिया का इतिहास (१)' की कुछ गेलिया का पहला प्रूफ आया। दूसरा खड लखनऊ के नगनल हेरल्ड प्रेस में सट रहा है। पहला भाग सम्मेलन मुद्रणालय में छप रहा था। दखें यहाँ कम तजर्वा होता है? प्रेसा का तजर्वा बहुत बुरा रहा। ८ दिसम्बर को राष्ट्रपति का पत्र आया, जिसमें उहाने लिखा था कि चीन के पासपोर्ट के लिए मैं पानजा का खिख दिया है और मिलने पर भी उनसे कह दूंगा। जाखिर पासपाट जिसके नाम से मिलन वाला है यदि वही तयार हो तो पासपोर्ट मिलने में क्या दिक्कत हो सकती है? लेकिन, जब तक वह हाथ में न आ जाए तब तक इत्मीनान नहीं किया जा सकता।

११ दिसम्बर का २२ वष बाद लाहुल के ठाकुर पथवीचन्द अपनी पत्नी के साथ मिलने आए। १९३३ में लदाख से लौटते लाहुल में वह मिले थे और कई मिनता तक भिन्न भिन्न जगहा का देखते वक्त मरे साथ रह। मातभाषा तिब्बती हान के कारण कालेज की पढाई में उह दिक्कत हान लगी इसलिए उम वक्त उसे छाडकर घर पर बैठे हुए थे। पीछे टरिटारि यल फौज में भरती हो गए। लडाई के दिना में उह और उनके चचर भाई (ठाकुर मगलचन्द के पुत्र) खुशहालचन्द को कमीशन मिल गया। अब दोना भारतीय सेना के लफ्टनंट कनल थे। उम समय का कहां वह नवतरण गरीर और कहा जब ४५ वष के प्रौढ? पत्ना धमगाला की नेपालिन हैं जिनसे १५ साल पहले उहाने ब्याह किया था। स तान काई नहीं, लकिन भाई और पत्नी के परिवार के बच्चा को पालने में सन्तुष्ट है। दहरादून में एक साल से अधिक उह रहन हा गया था और अरस्मान् किसी ने मेरा मसूरी का पता दिया। इ दो चीन में जा भारतीय सैनिक अफमर गए थ

उनमें ठाकुर पृथ्वीचन्द भी थे, जोर वननाम वाले कमिश्नर के बड़ा अध्यापक थे। मैं लद्दाख के बारे में उनसे विशेष सुनना चाहता था। मैंने सुन लिया था वह लद्दाख की प्रतिरक्षा के लिए गए थे।

चलता रहूँ थे—जब पाकिस्तानिया न लद्दाख और तास्कर पर हमला किया था ता हमारा दिल धक्का उठा। आखिर हमारे लाहूल की सीमा उससे लगती थी। हम दाना न सरकार को अपना संवापें अर्पित करत हुए कहा— 'हम लद्दाख में जाना चाहते हैं।' सरकार का सारा ध्यान कश्मीर उपत्यका के ऊपर था। वह लद्दाख के महत्त्व को नहीं समझती थी। हम २५ मिनिक दा सी के करीब बन्दूकें तथा गालियाँ मिली। उमा को लेकर हम लद्दाख पहुँचे। पाकिस्तानी लेह के पास पहुँच गये थे। लद्दाखी अपना कारिया बँधना बाधकर निवन भागने के लिए तयार थे। हमारा निव्वती भाषा और बौद्ध होना उम समय बड़ काम आया। हम उह रात में समय हुए। कुठ जवानों का तुरत गोली चलाना सिखाया। दो चार दिन भी तो सिक्किम के लिए नहीं थे उसलिये कारतून भरना और चाऊ दमाना भर मिललाकर अपन एक-दो साथ मिपाहियों के साथ उह ल पाकिस्तानिया के पीछे पड़े। जब एक दा मौल हम उह भगान में सफल हुए ता लद्दाखिया की हिम्मत बग। वह खुशी से स्वयमवक बनने लग। लेकिन हमारे पास उनसे हथियार नहीं थे। तान महीन के करीब तब भी हम पाकिस्तानिया का पीछे चकत गए। बुमक पहुँचा और उधर जाजीला में हमारा टैक भी करगिल की ओर आया। पाकिस्तानी भाग खड़े हुए। हम मिथु उपत्यका से उह भगा मकत थे लेकिन उसी समय अस्थायी सचि हा गई और हम एक नाना पडा। पृथ्वीचन्द और बनल खुगाहालचन्द दाना का इन वीरता के उपलक्ष में 'महावीर चक्र' मिला। मिना का यह काम मेरे लिए भी अभिमान की बात थी।

ठाकुर पृथ्वीचन्द उत्तरी मिपननाम की स्थिति दग्कर बड़े प्रभावित हुए। यह रह था, चाटिया की तरह वहाँ का हरक आदमी बाध में लगा हुआ है। मुझ के कारण देग का सत्यानाग हुआ, कितना ही धाना का बहा भारी अभाव है ता भी सभी लोग खुगा-खुगा अपन देग के नए निर्माण में लग हुए हैं। अपन महा विशेषकर सनिक अपमरा की स्थिति में सन्तुष्ट

नहीं थे। कह रहे थे यहाँ पर तरबरी हाने में तिरडम जोर मौका मिलने पर घूम रिश्तत बहुत चलनी है। जिसने कारण ईमानदार सनिक अफसर विरक्त हो गये हैं। कहते हैं— हम अपने लडको को जबसेना में नही भर्जेंगे। मैं पूछा—‘और यदि दंग पर सकट जा जाण तो?’ ठाकुर साहब न कहा— तब सा हम अपने सबस्व की प्राजी लगानी हागी। हम अपनी स्वतंत्रता दूसरी बार खोने के लिए तैयार नहीं हैं।’

कमला ने अपनी गुम्हानी कलिदास के हाईस्कूल की प्रिंसिपल को लिखत समय जाण प्रस्ट की थी कि एम० ए० करके मैं गायद कलिम्पोग चली आऊगी। उहाँने बहुत खुशी प्रस्ट करते हुए लिखा— ‘तुम्हें अपने स्कूल में जाकर पढ़ाना चाहिए। एम सूटा जोर गड गया। अब वह कलिम्पोग का ही स्वप्न देखने लगी।

बेहरावा—पिछले साल १८ दिसम्बर को कलेजे में दद हुआ था। इसलिए १४ दिसम्बर का यहाँ से चल पडा। आराण में वाला थ मसूरी में सर्दी काफी थी। डेढ़ बजे घर में निकला। जया राने लगी। गापालू सामान लिए पीछे रह गये इसलिए बस नहीं मिल सकी। टक्की पकड कर गाम थ्री गयाप्रसाद गुकलजी के घर पर पहुँचे जब कि अधरा हाने लगा था।

सोवियत नेता क्रुचेव और बुल्गानिन तीन हफ्ते के दौरे पर भारत आए थे उनका आगातीन स्वागत हुआ। भारत के अधिकाश लोग गरीब या अनिश्चित जीवन वाले हैं। वह पिछली डेढ़ पीढ़िया से रुम के निश्चित जीवन के बारे में सुनते आय थे और सभी कामना करते थे कि हमारा दंग भी कब उस तरह का हागा। देगी जोर बिदगी अलीशाहा ने सारे समय हजारों चूठी झूठी बातें कहकर सोवियत के खिलाफ धूँआधार प्रचार किया पर उसका हमारे जनसाधारण पर कोई असर नहीं पडा। आज अपने हृदय के भावा को प्रकट करना का जबसर मिला था फिर वह क्या न हर जगह के प्रदर्शना और सभाओं में पुराने रिवाडों को तोडत ? आज ही रूसी नेता दिल्ली से काबुल गये। मुचस लाग पूछते रहे थे— इसका क्या असर हागा ?” मैंने कहा— अली शाह और उनके हाथ में बिको के ऊपर कोई असर नहीं होगा, उनका छाती पर साँप लौटेगा। जा पहले से ही सोवियत

व हितपीथ, उनका उत्साह दूना होगा। बीच-बीच में दिल्लीमिलियकीना में सब बहूता को मन्ची बात का पता लगा और वह अमरिकात प्रापगडा क जाल से बाहर आएंगे।' यद्यपि हिमालय की दा पुस्तका को छाड सभी सताइ म थी, लकिन मुये अपना काम पूरा करना था। हिमाचल प्रदेश और 'जोनमार देहरादून' को भी मैंने लिख लिया था। देहरादून जिले के बारे में कुछ और बातें भी जानना चाहता था। सासनर हाल में देहरादून में जा खुताइ हुई थी, उसका स्थान का देख लना चाहता था। १५ दिसम्बर को कुछ पटा के लिए एक माटर मिली और उस पर गुकलजी और महताजी के साथ मैं चला। चूहड़पुर बाजार हान जमुना पुल पार करन से पहले ही दाहिनी ओर कुछ दूर जाकर, पक्की सड़क से प्रायः डेढ़ मील पर उस जगह पहुँचे जहाँ खुताइ में ईमवी दूमरी गताब्ती के राजा गीलवर्मान यत्र किया था। सहारनपुर के लाला जगतप्रसाद ने जगलात से कई सौ एकड़ जमीन लेकर यहाँ अपना काम बनाया था। बुलडाजूर जगल साफ करन में लगता उनके पाल में कुछ इटें फेंक गई। खोत्ने पर कई इटा को देखकर लालाजी ने भारतीय पुरातत्व विभाग को सूचना दी। पिछले दा साल में उसने खुदाई की। मालूम हुआ गीलवर्मान यहाँ कम-से-कम चार अश्वमेध यत्र किए। कई खडित इटा पर कुपाण ब्राह्मणी अक्षरा में लेख था। पूण लेख दिल्ली ले गये जा था

नृपतर्वापगण्यस्य पौणापष्ठस्य धीमत
चतुयस्याश्वमेधस्य चित्याय गीलवमण ।

सिद्ध । आ युगश्वरस्याश्वमेधे युगगैलमहीपत ।
इष्टका वापगण्यस्य नपते शीलवमण ।

गीलवर्मान के चौथे अश्वमेध की यह चिति (वन्ती) थी। खोत्ने पर पाम में ही दा और चितियाँ मिली, लेकिन चौथी का पता नहीं। अश्वमेध चुप चुप नहा लिया जा सकता। उसमें घाडा छाडकर पत्तामी राजाभा को युद्ध के लिए चलाने लिया जाता जिसे बितन ही राजा मिलकर मुक्ताविला कर सकते थे। इसलिए गीलवर्मान गतिगाली राजा हुआ होगा इसमें सन्देह नहीं। उस समय पाम में पहाडा का नाम युगगैल था जिसका वह महीपति था। ईसा की दूमरी-तासरी गताब्ती का उत्तरी भारत का

काराच्छन्न है। इतना ही मालूम है कि वृषाण प्रभुता अब छिन भिन हो रही थी और प्रतापी गुप्तो के जान म शताब्दी नहीं तो कई दगाब्दियों की देर थी। इसी समय कुर और उत्तर पंचाल को लने सारे पहाड़ पर गीलवर्मा का शासन रहा हागा। उससे चार-पाँच सौ वर्ष पहले यहाँ स जमुना पार थोड़ी दूर जागे आधुनिक-काल की एक प्रसिद्ध नगरी थी जिसके महत्व का जानकर अगोत्र न गिला पर अपने घमलेख खुदवाए। हम अश्वमेध यज्ञ की वाज (शयन) के आचार की चिन्ता को देख रहे थे। उसी समय लालाजी क काग्निदे आ गये। चौकीदार बतला रहा था—इसमें थोड़े की हड्डियाँ भी मिली थीं। कारपर्दाज साहब आयसमाजी ये कह भला कैसे मानते कि पुराने घमयुग में जबकि वेद भगवान की तूनी चारा तरफ बोल रही थी कोई घोटा मार कर यज्ञ कर सकता था। घोटा मारते ही नहीं बल्कि यज्ञ यज्ञ के रूप उमक प्रसाद को भी पुरोहित और यजमान गले के नीचे उतारते थे इसे वे भला कैसे मानते? उन्होंने कहा कुछ विद्वाना ने हड्डी को घोडे की बतलाया है लेकिन इसमें सन्देह है। सन्देह की बात वह अन्न जसा की आर से कह रहे थे। मैंने कहा— सन्देह है? वह बड़े जानवर की हड्डियाँ घोडे की नहीं तो एंस की हागी जिसका मानना आपके ग्याल से और बुरा होगा। लेकिन यह गोमघ नहीं था, क्योंकि शालवर्मा ने स्वयं इसे अश्वमेध लिखा है। वस्तुतः ऐसे लोगों से साथ माथा पच्ची करना ही बुरा है।

वहाँ से फाम बहुत बड़ा है। पूँजीवाले आदमी फार्मों से पसा बमाना चाहते हैं और उसे ऐसी जगह लगाना चाहते हैं जहाँ कम न कम खतरा हो। पहले जमींदारी इसके लिए उपयुक्त समझी जाती थी अब उसकी भी जट खुद गई। खेत भी एक मात्रा में ही रख सकते हैं लेकिन आधुनिक ढंग के फलो या दूसरी चीजा को फार्मों में एक्की की सीमा नहीं है यह जानकर अब वह इस तरह के फार्मों में पसा लगाने लग हैं। वहाँ बुलडोजर और ट्रक्टर ये बाकायदा आफिस था। खेत अभी अभी बोये गये थे। जहाँ हजारों वर्षों तक जंगल के वक्षा की पत्तियाँ सन्ती रही हैं और जमीन मटियाली है वहाँ फमल खूब हागी ही। हम लौटकर दाइ सडक पर आए। दाइ और सामने की ओर एक वैसी ही सडक जगोरु आश्रम की तरफ जाती दीख पडी। श्री घमदेव शास्त्रीजी से आने के लिए कई बार कह चुका था यह

अच्छा मौका था। कुछ खेनाम फिर जगल से हानर आधा मील जाना पटा। शास्त्रीजी आश्रम में ही थे। पिछड़ी मतलब जब १९४३ में कालसी आया था, ता वह जेल में थे, और एक टूट फूट न मकान में अगोक आश्रम था। उस और बगान के लिए इस जगल में लाया गया। आश्रम में काफी जगल है, जिसमें खनी और साग-मट्ठा भी हानी है। आश्रम का काम काफी बढ़ गया है। वह हिमालय की हरिजन और पिछड़ी जातियों में सेवा का काम कर रहा है। बनौर के सबसे पिछड़े हगरग टलाके चम्बा के पागी और एन हा दूर दूर की जगहा पर उसने पाठशालाएँ हस्तगिरप और चिन्मिा स्थान स्थापित किए हैं। इस वक्त कितने ही कायकत्ता शिक्षण-गिर के लिए आए हुए थे। अगले ही दिन पिछड़ा जातियों के बड़े अपसर आने बाल थे। हम गाड़ी का माडे चार बजे ही मालिक का लौटा देना था इसलिए एन एक मिनट का फूक फूककर खच करना पड रहा था। पर, शास्त्रीजी के विद्याधिया के सामने घोडा बालना और कुछ जलपान करना अनिवाय था। चुक्लाइनजी बचारी सिवाय कुम्भ और जयकुम्भ के मुशिल ही स कही देहरादून में बाहर जानी थी। इस वक्त उह भी ल आये थे, साथ में उनकी दोना नतिनिया मधू और मुधा भी थी। अशाक आश्रम के काम से हमारी पूरा सहानुभूति थी यद्यपि उसका यह अय नहीं कि वह मज की अचूक त्वा है।

माटर से लौटकर फिर पक्की सड़क पर आ जमुना का पुल पार किया। कालसी जान की निचली सडक छोडकर ऊपर चल गये, लेकिन उधर में भी एक सडक बाजार का जा रही थी। बाजार में पहुँच। यद्यपि अब भी नालमी वारट वध पहल की तरह ही सिमक रही थी लेकिन अब की चार छ दूकानें दली। जाडा में चकरीता तहमील यहीं उठ आती है शायद उसका कारण हा। गान में देर हो रही थी और मुधा मधु भूखी थी। बाजार में एक मन्दिर के जगे पक्का चतुतरा मिला। वही खाने का डील लगान लगे। पास के दूकान वाले बडे सज्जन निकल। लाकर दरी विछा दा, लाटा और बालटी दे दी। पास ही निमेल जल की नहर बह रही थी जा शायद अगाक के नमय भी इसी तरह चलती हागी। वहीं बैठकर भाजन किया। चुक्लाइनजी तरह तरह के पक्वान बनाकर लाई थीं।

वा जम। दही भी लाना चाहती थी, लेकिन हमने कहा—दूध के म सारा दही गिर जाएगा। खर पूड़ी भी थी मीठी चौजें भी थी, नमकीन भी और इतनी अधिक कि ड्राइवर सहित हम लाग साकर खतम नहीं कर सकते थे। कपिलजी अत्र चवरीना तहसील से पैगान प्राप्त कर ग्राम सुधार के काम में अपना समय दे रहे थे, वह यही पर थे। वह हमारा प्रतीक्षा निचली सड़क पर कर रहे थे और हम दूसरी सड़क से चले जाए। लौटते वक्त उनमें मिल। खाना पीना कर चुके थे और उधर समय की भी कानाही थी इसलिए कुछ बातचीत हुई। उनसे माठम हुआ यहाँ कालसी के खेतों में भी कहीं-कहीं पुरानी बस्ती के अवशेष मिलते हैं।

लौटते समय सरकारी डेरी का भी देखना चाहते थे, लेकिन समय नहीं रह गया पर अशोक के अभिलेख को देखना तो जरूरी था। पक्की सड़क पर माटर छोड़ हम जमुना के किनारे उस शिला के पास गए जिस पर अशोक के अभिलेख हैं, और जिसकी रक्षा के लिए मकान बनाकर ढाक दिया गया है। दरवाजे में ताला लगा था, चौकीदार नहीं था इसलिए हमने बाहर ही से देखकर सताप किया। लौटते वक्त दस कदम पर एक मकान और एक गोरे चिटटे प्रौढ आदमी को देखा। उन्होंने बनलाया में कश्मीर का दरद हैं यही कारवार के सिलसिले में आया और घर बना इन खेतों को आबाद किए हैं। हम साढ़े ४ बजे दहरा पहुँच कार को लौटा दन में सफल हुए।

१६ दिसम्बर का यहाँ के एक होनहार तरुण वकील अपनी पत्नी के साथ आए। वह एम० ए०, एल एल० बी० हैं और फारसी की उच्च शिक्षा भी प्राप्त की है पत्नी एम० ए० हैं। चाहते थे पत्नी के पी एच० डी० का भी निर्देशक बनू। घर में जिन स्त्रियों को बहुत काम नहीं रहता वह यदि अपने समय का उपयोग कुछ और पढ़ने में किया करें तो अच्छा ही है। पर हमारे यहाँ की अधिकांश स्त्रियों के तो युनिवर्सिटी की डिग्रियाँ अब जेवर का काम करती हैं। जैसे उनके शरीर पर कुछ हजार के सुनहले और जडाऊ जाभूपण चाहिए वैसे ही एम० ए० पी एच० डी० भी शोभा की चीज है। मैंने उन्हें कहा कि रहींम के ऊपर आप अनुसंधान करें। रहींम सम्बन्धी कितनी ही सामग्री फारसी में मिलती है जिसमें आपने पति सहायता दे सकेंगे।

दिल्ली—उसी दिन गाम का गाड़ी पकड़ी और १७ का साढ़े ५ बजे दिल्ली पहुँच गया। रिकॉगल भया क घर पर गया। वहाँ ताला बंद था। तब तक बठा इन्तजार करना पडा, जब तक कि अघेरा दूर नही हा गया। निल्ला आना प्राणिक साहित्य सम्मलन क अधिवेशन क लिए हुआ जा बाज ही शुरू हुआ था। ५० गाबिद बल्म पत न उद्घाटन भाषण किया। फिर समापनि श्री अनन्तायनम् अय्यगर न अपना अध्यक्षीय भाषण किया। दिल्ली क दवताआ म म दा न लिल्ली क पक्ष का समयन किया लेकिन जब तक डेरी पर माप बठा है तब तक हिंदी का रास्ता कने साफ हा सक्ता था ? प्रधान मंत्री जबाना जमा खच कभा कभी द दिया करत हैं मा भी एक बार से हिंदा का यदि कुछ समयन करते हैं, ता दूमरी बार उमके विराव क लिए दूना मसाला दे देने हैं। गिदा मत्रालय ता ल्मीलिए बना है कि हिन्दी क रास्त म पग पग पर राडा अटकाए। मैं एन बाता का अपने अगले दिन क भाषण म कहा। वहा आचाय चतुरमेन शास्त्री म मिलकर बडी प्रमनता हुई। वह हमारी पीढा क हैं और मरी ही तरह स सस्कृत से हिल्ली क कथासाहित्य क्षेत्र म उतर। १८ दिसम्बर का साथी अजय से मिलन गया। यह ता मैं मुना था कि उनकी पत्नी डा० गापीचद भागव की बेटी हैं परतु मैं यह नही ममयता था कि वह मरी पूवपरिचिता भी हैं। फिर चद्र-गुप्तजा के यहाँ गया। निल्ली क्या हमार सनी जगहो के नौकरगाह जनता क प्राण घन की काई पवाह नहों करते। बरसात म बाढ आई मारिया का पानी पीने क पानी से मिल गया। स्वास्थ्य विभाग न पवाह नहा को, और अब लोगो का उमी क कारण सतरनाक पीलिया राग हा रहा था। चद्र-गुप्तजा भी पीलिया म पडे हुए थे। बुवार भीषण हा उठा था। उहाने समजा अनानी डाक्टर न अनुचित इजेकान देकर पीलिया पैदा किया। पर अब तो मालूम ही है कि पीलिया का कारण इजेकान नही था।

टाई बज सम्मलन की साहित्य परिषद् का अधिवेशन शुरू हुआ। समापनि पत्र का भाषण मैं दिया, और दिल्ली क दवताआ का वरुगी पर खूब कडवी माठी कही। यह बातें दवताआ के काना तक पहुँच नही सक्ती उमक लिए तो अग्रजी म कहा जाना चाहिए। लेकिन, मैं दवताआ पर विश्वास नही रखता मर लिए जनता सब कुछ है। हिंदा का यदि सविधान म सध

की भाषा स्वीकार किया गया, ता देवताओं के कारण नहीं, बल्कि जनता के कारण। देवता जानते थे, कि वोट माँगने के लिए हम लागा के पास ही जाना पड़ेगा हिंदी का विरोध करके हम बहुत सा बाट खो देंगे, इसीलिए देवा महादेवा सबका हिंदी के लिए हाथ उठाना पडा। और भी कितने ही हिंदी साहित्यिकों ने भाषण लिये। प० बनारसीदास चतुर्वेदी का भाषण बहुत अच्छा और विनादपूर्ण था। जने द्रजी न दगन बघारा। नरेन्द्र गर्मा भी अच्छा बोल। सभा समाप्त होान से पहले ही निकले कि लाल किले में श्रीमती सुन यात सेन के स्वागत में शामिल हा। साथी फारूकी ने जाघ घटा प्रतीक्षा भी की लेकिन देर से आया समय पर सवारी नहीं मिल सकी और जा नहा सका। दिल्ली में रहते छापने के लिए पडी आधे दर्जन से अधिक पुस्तकों के लिए प्रकाशक ढीक करना था। लेकिन, एक ही पुस्तक 'शादी (उपन्यास) दे सका जा भी लौट आई। सबसे ज्यादा उत्सुक था हिमाचल प्रदेश' और 'संस्कृत कायधारा' के लिए। संस्कृत कायधारा' के लिए माधवजी ने लाड साहब से मिलने के लिए आग्रह किया। उनके यहाँ ७ बजे के करीब पहुँचा। घंटे भर प्रतीक्षा करने पर वह आफिम से आए। पुस्तक को दिखाया। लेकिन, इस तरह के संस्कृत काव्य-संग्रह का अकादमी दूसरे विद्वानों से तयार करा रही थी इसलिए वह इसे लेने में असमर्थ थी। कितनी ही देर तक बातें हाती रही। फिर वहाँ से निकले। उनका बगला औरगजब राड पर बस स्टैंड से बहुत दूर था। उस रात को कोई सवारी नहीं मिल रही थी बडी परेशानी हुई। पछता रहा था क्या इस रात को आना स्वीकार किया? खर, मेरे साथ गिव शर्मा भी थे इस लिए हम लोगो न जाकर बस पकडी, और रात को १० बजे के करीब घर लौटे।

२० दिसम्बर को सबेरे निकला। यद्यपि हम अदुरहीम खानखाना को समाधि देखनी थी, लेकिन पास ही मे निजामुद्दीन की दरगाह भी है, जिसके भीतर अमीर खुसरो भी सो रहे हैं। आशा थी, शायद वहाँ खुसरो की कोई कुछ किताबें मिल जाएँ। किताब नहीं मिली। पता लगा पास ही में गालिव का मकबरा है। वहाँ गए। कब्रस्तान में बाकी कब्रों की तरह गालिव की कब्र भी रही होगी, लेकिन अब उसके ऊपर सगममर की मढी बना दी गई

है। हमारे एक महाकवि का यह सम्मान हुआ यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई। वहाँ से निकले। मधुरावाली सड़क पर आए। कुछ दूर जाने पर रहीम का विशाल मकबरा मिला। आकार बँसा ही है जसा हुमायूँ के मकबरे का। बीच में कई मजिदा गुम्बद और चारों तरफ के चौकार चबूतरा के नीचे मकड़ा कोठरियाँ हैं। मकबरे के चारों ओर नौ-दस एकड़ खात्री जमीन है। एक-दो साल से हिन्दी वालों ने रहीम की आर ध्यान दिया है। अब बमन स ही सही, गिफ्ता मशालय का भी ध्यान इधर कुछ आवृष्ट हुआ है। बमन से दसलिए कहता हूँ कि टूटते गुम्बद की मरम्मत का काम जिस तरह से शुरू हुआ है, उससे इस गता-दी के अन्त तक भी मरम्मत नहीं हो सकेगी। सर भूमि के चारों ओर तार लगाने का इतिजाम हो रहा है। शिक्षा मशालय भली प्रकार समझता है कि इससे हिन्दी का पक्ष मजबूत होगा। हिन्दी वाले रहीम के मकबरे को लेकर यहाँ अपना काबा खड़ा करेंगे। लेकिन काबा हिन्दी वाला ने नहीं खड़ा किया वह तो पहले ही से वहाँ मौजूद है। रहीम दिल्ली में मरे वही दफनाय गए यह हिन्दी वाला का काम नहीं है। रहीम का जन्म लाहौर में १७ दिसम्बर १५५६ ई० में और मृत्यु जनवरी या फरवरी १६२७ ई० में हुई।

रहीम न अच्छे दिन भी देखे और बुरे दिन भी। अकबर ने उन्हें जहांगीर का अतालीक (गुरु) बनाया था। उमी जहांगीर ने उनके लडके का मिर काटकर सरबुजे की सौगात के रूप में घाल में रखकर उनके पाम भेजा था। रहीम की उपेक्षा अब नहीं हो सकती यह निश्चय है। मकबरे में जड़े मगममर के बहुत से भाग को अपने नाम से बनी इमारत के लिए १८वाँ मनी के मध्य में सफ्टरजग उखड़वा ले गया। अब भी कुछ मगममर की पट्टियाँ मौजूद हैं। इमारत को देखन लायक बनाने के लिए कई लाख रुपये की आवश्यकता होगी। मगममर की पट्टियाँ फिर सभी जगह लगा उन पर रहीम के अनमोल दोहे लिखे जान चाहिए। यहाँ पुस्तकालय, रगमक बन। इसी रोजे में रहीम की मूर्ति स्थापित हो। आत्म-पाम की जमीन में फूल का बगीचा लगाया जाए। लोग यहाँ आकर साहित्यिक गोष्ठियाँ और समारोह करें। आज से ती साल बाद दिल्ली रहीम के ऊपर फूली नहीं समायेगी।

इरादा हुआ जा मिया मिलिया भी चने चलें। गिव गर्मा और मैं न

बस पकड़ी। भलेमानुम झाइबर जामिया क पास तक छोटे आया। हम ठीक समय पर नही आए थे। जामिया का छुट्टी हा रही थी। हमारे परिचित अध्यापक डा० सगमतुल्ला और दूसरे छुट्टियाँ मगाने बाहर चले गए थे। स्कूल का दफा। फिर ट्रेनिंग कालेज की तरफ गए। मक्तबा क सचालक श्री हामोद अली खाँ मिले। उन्होंने अपन कामा का दिखलाया। यहा स अभी अभी बयस्को के लिए हिन्दी म नितल विश्वकोश "शानसरोवर" की दस जिल्दा म स पहली जिल्द निकली था। पुस्तक बनी उपयागी थी, काई हिन्दी का पक्षपाती उमम कोई दाप नही निकाल सकता। हामिद अली साहब कह रहे थे—हमने आग इसका निकालना बंद कर दिया, क्योकि सम्प्रदायवादी हिन्दू सरकार के जामिया मिलिया को रुपया देकर इस काम के करन की बुरी तरह स नुक्ताधीनी करते हैं। मैंन जार देकर कहा—कम-स कम इसको बाकी नौ जिल्दो का निकालन तक ता अपन हाथ का पीछे न हटाइय। हिन्दी हिन्दुजा की बपौती नही है। कुतबन मजन जायसी रहीम ऐस दाव को झूठ साबित करत हैं। बीच की क्षतातिया म मुसलमान उदामीन रहे लकिन वह समय बहुत जल्दी आ रहा है जब मुसलमान हिन्दी के अच्छे-अच्छे कहानीकार निबन्धकार और कवि होंगे। सारे हिन्दी क्षेत्र मे मुसलमान तरण-तरुणिया हिन्दी पढ रहे हैं। उन्हें अपना उचित स्थान पान से कौन बचित कर सकता है? क्या मुसलमान हान स हिन्दो माहित्य कर भेदभाव करतेंगे? यदि कुछ सकीण हृदय एमा करना भी चाह, ता वैसा करन म ब सफल नही हाग, यह मुझे पूरा विश्वास है।

यह ठीक है कि जामिया मिलिया म अब भी हिन्दी की उपशा है और उदू को सर्वेसर्वा रखा जा रहा है। यहाँ क विद्यार्थिया म ऐस भाव पैदा किए जाते हैं जिसके कारण यहा स निकले तरुण तरुणियाँ अपने का विशाल भारतीय जाति का अभिन अग न मान पुराने पथक्त्व को कायम रखें। एक नौजवान इतिहास के प्रोफेसर ने मरी उदू "पाल्गा स गंगा" की भेंट का टुई कापी को इसलिए फाडकर फक दिया कि उसम अक्बर क एक मुसलमान अमीर की लडकी का ब्याह हिन्दू अमीर क लडक स कराया गया था। इससे सदेह और बढ जाता है। लेकिन समय तस प्रतिगामा लाग का सहायक नही हा सकता। हिन्दा जाति एक हो के रहेगी, धम चाह जा मान

या न भान । मैं समझता हूँ, जामिया व सभी लाग ऐसे अदूरदर्शी नहीं हैं । मुझे रहाम मन्बची पुस्तक के बारे में कुछ जानना था । हमीद अली साहब न पुस्तकालय नवी साहब और वापस चास्लर मुजीब साहब से मिलने के लिए कहा । नवी साहब न कुछ पुस्तक के नाम बतलाया । मुजीब साहब बड़े प्रेम से मिले । उन्होंने दा-नीन पुस्तक का नाम बतलाया, और साथ ही मरा पता लिख लिया । पीछे उन्होंने कई पुस्तक के नाम लिए भेजे ।

गाम को राष्ट्रपति भवन में म्यूजियम को देखने गम् । पता लगा, कालसी की खुदाई की इटों वही पर रखा हैं । यही थी बदावन बनजी से भेंट हो गई । यह तो मालूम हुआ सारनाथ से उनकी बदली हो गई है, पर यह नहीं जानता था कि वह कहाँ चल आए हैं । आज से २३ वर्ष पहले उनका पिता राखाल बाबू का मैन जिम उमर में हिंदू युनिवर्सिटी में दखा था, उससे भी इनकी उमर अधिक मालूम हाती थी । उस समय काम के बारे में कहने पर राखाल बाबू न कहा था— 'अब तुम लाग का काम करना है । हम तो बूढ़े हो गए हैं ।' राखाल बाबू हमार देश के प्रथम श्रेणी के इतिहासकार और पुरातत्त्वज्ञ थ । उनकी दूररी पोड़ी भी उसी माग पर धारद है । बदावा बाबू ने कितनी ही बातें बतलाइ ।

उस दिन मेरे सभापति के भाषण में जोधपुर के एक तरंग से भुलाकात हुई । वह हिंदी की गद्यकाव्य की लेखिका श्रीमती दिनेश्वरिणी चोरड्या के यहाँ ठहर हुए थे । दिनेश्वरिणी अब चारउया नहीं डालमिया हैं । अब भा साहित्य के साथ स्नेह रखता हैं, और लिखती भी हैं । तरंग न जब आरर कहा कि वह आप से बातचीत करना चाहती हैं तो मैं स्वीकार कर लिया । और २० दिसम्बर की गाम को डालमिया भवन गया । दिनेश्वरिणीजी ने साहित्य पर बात हाती हाती राजनीति पर चली गई । मैं उसके लिए उतावला नहीं था । इमा बीच में श्री रामकृष्ण डालमिया भी आ गए । मुझे कैसे भूल सकता थे ? एक मन्वे डालमियानगर में रुम पर बालने का उठाने विरोध किया था, लेकिन साथ ही दूररी रातो को सुनने के लिए वह आखिर तक मभा में बठे रह । श्रीमतीजी कह रही थी—घनी लाग मुझ में डूब रहत हैं यह धारणा गला है । मैं न कहा—'पस का मूल्य घनी लोग उतना नहीं समय सभने, जितना नि दा-दा दिन पर आधा पेट खाना

पाने वाला गरीब । श्मशान वैराग्य तो सभी को आ जाया करता है, लेकिन वह दो मिनट का होता है । धनी भी जब विपरीत परिस्थिति में पड़ते हैं, तो उनको ऐसा वैराग्य हा जाता है । 'हाल में ही डालमियाजी पर जो सफ़ट आया था उसके कारण उनके परिवार में इस तरह का श्मशान वैराग्य आना जरूरी था । अपने पुत्र का चक्रवर्ती और अपने का अगले जन्म में वही का राजा होने की भविष्यवाणी ज्योतिषिया ने की थी । डालमियाजी उसी घुन में चले जा रहे थे । अंत में जबकि उनकी पत्नियों और सन्तानों की संख्या एक दर्जन के बरीब पहुँच गई तो पासा उल्टा पड़ गया । सटटे बाजी से उन्होंने कराडो कमाया, और उसी सटटेबाजी ने आज ऐसी हालत कर दी कि उनका सब-कुछ दामाद के हाथ में चला गया । फिर परिवार क्या न चिंतित होता ? आज की सामाजिक व्यवस्था कितनी निष्ठुर है ।

२१ का फुटपाथ पर जा रहे थे । किसी ने बेला खाकर छिलका फेंक दिया था । देखा नहीं पैर पड़ा और फिसलकर गिर गए । बाँया घुटना छिल गया, खून नहीं निकला पर लाल हा गया । डायबेटोज़ वाले का तो इसी से बहुत बचना होता है लेकिन चौबीस घंटे और तीसियों दिन कितना बचे, कभी आदमी धूक ही जाता है । तुरंत पेनिसिलिन का मल्टिम लगाया । अगले दिन कानपुर पहुँचना था ।

कानपुर—पिछली रात को ही रेल पर बटे, २२ का ७ बजे स्टेशन पहुँचा । सेकेंड क्लास में जगह मिल गई । सब के पास अधिक से अधिक सामान था, जिससे रास्ता रक गया था । गाजियाबाद में श्रीमती कमला चौधरी जाइ । डब्बे में अगर एक आदमी परिचित निकल आए, तो जगह मिल ही जाती है । उनके साथ छोटी लड़की भी थी, जिसे मैं डेढ़-दा बप का देखा था । अब वह काबेट में पढ़ रही थी । पिता मर गए थे, उसी सिलसिले में कमलाजी मिर्जापुर जा रही थी । अब आयु का प्रभाव पढ़न लगा था । इधर उन्हें भी डायबेटोज़ की शिकायत है । रास्ते भर साहित्य और राजनीति की चर्चा रही । साढ़े ४ बजे गाड़ी कानपुर पहुँची । स्वागत के लिए मित्र किसी दूसरी ही तरफ़ डूब रहे थे । डब्बे में सब बाहर निकलने में काफी मुश्किल पड़ी । समया, समय बहुत बीत गया है इसी कारण कोई मित्र यहाँ नहीं पहुँच सका । प्रतीक्षा किए बिना ही कुली से सामान

उठवा कर पुल पार तंगे पर बठ सीधे मनीराम की बगिया म श्री पुरुषोत्तम कपूर क घर पर पहुँचा । मालूम हुआ, लग फलमाला लिए प्लेटफाम देख रहे हैं ।

कानपुर म जब जब आया हूँ तब-तब प्राग्रामा की बड़ी भोड रहती है । चाहे उमके कारण योडा-मा तरद्दुद हा पर इतने मित्रा स मिलकर मुझे प्रमन्नता हा रही । कानपुर की कई साहित्यिक सस्थाआ की आर से गाम का स्वागत हुआ । प्रिसिपल सद्गुरुगारण अवस्थी सभापति थे । मैं भी स्वागत का उत्तर लिया । लौटकर आने पर घर पर ही प्रगतिगोल तरण लखका की गोष्ठी थी जिसम एक-दो घटे बीत ।

२३ दिसम्बर को जुहारीदेवी और म्युनिसिपल क्या इटर कालना म मापण देना पया । इसम स जाहारी देवी म श्री पुरपात्तमजी की पत्नी श्री विमला कपूर पढाती हैं । डबल एम० ए० करने का कुछ उपयाग होना करना चाहिए यह मोच कर मुझे बहुत मन्तोप हुआ । पर पुरपात्तमजी इधर बुरी तौर स फँस गए थ । माझे म लावा का कारबार था । एक साक्षीदार के आर दतना छोड दिया कि कई वर्षों तक लेखा-जाखा नहीं किया । फिर मालम हुआ कि उहाने कई लाव के गुलछरें उढाये । एकाएक पहाड सिर पर पढा । बहुत-सी जायदात्त बेचकर देने का भुगतान किया । अब भी बतला रहे थे ५० हजार रुपया बाकी हैं । रहने का घर भी रेहन है । जितना बकन भार उतारन क लिए तरद्दुद कर रह थे यदि उतना पहले किया हाता ता यह दिन देवना ही क्या होता ? पर हमारा सयुक्त-परिवार-योजना के लिए अभी एस बडे नियम नहीं बने हैं कि उमकी नया का मँषदार म जान से पहले हा खतर का पता लग जाए । पुरुषोत्तमजी बहुत सहृदय और उदार पुरुष हैं । उनकी इस अवस्था को देखकर हम भी दु ख हुआ । उनके घर म साथी सतापी जसा कम्युनिस्ट पदा हो गया है जिसके कारण घर के स्था पुरुष भी कम्युनिजम स भटकत नहीं । पुरपोत्तमजी और उनकी पत्नी हम को अपनी आँसा दन आए हैं । वह जानत हैं नि वहाँ का जीवन सबके लिए कितना निश्चिन्त और मुख का है । हमारे प्रोग्रामा को पालन करन म पुरुषोत्तमजी हमगा अपनी कार लिए साय-माय रह ।

गाम का ६ बजे श्रीचन्द्र कौगल के यहाँ भोजन का नि - था था ।

सालो से मैंने रात के भोजन को छोड़ दिया है। इधर डाक्टरों के कहने पर कि एक ही समय पेटका पूरा भरना ठीक नहीं है उस रात पर भी वादना चाहा, लेकिन अभी अनुकूल नहीं साबित हुआ। फिर रात के बचन सौ पचास बिलोरी के भीतर रहते माग सजी खाना स्वीकार किया। अच्छा भी था, क्योंकि इसका द्वारा किसी मित्र को निराश करने से बच जाता था। कौगलजी के यहाँ साग-सब्जी तयार थी। पिछली एक यात्रा में कमला के साथ हम उनके घर पर ठहरे थे। उस वक़्त दोना भाइया और देवरानी जेठानी ने बड़ा स्वागत सत्कार किया था। कौगलजी की बीबी बार-बार पूछती थी—

कमलाजी को क्या नहीं लाये ?' मैंने कहा—एम्. ए. का अंतिम वर्ष है पढाई में विघ्न होता इसलिए नहीं लाया। कौगलजी ने टेकनालाजी से बी. एस. सी. किया था। हमारे परिभाषा के काम में उन्होंने बड़ी सहायता की थी। लेकिन टेकनालाजी की जगह वह टाले मुहल्लेवाला को इकट्ठे टेक्स के मामला में परामर्श देने लगे। धीरे-धीरे इसी ने व्यवसाय का रूप लिया और अब तो वह एल. एल. बी. हाकर पूरे मकील बन अपने व्यवसाय में काफी ख्याति रखते थे।

उसी दिन शाम का बंगाली भद्रजना की मिलनी में हिन्दी भाषा और राष्ट्रभाषा की समस्या पर मैंने भाषण दिया। छोटी सी सभा थी लेकिन सभी सुशिक्षित और सुसंस्कृत थे। उसी रात एक और साहित्य गोष्ठी में जाना पड़ा, जहाँ वानपुर के साहित्य राजनीति पित्तमह श्री नारायणप्रसाद अरोडा और कुछ वानपुर के कराडपति भी मौजूद थे। देर तक साहित्य चर्चा रही।

२४ दिसम्बर का सबेरे ९ बजे से रात के १० बजे तक पांच जगह व्याख्यान देने जाना था, जिनमें एक डी. ए. बी. कालेज के पास्ट मैजुएट छात्रों के सामने था। एक स्तरवाला थाताआ के सामने बोलने में मूय बहुत सुभीता होता है और अनक स्तरवाला के सामने दिक्कत। इसका कारण यही है, कि मैं थोताआ का देखकर वोग्ता हूँ। व्याख्यान का जस तस थोताआ के सामने थाटना नहीं चाहता। उस दिन दोपहर का भोजन श्री खेतानजी के यहाँ हुआ। खेतानजी मारवाडी हैं। उन्होंने प्रगतिशाल साहित्य के प्रचार और प्रकाशन का काम अपने करट बुक डिपार्टमेंट द्वारा किया है।

पुस्तक विषय और प्रकाशन के व्यवसाय को भारवाडी व्यवसायी पसन्द नहीं करते। इसमें मिमट कर बूढ़ जमा होती हैं और उन्हें चाहिए तुरन्त बने बने नफे, जिसमें दो चार घण्टे में दो-चार करोड़ बनाय जा सकें। उनका सामन अपने उगाहण भी काफी है। फिर खेतानजी तो साधारण प्रकाशक नहीं, बल्कि प्रगतिशील साहित्य के प्रकाशक हैं जिसमें और भी कम लाभ होने को गुज़ाइन है। अपनी प्रगतिशीलता को उठाने के व्यवसाय के तौर पर ही नहीं दिखाया बल्कि अपनी जाति का भी चल्नज दिया। उनकी पत्नी मुस्लिम मानी और हिन्दू पिता की सत्तान हैं। भारवाडिया के लिए यह जितना बड़वा घूट है। तरुण की हिम्मत रितनी प्रगमनीय है इस कहने की आवश्यकता नहीं। उस दिन रात का साय भाजन था ललितकुमार अवस्था के यहाँ हुआ। पहले ललितजी सम्पादक थे। वह अनिश्चित काम था, इसलिए अब वह कालज में प्रोफसर है। यह काम साहित्य साधना में सहायक है। उनकी बच्चा मानी अब भी जीवित है। उन्होंने दीवार पर टापा बना रखा था। पूछने पर मामूम हुआ कनोजिमा में भी बहाई की पूजा हाता है। भाजपुरिया में न दक्कन में समझ लिया था कि यह सिर्फ पश्चिमी उत्तर प्रदेश और राजस्थान की चीज है।

२५ दिसम्बर के बड़े दिन का भी मवेरे ६ बजे में रात तक सभाका का ताता रहा। एक जगह राष्ट्रीय सेवा सघ के काप्रेसी तरुणा के सामन सप्ताह उत्पत्ति पर जीव अनिम गाष्ठी में तिद्यन की गोजा पर बोला। यहाँ सयोग से श्री दवी प्रसाद शुक्ल (प्रयाग विश्वविद्यालय) भी मिला। ८० वष के कराव पहुँच कर भी अभी वह काफी तन्दुरुस्त है।

उस दिन दापहर का भोजन श्री जगन्मवाप्रसाद हितपी के महा हुआ। कायकुञ्ज ब्राह्मणा का भाजन था, जिसमें मास की प्रधानता थी। गाम को श्री बरगा कपूर के यहाँ साय भोजन हुआ। पिछली बार कलाशजी अर-त्रिण न अनय नक्त मालूम हुए थे पर अब रमण मर्हिप के धे। दातों ही महापुरुष अब ससाण छोड़ गये हैं। "भारत में ब्रिटिश राज्य के सस्थापक" पुस्तक का प्रकाशन करन के लिए श्री खेतानजी ले गय। एक भार ता कम हुआ। उसका कुछ भागों का दाहरा कर यही द दिया।

प्रयाग—२६ दिसम्बर को पौन ५ बजे सजरे ही पुरुपात्तमजी हमे

स्टेशन ले गये। सवा ५ बजे ट्रेन आई। पहले दर्जे का एक छोटा-सा कम्पाट मट मिला। अधेरे-अधेरे ट्रेन रवाना हो गई। इलाहाबाद जिले में घुस गए थे, जब कि मनौरी के पास कहीं पर मिटटी की छतों का स्थान खपड़ला ने लिया। मेरे लिए यह भेद काफी महत्व रखता है, क्योंकि मिटटी का छतों का आरम्भ रूस में उराल पर्वतमाला में गुरू होते मैंने देखा था।

स्टेशन पर श्रीनिवासजी डा० उदयनारायण तिवारी श्री वाचस्पति पाठक, श्री जयगोपाल मिश्र और दूसरे मित्र मिले। वहाँ से हम श्रीनिवासजी के घर पर पहुँचे। भोजनोपरान्त पहले सम्मेलन मुद्रणालय में छपाई की गतिविधि देखन गए। आजकल प्रेस सम्मेलन परीक्षा-सम्बन्धी कागज छापने में अस्त व्यस्त था। जा गेली प्रूफ हमने देखकर लौटाया था उसका संपोषण भी नहीं हो सका था। यह जानकर सतोष हुआ कि पुस्तक आग पक्ष की जा रही है। श्रीनिवासजी के यहाँ देखा, कि 'काल माकम' के १८ पाम छप चुके हैं। संस्कृत काव्यधारा' के छापने में वह हिचकिचा रहे थे लेकिन पीछे स्वीकार कर उन्होंने सम्मेलन मुद्रणालय में छपाना मजूर किया।

कमला की चिट्ठी पाकर चिन्ता हुई। हेपी वेली में रतिलाला के यहाँ चोरी हो गई और चोर बराबर आ रहे हैं। मंगल परीक्षा देने देहरादून चले आए थे। उस वक्त भरोसा केवल भूत का था। कमला रिवाल्वर को हाथ नहीं लगाना चाहती थी। अब लिखा था— मुझे उसका अपसोस हो रहा है। बंदूक और रिवाल्वर दोनों को अलमारी से निकाल कर चारपाई के पास टाँग रखा है। मैंने लिख दिया— 'कल्याणसिंह के जिम्मे बगल को लगाकर तुम देहरादून या अमृतसर चली जाओ।

अगले दिन सम्मेलन मुद्रणालय में गुठेजी से मुलाकात हुई। उन्होंने 'मध्य एशिया का इतिहास' को जनवरी तक निकाल देने के लिए कहा। मुझे सतोष क्या होने लगा जब कि मैं जानता था, कि प्रसवाले, जितना ही जल्दी निकालने के लिए कहेंगे, वह उतना ही देर करेंगे। उसी दिन निरालाजी से मिले। स्वास्थ्य बुरा नहीं मालूम हुआ वस आयु का प्रभाव तो था ही। आजकल वह सिर्फ अंग्रेजी में बात करते थे। कुछ देर बात करके मैं वहाँ से उठा तो वह भी बाहर निकल आए। फोटो लिए और नमस्कार

करके विग्न हुआ। भाजन डा० तिवारी के यहाँ था। पुराने जमाने की बुटिया को कुछ हजार लगा कर उहाने नया रूप दे दिया है। अब वह प्राफेक्टर क रहने लायक है। पीछे थोड़ी सी साग-सब्जी की जगह भी निकाल ली। लेकिन, यह जानकर चिन्ता हुई, कि मालिकोस बोर्ड कागज-पत्र उहाने नहीं लिखवाया।

२८ को सबरे म्युनिसिपल म्यूजियम देखन गया। श्री सतीशचन्द्र काला ने सभी चीजें दिखलाई। म्यूजियम का अब अपना भव्य भवन बन गया है। मैं पहली बार आया था। अभी स्थान अपर्याप्त है, और पास में कुछ और इमारतें बन भी रही हैं। पुराने खड्डिन कलापूण दबता जुट जाने चाहिए वह अपना भवन अपने बनवा लेते हैं—इस बात की यथायता मैं न यदा दखी। यह सुनकर अपसास हुआ कि इसी जिले में अवस्थित कौगाम्बी की सामग्री यदा नहीं जमा की जा रही है। उसमें से कुछ लखनऊ भी जाय इनमें हरज नहीं, लेकिन, उम सामग्री का देखे बिना जा लाग कौगाम्बी देखेंगे, उनको घाटा हागा।

उसी दिन पतहपुर जिले क एकडला के श्री आमप्रकाश राउतजी ने अपन पूवजा के सगहीत चित्रा को दिखाया। इनमें से कुछ चित्र बहुत ही सुन्दर हैं। राजा मानसिंह कछवाहा का चित्र उनमें से एक है। राग-रागनिया के दो सेट हैं जिनमें से एक बहुत ही सुन्दर है। एकदंग जसे और भी गुमनाम स्थान हमारे देश में और घर हा सकते हैं जहाँ पुरानी बहुमूल्य सामग्री सुरक्षित है। कुतबन की मगावती 'और मयनकी मधु मालता' भी इनके सग्रह में मिली हैं। वहा कितनी ही सस्कृत की हस्त-लिखित पुस्तकें भी हैं। मैंने सलाह दी कि इन चित्रा का दिल्ली के राष्ट्रीय चित्रालय में भेजना चाहिए तभी ये सुरक्षित रह सकत हैं। ये राउत लोग एक विशेष जाति के हैं। इनके रीति रवाज राजपूता की तरह हैं लेकिन उनके साथ ब्याह गादी नहीं हाती। सबके गान काय्यप हैं। एक गोत्र ही में ब्याह करना पडता है सिफ एक मूलस्थान का परहज करत हैं।

कुछ दर के लिए श्री श्रीकृष्णदासजी के घर पर गय। उनकी बीबी ने मट्रिक पाम कर लिया है और एफ० ए० में बैठ रही हैं। मैं इसका श्रेय श्रीकृष्णजी को देना चाहता था, लेकिन मालूम हुआ, कि पति से पडने में

कोई प्रारंभिक नहीं मिला। सामुच्च हो पत्नी ने हिम्मत का काम किया था। मध्याह्न भोजन के लिए श्रीगणेश पाण्डे व यहाँ आए। मांस और मछली दोनों बलियाटिक डेग से बन थे। फिर वही के राधारमण कालेज फिर जगदाल इन्टर कालेज में व्याख्यान लिये। लौटते वक्त डा० वदनाथ प्रसाद व यहाँ गए। बड़ी लडकी और लडके का ब्याह हुआ था छोटी लडकी जरणा का ब्याह २३ जनवरी को हुआ जा रहा था। डाक्टर साहब का आग्रह था और मैं भी बहुत चाहता था लेकिन आगे के प्राप्रामा के कारण फिर लौटकर आने में असमर्थ रहा। यह ब्याह और डा० वदनाथ प्रसाद का परिवार नये भारत के निर्माण का महत्वपूर्ण काम कर रहा था। सिर्फ बड़ी लडकी का ब्याह अपनी जान में हुआ था पुत्र और छोटी पुत्री न जात पात और प्रात प्रत्य की सीमाएँ तोड़ डाली।

उस दिन गाम का पार्टी आफिस में गाण्ठी हुई। नागाजुन ने अपनी कविता सुनाई। तरण पण्डा ने बुंदेली के बहुत सुंदर गीत गाय।

२९ दिसम्बर को सरेरे पहुँचे डा० भगवतशरण उपाध्याय के पास गया। उनका पिता का शरीर सूख गया है पेट में कामर है। चल फिर रहे हैं और परिवार की गाड़ी खींचे जा रहे हैं। भगवतशरणजी यही कुछ काम कर रहे हैं। यन्त्रि हिंदी विश्वकोश का प्रधान सम्पादक मुझे बनना पडा, ता उनकी जरूरत में सरेरे अधिक समझता। लेकिन, अभी तो वह केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के कारण पटाई में पडा हुआ था। उस दिन मध्याह्न भोजन डा० वदनाथ प्रसाद के यहाँ हुआ। भोजन करते वक्त चार-चार लक्ष्मीजी यात आती थी। इस घर में महीना नहीं ता हफता और न जाने कितना वार में घर की तरह रहता, लक्ष्मीजी भोजन कराया करतीं। जब सदा के लिए वह इस सूना करके चली गयी।

गाम को निराला परिपद का जार स गाण्ठी हुई। प० लक्ष्मीनारायण मिश्र, गिरीशजी और दूसरे मित्रा के साथ सयोग से श्री श्रीनारायण चतुर्वेदी भी पहुँच गये थे। मिश्रजी ने अपने गाँव के प्राचान अवशेषा के बारे में बतलाया जिसमें मालूम हुआ कि आजमगढ में न जान किन्तु महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थान अनुसंधानकर्ताओं की प्रतीक्षा कर रहे हैं। सम्मेलन में बगडे के कारण गतिविराध हो गया था। इससे हिंदीभाषी

क्षेत्र व साहित्यकारों का सम्मेलन के अवसर पर मिलकर विचार करना रुक गया था। अब की उसी तरह का एक सम्मेलन वर्धा में होने जा रहा था। वहाँ पर प्रहलद-स मित्रों से भेंट होगी यह ख्याल कर मैं भी चलना स्वीकार कर लिया।

वर्धा—उस दिन साढ़े ७ बजे रात का बागी एक्सप्रेस पकड़ा। यद्यपि भीड़ था पर ऊपर बिस्तरों का विचार नहीं किया गया था इसलिए सान का आराम था। शो ट्रेन से प्रयाग में कुछ और मित्र भी जा रहे थे लेकिन उस वक्त पता नहीं लगा। ३० दिसम्बर का ७ बजे मवेरे हमारी ट्रेन इटारसी पहुँची। यहाँ से ग्राहक टुक पकड़ना थी। श्री ओमप्रकाश (राजकमल) श्री ज्योतिप्रसाद निमल और तीन चार और साथी वर्धा के लिए मित्र गये। गाड़ी में बड़ी मुश्किल से जगह मिली। मैं और ओमप्रकाशजी अपने सामान का सनिका से भरे एक बम्पाटमट में रखकर दूसरे डब्बे में चले गये। डाइनिंग कार में मध्याह्न भोजन करते कुछ समय बिताया। सामान भोजन सब स्पष्ट में बुरा नहीं था। अब अपने सामानवाले डब्बे में जाय। सनिका सभी शिक्षित और मद्रासी थे। कश्मीर से छुट्टी पर जा रहे थे। सभी अप्रजा जानते थे, और उत्तर में रहने हिन्दी भी बोलते थे। सनिका में अवश्य भारी अंतर आ गया था। उनमें बहुत भद्रता देने में आई। मुमकिन है शिक्षित होने के कारण ही।

अमल के पास टोकरीया में भर कर नारंगिया विक रही थी। वा स्पष्ट में ६५ का टोकरी हमने भी खरीद लिया। आध घंटा लट रहकर ट्रेन वर्धा पहुँची। स्वयंसेवक वहाँ तयार मिले। पहले तो डर लग रहा था इस भीड़ में सामान कम निकालेगा दरवाजा खुलने का रास्ता ही नहीं था। लेकिन निकालना तो जरूर था, किसी तरह बाहर निकलें।

हिन्दीनगर पहुँचे। डा० उष्यनारायण निवारी, डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी, डा० रामदुमार वर्मा डा० नगद, डा० दारय ओना श्री बलदेव नारायण मिश्र आदि बहुत से साहित्यकार आये हुए थे। मरठ से प्रेमदा भी अपनी पत्नी के साथ पहुँचे। हम एक ही कमरे में ठहरा। अब की भी ममिनि के मकाना में बूढ़ि हुई थी। तासकर के कमरे नये थे, जिनमें प्रतिनिधि ठहराये गये थे। तम्पू भी पडे थे। वही बनला के पास उमरपुर के तिवारीजी

चाड़ू के एक वृद्ध सेठजी के पास आये। दोनों साहित्य से अनुराग रखते हैं। सेठजी आयसमाज के भक्त हैं। उसके लिए वहाँ काफी खर्च करके सस्या कायम की है। तिवारीजी अपने गाँव की बालें बतलाते हुए वाले—अपनी जीविका का साधन यही हो गया है, इसलिए कभी दो चार साल में घर चला जाता है।

३१ दिसम्बर को सम्मेलन की विषय निर्धारिणी की बठक हुई। एक प्रस्ताव इस विषय का भी स्वीकार किया गया कि सम्मेलन के सम्बन्ध में सरकार एक विधायकानून बनाये। वही बम्बई प्रवामी श्री माधवाचाय से मुलाकात हो गई। मुझे क्या किसी भी आदमी को बात सुनने से शुरू शुरू में यही मालूम होगा, कि यह आदमी बहुत हल्का है। इस बात की जाशका माधवाचाय अपने ही बहुत सी सटी सच्ची बातें करके बड़ा दते हैं। लेकिन कुछ समय की बातचीत से मुझे मालूम हो गया कि इस पुरुष ने संस्कृत के दान का गम्भीर अध्ययन किया है। ऐसे पण्डिता में स हैं, जिनकी संख्या दिन पर दिन कम होती जा रही है। ब्रज में जे भे भे, फिर काँची के प्रतिवादी भयकर गुरु के पण्डिता में रहे। जगल दिन फिर मैंने दिल खालकर बात करने का निश्चय किया था, पर मालूम हुआ वह सवेरे ही चले गये थे। मुझे बहुत अफसोस हुआ। उनकी विद्या का जसा उपयोग चाहिए वैसा नहीं हो रहा था। बम्बई में किसी कालेज में संस्कृत पढा रहे थे।

अपराह्न अधिवेशन में प्रस्ताव पास हुए। यह आशा रखी गई थी कि प्रयाग सम्मेलन के विराधी दल के लोग यहाँ आएँगे और उनसे मिलकर कोई रास्ता निकाला जायेगा, लेकिन उनमें से कोई नहीं आया। सभापति श्री द्वारिकाप्रसाद मिश्र थे। अधिवेशन बहुत सफल रहा। उसका अंत के साथ यह सन् भी खतम हो रहा था।

इस साल भरे कार्यों में 'लेनिन', बचपन की स्मृति' और 'सरदार पृथ्वीसिंह (द्वितीय संस्करण) प्रकाशित हुए। विस्मृत यात्री और 'माक्स' करीब करीब छप चुके हैं। "संस्कृत पाठशाला और 'संस्कृत कायधारा' लिपिकर तैयार है। 'शादी' और 'भारत में जन्मी राज्य का संस्थापक' प्रेस में है। समय का उपयोग किया यह जानकर सतोष हुआ।

छोटी सी यात्रा

१ और २ जनवरी को वर्धा ही में रहना पड़ा। वर्धा में आकर सेवाग्राम की यात्रा करनी आवश्यक हो जाती है। १ तारीख को सुबह ७ बजे श्री हरिहर गर्मा (मद्रास) के साथ मोटर से ९ बजे हम सेवाग्राम पहुँचे। बापू की कुटिया सूनी थी पर वहाँ जहाँ-तहाँ साइनबोर्ड लगा दिये गए थे।

साढ़े ८ बजे महिला आश्रम का छात्राश्रम बालना पडा। पिछली यात्रा में छात्राश्रम की सख्या कम थी लेकिन अब ५० ट्रेनिंग पानवाली तरणिया के भी हो जान से उनकी सख्या ११२ हा गई थी। ट्रेनिंग पाने वाला का २५ रुपये मासिक छात्रवृत्ति मिलती है। गांधीजी की प्रेरणा से भारतीय सांस्कृतिक वातावरण में लड़कियों को शिक्षा दान के लिए यह सस्था कायम हुई थी। बजाजरी और उनके परिवार का इसकी स्थापना और सहायता में बड़ा हाथ रहा। मैंने भारतीय संस्कृति पर ही बालना आवश्यक समझा और बतलाया—हमारी संस्कृति कभी एकांगी, आस्तिक नहीं रही। यदि उसमें परमभक्त पैदा हात रहे तो परमनास्तिक भी हात आए हैं। संस्कृति काई पत्थर की लकीर नहीं है बल्कि नदी का प्रवाह है जो सदा प्रति क्षण बदलता रहता है।

घरलन समय एक सीढी बाकी थी का ख्याल नहीं किया और अगूठे में चोट लगवाकर खून निकलवा लिया। डायबेटीज में यह बुरा है और बुरी चीज सबसे पहल आ उपस्थित हाती है।

बमला का ध्यान कलिम्पांग जाकर रहने का हो रहा था। उनको हा लम्बे काल का पार करना है इसलिए रहने के द्वार में उनकी राय का ख्याल करना सबसे जरूरी है। आनंदजी अब अविवाश कलिम्पांग में ही रहते हैं। वे बतला रहे थे, यहां सांग-सजी दार्जिलिंग से भी ज्यादा महंगी मिलती हैं। लोगो में भारी धकारी है सम्पत्ति का मूल्य गिर गया है। सम्पत्ति का मूल्य तो और भी गिरेगा बेकारी और भी बढ़ेगी क्योंकि ल्हासा और तिबत के व्यापार न कलिम्पोंग का बसाया था। जब ल्हासा से जा माटर-सडक टोमो (चुम्बी) उपत्यका के छोर तक बनकर आई है, वहां गन्ताक से करीब पडता है। अभी भी दोनो तरफ की मडको के छारा के बीच में दो ही तीन दिन पैदल का रास्ता है जिसे और कम किया जा सकता है। माल के लिए डाढ़े पर रोपवे लगा दी जाए, तो कोई जचरज नहीं। न भी लगे तब भी अब आयात निर्यात का द्वार कलिम्पोंग त्ही बल्कि गन्तोक हागा। पीछे मणिहपजी से मालूम हुआ कि अभी ही भारी किंतु अपेक्षा बृत्त कम दाम वाले माल को गन्तोक से ल्हासा भेजा जा रहा है। कीमती माल के आयात निर्यात करने वाला को अपन कलिम्पांग के घरा को भी

देवता है, और रागे पर जाने पर दाम में एक-दो पैसे का अन्तर पटता है जिसकी व पवाह नहीं करत। तो भी आधुनिक यात्रायान का जिनना सुभीता गन्ताक का प्राप्त है, उमर कारण खरीदत उचन वान भी दाना तरफ स वहाँ ज्यादा पहुँचेंगे। यह सुनकर आश्चर्य नहीं होगा कि कुछ ही साला बाद कल्मियाग की नामलम्बी भागकर गन्ताक चली गई।

उसी दिन ३ बजे मरी अध्यक्षता में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की बैठक हुई। वस्तुतः इसी के लिए मैं एक दिन ठहर गया था नहीं तो कल ही और मिया के साथ चला गया हाना। श्री मोहनलाल भट्ट दुवारा मंत्रा चुन गए। वज्रट छोट दूसर सब निश्चय कर लिय गए।

मऊ छावनी (मालवा) के श्री वज्रनाथजी वहाँ के यागिराज मठ की हरीकत बनता रहे थे। पहले यागिराज के पान आममान से छपर फाड कर सम्पत्ति आता थी। वह कई साला में लगता का मन्दिर बनावा रहे थे जिनमें इतायिन सगममर लगता था। हरक वान ता रहस्यमय रखी जाता थी। पर बहुत जिनतर रहस्यमयता रचना मुश्किल है, और यागिराज अरवि या रमण मठपि की तरह साधन और साधक सम्पन्न भी उतन नहीं, इसलिए धाक दूकान से काम न हात दवा उहान खुला साद का भी काम गुरु कर दिया है। धर्मों में हर दग को सम्कृति की बड़ी सेवा का लेकिन सबम बडा पाप उसका यहा दूकानों और इनके सेठ हैं जो जाता म पूल पाकर दुनिया का भड बनाना चाहते हैं।

प्रयाग—३ जावरी का नाडे ७ बजे सबर ही हम स्टेशन पहुँच गए। गाड़ी रुट थी। दिन भर चलन में कोई दिक्कत नहीं थी पर इटारसी में प्रयाग रात को चलना था। पिछली बार जिस मुसीबत का सामना करना पडा था उसका कारण यही समझा कि टिकट प्रथम ध्रैणो काल लिया जाए। ग्राण्ट एक दूर से आन बागी ट्रेन थी, जा यान स साथे इटारसी ल जाता। गगह अच्छी थी। नागपुर के रितन ही हरिजन कायबता बड़ी आगा रखत थे कि मैं वहाँ एक दिन के लिए उतर जाऊँगा। पर समय की कमी थी। ट्रेन में टा० अम्बेडकर के अनुयायी अनक तरण आए जा अगती कैंगण पूर्णिमा के समय अपन नता के साथ लावा का मन्दा में बौद्ध बनन बाल के। उनका आग्रह को टुपराना वहाँ मुश्किल था, लेकिन मजबूरा

थी। उन्होंने एक टोकरा नागपुर का सन्तरा लाकर रख दिया। इस वक्त सन्तरा का मौसम था।

शाम का ६ बजे इटारसी पहुँचा। यहाँ से वाणी एक्सप्रेस पकड़ना था, और तीन घट प्रतीक्षा करनी थी। ट्रेन के बन्द न बतलाया प्रथम धणी म भी जगह मुश्किल न ही मिलेगी। गुनाह बलज्जत ता नही हागा। पर अब तो पहले दर्जे का टिकट ले चुका था। प्रतीक्षालय म लोग भरे हुए थे। एक जेटलमत जोर उनकी लेडी अपने बक्से क पास की कुर्मी पर बैठे थ जिनकी लडकी जया की उमर की ही थी। उसने तोतली हिन्दी बिल्कुल वैसे ही निकल रही थी। यह बराबर जया का याद दिला रही थी। अपरि चित व्यक्ति स लजाना बच्चा का स्वभाव है। जान पड़ता है बच्चे एक ही तरह से सीढ़ियों का प्यार करते है यदि उनकी जानुबशिक मानस सम्पत्ति एक जसी हो।

८ बजे वाणी एक्सप्रेस आया। चार सीट का एक कम्पाटमेन्ट खाली था और चढ़ने वाले तीन ही थे। एक सीट आगे भरी। मानिकपुर पहुँचते पहुँचते ६ बजे सवेरा हा गया। रात को सोने का काम खतम हो गया था इसलिए यदि डब्बे म सोने की गुजाइश न हा ता इससे कोई फक नही पड़ता था। साठे सात बान गाडी स्टेशन पर पहुँची और रिक्शा ल में श्रीनिवासजी क मकान म पहुँच गया। कमला की तीन चिट्ठिया मिली। यह गिवायत स्वाभाविक ही थी कि उनके पास लिखी गई मेरी चिट्ठिया बड़ी हानी चाहिएँ उनम ज्यादा बात रहनी चाहिएँ। यह कठिन भी नही था, क्याकि अपनी यात्रा मे से ही कितनी ही चीजें मैं लिख सकता था लेकिन हर वक्त तो सभाआ, गाण्डिया और मिना का ताता रहता था। वाड नापमद होने से मैंने छ पस का पत्र लिखना शुरू किया था लेकिन उसम भी रुचि की बातें अधिन नही लिख सकता था।

श्रीनिवासजी से त हुआ था कि मैं रायल्टी २० सक्डा स कम करक १५ सक्डा लूगा और वह ५०० रुपया मासिक रायल्टी म से अग्रिम देत रहेगे। जब तक रायल्टी छ हजार सालाना नही हो जाती तब तक उन्हें अवश्य अधिक देना पड़ेगा, जिस वह आगे काट लगे। उहे आशा थी, दा एक बप म रायल्टी उतनी मिलने लगेगी। मसूरी म पाच सौ रुपय मासिक

औसतन खच जम्पर आ जाता है। एक यह भी कारण था जिससे कमला का कलिम्पाग जाना मुझे पसन्द था। वहाँ गायद तीन सौ रुपये में काम चल जाता। दुनिया की आज की व्यवस्था विशेषकर साम्यवादी देशों के बाहर, ऐसी है जिसमें निश्चित जीवन विताना मुश्किल है। आर्थिक चिन्ता स्वाभिमानी और अनेक मित्रों वाल आदमी के लिए सबसे मुश्किल है।

उम दिन रात को श्री अणोक (जमुनाप्रसाद वैष्णव) के यहाँ गाम को भोजन के लिए गया। भोजन तो स्टाच रहित साग पात ही थोड़ा सा मैं गाम का करता हूँ लेकिन वहाँ अनेक पवतीय माहित्यिक मित्रों से मुलाकात हुई।

१ जनवरी को नागाजुनजी आए। वह एक उपन्यास के लिखने में लगे थे। प्रकाशक न पिजरे में बदल कर रखा था ताकि समय पर वह पुस्तक का समाप्त कर सकें। मैंने सोचा था मस्कृत काव्यधारा 'वही' लिखेंगे। कई सालों की प्रतीक्षा के बाद जब उस नहीं हाता देखा तो स्वयं ही हाथ लगाना पड़ा। "पालि काव्यधारा" के बारे में भी किमी दाता को डूब रहा हूँ देख वह मिलता है या उस भी अपने ही करना पड़ेगा।

उस दिन सवेरे श्री रामनाथ त्रिवेदी आए। पचायती चुनाव हुआ था जिसकी बातें बतला रहे थे। कह रहे थे—बड़ी जात वाला ने बड़े छल बल से अपने प्रभुत्व को कायम रखना चाहा। लेकिन, बार बार बहुजन को धाया कैसे दिया जा सकता है? उसी दिन महादेवीजी के महिला विद्यालय में भी गये। डढ़ घंटे तक वही साहित्य और राजनीति पर बातें होती रही। अपनी परशानिया का बतला रही थी। प० सुन्दरदास की तरह महादेवीजी भी काजी जी दुबल गहर के अदक्ष के फेर में पड़कर साहित्यकारा को सहायता पहुँचाना चाहती है। सभी अपनी अपनी इच्छाओं को लेकर आत हैं। महादेवीजी के पास अण्य भण्डार तो नहीं है। यदि किसी की इच्छा पूर्ण नहीं हानी तो वह विरोधी बन बैठता है। ऐसी भी हैं जो उनका टाल बनाकर अपना काम सिद्ध करना चाहत हैं, जिसकी वण्णामी भी उनके ऊपर पहुँचती है। लेकिन वह अपनी आदत से मजबूर हैं। अब उमर भी ऐसी आ गई है जबकि ठोकर खाकर सीखना मुश्किल है। आत्मी कटुवा ता नहीं है जिस वक्त चाहे सिर हाथ बाहर फैला द और जिस वक्त

चाहे भीतर सींच ले। बड़ा हुआ व्यक्तित्व अनेक खूटिया म बँध जाता है जा जादमी क मान से बाहर की हाती हैं। उस दिन शाम को ६ बज थी पतिरायजी के घर पर चाय और गाण्ठी हुई। श्रीपतिराय बड़े 'यावहारिक' है हा बुरे अर्थों म नहीं। इसकी पहचान ता उनकी सवारी ही बतला रही थी। उन्होंने एक ऐसी छोटी टक ल रखी थी, जिसम झाइवर की सीट पर दा जादमिया को और बठा सकत थे और पीछे सात आठ मन मामान आमानी से रख सकत थे। बतला रहू थे मैं परिवार का लडर पहाड पर भी इसस हो आया हूँ। हाँ, व्यवसायी का ऐसी ही सवारी चाहिए। वह दा माटरा का काम एक से ले रहू थे। गोण्ठी म कवि श्री सी० वी० राव, डा० भगवतशरण उपाध्याय और दूसरे कितने ही नवयुवक साहित्यकार आये थे। साहित्य पर हा हमारी बातचीत होती रही।

धनारस—धनारस प्रयाग स छाटी बड़ी दाना लाइन जाती हैं पर म बराबर ही छाटा लाइन स आया-जाया करता हू। शायद इसका कारण ट्रेना क समय का अनुकूलता है। लेकिन जाजबल ता अनुकूल नहीं थी। ट्रेन ५ बजे जधेरा रहन रवाना हान वाली थी इसलिए साडे ४ बजे ही स्टेशन (रामबाग) जाना जरूरी था। जब ५ बजने मे आघा घटा रह गया ता श्रीनिवासजी के झाइवर की जागा छान्नी पडी। उसका जरूरत भी नहीं थी, क्योंकि मरी शका निमूल साबित हुई और जानद भवन के सामन कई रिक्शे उस समय भी खडे थे। स्टेशन पर पहुचा। ५ बजकर १० मिनट पर गाडी रवाना हुई। 'सस्कृत नायघारा के प्रकाशित करन की मुझे सबसे ज्यादा चिन्ता थी। श्रीनिवासाजी न उसे ले लिया और गुण्ठेजी न सम्मेलन मुद्रणालय म छापना भी स्वीकार कर लिया था लेकिन छपाई क मोल भाव क ठीक हान म काफी समय लगा। तो भी मैं उसने सी पृष्ठ द चला था। ट्रेन क बाहर देख रहा था—सरसा मटर फली हुई है आलू की फसल भी तैयार होन लगी है। दहात म भी बिजला क खम्भे पडे देखकर आश्चय करन की जरूरत नहीं थी। हमारे उत्तर प्रदेश और बिहार के बहुत भाग की समस्या सिंचाई है। जब तक जमीन के नाचे बहती गगा का ऊपर नहीं लाया जाता, तब तक हर दूसरे तीसर साल फसल की भारी क्षति का रोगा नहीं जा सकता। ट्यूबवेल जारी करने क लिए बिजली की

वनी जरूरत है। यह विजली सिर्फ उसी न खच हागी क्याकि जैसी गरीबी हमारे गाँवा म है, उसन कारण गावो म शायद एक-दा घर ही विजली लगाना पसन्द करें।

स्टेशन पर श्री सत्यद्रजी क पिता और प० दवनारायण द्विवेदी मौजूद थ। सत्यद्रजी के पिता की फ्रेंच बट दाढा बनला रहो थी, वह प्राचीन-पयी नही है। और पीछे ता उनके साहित्यिक विचार भी बहुत उदार मालूम हुए। सोघे सबा उपवन पहुँच। सत्यद्रजी का अपन प्रस क काम क लिए उसी दिन बलकत्ता जाना था लेकिन उनन अनुज और घर की शिक्षित महिलाएँ मौजूद थी। जाकर पहल स्नान भोजन किया। सत्यद्रजी क दाना वहनाई सनिक अपसर हैं एक लफिटनट बनल जोर दूसरे कप्तान। कप्तान साहब अपनी पत्नी के साथ इस वकन समुराल म आग थ। बनिए फौजी अपसर हा यह आश्चय की बात हागी। पर भारत का ऐस अलग-थलग रहन वाले न बनिया की आवश्यकता है न क्षत्रिया की न और किसी की। वह पुराना बटघरा पढ़े भी कायम नहा रह सका जोर अब तो गाल से लटकर बट वच ही नही सकता। आखिर अग्रवाल तो आज स डेन ही हजार बप पहल दुघप जयमत्रगाली योघेय क्षत्रिय थ। उनक गण राय का नाग हुआ। उनक पुनरुज्जीवित करन की कोई सम्भावना नही रह गई फिर आग्नेया और उनके दूसर वधुआ ने तलवार का जगह तराजू पकड लिया। अब यदि वह तराजू का फिर तलवार स बदल, ता इसम कहन की क्या बात है? काश भी पगा किसी की बपीती नही है। जिसकी भी उसक विषय म रुचि और क्षमता हा, उस करना चाहिए।

बनारस में सत्यद्रजा क आतिथ्य म क सुभीत भी हैं। घर म आत्मीयता मालूम हाती है। यद्यपि सत्येद्रजी की पत्नी और उनकी देवराना सुमस्कृत मुशिक्षित महिला हान स मुठ मुनना चाहती हैं और यह मर लिए उनक आतिथ्य स उच्छेण होन का भी अच्छा अवसर है लेकिन बराबर कोई न काई मित्र आय रहत हैं या मुजे ही दान करन क लिए उनक स्थाना म लाना पड़ता। इसलिये मैं अपने श्छेण का अदा नही कर पाता। उस दिन ३ बजे मोटर स निकला ता पहल अस्माघाट पर जगन्नाथ मन्दिर म गया। बचपन की एक उडान के दा-तीन दिन क साथी पुजारी दगारयजी मिल।

उनके सारे बाल सफ़द और बुलापे की पूरी पकड़ में आ गए थे। उनका बड़े भाई अब इस दुनिया में नहीं था। थोड़ी देर उनसे कुछ सुख की बातें चलती रही। फिर मातीराम का बगीचे में गया। मोतीराम का बगीचा अब नहीं कहना चाहिए, यह गायनवा पाठशाला है। पर मोतीराम के बगीचे का नाम भरे लिए जितना प्रिय है, उतना यह नाम नहीं। विशेषकर जब कि मैं देखता हूँ कि अपने समय का निष्कपट भक्त महाविद्वान् वास्नविक सन्त मंगनी ब्रह्मचारी का नाम मिटाकर यह विद्यालय खोला गया। मुझे काल से यही विश्वास है कि दूसरे के नाम को मिटाकर बनी इस संस्था का भी नाम मिट जाएगा। सेठो ने कोई धनपूर्वक धन नहीं कमाया है कि उन्हें मनमानी करने के लिए छाड़ दिया जाए।

फिर हिंदू यूनिवर्सिटी के संग्रहालय (म्यूजियम) गए। दस लाख की इमारत बन रही है। अभी उसके नीचे के ही कुछ कमरे तयार हो पाए हैं। सामग्री यहाँ आ गई है। राय कृष्णदासजी ने इस संस्था की नींव डालते चित्र, मूर्तियाँ और दूसरी चीजें बड़ी लगन से नागरी प्रचारिणी सभा में एकत्रित करनी शुरू की थी। जब वह एक बड़े संग्रहालय की बुनियाद बनाने जा रहे हैं। यहाँ के चित्रों के संग्रह में कवि रहीम की तस्वीर भी है। वही कूटस्थ अचल विद्वान् जिज्ञासुजी भी मिल गए। मारकण्डेय की तरह उनका ऊपर बाल का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। कह रहे थे—आप ऋग्वेद का इतिहास के सम्बन्ध में लिख रहे हैं तो पुस्तक निकल जान दीजिए, हम उसके जवाब में साबित करेंगे कि ऋग्वेद दो अरब वर्ष पहले सृष्टि के आदि में भगवान् का दिया हुआ ज्ञान है। विचारों में भेद रहते हुए भी जिज्ञासुजी की लगन और स्वाध्याय की मैं सदा कदर करता रहा हूँ। जाखिर आय समाज से मैंने भी कुछ बातें सीखी जिस उपकार को मैं भुलाना नहीं चाहता। यही डा० राजबली पाण्डे भी मिल गए। वहाँ से डा० वासुदेव शरण अग्रवाल के यहाँ थोड़ी देर बैठे। निवास पर आने पर आचार्य जगन्नाथ उपाध्याय तथा कितने ही दूसरे तर्ण मिले।

पत्रों में आने की खबर छप चुकी थी। पत्र आधुनिक दुनिया की महान् देन हैं। और अखबार से यह भी सुभीता है कि बनारस में मुझे अपने मित्रों को आने की सूचना देने के लिए अलग अलग पत्रों के लिखने की जरूरत

नहीं पड़ती। ७ जनवरी को सवेरे साढ़े ७ बजे ही से मिलने जुलने वाले आने लगे तो १२ बजे तक उसका ताँता बराबर जारी रहा। भाजनोपरान्त श्री अग्निदत्त विद्यालंकार व यहाँ गया। गुरुकुल के स्नातक प्राचीन साहित्य और विद्याया के बारे में इतन साधन सम्पन्न होते हैं कि यदि वह चाह तो बहुत काम कर सकते हैं। अग्निदत्तजी ने आयुर्वेद का अपना विषय बनाया और उस पर उहाने अनेक पुस्तकें लिखी। उनके पास ही अंग्रेजी के अध्यापक डा० आषा मिल गये। मैं सोच रहा था यह चेहरा कहीं देखा हुआ है पर याद नहीं आ रहा था कि १९४८ में प्रयाग में कितनी ही बार हम दोनों घटो टहला करते थे। इस वाक्य में वह कई साल अमरिका रहकर आय ध और वहाँ की प्रगति से बड़े प्रभावित थे। साचते थे भारत भी उन्ही रास्ते प्रगति कर सकता है।

वहाँ से भारतीय महाविद्यालय (कालेज आफ इण्डोलोजी) में डा० राजवली पाण्डे प्रिंसिपल की अध्यक्षता में तिवत के बारे में भाषण दिया। हिंदू युनिवर्सिटी में मैंने ता समया था यही एक भाषण हागा और शायद विद्यार्थियों ने भी ऐसा ही समया था। इसलिए वह बड़े लेक्चर हॉल में भी कैसे समा सकते थे ? उसके लिए ता हॉल की जम्मत थी। वहाँ से साहित्य कारों की गाँठी में गया। वही गान्तिप्रिय द्विवेदी मिल गए। गाँठी के बाद हम साथ ही रिक्रो पर चल। गान्तिप्रिय द्विवेदी का व्यक्तित्व बड़ा सीधा साफ़ करण है और साथ ही माहव भी है। उनका दायकर मुनी अष्टावक्र की आवृत्ति सामने आ जाती है। यह बिल्कुल स्वनिर्मित पुरुष और भाषा के तो महान् गिल्फकार हैं। एक एक शब्द को तोल कर और सँवार कर कमी है। वस्तुतः आदत बुद्धि में भी ऊपर हाती है। गान्तिप्रियजी का सबसे लिनकत राटिया की मालूम हाती है। उस मास भर शरीर के लिए राटियाँ चाहिए ही कितनी ? पर ठिकाने से या उनकी रचि के अनुसार उसका प्रवध नहीं हो पाया। आजकल वह किसी बूढ़ा के यहाँ रोटी खा रहे थे। गान्तिप्रियजी को ४ बजे गाम या १२ बजे रात का राटी चाहिए वह इतनीदेर कैसे मिल सकती थी ? मैंने कहा— 'याह क्या नहीं कर लेते ?' ब्याह की बात पूछने मुझे वाचस्पति पाठन की बान याद आ रही थी। दोना

ही एक ही शहर क रहन वाले ठहरे, इसलिए बहुत पहल से एक-दूसरे से परिचित थे। तुलसीदास ने सच ही कहा है "तुलसी वहां न जाइय जहां जनम का ठाँव। भावभक्ति का मरम न जाने घर पाछिलो नाव।" गान्धि पियाजी का लटवपन म मुच्छन नाम पड गया था। उनक कभी भी बडी बडी मूछें रही हा यह सम्भव नही मालूम हाता इसलिए यह नाम बिल्लुल अयुक्त था। पर पुराने यार लोग अब भी मुच्छन कहकर पुकारने के लिए तैयार हैं। बडी कमाइ करक इतना सुन्दर गान्धिप्रिय नाम मिला था अब वह फिर लौटकर पुन भूक 'कसे बन सने थे ? अपने पुरान मित्रा पर विश्वास करना आदमा का स्वभाव है। पाठकजी पर भी उहानि विश्वास किया जब उहाने कहा कि मैंने तुम्हार लिए एक बहू ढूडी है। बहू भी उहाने पचास वष की ठीक कर ली थी—ठीक क्या कर ली थी उसको अभिनय करन के लिए तैयार कर लिया था। गान्धिप्रियजी का भोजन वही निश्चित किया गया। भावी पत्नी महान् साहित्यकार क चरणा म पलना के पावडे बिछान के लिए थी। मटिला किसी स्कूल मे अध्यापिका थी बहुत सुमस्कृत और शिक्षित थी, इसलिए उनक एक एक गदग यदि मधु से पाखे हो, तो जाश्चय क्या ? पाठकजी ने सकेत करन की कोशिश की यही आपकी भावी पत्नी है पर गान्धिजी का मन नही मान रहा था। जाखिर वह कसे विश्वास कर लेते कि उनका बालमित्र उनके साथ मजाक कर रहा है। मजाक नही घोखा हा वह समझ सक्ते थे। वह बूडी रमणी को देखकर यह विश्वास कस कर लेते कि इही क साथ मुझे अपना सारा जीवन घेना है। लेकिन, नाटक ता एसा ही किया गया था। गान्धिजी को यह मालूम हुआ या नही कि ब्याह की बात मजाक की नही थी। एसा न होने पर भी वह बुनिया से ब्याह करन के लिए कसे तैयार हाते ? आखिर उहीने कविहृदय पाया था उह अपने शरीर और चेहरे के अनुरूप नही बल्कि कला और विद्या के अनुरूप पत्नी मिलनी चाटिए। सचमुच हा इस बडे अफसोस की बात माननी पडेगी कि दत्तन सुन्दर साहित्यकार की गुणग्राहिका एक भी तरणी सारे जम्बूद्वीप मे न मिले। मैं भी पाठकजी की घटना से जनभिनता प्रकट करते हुए यही सलाह दी कि कम अपनी उमर की अथवा चालीस वष से ऊपर की महिला से ब्याह कर लो राटी का दुख तुम्हारा हमेगा के

लिए दूर हा जायगा । लेकिन उनक दिमाग म यह बात समाने वाली नही है । गान्धिप्रियजी के प्रति जँसा मरा स्वाभाविक स्नह है, वसा बहुत कम ही के बार मे मैं कह सकता हूँ । मैं स्वप्न म भी इसना खयाल नही कर सकता कि उनना अपनी किसी हरकत म दुःख दू ।

गाम का साड ६ बजे बार स गान्धोलिया के चौरस्ने क पास बनारस लाज म पत्रकारों क सामने भाषण देना था । बनारस का सडकें आजकर के जमाने क लिए नही बनाई गई थी । गामकर चौक म विश्वविद्यालय और चौक मे स्टेगना का जान वाली सडकें । इतनी भीड हाती है कि बहा गम्ना पाना मुश्किल हा जाता है । हर समय डर लगता है कि काइ दुघटना न हो जाए । चौक ता पहल ही जमा हुआ था, अब गादोलिया से दगादवमय तक ना भी सडक बडा बडी दूकानो मे भर गई है । इसी पर बनारस लाज का यह नाय हाटल था जो अभी पूरा तौर स बनकर तैयार नही हुआ था । पत्रकार पितामह श्री लक्ष्मीनारायण गर्दे अध्यक्ष थ । पत्रकारा को काफी सहया वहाँ जमा हुई जिसे जब मैं अपने विद्यार्थी जीवन क बनारस से मुकाबिला करता ता भालूम हाता, काणी भी कात्र क प्रवाह म बहन म नही उच पाई । ये पत्रकारा का जमात और मह भव्य होत्रा इसक साधा थ ।

सारनाथ—८ जनवरी का सारनाथ का प्रोग्राम था । ५० देवनारायण-जी भाय म थ । माटर से सारनाथ इम रास्ते गायन अत्र अतिम बार जाना हा रहा था बवाकि चौक स सीधे सारनाथ जान वाली सडक क लिए दग्ना म पुल बन रहा था, जा कि अत्र की ही मई म बुद्ध की २५वीं शताब्दी के महोत्सव क समय तयार हा जान वाला था । हम ६ बजे सारनाथ पहुच । पिछले साल स बैस नी कुछ परिवर्तन होता, लेकिन २५वीं शताब्दी के कारण ता यहा निर्माण म बडी तदही दला जा रही थी । पचीसा लाग स्पय हमारा सरकार खच कर रही थी । स्टगन पुरानी जगह स रिसतकर अब मूलगध कुटी बिहार के पास वाले नराखर पाकरे के पूर्वी भीटे पर जाने वाला था, और नराखर क बाच स सडक बतकर मीधे बिहार म लाद जा रही थी । पुरान स्टगन स जान वाली सडक मे निकलकर जा कच्ची सडक बिहार की ओर जा रहा थी, वन् भी पक्की बनाई जा रही थी । महाबाधि

इटर कालेज के पीछे की ओर इट की कई पक्की इमारतें मेहमानों के लिए तैयार की जा रही थी। हजारों आदमी चीटी की तरह नव निर्माण में लगे हुए थे। चीना मन्दिर ने अपने आस पास की बहुत सी जमीन खरीद ली है लेकिन उसके अल्पशिक्षित भिक्षु सरकार से कोई सहायता लेने के लिए तैयार नहीं। डरते हैं, सरकार का अधिकार हा जायेगा। वह अपने हाथ पैरों पर ज्यादा विश्वास रखते हैं। दो या तीन हैं, पर अपनी जमीन को आबाद करके वह खाने पीने में स्वावलम्बी बने हुए हैं। कुछ पस बलकत्ता के चीनी बौद्ध भक्त दे दिया करते हैं। नवीन चीन यदि कोई अपना बौद्ध विहार या दूसरी संस्था कायम करना चाहेगा तो उसके लिए सबसे उपयुक्त यही भूमि है। महाबोधि चिकित्सालय के पास तीन बीघा जमीन लेकर एक तिब्बती लामा ने भी अपना मन्दिर खड़ा करना शुरू किया है। दो कमरे बन चुके हैं। अब अधिकार तिब्बती यात्री वही ठहरने है। देशानुसार धार्मिक संस्थाओं के बनाने का यह दाप है। फिर सभी दंगा के लोग ऐसे स्थानों में एक परिवार की तरह कैसे रह सकेंगे? यह तो मालूम हो रहा है कि विहार के आस पास के बहुत से उपजाऊ खेत अन्न खेती के लिए नहीं रह जायेंगे। वैसे भी घर पीछे इतना खेत लोगों के पास नहीं रह गया था कि एक व्यक्ति भी साल भर उसकी उपज से जीविका चला सके। विहार ध्वसावशेषों चीनी मन्दिर और तिब्बती लामा से भेंट मुलाकात करते बर्मा घमण्णा में गए। कितिमा बाबा आजकल बर्मा गये हुए थे। मेरे भतीजे उदयनारायण पाण्डे और उनका परिवार मिला। अभी ही वह शरीर से अधिक भारी और घबरेले हो गए थे। इतनी जल्दी वयविकार हा जाता है। पर वस्तुतः इसमें विकार कारण नहीं बल्कि काल की गति को न परखना कारण होता है। अपने लिए बीते हुए बीस साल कल जैसे मालूम होते हैं, लेकिन वह इतने छोटे तो नहीं होते। उनके छोटे भाई रामविलास भी यही ठहरे थे। टी० बी० का सदेह है। घर के दो और भाई मेट्रिक पास कर घर में ही खेती में लगे हुए हैं, पर उनके पिता का खयाल है कि वह भी किसी नौकरी में लग जाएं। मेट्रिक पास को ५० रुपये महीन मिलेंगे, और मसूरी में खा पीकर ३० रुपये महीना मामूली रसोयों को देना पड़ता है। बुद्धिजीवी से शरीरजीवी का मूल्य ही महंगा है। उनके घर में ३०-४० एकड़ बहुत अच्छी

उपजाऊ जमीन है। यदि खेती करें, तो वही अच्छी तरह स गृह सकते हैं। पर, पुरानी खापड़ी कुछ सोच नहीं सकती। वह बीत युग की चतुराई से पार हाना चाहती है जा इस समय के लिए कोई काम नहीं देती। उदय-नारायण ने बतलाया पाम क गाँव म हमारी बहुत अच्छी जमीन थी, जिसका तीन हजार आमाना स मिल जाना था। हमने कहा बच दें क्याकि हम उस आबाद नहीं कर सकत। पिताजी का पसंद नहीं आया। वह पुराने जमाने की बात साच रह थे। समझ रह थे जब हमारे नाम जमीन है ता उसका कौन स सकता है? लेकिन आजकल क जमान म जमीन का वही अपने हाथ म रग्य मक्ता है जा उसकी सेवा पूजा कर सकता है, उसको जान सकता है। किसी न दावा कर लिया, पटवारी का सौ पचास रुपये दिए, और उसने कागज पर उसका नाम लिख दिया ता वह जमीन यात्री चली गई।

इमामलाल भाग्य को और दुनिया को दोष द सकते हैं। शायद यह समयकर सताप कर सकते हैं कि इम लोक म नहीं ता परलोक म 'याय जरूर होगा। पर, 'याय का रास्ता बड़ा गहन ह। क्या उनके पूवजा ने 'याय करके बनला गाव की सारी भूमि का अपन हाथ मे लिया था? आखिर वही क वही जातवालो के भाग जाने पर जा लाग अब भी बिराग जाते बत आश ये वे वही पर रहत थ और अपनी सख्या और सामय्य क अनुसार कुछ खेता का आबाद भी किय हुए थ। पर राज्य हिंदू का हो, या मुसलमान या अंग्रेज का मभा चाहते हैं, भूमि की लगान नियमपूर्वक मिला कर एमे माटे आसामी को पकड़ें, जा किस्त-बकिस्त रुपया अदा करे। छोटी जात वाला पर विश्वास नहा कर मकने थे, इसलिए जब १८वीं सदी क गुरु म यही जात वाले इच्छा पाण्डे अपना चत्रपानपुर गाव स बनला आने क गिर् तैपार हुए, ता पुरान निवासिया का काद भी गपाल न करक गाव उनरे नाम लिख दिया गया। यह क्या कोई 'याय था? और यदि वह 'याय था, ता आज का 'याय है--जो जोते, उमकी भूमि।

लोटने समय गवुघाग म रामानंद विद्यालय का आग्रह भी मानता पडा। इस विद्यालय को मर मित्र स्वामी भागवताचार्य ने स्थापित किया था। सख्या एक बार स्थापित हा जाय, और अगर उसकी आवश्यकता है,

ता बितनी कठिनाइयो म पढ़ने पर भी वह मरती नहीं। इसका उत्साहरण यह विद्यालय था। यहाँ कई विषया की आजाय तक की पढाई हाती है। विद्यार्थिया म रामानन्दो (बरागी) वण्य हा अधिक हैं। हमार समय म कही मुश्किल से एक दो आजाय बैरागी मिलत थे। अब विद्या म अधिन प्रगति हुई है। विद्या और बाल ने मिलकर लागो का अधिक जगर भी बना दिया है। मैं किसी समय बरागी था, भायसमाजी हुआ बौद्ध भिक्षु बना, और फिर बुद्ध के प्रति जगार श्रद्धा रखने हुए माकम का शिष्य बन गया। यह भर लिए प्रसन्नता की बात थी कि जिन घाटा से मैं गुजरा वे सभी मरे प्रति जात्मीयता रखत हैं। यहा वसी ही आत्मीयता देखी। बोलन क लिए कहने पर कहा— 'धुमकडडी और सस्त्रुत तथा सास्त्रुतिक निधिया की रक्षा का दायित्व जय तक बरागा अपने पास रखेंगे, तब तक उनका कोई बाल भी बाका नहीं कर मरता। गकुधारा से लगा ही हुआ खुजवा मुहल्ला है। आज से तीस ही बय पहले यह शहर का मुहल्ला नहीं, बल्कि गाँव सा मालूम हाता था। लकिन, अज आजादी बढ गई है दूकानें भा बहुत ह। कुछ नौजवानो ने तीस बय पहले खिलवाड के तौर पर एक पुस्तकालय खाल दिया। उन्होंने कुछ जमीन भी ले ली। धीरे धीरे दुमजिला घर बन गया। अज वह एक अच्छे पुस्तकालय का रूप ल चुका है। उनक बडे पूजा म अब भी कुछ मौजूद है, जा लडका के इस खेल का उपहास करते थे। पर आज वह देख रह है कि नई पीढी इस पुस्तकालय से बहुत लाभ उठा रहा है। वहाँ स विद्यापीठ म बाता। फिर गवतमट सस्त्रुत कालन के टाल म। अँवेरा हाने पर लौटे। यहा पर भा लोग आने रहे। सवेर स जाधी रात तक व्यस्त रहना मैं बुरा नहीं मानता। एजात रहन के लिए तो आखिर मसूरी है ही। यहा तो मित्रा और परिचिता स दिल खालकर मिल लिया जाय।

६ जनवरी को १० बजे तक घर पर हा गोष्ठी चलती रही। भोजनो परात गहर गये। श्रीमती गिवरानोदवी प्रेमचन्द स मिल। जय बहुत दुबली हा गई है हट्टी और चमडा भर रह गया है। बटे दोना प्रयाग पकड चुके हैं क्योंकि पुस्तक व्यवसाय के लिए उह प्रयाग उस स्थान से अधिक उपयुक्त साबित हुआ। श्रीपति तो अपना अच्छा बगला बनवा चुके है और अमृत कम्प्युनिडम के पीछे फकीर बने हुए हैं। गिवरानादवा की लडकी इस

समय यही थी। बुलाये म किसी को साथ रहना चाहिए। अब भां वह कभी कभी लम्हा म प्रमचन्द को वाल्य स्मृतिया को देख जाती हैं। पत्रा आम है। पुरानी पीढी को नई क लिए स्वान छाटना हा पटना है लेकिन समययन्त्रा को इसर लिए जरूर अपसास हाता है।

लौटकर भोजन किया।

हिंदू विश्वविद्यालय के छात्रा १ भाषण वरन क लिए निमन्त्रण दिया था। मैन समजा वह विद्यार्थिया की एक साधारण सभा हागी, पर वन् जान पर मालूम हुआ कि विश्वविद्यालय छात्र-सघ का वार्षिक उद्घाटन मुये करना है। बाहर गामियाना लगा हुआ था। भारी सख्या म छात्र छात्राएँ मौजूद थी। विश्वविद्यालय क कुलपति सभा जगह बढ हान है, जो अगना पुरानी कमाई पर जीत ह और समय का नही पहचान सक्त। वह एर तरफ ता टिपारा पीटना चाहत हैं कि छात्रा को हम स्वतन्त्रतापूवक अपने सगठन और विचार प्रकट करन म अत्रसर देते है, और दूसरी तरफ चाहत हैं कि वह हमारी मुट्टी म रह। उद्घाटन वरने क लिए जिम वह पमाद करते उस नया खत पमाद नही करना। इसी बाह स किसस उद्घाटन कराया जाय, इसे निश्चय नही किया जा सता था। मर जान पर छात्र एक ओर स सहमत हा गय कि मैं ही उद्घाटन करूँ। मुये एस अवसर पर वहने क लिए कई बातें थी लकिन उद्घाटन का पता ता तब लगा, जब गामियान मे पहुँचा। कुलपति इसम सहमत नही हुए और उन्ने अपना रोप प्रकट करते हुए एर पत्र लिखा था। सघ क मंत्री न उस दिव गत हुए कहा—दखिये इसम लिखा है कि उनक इम त्रिरोऽात्मक पत्रा का छात्रा क मामने पढ दिया जाय। सचमुक ही उसक पढ ने का मतलब आग म घी छात्रता हाता, विद्यार्थी भक्त उठत, और वह कहा गीग खिटियाँ ताउन लगते ता उह अनुगामनहीन और उच्छृंखल वतलाकर वदनाम किया जाता। मंत्री और अध्याप न उम पत्र का नही पत्र। पुगनी पोडी अधिक निचारगोल है या नइ पीनी, इस यर्ी परखा जा सक्ता है। छूट निमाग ज्वादा सुराफानी है चाह वह श्रमता मे पूष हा। वह कुउ द नही सक्ता और बिगाड बहन सक्ता है। मरा चर् ता कहूँ कि ५० वष की ऊपर की आयु का बाई प्रति एम जवायदही क पदा पर नियुक्त न हान

पाय। मैं नक्षिप्त हा भाषण किया। चाय पार्टी में शामिल हुआ। बाबू राघारमण की माटर आई हुई थी इसलिए उस पर महुआडीह में उनकी काठी पर पहुँचा।

राजा मातीचंद के अजमतगढ़ प्रामाद को मैं उसी समय देख चुका था, जत्र अभी-अभी वह बना था। वह बनारस की नये ढंग की स्पृहणीय इमारत था। उसी के पास एक दूसरा भी प्रासाद तयार हो गया है, यह मुझे मालूम नहीं था। श्री राघारमण बनारस के बड़े रइसा में हैं। नाबालिग रहते समय इनके अभिभावक राजा मातीचंद रहे जिनके उत्तराधिकारी जीर भतीज श्री चंद्रभूषणजी और भी पाँच सात गण्यमाय पुरुष वहाँ मौजूद थे। श्री किशोरीरमणजी भक्त बण्णव हैं। मैं कबल मायता रखनेवाला नास्तिक नहीं था बल्कि अपनी जवान से भक्ता के भगवान पर जबदस्त चाट पन्चोस वष से करता आ रहा हूँ। भक्त गिरोमणि ब्रह्मचारी प्रभुत्त की चले तो गरम सडासी से ऐसी जीभ मुह से निवाल ल। पर आज के भगन भी मालूम देता है कलियुगी बन गये हैं। वह भगवान और शतान दोनो का सतुष्ट रखना चाहते हैं। डेढ घंटे तक वहाँ गोष्ठी रहा। बहुत नफीस चाय के साथ पकवान भी था। पर पकवान अब मैं खा नहा सकता था। बनारस का पान सारे ब्रह्माण्ड में मशहूर है, और वहा के सबसे उत्तम बीडा को बड़े नफीस ढंग से पेश किया गया था। मन अफसोस कर रहा था इसके खिलाफ अजन्ता में प्रतिना क्या कर डाली? लेकिन, जब एक मतव प्रतिना कर ली तो उसे ताडने का साहस नहीं कर सकता। अधिकतर हमारी बात सांस्कृतिक और साहित्यिक विषया पर रही।

५ वजे नागरी प्रचारिणी सभा में पहुँचा। साल में एक बार बनारस जाना हाता है और साहित्यिक मित्र उस समय स्वागत करना आवश्यक समझते हैं। मुझे उस बहाने बहुत से मित्रों से इकट्ठा मिलन का मौका मिल जाता है। सभा में पौन घंटे वाला विशेषकर पण्डितराज जगन्नाथ के पति अपनी थढ़ाजलि अर्पित की। पण्डितराज अपने समय से सकडा वष पहले पदा हुए थे, जिस तरह कि अकबर। संस्कृत के अपने काल के छोडन के बाद सरस कविता के पाने का अवसर हम पण्डितराज की कविता में ही मिलता है। अभी अभी अपनी “संस्कृत का यधारा के लिए कविताओं के

छाटते वक्त मुझे उनकी कृतियाँ म न गुजरना पड़ा था। माहिय ही नहीं दान का भी यह अद्वितीय विद्वान कागा म पदा हाकर कितना उदार था, जो कि मुसलमान तरुणी को खुल्लमखुल्ला अपनी घमपत्नी बना विपणिया क हजार प्रयत्न करत पर भी अपने घम और सस्कृति पर अटल रहा। तानसन अकबर क समय म भी एसा हिम्मन नहीं कर सक। सभा स निर रत ही श्री सत्य-द्रजी की पत्नी अपनी वार लिय मौजू थी। उनसे रास्त म बात करने का मौना मिला। उनका मैं अतिवि था, पर समय कहा कि बात करने का मौना निकाल सकता। वह दिल्लीवाली है। यह जानकर आश्चर्ययुक्त हप हुआ कि उह अपनी लाकगीता क नाय बहुत प्रेम है और जा याद है उह गा भी सकती हैं। हम लोग किताब स पढकर हिंदी सीखत है, और उनकी हिंदी मातभाषा थी। दिल्ली के पुराने हिंदू परिवारो की भाषा कराव करीव पूरी तौर से साहित्यक हिंदी हो गई है, लेकिन उस पर कौरवी का प्रभाव खत्म नहीं हुआ है। यह दुर्भाग्य की वान है कि रस प्रभाव का गुण न समझकर दोष समझा जाता है, और उह गुद्व करत की काशिश की जाती है। उदुवाला की मतस्क (त्याज्य) की परम्परा को हिंदी न भा मान लिया। आजकल वह अचार और मुरब्ब की नई विधिया के सीखने म लगी हुई थी। लखनऊ से कोई सिरानवाली महिना भेजी गई थी। दा दजन से अदिक ललनाए उनम अचार और मुरब्बे बनाना सीख रही था। निवास स्थान पर जाकर फिर १० बजे रात तक मित्रो के साथ गोष्ठा चलती रही।

१० जनवरी का कहा बाहर नहीं गया, और १२ बजे तक यही गाळी हाती रहा। चलन स थोड ही पहल चौबम्वा मस्कृत सिरोज क स्वामी श्री जयकृष्णदासजी आ गए। उन्होंने कुछ पुस्तके छापने क लिए मांगी। मैं 'सस्कृत पाठमाला' ही दो और वह सहप उस ले गय। वह "सस्कृत वाव्यपारा' का भी चाहत थे पर उसे तो प्रयाग म दे आया था।

१२ बजे चला। चौक से द्विवदीजी भी साथ हा लिए। श्री श्याम-नारायण पाण्डे बनारस म करीब-करीब बराबर रह। वह भुरकुडा के उच्चतर महाभाष्यमिक विद्यालय म अध्यापकी करते अपन और आदर्शो का भी प्रचार करना चाहत हैं, विनोपकर सस्था का गदगी का, र

के लिए बहुत तत्पर दिखाई देते थे। ऐसा काम शुरू करनेवाले का विरोध का भी बहुत सामना करना पड़ता है, जो उनके सामने भी आया। लेकिन उनका संकल्प था—“यायत् पथ प्रविचलति न पद न धीरा (यायक पथ से धीरे एक पग भी विचलित नहीं होते)। उनका स्वास्थ्य बहुत ही खराब था, गरीर में चमड़ा और हड्डी ही दिनाइ पड़ती थी। जमानिया तक वह इसी ट्रेन में गए। हमारे कम्पाटमेंट में कोई दूसरा आदमी नहीं था। द्विवेदी जी ने अपना उप-यास 'कतव्याघान' दे दिया था। उसे पढ़ रहे। पिछली पीढ़ी के हाथ का लिखा हुआ यह उप-यास है। सरल भी है और रोचक भी। अब भी उसको लागू पसन्द करते हैं इसका प्रमाण यह नया संस्करण था। आराम में पहुँचते पहुँचते अंधेरा हा गया। बिहटा में जोर अंधेरा हुआ गाड़ी में चिराग जल गया था। साढ़े ६ बजे पटना जंक्शन पहुँचे। डा० बद्रोन्नारायण स्टेशन पर मौजूद थे। उनकी कार पर चढ़कर उनके घर में पहुँच गए।

पटना—इधर दाँतों के तीन दिन से दाँत में दर्द होने लगा था, जोर में पटना मेडिकल कालेज के भूतपूर्व प्रिंसिपल का अतिथि था। उनका लडके भी डाक्टर थे लेकिन दाँतों ही दाँत के विशय में नहीं थे। डा० देवेद्र एक मित्र दाँत डाक्टर के पास लगे। उन्होंने दाँत को जला दिया। इससे यह फायदा तो हुआ कि पानी पीने में पहले जो दर्द होता था, वह खतम हो गया। लेकिन अभी उसमें छेद था, जिसे भरने की भी जरूरत थी। आज दाँत का एक्सरे भा करना लिया। कमला की चिट्ठी मिली। लिखा था—जया बार बार पापा के बारे में पूछती है। वह बचकर इनज्जर करती है। बच्चे कितने सरल होते हैं। प्रिय विद्यागण दुख उनको भी होता ही है। उस दिन (११ जनवरी को) मित्रा से मिलने गया। बीरेन्द्र घर गये हुए थे। देवेन्द्र कालेज में थे। कुसुम मिली। चार महीने का एक और पुत्र भी गान्ध में है। दीपक और दीप्ति कानवेट में पढ़ रहे हैं इसलिए लन्दन में रह कर सीखी इंग्लिश भूल नहीं सकते। सम्मेलन भवन में शिव पूजन बाबू मिले। डायबेटीज को भगान के लिए जो की राती खाते हैं और इंसुलिन पर भी भक्ति रखते हैं। मैंने कहा—खर आपके लिए तो यह बुरा नहीं है, क्योंकि रसगुल्ले जोर दूसरी मिष्ठानों से इस लोक में बचित

रह कर आप परलाज म पा सकत हैं। पर यदि जरा भी मन्ट हा ता जी को रोटी की तपस्या नहीं करनी चाहिए। जी की राती म चीनी बनानेवाले तत्व मौजूद हैं जिनका भी पचान का काम इन्मुलिन ही का करना पड़ेगा। मरी राय मानिये और रोज इन्मुलिन लीजिए और मिठाइ आदि जिस चीन का खान की इच्छा हा उस खाइए। शाम का भोजन छोड रख ता अच्छी बात जिसम पट हल्का रहे। म्यूजियम गया नेर साह्य मिल। अल्तेर साह्य राज नहीं आत।

आजमगढ स श्री मुखरामसिंह की चिट्ठी आई। मैंने वहाँ वाला के साथ वे वार म लिखा था— 'मैं पाच छ दिन क लिए वहा जा सकता हूँ। पुरातात्विक स्थाना क देखन क लिए सारा प्रवच हा जाना चाहिए।' आजमगढ क नए गजटियर की समिति म मरा भी नाम था। मैं चाहता था उसक लिए कुछ नई मामग्री जमा करव दू। मुखराम बाबू न लिखा—यात्रा का सारा प्रवच हमन कर लिया है। पटना म दस दिन मैं इमीलिए दिए थे कि यहाँ रहकर सरह क दाहाबाग को देखकर प्रिंट आडरू लेकिन प्रेसवाले दवनाआ म भुगतना था। लेखक उनस बच नहीं सनता था, लेकिन कामना कर सकता है, कि खुदा इनस बचावे। दस दिन पटना म रहना बेकार था इसलिए माचा कि बाच म तीन दिन क लिए छपरा चला जाऊँ। पटना मे निकल चुका था इसलिए यहा पर भी मिना और ब'बुआ का आना-जाना शुरू हुआ। पटना कालज और बा० ए० कालेज म भाषण दना स्वीकार किया। यन्ि पहल स पता लगा हाता ता छपरा म सूचना द दी हाती और समय का पूरा इस्तमाल हा सकता। १२ तागैख का म्यूजियम म जाकर क्यूरेटर गर माह्य स मिला। दा-तीन पत्थर की मूनिया ल आनर हमने डा० बदीनाथ प्रमाण क यहा प्रयाग म रख ले थी। वह अवका मिली। वहा म्यूजियम का दना चाहा पर नहीं दे सक इमन्गि उह पटना म्यूजियम को द दिया। इन मूनिया म एक प्रेमचन्द्र की जन्मभूमि लमही म मिनी थी जा १२वी गतानी की मालूम हाती थी। तिच्यत स लाए ताल पत्रा का उपयोग हमन दाहा बाग म कर लिया था इसलिए उमे अब सुरक्षित रमना था और म्यूजियम का ही द दिया।

१३ जनवरा का बीच राँच म समय निराल कर "भारत म

राज्य व सस्यापन' तथा 'संस्कृत पाठमाला' की दा पोथिया की काफी ठीक करके प्रवागवा व पास भेज दी। श्री वैदेहीशरणजी का नाम बहुत सालों से सुन रहा था। उनके नाती-नातिनिया से मसूरी में भेंट हुआ करती थी। वह अपने पुस्तक भण्डार में लगे गये। वैदेहीशरणजी सतत प्रवृत्ति के पुरुष हैं, तो भी व्यवहार-बुद्धि इतनी कि उन्होंने पुस्तक भण्डार जैसी गिनाल प्रवाशन-सस्या खड़ी कर दी। अपने भक्तिभाव में रहते लग काम नौकर चाकरो पर छोड़ दिया जिससे कारण वह डूबने लगा। 'भक्ति अगली पीढ़ी उस गलती को दूर करने के लिए तैयार हो गई है। पहले भंडार लहौरिया सराय (दरभगा) में स्थापित हुआ था लेकिन उनमें लिए पटना अधिक अनुकूल स्थान है, इसलिए अब वही कारबार हो रहा था। भंडार की बहुत-सी पुस्तकें भेंट की। बिहारीजी (वैदेहीशरण) से पता लगा कि हमचन्द्र—जिन्हें मुसलमान लेखन घणा प्रकट करते हुए हमूँ बक्वाल कहते हैं—वस्तुतः सहसराम के रौनियार बनिया थे। इतिहासकार उन्हें दूसरे बनिया कह कर पश्चिम का बतलाते हैं। दूसरे बनिया अब भागव ब्राह्मण बन गए हैं यह ईर्ष्या की बात नहीं है। ब्राह्मणों को अपनी सख्या बढ़ने का अधिक अभिमान होना चाहिए। पर, हमचन्द्र दूसरे नहीं रौनियार थे। शेरशाह अपने को सहसराम का समकक्ष थे। दिल्ली के बादशाह हो करके भी उन्होंने कालिंजर में बासूद में झलस गरीर को सहसराम में ही दफनाना पसंद किया। शेरशाह पठान थे। पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा बिहार में फैले भोजपुरी भी हिंदू पठान ही हैं, इसलिए शेरशाह का भोजपुरिया पर बहुत अधिक विश्वास था। हमचन्द्र यदि शेरशाह के बहुत विश्वासपात्र हो गये, और अपनी याग्यता से कोश मंत्री ही नहीं, बल्कि बड़े सेनापति बन गये हों तो अचरज नहीं। बिहारीजी ने बतलाया कि हमारी महिलाएँ विनाय समय पर हमूँ और उनके पिता के गीत गाती हैं।

माहन प्रस 'सरहके दाहाकाश' छाप रहा था और वही 'नेपाल का भी अचार बना रहा था। तीन वर्ष से 'नेपाल' माहन प्रस में पड़ा हुआ है। चार सौ पन्ठ व करीब छपे हैं। मैंने कहा—दासों और छाप कर इसका पहला भाग निकाल दो, तो तुम्हारा रुपया भी लौटने लगेगा। कहा—'हाँ, हाँ।' विलंबता दण्डवत करने में मोहन प्रस के माहन वाक्य बड़े

मिदहस्त हैं। मुझे विश्वास नहीं, नेपाल" दण्डल से बर्भी निवृत्त कर
बाहर हागा।

साम की धाय देवेन्द्र बाबू के यहाँ पीकर बटना बाल्ज के साहित्यकार
परिषद् के विद्यार्थिया के सामने राष्ट्रभाषा की समस्या पर भाषण दिया।

लौट कर आए ता पा० काश्यप मौजूद मिले। यह भोजपुरी के उडे
ही मिदहस्त नाटककार हैं। विद्यार्थी अवस्था में ही बाबू लोहासिंह के नाम
से बडे ही शुभत भाजपुरी एकात्री रडिया के लिए लिखन गये। नाटक में
वह स्वयं लोहासिंह बनकर बालत हैं। रडिया पर अनक बार में उसका
जानक से चुका था। कल मित्र पर मैं स्वयं लोहासिंह के मुह से कुछ
सुनन की इच्छा प्रकट की। वस उनक कई नाटक का संग्रह में हाल ही में पट
चुका था। साहित्य की भाषा बनने से बचिन हमारी भाषाए कितनी गुण-
वती हैं, इसे शिक्षित लोग मानने से इन्कार करत हैं। पर, लोहासिंह या
जगडू (हरियानी) जमी कृति जव सामन आ जाती हैं, ता उनका लाहा
मानना पन्ता है। हमारी अलिखित भाषाएँ मुहावरा और चुत्कुलो में
बहुत घना हैं उनक सामन साहित्यिक हिंदी अत्यंत दरिद्र है। इसीलिए
साहित्यिक हिंदी का, उसकी अपनी कीरवी बाल से पुन घनिष्ठ सम्बन्ध
स्थापित हाना आवश्यक है। प्रा० काश्यप ने अपने नाटक के कुछ अंग
मुनाए। वहाँ और भी श्रुता जमा हा गय थे।

श्री देवकुमारजी अपन पुत्र की समस्या बनला रहथे। उसे दहरादून
के एक विशेष स्कूल में इम स्कूल से भर्ती किया था, कि वह मिलिटरी में
जाएगा। पर अब उसकी सम्भावना नहीं समझ रहथे। फेर हो जाता
था, और शरीर का स्वास्थ्य भी भाजपुरी के अनुकूल नहीं था। मैं उनमें
नाटककार प० लक्ष्मीनारायण मिश्र के लडका के बारे में बनलाया। देव
कुमारजी अपन स्कूल पर दो चार सौ रुपया महाना आसानी से एक कर
सकत थे, लेकिन प० लक्ष्मीनारायण एसा स्थिति में नहीं थे। उनका लडका
और बाला में बहुत तज शरीर भी भाजपुरियों के अनुकूल, पर पढना वही
विषय चाहता है जिसमें उसकी रुचि हा। हमारी पाठ्य व्यवस्था में एसे
लडका के लिए कोई स्थान नहीं है। जेनेरल बाल्ज (साधारणतान) में जो
बला में सबको पराम्त्त करता हा, वह भी तब तक आग नहीं बड सकता,

जब तक को सभी पाठ्य विषयों में पर्याप्त नम्बर न पाए। ५० लक्ष्मणारायणजी कह रहे थे— 'अब क्या करें?' यह पाम हाकर अफसर तो नहीं बन सकता, और हमने अभी तक इसने बारे में सारा रयाल सनिक अफसर बनने के तौर पर ही किया था। साधारण युनिवर्सिटी ग्रेजुएट हो जाता, तो कोई दूसरी नौकरी भी मिल जाती लेकिन उस भी फिर से शुरू करना होगा। वह जिद करता है, मैं जाऊंगा सना में ही। मिथजी यह भा कह रहे थे— 'वह तो सिपाहिया में भर्ती होने के लिए तैयार है। मैं कहता हूँ— 'मिथ महाराज वह बिल्कुल ठीक कह रहा है। आप जरा भी स्वाबट न डालें। वह हाथहार लडका है। जम्पर हमारे यहाँ अधेरगर्मी है और सेना में भी तरक्की उसी योग्यता के देखकर की जाती है जिस तरह दूसरी सरकारी नौकरियाँ में। पर आपने रयाल रखना चाहिए कि २०वीं सदी का ही एक प्रसिद्ध जेनरल लॉड राबट सिपाही हाकर भर्ती हुआ था। आपका पुत्र सनिक जान में पीछे नहीं है न और योग्यता में भी। वह जल्दी आगे बढ़ जाएगा।'

लखो की इतनी मर्गें आती हैं जिन्हें मैं सारा समय देकर भा पूरा नहीं कर सकता। यात्रा में मिलने वाले सम्पादन मित्रों को तो यह कहकर छुट्टी ले ला थी कि वही आऊंगा और लिखवा दूंगा। इसी के अनुसार १४ जनवरी का एक लख श्री शिवचन्द्रजी 'दृष्टिकोण' के लिए लिख ले गए और दूसरा "किशोर" के सम्पादक।

जब पना द्वारा छपरा में भी मरे आने का पता लग गया था। नयागांव हाई स्कूल के हैड मास्टर श्री शत्रुघ्न तिवारी का फोन अपने यहाँ जान के लिए आया। मैं तो वहाँ जा ही रहा था। उनके द्वारा सोनपुर भी सबर पहुँचाने का जचड़ा मौका मिल गया और फोन से ही प्राग्राम का निश्चय हो गया कि १६ तारीख को सोनपुर नयागाँव और छपरा तीनों स्थानों में पहुँचूंगा। उसी रात वीर द्रजी भी आ गए। उन्होंने अगले ही दिन छपरा एकमात्र और अनरसन आदमी दौचाए। उस दिन सांठे ५ बजे शाम का पटना कालेज की राजनीति परिषद् में तिवारत और भारत के सम्बन्ध पर व्याख्यान देना पड़ा। सभापति श्री विश्वनाथप्रसाद वर्मा थे—हिंदा ससृष्टत वाल नहीं बल्कि इतिहास और राजनीति वाल। उनका भाषण

बादिस जन्म तक जंगलों में हुआ इसमें गव नहीं कि अंग्रेजों अच्छा थी, पर हिन्दीभाषी विद्यार्थियों के सामने वह अस्वाभाविक-सी मातूम हानी थी इसमें सन्देह नहीं।

नालन्दा—१५ जनवरी का सांठे ५ उजे तक ही दक्कनमारी की माटर आ गई। हम उससे नालन्दा के लिए रवाना हो गए। ६ बजे नांन्दा में थे। अब की राजगृह छोड़ना नहीं चाहते थे इसलिए काश्मिरी का खबर देखने आगे चला जाना चाहते थे। काश्मिरी राम्ना ही में टहलने मिल गए और उनसे कहकर हम गिलाव हा राजगृह पहुँचे। सीधे गिरि भेजला के भीतर अस्मिन्त पुरान राजगृह के ध्वमावली पर पहुँचे। इन्तर जगला में और भी कुछ जगह खुदाया हुई हैं। चहारदावारा से घिरा एक स्थान उद्यान दिया गया है जिसमें निम्बमार का कारागृह बतलाया जाना है। अब माटर-मंडक पहाड़ के आर पार कर गया था आर चली जाना है। गृहभूटा का रास्ता भी कुछ बहतर बना दिया गया है लेकिन वहाँ तक जान के लिए हम समय नहीं दे सकते थे। सानभन्डार के पास तक माटर जान में कोई स्थिति नहीं हुई। उससे पास की जमीन का बने विभाग न लक्षित है। वहाँ उसका बगला है और प्रमार के लिए पौधें भी लगी हुई हैं। राजगृह के जगला की रक्षा हागी यह अंदाज लग रहा था। सानभन्डार का बगला में एक और भी चट्टान काटकर बनी हुई गुफा निकल आई है। राजगृह के आसपास बहुत से पुरातात्विक स्थान हैं। पर पुरातत्व विभाग उनका मानन-सम्भन नहीं है। वर्षों धमाला में १४ वर्ष से वहाँ के स्थानिक भिन्नु रह रहे हैं पर हमने एक दमरे का जवा नहीं पा। जय पदत्र पदत्र वष बाद फरा लग, ता परिवर्तन अधिक मातूम ही हागा पर राजगृह का स्थिति हम नहीं तक से अधिक तप्त कुण्ड इस स्थान की माँग कर रहे हैं, कि स्वास्थ्य के लिए उनका अधिक उपयोग किया जाए। इसी तरह पुरान राजगृह के बान में बड़े मोला के घेर में किसी समय मगध का गौरव 'मुमागधा' पुष्करिणी थी जो इस पावत्य भूमि के सौंदर्य की वृद्धि तथा जल की समस्या का ही हल नहीं करती थी बल्कि आज भी उसमें अस्मिन्त में आज पर हजागे एवढे जमान सींचा जा सकती है, पर अभी उसकी ओर किसी का ध्यान भा रहा गया है। आज मकर सत्रांति का मेला

लिए सुनसान राजगृह का एक भाग सहस्रा नर नारिया स मनसायन हो रहा था ।

लौटकर मित्रव से चिउरा जीर खाजा ले हम १० बजे नालदा पहुंच । छोटा पूची के पुत्र अब गृही हो गए हैं । पत्नी जीर पुत्र उस तिबनी बिहार म मौजूद थ । छोटा पूची इस समय वहा नही थे । नालदा पालि इस्टी ट्यूट का नाम बदलकर नव नालदा बिहार ' रख लिया गया है जो अधिक उपयुक्त है । अध्यापको क चार पांच बगले बन चुके हैं और भी बनत जा रहें हैं । नई बनी इमारत म अत्र लोग रहने लगे हैं । विद्यार्थियो म एमिया के सभी बौद्ध देशा के भिक्षु या विद्यार्थी मौजूद थे । पुस्तकालय क लिए तीन लाख रुपए की अलग इमारत बनने जा रही थी । भारत सरकार की आर्थिक सहायता से नागरी अक्षरा म पालि त्रिपिटक सम्पादित हाकर छपन लगा है लेकिन ऐसी गति स छप रहा है कि गायद बीसवीं गताब्दी के अंत म भी वह पूरा न हा सन । जाजफल क जमाने म मोनोटाइप स अच्छी छपाई करने वाले बहुत स प्रेस हैं लेकिन यह काम बम्बई क एक पुराने प्रेस का दे दिया गया है, जो चींटी की चाल चलन क लिए बहुत मशहूर है । महायान बौद्ध धम के ग्रथा के सम्पादन का नाम दरभंगा क मिथिला इस्टीट्यूट का दिया गया है । न जाने इसम क्या बुद्धिमानी समझी गई । चाहिए तो यह था कि बौद्ध ग्रथा क लिए—चाहे वह किसी भाषा म हा—नालदा म प्रवच किया जाता । ब्राह्मण ग्रथा का मिथिला इस्टीट्ट म जीर जन ग्रथा का वशाली इस्टीट्यूट म । लेकिन उहे भाषानुसार बाटा गया अर्थात् तीना प्रतिष्ठान क्रमश पालि, संस्कृत और प्राकृत के लिए रखे गए हैं जो बिल्कुल अयुक्त हैं । तिब्बता और चीना ग्रथो क अनुवाद या सम्पादन के लिए किस को पसंद किया जाएगा ? नालदा को ही न ?

एक और भी असंतापकर बात देखने म आई । सिंहल, बर्मा वार्डभूमि कम्बोज जादि के छात्र भारत म जाकर संस्कृत पालि क अतिरिक्त हिन्दी का भी अध्ययन करना चाहत हैं क्यनि भारत की संघराष्ट्र भाषा होने स उनके देश म उनका महत्व है । अलग समय म मुपन पाने के लिए आया पक भी तैयार ह, लेकिन नए संचालक यहां हिन्दी का पढना बेकार समझते हैं । अभी हमारे कितने ही अहिन्दी विद्वानो के दिमाग म हिन्दी का महत्व

पुस्तक नहीं रहा है। वह अंग्रेजी का प्रथम स्थान देने के लिए तैयार है चाहे कमराज चीन आदि देशों में उभरना महत्व न हो, और वह चाहते हैं, कि भारत की प्राचीन और आधुनिक सभ्यता प्रचलित भाषाओं का अध्ययन करें। मैं अब तक सचालक कार्यालयों से कहा पालि ग्रिफिट्स की कम से कम मी या पचास प्रतियाँ हाथ के कागज पर जस्टर छपाएँ। एशियाटिक साम्राज्य बंगाल और कितनी ही दूसरी जगहों से पचास प्रकाशित पुस्तकों के पत्र आज ही इनमें जीव शीघ्र हो गए हैं, कि वह जितने से बाहर निकल आते हैं और जरा भी असावधानी होने पर दूर जाते हैं। कम से कम सौ प्रतियाँ तो दो चार सौ साल रहने लायक छपें।

वहाँ से हम बडगाँव में गए। मुख्य गाँव इसी नाम में मशहूर है। उसे मूल मन्दिर के कारण मूल तीर्थ बना पड़े स्वतन्त्र नियुक्त हो गए हैं। मन्दिर में मूर्तियाँ के संग्रहालय का रूप ले लिया है। भीतर और बाहर चार से अधिक बूटधारी मूल की मूर्तियाँ हैं। पाल काठ की भी कितनी ही मूर्तियाँ हैं। गाँव में पचासत है थोड़ी सड़क भी दुस्त की गई है पर गाँव का समृद्ध जीवन अभी बहुत दूर की बात है।

पटना लौटते समय बिहार शरीफ की बड़ी दरगाह देखा गए। यह मुस्लिम शासन के आरम्भिक काल में आए एक प्रकार की दरगाह है। बिहार शरीफ आरम्भिक मुस्लिम शासन का शासन केंद्र रहा। उहाँ मूर्तियों का तात्पर्य, मन्दिरों में आग लगाने में बड़े पुण्य की आशा थी, इस लिए उहाँ नालंदा के अद्भुत पुस्तकालय का नष्ट करने में जरा भी आनाजाना नहीं की। बिहार और आसपास में लोग आतंक के बारे में मुसलमान हो गए। बिहार शरीफ में ऊँच वगैरे के मुसलमानों की काफी संख्या थी, जो अपने का हिंदी संस्कृति से अछूता रहने के लिए सब तरह की काशिका करते थे। आज यद्यपि हमारी सरकार इस बात का प्रयत्न करती है, कि भारत के सभी नागरिकों का समान अधिकार हो, पर समाज में जितना आना न जन्म का जलजल रखने की पूरी काशिका की वह अब एताना क्या न अनुभव करें। हम दरगाह स्थानों के लिए एक सम्भ्रांत पथ प्रदान करने लगे। बात बात में उनकी निर्यात टपक रही थी। दूसरी तरफ मैं अपने साथ गए डाइवर महदी प्रतियों को देखा रहा था। वह ऊँच वगैरे

मुसलमान नहीं थे। साधारण पुगहा या किमी जाति के थे जो हिन्दुओं से मुसलमान होकर भी भाषा, वैषम्य, भूषण में हिन्दुओं से भिन्नता नहीं रखते थे। महदी मियाँ घोड़ी कुर्ता पहनते थे। हाटलवाला ब्राह्मण भी उन्हें थाली में भोजन देने के लिए तैयार था। जब तक उनका नाम नहीं पूछे तब तक कोई यह नहीं सकता था, कि वह मुसलमान है। वस्तुतः भारत के लिए ऐसा ही हिन्दू मुसलमानों की जरूरत है। महदी फौज में नौकर थे। जब देश का बंटवारा होने लगा, तब ना ना करने पर भी उनका नाम पाकिस्तान में लिखा दिया गया। मजदूरन कई महीनों तक लाहौर में रहे। वहाँ बराबर अपने चम्पारन को याद करते-करते थे। बहुत जोर लगाया अतः अपने दश लौट आए। महदी मियाँ का मैं दस्तता था और उधर दरगाह के पथ प्रदर्शक था। महदी मियाँ को निराशा छू नहीं गई थी। वह अपनी मेहे थे। किसी समय हिन्दू उनके हाथ का रोटी पाना नहीं ग्रहण करते थे लेकिन अब हिन्दुओं में शिक्षित और सम्भ्रांत इस छूआछूत को कोसा छोड़ चुके हैं।

४ बजे तक हमें लाग पटना लौट आए। ५० गोरखनाथ त्रिवेणी जी की धूपनाथजी आ गए थे। त्रिवेणीजी उसी रात को लौट गए। जगल दिन हम भी छपरा जाना था।

छपरा

सोनपुर—५ रोजे अँधेरा रहने ही परतान मवारी पकड़ना बड़ी कवा हत की बात है। इसी समय हम महेंद्रू घाट में गंगा पार ले जाने वाले स्टीमर का पकड़ना था। बारदोजी अपने साथ रिक्शा लाने आये थे, नहीं तो वह भी समस्या थी। घाट पर प्रायः एक घंटा इतिजार करने पर जहाज आया। बड़ी भीड़ थी। ६ बजे के बाद हम पंजेजा घाट पहुँचे। सोनपुर में खबर मिल चुकी है, यह रवीन्द्र विन्वकर्मा के स्वागत से मालूम हुआ। रवीन्द्र तीसरी पोढ़ी में हैं। उनके दादा बड़े अच्छे मिस्त्री और सोनपुर स्वराज्य आश्रम के पढासो थे। आश्रम रहने वाले अद्वैत बदलते रहते थे, पर मिस्त्री अबल थे। वह आश्रम की देखभाल ही नहीं करते, बल्कि समय समय पर आय गया का आतिथ्य भी करते थे। न जान कितनी बार रवीन्द्र के दादा ने यहाँ मीने भाजन किया होगा। दादा अब नहीं रहे पिता भी बूढ़े हो चुके और पाता जवान था। दादा निरक्षर म थे। पिता ने कुछ पढ़ा था और लड्डा अत्र शिक्षित और संस्कृत रूप में हमारे सामने था। पीठिया में कितना परिवर्तन हुआ है। ट्रेन पर बठ कर सोनपुर स्टेशन पहुँचे। सोनपुर कभी मरे लिए घर द्वार था। महाना नहीं तो दिना यहा रूना, आमपाम के गावा में घूमना मरे लिए असाधारण बात नहीं थी, पर अब मैं कुछ पढ़े हा दे सकता था। सोनपुर गाव में जान का समय नहीं निराल सरता था। स्टेशन पर पुराने महर्मी नताजा बाबू जमुनामिह और मास्टर भागवत सिंह के अतिरिक्त साथी गिबबचनसिंह और दूसरे

पुरुष स्वागत करने के लिए आए। बाबू जमुनासिंह को उन साल पहले लोग ने नेताजी कहना शुरू किया था, जबकि का अभी यह नाम नहीं मिला था। वह और मास्टर भाग बूढ़े हो गए थे। स्टेजान ही पर चाय पिलाई गई फिर वहाँ लय में थोड़ी देर बठना पड़ा। यहाँ के शिक्षिता, विपयक अध्यापका न इस पत्रिका को वर्षों से निकालना शुरू किया जिससे हाती थी जब उसका कुछ अक छप भी हैं। फिर र गए। १९२१ से मैं इस स्थान से परिचित हूँ। लेकिन भू और बाता में परिवर्तन हुआ है। ओसारे के साथ कुछ का काफी बड़ा चबूतरा है, जिसमें डेढ़ सौ आत्मी बठ सकते हैं १९४२ के गहीदा का स्मारक है। सभा में तीन सौ के करी पुराने परिचितों और नई पीढ़ी ने अपने पुराने सुराजी क रूप से स्वागत किया। मैंने भी अपने का धय ध य माना। कराया। यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई, कि वह और मास्टर अत्र बुढ़ापे में निश्चित है। यही पर नयागाव हाई स्कूल व शत्रुघ्ननाथ तिवारी भी मिल गए। तिवारी का वह चेहरा २ जबकि वह १६ १८ वर्ष के जवान थे। मटिक पास निया की इच्छा थी और साथ ही देश के लिए काम करने की। छपरा में और अत्र भी मिलते थे। मैं उन्हें हमें प्रोत्साहित कि वह अपने सामने बड़ा लक्ष्य रखें। लेकिन सभी बड़ा लक्ष्य सकते। जब उस दिन फान पर तिवारी से बातचीत हुई और हुआ, कि वही तरण जब एक हाई स्कूल का बहुत योग्य हूँ मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। भोजनापरांत नयागाव का प्रोग्राम ३ नयागाव—जहाँ सड़क हो, वहाँ मोटर वस न चलती हो नहीं। यदि रेल का सुभीता हो, तब भी मोटर के लिए गुना जाती, यह भी बात नहीं। रेलवे अधिकारियों की रिपोर्ट से है, कि भारत की जनता का एक प्रतिशत रेल पर जम्पर चलता जाता है। इस एक प्रतिशत में वे मुमाफिर नहीं शामिल हैं, जा पर चलते हैं। जहाँ सरकारी रोडवज की बसें चलती हैं, वहाँ

नहा चलता। सोनपुर से छपरा रेल जाती है पर प्राइवेट बस भी यहाँ से बराबर जाती रहती हैं। आजमगढ़ के वारे में तो सुनन में आया कि जहाँ राइवेज ने सड़क को ल लिया है वहाँ पर प्राइवेट मोटर वाले माल ढोने की लारियाँ चलाने लग गई हैं। बलगाड़ी किराया करने की जगह लागा का लारी किराया करने में सस्तापन मालूम होता है। लारी में तिवारीजी और शीरेन्द्रजी के साथ हम चले। नयागाँव के ही प्राइमरी स्कूल में भिखारी अध्यापक हैं। भिखारा शापित जाति के हैं मुस्लिम से मट्टिक पास किया। कालेज पढ़ने की बड़ी इच्छा थी। एक तरफ जायिक कठिनाई और दूसरी तरफ दंग से शापण दूर करने की उमंग, दाना के कारण उनकी पढाई जाग नहीं बढ़ सकी। अब यहाँ एक प्राइमरी स्कूल में पढाते अपने विचारा का फलान में भी लग रहते हैं। मैं तो इनके जैसे लागा को असली तपस्वी मानता हूँ।

हाइ स्कूल के कितने ही कमरे बन चुके हैं। लटका की सभ्या बढ रही है उसी के अनुसार मकान भी नये बढने चले जा रहे हैं। नयागाँव ने कई गणित और प्रसिद्ध पुरुष पदा किये हैं। बनाविया के बाबू रघुवंग नारायण ही के थे। पटना विश्वविद्यालय के कुलपति बामुखे नारायण यही के हैं। छपरा में मिडिल तक की हिन्दी शिक्षा का निगुत्तन करना चलाने का तजर्वा जिस जिला स्कूल निरीक्षक के तत्वावधान में हुआ था वह यहाँ के है। आसपास की टूटी फूटी मूर्तियाँ और ध्वसावगणों से यह भी मालूम होता है कि इस भूमि में कितनी ही ऐतिहासिक निधियाँ छिपी हुई हैं। विद्याभिया और अध्यापकों ने स्वागत किया और मैं भाषण दिया। यहाँ से साने २ बजे जनता ट्रेन पकडनी थी, जिमके लिए स्टेशन पर चले गये। लटका की काफी सख्या स्टेज पर पहुँची। उनमें से कुछ रेल पर जाने वाले थे और कुछ आज के बकना का तमागा देवना चाहते थे। १/ १६ बजे से नीचे वाले लटके मला मरे वारे में क्या जानते होंगे? दादा हात तो कुछ बातें बतलाते पर अब समार में नहीं रहे। सुराजी कर्मों के तौर पर मुझे जानने वाला की सख्या अब छपरा में बहुत कम रह गई था। हाँ डन लिखने का गोक रमन वाले लेखक के तौर पर राटूलजी का नाम डन जानने हैं। ये लटके जा कितनी ही दूर तक सडे बडे स्टेशन पर मरी

जार देख रहे थे, व यदि सुन भी रहे होंगे तो उसे वही दूर की किमी जात्रा की तरह। हाइ स्कूल व विद्यार्थी थे। लेकिन सौ म से दस व पराम भी जूता नहीं था। कपड़े यदि फटे नहीं थे तो मैले जरूर थे। दोना का वारण गरीबी है। हमारा नता गरीबी का मुह वाला करने की लम्बी-लम्बी बातें करत है। लेकिन उनका प्रयत्न स लम्बी गरीबी का घर म नहीं बल्कि सठा व घर म दिन दूनी रात चौगुनी बढ रही है। वे अपने जीवन तन तो कभी गाँगा से दरिद्रता व भगान की जागा नहीं रखत और न उनका लिए प्रयत्न करत है।

छपरा—हमारी टेन साढ़े ५ बजे छपरा के करीब पहुँची। बहुत से पुराना मित्र और तरण स्टेज पर मिले। छपरा म हमारा से प० गारसनाथ निक्की का घर ही मेरा घर रहता आया है, इसलिए सोचे बहा गया। उसी दिन शाम का टौन हाल म भाषण का भी प्रबन्ध किया गया था इसलिए जाडी दर टहरकर वहाँ पहुँचा। टौनहाल म सभी जादमी कस आ सजते थे पर हाल म दजना परिचित चेहरा को देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। छपरा म चाह गहर म हो या देहात म मैं बराबर भोजपुरी म ही भाषण नेता रहा हू लेकिन आज न जान क्या वह बात टूट गई। दूसरा का हिदा म बालत देग मैं भी उसी म बाल पडा। त्रिबदीजी के डेरे पर जाने पर और कितने ही मित्र मिलन व लिए आए। एक दिन अभा और छपरा म जाकर रहना था।

परसा—बागिंग ता की गई कि मोटर बडे तडक ही मिल जाए और हम आज ही एकमा परसा, अतरन और हा सक ता सिवान भी होकर रात का छपरा लौट आगे। पर, माटरें बहुत कम लागा व पास रह गए हैं। सरकारी अफसर और कुछ सठ ही उस रखने की हिम्मत कर सकत हैं। पहले हर दा चार गाँव पर बाई एक बडा बाबू जमीदार होता जिसके पास पहल हाथी घाटा, बगी हाते। माटरा का जमाना जाया, तो उसने इन बाजा को माटर स बदल दिया। आज जमीदार के उठने पर वे बाबू नहीं रहे इसलिए माटरों की सुविधा नहीं। और बस टक मिथित एक मोटर सवा १० बजे आई, और हम छपरा छोडन म सफल हुए। साथ म बीरेद्रकुमार और श्री रामान द सिंह थे। दाना धूपनाथजी व भतीजे है। रामान द ने

श्री० ए० करके अपना समय राजधानी में लगाया, कांग्रेस के नेताओं में से
 है। हमारे सामने ही ता हाग में भाग था, और अभी बुढ़ापे की छाप उनके
 चेहरे पर देख रही थी। एकमात्र ४५ मिनट में पहुँचे। पचास मुराई नम और
 अच्छी जाति की गाएँ—जिनमें कुछ के साथ बछड़े भी थे—सड़क से जा
 रही थी। पता लगा, कलकत्ता से आ रही हैं। दूध देने समय मालिकाने
 उन्हें बलकत्ता में रखा जब विमुक्त गइ, तो उन्हें अपने घर पर ला रहा है।
 फिर ब्यापक पर उन्हें पटना तक पदल और फिर रेल पर चढ़ा कर बलकत्ता
 ल जाएगा। मरा राम राम छपरा के इन गोपालकों को आगीबादि देने लगा।
 बलकत्ता में दूध के लिए भारत की थोड़ी जाति की भैंसें और गाएँ आती
 हैं ता जिनमें १५ २० सर तक दूध देती हैं। विमुक्त जान पर उनका दा
 रपणा रोज कौन किया जाता। बहुत से तो विमुक्तों की गाया और भैंसा का काम
 दिया को दे देते हैं। अधिकतर दूध देने वाले पशु मार इतनी उच्च जाति के
 एक बियान दूध देकर मार लिए जाते हैं। कितनी भयंकर और सूखतापूर्ण
 रीति से पशुधन का सहारा होता है।

जिन गावों और महिषों की रक्षा और वृद्धि करना हमारा परम
 कर्तव्य है उसका इस तरह ध्यान हो रहा है। कम से कम इन गावों और
 भैंसों की रक्षा के लिए तो कानून बनाना चाहिए। पर, हमसे क्या पाने
 की मार की बात कम हो जायगी? विमुक्तों की गावों और भैंसों का मिठाकर
 तीन चार रुपया राज कौन सिलायगा? सभी गावों के छपरा या आसपाम
 के बिहारों जिला के नहीं हैं कि वह बलकत्ता से अपने माल को यहाँ ले
 आएंगे। इसका तो एक ही उपाय है कि बलकत्ता और इन नरह के दूधरे
 गहरों से सौ पचास मील पर ४०० ५०० एकड़ अच्छी गावों भूमि सरकार
 मुराजिन कर दे जहाँ विमुक्तों की गावों भैंसों का पाच-दस रुपया प्रत्येक फा लकर
 रख लिया जाए। मालिक बियाने पर उन्हें फिर से जान का हक रखे। इसमें
 दूधरे तरीका यह हो सकता है कि बड़े गहरों में शरीर का काम सरकार
 अपने हाथ में रखे जिनके कारण हारों जादमी बनकर हो जाएंगे,
 पचास भा ध्यान देना होगा। यही बातें माचत में जा रहा था कि पाम के
 बछड़े न बिल्लाकर दौड़िया। आनीन बछड़े एक रस्मी में बंधे चल रहे
 थे। माटर उनके पाम में बंधना देनी निकली। मरा स्वप्न भग हुआ, और

कलजा कितनी दर तक बाँपता रहा। एक तो इस खयाल से कि वही माटर उसका पैर पर चली जाता और दूसरा यह कि इस तरह के हजारों बच्चे और उनका मायें कलकत्ता में पैर रखन का ठौर न पा सकेगा या घुरा के नीचे जबह हा चुगी होगी।

एकमात्र लक्ष्मी बाबू से कह दिया कि हम सीधे परसा जा रहे हैं, वहाँ से लौटकर यहाँ आएंगे। परसा जब के मैं तीस वष बाद जा रहा था। १९२६ के साल कभी इस भूमि पर पर नहीं रखा। उस समय कांग्रेसी उम्मीदवार के खिलाफ यहाँ के बहुत जवदस्त जमींदार गिबजी जिला बोर्ड के लिए खड़े हुए थे। मैं कांग्रेस की जार से प्रचार के लिए यहाँ जाया था। जमींदार का खुश करने के लिए कुछ ऐसे लोग गाली गलोज पर उतर आए, जिनके बारे में मैं जानता था कि वे मेरे विराधी नहीं हो सकते। इसी समय मेने प्रतिज्ञा की थी कि जब तक जमींदारी प्रथा नहीं उठेगी तब तक परसा नहीं जाऊंगा। जब जाने का समय हो गया था, इसलिए मैं परसावासिया से भी अधिक लालसा के साथ यहाँ जाया था। पहले ही मठिया मिली। वही मठिया जहाँ का भावी महत्त बनाने के लिए महत्त लक्ष्मणदासजी मुझ बनारस में लाए थे। यदि मैं मठिया में टिक नहा सका और महत्त नहीं बन सका, तो उसमें किसी और का दाव नहीं बरिक् मेरी अपनी घुमक्कड़ी और विद्या की तीव्र जिज्ञासा का था। सचमुच ही मैं उस छोट से साल के भीतर रहकर कसे दस देशांतर विचर सकता था, कसे कण कण करके नान जित कर पाता। आज मठिया का रूप बदला हुआ था। दा मंदिर और समाधि तथा एकाध और घरा का छोटकर सभी नये मकान थे। सपडल और कच्ची दीवारों का हटाकर उनकी जगह पक्की इमारतें बन गई थी। मर गुरु महत्त लक्ष्मणदास का पक्के मकान का बनान की सनक थी। वह आमदनी की कुछ पर्वाह नहीं करत थे, और कज ल लेकर उस इट चूने पर लगा रहे थे। वह सार मठ का इटे चूने का बनान में मफल हुए। जिस वक्त मैं पकितया का लित रहा हूँ उस समय तीस वष बाद मठ का जाकर देखे तीन ही महीने हुए हैं। पर, मेरे मानस पटल पर तीस वष पहले का ही मठ अंकित है। गायद बुलाये के मन पर प्रतिबिम्ब अधिक गाढा नहीं हाता और जल्दी मिट भी जाता है। तब इटें चूने का नहीं और मिट्टी और सपडल

का यह मठ था उस समय सो-भा मूर्ति साधु पहा रहा करत थ । हर जगह चहल-पहल रहती थी । मेरे रहने समय (१८१३ ई०) में भी भाजन के वक्त दा दजन से अधिन साधु पाती मैं बैठत थ । अब ता जमाना हा बदल गया ।

मेरे वार वार भाग जाने पर निराग हाकर महन्तजा न अपन भतीजे श्री मत्यनारायण दास का चेला बनाकर महन्त बनाया । उनस पहले श्री वीर राधवदास गिष्य बने थ । वतमानजी बहुत साध माद हैं । वीर राधव दामजी अधिन हागियार हैं जोर मठ क प्रबन्ध का भार भी उही पर ज्याता है । दावा नौजवान थे जबकि पिछली वार मैंन मठ का दला था । अब दावा के बाल सफल हैं । जमींदारी प्रथा समाप्त हुई उमका प्रभाव मठा पर उतना नहीं पडा है । लकिन, लालबुधककटा न मठा क अधिकारिया की नाद हगम कर दी है । जब जब मठ की सम्पत्ति पर गाढ पडता, घुमक्की छोकर मैं महन्तजा क बुलान पर परमा आता और मेर आन स लाभ भी होता । यह बात हमारे दावा गुरभाई जानत थे । उन्हान सलाह पूछी । पता लगा, किमो अकिल क अजीण वाले मन्त न यह सिखाया है कि हम अपन मठा की सम्पत्ति को प्राद्वट धापित करें ता वह बच जायगी । मैंन समझाया जमींदारी प्रथा जोर जमींदारी के रूप में मौजूद सम्पत्ति ता कभा भा पहले की तरह नहीं रह सकती । जानत वाले का खेत पर अधिकार हागा, इस ब्रह्मा भी नहीं टाल सकता । मठ की सम्पत्ति को अगर साव जनिय धर्मोत्तर सम्पत्ति मानत हैं ता आपका विशय गियायन मिलेगी । जमींदारी स जा वापिक मालगुजारी मिलती रही है, उमम में बगूल-सहमोल क लिए दो चार सैकडा काटकर बाका नगद रुपया मिल जायगा । यह सुभीता किसान निजी जमींदारी बाल व्यक्ति का नहा है । इमक अतिगिन निजी जमींदार का कुछ बिगह हा अपनी खेता क लिए खेत का अधिनार हागा । आपके मठो में बीमियो साधु रहत हैं, उनके हिमान स मठा का अपनी निजा जान की बाका जमान खान का अधिनार हागा और मक्का बीगह आप खेती करा सकत हैं । यह सुभीता भी नहीं रहेगा, और वही बाम तास एकड जमान आपन मठ का भी मिलेगा, जा कि दूसरों का । बिहार ही में नहीं, उत्तर प्रन्थ में भी महन्ता में ऐसी हलचल है । जिनन ही महन्त पहले में ब्रह्म करक मठ को साधजनिक सम्पत्ति का निजी बना

चुने हैं। अभी ब्रह्मचारी मगधदेवजी कह रहे थे कि जब ता उत्तर प्रान्त के कितने ही महत्त एक आर से व्याह करने की साच रहे है। सावजनिक सम्पत्ति का इस तरह स ध्वस और लूट समूट हान दना किसी सरकार को गोभा नही देता। सरकार को उमनी रक्षा क लिए विधेय विधान बनाना चाहिए।

मठ म चारा तरफ घूमकर पागरे के तिनारे से हम पुराने मठ मे गए। मूल मठ यही था जा कि गाँव स सटा हुआ है, और जिसम गापाल मन्दिर है। १९१३ म भी यह काफी बडा मठ था। उससे पहले तो यहा बडा फाटक और उसने ऊपर शहनार्द या नगाडा बजाने वाले के बठने का स्थान तथा सैकडा आदमिया के ठहरन लायक मजान थ। महत्त की गद्दी यही है। जब मठ का सकुचित कर दिया गया है। यहाँ क एक मन्दिर (रामजी) का उठा कर पिछले मठ म ल गये हैं ता भी स्थिति बुरी नही है। गाव के बनियो म किसी की भक्ति ने जोर मारा और उसने गापाल मन्दिर क पग का नकली सगममर का बना दिया। गाँव के भीतर स हाकर हाई स्कूल म जाना था, वहाँ पर स्वागत की सभा हान वाली थी। तीस वय म परसा क बहुत स पुराने आदमी चल बस उनका स्थान लने वाले मर परिचित नही थ। पर, रामउदार बाबा का नाम ता सभी सुन चुक थे। जब किसी पडे लिखे जवान ने मेरी किसी कित्ताव की चर्चा की होगी, तो उसक गुस्जन न कहा—'तुम क्या जानो रामउदार बाबा को। उह हम पुजारीजा कहते थे। उसा परसा मठ म वह रहते थे। बडे अच्छे थ। वह रहे होत ता वही मठ क महत्त हाते। सुराज म काम करन लग, फिर न जान कहा चल गये।' उस भीड मे उन सैकडा मुखाम मरी आख परिचिता का ढूढ रही थी। 'बाइमवी सदी' म मैने जिस पुराने अच्छे बडे गाँव का दयनीय चित्र खीचा है वह यही परसा था, और उम दयनीय चित्र म जब भा काइ अतर नही पडा है। परसा बहुत पुराना ग्राम हागा। किसी समय यह एक सामन्त की राजधानी रही। परसा के बाबू वस्तुत उसा सामन्त की सत्ताने हैं। उनका निवास स्थान अब भी गढ कहा जाता है और गढ क चारा द्वार की खाई क कुछ अश जब भी मौजूद हैं। सामन्त की राजधानी म बाजार और गिल्प उद्याग होना ही चाहिए। परसा अपने कौस और फूठ क बतना क लिए प्रसिद्ध

था। अब भी देखा लाट ढाले जा रह हैं लेकिन वे भाग्य लौटाने म सफल नहा हुए।

गाँव से हात गड पर लकड़ी बाबू से मिलन गय। मरे समय म इनका और बाबू शिवजी का घर बहुत समृद्ध था। उसक बाद वत्रन बाबू थे। बाबू शिवजी क पिता बजनाय बाबू का भा मीन दया था। उनक बाद बाबू शिवजी की बड़ी तपी। उनक पुत्र राघवजी भी अच्छी बबुआइ करक मरे। अब उनका लडका है लेकिन जमींदारा प्रया उठन से पहल ही जमींदारी भीषण रूप से ऋणग्रस्त हा चुकी थी। लकड़ी बाबू उन आदमिया म थ जिनका कहने हैं— न ऊंगे स लेना न माघा का दना। ' मरल प्रकृति क पुरुष थे। ऐसे आदमी को जमींदारी प्रया उठाने वाली यत्ना बहुत पीडित नही कर सकता। बड़ी तपस्या स एक लडका हुआ था वट जवान हान लगा था कि इसी वक्त चल बसा। अब एन छाटा-मा बच्चा था। सुनत ही बच्चन बाबू भी चल बाय। फिर हम उनके माय गाँव से बाहर स्कूल म गय। दस स्कूल का स्थापित हुए पच्चीस से अधिक बप हा चुक हैं। मैं पहले पहल स्कूल म जाया था। लडका और अध्यापका न स्वागत का आयाजन किया था। लागा को एन ही दिन पहल तो मर आन की खबर लगी थी और समय का ठिठाना नही था इसलिए गाव और शास पास क लागा का मर चल जाने क बाद गवर मिली होगी। स्कूल सामाजिक परिवतन म काफी सहायक हात हैं। बाबू और गरीब क लडक एक साथ बैठकर पढते हैं, इसके कारण उनम भेदभाव कम हान लगत हैं। अब ता सामत-गुण क अवगाप जमींदारी प्रया के अत हा जान स यह सामाजिक विपमता और भी तजी स कम हो रही है। बाबू लोग पहल पढने की जरूरत नही समथत थ। बच्चन बाबू क लडक एम० ए० हाकर इसी स्कूल म अध्यापक हैं। वह विद्या क गुण का समझ सरत हैं। स्वागत और भाषण क बाद चलन की जल्दी थी क्वाकि आज ही एकमा और अतरसन म भी स्वागत-नमा हान वाली थी। स्कूल से लौटन वक्त मार बाजार क भीतर स जान वाली मडक हमन पाटर म नापी। बाजार क घरों म क्या परिवतन हुआ है यह दखना चाहता स। दूनानें कुछ ज्यादा बडी हैं चेहरे अधिकांश नय हैं। यही परिवतन था। सभा-स्थल पर ही एक हलवान् बुडिया अपने गरम चान करने क

लिए पहुँची। मैं न वैष्णव हाते समय उसे मात्र दीक्षा दी थी। मुयस दीक्षा लेने वाल स्त्री-मुरपो की सरया एक दर्जन स ज्यादा नहीं थी। जब माटर दरवाजे पर पहुँची, तो देखा उसमें समुर जगेसर भी जिंदा हैं। कमर टेढ़ी हो गई थी और गरीर में हाट मांस छाड और कुछ नहीं था। एक ही लडका था। वह जवानी में जाता रहा। उसकी बहू न अपने समुर की सेवा में ही अपना जीवन बिता दिया। समुर के कुवडे देह में न जाने कहीं स फुर्ती आ गई। मिठाई की दुकान में स जो अच्छी मिठाई थी, उसको इकट्ठा कर हम अर्पित किया। परसा में रहते सबरे का जलपान नहीं की दुकान स खरीदकर मरे लिए जाया करता था। बुढिया तो गद्गद हो गई थी। वह चरणामत लिए बिना कस छाल सकती थी और मैं उससे इन्कार करके उसने हृदय की चाट कस पहुँचा सकता था? बडी सडक पर पहुँचकर मठिया के पास मोटर को खडी कर हम फिर मठ में गये। वीर राघनदासजी बिना कुछ पचाये (गिलाये) नहीं छाड सकते थे। भात साग पूरी और हलवा खान में वही रस जाया जा कि १९१३ में आता था। सभी जात्मीय समन्त थे और सभी के मन में एक तरह का भारी उत्साह था।

एकमा में पहुँचते पहुँचते १ बजे से अधिक हो गया। लक्ष्मी बाबू ने भी भोजन का प्रबन्ध कर रखा था। खर, माना तो अपने हाथ में थी, और मैं न यहा के लिए भी जगह छाड रखी थी। काग्रस में काम करते वक्त जिन तरणो के साथ मरा घनिष्ठ सम्पर्क हुआ था उनमें लक्ष्मी बाबू खान स्थान रखते हैं। एकमा हैडक्वाटर रहने और यही उनका घर होने स उनका घर मरा अपना-सा था। सक्डा बार जचानक भी पहुँचकर मैं न उनके यहाँ भाजन किया हागा। उस वक्त घर के बडे पिता और चचा थे। पिता मान वरसा राजा की तहसीलदारी करते भागलपुर जिले में रहा करते थे। लक्ष्मी बाबू डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के वायस चेयरमैन भी रह चुके थे और जय काग्रसी एम० एल० ए० व। मैं कम्युनिस्ट हूँ, और वह काग्रसी। पर इससे क्या जरा भी वयक्तिक सम्बन्ध में हमारा जतर आ सकता था? मरे साम्यवादी विचारो का ता वह और उनके मित्र उस समय भी जानते थे जब मैं अस हयाग में उनके साथ काम करता था। "वाइमवी सदी" का खाल ता उम समय तक दिमाग में परिपक्व हो चुका था और १९२३ में वह काग्रज पर

भी उतर जाया था। भाजन के बाद स्कूल में गए। छात्रों के अतिरिक्त जिन पुराने मित्रों का पता लगा, सब आए थे। रामबहादुर लाल १६ १८ वर्ष के तरुण थे जब उन्होंने स्कूल छात्रवृत्त अमहयोग में काम करना शुरू किया था। अब वह बूढ़े हो गए थे। रामउदार राय हरिहर सिंह का जब चेहरा स्मृति पटल पर ही देग मलता था।

अतरसन—जल्दा जल्दी पढ़ी थी। कम से कम दिन रहने अतरसन पहुँच जाना जरूरी था ताकि वहाँ एकत्रित हुए लोग निराश न हों। अतरसन धूपनाथ का गाँव है। उनके भाई देवनारायण सिंह का ख्याल आये बिना इस समय नहीं रह सकता था। लेकिन पुरानी पीढ़ियों को पकड़कर बटाया नहीं जा सकता। इस घर में बाबू रामनरेश सिंह असहयोग के समय से ही कांग्रेस का काम करते रहे और अब भी उसी में हैं। उस समय वह घर का काम काज देखते थे और अब हामियापैथी के एक अच्छे डाक्टर हैं। उनके बुढ़ापे के वार में कष्ट की क्या आवश्यकता, जबकि उनके भतीजे जयलाल सिंह के सिर का दखन से मालूम होता था कि बाल नहीं लंबरी सफेद टोपी पहने हुए है। वीरेंद्र जयलाल आदि ममवयस्क आधे दर्जन से ऊपर इस घर के लडका का कभी मैन बच्चे देखा था। मालूम होता है, वह दिन बल ही गुजरा है। आज घर जाने पर उसी उमर के एक दर्जन से अधिक लडके खड़े दिखाई पड़े, यह उनकी जगली पीढ़ी है। बाबू रामनरेश सिंह और उनके घर के लोग ही के प्रयत्न का फल स्कूल है। प्राइमरी से उसे मिडिल और फिर हाई स्कूल किया। आजकल लागू शिक्षा का कितना रुचि है यह इसीसे मालूम होगा कि कोम डेड कोस के आदर यहाँ एकमात्र परमा, अतरसन, जलपुर बरेजा के पाँच हाई स्कूल हैं। और सभी जगह लडका की पूरी सरप्राइस है सभी स्कूल स्वावलम्बी हैं। अतरसन का स्कूल गाँव से बाहर बगीचे के छोर पर है। काफी इमारत बन गई हैं। यहाँ भी सभा में भाषण देता था। पुराने सहकर्मियों में लक्ष्मी बाबू हमार साथ ही थे, मधु बाबू भी और ५० रामदयाल वद्य भी जा मिले। रामदयाल जी सौभाग्यशाली हैं। इनके पिता अब भी जीवित हैं, और पुत्र के पुत्र का भी मुह देख लिया है। सभा में राधे बाबू रामनरेश सिंह के घर पर गए। वहाँ साग का मर लिए विधेपती से इन्तजाम किया गया था, एक छाटी

मौ चाय पार्टी हा गई । घर की महिलाआ म भी नई पीढी आ गई थी, जो बाबा का दशन किंग बिना कसे रह सकती थी ? उह भी दगन देकर ६ वजे छपरा पहुँच गए । सिवान गए दम बारह बप हो गए । वहाँ जाने की बडी इच्छा थी यदि माटर सपेर ही आ गई हाती, ता वहाँ भी हा जाए होते ।

१८ जनवरी का छपरा म ही रहना था । उस दिन सबेरे नौ वजे स ही प्रोग्राम शुरू हो गया । पहले अपनी पार्टी के साथिया के बीच प्रगतिशील साहित्य के सम्बन्ध म एक छोटी सी गाप्ठी हुई । यह देखकर प्रसन्नता हुई कि नई पीढी पिछली पीढी का स्थान लेने क लिए और भी उत्साह के साथ तैयार है । मध्याह्न भोजन नमदा बाबू के यहाँ हुआ । पहले यह और प० गोरखनाथ त्रिवेदी पडासी थ । नमदा बाबू और उनके अनुज जलेश्वर बाबू स मेरी पुरानी आत्मीयता है । दोपहर का राजेन्द्र कालेज पहुच । प्रिंसिपल मनोरजन प्रसाद न यदि परिचय म अतिगयोक्ति से काम लिया ता यह उनके अधिकार क भीतर की बान थी । 'फिरगिया के अमर गायक का मेरे साथ बहुत पुराना परिचय था । हिंदू युनिवर्सिटी म जब अध्यापक थ ता उस समय वहाँ जान पर जरूर मिलत । विश्वनाथ की नगरी छुडाकर छपरा लाने म मेरा ही हाथ था, इस वह कहना नहीं भूल । मनारजन बाबू जनता क आदमी हैं इसलिए जनता के दु ख सुख को कभी नहीं भूल सकते ।

छपरा म राजपूत स्कूल अब जगदम्ब कालेज क नाम से डिग्री कालेज बनने जा रहा था । अभी कालेज की दा कक्षाएँ खुली हैं, और उनम पाँच सौ त्रिचार्थी हा गए हैं यह बतलाता है कि शिक्षा की बडी माँग है । जगदम्ब कालेज क तरण प्रिंसिपल से बातचात करन के बाद पुरान छपरा म राजेन्द्र पुस्तकालय देखन गए । यह तेरह बप पहले एक किराए की छोटी पी काठरी म खुला था और अब वह अपने पक्क मकान म तथा अच्छी स्थिति मे हैं । शिक्षा और सम्पन्नता के बढन पर यह और भी सेवा कर सकगा । पुस्तकालय म दो तीन बहुमूत्यवान हस्तलिखित फारसी पुस्तकें भी ।

यहाँ से लौटकर श्रीमती विद्यावतीजी के वाणी मंदिर म गए । उनके

पति मगर्जनिह की याद बड़ी दुःख मालूम होती है। हिन्दू विश्वविद्यालय स पगई छाडकर उहाने पुस्तक का व्यवसाय शुरू किया। अच्छी तरह जमा भी नहा पाए थे कि जवानो ही म चल बस। विद्यावतीजी गुरुगुरु हर पुरजान के सस्यापक की लडकी थी। वही उह ससृत पढन का बहुत अच्छा अवसर मिला। ब्याह मगलजी म हुआ। तीन छाटे छोटे बच्चा का छाडकर मगलजी चले गए। उनका घर पोखरपुर (परसा घाना) एक गान पीत भद्र वृषिजीवी परिवार का था। उनक चचा तीन या चार भाई एन ही साथ रहा करते। छाटे चचा का गिशा का उतना अवसर तो नही मिला, पर जो कुछ भी था उससे उहाने अपने पान को बनाया था। छेती म नई बाना का अनुसरण करन क कारण उपज अच्छी हाती थी। घर क सभी लडका को उच्च गिशा दी गई। लडका का छाट लडकियाँ भी उनक घर म एम० ए० हैं। सबसे बड़ी प्रसन्नता मेरे लिए यह थी कि मगलजी क चचा की लडकी ने अभी हाल ही म अपनी राजपूत विरादरी को छाटकर ब्राह्मण लक्रे से ब्याह किया। वह बकर एम० ए० हैं। चर्चा आने पर विद्यावती जी ने कहा— अभी घर म लागा को इसकी खबर नहीं है।" इस मर्यादा भग को शिक्षित बूढे भी क्या पसंद कर सकते हैं? जिनक लक्रे स इम लडकी का ब्याह हुआ, वह स्वयं विलायत हा आए, अर्थात् पुराने विचार क अनुसार धमध्रष्ट है। इतिहास के एक माने हुए विद्वान् तथा एक कालज प्रसिपल हैं। लेकिन जब यह पता लगा कि लडके न राजपूत लडकी स ग्राह कर लिया ता उनको भारी धक्का लगा। कुछ लोग ता कहते हैं ब्याह होकर गिर पडे। गायद सोचते थे कि कम्बख्त न थोडा और इत जा रनिया होता ताकि मैं अपनी इकलौती लडकी का ब्याह कर दना। पर प्रिसिपल साहब गलत समझ रह थे। लडके के कारण उन्हें अपनी जानि के ब्राह्मण दामाद क मिलने म कोई दिक्कत नही हाती। विद्यावतीजी न काम का धून सभाला। अपनी दो लडकिया का अग्रजुएट बनाकर उनका ग्राह कर चुकी है। एक लाख रुपय का मकान बन रहा है जिसका बहुत हिस्सा बन चुका है। फिर शाम को ब्याहमान देने स पहल मित्रा को दूढ़कर मिलन गया। पाण्डे रघुनाथ बूढ हो गए हैं पहचानन म भी कुछ निक्कत हुई। सोटम् प०

मो चाय पार्टी हो गई। घर की महिलाओं में भी नई पीढ़ी आरवावा का दशन किए बिना कस रह सकती थी? उह भा दग वजे छपरा पहुँच गए। सिवान गए दस बारह वष हा गए। वह बड़ी इच्छा थी यदि मोटर सबेरे ही आ गई हाती, तो वहाँ भी हात।

१८ जनवरी का छपरा म ही रहना था। उस दिन सबेरे नौ प्रोग्राम शुरू हो गया। पहल अपनी पार्टी के साधिया के बीच साहित्य के सम्बन्ध में एक छाटी-सी गाण्टी हुई। यह देखकर प्र कि नई पीढ़ी पिछली पीढ़ी का स्थान लेने के लिए और भी उत्स तैयार है। मध्याह्न भाजन नमदा बाबू के यहाँ हुआ। पहले यह गारपनाथ त्रिबेदी पडोसाथ। नमदा बाबू और उनके अनुज ' बाबू से मरी पुरानी आत्मीयता है। दोपहर का राजेद्र काल प्रिंसिपल मनारजन प्रसाद ने यदि परिचय में अतिशयोक्ति से व तो यह उनके अधिकार के भीतर की बात थी। ' फिरगिया'। गायक का मर साथ बहुत पुराना परिचय था। हिंदू युनिवर्सि अध्यापक थे, तो उस समय वहाँ जाने पर जरूर मिलते। वि नगरी छुड़ाकर छपरा लान में मरा हा हाथ था, इसे वह कहना मनोरजन बाबू जनता के आदमा हैं इसलिए जनता के दु ख सु नही भूल सकते।

छपरा में राजपूत स्कूल अब जगदम्ब कालेज के नाम से वि वनने जा रहा था। अभी कालेज की दीवारें खुली है, और नौ विद्यार्थी हो गए हैं यह बतलाता है कि शिक्षा की बड़ी माँग कालेज के तरफ प्रिंसिपल से बातचीत करने के बाद पुरा राजेद्र पुस्तकालय देखने गए। यह तेरह वष पहले एक किराए, सी काठरी में खुला था और अब वह अपने पक्के मकान में स्थिति में है। शिक्षा और सम्पन्नता के बढन पर यह और मकगा। पुस्तकालय में दो तीन बहुमूल्यवान हस्तलिखित पा थी।

वहाँ से लौटकर श्रीमती विद्यावती जी के वाणी में

पति मगत्रमिह की याद बड़ी दुःखद मालूम हाती है। हिन्दू विश्वविद्यालय से पढाई छोड़कर उद्दान पुस्तक का व्यवसाय शुरू किया। अच्छी तरह जमा भी नहा पाए थे कि जत्रानी ही में चल बस। विद्यावतीजी गुरुकुल हर पुरजान के सस्थापक की लडकी थी। वहाँ उन्हें मस्हन पढन का बहुत अच्छा अवसर मिला। ब्याह मगलजी में हुआ। तीन छोटे छोट बच्चा का छाडकर मगलजी चल गए। उनका घर पाखरपुर (परसा थाना) एक खाने पीने मद्र कृपिजीवी परिवार का था। उनक चचा तीन या चार भाई एक ही माय रत्ना करत। छोटे चचा का गिना का उनका अवभर ता नही मिला, पर जो कुछ ना था उसस उन्होंने अपन जान को बडामा था। खेती म नई बाना का अनुमरण करन क कारण उपज अच्छी हाती थी। घर क सभी लडकी को उच्च शिक्षा दी गई। लडका को छोड लडकियाँ भी उनके घर म एम० ए० हैं। सबसे बडी प्रसन्नता मेर लिए यह थी कि मगलजा क चचा की लडकी ने अभी हाल ही म अपनी राजपूत विरादरी का छोडकर ब्राह्मण लडके से ब्याह किया। वह डबल एम० ए० हैं। चर्चा जान पर विद्यावती जी ने कहा— अभी घर म लाग का इसकी खबर नही है। इस मयादा भग को निमित्त बूढे भी क्या पमाद कर सकते हैं ? जिनके लडके से इस लडकी का ब्याह हुआ, वह स्वयं निलायत हा आए, अर्थात् पुराने विचार क अनुसार घमन्नष्ट है। इतिहास के एक भागे हुए विद्वान् तथा एक कालेज क प्रिंसिपल हैं। लकिन जब यह पता लगा कि लडके न राजपूत लडकी म ब्याह कर लिया तो उनको भारी धक्का लगा। कुछ लाग ता कहते हैं, बटोरा होकर गिर पडे। गाय साचते थे कि कम्यन् न थोडा और अत-जार किया हाता ताकि मैं अपनी इषलीती लडकी का ब्याह कर दता। पर, प्रिंसिपल साहब गलत समझ रहे थे। लडके क कारण उन्हें अपनी जाति क ब्राह्मण दामाद क मित्रन म बाई दिक्कत नही हाता। विद्यावतीजी न काम का खूब मंत्राला। अपना दा लडकिया का प्रजुएट बनाकर उनका ब्याह कर चुकी हैं। एक लाग खपद का मजान बन रहा है जिसका बत-हिस्सा बन चुका है।

फिर गाम का ब्याख्यान देने से पहले मित्रा का दूढ़कर मिलन गया। पाण्डे रघुनाथ बूटे हा गए हैं पहचानने म भी कुछ दिक्कत हुई। साहम ५०

भरतजी तो अपन उसी रूप में वर्षों से दिखाई पड़ते हैं। उनकी सस्कृत माध्यम वाली छाटी पाठशाला ठीक से चल रही है। सस्कृत बोलन चलाने का अभ्यास हा जाता है। जा लड़के तीन चार साल यहाँ पढ़ जात है, व मुनि-वासिटी तक के लिए सस्कृत का कमाई कर लेत हैं इसलिए विद्यार्थियाँ क मिलने में दिक्कत नहीं है। म्युनिसिपल भदान में भाषण देने के बाद साहित्य प्रेस में साहित्य गोष्ठी हुई, जहाँ छपरा क तरुण साहित्यकारों से मिलने का मौका मिला। ११ बजे लौटकर त्रिवेदीजी के घर पर पहुँचा। उाक पुन विदु ने बड़े प्रेम से मछली बनाकर तयार की। रात को गरिष्ठ भाजन करने का मेरा नियम नहीं है लेकिन प्रेम से बन हुए उस पदार्थ का छानना नहीं चाहता था।

पटना—१६ तारीख का जधेरा रहते ही स्टेशन पर पहुँचा। ट्रेन ४ बजकर ४० मिनट पर छूटी। ३५ बज के मिनट ५० गारखनाथ त्रिवेदी अभी भी गरीर से दृढ़ थे यह जानकर सतोष हुआ। सबसे छोटा लड़का वर्षों हुए घर छोड़कर चला गया तब से उसका पता नहीं लगा। बाकी लड़कें अपने काम पर लग हुए हैं इसलिए उह घर की कोई चिन्ता नहीं। सोन पुर से गाड़ी बदल कर गंगा के किनारे पहुँचे, और जहाज से ११ बजे पटना पहुँच गये। सिवान के मास्टर साहब भी आए हुए थे। और डा० चरि विहारी मिश्र भी शाम का आ गए। उस दिन ४ बजे बी० एन० कालेज की राजनीतिक परिषद् में भाषण देना पड़ा। फिर साडे ६ बज सम्मेलन भवन में साहित्यिक गोष्ठी हुई, जिसमें हिन्दी की स्थिति पर भाषण देते हुए मैंने कहा—'उदू भी हिन्दी हा है, उस पराई भाषा नहा समझना चाहिए। उसकी सभी बहुमूल्य वृत्तियाँ का नागरी जखरा में छा देना चाहिए।'

२० जनवरी का भी पटना ही में रहना था। अब तक लोगों का पत्तौर से पता लग गया था इसलिए सबेरे से १० बजे रात तक गाष्ठी चलती रहा। बीच में सास्कृतिक विद्यालय में श्री महेन्द्र साय गया। ब्रह्मचारी भगवदव से मुलाकात हुई। विद्यार्थियों की ४० ५० से अधिक नहीं थी। पिछली बार आन पर देखा था, ५८ विद्यार्थी सस्कृत में बानचीत करते हैं और उनका कारण सस्कृत में

काफी प्रगति थी। अब वह नियम शिथिल कर लिया गया था। ऐसे संस्कृत माध्यमवाले स्कूल लाभदायक सिद्ध हाम। मैं सम्पत्ता हूँ विद्यालय ने उस नियम को न रख कर अपनी जनता के माग म बाधा डाला है।

उसी दिन शाम का श्री द्वारिका प्रसाद गर्मा आए। गर्मानी भूमिहार ब्राह्मण भ पहले जाई० सी० एम० थे। बहुत तेज थ लेकिन हमारी पुरानी संस्कृति जादमी को ले डूबे बिना कम रह मनता ? उनक सिर पर वेदात्त का नूत सवार हुआ और पेंशन लेन की भी प्रतीक्षा किए बिना कलकटरी से इस्तीफा दे दिया। कई वर्षों तक घर छात्र स्वामी बन धूमने रहे वेदात्त का अच्छा अध्ययन किया। अब भी जरबिंद क फेरे म ह और दशन क चक्कर स बाहर नहीं हैं। ता भी भगवा छोडकर सफ़्त वस्त्र म अपने घर म रहना बनता है कि कुछ परिवर्तन हुआ है। बहुत पढ़न हे और धोलने म भी कमी नहीं करत यद्यपि उनकी बातें सभी क समझ की होती हैं। पर, नई पीढी इस दाप मानता है। गर्माजी का एक ही पुत्र था जा मर गया है। मुम्बिन है उसका कुछ प्रभाव पडा हा लेकिन, उनका भतीजा पुत्र ही समान है। जब हमारी बात चल रही थी उसी समय डा० बद्रीनारायण प्रसाद के पुत्र ए० देवेशप्रसाद और उनकी पत्नी ने आकर गर्माजी के चरण छुपे। उन्होंने प्रेम से आतिर्वाद दिया। फिर बटी-दामाद न दादा को चाय पान भी कराया। मुने इतम अत्यधिक प्रसन्नता हुई। मैंने यहा देखा कि नई पाढी बुपचाप भाषण समस्याका का जासानी से हल कर रही है। डा० दवग गति से मुनार है। उनक पिता विहार के एक प्रसिद्ध डाक्टर तथा वहा क सबसे बडे मेडिकल कालेज क अवसरप्राप्त प्रिंसिपल हैं। इसलिए जहा तक शिक्षा और संस्कृति का सम्बन्ध है, वह ऊंचे बग के हैं। उनकी पत्नी आड० सी० एस० गर्मा की पोती और जानि से भूमिहार है। बिहार म इसी का रोना ता एग रोत हैं कि वहा जात-पान का बहुत ख्याल दिया जाता है, त्रिसक कारण राजनीति और सामाजिक जावन मे बड़ी बुराईयाँ आ गई हैं। उसका ताडन का साहस डा० देवेश और उनकी पत्नी न किया। वह हिम्मतवाले तरुण हैं। एकिन उनमे भी कम साधुवाद क पाम थी द्वारिकाप्रसाद गर्मा नहीं हैं, जा कि एम सम्भव का इस तरह से स्वागत कर रह हैं। श्री द्वारिका बाबू के

का मेरा सम्बन्ध

असहयोग के जमाने में बहुत घनिष्ठ था। एक समय कई महीने तक हम एक साथ हजारीबाग जेल में रहे। वही मेरे सख्त कर चला आया था लेकिन लाल बाबू जीवित नहीं निकल सके। अपने हाथ से परोस कर खिलानेवाली वह के मुँह में जब मैं सुना कि वह लाल बाबू के नतीजे की लडकी है तो मुझे भी उनके इस साहस का कुछ अभिमान हुआ।

य बातें अभी छिट फुट देगी जा रही हैं पर असहयोग के जमाने में एक पार्टी में लाना भी छिट फुट ही शुरू हुआ था और हिन्दू मीठनालय भी उसी समय पहले पहल जहाँ-तहाँ खड़े होन लगे। आज उन्हीं का प्रताप है कि खाने में अब कोई परहेज नहीं है। इसी तरह यह जात पति का तोड़ना भी जो २०वीं शताब्दी के उत्तरार्ध के आरम्भ होने के साथ हुआ है, वह अगले २५-३० वर्षों में ही इतना बढ़ जाएगा कि हजारों वर्षों की व्यवस्था में मजबूत संघर्षी जाने वाली दीवारें ढह के रहेंगी। बड़े नौजवानों के रास्त में रोड़ा न अटका व्यवस्था का अपमान खिर पर न उठायें। मेरे एक दूसरे दोस्त ने इस विषय में कुछ कार्रवाई दिखलाई। वह स्वयं गुरुकुल में पढ़े रात्र समाज के फ्लैटफॉर्म से न जाने कितनी मतब जात पति के खिलाफ वाले हाग। असहयोग और कांग्रेस में बराबर काम किया। अपनी लडकी को पढ़ाकर एम० ए० और वकील बनाया। वह क्वालन करन लगी। नाबालिग नहीं थी। अपने भले बुरे का गमझनेवाली थी। ब्राह्मणों की लडकी होने हुए उसने एक भूमिहार प्रोफेसर से हाल ही में शाद किया। पिता का मारा सुधारवाला रफू चक्कर हो गया। सुना है उनके इसका इतना घक्का लगा कि बाल बढ़ाकर घर से निकल गये। समझा, लडकी ने नाक बटा दी। जाखिर लडकी ने जिस तरफ की अपना साथी चुना, वह भी तो एक ब्राह्मण ही है। उनका देगत हुए द्वारिका बाबू का व्यवहार कितना प्रिय था? डा० देवेण की बीबी के साथ उनके मास मसुर बिनाप आत्मोपता दिखलात। बसा हाना भी चाहिए। तरुणी को उसकी जातवाली महिलाएँ कभी कभी जयन व्यवहार से प्रवट कर देनी ही होगी— तुमने जानि से बाहर पाह कर नञ्ठा नहीं किया।

आज राम का राग भोजन दवेन्द्र और कुसुम के घर पर हुआ। डाक्टर ने दाँता को भर दिया। चलो एक बला से तो छुट्टा मिली। उस दिन

चंद्रमा भाई भी मिले। हाश सँभालते ही उन्होंने देश के लिए सर्वोत्सर्ग किया। यदि देगडोही को तलवार के घाट उतार कर फाँसी पर नहीं चढ़ा पाय तो इसे सयोग कहना चाहिए। कम्युनिस्ट हैं, इसलिए आज के ग़ासन से कोई अवलम्ब नहीं। यह जानकर दुःख हुआ कि उनका परिवार आर्थिक कठिनाइयाँ में है।

कलकत्ता

कलकत्तावाणी ट्रेन बड़े कुसमय की थी। दो घट लेट रही नहीं ता उसे गाढ़े ६ बज सवेरे जाना चाहिए था। धूपनाथजी भी मिलन ही के लिए यहाँ आए थे, और अब कयूल तर साथ चले। कयूल म ट्रेन दो घण्टा रुकी रही। माटूम हुआ भाषावार प्रात की माँग व सम्प्रदाय म जो निश्चय भारत सरकार ने किया है, उमर विरोध म कलकत्ता म आज पूरी हड़ताल है। इसका पता तो हम भी मालूम था लेकिन विश्वास था हड़ताल गाम तर जरूर खनम हो जाणगी। ट्रेन भी गाम करके ही कलकत्ता पहुँचना चाहती थी। अग्रजा व कितने हा वगनाभापी आने त्रिहार व भीतर और कितने ही हिंदोभापी इलाके बगाल व भीतर रख दिये थ। प्रदगा व निर्माण म नहरू की सरकार अग्रजा के पदचिह्न पर ही चलना चाहती है। नहरे वार वार कहते हैं— 'इस मुन्छ चीज व लिए कतना आग्रह क्या ? भाषावाद नीच मनावसि का शतक है।' उनकी चली हाती तो भाषावार प्रात व वाद की सात पारसा नीच दवा दिय हाते। लेकिन लाग मनुष्य म्पण मगाश्चरति" नहीं है। अपनी भाषा व साथ जिस व्यक्ति का प्रेम नहीं वह मस्वृतिविहीन है। भाषा कवल गौर की चीज नहीं, वह एक बड़ी शक्ति है। यदि जनता के साथ घनिष्ठ सम्पर्क स्थापित करना है यदि जनता का गामन म गामिल करना है तो उसकी भाषा लिए बिना एक कदम भी आगे नहीं चला जा सकता। पर इस इन्दोआरिलियन साहवा के लिए क्या कहा जाये ? अपने ता उनका किसी जनभाष स स्नह और सम्पर्क नहीं, और

जिनका उसके द्वारा धरती में सम्पर्क है उस हीनवर्ति का बतलात है। जवानी जमा खचक लिए नहह भले ही कभी हिन्दी के प्रति आदर दिखारें और अंग्रेजी की गान में कुछ बह भो दें, लेकिन वह मन में समझत हैं कि अंग्रेजी हमारे शासन की भाषा रहती तो कितना अच्छा होता। लेकिन भाषा के दीवान रामलुजा के लिए क्या कहना? वह अपनी कुवानी मकराटा का उत्तजित कर दत है और जनता पागल हार कर राडा की लाज-सम्पत्ति का नष्ट कर दती है। वह भाषा के लिए अहिंसक सर-कार की गालिया को छाना पर लेन के लिए तैयार है। यह बहुत बडा सिर दद है। अभी महाराष्ट्र के कांग्रेसी नेता ने कहा—यदि बम्बई को उसके जायज प्रदण महाराष्ट्र में नहीं मिलाया गया तो कांग्रेस के टिकट पर महा-राष्ट्र में बिसी का गडा नही किया जा सकता, और बडा किय गान पर वह जीन नहीं सकता। नेहू और उनके अनुचरों की नींद हराम हो गई है।

एक दिन भाषानुसार प्रदण बनान में उनको जानाकानी क्या? गांधीजी न जिन बडे उडे नत्रा का मायना ही उसमें एक भाषानुसार प्रान्त निर्माण भी था। अब उसमें मुह फेरने की जरूरत क्या? और इसमें त्विक्त क्या है? कांग्रेसी नेतागण हरक चीज का ऊपर से क्या गदना चाहती है जार ऐमा जगह पर जहा पर कि उसकी जकल गुम हो गई है। लागा के बहुमत के अनुसार त्रिमादग्रस्त एगना के वार में क्या नहीं निणय किया जाता? क्या बम्बई के लागा के वाट पर भाषा का निणय करना अच्छा है या पुलिस को गोलिया से सत्तर-भत्तर आदिमिया को भून दना? फिर यह सग्या सत्तर ही थडे ही रहगो। मतदान में खच और प्रणय की दिक्कत का बताना भी बकार है। जवन ता खच और प्रबध करना भा पडे तो जनता के खून से हाथ रोगने में वह अच्छा है। जो नहहगाही अपन दूतावासा पर खच करने में मुगल बादशाहा में भी अधिक उदारता दिखलाती है, वह खच का बहाना बने कर सकता है। फिर खच का भी काद बात नहीं क्याकि विवादग्रस्त इलाका का विचाराधीन रखकर उसका अन्तिम निणय अगले सावजनिक चुनाव के साथ वाट लेकर किया जा सकता है।

धूपनायजी क्लेम चल गय। हमारा ट्रेन माडे ६ बजे रात को हववा स्टेशन पर पहुँची। श्री मणिरूपज्याति जी स्टेशन पर आय थे। उन्होंने अपना

अफिस दूमरी जगह पर बदला था इसलिए हमन समझा, निवासस्थान भी बदल गया होगा पर वह रहन अब भी थ ४, रामजीदाम जेटिया लेन म । मसूरी जसी सर्दी नीचे उत्तरन पर नही रही पर तब भी पटना तक वह सतम नही हुई थी । यह असली जाने का मौसम था लेकिन कलकत्ता म वह नाममान रह गई थी ।

२२ जनवरी का रविवार था । लेकिन मुझे छुट्टी नही मनानी थी । जिन मित्रा स मिलना जरूरी था वहाँ हा आना चाहता था । १० बजे महादेव भाई भी आ गए और फिर सेंगरजी भी । १२ बजे भाजन करन क बाद महादेव भाई क साथ माटर स चले । मणिहृपजी को अपन काम क लिए कार की जरूरत पडती पर उहाने उस मेरे जिम्म कर दिया था । इससे कलकत्ता शहर म दस पांच मोल् दूर जाकर मित्रा स मिलन म बहुत सुभीता था । टाम या बम दिमागी अडचन की ही सवारी नही है वल्कि मुग ता चोट फांट से बहुत बचकर रहन की जरूरत पडती है, इसलिए भी उनका लेना पम द नही करता । पहले डा० भूपद्रदत्त क पास गये । अब ७० से ऊपर क हा गये हैं ! वर्षों से हायवेटीज के मरीज हैं, इसलिए स्वास्थ्य क अच्छा देखने की आशा क्या हो सकती था ? पर दिमाग उनका अब भी सचेष्ट है । उनका बडे भाई श्री महेन्द्रदत्त ८० मे ऊपर हा गये हैं । अब अधिकतर लेटे रहन है स्मति बहुत कमजोर हा गई है । स्वामी विवेका नंद क अनुज हान के कारण महेन्द्र दाबू का भक्त लाग अपनी श्रद्धा जपित करना जरूरी समझते है । भूपेन दा अनीश्वरवादी मार्क्सिस्ट हैं लेकिन महेन्द्र दा अपन बडे भाई जगत् प्रसिद्ध सयासी के वेदान्त स नाता नहा ताड इसलिए जब नवविवाहित वर वधू आगीर्वादि लेन आत है तो उह आगीर्वादि भी देत हैं । हम भी मीठी खीरे प्रसाद क रूप में मिली । बहुत मुश्किल से आधा ही खी ह सक । कुछ ही महीना म उनका देहांत हो गया । श्री गोपाल हालदार घर पर नही मिले । हम महामहापाध्याय विदु दोखर भट्टाचार्य के दगा क लिए गये । पिछली बार ही बाधक्य उन पर हाबी हो गया था । अब की बार ता वह और भी लटक गये थ । शरीर म हाड-मास रह गया था हाथ भी हिलता था श्वणगति भी निबल हा गई थी, पर बिना बश्मे के कितान पढ लेते थे । उनकी वही पुरानी स्नेहपूण

मुस्कान अब भी अपरिवर्तित रूप में मौजूद था। स्मृति क्षण हान पर भी अभी काय करी थी। पुस्तक को सामने रखे उस वक़्त दब रह थे। आग्रह करने पर ही उठ खड़े हुए। बीम बप हुए असंग के महान् ग्रन्थ 'पागवर्षा-भूमि' का तिव्वन संलाय। महामहापाध्याय एक दजत साल से उसक सम्पादन में लगे थे। यदि प्रेस का सहयोग मिला होता तो वह अब तन प्रकाशित हो गई होता लेकिन वह चीटी की चाल से काम कर रहा था। महामहापाध्याय पिछली बार भी निरागा पकट कर रहे थे और अब तो कह रहे थे—'जल्दी ही इसमें आपके पाम भेज दूंगा आप ही हमकी नैया पार करेंगे।' उनके शरीर और स्वास्थ्य की स्थिति देखकर बड़ी चिन्ता हो रही थी। यद्यपि अपन बीघ जीवन में एक एक दिन का उहनि मूल्य चुका लिया था पर ऐस ऋषि को अपन बीच में जान का खयाल भी कौन करसकता है? दा घटा तक वहां बैठे बात करत दाना का तपित नहीं हो रहा था।

फिर सुनीति वाकू के निवास पर दाईं घटा भिन्न भिन्न विषया पर बातचीत करते रह। आयु इनकी भी काफ़ी है लेकिन शरीर अभी बिल्कुल स्वस्थ है, और मस्तिष्क पढ़ते ही का तरह काम करता है। मेरे लिए यह समझना भी मुश्किल है, एक प्रवर बुद्धि रखने वाला व्यक्ति कैसे अंग्रेजी का अपन दंग में सामने और अध्ययन के काय के लिए अनिवाय समझता है। वस्तुतः वचन से ही अंग्रेजी और अंग्रेजी के घनिष्ट प्रभाव में जान का ही यह परिणाम है। अंग्रेजी बिना शिक्षा का स्तर गिर जायगा। पर अंग्रेजी का स्तर स्वयं बड़ा सजी से गिर रहा है। उसका उच्चा उठाने के लिए एक ही रास्ता है कि परीक्षा में बैठने वाले विद्यार्थियों में १० सक्का में अधिक का पास न किया जाए। लेकिन, फिर यह भी दम्बता होगा कि ६० सक्का फेल हुए लड़के धुपचाप उस कसार्पन का बदला करन के लिए तयार होंगे? यदि यह शक्ति नहीं है तो अंग्रेजी के स्तर का ऊँचे करन का बात बकवास भर है। अंग्रेजी के नाम पर कुछ परिवारों के लड़कों को उच्च नौकरिया में इजारेदार रखने के सिवा और कुछ नहीं भिया जा सकता। अंग्रेजी के स्तर ऊँचा करन की आवश्यकता क्या है? हमारी भाषाओं में ज्ञान विज्ञान का सारी शिक्षा दी जा सकती है। पाठ्य-पुस्तकों की कमी का बहाना निलजाना का पराकाष्ठा है। पाठ्य-पुस्तकों के लिखन और छापन बात देना में सक्का

मौजूद हैं और जब भी वी० ए० वी० एस-सी० तंत्र की प्रायः सभी विषयों पर पुस्तक लिखी जा चुकी है। यदि उनकी अनिवायता हा तो सभी तरह की पाठ्य पुस्तकों के तयार होने में देर नहीं लगेगी। सरकार का उसमें बरोड़ा स्पष्ट रख करने की भी आवश्यकता नहीं। यदि यह कहा जाए कि हिन्दी बंगला आदि हमारी भाषाएँ अभी साइंस और गिम्नासिक आवश्यक साहित्य के लिए अपूर्ण हैं तो दुनिया की भाषा की कौनसी भाषा है जो उसका लिए अपन का पूरा समतली है। रूसी भाषा वाले उच्च अनुसन्धान और तत्सम्बन्धी साहित्य के लिए अपनी भाषा का अपूर्ण समतली है। इसीलिए वहाँ हरक अनुसन्धानकर्ता के लिए जर्मन फ्रेंच और इंग्लिश या अपन विषय के समझाने भर का ज्ञान आवश्यक समझा जाता है। यही बात फ्रेंच इंग्लिश और जर्मन भाषा वाले भी मानते हैं। यदि उनका अपन प्रथम श्रेणी के साइन्सबन्धी दूसरी भाषाओं की अनुसन्धान परिभाषा का स्पष्ट नहीं पढ़ सकते तो उनके अनुवाद उनका सामने उपस्थित किये जाते हैं। हमारी भाषाएँ भी यह कर सकती हैं। जब मुनीति बाबू जैसे व्यक्ति भी अंग्रेजी की अनिवायता की बात कहते हैं तो मुझे तो सन्देह होना लगता है कि कौन से ही भाग पटी है। अंग्रेजी ही क्यों रूसी, जर्मन, फ्रेंच का भी कामचलाऊ ज्ञान हमारे अनुसन्धानकर्ताओं के लिए आवश्यक है। हमारे कृतज्ञता के लिए दूसरी भाषाओं का जानने की भी आवश्यकता है। रूस चीन जापान आदि देशों में अंग्रेजी के भरोसे घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करने की कोशिश हम नहीं करनी चाहिए। अंग्रेजी पर पूरी कमान्ड रखने वाले राजदूत की पकिंग या मास्को में क्या आवश्यकता है ?

मुनीति बाबू चीन से बहुत प्रभावित हैं। एक चीनी पुस्तक का दिखला कर बतला रहे थे कि दक्खिन डा० रघुवीर ने इस अपना मौलिक काम कह कर छपवाया है। यह तो सीधी ठगो है। डा० रघुवीर का ही क्यों दाप दिया जाए। कितने ही लोग ऐसे व्यापार में कुशल हैं। आज के महाप्रभु गम्भीरता का धाँडे हा दायत हैं वह तो खुद डींग मारते हैं और दूसरा क डींग के प्रभाव में आ जाते हैं। 'स्वाधानता' कार्यालय में छोड़ी दर बात पीत कर रात का हम घर लौटे।

आज माटर बिगड़ गई थी, इसलिए वही दूर नहीं जा सका। यही

कलाकार स्ट्रीट और अफीम चौरस्ते तक धूम आए। अफीम चौरस्ते का १९०७ और १९०६ वाला रूप अब नहीं है, और न नुकराड पर की अधिकतर खुली एकमजिला फ्लवाइ की दूकान ही है। चाटू जितनी बार नये रूप की दूबें, पर पुराना नक्शा ही दिमाग पर अंकित रहना चाहता है। हमन अभी और भी जगहा म जान का प्रोग्राम रखा था, और २० या २१ फरवरी तक मसूरी लौटने की जागा थी। जाजमगड वाला का विगप आग्रह था। उहान सब तयारी कर ली थी। पर कमला को दस साल एम० ए० फाइनल की परीक्षा दनी थी। उसकी तयारी मे विघ्न हो रहा था इसलिए लखनऊ छाडकर वाफी सनी प्रोग्रामो का छोडकर जल्दी से जल्दी मसूरी पहुँचना जरूरी था। बौद्ध संस्कृति' को छपकर तैयार हुए दो साल स भी ऊपर हा गए लेकिन बुरा हा टेक्स्ट-बुक के काम का। 'नेपाल' का उसी न राक रता है और उसी क कारण बौद्ध संस्कृति दा साल से निकलन का नाम नहीं लेता। मैं जानू रामगोविन्दसिंह से कहा कि इस साल बुद्ध की २५वीं शताब्दी मनाई जा रहा है उसम यह पुस्तक काफी विव जायगी इसलिए उसे निकाल द। मैं जानता था बात का कोई प्रभाव नहीं रहगा इसलिए ब्लो का टीव करा उह छपवाकर कम से कम एक काफी अपने साथ लेने के लिए मजबूर किया। यद्यपि इन पक्किया के लिखन के समय (२१ अप्रैल १९५६) तक कोई काफी मेर पाम नहीं आई पर महादेव भाई की चिटठी से मालूम हुआ कि पुस्तक प्रकाशित हा गई और तीन सौ कापियाँ निकल नी गइ। कमला की चर्चरी बहिन यहा हा रहता है। टमक पति बाला क राज्यपाल के किसी दफ्तर मे नौकर है। राज्यपाल भवन कलकत्ता के राजधानी रहत समय बायसराय भवन था इसलिए वह कितना बिगाल होगा, इसे कहने का आवस्यकता नह। दिल्ली क राजधानी हाने पर वह गवर्नर (राज्यपाल) भवन बन गया। तब भी भारत क सबसे महत्वगाली प्रदग के गवर्नर का भवन हाने क कारण उम पर काफी साहचर्यो स काम लिया जाना था। लिफाफिया का सरकार लिफाफ क सच म एक कौडी भी कम करन का नाम नहीं ल सजला, उम तउक भडव को और बडे रूप म रखना चाहती है। इसरा नमूना यह राज्यपाल भवन है। पुरानी इम्पीरियल लाइब्रेरी और अब राष्ट्रीय पुस्तकालय के लिए पहले क मकान

बाफी नहीं थे। उस एक बड़ी जगह की आवश्यकता थी। लोग न इस राजभवन को लेने का प्रस्ताव किया। उस समय बाटजू यहाँ के राज्यपाल थे। वह छाड़ने के लिए तैयार नहीं हुए। और अलीपुर के पुराने राजभवन में उस ले जाने की सिफारिश करवा दी। हमारे नेता किन्नन स्वामी और अद्वैतदर्शी भी हैं। इसका यह पक्का सबूत है। बाटजू हमें के लिए बगाल के राज्यपाल हाकर नहीं जाए थे और अलीपुर का वह भवन भी एक राज्यपाल के लिए काफी भव्य और बड़ा है। हमारा राष्ट्रीय पुस्तकालय यहाँ रहता, ता शहर के भीतर रहने में उसका अधिक उपयोग हो सकता था पर एक आदमी के कारण उसे दूर ऐसी जगह में ले जाना पड़ा जहाँ बहुत से मकानों के बनाने की आवश्यकता होगी।

अस्तु पुराना बाघमराय और आजकल का राज्यपाल भवन अपने भीतर ही एक बड़ा शहर है। नौकरो की पचमजिला बड़ी-बड़ी इमारतें हैं। कमला के बहनोई यही किसी दरतन में उपरासी हैं। ५४ रुपया मासिक वेतन और दो रुपया माइकल का एलेंस मिलता है। हा, कुछ हाथों की कोठरी उन्हें मुफ्त रहने के लिए मिली है। ५६ रुपये में कलकत्ता जैसे शहर में एक आदमी का खर्च चलाना मुश्किल है। फिर वह अपनी पत्नी और दो बच्चा के साथ चार प्राणी है। वह कस खर्च चला रत है। यह साचना भी सिरदर् का कारण हो सकता है। वह आण तो हम भा उनका घर पर चले गये। देखा उस घर का और पास में ही और भी उसी तरह की पाँच पाँच छ छ हाथ लम्बी चौड़ी कोठरिया का भी देखा जिनमें उनके जैम और दूसरे चपरासी रह रहे थे। यदि इन कोठरियों की सभी स्त्रिया जवानों में बूढ़ी हो जाएँ, लडकों के हाड हाड दिखाई पडे ना आश्चर्य क्या। उधर राज्यपाल की दावता में लासा का वारा-न्यारा हाना है और इधर ये बच्चे अपने बचपन का इस भीषण दरिद्रता और जमान में बिता रहे हैं। पर, आज उसका वारे में सोचने की भी किसका कुमल है— 'बड़ बडे काम है। इन छोटी बातों का क्या सामन लाते हा ?'

२८ जनवरी का राज्यपाल भवन के चपरासियों का दलदल भाजन किया और फिर बाहर निकल। एसियाटिक सासायटी में कुछ पुस्तकें देख लीं। रामकर कवि रहीम सम्बन्धी पुस्तकें, जिसमें 'भाशासर रहीमी'

की छपी हुई बड़ी पोथी लेखने को मिली। इसमें रहीम की नहीं बल्कि उनके जाश्रित सैकड़ा फारसी कवियों की कविताएँ संग्रहीत हैं। वहाँ से अलीपुर में राष्ट्रीय पुस्तकालय में गये। इस भवन को तत्काल के लिए ही पर्याप्त कहा जा सकता है। अभी पूरी तौर से हरक विभाग की पुस्तकें व्यवस्थित रूप में रखी नहीं गई हैं। हिन्दी विभाग में भी कुछ योग्य पुस्तकें आ गई हैं। पुस्तकालय के पास ही अलीपुर का चिड़ियाघाना है। थोड़ी देर उसमें भ्रमण करें। साचा था चिम्योजी या गोरिल्ला वहाँ होंगे लेकिन वह मर चुके हैं और उनकी जगह नये आए भी हैं। मसूरी के हमारे पड़ोसी पुनाग सहोदरा यही अलीपुर जाकर रह रहा था। दूढ़त दूढ़ते उनका परिचित एक आदमी ने बताया कि वह यहाँ में बगलोर चली गई। महाबाबु सभा में श्री देवपिय बर्लिसह से मिले। उन्होंने २६ जनवरी को भाषण देने के लिए वहाँ मीने स्वीकार कर लिया।

जबको कलकत्ता में व्याख्यान देने का जवादा जरूरत नहीं पड़ी, यह बुरा नहीं था। इसका कारण पत्रों में सूचना का प्रकाशित न होना था। कलकत्ता के हिन्दी पत्र ब्रह्मा की भी पूर्वाह्न नहीं करत। उनके लिए टका सब कुछ है। हिन्दी पत्रों का स्तर जितना नीचा यहाँ गिरा है उतना गायद ही और वही।

२५ का गाम का गहर के एक कोने पर एक सांस्कृतिक और साहित्यिक गोष्ठी हुई, जिसमें गिने चुने दो दर्जन साहित्यकार और साहित्यप्रमी आए। सांस्कृतिक पर मुख्य धोलना और प्रदानात्तर रेंना था। रात को अलीपुर की तरफ से होते विले के मैदान में मोटर चली, ता चारों ओर महानगरी दीप मालिका मनाता मालूम हो रही थी। १९०७ का ही मनु था, जबकि इसी मैदान में पहली बार मोटर पर चढ़ने का मौका मिला था। लेकिन उस समय बिजली नहीं गस बतिया जला करती थी। यहाँ दिन में गर्मी मालूम होता पक्षा चलाना पड़ता था।

चीन में प्रकाशित होने वाले अंग्रेजी की पत्रों तथा पत्रिकाओं तथा भारतीय पत्रों में तिब्बत के बारे में इधर जा बातें पढ़ रहे थे, उनमें यह जिनामा उद्भूत थी, और चाहता था कि तिब्बत से आए किसी आदमी से विशेष बातें मालूम करे। श्री मणिहृषी के अपने आदमों वहाँ से रहते

है पर इधर कोई नया आदमी वहाँ मे आया नहीं था। जाड़ा म तिब्बती व्यापारी कल्कत्ता पहुँचा करत है। मालूम हुआ, १५ नम्बर लाजर चितपुर रोड म आकर वह ठहरते हैं। हम वहाँ चल। साथ म तीन चार जोर भी तरण थ। जब सारी पलटन उधर चलने लगी तभी मुझे सन्नेह हुआ कि वह लोग मडक जाएंग जोर वसा ही हुआ भी। पाँच आदमियो का उहनि देखा, तो मेरी तिब्बती भापा की भा पर्वाह न करव उहनि कुछ भी बतलान स इकार कर दिया। मणि बाबू न टेलीफोन स विशेष तौर मे बात की ता जगले दिन एक तरण घर पर आया। वह उम दिन भी गली म मिला था। सम्भव है वह साथ रहता ता निराग न होना पडता। जब उसन सारा बातें बतलाइ। वह भर नाम स अच्छी तरह परिचित था। मेरे पडामा और मित्र कादिर भाई की लडकी जमीला उसकी पत्नी थी। जमीला मेरी पहली तिब्बत यात्रा के समय ल्हासा म हर वक्त महायता करने के लिए तयार रहती थी। उस समय उसकी उमर दस ग्यारह साल की हागी। यह समा चार भर लिए बनी प्रसन्नता का था। तरण न बतलाया कि ल्हासा से फरी तर अब माटर बस आती है। शिगची के पाम ब्रह्मपुत्र पर पुल है। मोटर की सडक जल्दी ही टामा (चुम्बी बली) तक खुल जायगा। यापार क बारे म कोई दिक्कत नहीं। हम वहाँ स पसा का लादकर लाने की जरूरत नहीं पडती। ल्हासा स चक लाने पर यहा चीनी बक मे रुपया मिल जाता है। सडका जोर पुला क बनान म आश्चयजनक फुर्ती स काम लिया जा रहा है। बतला रहा था, ल्हासा वाली नदी पर पुल बनन लगा था। हम समझते थ उसक तयार होने म दो तीन महीने ता जरूर लगेंगे लेकिन हमारे जचरज का ठिकाना नहीं रहा, जब दखा कि दो-तीन हफत म ही उस बनाकर खाल दिया गया।

२६ जनवरी का ही गाम का महाबोधि हाल म ५० अयोध्याप्रसाद क सभापनित्व म बुद्ध दर्शन पर भाषण दिया। ५० अयोध्याप्रसाद का अब की बहुत सालो बाप देखा। अब भी उनका स्वास्थ्य अच्छा था, यद्यपि आयु मुझसे उनकी कम नहीं है।

२७ का फिर डा० भूपेन्द्रदत्त और उनके बडे भाइ ८७ साल क थी महेन्द्रदत्त स मिलन गए। आज ही कल्कत्ता छाडना था इसलिए 'बौद्ध

सस्कृति' के द्वाका का छपवाकर एक कापी लेना जरूरी था। एक तरह से आज का सारा समय और चिन्ता उसी पर रही, तभी रात जाकर एक कापी मिल सकी। मरी तीन चार पुस्तकें बंगला में अनुवादित होकर छपी हैं जिसमें 'बोल्गा म गगा' भी है। यह भारत की सभी भाषाओं में अनुवादिता हा चुकी है, पर बंगला के कवर में जिस रचि का परिचय दिया गया है, वह बतलाता है कि बंगला भाषी इस बात में हमारे साथ दस में आगे हैं। प्रकाशकों को यह विश्वास नहीं था कि एक साल के भीतर ही पहला संस्करण समाप्त हो जायेगा। उन्होंने दूसरे संस्करण का कुछ प्रतिया दी।

लखनऊ—२० जनवरी के लिए सीट पहल ही से रिजर्व कर ली थी। स्टेशन पर मणि बाबू, महादेव भाइ और मंगरजी आए। हमारे कम्पाटमेंट की १२ सीटों में ८ रिजर्व थी। एक बंगाली पाकिस्तानी तरुण भी चले रहे थे जो इस समय लाहौर में अफसर थे। उन्होंने बहा की बातें बतलाई। बंगाली मुसलमान ऐसे ही पंजाबी पाकिस्तानियों से असंतुष्ट रहते हैं। वह वामपक्षी विचारों के थे इसलिए जागा प्रकट कर रहे थे कि कभी हम फिर एक हो जाएंगे। पास में गणेशजी पंजाबी हिन्दू तरुण बैठा था। वह दूसरे के भावा का निकुल ग्याल किये बिना मुसलमानों की क्रूरता का बडे जाग के साथ प्रकट करन लगा। माना उस समय हिन्दुओं और मिस्त्रों ने क्रूरता निवृत्तान में कुछ बसर रखी थी। मेकण्ड बलाम में सीट रिजर्व करान का मतलब बठन भर के लिए रिजर्व कराना था। इसलिए बैठे बठ ही मोना पठा।

भिनसार को दवा बर्पा हो रही है। बनारस में ६ बजे के करीब गांधी पहुँची। श्री जयकृष्णदास को लिख दिया था कि किसी आत्मा का स्टेशन पर भेज दें वह सस्कृत पाठमाला के प्रूफ का द जाएगा और बाका तीसरी चौरी पाँचवी पुस्तकें भी लेता जायगा। जा सज्जन प्रूफ लकर जाए, उन्हें मैं पहचानता नहीं था और नामद बह भी मुझे बहुत कम हा जानने थे। श्रीभाग्य ही ममनिय जो मिल गए। यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि अब पाठमाला छपन लगी है। मैं खेब रहा था, मिट्टी की छनें किन गाँवा में धुस् हाती थी। जादस में वह धुस् हाता दीख पनी। फिर जायस के नाम पडत ही जायसी याद आन लग।

लखनऊ में साथी रमेश सायी गिव वर्मा और दूसरे मित्र आय हुए थे। विप्लव प्रेम में जानर ठहरा। गणपालजी घर पर ही थे। श्रीमती प्रकाशवती का डाक्टरों ने टी० बी० की बात बतला दी है, इसीलिए वह पूरा विश्राम ले रही थी। लेकिन गरीब का विश्राम लेने के लिए दिमाग का भी विश्राम देना जरूरी है और वह बूने से बाहर की बात है। फिर साथी प्रेम सायी प्रकाशवतीजी के बल पर चल रहा था। गणपालजी का उससे इतना ही नाता था कि उनके उपवास और कहानियाँ उसमें छप जाती थी। लेख रहा था प्रकाशवतीजी अब भी ग्राट पर लेटे-लेटे प्रूफ लखनऊ में लगी हुई हैं।

बस लखनऊ में उतरता पर 'मन्य एसिया का इतिहास (२)' ४०० पृष्ठ तक छपकर अब खटाई में पड़ा हुआ है। प्रेमवाल ने छापते हैं और न छापने में इन्कार करते हैं। इसके बारे में जय के नौ छ करना जरूरी था। यहाँ का दूसरा प्रेम अवशिष्ट अंश का छापने के लिए तैयार था। मैं विगप तीर से उसी के लिए आया था। सोमवार का उहाने बनलाया कि हम अवशिष्ट भाग को एक मास में ढाल देंगे। पचता सारी पुस्तक हा गई थी। एक मास २ मास को पडता। पर १९५७ के १० मास का उसका भी कोई पता नहीं।

२६ जनवरी को रिस्सालदार बाग बौद्ध बिहार में गए। श्री प्रज्ञान दजी ने अपने गुरु की कीर्ति का बहुत तत्परता से कायम रखा है। वहाँ से रिक्शा ले हम साथी सज्जाद जहरी से मिलने गए। पाकिस्तान बनने पर वह पश्चिमी पाकिस्तान में चले गए थे और वहाँ वहाँ के जेला में रहे। पडयान का मुकद्दमा चला रहा था और जमानत पर छूटकर आए थे लेकिन अब मुकद्दमा खतम हो गया था और वह भारत ही में रहना चाहते थे। इसकी सबसे अधिक प्रसन्नता उनकी धीवी रजिया वगम को होनी चाहिए, जो बच्चा का लिए अपने पर खड़ी लखनऊ में वर्षों से घाट जोड़ रही थी। तीना लडकियां में बड़ी मट्रिक्स में पढ़ती है उस उदू में गिनने में दिक्कत नहीं है। मंगी हिंदी में ही लिखती है उदू उस कबाहुत की चीज मालूम हाती है। वस्तुतः उर्दू का अपना हिंदी लिपि बहुत सुगम है। जिसने उदू पर वर्षों नहीं लगाय उसका लिए ता वह और भी मुश्किल हा जाती है। रजियाजी

पल्ल मुझे उन् विरायी ममथकर वहुत मुक्ताचीनी करती थी लेकिन अब उनकी कहानी हिंदी पत्र-पत्रिकाओं में निकलने लगी है। काफी पसंद की जाती है। इसलिए हिन्दी पर भी उनका अपनत्व हो गया है। बनन (सज्जान उद्दो) में साहित्य के सम्बन्ध में बातचीत हानी रही। अभी यह राजनीति में अग्र है। पाकिस्तान लौटकर नहीं जाना चाहते किन्तु उनकी भारतीय नागरिकता खत्म हो चुकी है जिसे फिर मत्ना है। पाकिस्तान बनने तक साचा था— मैं वहाँ रहकर साहित्य और दूसरे कामों द्वारा प्रगतिपाल विचारों का प्रचार कर सकूँगा। लेकिन, अमेरिका के चण्डल में पूरी तौर से फसा पाकिस्तान और उसके तानाशाह मला इस बतान कर सकते हैं? बनने के लिए दा हा रास्ता था। या तो पाकिस्तान में रहकर वहाँ की जला में मट्टे और साथ ही अपने बावो-बच्चा का भारत में अकल रहने दें नहीं तो यहाँ चलें और अपनी गतिगामी लखनी तथा व्यापक ज्ञान से अपने जनता का फायदा पहुँचायें। उन्होंने दूसरा ही रास्ता पसन्द किया है।

उस दिन शाम का ६ बजे में साहित्य गाँठी हानवांगी थी लेकिन मित्र लोग पहले ही में जान लगे। श्री भगवतीचरण वमा भवस पहले आए। भाषा की समस्या पर बातें के बाद फिर गाँठी शुरू हो गई। भाषाधार प्रदण आगल का भारी प्रश्न था। दण में जगह-जगह लठियाँ और गालियाँ चल रही थीं। उन् और हिंदी का भा सजात आया। श्री ह्यानुन्ग अन्गारी साहब ने उसके बारे में कई प्रश्न पूछे।

३० जनवरी का कार्यक्रम था जे० एन० मिठ के साथ उनका स्टुडियो में गया। स्वनिर्मित कार्यक्रम है। मूर्तिकला का आर उनका विशेष ध्यान है। पिकामा की प्रवृत्ति न इनका भी आवृष्ट किया है। मैं त्रिमो भी बड़े नाम के कारण प्राकृतिक जगत से दूर के विकलांग चित्रा और मूर्तियाँ का प्रणामा नहीं कर सकता। यदि मामने सडे गिना के हृत्प के तुवन का डर न हा तो मगिप्त भाषा में अपने विचारों का खुलकर बह सकता हूँ। भवमुक्त यह प्रतिभा और थप का अपव्यय है। चित्रकला, मूर्तिकला काव्य का इन विकलांग प्रतीकवादों में नाग किया कम हा जस उस्तांग की गलवांगी न हमार मगत का।

आज नगल हरलड प्रेम में जान पर काणिसो पत्र "कौमा जावान" के

सम्पात्न श्री ह्यानुत्ला अंसारी मिले। वह उदूवाग के भाषा का प्रति निधित्व करत है। जिस वक्त राष्ट्रीय भावना रखना मुसलमान के लिए जातिद्रोह समझा जाता था उस समय अंसारा साहब काग्रही ग्ह। वह और उनकी पत्नी भरत की रहनेवाला हैं। उदू व बारे में वह जा भी विचार प्रकट करें उह बड़े ध्यान से सुनना हागा। वह अपन साथ अपन घर पर ले गय। चायपान और साथ ही इस्तीना के साथ बात हाती रही। मैं हिंदी उदू को दा भाषा नहीं मानता और साथ ही चाहता हूँ कि यह न्याल जवानी जमावब तक न रह जाए बल्कि उद का भी लाग पठें। उसक व्यापक प्रचार के लिए यह आवश्यक मानता हूँ कि उदू की पुस्तकें नागरी अक्षरा में भी छपें। इधर श्री गायलीयजी और फिराब साहब के प्रयत्न से नितन ही उदू कत्रिया की वृत्तियाँ नागरी अक्षरा में छपी है जिनका बहुत अच्छा स्वागत और प्रचार हुआ। उदू की पुरानी पीढ़ीवाले इस सतरे की बात समझन हैं। पर मुख्य तो लिपि बदलने से भाषा के सतरे की बात समझ में नहीं जाती। तुर्की भाषा न अरबी की जगह रामन लिपि क्यों से स्वीकार कर ली है। उमम उसका क्षति नहीं पहुँची। सावियत मध्य एशिया की भाषाआ—ताजिकी (फारसी) उजबकी आदि—में अरबी लिपि को जगह नसी का अपना लिया है उसक कारण उन भाषाआ को कोई हानि नहीं पहुँची। यदि उद नागरी अक्षरा में लिखी जाय तो उदू को क्या क्षति पहुँचेगी? हाँ यह डर हो सकता है कि लिपि के कारण ही तो इस भाषा का नाम उदू पडा है। यदि लिपि हटी तो गालिब को भी लाग हिंदी का कवि कहन लगेंगे। यदि ऐसा हो तो क्या बुरा है? गालिब और अनवर यदि डेढ़ दो करोड आर्जमिया के न होकर १५ १६ कराड के हो जाए तो क्या बुरा? पर मैं यह भी नहीं कहना कि उदू के लिए उदू लिपिका वाय-वाट किया जाए। दोना लिपिया में पुस्तकें प्रकाशित हा। फिर उदूवाले गका उठाएगे लाग अत्रिक हिंदी लिपिवाली पुस्तका को ही लेन लगेंगे और उदू लिपि में छपी पुस्तकें क्यों बिक नहीं पायेंगे। उनका यह सदेह बिलुल ठीक है। दोना लिपिया में छूट दन से उदू लिपि में छपी पुस्तकें पुरानी पीढ़ी वा ही सतोप देने की कोशिश करेंगी। नई पीढ़ी जो उदू से भी अच्छा नागरी लिपि को पढ़ती लिखती है वह बने भाई की मयली

साहजजादी की तरह उर्दू से कावा काटन लगगी । संस्कृत के जार म हम जानत ही हैं इन गताती के आरम्भ म मस्कृत पुस्तकें केवल नागरी म ही नही छपती थी बल्कि बगला उडिया, तल्लुगु प्रथाक्षर तमिऱ, मलयालम और कन्नड लिपिया म भी छपती थी । तल्लुगु लिपि म ता बहुत काफी छपता थी, और उनको तमिलनाडवाऱे विद्वान् भी पत्न थे । पर नागरी के सामन मऱको भाग जाना पऱा । एक ता नागरी लिपि म छपी पुस्तका का सार भारत म ही नऱी भारत म बाहर मिहल उर्मा और थाऱ भूमि म ना प्रचार था । हिन्दी क्षेत्र म बाहर नागरी का मस्कृत की अपनी लिपि सा माना जान लगा था । एतना बडा क्षेत्र हान क कारण नागरी म छाी मस्कृत पुस्तकें थाड समय म काफी मख्या म बिक जानी थी जबकि दूसरी लिपिया म छरी पुस्तके वर्षों तक निकल नही पाती थी । एम मुभीन के कारण निणयमागर और बेंगलूरर जम प्रम अच्छे कागज पर मुद्रण बक्षरा म वऱी मख्या म पुस्तकें छापत थे । गजार म भला ऐसी पुस्तका का दूनरे कम मुकाबिला कर सकत थ ? आज मस्कृत साहित्य पर नागरी लिपि का अक्वड राज्य है । कुछ शमी तरऱ की वान दान्तीय पीठिया म उद क वार म भी घट सकती है । पर उर्दू भाषा को नागरी अक्षरा क अपनान म काई क्षति नही हागी उलटा उमका प्रचार वऱन बढ जाएगा ।

अमारा साहब स और उनको विरुधा पत्नी स वानधीन करते यह वानें मामन आद । लकिन उनके एक मवाऱ का मर पाम जवाऱ नऱी था । वह कहन लग तब उर्दू हिन्दा ही है ता हिन्दा क साहित्य इतिहास या कविता मण्ट म उर्दू को भी क्या नही माय-माय स्थान दिया जाता । इस प्रश्न की आवश्यकता न हाती, यऱि १९०४ म बनाई मरी याजना कायम्प म परिणत हा गई हाती । मैंन अपभ्रंश काऱ का कविता का ऱकर हिन्दी काव्यधारा लिखऱर प्रकाशित करवाइ । दूसऱ मित्रा का अगऱे भाग सम्पादित करत क लिए दिय थ । जा वह नही कर पाऱ । एमम यऱे स्थाल रखा था कि कविताआ का काल उम मे मण्टहीत किया जाए और हिन्दी उर्दू कविया का एक ही सूची म बीच-बीच म काऱ उम क अनुमार रत्ता जाए । यऱे करना भी हागा । हिन्दा क हरक साहित्यऱ इतिहास म जब मथिला, अरघी, वऱ ढिगल को काऱ क अनुमार स्थान दिया जाना है ता

उदू के साथ यह भेदभाव क्या ? यदि उदू के कितने ही गद्य सामान्य पाठक को समझ में नहीं आएंगे, तो मैथिली और डिगल क भी बहुत से गद्य उद्द समझ में नहीं आएंगे। इस आधार पर हिन्दी उदू ने कविया का मिलाकर कविता सग्रह की बड़ा आवश्यकता है। यह उदूवाला को खुश करने के लिए नहीं बल्कि अपनी एक महत्वपूर्ण धारा में अपरिचित न रहने के लिए भी आवश्यक है। उदू भी राजभाषा ही। इसका भी अंसारी साहब का आप्रह था, जिसके वार में मैंने स्पष्ट अपना मतभेद प्रकट किया। मैंने कहा—राज भाषा प्रदेश के अनुसार होना चाहिए। कुछ छिट पुट व्यक्तियों के अनुसार नहीं। उत्तर प्रदेश का ही ले लें तो जिन भाषा-जा में राजभाषा के लिए आगे आने की जरूरत है वे हैं जनभाषाएँ—भोजपुरी जबड़ी ब्रज मध्य देशी या वीरवी और पहाड़ी जिनको लिपि नागरी होगी। यदि नागरी लिपि में उदू लिखी जाए तो भाषा का मवाल बहुत कुछ खत्म हो जाता है। जामागे साहब इसको ता समय रहे थे कि मैं उदू का अनिष्ट नहीं चाहता और उही की तरह उमकी साहित्य निधिया का प्रचार और संरक्षण चाहता हूँ। इसलिए कहा, अच्छा यही सही।

उस दिन गाम का युनिवर्सिटी छात्र मध में भाषण दिया। फिर रात का सम्भव (वगाथी) गाण्डों में भाषानुसार प्रदेश पर। रिमालदार वाग बुद्ध विहार में भी भाषण देकर रात को घर लौटा।

२१ जनवरी का भी दिन भर पूरा व्यस्त रहा। दोपहर तक निवास स्थान ही पर मित्र योग आत रहे। नवलबिगोर प्रेस उदू फार्मी पुस्तक के प्रकाशन का सबसे पुराना और सबसे बड़ा प्रेस है। अफसाम है, अब उस तरह की पुस्तक यहाँ में प्रकाशित नहीं हानी। पहले की प्रकाशित पुस्तकें भी गोराम के जगत में पड़ी हुई है। चिन्ठी लिखने पर जल्दी मित्र नहीं पाती इसलिए माया स्वयं चला चलू। मेरे काम की वहाँ दो चार ही पुस्तक मिली। हाल में ही बुलियात नजीर (नजीर काव्य सग्रह) प्रकाशित हुआ है जिसकी एक प्रति ली। नजीर अपनी भाषा की दरिद्रता के कारण सरल भाषा में कविता नहीं करते थे। वह पारसी क भी कवि थे। उनको फारसी कविताएँ इस सग्रह में मौजूद हैं।

मध्याह्न भोजन डा० विद्वनाय मिश्र के यहाँ किया। उनकी पत्नी

महिला कालेज में गणित का अध्यापिका हैं। वहाँ भी भाषण देने के लिए जाना पड़ा। हिन्दा की उप-यासभार श्रीमती वाचनलता सत्रवाल कालेज की प्रिंसिपल हैं। विद्यालय में तीन हजार लड़कियाँ पढ़ती हैं वारह सौ ता चवल कालेज विभाग में हैं। यह बतला रहा था कि स्त्रियों में शिक्षा का प्रसार और रवि खूब बढ़ रही है। लखनऊ युनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार श्री तिवारीजी यह रहथे कि मालूम होता है कुछ दिनों में युनिवर्सिटी लड़कियाँ की जाएगी। मैंने कहा १९४२-४६ में मैं लेनिनग्राद युनिवर्सिटी में भी ऐसा ही दसा था मुश्किल से सौ में दस लड़के रहेंगे। महिला कालेज से हजरतगञ्ज के एक बड़े रेस्तारा में नेपाली छात्रा की चाय पार्टी में जाना पड़ा। चालीस के करीब छात्र और एक दो छात्राएँ नेपाली थीं। श्री भगवती प्रसाद वर्मा, श्री मंगपाल और बघडक बनारसीजी भी मौजूद थे। सत्रने थोड़ा थोड़ा भाषण दिया। छात्रों में जबकि गण नेपाल उपत्यका में थे। उनका वाद पूर्वोत्तर नेपाल के पश्चिमी नेपाल के दा ही तीन विद्यार्थी थे जा बतला रहे थे कि नेपाल का यह भाग गिआ में बहुत पिछड़ा हुआ है।

कलकत्ता से दूसरे दर्जे में रात को सफर करके देखा लिया था नही चाहता था आज भी रात बठे बठे गुजारनी पड़े, इसलिए पहले दर्जे की सीट रिजर्व करा ली। हमारे कम्पाटमट में एक सरकारी अफसर और मैं था। थोड़ी देर में अफसर मेरे नाम से परिचित मालूम हुए, और उनसे बातें होने लगी।

मसूरी घास—जितना पश्चिम आण उतनी सर्दी बढ़नी हा थी। कलकत्ता में जहा गर्मी मालूम हा रली थी वहाँ जय खूब कपटा ओलना पटा था। हरद्वार में पी फटन लगा थी, लेकिन देहरादून हमारी ट्रेन ६ बजे पहुँची। श्री मेहताजी स्टेशन पर मिल। गुलजी और दूसरे मित्रा का लिख चुका था कि देहरादून में एक दिन ठहर कर मसूरी जाऊँगा पर अब ता कितन ही प्राप्राम तोड कर आ रहा था इसलिए उस ब्याल को भी छोडना पडा। स्टेशन से बाहर ४ रुपए टक्का का स्टर चल पडा। १ घट में (११ बजे) मसूरी लाइव्रेरी पहुँचा। दूसरे समय में जहा कुली सामान उठान के लिए मार करते, वहाँ उस समय वह दुलभ थे। किसी तरह दा कुली जुटा कर साडे १२ बजे घरपर पहुँचा। कमला का विश्वास था मैं ३ तारीख का

आजगा। डेढ़ महीने बाद देखने पर जया जरा-सा हिचकिचाई लेकिन जल्दी ही पहचान गई। इतने दिना म जेना बटा मालूम देने लगा था। उसने दाहिना हाथ पर पात्रिया का जा हलना सा प्रभाव था वह बहुत कुछ दूर हो गया था। हाथ जिस तरफ ग्राह उघर हिला ड्रुग सगना, किन्तु बायें हाथ के परापर उसम अभी ताकत नहीं थी। उस दिखलाने के लिए दिल्ली जाना जरूरी था। गया कलिम्पिंग चली गई थी और उसकी मजदूरी घटिन माहिली आ गई थी, जिसने बच्चा को संभाल कर रमला को पटन का समय दान में सहायता की थी। डेढ़ महीने की चिटिठपा जोर डाक पड़ी हुई थी जिन्हें भुगताना जरूरी था। सम्मग्न मुद्रणालय से 'मध्य एशिया (१)' का ग्रहण सा प्रूफ भी आया था। घर में आकर एक विचित्र तरह की आम तुष्टि मालूम हान लगी। क्या जेता धराधर याद आने रहे। बच्चे कितना माता पिता का आनंद प्रदान करत हैं ?

६ ३३वें वर्ष की समाप्ति

मसूरी में अत्रके वफ नहीं पडी। अखबारा में गिमला की वफ से मैंने साक्षात् था, मसूरी में भी पडी होगी। पर, जहाँ तब सर्दी का सवाल था वह खूब थी। वस्तुतः सर्दी क्या करे जब देव बूद ही न बरसाए ? बूदा के बरसने पर ही तो सर्दी उह वफ बनानी है। जब हवा चलती तो सर्दी अपने ही बढ जाता। फरवरी के आरम्भ में ही बसंत की कामना करना बकार था।

आइ हुई चिट्ठिया में एक राष्ट्रपति के डिप्टी सेक्रेटरी की भी थी। मैंने राष्ट्रपति का पासपोर्ट के बारे में लिखा था उसी के जवाब में यह चिट्ठी और उसका साथ पानपाठ के फाम थे जिन्हें फिर से उही कारवाइया का दाहरात जिला मजिस्ट्रेट के पास भेजना था। मजिस्ट्रेट का लिखा पुराने कागजा का दिल्ली भेज दें। उनका जवाब आया—अब वह बकार हैं। अर्थात् दस रुपये के स्टाम्प पर अब फिर आर्थिक गारंटी और दूसरी कारवाइया करनी पडेगी। फिर मजिस्ट्रेट कागज पत्र को पुलिस के पास जाँच करने के लिए भेजेंगे। पूरा नौ मन तेल हो जाएगा तब राधा नाचेगा।

मैंने अबकी यात्रा में सब जगह कह दिया था कि हम मसूरी छाड़ने वाले हैं लेकिन यहाँ देखा कमला का मन बदल गया है। फिर अभी तो परीक्षा और उसके परिणाम का देखने में जून बीत जाएगा तब तब इसके बारे में साक्षात् के लिए बहुत समय मिलेगा। मैं कलिम्पांग के प्राग्राम का

बुरा नहीं कह रहा था। माचता या तिव्रती भाषा और बौद्ध साहित्य के सम्प्रदाय में वहाँ रह कर काम करने में सुभीता रहगा क्योंकि अच्छे विद्वानी पण्डित भी वहाँ मिल जायेंगे। तिव्रत के लोगों से सच्चे हुए काम को फिर से हाथ में लेकर यदि लहामा में समय देने की आवश्यकता हो तो वह कठिनाई में बहुत नजदीक है। अभी भी वेबल दाँत जिन् घाटे की मवारों की जहर है नहीं ना दानों तरफ मोटनें चली गई हैं। प्रागयोग में लहामा विमान उड़ान पर यात्रा विन्मुल खेले गी हो जाएगी। मन के लड़ने अच्छे लगते हैं। पर यह भी समझना था कल्पिमाय में मरे अनुकूल समाज नहीं है।

जया अत्र खूब बोलने लगी थी। दस वर्ष में हो उसका भाषा जितनी गूढ़ थी उतना जाट वर्ष पढ़ने के बाद भी उसने पिता की नहीं थी। भाषा भी मुनाबरेदार थी। जेना अभी गूणा ही कर रहे थे। जेना नाम मुना पर एक महिला ने जेतराम कहा तो मरा माथा ठनका। सोचने लगा, जेना का जीतराम आसानी से बन सकता है।

मस्कृत काव्यभाग के लिए अपेक्षित कुछ पुस्तकें नहीं आई थी और अभी कुछ लिखना बाकी था। उसे समाप्त कर आवृत्ति करके बाकी प्रेस कापी का भी प्रेस में भेजना था। इधर २५वीं बुद्ध गतावली के लिए पत्र पत्रिकाओं से लेखों की माँग आ रही थी इसलिए कितने ही लेख उन्हें भी लिखने थे। फिर वही नियमपूर्वक जीवन शुरू हुआ। सत्रे ७ वज्र ने आत्म-पास चाय पीकर चार घंटे के लिए बैठकर वाचना, और मंगलजी का टाएप खटपटाना। फिर अगले दिन के काम की नयारी तथा चिट्ठियाँ और पत्रिकाओं का पढ़ना। अबक यह भी निश्चय कर लिया था कि मेरी जीवन यात्रा १२ तीसरे भाग को अपने ६३वें साल के अंत तक लिख डालना है। काम की बर्फी गहा थी। ६ फरवरी से जीवन यात्रा आरम्भ हुई और १२ ११ पृष्ठ (फुल स्क्व साइज) रोज के हिमात्र से टाइप होना लगा। काम से विश्राम बिगनी हो किसी दिन करना पड़ता।

भया (म्हामी हरिहरणानन्द) की ७ फरवरी को चिट्ठी मिली। यह समझने हैं आधिक कठिनाइयों के कारण मैं चीन जान का इरादा रखता हूँ। अन्य कारणों में वह भी एक हा सकता है पर वही कारण नहीं। मैं

वहाँ जाकर साहित्यिक और सांस्कृतिक कामा को करना चाहता था विशय कर तिब्बत में अब जो पुरान पुस्तकालयो और उनकी निग्रियो के दरजा खुल है, उनस लाभ उठाना चाहता था ।

फरवरी में अमृतसर में कांग्रेस का अधिवेशन हा रहा था । कांग्रेस वहाँ से कहा चली गई ? पहले जहा एक अस्थाद नगर जीर विराट मला लगता, वहाँ जब उसके प्रति लीगामे उदासातता । कांग्रेस और उसके मंत्रियो स जिह काम बनाना था वही वहा आए थ । वइ माल ता नहू छाउकर दूसरा कोई सभापति बनने लायक आत्मी नही मिलता था । जब नहू न अपनी टापी थी उच्छगराय डेवर के मिर पर रख दी है । दूसरी बार वह उसके अग्रध वने । डवर बावन गण्डे दूसरे कांग्रेसी नेताजा स कोई भेद नही रखते । फिर न जाने क्या नहू उन पर डर गय हैं ? क्या यह यही नगी बतलाना कि नेताजा क सम्बन्ध में कांग्रेस दिवालिया बन गई है । सभी जगह प्रथम श्रेणी की प्रतिभावाल तरणो का काग्रस में अभाव दना जाता है । जो हैं भी वह बूढो की नजर पर नही चढन, और दूढ दूढ कर बूढा की ही तुम्बा फेरी की जाती है । कांग्रेस के अध्यक्ष ने नेहू की भाषु की तरह भाषानुसार प्राता क निर्माण का विराध किया द्विभाषी प्रान्ता का समयन किया । काल स लोहा लेने के लिए तैयार होना इसी को कहत हैं । द्विभाषिक प्राता क निर्माण का मनलव है आकागी योजना जो बहुत दिना तक लादी नही जा सकती । विहार और बंगाल का एक कर देन क लिए बडे जार गार स घोषणा हुई । बंगाल में हाल की म्युनिसि पैलिटिया क चुनाव ने बतगा दिया है कि अगल चुनाव में काग्रसिषा का विजय क लिए केवल धाला घडी पर ही भरामा करना पडेगा । वह बतुन खनरे की बात है इसलिए उसकी नीद हराम हा रही है । उधर विहार में अभी भी लागा की आँसा में धूल झावन में कांग्रेसी सफरना प्राप्त कर सकत है । तानागाह है इसलिए विलयन के दिना में हाँ उन्हें भले दिना की आगा दिगलाई देन लगी । कांग्रेसी महादेव क्या न राय—मिह क चुनाव पर उठल पडत ? लेकिन यह काम उतना आसान नही था जितना गिल्ली के महादेव समपते हैं । यह सुझाव रखा जा रहा है कि दाना प्रदग अपनी-मिवाव सभाआ राजवानिया हाईकोर्टी मंत्रिमडला का अलग अलग रखने

एक राज्यपाल के अधीन रहे। उस तरह यदि राज्यपाला की सफ़्या कम करना हो—जा घुरी बात नहीं है—तब तो गायद कोई दिक्कत नहीं हो। गायद साचने हंगे सयुक्ते प्रान्ता की जा मन्त्रिमण्डल हांगे उमम एक म वामपधिया का बहुमत हांगे पर दूसरे ने दबाया जा सकता है।

अमतसर कांग्रेस के अध्यक्ष ने भूदान का महात्म भी खूब बखाना महारमा भावे पर गांधीजी का आवाग होता है उनकी आरमा भावे के मुह स बाल रही है। वह गांधीजी के अपूण काम का पूण कर रहे हैं। उनके भूदान-आन्दोलन द्वारा एक जद्वस्त प्राति होन जा रही है। उसके द्वारा गातिमय तरीके से रामराज्य कायम हा जाएगा गापण सतम हा जाएगा वगभेद मिट जाएगा दंग म गरीबी का नाम नहीं रहगा। ऐसी बातें यदि टोगी कांग्रेसी नेता कहें तो कोई अचरज नहीं। उह हर दूसरे चौथ वप एक नया नारा मिला चाहिए जिसके द्वारा जनता के हृदय स पुरान असफ़ठ प्रयत्न की स्मति भुलवाई जाए। नई आगा पैदा की जा सके। यह तो उनके लिए बड़े काम की चीज है। इसीलिए सभा कांग्रेसी एक आर स भावे की जय जय बाग रहें हैं। प्रधानमंत्री भी उनसे भेंट करने के लिए समय त्तिकाल लेते हैं।

पर अक्कल रखनवाला आदमी कस इस मान सकता है ? भूदान से कस रामराज्य आयगा ? जमीन तो पहले भी हस्तांतरित होती रहा है। दान से हा या बेंधी स। इसस उसक रूप म कोई परिवतन नहीं हाता। फिर इस हस्तातरण से क्या भूमि या उसकी उपन कइ गुना बढ जाएगी ? फिर इस दान की हुइ भूमि म सत्रसे अधिक् ता एसी है जिसे 'उत्ता सत्तू पितरन को कहा जा सकता है जयार्द किमान उसे बड़े जमोन्गारा स छीन रहे थे उसे इस प्रकार दान देकर छुट्टी ली गई। काफी जमीन ऐसा है जो लावा एकड कहे जान पर भी न कभी आयाद हुई न आवाद हा सकती है। भूदान के बकारपन का कितने ही कांग्रेसी भी समझते हैं पर महताव की तरह खुलकर उसने खिलाफ जावाज उठान की हिम्मत नहीं रखते।

अमृतसर ने फिर समाजवाद का नाम दोहराया। आजकल के जमाने म समाजवाद के नाम स ही समाजवाद का आन स राका जा सकता है, यह

काग्रेसी नेता भली प्रकार जानत हैं। इसीलिए यह ढाग रचा गया है काग्रेसी समाजवाद की पारवा है—जिसमें गरीब अधिकाधिक गरीब हो जाएँ, और पैलीशाह अधिकाधिक धनी।

१६ फरवरी का कई महीना बाद शीलाजी और डा० सत्यकेतु मिले डा० सत्यकेतु एक घटी मगोरजक पर साय ही हृदयवधक बात सुना र थे। पडासी निले क एक मेठ की जब मालूम हुआ कि सरकार न उनक जिले क बाढ पीडिता के लिए चार लाख रुपया दना स्वीकार किया है त उनके पेट म पानी पचना मुश्किल हो गया। वे जानते थे कि चार लाख बाढ पीडितो के पास नहीं बल्कि दूसरो की जेब म जाएँगे। साचा—इस लूट स लाभ न उठाना भारी बकूफी है। उन्होंने अपन साहबजादे का फटकारा— 'तू कसा मूख है, बहती गंगा म हाथ धोना नहीं जानता। जा बाढ पीडिता म अपना नाम भी दज करा।' लेकिन बाढवाले इलाक म उनकी एक अगुल भी जमीन नहीं थी और न कोई घर था। पर, इमका देखने कौन आ रहा है? कागज तैयार हो उस पर पाँच प्रतिष्ठित आद मिया क हस्ताक्षर हा फिर सठ साहब और उनके साहबजादे के बाढ-पीडित होने स कौन इन्कार कर सकता है? घर म अपनी कार थी। साहबजादे उस पर निकले। जिल के काग्रेसी नेता स मिले। उनसे हस्ताक्षर करवाया। काग्रेसी नेता का सठ से बराबर वास्ता पडता था। बेटा बेटो का याह हो या दूमरा काम प्रयाजन सठजी हमेंगा उनकी बलया लेने के लिए तयार थे। वह जानक पर भी हस्ताक्षर करने से कमे इन्कार कर सकते थे? काग्रेसी एम० एल० ए० और दूसर नेताआ के चार छ हस्ताक्षर हो गए। जिला मजिस्ट्रेट उसे मानन स बस इन्कार कर सकता? आखिर सठ क घर में १६ हजार रुपय आ गए। सठा का दिमाग विश्राम लेना थाने ही जानता है? सठ के मकान किराये पर लग हुए हैं जिससे उह तीन हजार मासिक की आमदनी है। सरकार मकाना की कमी देखकर नये मकाना का बनवान क लिए कराडो रुपय दे रही है। इसका भी सदुपयोग कुछ हाना चाहिए। सठ साहब न एक महयाग समिति बनाई। समिति सरकार स रुपये लेकर नये मकान बनवाएगी। डाक्टर साहब स भी उहाने समिति का मन्बर बन जान क लिए कहा। डाक्टर साहब ने कहा—मैं ता इस गहर म रहता हा नहीं।

—अरे उसमें क्या होना है ? मकान किराया पर उठ जायगा ।

—लेकिन, उसमें कुछ रुपया लगाना भी तो पड़ता है ।

—उसमें पचास न कीजिए । बलि हजार पाँच सौ ल भी लीजिए ।

इसका अर्थ है सठ साहस नज़ली सहयोग-नमिति में नवली मम्बरा को भर्ती कर मकान बनवा उस भी अपन हाथ में करा चाहत थे ।

जाज के भारत में जा भयकर भ्रष्टाचार चल रहा है क्या उसकी क्या एक सेठ के दो चार कामों में समाप्त हो सकती है ? एक नगरपालिका की वान डाक्टर साहब बता रहे थे, जिसका अध्यक्ष और उपाध्यक्ष न लाया पर हाथ साफ किया है, और काफी ईमानदारी नहीं तो मफाई के साथ । नगर पालिका के जितने ठेक दिए जाते हैं उनमें दस प्रतिशत पर 'हवन' फीरो का है । १६ लाख का वहाँ हर साल सामान मँगवाया जाता है जिसमें १ लाख ६० हजार तो जायज हफ्ता ठहरा । यह ठीक है कि यह मारा घन अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के ही पाकेट में नहीं गया पर काफी गया, दसम काई सादेह नहीं । दस लाख सड़क पर लगनेवाला है तो उसमें भी एक लाख घरा हुआ है । दाना अध्यक्ष उपाध्यक्ष मालामाल हो गए हैं । जायदाद अपने नाम से नहीं ली जा सकती तो सगे मम्बरा के नाम में लेने को कौन देखता है ? अपने गृह में वह नहीं ली जा सकती तो दूसरे शहर में ली जा सकती है । कौन मन्त्री दूध के धुल हुए है जा इनके काम पर अगुली उठाएँ ? और फिर उनकी भी पूजा करने के लिए भी तो ये तयार हैं । रामराज्य की आरंभ के लिए मारे देश में यहाँ रास्ता बनाया जा रहा है । देखें यह पत्थर की नाव कितने दिनों तक तरती है ?

हमारे पडासा चौधरी हेपी बेली के मजबूत किसान हैं । इस मोहल्ले में दा ही घडे बडे समतल भूमिक दुम्डे हैं । दानो के वाने-जोतने वाले चौधरी हैं । मालिका न पहले या ही दे दिया, और अब चौधरी का उन पर कानूनन हक है । पास-पड़ोस में कुछ जमान और भी जावाद हान लायक हा तो चौधरी उसे बवार रहन नहा दत । 'मिल्लेरे के फाटक के पास एक ऐसा ही दुवडा बेमार पडा हुआ था । उहाने आदमी लगाकर एक ओर दावार खडा की और फिर पत्थरा को हटवाया । अहीरे के बच्चे हैं, खेती की बिद्या खून में है । उस दिन बतला रहे थे—मरे बाप बक में दरवान हुए, यह बात

आज से पचास साल से पहले की है। उह पहले दो रुपया और भाजन मिलता था। फिर भोजन के साथ चार रुपया, और अतम भाजन सहित दस रुपया। बुढ़ापे तक वह नौकरी करते रहे। चौधरी भी उसी समय वाप के पास आए लेकिन उन्होंने दरवान या चपरामीगिरी नहीं पसन्द की। कुछ इधर-उधर का काम करते, सज्जी बेचते फिर खेती म लग पड़े। उनके पास काफी जमीन है। लडका बाराबकी म अपने गाँव मे रहता है। वहाँ भी जमीन है। लडके का भी कोई पुत्र नहीं। लडकी के बेटे लक्ष्मीनारायण को यहाँ लाए थे। वह लँगोटी बाघकर देहरादून मे साधु बन गया। चौधरी को बड़ी मुश्किल से उसका पता लगा। लौटा लाये पर तब तक चैन नहीं आया, जब तक कि उसे उसके मा-बाप के पास पहुँचा नहीं दिया। मैंने पूछा—इस अजित बेनी को किसके लिए छोड़ना चाहते हैं? बोलन लगे—

‘यही तो सोचता हूँ। बूढ़ा हो गया लडका घर की खेती छाड नहीं सक्ता। चौधरी से भी ज्यादा बूढ़ी चौधरानी हैं। हड्डी हड्डी भर शरीर मे है, लेकिन जान पडता है, वे हड्डिया लोहे की हैं। हर वक्त काम मे लगी रहती हैं। मसूरी के जाडे का वे अपनी एक सूती साजी म बिता देती हैं, जिसे देखकर दानो तले थँगुली दवानी पडती है। वैसे सीधे होकर चल सकती हैं लेकिन जब घर के दरवाजे की ओर जाना हाता है तो २५ गज पहले से ही कमर को दोहरी कर लेती हैं। कितनी ही हिम्मत हा, लेकिन बुढ़िया कितने समय तक सँभालेगी। मैंने कहा— ‘लक्ष्मीनारायण का ही फिर लाओ।’

— ‘लाता तो, लेकिन यदि कहीं फिर भाग गया?’

—“अप उसे थोड़ी अवल आ गई हागो एकाध साल बाद उमी को लाएँ। गायद वह सम्पत्ति का मूल्य समझे।”

बुढ़ापे का ख्याल चौधरी का भी आता है, पर गाँव म जाकर रहन की सोच भी नहीं सकते। कह रहे थे— ‘पोती के ध्याह म गया था। जान पडता था, अब बच कर नहीं लौट सकूँगा। आखिर मैं भी उसी भूमि मे पदा हुआ, लू म तपते मोठे मीठे वामा का ग्याता रहा। पर, अब लू के नाम से भी प्राण निवलने लगते हैं।’

‘सत्सुत पाठमाला’ की प्रथम पुस्तक ३ माच का छप गई, इससे बहुत सन्तोष हुआ। दूसरी पुस्तक के भी दम पाठा के प्रूप उसी दिन आए।

संवृति बा-पधारा अभी अवर म लटक रहा थी। जिस समय मैंने उसके सी पृष्ठो का श्रीनिवामजी का दिया था, और सम्मलन मुद्रणालय स बात तय कर ली थी ता नमस्त्रन लगा था अब नया पार हा जाएगा। लेकिन, मुद्रक और प्रकाशक म कितने हा दिनो तक मोल भाव चलता रहा। यद्यपि उसक १३ पृष्ठा क प्रूफ आ चुक हैं लेकिन जब तक कुछ छपे हुए प्रूफ न आएँ तब तक सदह की गुजाइश है।

१० माच का कमला अपना परीक्षा क लिए देहरादून गइ। यद्यपि जारम्भ हाने म चार पांच दिन की देर थी लेकिन उह पहल जाना जरूरी था। मेरी चली हाती तो एन महीना पहले भेज देता। वहाँ शुबलाजी स पढने मे सहायता मिलती। पर बच्चो को छोडकर वह जाने के लिए तयार नही थी।

११ तारीख को श्री कालिदाम, हरिश्चन्द्र और केगवलाला के भतीजे आए। मुहल्ल के तीन-चार विद्यार्थी तर्षणा के उपद्रव की शिकायत कर रहे थे। तर्षण लडकिया को स्कूल जाते समय छडत और टाकने पर मार पीट के लिए तयार हो जाते। जो अपनी इज्जत अपने हाथो नही बचा सकता उसकी रक्षा कानून कसे कर सकता? यह भी उहान बतलाया कि मुहल्ल क एक खाला गरकानूनी गराब और जूआ खेलाने का रोजगार करते है। आजकल मसूरी के भाग्य विगडन के कारण बनिया का भी भाग्य विगड गया है। ऐसी अवस्था म वह धामदनी क इस नय रास्त को स्वीकार करें, ता आश्चय क्या? पुलिस चौकी मौजूद है, लेकिन जब ५० रुपय मासिन का बधा न हा तो वह क्यों रकावट डालेगी। अभी हाल मे हा पुलिस के एक सिपाही ने कइ जगह चोरियां की। भण्डा फूटने पर भाग गया, लेकिन जहाँ तक लोगो की जान माल की सुरक्षा की बात है उससे काई लाभ नही हुआ। पुलिस का काम अब काग्रस के राजनीतिक विरोधिया क सिर पर डण्डा बरसाना या महाप्रभुआ क स्वागत म हाथ बांधकर गडा रहना है। कालिदाम लडकी क पिता पर जार दे रहे थे कि तुम लडकी का स्कूठ भेजना बंद मत करो पर लाला की हिम्मत नही थी।

इस महीन आगरा युनिवर्सिटी की दो डाक्टरेट थेसिसा को देखन का मौका मिला। वस तो जिस तरह टक सर डाक्टर बनाये जा रह हैं उसके

कारण धर्म का स्तर बहुत गिर गया है। पर, य दाना धर्ममें उस तरह ही नहीं थी। श्री भरतसिंह उपाध्याय न बहुत परिश्रम व साथ पालि-त्रिपिटक और उनकी अद्वैत कथाओं की भौगोलिक सामग्री का विश्लेषण किया था। जम्बालाल मुमन न अलीगढ़ की जनभाषा और उसमें आई सामग्री का सुंदर विवेचन हजार पृष्ठ स ऊपर म किया था। ऐसे निबंध यदि लिखे जाएँ तो उनसे डिया व साथ-साथ नई तात्विक बातें भी सामने आ जाएंगी।

माच व तीसरे हप्ते म पत्रा म स्तालिन की कड़ी आलोचना हान की खबर आने लगी। मेरे कुछ साथी इसमें तिलमिला गए। सरदार पृथिवी सिंह ने बहुत उत्तेजना और निराशापूर्ण शब्दों म इसका बारे म लिखा। लेकिन, मैं इसमें बहुत प्रसन्न हुआ। इसी दिन की मैं आशा रखता था हूँ इतनी जल्दी नहीं। मार्क्स ने साम्यवाद व वैज्ञानिक रूप का हमारे सामने रखा, और उसकी तरफ जान व लिए दुनिया की सबहारा जनता को और मानवता के भक्तों को प्रेरणा दी। वह महान् थे, इसमें किसका सन्देह हो सकता है? लेनिन ने साम्यवाद का पृथिवी पर उतारा। यही गांधी की सगीने उसे असम्भव कर रही थीं। आखिर सगीना व बल पर मुटठी भर लाग दुनिया के सबस्व के स्वामी बन गए थे। उनका शासन और उत्पीड़न अभूण्ण चल रहा था। ऐसी परिस्थिति म जिमने साम्यवादी शासन पृथ्वी पर कायम किया, वह लेनिन महान् थे, यह भी निस्सन्देह है। लेनिन साम्यवादी शासन का पूरी तौर से मजबूत नहीं कर पाए थे। उसका आर्थिक निर्माण के लिए बहुत प्रयास नहीं उठाया जा सका था कि वह हम छान-कर चले गए। ऐसे समय दस बड़े भार को स्तालिन न संभाला। पुनर्निर्माण के बाल पंचवर्षिक योजना का सूत्रपात किया। इसके कारण सावियत भूमि आर्थिक तौर स इतनी सुदृढ़ हा गई कि अब वह दुश्मनता के लिए लाह का चना बन गई। यह तीसरा पुरुष भी महान् था। लेकिन बुद्धापा सम स्रिय या आत्मदलाघा की मात्रा अधिक होना, स्तालिन अपन जीवन के अन्तिम बीस वर्षों म कई बुराईया व लाने के कारण हुए। बाहरी देश के वर पड़यंत्र के कारण सावियत भूमि के भीतर सुरक्षा की आर ज्यादा ध्यान देना पड़ता। लेकिन युद्ध की स्थिति व लिए बनाय जान वाले नियमों का

बराबर जारी रखना सतरनाक था। यह नियम बिना कारण भी मन्देश पदा करते फिर सन्देश का कठोर दण्ड कितने ही निरपराध व्यक्तियों को भोगना पड़ता। इतनी बड़ी गति को ठीक तौर से इस्तमाल करना बहुत कम ही आत्मियों का बम की बात है। स्तालिन ने दूसरा के लिए कहा था—

मफ्लता के कारण 'कवाचीय म आना' पर बर खुद इसका गिकार हुए। वह अपने को सबक समथन लो; सबका क हाथ जोड़कर स्तुति करने वाला खुशामदिया की कमी नहीं रहती। जो खुशामद नहीं कर मना यह उनके श्राध का भाजन हुआ। इस स्थिति में उनके चारा आर खुशामदिया का गिराह जमा हा गया। उनमें जा सबसे अधिक निष्ठुर हा सकता था, वह उनका कृपापात्र बन सकता था। बेरिया ऐसा ही था जिसे स्तालिन ने जाजिया से बुलाकर गृह मन्त्रालय का काम सौंपा। गृह मन्त्रालय का काम था भीतरी गन्धुआ की गिर न उठाने देना। बेरिया ऐसी गति का हाथ में लेने के लिए बिरकुल अयोग्य था। उसने जब दो चार अत्याचार किये ता उसने लिए जरूरी हा गया कि अपने चारा जोर किलाबंदी कर फिर अपनी ही तरह के आदमियों का उसने अपनी चारा आर जमा कर लिया। इन पत्तियों के लेखक ने भा बेरिया की पुलिस के कारनाम कुछ देखे, और अधिक सुने। लोग सास लेने में डरते थे। इस स्थिति को लान में स्तालिन का बहुत हाथ था। चाहे वह हरेक मामल को न जानते हों, पर जा व्यक्ति पूजा उठाने अपने लिए चलाने, उसका यह अनिवाय परिणाम था। इस स्थिति को दूर करना सोवियत भूमि के लिए सबसे बड़ा काम हो गया। बाहर के कम्युनिस्ट या साम्यवाद के हितपी स्तालिन की बड़ी आलाचा की चाहे नापसंद करें चाहे इसके कारण बाहर दुनिया में साम्यवाद के दुश्मना का थोडा दर तक प्रापेनेण्डा करने का अच्छा मौका मित्रे, पर जहाँ तक हम का सम्बन्ध था उसके लिए स्तालिन की व्यक्ति पूजा का एक क्षण भी घर्दात करना हानिकारक था। जा शासन बहुजनहिताय हो उसमें कतनी पात्रदिया की आवश्यकता क्या? सोवियत के नेताओं ने उस बड़ी बाधा का हटाया जिसमें इतनी जल्दी समाप्त होने वाली नहीं समझता था। इस नीति से सारी सोवियत भूमि में एक अद्भुत स्फूर्ति आई है और

कितन ही योग्य व्यक्ति जा उस युग की क्रूरता क सिंकार थे फिर काय क्षेत्र म आए ।

प्रो० तुवियान्स्का और प्रा० वास्त्रिकाफ मस्कृत क अद्भुत विद्वान् थे । डा० श्चवात्स्का उह अपना पुत्र मानकर अपुत्र हान क गार्क स विरत थे । उह इन दानो क ऊपर बडा अभिमान था । लकिन १९३६ म तुसाचन्की पडयवा म स जा इजारा जो घुन क साथ पिस गए उनम य दाना विद्वान् भी घर लिए गय । य वस्तुन पण्डित थ । उनका अपनी विद्या म मतलब था जिसम वह दुनिया म लासाना थ । दाना का पकडकर जेल मे डाल दिया गया । मालूम नही, वह मुक्त हान क लिए आज भी बच है या नही । पर इस ता उस युग की क्रूरता का ढाका नही जा सकता । मैं मयचना हू, स्टालिन पूजा का विनाश सावित्र भूमि म बहुत बडा काम हुआ है । दा तान मित्रा न मुक्त बिकल हाकर इसक वार म पूजा और मैंन मन्थेप म यही धार्ते बनगइ ।

२५ मार्च का कमला परीक्षा देकर आइ । भाषातंत्र वाला प्रानपत्र उनका बमजार रहा । घर का जागा जागटा, आन गाव का मिद्ध' ठीक है । मैं बराबर बहता रहता कि इमे पड ग । रात का कया क तौर पर भी उस सुनन क लिए तैयार नही थी । अब पछतावा था । फर हागो ता 'भाषातंत्र' क ही कारण ।

गर्मी क डर स दिल्ली जान म थियक हो रही थी, पर वहा जाना जरुरा था । जेता का हाथ बहुत कुछ ठोक हा गया था, और सिफ ताकत आने की कुछ बमा थी । पर जब तिल्लाम पोलियो की चिकित्सा का विधिप प्रगथ है ता उमे वहाँ दिवाना आवश्यक था । देहरादून स कमला को लेकर जा सकता थ, पर हाली यणी कर लेनी थी, इसलिए ३० मार्च को यहाँ स जान का निश्चय किया ।

देहरादून—३० मार्च को साढे ७ बजे सवर जया जेता और कमला क साथ घर स निरल । पहाड म माटर पर चरना कमला क लिए जान पर खेलता है इसलिए वह जिना साथ पिय रजाना हुई । ९ बजे त्रिनेग म कार मिनी और नया १० बजे हम गुक्का के घर पर पहुँच गय । पामपाट के लिए मजिस्ट्रेट के हम्नापर करान थ । आज छुट्टा थी, लकिन गुक्काजी ने

मजिस्ट्रेट का तयार कर रखा था। मसूरी के सब डिप्टीजनरल मजिस्ट्रेट का हा इम्तजार करने का अधिभार था। वह भले आदमी निकले, और फामपाट के फाम पर हस्तगत का काम खतम हो गया। वह उस दिन स्टना से मुकद्दमा का फसला लिपवा रहे थे। घाराप्रवाह जपेजा का व्यवहार हो रहा था। पन से ऊपर सम्पूर्णान द तर मभी मुख्यमंत्री और मंत्री हिंदी के पठन घुआधार भाषण दते हैं लेकिन उमरा फर हमारे सामने था। जिनके मुकद्दमा का फसला हो रहा था गायद ही उमर से वार्ड इस समझ सन। इसको कहते हैं एक दूसरे को धाया दना। यदि वस्तुतः हिन्दी का व्यवहार म रना है तो अग्रजी के स्टना और गदपिस्ट को हटा कर उसकी जगह हिन्दी वाले देन चाहिए, और अपन अपसरो को मरन ताकीद करनी चाहिए कि वह हिन्दी में ही अपना फसना दें। ऐच्छिव होन पर अपसरो की वतमान पीढी तो हिन्दी के लिए खुवने को तयार नहीं हो सकती। वह समझती है मंत्री लाग सिफ ऊपर ऊपर से हिन्दी की बातें करत हैं उमके लिए माधन जुटान का तयार नहीं। अभी माच का जत ही था, लेकिन यहाँ ४ मज तक अमह्य गर्मी था। जब अमली गर्मी शुरू होगी, तब न जाने क्या हालत होगी ?

३१ माच को भा हम देहरादून में ही रहना था। बनिया का भाजन गुक्काजी के यहाँ और ब्रह्मभाज ५० हरनारायण मिथ के यहाँ हाता रहा। लेकिन गुक्काजनजी के हाथ का बना बनियो का भाजन भी बहुत स्वादिष्ट होता है, इसलिए हम बराबर ब्रह्मभोज के लिए तयार नहीं थे। आज गुरु रामराय के दरबार का शण्डा मला था। सयोग ही समनिय जा ऐम समय हम पहुँच गए। उससे फायदा न उठाना उचित नहीं समथा जा सता था। गद्दी से बचित गुरु रामराय सिकला के सपनम गुरु के उदपट मुत्र थे। बचित करने का परिणाम पय में शगण होना जरूरी था। उनके भतीजे गुरु संग बहादुर का औरगजेब न मरबाया। अन्तिम गुरु गात्रिसिंह की मुमिरनी की जगह खडम उठाना पडा। जब एक पक्ष औरगजेब के काप का भाजन था, तो दूसरा अशोध का भाजन होगा ही। इसीलिए गुरु रामराय के लिए सिपारिण करके औरगजेब न गदमात्र के राजा के पास भेज दिया। उस समय दून अनादिवाल से गदवाल का चला आया था। गुरु ने जगल और

जगली जानवरा से भरी दून की भूमि के एक छोटे से गामडे म अपना डेरा डाला जिसके लिए ही इस स्थान को डेरा या देरा कहा जाने लगा। स्थानीय लोग देहरादून का अब भी देरा कहा करते हैं। गुरु रामराय और उनके उत्तराधिकारिया ने यहां के मठ को बहुत बढ़ाया। किसी गुरु ने झण्ड को गाढने का राज जारी किया। ११० फुट का लट्ठा झण्डे क दण्ड का काम देता है। एक बार का कटा हुआ लट्ठा तीन साल तक रहता है तीसरे साल पुराने की जगह नया गड़ा किया जाता है। इसक देखने के लिए लोगो की भीड लग जाती है। १ वजे झण्ड क मले के लिए जाना प्रिय बात नहीं हा सकती किन्तु लिखने क लोभ न खीच ही लिया। शुक्लजी ने बतलाया नरा पहले चलना चाहिए नहीं तो भीड म स पार होना मृदिकल हागा। हमने समया था दो तर्ई वजे तक काम सतम हो जाएगा।

जल्दी करत करते १ वजे हम घर स निकले। दूर ही तागा छोड देना पडा। फिर भीड म से घक्कमपेल करते आगे बड। लीड स्पीकर धान के पदों पाड रहे थ। सब दूकानदारो न उहे ऊँचे स्वर म बजान की हाड लगा रानी थी। सक्कवाल अलग चिल्ला रहे थ। हर तरह की दूकानों थी। कपडा मिठाई खिलौने स लनर मिटटी की सुराहियाँ तक जो चाह साल ल। शुक्लजी न विद्याप निमन्त्रण क तीन पास प्राप्त कर लिए थ। हम दाना क अतिरिक्त एक आगरा के प्रोफेसर भी साथ थे। विद्याप महमाना के लिए एक काफी लम्बी छत पर कुसिया का इतिजाम था। सीढी पर पास देखा गया। हम ऊपर चले गए। अभी जगह पूरी भरी नहीं थी। शुक्लजी क कुछ और परिचित प्रवक्क मिले, इसलिए हम सबसे अगली पक्ति म बढाया गया। अग्रेंजा क राज्य म दाना साहब और मम इन कुसियो का अलवृत्त करते थे। जब काल आत्मी और स्त्रिया वहां पर बठी हुई थी, जिनम सभी भक्तिभाव पून्य नहीं थे। एक बढा अपनी बहू का लेनर हमारे पास आद। पहल जगह नहीं थी लकिन हमन जगह बना दी। झण्डा उठत वक्त उहाने हाय जाडकर उसी तरह रुपया उसकी तरफ फेंका, जस गगा और जमुना क पुल को पार करत यात्री जैसे फेंकत हैं, जिनम स अधिकांग पुल क लाह क सम्मा म चन् स करक गगा तरु पहुँचे बिना ही रह जात है। झण्डे का

स्थान हमारे बठने की जगह से काफी दूर था, इसलिए रुपया वहाँ कैसे पहुँच सकता था ?

२ बजे तक जगुल जगुल भर जमीन और छतें लागी स भर गइ । मालूम हुआ कुछ लाग सकता की छता पर सभेरे ही स जाकर तपस्या कर रहे है । इस धूप म स्त्री पुरुषो का यह धम आश्चर्यकर था । इसम केवल भक्ति ही नही बल्कि तमांगा देखन की प्रवृत्ति भी काम कर रही थी । जब पडी ढाई बजानलगी, तब हमम स कुछ म उरमुक्ता बढन लगी । सिर क ऊपर कपडे का चदवा था लेकिन एक जगह फाक पाकर धूप सीधे खापडी पर पड रही थी । आध घटे म वह हटी । ३ बजे भी अभी महत्तजा का कोई पता नही था । महन्तजी इलाहाबाद मुनिवसिटी क ससृत्त क एम० ए० है । शिक्षित श्रद्धाहीन हात है इसे बूठा करन क लिए वह गायन अपने गुरु महत्त लक्ष्मणदासजी स भी अधिक समय तक पूजा करते है । साडे ३ बजे तक भी उनका पता नही लगा । खापडी धूप से पिघल नही रही थी तो भी चिन्ता बढने लगी । लोग कहने लगे दा-डाई बजे तब हमंगा झण्डा सडा हो जाता रहा है । झण्डे का लड्डा पहन ही गिरा दिया गया था । उसक ऊपर चने पिछले साल क खोल निकालकर प्रसाद के लिए रसे गए थे । साल के दा जगुल के चौथडे से भी आदमी का भाग्य बन सकता है, उसका दुर्भाग्य हट सकता है, मनोवामना पूरी हो सकती है । अपनी कायसिद्धि के लिए स्त्री पुरुष पहले ही से मानता मानते हैं— हमारा यह काम हा गया पुत्र प्राप्ति हा गई, तो हम झण्डा साहन पर एक थान चढाएगे ।” वार्ड-बोर्ड तो कामदार मजदूर की साल चढाने की मानता मानते हैं । और ऐसा की सत्या इतनी अधिक हाती है कि दस साल के पहले गायन ही किमी क वारी आती है । उसके लिए हजार या अधिक रुपये दाता देते है । ११० रु क लटठ क दानो तरफ आदमी सडे थे । सब एक साथ झण्डे को हाथ से उठाने और उम पर कपडा मढा जाता । पहल पीले सूती थान जोर दूम कपड मढे गए । जन्म म मारे झण्डे के नाप का लाल मसमन का साल सि के ऊपर स टांगा गया । फिर गैरुटा रोमी रुमाले झण्डिया की तरह जहाँ तहाँ बाँधी गई और सिर पर एक कपडा-सा झण्डा लगा दिया गया । य काम पूरा हा जान पर आगा बंधन लगी कि जब झण्डा सटा हागा

लेकिन, महंतजी अपने अनुचरा के साथ साढ़े ४ बजे यण्डे के पास पहुँचे। सिरहान से जल छिड़वते, पूजा करत वह उसकी जड तक पहुँच। आज वह विशेष पोशाक मथ। जरी का चोगा शरीर पर और जरा की नोकदार टोपी उनके सिर पर थी। यह पोशाक उनसे पहले के अनेक महंता के शरीर का गोभित कर चुकी थी। वह यण्डे के पक्के चबूतरे पर पहुँचे। फिर हाथ का इशारा करते वे उन अधिकारी लोगो की झडा उठाने के लिए कहने लग। ११० फुट के माटे लटठे का उठाना इतना आसान नहीं। एक तरफ चोटिया जैम लटठ से हाथ लगाए लाग थे और दूसरी तरफ लटठे म बँधे रस्से को सँकडा जादमी सीच रहे थे। हाथ एक पारसाही तक पहुच मगन थे इसलिए लकड़ी की छाटी बडी कँचियाँ लगाई जा रही थी। झडा कुछ ऊपर उठना और फिर नीचे आ जाता। डर लगता था जरा भी गलती हुई, तो उसके नीचे खड़े सक्टा आदमी हताहत हुए बिना नहीं रहते। लेकिन, झडा साहन काइ निर्जीव लटठा नहीं है, वह दिय पुस्प है। बडा उत्तम म कभी ऐसी दुघटना की बात नहीं सुनी गई।

आज यडा साहन क्या थोडा ऊपर चढकर बार बार नीचे चले आत हैं। पहले खडे हान म दस मिनट भी नहीं लगते थ लेकिन आज आध घटे लाग बेकार कागिंग करत रहे। कितने ही निराग हाने लग। छर पौन घटे चाद झडा साहब सडे हुए। यातायान पर नियंत्रण करनेवाला लौडस्पीकर बीच बीच म अपन काम की छाड 'गुरु रामराय की जय' 'झडा साहब की जय' वाल रहा था। महंतजी और उनके मैनेजर हाथ हिला करके आद मिया का उत्साह देने परगान हो गए थे। महंतजी ने पूजा करन क कारण इतनी शेर की थी और वे डेढ दो बजे की जगह पर साढ़े ४ बजे झडा साहन के पास पहुँचे थे। झडा महाराज क्या नहीं उठ रहे थे, इसका पता लौन्ते वक्त हमार ताग वाले न घतलाया। कह रहा था— 'पहल क महंत महाराजो म तज था। उनके तज और तपस्या क बल से यडा साहब तुरत गड हा जात थे।' यतमान महंत श्री इन्द्रेणचरणनास के गुरु महंत लक्ष्मणनास यडा उठान के वक्त हाथ जोडकर एक पर से खडे हात थे। मैन दसा तरुण महंतजी एक पैर से नहीं खडे हैं जोर न काई ऐसा भाव दिखा रह थे, जिगन भालूम हा कि वह इस दिय वस्तु को सूखा काठ नहीं समन रहे हैं।

वह तो बस ही लोगो को उत्साहित कर रहे थे, जब किमी बड़ी गहरीर के उठाने वाले लोगो को किया जाता है। बस ही तो 'हेइ या, हेइ या' का। फिर यह दिव्य स्तम्भ क्यों आसानी से उठने लगा? ताँगा वागा यह भी कह रहा था कि सदा साहब अन्त में उठे भी तो पहले के गुफ्रा व पुण्य प्रताप में ही। हाँ महाराज, दफ्तर में बठकर कागज पर कलम चलाने से थोड़े ही वह तेज आ सकता है जा पहले महन्त महाराजो में था। महन्त इन्द्राचरणदास की यह बड़ी बड़ी आगाचना थी। उस दिन हजारों व मुह से यही बात निकली हागा। फिर महन्तजी का घटो पूजा करना व्यर्थ ही ठहरा। यदि वह एक ही बज आ गए हाने जीर दस मिनट में चडे का खटा करवा दिए हाते तो उनके तज का लोग लोहा मानत। मैं गुलजी से कहा 'आप इस बात की जाँर महन्तजी का प्यान जरूर जाहृष्ट करें क्योंकि लागों की आवाज भगवान् की आवाज है। सडा सडा करान ही महन्तजी अपन सम्माननीय महमाना की अभ्यथना व लिए आण। पर उम समय तक बटुत से बाहर चर गए थे। मुझमें मित्रने पर देर के लिए क्षमा प्रायना की। उनके तज पर टिप्पणी मैं पीछे सुनी थी नहा ना जल्दी जल्दी में नी दा शब्द कानों में डाल देना।

टेरे मेडे घूमते शुक्लजा ऐसे रास्त हम तागा की जगह पर लाए जिसमें कम भीड थी। ताँगवाले ने बठाया और कम भीडवाला सडक में निकला। बेचारा आशा किया था कि ढाई-तीन बज तक सगारियाँ मिल जाएँगी। इसी आगा पर वह जाकर रहा खडा था। हर मिनट लोगो व आन की आगा की इसलिए बीच में वहाँ से अनुपस्थित क्यों जाता? दो तीन घट उसे भी प्रतीक्षा करनी पटी थी। उस वक्त उसने दिमाग में अपना जोहर दिगलाया, जीर चडे के देर हान का कारण उसे मालूम हुआ, जिसने वारे में हम पहल बनला चुक है। महन्तजी देहरादून नगरपालिका के अध्यक्ष हैं। यह बहन की आवश्यकता नहीं कि उनमें प्रदेश या बाहर भी इतने ईमानदार अध्यक्ष पायद ही किमी नगरपालिका को मिले हा। जहाँ हर ठेके जीर हर बडे बडे तज पर दगाग अध्यक्षता उपाध्यक्षा और डाक सहायका का धरा हुआ है, वहाँ ईमानदारी मुलभ नहीं हा सकती। पर महन्तजी का उसकी कोई आवश्यकता नहीं उनके पास मठ की संपत्ति काफी

है और खच करन म अपन अधगिकित गुरु से भी अधिक समय रखने हैं । यदि जनता के काम के लिए वह दफ्तर म बैठकर दस्तावन करत हैं, या डक राय की आगदा के नगर का बेहतर बनान व लिए धूमत फिरत हैं, ता उनका यह काम पूजा पाठ से कम महत्व का नहीं है । उनकी लेखनी भी गक्तिगाली है । मागल रामेल का जीवनो हिंदी म उद्दान लिखी है, वह बतलानी है कि वह भाषा पर अधिकार रखने हैं सैनिक विज्ञान के भी गम्भीर विद्यार्थी हैं । उनका मकल्प या इम तरह के कितन ही ऐतिहासिक मनानायको की जीवनो लिखन के बहान मुद्र क दाव-पच, हथियारा और दूसरी चीजा का हिस्से म वषण लिख देना बहुत बडा काम हाता, पर नगर पालिका उनका बहुत-सा समय खा जाती है, जो बचता है उसम भी काफी पूजा पाठ ले बठता है—अफमास, यह सब करन पर भी उनके तज का लाग मानन व लिए तयार नहीं । लाग ने जय रामक घर म आग लगा दी और मोता का दुसरा बनवास क लिए डकेल दिया, ता मन्तजी की क्या बात ? ये ता मन्तजी का कहूँगा वह सबरे ही सझडा साहब की सवा म लग जाएँ, पूजा-पाठ कम कर द क्याकि मठ का काठरी म होनी पूजा की बाहर दन्तजार करती हनारा जनता नहीं देखना । ठीक ११ बजे बडा साहब के पास आएँ और १२ बजे तक वह सटा हाकर पहरान लय । तब लोग मानये कि महन इन्ड्रेगवण दाम जपन गुफ्रा म भी अधिक तेज रखत है ।

दिल्ली—१ अप्रल मूयों का दिन है लकिन किसो प्राचीन या अर्वाचीन ग्राह्य न इम यात्रा व लिए बजित नहीं किया । न बहा लाग की धारणा है कि १ अप्रल क दिन यात्रा करतवाला भा मूय माना जाएगा । हाली के दिन प्मलिया यात्रा करना लोग पमद नहीं करत कि उम दिन हमारे यहा बृडदग मच जाता है । गिभा और सस्कृति के बन्ने से हमार लाया के स्वभाव म कुछ गम्भीरता कुछ समय आना चाटिण या लेकिन बात उलटी देखी जाती है, जिसका यही अर्थ है कि हमारी सारी गिशा हम सस्कृत वदान म समय नहीं है । पहले जमाने म सिफ होली की दापहर तक लाग मिट्टी कीचड एक दूसरे क ऊपर फेंकते या गहरा म अवीर घोलकर पिचकारी मे डालत । अब तो एक हफता पहले ही स लौडे सारे इस काम म जुट जान हैं । फिर रग ऐसा इस्तेमाल नहीं करत, जो जल्दी धुल जाए । एसा

रण दूढ़ कर लाते हैं, जा कपड़े का हमेंगा क लिए खराब कर दे। होली के दोपहर तब ही उमका सीमित भी नहीं रखते बल्कि गाम तक यह तृफान बदतमीजी जारी रहता है। मुझ अपन विद्यार्थी जीवन का बनारस याद है। हमारे गावा म पानी म अबीर घाल कर गाम तक डाली जाती थी लकिन बनारस म दापहर क बाद सूखी अबीर हा मुह पर मलन वा रबाज था। एसा ही दूमरे सहरा म भी देया था। उस वक्त क लाग ज्याला सपत थ या आज क ? आज ता उम दिन माटर, उस या रल म याना करन की कोइ हिम्मत नहीं कर सकता था। लाग क लिए छूट है। कीचट, गावर जो चाज पकते रहें। रेल क डब्बा पर महीना दाग नहीं छूटता। किमी न मिटकी खुशी रखी तो कम्पाटमंट क भानर की काई चीज गंदा हान से बच नहीं सकती। देग के स्वतंत्र होन स पहले धाग-सा मवाच भी रहता था— मुसलमान या ईसाई विरात्र करये हिंदू मुस्लिम दगा हा जाएगा। अत्र उसकी भी कोइ पर्वति नहीं करता। मुसलमान खुपचाप घर म रहकर उस नित को बिहा दत हैं। हा उम स कुठ दमके महत्व को समयन लगे हैं। साबत हैं कि जनगगा का प्रवाह जिवर बहता हो उसम तुम भी गामिल हो जाजा। आज स सवा सौ साल पढ़े कवि नजीर जकबरावादी हागी म दूमरा क साथ मिल कर तूब आनंद गते थ उस पर कविना करत थे। गोग नजीर रा हाथोंहाथ उठान क लिए तयार थे। आज भा जहाँ काई ऐसा मुसलमान दिखाइ पन्ता है उसकी आबभगत का क्या कहना। स्वतंत्रता क बाद हाता का क्षेत्र जीर ग्ता है। पढ़े यह हिंदीभाषी भूभाग का ही त्यौहार था। वगाउ पहाड पजाब और महाराष्ट्र म दगा लेखी नक़्त कभा कभी देखी जाती थी। दक्षिण क चतरा प्रदेश ता जानन भी नहीं थे कि हाग किम चिडिया रा नाम है। पर अत्र जान पडता है कि हालिका माई मारे भारत का एक करन क गिण फात्र वात्र चुकी है। दिल्ली म भारत क सभी भागा क लाग ममद त मदम्य हैं। वहाँ हागी जवाहरलाल स ही गुल् हाती है। उस दिन उनका सारा गरौर और मुह अबीर स भरा रहना है। सभी मदरस भी गुलाल मग्ने म एक दूसरे मे हाड ग्वात हैं। फिर दिल्ली क अधीन सारे भूभाग म हालिका अपना राज्य क्या न कायम करना चाह। हैदराबाद तल्लु भाषाभाषी प्रदेश है। वहाँ क एम० एल०

ए० लागू ने हाली की बहार लेनी गुरु की, ता उसका अय है दक्षिण के चारा अभेद्य प्रदेशों में भी छेद हा गया। वस्तुतः हाली क डर क मारे ही हमने यात्रा पहले नहीं की।

दिल्ली—अब की दिनेक समय में दिल्ली की यात्रा करने का हमने निश्चय किया था। पड़े-पड़े सोते यात्रा करने की जगह आसपास की भूमि का देखात चलना अच्छा है। कमला सस पहले दिन में दिल्ली की यात्रा नहीं कर सकी थी और न जया जेता हा। जया पहल की रेलयात्रा का मूल चुकी थी लेकिन अब वह उस समय सकती थी। जेता का मौजूदगी मान हाने वाला था। दूमरी की दवादलो गाई वहन की कोशिश करता। भाजन करके १० बने स्टेशन पहुँच। कुछ पहले पहुँचने से जगह मिलने में आसानी थी। आगिर आजकल का दूसरा दगा पहल का डयौटा र्जा ही है, इसलिए काफी भाड होने की सम्भावना रहती है। ११ वाकर ३५ मिनट पर बम्बई एक्सप्रेस चला। आजकल हरद्वार की अक्कुम्भी की धूमनाम थी, यद्यपि उनका सत्रस महत्वपूर्ण स्थान १३ अप्रैल का हानेवाला है, पर लागू पहल ही से पहुँच जाना चाहते थे। हरद्वार का कुम्भ हा या अक्कुम्भ अप्रैल की भयकर गर्मी में बड़े धुर समय में पड़ता है। यदि सपाई का टीक र्जाम नहीं हुआ, तो हैजा हाना अवश्यम्भायी है। गायद वह हरद्वार क इस मल में न आया हा। सरकार वहन सचत है इसका पता इसी म लग रहा था कि देहरादून स्टेशन से हरद्वार क टिकट लेनेवाले हरक आदमी की कड़ी हैजे का इजेकशन लगा दिया जाता। हरद्वार में चारा आर से आनेवाले रास्ता पर इसका प्रभाव था। प्रयाग इसमें अधिक सौभाग्यशाली है क्योंकि उसका कुम्भ या अक्कुम्भ सर्दी क सत्रस ठण्डे मरीन में पड़ता है। वहा भी सूद और इजेकशन का प्रभाव रहता है लेकिन इस साल ता दिल्ली और र्गमनके के महादेवा और देवाने पहुँच कर गजब डा दिया। सारी पुलिस का अपनी मवा में बुला लिया, और प्रभाव में उनक अभाव क कारण हजाग आदमी कुचल कर मर गया। एसे देवा महादेवा का कोई पिछा मिला, यह कहना मुश्किल है। हरद्वार में गर्मी क कारण भी यह जान की हिम्मत नहीं कर सकत।

पहल ही से चिटटी मिल गई थी। ५० विगारादास वाजपयी हरद्वार

गाड़ी क पहुँचते ही आ गय और जब तक गाड़ी खुली नहीं तब तक बठे बातें करत रहे। साथ म पूड़ी, मिठाई रायता लावे थे। पूरियाँ जब भी गरम थी, और आजकल की दुनिया म जादमी की जितनी शक्ति है, उसक अनुसार प्रयत्न करके सुद्ध धी म बनाई गइ थीं। सुद्ध धी कहना आजकल मुश्किल है। जा अपनी भैस और गाय क मक्कन से धी बनाता है वही सुद्धता की बसम ला सक्ता है। यद्यपि हम भाजन करके चले थे पर गाड़ी चलते ही गरम गरम पूरियो न हम आट्टप्ट किया गाम तर भी हम चारा प्राणी पूरिया का समाप्त नहीं कर सके रेसिन रायता का न ठाने का निश्चय कर लिया जा। गाणी कुरुभूमि म चल रहा थी। कुछ समय पहले यात्रा करत तो हरे भरे खेत हान लेकिन अब वह कत चुक थ। कुन्देग उत्तर प्रदेश का पश्चिमी भाग है और बाशी मत्ल (भाजपुराभापी भाग) पूव म। दोना आजकल चीनी की खान बन गए हैं। यन्त दजना मिले खटा हैं। छुटे छूटे ऊगा म भर इधर म उधर जाते दीप पट रह थ। जगत् जगत् तोलने के काँट के आमपास गान स भरो सकडा गाडियाँ खनी थी। ऊब नगदनारायण की फमत्त है हमलिए जहा मिला म त्रिको की जरा भी आगा रहती वहा क लाग अपने खेतो में उग बोने के लिए तयार हा जागे। पूर्वी उत्तर प्रदेश म गर्मी क शुरू दिना म कुजा से चरम भर भरक पाती ऊब क खेता म डाला जाता है। कुल्हा सौभाग्यगाणी है जा वहाँ गगा की धाराधा का जाल बिछा हुआ है और पानी की कोई बमी नहीं है।

गर्मी ४ बजे जावे बम हुई पर पता था और गाड़ी चलत बत्त बाहर स भी हवा आती थी इसलिए अधिक घबराने की जरूरत नहा थी। गाम हा गई थी अब गाड़ी मेरठ छावनी पर पहुँची। प्रा० कृष्णकांत मिश्र अपनी पत्नी कमल अपन भाइ, वहिन और बहनाइ क साथ जाय और मेरठ नगर तक साथ चल। करीब आध घंटे नर सत्सग रहा। कमल की पुत्री कल्पना जब बुड हूने की थी तो बहुत ही क्षीण और छोटी दिखाई पडती थी लेकिन अब वह स्वस्थ और हट्टी कट्टी थी। रात क ६ बजे क करीब हम दिल्ली स्टेशन पर पहुँचे। दा बच्चा और सामान का लहर रेल से चलन उतरने म कुछ कठिनाई ता हानी ही है, पर श्री शिव गर्मा स्टेशन पर पहुँचे हुए थे। हम आराम से उतर कर टक्की पर बठे, और २२ फज-

वाजार म भैया के घर पर पहुँच गये । भैया और भानीजी हमारे जाने की प्रतीक्षा म थ ।

गर्मी का तापमान सी डिग्री स ऊपर नहीं पहुँचा था लेकिन इसको भी हम १० वन स ४ वजे तक पछे के नीचे ही काट सकते थे । जिस उद्देश्य से हम भटठी म जलन आय थ, पहल उसे पूरा खत्म करना था ।

सफ़्टरजग अस्पताल—सुना था दिल्ली म पोलियो की चिकित्सा का आधुनिकतम ढग से पब-थ है । यह भी मालूम हा गया था कि यह गहर से बाहर मपदरजग म ह । भया दाना बच्चे और हम दोना टैक्सी लकर हवाइ जस्टे स ना आग अस्पताल की जगह पर पहुँच । युद्ध क समय की आवश्यकता का पूर्ति क लिए अस्थायी एकमाला नीची छना की कोठरिया-वाती इमारत बनी थी जिहू स्थायी अस्पताल का रूप द दिया गया था । यदि तिमजिला चोमजिला इमारते हाती तो आदमी का वग्न दूर तक दोट भाग करन की आवश्यकता नती हानी । हम म म कोई यहा की जिवि व्यवस्था म वाकिफ नही था । गिव गमाजी भी पहली बार आए थ जार वग्न बात भया की भी थी । पालिया क्लिनिक कहा है इसी का पता लगान म काफी चक्कर काटना पडा । अस्पताल म हजारो काम करनेवाले है मभी हजारो कमरा का हिसाब कैस रख सकते थे । खर, बच्चा के बाड का पता लगा फिर वहाँ जाकर इस क्लिनिक का भा स्थान मालूम हा गया । जाने पर मालूम हुआ पहल नम्बर लाआ । नम्बर के लिए फिर सटक क विनारे वाले मकान म जाना पग । बराडे म भीड लगी थी । दूर तक क्यू था । एक म अधिअ आदमिया का नम्बर देने पर लगाकर इन कम किया जा सकता था लकिन लोगो के कष्ट की किसका पवाह है । क्यू म यदि कही मरीज को भी लेकर खडा हाना पडता ता बडो आफन हानी । लेकिन इतनी अक्लम-दो की गई थी कि स्वस्थ आत्मी नी मरीज के लिए नम्बर ला सकता था । गिवजी क्यू म लडे हाकर जता का नम्बर ल आये । फिर क्लिनिक मे भी डेड घट के करीब अगारना पडा तर बाग आई । सिमी एक महिला डाक्टर न दरखर कुछ लिए दिया । सब तीमरा जगह जाना पडा । तीमरी जगह गय, जहाँ पर नि बच्चा की इस तरह की बामा रिया क विगपन थे । एक बडे कमर म पचाता आत्मी ई तजार कर रह

थ। पच्चीसा छाटे छाटे बच्चे थे जिनमें से किसी का पैर टड़ा हा गया था, और किमी का हाथ। कितने ही सुन्दर लड़कें विकलांग हो गये थे। यहाँ एक नर्स ने पुर्जा पानर नाम लिये लिया लेकिन हम वहाँ आदंग पत्र नहीं दिया। वह दिया यहाँ आप भी इन्तिजार कर। पहले लडो डाक्टर न हो कह दिया था— हाथ ठीक हा गया है। लेकिन हम जब दिल्ली तक आए थे ता विगेपन का दिग्गला दना चाहते थे। कुछ दर बाद डाक्टर साहब दा एक डाक्टर के साथ आए। हरक लडकें का दखकर कुछ आदेश लिख वात जात थे। जना क हाथ पर हलर से पालिया का जमर हुआ था, और कुछ ही दिना तक वह उस इच्छानुमार हिला हुआ गही सबता था। पर, अब हिलान हुआन म वहाँ शिकायत गही थी। कसर थी ता यही कि वाए हाथ की अपना दाएँ हाथ म गक्ति कम थी, वसलिए डाक्टर साहब ने उस सत्रम पीछे के लिए छोड़ दिया। अत म वारी आइ। हाथ दसा और पूछा। फिर कहा— जर इमम अधिक कसर नहीं है। जो कुछ है वह हाथ क प्यायाम स ठीक हा जायेगा। भया पहले स ही यह वात कह रह थे। लेकिन हम ता आधुनिक ढग के क्लिनिक स विगेप परामश लेने के लिए आय थे। डाक्टर न किमी तरफ बगार टाली। हम वहाँ स चल देना चाहिए था लेकिन जिस तरणा ने यहाँ पुर्जे को लिया था वह कह रही थी— 'जरा टहरिए विगप तीर स देवग। ठहर जाना पडा। गिवजी न पाछे वत लाया कि वह कुछ पसा पाने की जागा रख रही थी। खर फिर डाक्टर ने दया। मलाह ता वह पहले ही दे चुक थे।

छुट्टी मिलन पर १ बज हम टकमी लर घर पर पहुँचे। जब गर्मी म बाहर निकलन की कौन हिम्मत करता ? दिल्ली का काम हमारा हा चुका था इसलिए जरती छोटन की पडी थी। गाम के ६ बजे तक हम और बच्चे भा गीतलपाटी पर पमे १ नीचे पडे रह। स्त्रिया बडी हिम्मतवाली हातो हैं। हाट बाजार उनर गौक की चीज है। कमला और भाभीजी जया और 'ताईजी क मुन का लकर बाजार गइ। भाभीजा के भतीजे का जया न ताईजी का मुना नाम द रगा है।

वैम ता १० १२ जप्रत तक क लिए हम तयार होकर गए थे। साचा था वहाँ बिजला का क्ला या मालिग जादि बतलाएंगे, जिसने लिए कुछ

नि ठहरना पड़ेगा। अब एक दिन और जरूर ही ठहरना था। दबताआ का कृपा समझिये उस दिन सबरे स हलवा सा मेध का पर्दा आकाश पर छाया रहा। शाम का कुछ वृद्धावस्था भी हुई। हमें कुछ माथिया और प्रकाशका स मिलना था पार्टी आफिस में साथी रणदिव गाटिलकर सच्चिदा और दूसर मिले। आजकल स्तालिन की ही चर्चा सब जगह सुनाई दे रही थी। स्तालिन के पिछले जीवन के जो दाप प्रकट हुए थे जोर जिनका कड़ी आलोचना सावियन भूमि में हो रही थी उसका प्रभाव सबके ऊपर पड़ रहा था। मैंने भी अपने विचार प्रकट किये। सभी इसे कड़वी घूट समझते थे लेकिन मानते थे कि यही स्वास्थ्यकर दवा है। साम्यवाद के विराधिया को यद्यपि मौका मिला है, लेकिन वे उमरा कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते। निवृत्ता को हटाकर विश्व साम्यवाद और नी मजबूत हागा, और नी फरेगा। सच्चिदा न बतलाया इस महीने हम माआ (जीवनी) में हाय लगाएंगे। राजकमल क देवराजजा न फिर अब क वसी महान में "गादा" में हाय लगाने का वादा किया पर वह अभी नहीं ग्या।

४ अप्रैल का भी दिन नर हम दिल्ली ही में रहना पडा। कल ता वाद में कुछ अवलम्ब दिया था लेकिन आज १० गजे दिन से गत क दबने तक पला ही गरण रहा। पानी स ता बच गए, लेकिन सिर घूम रहा था। समय से कुछ पहले ही स्टेशन पहुँच। दूसरे दर्जे में दो सीटें रिजर्व करा ली थी। हम यह भूल गए कि दूसरे दर्जे में रिजर्व कराने का मतलब सिर्फ बैठने की जगह सुरक्षित करना है, सोन की नहीं। यहाँ आन पर जब दया, बैठे बठे बच्चा का लेकर गुजारा करना पडगा ता पहले दर्जे में सीट डेढन क लिए दीये पर वहाँ काइ जगह खाली नहीं थी। देहरादून में फौजी स्कूल और दूसरी सस्थाआ के कारण ऊँचे अपसर जाया ही करत है, जब क तो अधबुम्भी भी लोगा को खीच रही थी। हमारे डब में एक गरणार्थी डाक्टर अपने परिवार का महिलाआ क साथ जा रहे थे। दूसरे आदमियां में रल के एक नूतपूव कमचारी अपनी बच्चा पत्नी क साथ बठे थे। पाम क दूसरे दर्जे क डब में जगह था "गाय" वहाँ अधिक स्थान मिला जाता लेकिन जय स्थिति मालूम हुइ ता सामान लेकर दूसरे डब में जाना मुश्किल था। मैंने ऊपर सामान रखने की सीट देखल की, इसलिए कमला का दा आदमियों

की जगह मिल गई। सयाग ने हमारे चार आदमियों की बेंच पर एक आदमा नहा जाया। जस भी हा रात काटनी हा थी।

हरद्वार व ही यात्रा ट्रेन म भरे हुए थे इसलिए हरद्वार आन पर उनम स बहुत न उतर गए। भूतपूर्व रेलवे कमचारी गरणा भी थे। दहरादून म उनर सम्बन्धी रहन थ, इसलिए पहले अपना भारी भवम सामान लेकर यह देहरादून जाना चाहत थे जहाँ मे अथकुम्भी स्नान व लिए आन। उनका बूढ़ा पत्नी कुठ अधिक मोटी थी। चलना फिरना उनक लिए मुश्किल था। ऊपर म पूरी घमर्त्ता थी। हाथ धोने के लिए मिट्टी भी अपने साथ लेकर चल रही थी। हरद्वार स्टेशन पर हाथ मुह धान नी सूझा और मिट्टी लेकर पानीकल पर पहुँची। लौटते लौटते गाँगे चल पड़ी। पतिदेव दीनकर चढ़ लकिन पत्ना सूँगे जा रही थी। जल्दी स गाड़ी रानने नी तजीर खीच ली। पहले दूमरे का खीचन व लिए कटा लकिन उसने इत्वार कर दिया। गाड़ी खड़ी हुई। गाड न जाऊर कहा— तुम्हार ऊपर मुवद्मा चलाया जाएगा।' वह कहने लग— मेरी बीबी छूटी जा रही थी, इम लिए मैंने खीची।' गाड ने कहा— यह सब जवाब मजिस्ट्रेट के सामन जाप दीगिया।' सामान उतार लिया गया और उह स्टेशन व कमचारी व सुपुद कर दिया गया।

८ बजे हम देहरा पहुँचे। आज यही रहना था। बगीचे की रस्ता व लिए टोपीजाली बंदूक साठ पसठ रुपये म खरीदा थी। उसका कोई काम नहीं था, इसलिए बच दना चाहत थ। हिमालय आमवाला न उस ६० ६५ म बचा था, और अब ३० रुपया देने के लिए तयार थे। उस बेचकर रेमिगटन के यहाँ मरम्मत क लिए गिये हुए टाइपराइटर का ले घर लौट आए। तिल्लो और नहरा म बहुत फक है। गर्मी यहाँ भी थी पर दिल्ली जसी नहा।

मसूरी—६ अप्रैल का ६ बजे टक्मा ली। पीने १० बजे हम कितानघर (मसूरी) पहुँच गए और आध घंटे म ही पैदल चक्कर घर आ गए। जेता का दरत आ रह थ और जुनाम भी था। हमारे पडाती किलडेर" व स्वामा बनल चाल भी आ चुक थ, इसलिए डाक्टरों परामश से हम निश्चित थे।

बुद्ध पर अनरु पत्र परिभाषा न लेख लिखन की माग की थी । साचा इसी बहान बुद्ध पर एक छोटी सी पुस्तक तैयार हा जाएगी, इसलिए उदारतापूर्वक लिखने लग गए । दिल्ली स भया (स्वामी हरिशरणानन्द) न अपना जीमनी की सामग्री दो थी उसे भी लेकर जब "धुमकूड स्वामी (हरिशरणानन्द)" का दुवारा लिखना था जिस ८ अप्रल से हमने शुरू किया ।

६ अप्रल के सोमवार का सबत् २०१२ चैत वदी १३ रही । ६३ साल पहले वैशाख वदी ८ रविवार का सबत् १६५० विजयानो पदाहा म में पदा हुआ । यही आकर ६०वें तमदिन का कमला न विगेष तीर स मनाया था । आज ६४वाँ जन्मदिन था । हम निश्चय कर चुने थे कि उस दिन अपने घर ही मे विगेष मनाया पीना कर लेंगे, पार्टी-वादी नही करेग । मबरे नित्य नियम के अनुसार तीन घट टाइप कराया । राधर का और अपराह्न की चाय म कुछ विगेष भाजन रहा । इन प्रकार यह दिन समाप्त हो गया ।



की जगह मिल गई। सयाग से हमारे चार जादमिया की बच पर एक आत्मी नहीं जाया। जस भी हो रात काटनी ही थी।

हरद्वार क हा यात्री ट्रेन म भर हुए थे इसलिए हरद्वार आन पर उनम स बहुत स उतर गए। भूनपूत्र रेलवे कमचारी गरणार्थी थे। दहरादून म उनक सम्बन्धी रहते थ इसलिए पहले अपना भारी भकम सामान लकर यह देहरादून जाना चाहते थ, जहाँ से अधकुम्भी रनान के लिए आत। उनको वृद्धा पत्नी कुछ अधिक मानी थी। चलना फिरना उनके लिए मुश्किल था। ऊपर स पूरी धमत्तिमा थी। हाथ धाने क लिए मिट्टी भी अपने माय लेकर चल रही थी। हरद्वार स्टेशन पर हाय मुह धा की सूची जीर मिट्टा लकर पानीकल पर पहुँची। लौटत लौटते गाडी चल पडी। पतिदव दौडकर चढ़ लकिन पत्नी छूटी जा रही थी। जल्दी से गाडी रोक्न की जजीर यीच ली। पहले दूसरे का लीचन के लिए कहा लेकिन उसने इ चार कर दिया। गाडी सही हुई। गाड ने जानर कहा— तुम्हारे ऊपर मुक्दमा चलाया जाएगा।” वह बहन लग—‘ मरी बीबी छूटी जा रही थी, इस लिए मैंने लीची।’ गाड ने कहा— यह सब जबाब मजिस्ट्रेट के सामने आप दीजियगा।’ सामान उतार लिया गया जीर उह स्टेशन क कमचारी क सुपुद कर दिया गया।

८ बजे हम दहरा पहुँच। आज यही रहना था। बगीचे की रक्षा के लिए टापीवाली बटूक साठ-पसठ रुपय म खरीनी थी। उमना कोई काम नहीं था इसलिए बच दना चाहत थ। हिमालय आमवाली ने उस ६० ६५ म बचा था, और अब ३० रुपया देन के लिए तयार थ। उस बेचकर रेमिगटन क यहाँ मरम्मत क लिए दिये हुए टाइपराइटर को ल घर लौट आए। दिल्ली और द्रा म बहुत फक है। गर्मी यहाँ भी थी पर दिल्ली जसो नहीं।

मसूरी—६ अप्रैल को ९ बजे टक्सी ली। पौन १० बजे हम किताबघर (मसूरी) पहुँच गए और आघ घटे म ही पदल चलकर घर आ गए। जेता का त्सन आ रह थ जीर जुवाम भी था। हमारे पडोमी ‘किलडेर’ क चामा कनल चाँद भी आ चुन थ, इसलिए डाक्टरों परामग से हम नेदिवत थ।

